

श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

# वैजयन्तीकोषः

सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री

वैजयन्तीकोषः

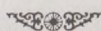
सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री



जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

२



श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

# वैजयन्तीकोषः

सलिङ्गनिर्देशं शब्दानुक्रमणिकासहितः

सम्पादकः

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न

श्री पं० हरगोविन्दशास्त्री



चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी



प्रकाशक  
**चौखम्भा भारती अकादमी**

आकर ग्रन्थों के प्रकाशक एवं वितरक  
'गोकुल भवन', के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन  
वाराणसी-२२१००१ (भारत)  
फोन : +९१ ५४२ २३३०३४५, २३३०३४९ (ऑ.)  
+९१ ५४२ २३३२६३७, २३३२७०२ (नि.)

© चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी  
पुनर्मुद्रित : सन् २००८  
मूल्य : रु. ४००.००

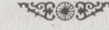
शाखा  
**चौखम्भा बुक्स**  
५ यू. ए. जवाहर नगर  
(जवाहर नगर पोस्ट ऑफिस के पीछे)  
मलकागंज, दिल्ली-११०००७  
फोन : +९१ ११ २३८५३१६६

अन्य प्राप्ति स्थान  
**चौखम्भा विश्वभारती**  
भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक व वितरक  
के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन  
वाराणसी-२२१००१ (भारत)

मुद्रक : सुरभि प्रिंटर्स, वाराणसी

Jaikrishnadas-Krishnadas Prachyavidya Granthamala

2



# VAIJAYANTĪKOṢA

OF  
ŚRĪ YĀDAVAPRAKĀŚĀCĀRYA

Edited with Introduction and Index

by  
**Śrī Pt. Haragovind Śāstri**  
*Vyākaraṇa-Sāhityāchārya, Sāhityaratna*

**CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY**

VARANASI



Publisher

**CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY**

*Publishers & Distributors of Monumental Treatises of the East*

'Gokul Bhawan' K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Phone : +91-542-2330345, 2330349 (O)

+91-542-2332637, 2332702 (R)

© Chaukhambha Bharati Academy, Varanasi  
Reprint Year : 2008

*Also can be had from*

**CHAUKHAMBHA BOOKS**

5. U. A. Jawahar Nagar

(Behind Jawahar Nagar Post-office)

Malkaganj, Delhi-110007

Phone : +91-11-23853166

*Branch*

**CHAUKHAMBHA VISVABHARATI**

*Oriental Publishers & Distributors*

K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Printed at : Surbhi Printers, Varanasi

**प्रस्तावना**

लोकव्यवहृतिहेतु शारदराकेशविमलतमम् ।

सारस्वतं महोऽहं शब्दब्रह्माभिधं वन्दे ॥ १ ॥

चन्द्रांशुसितभस्माङ्ग चन्द्राङ्गिनिविलोचन ।

चन्द्रास्योमाचितार्द्धाङ्ग चन्द्रचूड नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

अपने-अपने पूर्वजन्माजित शुभाशुभ कर्मोंके अनुसार चौरासी लक्ष योनियों-में-से नानाविध योनियोंमें जन्म लेकर इस कष्टमय संसारमें विविध दुःखोंको भोगनेके लिए जीव बाध्य हुआ करता है। देव-यक्षादि कुछ योनियां उनमें सुखद भी हैं, किन्तु उनमें भी उत्पन्न जीव अपने शुभ कर्मोंसे उपलब्ध सुखोंका भोगमात्र ही करता है, पुनः पुण्यकर्माजन-द्वारा अपने सुखद भोगोंमें लेशमात्र भी वृद्धि नहीं कर सकता, क्योंकि वे सभी भोग-योनियां हैं, कर्मयोनियां नहीं। कर्म-योनि तो केवल मनुष्य-योनि ही है, इसीमें उत्पन्न प्राणी अपने-अपने कर्मजन्य सुखप्रद भोगोंको भोगता हुआ भी शुभकर्माजन-द्वारा धर्मार्थकामरूप पुरुषार्थत्रय प्राप्तकर मोक्षरूप परम पुरुषार्थ भी प्राप्त कर सकता है। इसी कारण इस मनुष्य-योनि को सर्वश्रेष्ठ योनि माना गया है। इसे प्राप्त करनेके लिए देवराज इन्द्र भी तरसते हैं और चाहते हैं कि सौभाग्यवश यदि मुझे दुर्लभ मनुष्य-योनि प्राप्त हो जाय तो मैं मोक्ष-लाभकर परमानन्दकन्द परब्रह्म परमात्मा में लीन होकर कष्टमय संसारके आवागमनसे सदा सर्वदाके लिए मुक्त हो जाऊँ।

**मनुष्य-योनि-प्राप्तिके साधन—**

परमदुर्लभ मनुष्य-योनि-प्राप्तिके मुख्यसाधन दो प्रकारके हैं—प्रथम कठोरतम तपश्चरणादि तथा द्वितीय सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए सत्काव्य-सेवन। इनमें-से प्रथम साधन नानाविध विघ्न-बाधाओंसे भरा हुआ अतिशय कष्ट-साध्य है तथा सत्काव्य-सेवनरूप द्वितीय साधन पूर्वपेक्षया अधिक सरल एवं सुख-साध्य है। अत एव जीवमात्रको सत्काव्य-सेवन-द्वारा यश, धन तथा व्यवहार-ज्ञानकी प्राप्ति करते हुए दुःख-निवृत्ति एवं कान्तोपदेशसम्मित सद्यः परमसुख-प्राप्ति करनी चाहिए। शास्त्रकारोंने भी डिण्डिमघोषपूर्वक इसी बातका समर्थन किया है। यथा—

‘काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरत्तये ।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मततथोपदेशयुजे ॥’



तथा—

‘धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षणं कलासु च ।  
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम् ॥’

इसी सत्काव्य-सेवनद्वारा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, भास, भवभूति, माघ, मयूर, बाण, श्रीहर्ष, धावक, दण्डी आदि महामनीषियोंने स्व-स्व-लक्ष्यानुसार अर्थ, धर्म, काम और मोक्षतक प्राप्त किया, यह सर्वविदित है। मनुष्य-योनि लाभ करनेपर भी विद्या, कवित्व और कवित्व-शक्तिका लाभ करना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। यथा—

‘नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।  
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥’

( अग्निपुराण २३७।३-४ )

भगवान् पतञ्जलिने तो सम्यक् प्रकारसे ज्ञात एवं सुप्रयुक्त एक शब्दको भी इहलोक एवं परलोकमें कामदुष्टा ही बतलाया है। यथा—

‘एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति ।’

( महाभाष्य पस्पशाह्निक )

इसी कारणसे शास्त्रकारोंने व्याकरणशास्त्रके अध्ययनपर विशेष जोर दिया है। यथा—

‘यद्यपि बहु नाधीषे पठ पुत्र व्याकरणम् ।

स्वजनः स्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत ॥’

उपयुक्त वचनसे यह सुस्पष्ट हो जाता है कि अर्धमात्रात्मक एक व्यञ्जनका व्यतिक्रम होनेसे अर्थका कितना अनर्थ हो जाता है।

### कोषकी आवश्यकता—

शब्द-शास्त्रके ज्ञानके बाद भी कवित्व-शक्ति-प्राप्त्यर्थ बहुशब्द-सञ्चय करना परमावश्यक होता है, वह सञ्चय उत्तमोत्तम कोषद्वारा ही हो सकता है, क्योंकि कोष-हीन पुरुष तथा भूपाल जिस प्रकार प्रजोत्पादन एवं प्रजा-रक्षणमें सर्वथैव असमर्थ रहते हैं, उसी प्रकार कोष-हीन विद्वान् भी उत्तम काव्यकी रचना करने या उसका यथावत् रसास्वादन करनेमें सर्वथा असमर्थ ही रहता है। यथा—

‘नरभूपौ विना कोषं प्रजोत्पादनरक्षयोः ।

नैव क्षमौ यथा, तद्वत् कविः काव्यकृतावपि ॥’

शब्द-दारिद्र्याक्रान्त कवि उपयुक्त शब्द-चयन करनेमें ही सदा व्यस्त रहनेसे उन्नतोन्नत-कल्पना-पूर्ण कविता करनेमें कदापि समर्थ नहीं होता है। अतः कोष-सञ्चय करना सत्कविके लिए परमावश्यक है।

### वैदिक कोषकी सर्वप्रथम रचना—

सृष्टिकर्ता ब्रह्माने सर्वप्रथम अपने मानसपुत्रोंको वेदोंका अध्ययन कराया, उन्होंने उन वेदोंको सुनकर कण्ठस्थ कर लिया और पुनः उनका स्मरणकर अपने शिष्योंको अध्ययन कराया। श्रुति-गोचर ( श्रवण ) कर स्मरणद्वारा अध्ययन करानेकी यह परम्परा अनेक शताब्दियों तक चलती रही और हस्तामलकवत् त्रिकालदर्शी महर्षि लोकोपकारार्थ वेद-सम्मत अन्यान्य शास्त्रों ( ब्राह्मण, उपनिषद्, धर्मशास्त्रादि ) की रचनाकर अपने-अपने योग्यतम शिष्योंको अध्ययन कराते रहे।

आगे चलकर समय बदला और उन महर्षियोंके यम-नियम-संयमादिमें शैथिल्य होनेसे उनकी बुद्धिका भी ह्रास हो गया, श्रवणमात्रसे वेदको स्मरण रखने एवं समझनेकी क्षमताका अभाव देखकर कश्यप मुनिने वेदज्ञानार्थ निघण्टुकी रचना की, किन्तु कालचक्रके आगे बढ़ते रहनेसे अन्न-पान-संसर्गादिक बुद्धिवैश-द्यावरोधक दोषोंके कारण तपोबलका ह्रास उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। तत्फलस्वरूप वेदार्थप्रतिपादक निघण्टुका आशय समझना भी अशक्य हो गया, यह देख यास्क ( ई० पू० ७०० वर्ष ) ने निघण्टुके भाष्यरूप ‘निरुक्त’ ग्रन्थकी रचना की। वेदोंमें आनेवाले शब्दोंका निर्वचन करनेसे इसके द्वारा वेदार्थ-ज्ञान करना सरल हो गया। इसके विषय ये हैं—

‘वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरो वर्णविकारनाशौ ।

धातोस्तदर्थान्तिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥’

निघण्टुके भाष्यस्वरूप इस निरुक्तमें यास्कने ‘एके, परे, अपरे, अन्ये, आचार्याः’ आदि शब्दों-द्वारा अज्ञात-नामा आचार्योंका सङ्केतकर इन बारह आचार्योंका स्पष्ट रूपसे नाम-निर्देश किया है। उनके नाम ये हैं—१ औदुम्बरायण, २ औप-मन्यव, ३ वार्षायणि, ४ गार्ग्य, ५ आग्रहायण, ६ शाकपूणि, ७ और्णनाभ, ८ तैट्टिकी, ९ गालव, १० स्थीलाष्टीवी, ११ क्रौष्टु और १२ काथक्य। जिस प्रकार वेदाङ्ग व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, शिक्षा और कल्प कोई एक-एक ग्रन्थ-विशेष न होकर सभी अनेकानेक ग्रन्थात्मक हैं, उसी प्रकार निघण्टु या निरुक्त भी कोई स्वतन्त्र एक-एक ग्रन्थ-विशेष नहीं; अपितु वे दोनों (निघण्टु और निरुक्त) भी अनेकानेक ग्रन्थरूपात्मक ही हैं। ५० श्रीभगवद्भक्तजीने एक लेखमें वेदोंके भाष्यकार यास्कदिके भाष्य-ग्रन्थोंमें उद्धृत लगभग १७ निघण्टुओंके अस्तित्वका उल्लेख किया है, किन्तु इस समय वे सभी अप्राप्य हैं। ( श्रीवाचस्पति गैरोलाकृत सं० साहित्यका इतिहास, पृ० १८७-१८९ )

### लौकिक कोषोंकी रचना—

संयम-नियम, आचार-विचार, अन्न-पान, रहन-सहन आदिके शास्त्र-बहिर्भूत होनेसे बल, वीर्य, मेधा, विद्या, तपश्चरणादिके और अधिक ह्रास होनेपर लौकिक



शब्दोंके अर्थ-ज्ञानको भी दुर्बोध होता हुआ देखकर आचार्योंने शास्त्र-ज्ञानार्थ 'लौकिक शब्दकोषों'की रचना की। प्राचीनाचार्योंमें अपने ग्रन्थोंमें समय, निवास तथा देशादिका परिचय देनेकी परम्परा नहीं रहनेसे किस आचार्यने कौन-सा लौकिक शब्दकोष सर्वप्रथम रचा, यह निर्णय आज तक इतिहासकार नहीं कर सके हैं। इसके कारण निम्न-लिखित हैं—

( क ) 'शब्दकल्पद्रुम'के रचयिता 'स्यार राजा राधाकान्त देव बहादुर'ने उक्त ग्रन्थके मुखबन्ध ( पृ० ४ ) में अग्निपुराणमें वर्णित अभिधानको सर्वप्रथम कोष माना है। इसका प्रकरण-क्रम इस प्रकार है—पहले स्वर्गपातालादिवर्ग, नानार्थवर्गके बाद भू-पुर-अद्रि-वनोषधि-सिंहादि-नृ ( मनुष्य )-ब्रह्म-क्षत्र-वैश्य-शूद्र-वर्गका वर्णनकर अन्तमें सामान्यलिङ्गका वर्णन है। किन्तु अमरसिंहने स्व-रचित अमरकोषमें उक्त क्रमका व्यत्यासकर अग्निपुराणोक्त 'सामान्य-नामलिङ्गों'के स्थानमें विशेष्यनिघ्नवर्ग तथा सङ्कीर्णवर्गको समाविष्टकर 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग'को पृथक् कर दिया है। उक्त अमरसिंहका ही अनुकरण 'जटाधर' ने अपने.....ग्रन्थ में और 'पुरुषोत्तमदेव'ने 'त्रिकाण्डशेष' में किया है।

इसके बाद उक्त राजा सा० ने निम्नलिखित कोषों एवं उनके रचयिताओंका नाम-निर्देश किया है। यथा—

ग्रन्थकार	कोष
१. अमरसिंह	: नामलिङ्गानुशासन
२. अजयपाल	: नानार्थसंग्रह
३. गदसिंह	: नानार्थध्वनिमञ्जरी
४. चक्रपाणि	: शब्दचन्द्रिका
५. जटाधराचार्य	: पर्यायनानार्थकोष
६. दण्डाधिनाथ	: नानार्थरत्नमाला
७. दुर्गादासविद्यावागीश	: धातुदीपिका
८. धनञ्जयकवि	: नाममाला
९. धनिकदासब्राह्मण	: सारसंग्रहनामक अनेकार्थसमुच्चय
१०. नरसिंह कालीपण्डित	: निघण्टुराज ( राजनिघण्टु )
११. नारायणदत्तकविराज	: राजवल्लभ
१२. पद्मानाभदत्तद्विज	: भूरिप्रयोग
१३. पुरुषोत्तमदेव	: एकाक्षरकोष
१४. ,,	: द्विरूपकोष
१५. ,,	: त्रिकाण्डशेष

ग्रन्थकार	कोष
१६. पुरुषोत्तमदेव	: हारावली
१७. भावमिश्र	: भावप्रकाश
१८. मयुरेशपण्डित	: शब्दरत्नावली
१९. महेश्वरवैद्य	: विश्वप्रकाश
२०. मेदिनीकरवैद्य	: नानार्थशब्दकोष
२१. रामेश्वरशर्मा	: शब्दमाला
२२. रत्नमालाकरवैद्य	: आयुर्वेदार्णवोत्थित पर्यायरत्नमाला
२३. वोपदेवमिश्र	: कविकल्पद्रुम
२४. श्रीनन्दनभट्टाचार्य	: वर्णाभिधान
२५. श्रीरामशर्मा	: उणादिकोष
२६. सि. कौ. संक्षिप्तसारकार	: उणादिवृत्ति
२७. ,, ,,	: ,,
२८. हलायुधभट्ट	: अभिधानरत्नमाला
२९. हेमचन्द्रजैन	: अभिधानचिन्तामणि

इनके अतिरिक्त (१) विश्वकोषमें—

१. भोगीन्द्र, २. कात्यायन, ३. साहसाङ्क, ४. वाचस्पति, ५. व्याडि, ६. विश्वरूप, ७. मङ्गल, ८. शुभाङ्क, ९. बोपालित और १०. भागुरिके द्वारा रचे गये—

तथा ( २ ) मेदिनीकोषमें—

१. उत्पलिनी, २. शब्दार्णव, ३. संसारावर्त, ४. नाममालाख्य, ५. वररुचि, ६. शाश्वत, ७. रत्तिदेव, ८. रत्नापरनामहर, ९. गोवर्धन, १०. रभसपाल, ११. रुद्र, १२. अमरदत्त, १३. गङ्गाधर, १४. वाभट, १५. माधव, १६. धर्म, १७. तारपाल, १८. वामन, १९. चन्द्र, २०. विक्रमादित्य और २१. गोमि'के रचित कोष तथा २२. पाणिनि-पदानुशासन कोष; इनके कोषग्रन्थोंका नामोल्लेख है।

( ख ) पुरुषोत्तमदेव-रचित 'त्रिकाण्डशेष'नामक कोषकी 'सारार्थचन्द्रिका' नामकी संस्कृत व्याख्याके कर्ता 'श्रीशीलस्कन्ध यतिवरने' प्राप्ताप्राप्त एवं ज्ञाता-ज्ञात नामवाले कोषों तथा कोष-रचयिताओंके निम्नलिखित १९२ नामोंका उल्लेख-कर 'दैवज्ञ'मुखमण्डन, सरस्वतीनिघण्टु, और सिद्धीषधनिघण्टु,—इन तीन ग्रन्थों-के लङ्काद्वीपमें सिंहलाक्षर लिपिमें मुद्रित होनेकी चर्चा की है। उनकी तत्रत्य

१. उपरिलिखित २९, १० तथा २२ नामोंके अतिरिक्त भी कतिपय नाम और ग्रन्थ अर्वाचीन हैं तथा कुछ नाम कोषभिन्न हैं।



पुस्तकालयीय ग्रन्थ-संख्या क्रमशः १४६, १८७ और १९२ है, यह भी उनका कथन है । उल्लिखित १९२ कोष एवं कोषकारोंके ये नाम हैं—

**प्राप्तकोष :**

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
१. नामलिङ्गानुशासन	: अमरसिंह
२. कल्पद्रु	: केशव
३. शब्दार्णव	: दुर्गादास
४. प्रमाणनाममाला	: धनञ्जय
५. त्रिकाण्डशेष	: पुरुषोत्तमदेव
६. हारावली	: "
७. एकाक्षरकोष	: "
८. द्विरूपकोष	: "
९. "	: भरतसेनमल्ल
१०. मातृकानिघण्टु	: महीदास
११. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: महाक्षपणक
१२. अव्ययकोष	: महादेव
१३. विश्वप्रकाश	: महेश्वर
१४. शब्दभेदप्रकाश	: "
१५. नानार्थमञ्जरी	: मेदिनीकर
१६. वैजयन्ती	: यादव
१७. लिङ्गविशेषविधि	: वररुचि
१८. पञ्चतत्त्वप्रकाश	: वेणीदत्त
१९. नानार्थसमुच्चय	: शास्त (?)
२०. लक्ष्मीनिवास	: शिवराम
२१. गणितनाममाला	: हरिदत्त
२२. अभिधानरत्नमाला	: हलायुध
२३. शारदीनाममाला	: हर्षकीर्ति
२४. अनेकार्थसंग्रह	: हेमचन्द्र
२५. अभिधानचिन्तामणि	: "
२६. अभिधानचिन्तामणि—	
नाममालापरिशिष्ट	: "
२७. लिङ्गानुशासन	: "

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
२८. अभिधानरत्नमालाशिलोच्छ्रः	: जिनेन्द्रमुनीश्वर
२९. मदनपालनिघण्टु	: मदनपाल
३०. मुक्तावली	: श्रीधर
३१. रत्नमाला	: दण्डाधिनाथोपनाम इरुगण्ण
३२. शब्दसंग्रहनिघण्टु	: अगस्त्य
३३. नानार्थसंग्रह	: अजयपाल
३४. नामसंग्रहमाला	: अप्पयदीक्षित
३५. एकाक्षरनाममाला	: अमरसिंह
३६. प्रयुक्तपदमञ्जरी	: कालिदास
३७. शब्दार्णव	: काशीनाथ
३८. लघुनिघण्टुसार	: केशव
३९. लोकप्रकाश	: क्षेमेन्द्र
४०. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: गर्दसिंह
४१. शब्दमाला	: गोपीनाथ
४२. नामावली	: गोवर्धन
४३. शब्दसागर	: गोविन्दशर्मा
४४. शब्दचन्द्रिका	: चक्रपाणिदत्त
४५. अभिधानतन्त्र	: जटाधराचार्य
४६. निघण्टु	: जैमिनि
४७. कोमलकोषसंग्रह	: तीर्थस्वामी
४८. गीर्वाणभाषाभूषण	: त्रिविक्रमाचार्य
४९. नानार्थरत्नमाला	: दण्डनाथ या भास्कर
५०. नाममाला	: दुर्ग
५१. वैष्णवाभिधान	: देवकीनन्दन
५२. नानार्थसमुच्चय	: धरणीश
५३. कविजीवन	: धर्मराज
५४. बालप्रबोधिका	: नत्तिकरकवि
५५. वर्णाभिधान	: नन्दनभट्टाचार्य
५६. राजनिघण्टु	: नरसिंहपण्डित
५७. राजवल्लभ	: नारायणदास
५८. रत्नकोष	: नरसिंहमुनि
५९. भूरिप्रयोग	: पद्मनाभ



ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
६०. शीघ्रबोधिनीनाममाला :	पुण्डरीकविट्ठल
६१. वर्णदेशन :	पुरुषोत्तमदेव
६२. रत्नकोष :	पृथ्वीधराचार्य
६३. शब्दचन्द्रिका :	बाणभट्ट
६४. निघण्टुकैकाध्याय :	बाल्लिकेयमिश्र
६५. त्रिरूपकोष :	बिल्लण
६६. नामसंग्रहनिघण्टु :	भार्गवाचार्य
६७. नाममाला :	भोजराज
६८. मङ्गलकोष :	मल्ल
६९. शब्दरत्नावली :	मधुरेश
७०. पदचन्द्रिका :	मयूरभट्ट
७१. अनेकार्थतिलक :	प्रदीप
७२. शब्दरत्नाकर :	"
७३. एकाक्षरनिघण्टु :	माधव
७४. सुप्रसिद्धपदमञ्जरी :	मुरारि
७५. आयुर्वेदपर्यायरत्नमाला :	रत्नमालाकर
७६. शब्दार्थनिर्णय :	राक्षस
७७. कविदर्पणनिघण्टु :	राम
७८. उणादिकोष :	रामशर्मा
७९. शब्दमाला :	रामेश्वर
८०. रूपमञ्जरीनाममाला :	रूपचन्द्र
८१. नाममालानिघण्टु :	वरदराज
८२. ऐन्द्रनिघण्टु :	वररुचि
८३. कविमञ्जरी :	वल्गुभ
८४. शब्दरत्नाकर :	वामनभट्ट
८५. कविदीपिकानिघण्टु :	विक्रमादित्य
८६. शब्दार्थचिन्तामणि :	विट्ठलाचार्य
८७. कोषकल्पतरु :	विश्वनाथ
८८. शब्दार्थकल्पतरु :	वेङ्कट
८९. शाब्दिकविद्वत्कवि- प्रमोदक :	"
९०. दशदीपनिघण्टु :	वेदान्ताचार्य

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
९१. संयमिनाममाला :	शङ्कर
९२. शिवकोष :	शिवदत्त
९३. द्विरूपकोष :	श्रीहर्ष
९४. इलेषार्थपदसंग्रह :	"
९५. एकाक्षरनिघण्टु :	सदाचार्य
९६. लिङ्गप्रकाश :	सारदेवर
९७. भुवनप्रदीपिका :	सार्वभौममिश्र
९८. शब्दरत्नाकर :	सुन्दरगणि
९९. अनेकार्थतिलक :	सोमभव
१००. एकार्थनाममाला :	सीभरी
१०१. द्व्यक्षरनाममाला :	"

### अविदित-ग्रन्थ-नामवाले कोषकार

१०२. अमरदत्त	११७. राजमुकुट
१०३. कृत्य	११८. रुद्र
१०४. गङ्गाधर	११९. धरणीधर
१०५. चन्द्रगोमि	१२०. वाग्भट
१०६. तारपाल	१२१. सर्वधर
१०७. दामोदर	१२२. वाचस्पति
१०८. धर्मदास	१२३. राजदेव
१०९. वोपालित	१२४. वामन
११०. भागुरि <sup>१</sup>	१२५. मुकुट
१११. भोगीन्द्र	१२६. विक्रमादित्य
११२. मङ्गल <sup>२</sup>	१२७. विश्वरूप
११३. मार्तण्ड	१२८. भट्टमल्ल
११४. रन्तिदेव	१२९. व्याडि
११५. रभसपाल	१३०. विश्वलोचन <sup>३</sup>
११६. राजशेखर	१३१. शुभाङ्क

१. इनका रचित 'त्रिकाण्डकोष' है। ( द्रष्टव्य : वाचस्पति गैरोला-रचित सं० साहित्यका इतिहास, पृ० ६२० )

२. इनकी रचना 'मङ्गलकोष' है।

३. इनका रचित 'विश्वलोचनकोष' है, जो सूरतसे प्रकाशित है।



१३२. सोमनन्दी	१३५. हट्टचन्द्र
१३३. सज्जन	१३६. हर
१३४. साहसाङ्क	१३७. कात्यायन

### अविदित कर्तृनामक, विदित-ग्रन्थनामक कोष

१३८. अमरमाला <sup>१</sup>	१६२. बृहदमरकोष <sup>३</sup>
१३९. असालतिप्रकाश	१६३. महाखण्डनकोष
१४०. आनन्दकोष	१६४. पदरत्नावली
१४१. एकवर्णसंग्रह	१६५. राजकोषनिघण्टु
१४२. एकाक्षरकोष	१६६. पुद्गलकोष
१४३. उत्पलिनी	१६७. लिङ्गप्रकाश
१४४. ऊष्मविवेक	१६८. मुनिकोष
१४५. अजय	१६९. वर्णप्रकाशकोष
१४६. अरुण	१७०. पालकोष
१४७. इन्दुकोष	१७१. वात्स्यायनकोष
१४८. कल्पतरुकोष	१७२. कोषसार
१४९. ग्रहाभिधान ( देवज्ञमुखमण्डन )	१७३. शब्दतरङ्गिणी
१५०. जकारभेद <sup>२</sup>	१७४. गङ्गाधर
१५१. दण्डिकोष	१७५. शब्ददीपिका
१५२. सुभूतिकोष	१७६. गोवर्द्धनकोष
१५३. धन्वन्तरिनिघण्टु	१७७. शब्दरत्नसमुच्चय
१५४. नक्षत्राभिधान	१७८. शब्दसारनिघण्टु
१५५. देशीकोष	१७९. चन्द्रकोष
१५६. नानार्थमञ्जरी	१८०. संसारावर्त
१५७. नामनिधान	१८१. चरककोष
१५८. पद्मकोष	१८२. सकलग्रन्थदीपिका
१५९. भुमकोष	१८३. सकारभेद <sup>४</sup>
१६०. चकारभेद	१८४. सज्जीवनी
१६१. बीजकोष	१८५. सन्मुखविवृतिनिघण्टु
	१८६. सरसशब्दसरणि

१. कतिपय विद्वान् इसे 'अमरसिंह' रचित कोष मानते हैं।

२., ४. कतिपय विद्वान् इसे 'बाणभट्ट' की रचना मानते हैं।

३. कुछ विद्वान् इसे 'अमरसिंह' की कृति मानते हैं।

१८७. सरस्वतीनिघण्टु	१९०. सारस्वताभिधान
१८८. साध्यकोष	१९१. हनुमन्निघण्टु
१८९. रत्नकोष	१९२. सिद्धौषधनिघण्टु

( ग ) श्री वाचस्पति गैरोला जीने अपने संस्कृत साहित्यके इतिहासमें पाणिनि-द्वारा एक 'द्विरूपकोष' लिखे जानेका उल्लेख किया है ( पृ० ६३४ )। इस आधारपर यह कहा जा सकता है कि उन्हीं गैरोला जीके उक्त इतिहासमें ( पृ० ६३३ ) उद्धृत 'सत्यव्रत सामश्रमी'के मतानुसार पाणिनिका सत्ता-काल ई० पू० २४०० वर्ष मान लिया जाय तो पाणिनि-रचित उक्त 'द्विरूपकोष'-का रचना-काल आजसे लगभग साढ़े चार सहस्र वर्ष पूर्व ही होना सिद्ध होता है। इतना ही नहीं, अपि तु श्री गैरोला जीने उसी इतिहासमें 'भागुरि'की कृतियोंमें 'त्रिकाण्डकोश' होनेका उल्लेख किया है। उक्त 'भागुरि' का समय ई० पू० ३१०० वर्ष ( उक्त इति० पृ० ६२० ) होनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कम-से-कम आजसे लगभग ६००० वर्ष पहले ही लौकिक-कोष-रचनाका श्रीगणेश हो चुका था।

इसके अतिरिक्त महावैयाकरण आपिशलि, शाकटायन, व्याडि, पतञ्जलिने भी कोषोंकी रचना की थी ( वही इतिहास पृ० ७७७-७७९ )।

लौकिक-कोष-रचनामें जैनाचार्योंका भी प्रमुख हाथ रहा है। इनके रचित उपलब्ध कोषोंमें 'हरिषेण'रचित 'बृहत्कथाकोष' सबसे विशाल एवं प्राचीन कोष है। इनका समय शक ८५३ ( ई० ९६९ ) है। इनका रचित उक्त कोष १२५०० श्लोकोंमें पूर्ण हुआ है। ( गैरोला, सं० सा० का इति० पृ० ७८१ )।

### आचार्य यादवप्रकाश—

इसी लौकिक-कोष-रचनाके सन्दर्भमें आचार्य 'यादवप्रकाश'ने प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'की रचना की। आप विशिष्टाद्वैतवादी ब्राह्मण थे। ये 'तामिलनाडु' राज्यान्तर्गत 'काञ्चीपुरम्' या 'काञ्चीवरम्'के निकटवर्ती 'तिरुप्पुटकुलि' या 'गृध्रसरस' ग्रामके निवासी थे। पहले आप कट्टर अद्वैतवादी श्रीशङ्कराचार्यके मतानुयायी थे। इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र'पर एक 'यादवभाष्य' लिखा था और उसे ये 'शाङ्करभाष्य'के साथ-साथ अपने शिष्योंको पढ़ाया करते थे। कहा जाता है कि 'तिरुप्पुटकुलि'में स्थित 'विजयराघव स्वामी-मन्दिर'में दो साधुओंकी मूर्तियाँ हैं, उनमें-से एक मूर्ति एक दण्ड धारण किये हुए अद्वैतवादी आचार्य 'यादवप्रकाश'की है और दूसरी त्रिदण्ड धारण किये हुए विशिष्टाद्वैतवादी 'रामानुजाचार्य'की है। एक बार अपने शिष्य रामानुजाचार्यके साथ शास्त्रार्थ होनेपर आचार्य यादवप्रकाश विशिष्टाद्वैतवादी होकर त्रिदण्ड धारण कर लिये।



इसका प्रमाण यह दिया जाता है कि 'काञ्चीपुरम्' में स्थित 'वरदाचार्य स्वामी'-के मन्दिरकी भित्तिपर एक चित्रमें त्रिदण्ड धारण किये हुए आचार्य 'यादव-प्रकाश' अपनी शिष्य-मण्डलीके साथ चित्रित हैं। शिष्य-मण्डलीमें रामानुजाचार्यका भी चित्र है।

आचार्य यादवप्रकाशने 'पिङ्गल छन्दःसूत्र'पर भी भाष्य लिखा था। इनके रचे हुए 'यतिधर्मसमुच्चय' नामक ग्रन्थका वैष्णव-सम्प्रदाय में बहुत आदर है। आप जीवनके अन्तिम दिन तक वैष्णव संन्यासीके रूपमें 'काञ्चीपुरम्' में ही रहे।

उपर्युक्त द्विशताधिक कोषोंके अतिरिक्त भी अन्यान्य-कोषोंके प्रमापक वचनों-का उद्धरण यत्र-तत्र संस्कृत ग्रन्थोंकी व्याख्याओंमें उपलब्ध होनेसे उक्त कोषा-तिरिक्त अन्य कोषग्रन्थोंका अस्तित्व भी सिद्ध होता है। एतदतिरिक्त अर्वाचीन कतिपय विद्वानोंने और भी संस्कृत कोषोंकी रचना की है, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं—

१. उपनिषद्वाक्यकोष :	कर्नल जी० ए० जाकोव
२. उपनिषद्वाक्यमहाकोष :	गजाननके पुत्र शम्भु साधसे
३. कविकर्पटिका :	वादीन्द्रकवि
४. कोषकल्पतरु :	विश्वनाथ
५. कोशकौमुदी :	रामदत्तत्रिपाठीशास्त्री
६. कोषसंग्रह :	
७. कोषावतंस :	राघवकवि
८. तिङन्तार्णवतरणि :	
९. धर्मकोष :	श्रीलक्ष्मणशास्त्री
१०. भोटसंस्कृताभिधान :	लोकेशचन्द्र
११. मीमांसाकोष :	केवलानन्दसरस्वती
१२. शिवकोष :	शिवदत्त
१३. आख्यानकमणिकोष :	
१४. बाङ्मयाणव :	पं० रामावतारशर्मा
१५. वाचस्पत्यम् :	तर्कवाचस्पति तारानाथभट्टाचार्य
१६. शब्दकल्पद्रुम :	राधाकान्तदेवबहादुर
१७. वास्तुरत्नकोष :	
१८. देशीनाममाला :	हेमचन्द्राचार्य

### वैजयन्ती कोषका वैशिष्ट्य—

यह कोष कुल आठ काण्डोंमें पूरा हुआ है। इसे दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है—एक पर्याय-भाग तथा दूसरा नानार्थ-भाग। प्रथम पर्याय-भागमें

पाँच काण्ड हैं—१ स्वर्गकाण्ड, २ अन्तरिक्षकाण्ड, ३ भूमिकाण्ड, ४ पाताल-काण्ड और ५ सामान्यकाण्ड। उनमें क्रमशः ३, ४, ९, ४ और ४ अध्याय तथा कुल २३७० श्लोक हैं। द्वितीय पर्याय-भागमें तीन काण्ड हैं—१ द्व्यक्षरकाण्ड, २ त्र्यक्षरकाण्ड और ३ सामान्यकाण्ड; इनमें क्रमशः ४, ४ और ९ अध्याय तथा कुल ८४२ श्लोक हैं। ग्रन्थकारने अन्तमें ग्रन्थप्रशस्तिके ४ श्लोक दिये हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थकी श्लोक-संख्या ३२१६ अर्थात् अमरकोषसे द्विगुणाधिक है।

महाकाव्यों एवं कोषादिकोंके संस्कृतव्याख्याकार मल्लिनाथ, नारायण, क्षीरस्वामी, भानुजिदीक्षित, सर्वदेव, महेश्वर, मुकुट आदिने 'इति यादवः, इति वैजयन्ती' लिखकर अपनी-अपनी व्याख्याओंकी पुष्टिके लिए स्थान-स्थानपर इस कोषके बहुशः उद्धरण दिये हैं। इन उद्धरणोंमें अधिकांश नानार्थ-भागोक्त अंशों-का ही प्रयोग किया गया है।

यादवप्रकाश जिसका पर्याय कहना आरम्भ करते हैं, उससे सम्बद्ध समस्त विषयोंका साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर देते हैं। उदाहरणार्थ इसका कुछ दिग्दर्शन नीचे कराया जाता है—

(क) 'अग्निवैश्वानरः.....' ( १।२।१४ ) से आरम्भकर 'अग्नि'-के पर्यायवाचक शब्द कहनेके उपरान्त तत्सम्बद्ध 'अग्निप्रिया, स्कन्धाग्नि, काष्ठाग्नि, तुषाग्नि, करीषाग्नि, मेघाग्नि, प्रेतदाहा ( चिता )ग्नि, दैत्याग्नि, पित्र्यग्नि, यज्ञाग्नि, ऋत्विग्नि, विवाहाग्नि आदि समस्त अग्नियोंका पृथक्-पृथक् नाम-निर्देश किया गया है।

(ख) ब्राह्मणादि वर्णचतुष्टयका पर्याय वर्णन करनेके बाद 'उपवर्णास्तु सङ्कीर्णाः.....' ( ३।५।२ ) से आरम्भकर वर्णसङ्कर जातियोंकी उत्पत्ति एवं उनके नामोंका निर्देश विशद रूपसे किया गया है। तदनन्तर 'एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते.....' ( ३।४।६४ ) से 'गरानलप्रयोगाच्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः' ( ३।५।१०८ ) तक प्रकरणागत इन वर्णसङ्कर जातियोंकी जीवि-कादिका विस्तारके साथ वर्णन किया गया है।

(ग) इसी तृतीय काण्डके षष्ठाध्यायमें कापोत, औदुम्बर, भिक्षु, व्युष्टि, सौमिक, बलिक, नौस, पुष्पाढ्य, द्विकालिक, शीर्णिक, मूलिक, पातालमूलिक, अवभाव-काशिक, शिवव्रती, रुद्रव्रती, अहिब्रती आदि-आदि व्रतियों एवं तत्पृच्छ, अतिकृच्छ, चान्द्रायणादि बहुविध व्रत साङ्गोपाङ्ग वर्णित हैं। ( ३।६।१२५—१४९ )

(घ) 'शुक्ले शुभ्रशुचिश्येताः.....' क्रिमिरः सितलोहितः' ( ५।१।१०—५।३।२५ ) द्वारा श्वेतादि वर्णोंका पृथक्-पृथक् पर्याय एवं दो-दो, तीन-तीन वर्णों ( रङ्गों ) के मिश्रणसे बने हुए वर्णोंके नामोंका अत्यन्त विस्तारके साथ



वर्णनकर 'मधुरस्तु रसज्येष्ठो.....'( ५।३।२५ )से षड्रसोंका सामान्यतः पर्याय-निर्देश करनेके पश्चात् एकाधिक ( दो, तीन, चार और पांच ) रसोंके सम्मिश्रणसे निष्पन्न रसों ( स्वादों ) के नाम अलग-अलग '—त्रिषष्टिस्तु ततो रसाः' ( ५।३।४५ ) कहे गये हैं, इस प्रकार छः रसोंके मिश्रणसे बने ६३ रसोंका नाम-निर्देश करना ग्रन्थकारकी प्रतिभाका अनुपम उदाहरण है।

उपर्युक्त दिग्दर्शनमात्रसे 'स्थालीपुलाक' न्याय-द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि विषयान्तरोंके समाविष्ट होनेसे अन्यान्य कोष आकृति एवं श्लोक-सङ्ख्याकी दृष्टिसे विशाल भले ही हों, किन्तु ऐसा विशद वर्णन किसी भी कोषमें उपलब्ध नहीं है।

### आधुनिक संस्कृत-साहित्यके इतिहास-ग्रन्थोंमें कोषकी उपेक्षा ?

संस्कृत साहित्यके इतिहासोंके लेखक महानुभावोंने अपने-अपने ग्रन्थोंमें इतिहास, वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, पुराण, काव्य, नाटक, छन्द, चम्पू, आख्यायिका नीतिशास्त्र आदिके विषयमें तो स्वतन्त्र शीर्षक देकर सैकड़ों पृष्ठ लिखनेका कष्ट किया है, किन्तु इतनी बड़ी संख्यावाले ( लगभग २२५ से भी अधिक ) लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें उन इतिहास-लेखक महानुभावोंकी वाच्यमिता तथा बद्धमुष्टिता देखकर महान् आश्चर्य एवं खेद होता है। कोषके विषयमें और विशद विवेचन करनेके लिए मैंने बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानोंके लिखे दर्जनों संस्कृत साहित्य-के इतिहास-ग्रन्थोंके पन्ने उलटे, किन्तु किसीमें भी उपर्युक्त लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें प्रायः कुछ नहीं पा सका। संभवतः इसका प्रधान कारण यह है कि वैदिक एवं अन्य संस्कृत साहित्यके अनुसन्धानमें अधिकतम द्रव्य-राशि एवं समय लगाकर उक्त सं० साहित्यका उद्धार करनेका प्रशस्त श्रेय प्राप्तकर भी अमर-भाषा संस्कृतको मृत भाषा कहनेवाले संस्कृत साहित्यके कुछ अंग्रेज इतिहास-लेखकोंका अनुकरण करनेवाले हमारे भारतीय, संस्कृत साहित्यके इतिहास-लेखकोंने भी लौकिक संस्कृत कोषोंपर कुछ लिखनेकी कृपादृष्टि करना उचित या आवश्यक नहीं समझा। मैं श्रीवाचस्पति गैरोलाजीको धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपने 'संस्कृत साहित्यका इतिहास' ग्रन्थमें 'कोश'को स्वतन्त्र शीर्षक देकर इसके विषयमें विशदरूपसे तो नहीं, किन्तु कुछ लिखनेकी उदारता प्रदर्शित की है।

### आत्म-निवेदन—

अध्ययन-कालसे ही कोष-ग्रन्थोंकी ओर अपना प्रबल झुकाव होनेसे मैंने सर्व-प्रथम 'अमरकोष'की, राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'मणिप्रभा' व्याख्या, 'अमरचन्द्रिका' नामक टिप्पणीके साथ लिखी, प्रकाशन होनेपर विद्वत्समाजने उसे अपनाकर

अन्यान्य ग्रन्थ लिखनेके लिए मुझे प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप 'हेमचन्द्राचार्य'कृत 'अभिधानचिन्तामणि'की भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखनेके बाद मैंने श्रीभानुजिदीक्षित-विरचित 'व्याख्यामुधा' (रामाश्रमी) सहित 'अमरकोष'-के सम्पादनका कार्य हाथमें लिया। उक्त व्याख्यामें उद्धृत सूत्रों एवं ग्रन्थान्तरीय प्रमापक वचनोंको उपलब्ध तत्तद्ग्रन्थोंसे मिलानकर उन सबोंका स्थल-निर्देश तथा त्रुटिपूर्ति करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'प्रकाश' व्याख्याके साथ उसका सम्पादन किया। इन दोनों ग्रन्थोंको भी अपनाकर गुणग्राही विद्वद्गणने मेरा द्विगुणित उत्साह बढ़ाया। ये दोनों ग्रन्थ बहुत समयसे अप्राप्य थे।

इनके अतिरिक्त, अपने गुरुजनोंके आदेश, सुहृद्वर्गकी सद्भावना एवं सहानुभूति पूर्ण प्रेरणासे उत्साहित होकर मैंने महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंश' महाकाव्य, माघ-रचित 'शिशुपालवध' महाकाव्य, श्रीहर्षरचित 'नैषधचरित' महाकाव्य, मनु-प्रणीत 'मनुस्मृति' ग्रन्थोंकी गुत्थियोंको 'विमर्श'में स्पष्ट करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखी। उपर्युक्त सभी ग्रन्थ 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के द्वारा यथासमय प्रकाशित होकर सर्वजन-सुलभ हो गये हैं और नीर-क्षीर-विवेकी हंसके समान गुणैकपक्षपातपरायण विद्वत्समाजने इन्हें अपनाकर मुझे तथा प्रकाशकको अपने-अपने कार्यमें उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए संलग्न रहनेके लिए समय-समयपर प्रोत्साहित किया है।

### प्रकृत ग्रन्थका सम्पादन—

महाकाव्य आदिके संस्कृत व्याख्याकारोंके द्वारा प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'के उद्धरण देख-देखकर इसे भी सर्व-जन-सुलभ करानेकी मेरी प्रबल आकाङ्क्षा बहुत दिनोंसे हो रही थी। इसे उपलब्ध करनेके लिये स्वयं तथा मित्रों-द्वारा बम्बई, झालरापाटन, व्यावर आदि स्वपरिचित बड़े-बड़े पुस्तकालयोंके साथ पत्राचार करनेपर भी मैं सफल नहीं हो सका। किन्तु सुलतानगंज (भागलपुर)में स्थित राजकीय संस्कृतोच्च विद्यालयसे स्थानान्तरित होकर जब मैं 'आरा'में आया, तब कुछ वर्षोंके उपरान्त वार्ता-प्रसङ्गमें इस कोषकी चर्चा आनेपर मेरे अन्यतम मित्र डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० (संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी), ज्योतिषाचार्य, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, "जैन महाविद्यालय, आरा"ने इस 'वैजयन्तीकोष'की अत्यन्त प्राचीन प्रति मुझे देनेकी कृपा की। जो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण होनेके कारण प्रेसमें मुद्रणार्थ देने योग्य नहीं थी। अतः मैंने बड़ी सावधानीसे इसकी पाण्डुलिपि तैयार की है। लिङ्गनिर्देशपूर्वक इसकी शब्दसूची तैयार करनेमें मुझे अनेक कोषोंका अध्ययन करना पड़ा है। पाठकोंको इससे अधिक सोबिध्य प्राप्त होगा। सर्वांगपूर्ण पाण्डुलिपि तैयार हो जानेके बाद



मैंने सहस्रों अलभ्य संस्कृत ग्रन्थ-रत्नोंके प्रकाशक 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के संचालक महोदयको प्रकाशनार्थ इसे दी और उन्होंने इसको प्रकाशित करनेकी सहर्ष स्वीकृति दे दी, जिसके फल-स्वरूप अत्यन्त दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण इस ग्रन्थ-रत्नको सर्व-सुलभ होनेका सत्सीमाग्य प्राप्त होने जा रहा है ।

मैं 'अमरकोष' तथा 'अभिधानचिन्तामणि' कोषद्वयके समान ही इसकी भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें विशद व्याख्या लिखना प्रारंभ कर दिया था, किन्तु सांसारिक विविध कारणोंसे मेरी इच्छा त्वरित पूरी नहीं हो सकी—प्रस्तुत संस्करणमें हिन्दी व्याख्याका समावेश नहीं हो सका । अगले संस्करणको हिन्दी व्याख्यासे समन्वित कर अपनी चिराकांक्षा पूर्ण करनेका प्रयास करूँगा ।

### आभार-प्रदर्शन—

सर्वप्रथम 'डा० श्री गुस्ताव आपर्ट, पी० एच्० डी०, अध्यापक संस्कृत तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान, प्रेसीडेंसी महाविद्यालय, मद्रास'का बहुत आभारी हूँ, जिनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थको आधार मानकर मैं इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य करनेमें समर्थ हो सका हूँ । तदनन्तर अपने स्नेही डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री, डी० लिट०, का तथा उन्हींके सनामा, 'जैन सिद्धान्त भवन, आरा'के वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष श्री नेमिचन्द्र शास्त्री, एम० ए०, साहित्याचार्य'का अतिशय आभार मानता हूँ, जिनकी कृपासे इस पुस्तककी मूल प्रति उपलब्ध हुई, और ग्रन्थके प्रकाशनान्ततक मेरे पास रहकर प्रमादादि दोषवश उपस्थित सन्देहोंका निराकरण करनेमें सहायिका होती रही । 'संस्कृत साहित्य-का इतिहास' ग्रन्थके लेखक श्री वाचस्पति गैरोलाका भी मैं आभारी हूँ, जिनका ग्रन्थ इस भूमिकाके लिखनेमें सहायक हुआ है । चौखम्बा संस्कृत सीरीजके प्रमुख कार्यकर्ता एवं मेरे परम मित्र व्या० आ० प० श्रीरामचन्द्र झाजीको भूरिशः धन्यवाद देता हूँ, जिनकी देख-भाल एवं सहयोगमें यह ग्रन्थ अपेक्षाकृत शीघ्र और शुद्ध प्रकाशित हो रहा है । इस ग्रन्थके सम्पादन-कालमें अपना निरन्तर सहयोग देनेवाले स्नेहभाजन अपने आत्मज चि० श्री रामकिशोर मिश्रको बहुशः आशीर्वाद-प्रदान करता हूँ ।

अन्तमें अत्यन्त दुर्लभ या अमुद्रित परमोपयोगी सहस्रशः संस्कृत ग्रन्थोंके प्रकाशक 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस' तथा 'चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी', के वर्तमान प्रमुख व्यवस्थापक बन्धुयुगल ( चि० श्री मोहनदास गुप्त एवं श्री विट्ठलदास गुप्त )को भी साशीर्वाद भूरिशः धन्यवाद देता हुआ मैं भगवान्से प्रार्थना करता हूँ कि उक्त दोनों बन्धु अपने परिवारके सहित

स्वस्थ, सुखी एवं उत्तरोत्तर ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर चिरायु हों तथा अपने पूर्वजोंके समान संस्कृत साहित्यके उद्धारमें सदा संलग्न रहें । इस ग्रन्थके सम्पादन एवं प्रकाशनमें अन्यान्य जिन महानुभावोंकी कृतियों या प्रकारान्तरसे सहायता मिली है उन सबोंके प्रति आभार-प्रदर्शन करता हूँ ।

इस सृष्टिमात्रमें जगन्निघन्ता परात्पर परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त कोई भी प्राकृत प्राणी सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं हो सकता, अतः इस ग्रन्थके सर्वतोभावेन शुद्ध होनेका दावा करना मुझ-जैसे अल्पज्ञके लिए सर्वथा अशक्य है । इस कारण मैं गुणग्राही विद्वज्जनोंसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि मेरे लिखने, अत्यन्त सूक्ष्माक्षरोंके संयोजन एवं संशोधन करनेमें प्रमाद या मानव-सुलभ भ्रान्तिवश कोई अशुद्धि रह गई हो तो वे मुझे क्षमा करते हुए सूचित करें, जिससे उसका निराकरण अग्रिम-संस्करणमें किया जा सके । क्योंकि—

‘नैवानवद्यं जगतीह किञ्चिन्न

वाऽप्यवद्यं किल वस्तुजातम् ।

ततो बुधा आददते गुणान् हि

हंसा यथा क्षीरपयोविवेकात् ॥

तथा—

‘गच्छतः स्वलनं कापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥’

इति शम् ॥

‘गोविन्द-कुटीर’

केसठ ( शाहाबाद )

हरिप्रबोधिनी ११

सं० २०२८ वि०

विद्वज्जनविधेयः—

मिश्रोपाह्व हरगोविन्द शास्त्री



## विषय-सूची

विषय	पृष्ठाङ्क
प्रस्तावना	७-२३
१. परिभाषा	१
( पर्याय-भाग : काण्ड १-५ )	२-१५८
( १ ) स्वर्गकाण्ड—	२-१०
१. आदिदेवाध्याय	१
२. लोकपालाध्याय	२
३. यक्षाध्याय	१०
( २ ) अन्तरिक्षकाण्ड—	११-२४
१. ज्योतिरध्याय	११
२. मेघाध्याय	१७
३. खगाध्याय	१८
४. शब्दाध्याय	२२
( ३ ) भूमिकाण्ड—	२५-१०७
१. देशाध्याय	२५
२. शैलाध्याय	२९
३. वनाध्याय	३२
४. पशुसंग्रहाध्याय	४७
५. मनुष्याध्याय	५२
६. ब्राह्मणाध्याय	६०
७. क्षत्रियाध्याय	७५
८. वैश्याध्याय	८९
९. शूद्राध्याय	९९
( ४ ) पातालकाण्ड—	१०८-१३६
१. सरीसृपाध्याय	१०८
२. जलाध्याय	११२
३. पुराध्याय	११६
४. भूताध्याय	१२७



( ५ ) सामान्यकाण्ड	...	१३७-१५८
१. गणाध्याय	...	१३७
२. धर्मकर्माध्याय	...	१४२
३. गुणाध्याय	...	१४५
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१४९
( नानार्थभाग : काण्ड ६-८ )	...	१५९-२२४
( ६ ) द्व्यक्षरकाण्ड—	...	१५९-१७२
१. पुंलिङ्गाध्याय	...	१५९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१६४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१६८
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१७१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१७३
( ७ ) त्र्यक्षरकाण्ड—	...	१८०-१९८
१. पुंलिङ्गाध्याय	...	१८०
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१८६
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१८८
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१९१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१९३
( ८ ) शेषकाण्ड—	...	१९९-२२४
१. पुंलिङ्गाध्याय	...	१९९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	२०४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	२०६
४. अभिधेयवलिङ्गाध्याय	...	२०८
( अर्थवलिङ्गाध्याय )	...	२१०
५. नानालिङ्गाध्याय	...	२१३
६. पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्याय	...	२१५
७. अनेकार्थाव्ययाध्याय	...	२१८
८. अव्ययपर्यायाध्याय	...	२२०
९. लिङ्गसंग्रहाध्याय	...	२२५
ग्रन्थोपसंहार	...	२२७
परिशिष्ट	...	२२७
शब्दानुक्रमणिका	...	१-१७०

॥ श्रीः ॥

## वैजयन्तीकोषः

### अथ परिभाषाध्यायः

ओंकारार्थाय तत्त्वाय वाच्यवाचकशक्तये ।  
 ब्रह्मसंज्ञाय पूर्वेषां गुरुणां गुरवे नमः ॥ १ ॥  
 प्रकाशयाष्टविधं लिङ्गं निर्लिङ्गं वचनानि च ।  
 वैजयन्तीति विख्यातं क्रियते नामशासनम् ॥ २ ॥  
 स्त्रीपुंनपुंसकं लिङ्गं संकीर्णं तच्च पञ्चधा ।  
 नृस्त्री नृषण्डषण्डस्त्री त्रिलिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ॥ ३ ॥  
 समासलिङ्गाद्विधितः साहचर्यात् पृथक्कृतेः ।  
 लिङ्गं विद्यात् प्रयोगाच्च क्तिन् सर्वत्रापि च स्त्रियाम् ॥ ४ ॥  
 यत्प्रवृत्तं समासस्य लिङ्गं तत्स्यात् समासिनाम् ।  
 विशेषविधितः कापि लिङ्गं तत्राप्ययं क्रमः ॥ ५ ॥  
 स्त्रीलिङ्गे स्त्रीत्ययं शब्दः पुंलिङ्गे ना पुमानिति ।  
 षण् क्लीनपुमिति क्लीबे ये च षण्डार्थवाचिनः ॥ ६ ॥  
 त्रिष्वित्युक्तिर्वाच्यलिङ्गे त्रयीशब्दस्त्रिलिङ्गके ।  
 अस्त्रीत्यादि निषेधेषु नृषण्डादीतरद्वयम् ॥ ७ ॥  
 ज्ञातैर्लिङ्गैः साहचर्यात् कचित् स्याल्लिङ्गनिश्चयः ।  
 एकत्र सव पुंलिङ्गाः स्त्रियोऽन्यत्रान्यतो नपुम् ॥ ८ ॥  
 इत्येकस्यापि पर्याया लिङ्गायात्र पृथक्कृताः ।  
 प्रयोगात् प्रायशो लिङ्गमुदन्तः संशये पुमान् ॥ ९ ॥  
 सन्दिग्धद्विवचोऽन्तं स्त्री ना स्याद्बहुवचोऽन्तकम् ।  
 समासे स्युः पृथक् सर्वे शब्दा बहुवचोऽन्तके ॥ १० ॥  
 न पूर्वशब्दभागत्र पुनस्त्वन्तमथादितः ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां परिभाषाध्यायः ।



## १. अथ स्वर्गकाण्डः

आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

स्वर्गो नाकः सुरावास ऊर्ध्वलोकः फलोदयः ।  
 सौरिको भोगभूमिः स्त्री दिवि द्यौश्च त्रिविष्टपम् ॥ १ ॥  
 अमर्त्यभवनं गौश्च त्रिदिवः स्यात्स्वरव्ययम् ।  
 देवा निलिम्पा मरुतो गीर्वाणा वायुनाः सुराः ॥ २ ॥  
 आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना विवस्वन्तो दिवौकसः ।  
 आदिदेवा दिविषदो लेखा अदितिर्नन्दनाः ॥ ३ ॥  
 सुपर्वाणः क्रतुभुजो निर्जरा अमृताशनाः ।  
 बर्हिर्मुखा विट्पतयस्त्रिदशा हव्ययोनयः ॥ ४ ॥  
 अमर्त्याश्चाथ न स्त्री स्याद्देवतं देवता स्त्रियाम् ।  
 त्रय एवादिदेवाः स्युर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ५ ॥  
 आजानजाः स्वतोदेवाः कर्मदेवास्तु कर्मभिः ।  
 ब्रह्मा विधाता विश्वात्मा धाता स्रष्टा प्रजापतिः ॥ ६ ॥  
 हिरण्यगर्भो द्रुहिणो विरिञ्चः कश्चतुर्मुखः ।  
 पद्मनाभः सुरज्येष्ठश्चिरजीवी सनातनः ॥ ७ ॥  
 शतानन्दः शतधृतिः स्वयंभूः सर्वतोमुखः ।  
 परमेष्ठी विश्वरेताः पुरुषो हंसवाहनः ॥ ८ ॥  
 पद्मभूः प्राणदो वेधा द्रुघणो नाभिजो विधिः ।  
 वाग्वाणी भारती भाषा गौर्गीर्वाह्मी सरस्वती ॥ ९ ॥  
 विष्णुर्नारायणो बभ्रुश्चक्रपाणिर्जनार्दनः ।  
 दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षस्त्रिकुट्टिष्ठश्चराः ॥ १० ॥  
 पीताम्बरो हृषीकेशो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः ।  
 श्रीवत्सः श्रीपतिः शार्ङ्गो श्रीवत्साङ्कोऽच्युतो हुणः ॥ ११ ॥  
 वासुदेवः स्वभूश्चक्री वैकुण्ठः पुरुषोत्तमः ।  
 अरिष्टनेमिरजितः श्रीधरो यज्ञपूरुषः ॥ १२ ॥  
 मुञ्जकेशी मुररिपुर्गदापाणिर्धोऽक्षजः ।  
 अनन्तशायी वृन्दाको मुकुन्दो धरणीधरः ॥ १३ ॥  
 शतानन्दः शतावर्तो युगावर्तः सुरोत्तमः ।  
 कालकुन्धो रन्तिदेवः केशवो गरुडध्वजः ॥ १४ ॥  
 पद्मनाभो विश्वरूपः कृष्णो हरिरसंपुषः ।  
 कैटभारिर्ब्रह्मनाभो गोविन्दो मधुसूदनः ॥ १५ ॥  
 आचारा वैष्णवी सूक्ष्मा लक्ष्मीः पुष्टिर्निरञ्जना ।

आदिदेवाध्यायः १ ]

स्वर्गकाण्डः १.

३

जीवनी मोहनी माया नवैता विष्णुशक्तयः ॥ १६ ॥  
 कौस्तुभोऽस्य मणिलक्ष्म श्रीवत्सो नन्दकस्त्वसिः ।  
 चापः शार्ङ्ग पाञ्चजन्यः शङ्खश्चक्रं मुदर्शनम् ॥ १७ ॥  
 कौमोदकी गदाऽथास्य मत्स्याद्यैः समनामकाः ।  
 अवतारा नृसिंहस्तु हिरण्यकशिपुद्विषन् ॥ १८ ॥  
 उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिकण्टकः ।  
 आदित्यो द्विपदस्तार्क्ष्यस्त्रिविक्रम उरुकमः ॥ १९ ॥  
 विष्णुश्च जामदग्न्यस्तु रामो दाशरथिः पुनः ।  
 राघवो जानकीकान्तो रामो रावणसूदनः ॥ २० ॥  
 दूषणारिः खरारिश्च कुम्भकर्णारिरेव च ।  
 राक्षसघ्नः सुखकरः कौसल्यानन्दवर्धनः ॥ २१ ॥  
 पार्थिवेन्द्रो धनुष्पाणिर्बलिर्दशरथात्मजः ।  
 रामः संकर्षणः पौरो बलदेवो हलायुधः ॥ २२ ॥  
 बलभद्रः प्रलम्बारिः कालिन्दीकर्षणो हली ।  
 तालाङ्को रेवतीकान्तः सात्त्वतो मुसली बली ॥ २३ ॥  
 भद्राङ्गो भद्रवदनः कामपालः सितासितः ।  
 बलो नीलाम्बरश्चाथ तस्य संवर्तकं हलम् ॥ २४ ॥  
 सौनन्दमस्य मुसलं कृष्णो दामोदरोऽद्रिधृत् ।  
 दाशार्हो नरकारातिर्वनमाली गदाग्रजः ॥ २५ ॥  
 शैनिः कंसरिपुः शौरिः सारथिस्तस्य दारुकः ।  
 वसुदेवोऽस्य जनको दुन्दुरानकदुन्दुभिः ॥ २६ ॥  
 प्रद्युम्नो मन्मथः कामो मारो मनसिजः स्मरः ।  
 कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गो मीनाङ्को मकरध्वजः ॥ २७ ॥  
 पुष्पधन्वा रतिपतिः शंबरारिरनन्यजः ।  
 शूर्पकारिर्मधुसखः पञ्चेषुर्विषमायुधः ॥ २८ ॥  
 बन्धुर्वामो जराभीरुर्हृच्छयो मधुसारथिः ।  
 ब्रह्मसूरनिरुद्धः स्याद्दृश्यकेतुरुषापतिः ॥ २९ ॥  
 अथान्ये ह्यवताराः स्युर्नरनारायणावृषी ।  
 अश्वो ह्यशिराः शेषः कपिलो व्यास इत्यपि ॥ ३० ॥  
 दत्तात्रेयश्च कल्की च बुद्धश्चेत्येवमादयः ।  
 कपिलस्तु महाविष्णुर्व्यासः सत्यवतीसुतः ॥ ३१ ॥  
 पाराशर्यो द्वैपायनः कृष्णद्वैपायनोऽपि च ।  
 बुद्धस्तु श्रीघनः शास्ता बोधिसत्त्वो विनायकः ॥ ३२ ॥



समन्तभद्रः सर्वज्ञो मारजिल्लोकजिज्जिनः ।  
 षडभिज्ञो दशबलो धर्मराजस्तथागतः ॥ ३३ ॥  
 मुनीन्द्रः सुगतः शाक्यो मुनिरद्वयवाद्यपि ।  
 शाक्यसिंहस्तु सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिर्गुरुः ॥ ३४ ॥  
 गौतमश्चार्कबन्धुश्च जिनस्त्वहंस्त्रिकालदृक् ।  
 अष्टकर्मपरिभ्रष्टो वीतरागश्च केवली ॥ ३५ ॥  
 लक्ष्मीः पद्मालया शक्तिर्मा क्षीरोदमुतेन्दिरा ।  
 रमाब्धिजा भार्गवी च स्त्रीलिङ्गाश्चाभुजाह्वयाः ॥ ३६ ॥  
 गरुडः काश्यपसुतो गरुत्मानुरगाशनः ।  
 सुपर्णातनयस्तादुर्यो वैनतेयो महेन्द्रजित् ॥ ३७ ॥  
 पन्नगारिर्विष्णुरथः सुपर्णो विहगाधिपः ।  
 महेश्वरः पशुपतिः श्रीकण्ठः पांसुचन्दनः ॥ ३८ ॥  
 शङ्करो गिरिशो रुद्रो गिरीशः शशिभूषणः ।  
 महेश्वरश्चन्द्रमौलिः पिनाकी शशिशेखरः ॥ ३९ ॥  
 कपर्दी धूर्जटिः शर्वः कपाली नीललोहितः ।  
 ईश ईश्वर ईशानो भर्गो मृत्युञ्जयो मृडः ॥ ४० ॥  
 व्योमकेशो महादेवः प्रमथाधिपतिः शिवः ।  
 शूली दक्षाध्वरारातिः कामारिः परमेश्वरः ॥ ४१ ॥  
 कृत्तिवासा अहिर्बुध्न्यो नीलम्रीवस्त्रिलोचनः ।  
 गङ्गाधरो विरूपाक्षो वामदेवो वृषध्वजः ॥ ४२ ॥  
 भूतेशः खण्डपरशुः स्थाणुरन्धकसूदनः ।  
 भगनेत्रान्तको भीमस्त्रिपुरारिर्हंगायुधः ॥ ४३ ॥  
 कटाटङ्को जटाटीरो जटाभाटो महानटः ।  
 मिण्डीकान्तो रेरिहाणः सर्वज्ञो नन्दिवर्धनः ॥ ४४ ॥  
 स्थालो डिण्डीश उड्डीशः कण्ठेकालो महाव्रतः ।  
 कृतानुरेता जोटिङ्गः कङ्कटीक उमापतिः ॥ ४५ ॥  
 खट्वाङ्गी मन्दरमणिरुलन्दो वृषवाहनः ।  
 उग्रः कटप्रदिग्वासा भाण्डः षाण्डोऽकुतश्चनः ॥ ४६ ॥  
 बहुरूपोऽर्धमकुटो दशबाहुर्दशाव्ययः ।  
 ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यं तपः सत्यं क्षमा धृतिः ॥ ४७ ॥  
 स्रष्टृत्वमात्मसम्बन्धोऽप्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।  
 अव्ययानि दशैतानि शम्भोरव्ययमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥  
 वामा ज्येष्ठा शिवा रौद्री चित्तोन्मादकरी सुखा ।  
 काली कलेवरा भूतदमनी चेशशक्तयः ॥ ४९ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः खट्वाङ्गोऽस्य सुखङ्घुणः ।  
 पिनाकोऽजगधं युग्यमजगावमजीगवम् ॥ ५० ॥  
 प्रमथाः स्युः पारिषदा नन्दी स्यान्नन्दिकेश्वरः ।  
 अथ कूर्माण्डकः केलिकिलो गणपतिप्रियः ॥ ५१ ॥  
 भृङ्गरीटः पुनर्भृङ्गी चर्मा भृङ्गिरिटिः शला ।  
 वृषाणो लूनदोर्बाणो भेलुकस्तु कृतालकः ॥ ५२ ॥  
 वीरभद्रस्तु देवाजो विघ्नेशस्तु विनायकः ।  
 लम्बोदरो हस्तिराज एकदन्तो गजाननः ॥ ५३ ॥  
 द्वैमातुरः परशुभृदाखुयानो गणाधिपः ।  
 कुमारः शरजः स्कन्दस्तारकारिरुमासुतः ॥ ५४ ॥  
 महासेनो महातेजाः शक्तिपाणिर्गुहोऽग्निभूः ।  
 वैजयन्तः सिद्धसेनः सेनानीः शिखिवाहनः ॥ ५५ ॥  
 स्वामी गाङ्गेयगौरेयब्रह्मचारिमहौजसः ।  
 षाण्मातुरः कार्तिकेयो ब्रह्मगर्भः षडाननः ॥ ५६ ॥  
 सुब्रह्मण्यो नीलदंष्ट्रः क्रौञ्चारिः कुक्कुटध्वजः ।  
 अस्य शाखो विशाखश्च नैगमेषश्च पृष्ठजाः ॥ ५७ ॥  
 उमा मेनात्मजा रौद्री रुद्राणी सर्वमङ्गला ।  
 आर्याऽद्रिजा महादेवी शर्वाणी पार्वती शिवा ॥ ५८ ॥  
 भ्रामरी रेवती षष्ठी गौतमी बाभ्रवी सती ।  
 अपर्णाऽपरुजा जारी शण्डिली वारुणी हिमा ॥ ५९ ॥  
 बर्हिध्वजा शतमुखी योगिनी परमेष्ठिनी ।  
 सुनन्दा नन्दिनी नन्दा नन्दयन्ती कपालिनी ॥ ६० ॥  
 कालरात्री महारात्री रक्तदन्त्येकपाटला ।  
 एकपर्णा भद्रकाली महाकाली करालिका ॥ ६१ ॥  
 दुर्गा कात्यायनी चण्डी कैटभी सिंहवाहना ।  
 यमेन्द्रकृष्णमैनाकरामाणां भगिनी स्वसा ॥ ६२ ॥  
 विन्ध्यमन्दरकान्तारमलयेभ्यश्च वासिनी ।  
 चर्ममुण्डा तु चामुण्डा चर्चा मार्जारकर्णिका ॥ ६३ ॥  
 कर्णमोटी महाचण्डी महागन्धा कपालिनी ।  
 ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही नारसिंहद्यपि ॥ ६४ ॥  
 कौमारी वैष्णवी चेति ता एताः सप्त मातारः ॥ ६४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचित्तायां वैजयन्तां

स्वर्गकाण्डे आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥



## लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

इन्द्रो दुश्चवनो वज्री वृत्रारिर्वासवो वृषा ।  
 वृद्धश्रवाः शुनासीरः सहस्राक्षो दिवस्पतिः ॥ १ ॥  
 वास्तोष्पतिर्बलरिपुः पुरुहूतः पुरन्दरः ।  
 मघवान् पूर्वदिक्पालः पृतनाषाद् सुराधिपः ॥ २ ॥  
 संक्रन्दनो हरिहयो गोत्रभृत् पाकशासनः ।  
 पुलोमशत्रुर्हरिवानूर्ध्वधन्वा शचीपतिः ॥ ३ ॥  
 कारुर्जम्भरिपुर्जिष्णुर्मरुत्वान् हरिवाहनः ।  
 स्वाराड्भुक्षाः सुत्रामा विडौजाः सितकुञ्जरः ॥ ४ ॥  
 भूरिश्रवाश्चित्ररथः सुनासीरो युधिष्ठिरः ।  
 परमन्युर्वज्रपाणिः शतमन्युर्विभीषणः ॥ ५ ॥  
 आखण्डल उग्रधन्वा मेषाण्डोऽप्सरसां पतिः ।  
 खदिरो माहिरो दाल्मिः शयीचिर्वियुनो जयः ॥ ६ ॥  
 गौरावस्कन्दिवन्दीकौ वारणो देवदुन्दुभिः ।  
 महेन्द्रो बाहुदन्तेयस्तुराषाड् वज्रदक्षिणः ॥ ७ ॥  
 वृषण्वसु धनाद्यस्य पुराजः शान्तिकर्मकृत् ।  
 सुतो जयो जयन्तश्च जयदत्तोऽप्यथो सुता ॥ ८ ॥  
 जयन्ती देवनन्दी तु द्वाःस्थः सूतस्तु मातलिः ।  
 प्रासादो वैजयन्तोऽस्य वैजयन्तो ध्वजोऽपि च ॥ ९ ॥  
 अमरावत्यस्य पुरी स्यात् सुदर्शनमित्यपि ।  
 अश्वोऽस्य वृषणश्च स्यादारामस्त्वस्य नन्दनम् ॥ १० ॥  
 क्रीडासरो नन्दिसरः क्रीडाभूस्त्वस्य नन्दिका ।  
 पुलोमजा शचीन्द्राणी पौलोमी जयवाहिनी ॥ ११ ॥  
 ऐरावतो राथन्तरिरभ्रनागोऽभ्रमुप्रियः ।  
 ऐरावणश्चतुर्दंष्ट्रः सूर्यभ्रातारिमर्दनः ॥ १२ ॥  
 अस्त्रियौ वज्रकुलिशौ भिदुरं शतधारकम् ।  
 व्याधामः पुंसि दम्भोलिः शतकोटिः पविर्भिदुः ॥ १३ ॥  
 वह्निर्वैश्वानरो घासिः कृष्णवर्मा समन्तभुक् ।  
 जातवेदा बृहद्भानुर्वीतिहोत्रस्तनूनपात् ॥ १४ ॥  
 दहनो ज्वलनः शुष्मा रोहिताश्च उषर्बुधः ।  
 शोचिष्केशस्त्रिधामाऽग्निरुदर्विः पावकोऽनलः ॥ १५ ॥  
 हिरण्यरेताः सप्तार्चिर्वसुरेता हुताशनः ।  
 कृपीटयोनिरर्चिष्मान् धूमकेतुर्दुरासदः ॥ १६ ॥

मन्त्रजिह्वः सप्तजिह्वः सुभिजह्वो हव्यवाहनः ।  
 आश्रयाशो वातसखः कृशानुर्वीतसारथिः ॥ १७ ॥  
 वभिर्भुजिः पचिः साचिश्चिरिर्वज्रतिरञ्जतिः ।  
 जागृविः सहुरिः सद्विर्दमुना हवनो हवः ॥ १८ ॥  
 सृदाकुर्भरथः पीथो जुहुराण्येषिराशिराः ।  
 तेजोऽपिस्तमपांपित्तं स्वाहाऽग्नायी च तत्प्रिया ॥ १९ ॥  
 स्कन्धाग्निः स्थूलकाष्ठाग्निर्मुर्मुस्तु तुषानलः ।  
 छागणस्तु करीषाग्निर्मेघवह्निरिरमदः ॥ २० ॥  
 कुक्ष्यग्निर्हृच्छयोऽथौर्वे द्वौ संवर्तकवाडवौ ।  
 सहरक्षा दवो दुधस्ताणौ क्षामतरत्समौ ॥ २१ ॥  
 क्रव्यात्तु प्रेतदाह्माग्निर्देवाग्निर्हव्यवाहनः ।  
 सहरक्षास्तु दैत्यानां पितृणां क्रव्यवाहनः ॥ २२ ॥  
 अपोनपात्तु यज्ञाग्निः क्रत्वग्निः स्यादपान्नपात् ।  
 शुक्रान्वाहार्यपचनावध्वरे दक्षिणानिले ॥ २३ ॥  
 गार्हपत्यो गृहपतिः पवमानश्च पश्चिमे ।  
 शंस्य आहवनीयश्च पूर्वोऽग्निर्हव्यवाहनः ॥ २४ ॥  
 सभ्यावसथ्यौ तत्पूर्वावायुः स्यात् पाशुबन्धिकः ।  
 पृथिकृद्वर्त्महोमेषु पदहोमेष्वाग्नीकवान् ॥ २५ ॥  
 आधानादिष्वहस्तानः सुरभिर्यूपकर्मणि ।  
 ब्रह्मौदनाग्निर्भरतो यविष्ठः सवनाहुतौ ॥ २६ ॥  
 महिमास्तु विवाहप्रिवैश्वदेवाभिरङ्कृतः ।  
 व्रतान्ते बहुरन्नादः सुलभः पाकयज्ञिकः ॥ २७ ॥  
 सव्यस्तु मृतके वह्निरपसव्यस्तु सूतके ।  
 धूमस्तरिर्मेघवाही धूपोऽसौ गन्धवासितः ॥ २८ ॥  
 शिखा जिह्वार्चिरपुमान् कीला ज्वाला च नृक्षियोः ।  
 भलका तु महाज्वाला प्रवर्यो नीलकोऽपि च ॥ २९ ॥  
 सप्त जिह्वा पुनः काली कराली विष्फुलिङ्गिनी ।  
 धूम्रवर्णा विश्वरुचिलोहिता च मनोजवा ॥ ३० ॥  
 त्रयी स्फुलिङ्गोऽपुष्पो ना खट्वाङ्गश्चाथ संवरः ।  
 सन्तापः स्यात्प्रकाशस्तु द्योत आलोक आतपः ॥ ३१ ॥  
 दीप्ताग्रं काष्ठमुल्का स्यात् क्रमकोऽलातमुल्मुकम् ।  
 अङ्गारोऽस्त्रा प्रशान्तार्चिरिङ्गालः कारिकाभिविद् ॥ ३२ ॥  
 भसितं भस्म भूतिः स्यादग्न्युत्पात उपाहितः ।



यमः पितृपतिर्दण्डधरो महिषवाहनः ॥ ३३ ॥  
 यमराड् यमुनाभ्राता मन्दे वैवस्वतोऽन्तकः ।  
 सावित्रेयः श्राद्धदेवः समवर्ती परेतराट् ॥ ३४ ॥  
 कालः कृतान्तः शमनः कीनाशो दक्षिणाधिपः ।  
 धर्मराजः पुराणान्तः कालकुन्थो विशीर्णपात् ॥ ३५ ॥  
 पत्नी यमस्य धूमोर्णा चित्रगुप्तस्तु लेखकः ।  
 पञ्जिका त्वग्रसन्धानी कालीची तु विचारभूः ॥ ३६ ॥  
 नरको नारकोऽप्येष निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।  
 अवीच्यन्ता रौरवाद्याः प्रायशो नरका नरि ॥ ३७ ॥  
 नारका जन्तवः प्रेता यात्या अप्यातिवाहिकाः ।  
 प्रेताः परेता वेताला गन्धर्वाः सत्त्वका ग्रहाः ॥ ३८ ॥  
 यातना कारणा दुःखं त्वामनस्यं प्रसूतिजम् ।  
 स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां तद्वदर्थकाः ॥ ३९ ॥  
 अथ रक्षांसि यातूनि राक्षसा अललोहिताः ।  
 रात्रिञ्चरा रात्रिचराः क्रव्यात्क्रव्यादनैर्ऋताः ॥ ४० ॥  
 कैकसेया यातुधानाः पुरुषादाः प्रवाहिकाः ।  
 अनुषा विधुरा रक्तग्रहाः शङ्खव आशराः ॥ ४१ ॥  
 अलक्ष्मीर्निर्ऋतिर्ज्येष्ठा रावणस्तु हरान्तः ।  
 दशास्यो विंशतिभुजश्चतुष्पान्मानमन्दिरः ॥ ४२ ॥  
 लङ्केश्वरो यातुपतिः सन्नाहोऽस्य विचोलकः ।  
 चन्द्रहासस्तु खड्गोऽस्य क्रीडाभूस्त्वमरावली ॥ ४३ ॥  
 अशोकवनिकोद्यानं त्रिशिराः समनीपदः ।  
 इन्द्रजिन्मेघनादः स्यात् ग्रहस्तः स्यादलम्बुसः ॥ ४४ ॥  
 वरुणः शीतलो वामो दुन्दुभिः संवृतोऽप्पतिः ।  
 अम्बुवासोऽम्बुकान्तारः पाशी मकरवाहनः ॥ ४५ ॥  
 प्रचेता यादसान्नाथः प्रत्यगाशापतिस्तथा ।  
 जलभूषण उद्दामो गौरी तु वरुणप्रिया ॥ ४६ ॥  
 वातो वायुर्जगत्प्राणः शुषिलः श्वसनोऽनिलः ।  
 गन्धवाहो गन्धवहो मातरिश्वा समीरणः ॥ ४७ ॥  
 युजिनो लघुगो वातिर्ध्वजप्रहरणो जगत् ।  
 दैत्यदेवो बहः प्राणो नभः प्राणोऽङ्कतिः सरः ॥ ४८ ॥  
 आशुगः पवनः स्पर्शः पवमानः प्रभञ्जनः ।  
 मरुद्गुलिध्वजो मर्कः समीरोऽग्निसखश्चलः ॥ ४९ ॥

शुष्मिर्महाबलो वेगी नभोजातः सदागतिः ।  
 नभस्वान् मारुतः शीघ्रः पृषदश्वः प्रकम्पनः ॥ ५० ॥  
 सङ्क्रावातः सवृष्टिः स्याद्वात्या वातस्तु मण्डली ।  
 मृदुवातश्चिञ्चलिको लेढा लिट् सौरतोऽपि च ॥ ५१ ॥  
 मध्यमो हारितो नेरी यौनिकः स्वेदचूषकः ।  
 खरः स्वरिङ्गणोऽथासौ ग्रीष्मोऽभ्रमानिलोऽनिलः ॥ ५२ ॥  
 पयोदान्तस्तु पवनो वसन्तेऽमलपालिकः ।  
 गरवायुर्निदाघेऽल्पः शिशिरे सपुटानिलः ॥ ५३ ॥  
 जारवायुस्तु हेमन्ते शारदः शारणः शरः ।  
 गोगन्धनः पुरोवात उत्तरस्तु हिमानिलः ॥ ५४ ॥  
 रंहस्तरः क्ली प्रसभो जवो वेगः स्यदो रयः ।  
 कुबेरो यक्षराड् यक्षः कुतनुः किन्नरेश्वरः ॥ ५५ ॥  
 मनुष्यधर्मैलविलः पौलस्त्यो धनदो धनी ।  
 कैलासनाथस्त्रिशिरा धनाध्यक्षो वटाश्रयः ॥ ५६ ॥  
 निधिपालो वैश्रवणो वित्तेशो नरवाहनः ।  
 राजराजः पराविद्धः किशाली गुह्यकेश्वरः ॥ ५७ ॥  
 एकपिङ्गो रुद्रसखः कुडः पुण्यजनेश्वरः ।  
 इच्छावसू रत्नगर्भो रत्नहस्तः सितोदरः ॥ ५८ ॥  
 अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।  
 पुरी कैलाससारास्य विमानं पुष्पकोऽस्त्रियाम् ॥ ५९ ॥  
 निधानं गूढकोशो ना निधिः शेवधिरस्त्रियाम् ।  
 भेदाः पद्मो महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ ॥ ६० ॥  
 मुकुन्दकुन्दनीलाश्च चर्चश्चेति निधेर्नव ।

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 स्वर्गकाण्डे लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥



## यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

स्पर्शानन्दास्त्वप्सरसः सुमदाश्च रतेमदाः ।  
 स्वर्वेश्याश्चाथ स्वापेयो यक्षोऽथ सुरगायनः ॥ १ ॥  
 गन्धर्वो गातुगान्धर्वौ सिद्धाः स्युः सनकादयः ।  
 भूतापुत्रास्तु भूतानि भूताश्च शिवपार्श्वगाः ॥ २ ॥  
 किन्नराः स्युः किम्पुरुषा मयवोऽश्वमुखाश्च ते ।  
 गुह्यका माणिचरयस्तथा देवजनाः सुताः ॥ ३ ॥  
 विद्याधरास्तु शुचराः खेचराः सत्ययौवनाः ।  
 पिशाचः स्यात्कापिशोयोऽनृजुर्दर्वश्च पिण्डकः ॥ ४ ॥  
 देवयोनय एते स्युः स्वर्वेश्याद्याः सरक्षसः ।  
 नासत्यदस्त्रौ नासत्यावश्विनौ वरवाहनौ ॥ ५ ॥  
 आश्विनेयौ यज्ञवह्नौ देववैद्यौ वरान्तकौ ।  
 नासिक्यावाश्विनौ दस्त्रौ विश्वकर्मा शुबर्धकिः ॥ ६ ॥  
 त्वष्टा नाम स देवानां मयो नाम सुरद्विषाम् ।  
 सनत्कुमारो वैधात्रो नारदः कलहप्रियः ॥ ७ ॥  
 रुद्रा वसव आदित्या विश्वे साध्या मरुद्गणाः ।  
 तुषिता भास्वराद्याश्च बहवो देवतागणाः ॥ ८ ॥  
 मन्वन्तरेषु भिद्यन्ते देवाः सप्तर्षिभिः सह ।  
 असुरा दानवा दैत्या दैतेया देवशत्रवः ॥ ९ ॥  
 पूर्वदेवाः शुक्रशिष्याः रसागेहा हरिद्विषः ।  
 ईदृक्चेत्यादिभिर्मन्त्रैः सदा प्रोक्ता मरुद्गणाः ॥ १० ॥  
 स्वानभ्राडिति गन्धर्वगणा एकादशोदिताः ।  
 सुधर्मा स्याद्देवसभा दिव्य उच्चैःश्रवा हयः ॥ ११ ॥  
 मेरुः सुमेरुः स्वर्णाद्रिर्मणिसानुः सुरालयः ।  
 महामेरुर्देवगिरिर्गोधुक् चाथापरेऽद्वयः ॥ १२ ॥  
 तालाङ्का मेरुगण्डाश्च ये मेरुं परितः स्थिताः ।  
 मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्नदी सुरदीर्घिका ॥ १३ ॥  
 पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।  
 सन्तानः कल्पवृक्षश्च हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

प्रथमः स्वर्गकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥

## २. अथान्तरिक्षकाण्डः

### ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

अन्तरिक्षं नभो व्योम गगनं सुरवर्त्म खम् ।  
 वियद्विष्णुपदं दिव्यं वायुवर्त्म विहायसम् ॥ १ ॥  
 तारावर्त्माम्बरं मेघवर्त्म चाकाशमस्त्रियाम् ।  
 दिग्दिशाशा ककुब्दीर्णा हरिदेववधूः सरिः ॥ २ ॥  
 अव्ययीभावोऽपदिशमवान्तरदिशा विदिक् ।  
 क्रमात् पूर्वादिदिक्नाथा इन्द्राद्याः शङ्कराष्टमाः ॥ ३ ॥  
 लोकपालास्ततो प्राह्या दिक् चैन्द्रीत्यादयो भिदाः ।  
 आनेयी तु चराशा स्यान्नैर्ऋती तु दिगन्धकी ॥ ४ ॥  
 मारुत्यनन्ता शार्वी तु शालाक्षायपराजिता ।  
 कौबेर्यादिषु तूदीची प्राच्यवाची प्रतीच्यपि ॥ ५ ॥  
 ब्राह्मी तूर्ध्वोऽथ नागी स्यान्नारकी चाधरा ककुप् ।  
 दिक्मण्डलं चक्रवालं दिगन्तः करिशोलुकम् ॥ ६ ॥  
 दिक्मध्ये करिणीचारं दिग्युग्मे मण्डपीठिका ।  
 अभ्यन्तरं त्वन्तरालमवकाशोऽन्तरं पदम् ॥ ७ ॥  
 ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।  
 पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ८ ॥  
 करिण्योऽश्रमुः कपिला पिङ्गलाऽनुपमा क्रमात् ।  
 ताम्रपर्णी शुभदती चाङ्गना चाञ्जनावती ॥ ९ ॥  
 अर्कः सूर्योऽर्यमा सूर्यो द्वादशात्मा दिवाकरः ।  
 मार्तण्डः सविता भानुर्भातुः पूषा दिनप्रणीः ॥ १० ॥  
 सप्तसप्तिः पद्मबन्धुस्तपनोऽनूरुसारथिः ।  
 शुमणिर्हरिदश्वोऽद्रिरशीतांशुर्विकर्तनः ॥ ११ ॥  
 शुमान् कुमुद्वतीशत्रुस्त्विषांपतिरहर्षतिः ।  
 भास्करोऽहस्करो भास्वान् विवस्वाञ्जलतस्करः ॥ १२ ॥  
 रश्मिमाली दृगध्यक्षः कर्मसाक्षी त्रयीवनुः ।  
 तर्षुर्मार्तण्डमुण्डीरपाथिपेरुगभस्तयः ॥ १३ ॥  
 पासिर्दृशानो रात्रिद्विद् प्रभाकरविभाकरौ ।  
 खाध्वनीनः खतिलकः खगः खाङ्कस्तमोरिपुः ॥ १४ ॥  
 चण्डांशुरंशुमानंशुः सहस्रांशुः सदागतिः ।  
 आदित्यो मिहिरो मित्रो रविः प्रत्यूषदम्बरः ॥ १५ ॥



घृष्टिपादमयूखांशुस्तान्ध्योद्योगमस्तयः ।  
 किरणोसौ च रोचिः क्ली रश्मिरक्ली मरीचिवत् ॥ १६ ॥  
 तासां शतानि चत्वारि रश्मीनां वृष्टिसर्जने ।  
 शतत्रयं हिमोत्सर्गं तावद्धर्मस्य सर्जने ॥ १७ ॥  
 आनन्दनाश्च मेध्याश्च नूतना पूतना इति ।  
 शतं शतं वृष्टिवहास्ताः सर्वा अमृताः स्त्रियः ॥ १८ ॥  
 ता एव भन्दना मन्दाः कातनाः कोतनाः क्रमात् ।  
 अथ मेध्यश्च पोष्यश्च ह्लादिन्यश्च शतं शतम् ॥ १९ ॥  
 हिमोत्सर्गाय ताः सर्वाः सर्वाश्चन्द्राश्च नामतः ।  
 ता एव रेश्यो वाश्यश्च मेध्याश्चेति यथाक्रमम् ॥ २० ॥  
 अथ रुद्रा विश्वभृतः ककुहाश्च शतं शतम् ।  
 घर्माय शुक्रास्ताः सर्वा माण्ड्यः शक्य इत्यपि ॥ २१ ॥  
 आलोकस्तु प्रभा भा रुद्रुचिदीधितिदीपयः ।  
 अथातपो रौद्रमिद्धं मृगतृष्णा मरीचिका ॥ २२ ॥  
 संज्ञास्य रेणुर्द्युमयी त्रसरेणुः सुवर्चला ।  
 त्वाष्ट्री प्रभाऽप्यथच्छाया विष्णुभा भूमिमय्यपि ॥ २३ ॥  
 हिमद्युतिः शशी चन्द्रश्चन्द्रमाः शशभृद्विद्युः ।  
 परिष्मा रोहिणीकान्तो निशानाथो निशाकरः ॥ २४ ॥  
 पुनर्युवा दशाश्वो ग्लौरिन्दुः कुमुदबान्धवः ।  
 ओषधीशो निशाकेतुर्मृगलक्ष्माऽत्रिनेत्रजः ॥ २५ ॥  
 हृद्यांशुरंशुरब्जारिरमृतांशुः कलानिधिः ।  
 यजतस्तपसः क्लेदुः स्यन्दः स्पन्दो यथासुखः ॥ २६ ॥  
 प्राचीनतिलको जर्णो व्याध्वः सृप्रस्तृपिस्तृपत् ।  
 उडुराजः शशाङ्कश्च समुद्रनवनीतकम् ॥ २७ ॥  
 चन्द्रपादास्तु संवाला ज्योत्स्ना च शशिनः प्रभा ।  
 चन्द्रिका चन्द्रिमा चान्द्री कौमुदी चन्द्रगोलिका ॥ २८ ॥  
 अङ्कश्चिह्नमभिज्ञानं लाञ्छनं लक्ष्म लक्षणम् ।  
 पुष्पवन्तौ सहैवोक्त्यां सूर्याचन्द्रमसावुभौ ॥ २९ ॥  
 परिग्रहोपरक्तौ तु प्रस्तार्केन्द्रोरथ ग्रहे ।  
 उपप्लवोपरागौ द्वौ स तु सन्निहितो रवेः ॥ ३० ॥  
 गजच्छायाऽप्यथार्केन्द्रोः परिधिः परिवेषकः ।  
 कुजारमङ्गलाङ्गारा लोहिताङ्गो धरासुतः ॥ ३१ ॥  
 कर्षको रुधिरौ भौमः प्रव्यालोऽप्यथ हर्षुलः ।

बुधः श्यामाङ्ग एकाङ्गः सौम्यश्चान्द्रमसायनि ॥ ३२ ॥  
 वाचस्पतिरनिर्वापः सुराचार्यो बृहस्पतिः ।  
 गीष्पत्याङ्गिरसौ चक्षाश्चारुश्चित्रशिखण्डिजः ॥ ३३ ॥  
 प्रचक्षा दीदिविश्वाथ शुक्रो दूतो दिवाचरः ।  
 तिर्यग्गाम्यसुराचार्य उशना भार्गवः कविः ॥ ३४ ॥  
 मन्दः खोडोऽसितः क्रोडश्छायापुत्रः शनैश्चरः ।  
 सौरिः स्थिरगतिः कोणो दीर्णाङ्गो युगवर्तकः ॥ ३५ ॥  
 श्रुतकर्मा नीलवासा वक्रः कोलः स्थिरः शनिः ।  
 स्वर्भानुर्ग्रहकल्लोलः सैहिकेयो विधुन्तुदः ॥ ३६ ॥  
 राहुरभ्रपिशाचश्च केतवो विकचाः कुशाः ।  
 धूमजाः शिखिनो ब्रह्मपुत्राः श्रीमन्त आहिकाः ॥ ३७ ॥  
 तारा भं रात्रिजं विष्ण्यं सन्नक्षत्रमुडुन ना ।  
 मृगशीर्षं मृगशिरौ मार्गायण्याग्रहायणी ॥ ३८ ॥  
 इन्वकास्तच्छिरोदेशे तारका इत्वला मताः ।  
 योग्यः सिध्यश्च पुष्यः स्याद्यामकौ तु पुनर्वसू ॥ ३९ ॥  
 निष्ठया स्वाती विशाखेतु राधे आर्द्रा तु कालिनी ।  
 श्रवणे श्रोणा मूले तु मूलवर्हण्यथ श्रविष्ठासु ॥ ४० ॥  
 मन्दागाश्च धनिष्ठाश्च भरण्योऽपभरणीषु योग्याश्च ।  
 ज्येष्ठा ज्येष्ठप्री स्यात्प्रोष्ठपदाः पुष्ययोः सभाद्रपदाः ॥ ४१ ॥  
 अश्विन्यौ वालिन्यावश्चयुजावाश्चकिन्यौ च ।  
 यथाप्रयोगमेतेषु वचनं स्याद्व्यवस्थितम् ॥ ४२ ॥  
 अषाढाकृत्तिकाश्लेषामघा भूमिन् स्त्रियश्च ताः ।  
 फल्गुन्यौ तु द्वित्वभूम्नोर्हस्तः शतभिषक् च सा ॥ ४३ ॥  
 अनूराधास्तु पुंभूमिन् शेषं सर्ववचः स्त्रियाम् ।  
 वीध्यो नवैव नक्षत्रैरश्विन्याद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ४४ ॥  
 त्रिवीथिका त्रयो मार्गा दक्षिणोत्तरमध्यमाः ।  
 उत्तरो देवयानः स्याद्योगियानस्तु मध्यमः ॥ ४५ ॥  
 दक्षिणः पितृयाणः स्यात्तत्राद्या नागवीथिका ।  
 रोहिण्याद्याजवीथी स्यात्तत्तत्स्वैरावती परा ॥ ४६ ॥  
 मार्गोऽयं देवयानाख्यो मघाद्या पुनरार्षभी ।  
 हस्तादिका तु गोवीथी ततो जारद्वी परा ॥ ४७ ॥  
 मार्गोऽयं योगियानाख्यो मूलाद्या गजवीथिका ।  
 श्रोणाद्या मृगवीथी स्यात्ततो वैश्वानरी परा ॥ ४८ ॥



मार्गोऽयं पितृयाणाख्यः स्थानान्येषां पथां दिवि ।  
 ऐरावतं जारद्वयं वैश्वानरमिति क्रमात् ॥ ४६ ॥  
 सप्तर्षयस्तु खे तारारूपाश्चित्रशिखण्डिनः ।  
 ज्योतिषामयनं ज्योतिःशास्त्रं राशिर्ग्रहाह्वयः ॥ ४७ ॥  
 पूर्वपश्चिमराशयधौ सन्दालवलयौ क्रमात् ।  
 संज्ञा द्रेक्काणहोराद्याः शास्त्रे ज्ञेयाः सलिङ्गकाः ॥ ४८ ॥  
 कालोऽनेहा च दिष्टश्च स सूक्ष्मः स्त्री तुटिस्तुटिः ।  
 द्वे तुटी लघुक्षरकस्तौ द्वावक्षरपातकः ॥ ४९ ॥  
 तौ निमेषो लिप्तिका तु तौ द्वौ काष्ठा तु ता नव ।  
 ते द्वे लवो लवाः पञ्च कला दश च तद्द्वयम् ॥ ५० ॥  
 लेशो लेशाः पञ्चदश क्षणो नाडी तु षट् क्षणाः ।  
 तौ तु नाडी मुहूर्तोऽस्त्री घटिका धारिकेति च ॥ ५१ ॥  
 त्रिशता तैरहोरात्रः पक्षाङ्गोऽप्यथ वासरः ।  
 दिवसं चास्त्रियौ भानुर्घृणिर्घस्रो रविध्वजः ॥ ५२ ॥  
 पद्मबन्धुः कोकहितो द्युश्च क्ली स्यादहर्निशम् ।  
 रजनी यामिनी याम्या त्रियामा क्षणदा क्षपा ॥ ५३ ॥  
 तमी तमस्विनी रात्रिर्निशा घारिर्विभावरी ।  
 तमिस्रा क्षणिनी क्षाणी शर्वरी वासतेय्युषा ॥ ५४ ॥  
 निशीथिनी निशीथ्या च ज्योत्स्नी ज्योतिष्मती निशा ।  
 पूर्णेन्दुस्तु दिनम्मन्या गर्भितं तु निशाद्वयम् ॥ ५५ ॥  
 बह्वयस्तु गणरात्रं च चिररात्रं च रात्रयः ।  
 पक्षाभ्यामिव याऽहोभ्यां युक्ता सा पक्षिणी निशा ॥ ५६ ॥  
 तामसी सात्त्विकी चित्रा चित्रोपमा च राजसी ।  
 खण्डिता चेति शर्वयः प्रावृडाद्युतुषु क्रमात् ॥ ५७ ॥  
 या सप्तसप्ततितमे वर्षे मासि च सप्तमे ।  
 सप्तमी प्राणिनां घोरा रात्रिर्भैरव्यथी हि सा ॥ ५८ ॥  
 ध्वान्तस्तिमिरमासक्तं तामिस्रं शार्वरं तमः ।  
 आततिश्चान्धकारोऽस्त्री तत्तु सन्तमसं यदि ॥ ५९ ॥  
 परितोऽथावतमसं लघ्वन्धतमसं महत् ।  
 छदो व्यवधिरन्तर्धिर्वरणं चापवारणम् ॥ ६० ॥  
 अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।  
 दिनादौ प्राह्मपूर्वाह्नौ ततः संगतसंगवौ ॥ ६१ ॥  
 मध्यन्दिनं तु मध्याह्न उच्छ्रस्तु विकालकः ।

सायाह्नोऽप्यपराह्नोऽस्त्री प्रदोषो मैथिलः समौ ॥ ६२ ॥  
 साम्बाधिकः परस्तस्मान्निशीथस्त्वर्धरात्रकः ।  
 मध्यरात्रो महारात्र उच्चन्द्रोऽपररात्रकः ॥ ६३ ॥  
 ब्राह्मोऽप्येते क्रमाद्यामा यामे प्रहरयातुकौ ।  
 पुण्याहमहि पुण्योऽशस्त्रिसन्ध्यं तूपवैणवम् ॥ ६४ ॥  
 विहानोऽस्त्री प्रविसरो गोसर्गप्रत्युषावुषः ।  
 व्युष्टं विभातं प्रत्युषं संयात्रिकमहर्मुखम् ॥ ६५ ॥  
 काल्यं प्रभातं स्त्री वोषः सन्धा सन्ध्या पितृप्रसूः ।  
 तिथिर्न षण् कर्मवाटी प्रतिपत्त्वेकपक्षतिः ॥ ६६ ॥  
 पक्षतिश्चाथ पादूरो भूतेष्टा च चतुर्दशी ।  
 निष्पक्षतिर्द्वितीया स्याद्दर्शोऽमावास्यमावसी ॥ ६७ ॥  
 अमावस्याऽप्यमावास्याऽप्यमामस्याऽप्यमामसी ।  
 सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली नष्टचन्द्रकला कुहूः ॥ ६८ ॥  
 पिथ्या तु पूर्णिमा चान्द्री चन्द्रमाता निरञ्जना ।  
 पूर्णा तु पूर्णमासी च पौर्णमासी च पूर्णिका ॥ ६९ ॥  
 चन्द्रे कलोनेऽनुमतिः सैव राका तु पूरिते ।  
 पर्वणी पञ्चदश्या द्वे पक्षान्तौ नन्दिवर्धनौ ॥ ७० ॥  
 आग्रायणी शङ्कमूली पौर्णमास्याग्रहायणी ।  
 पौषी तु महिषी माता माघी स्यादग्निपूर्णिमा ॥ ७१ ॥  
 फाल्गुनी दण्डपाता स्याच्चैत्री तु मदनध्वजा ।  
 विश्वविस्ता तु वैशाखी ज्यैष्ठी तूपनिवेशिनी ॥ ७२ ॥  
 आषाढी कृत्तिमाचारी श्रावणी तु द्विवेदिनी ।  
 अथ प्रौष्ठपदी गाङ्गी स्यादाश्विन्यवराविला ॥ ७३ ॥  
 वत्सरान्ता त्वरिग्रेणी धैनुकी चापि कार्तिकी ।  
 मासाख्याकूर्चनक्षत्रयोगश्च गुरुणा यदा ॥ ७४ ॥  
 महाग्रहायणीत्याद्यास्त एव तिथयः क्रमात् ।  
 जयन्तीत्यादिकाः संज्ञाः पुराणे तिथिषूदिताः ॥ ७५ ॥  
 पक्षोऽर्धमासः पूर्वस्तु शुक्लाख्योऽन्योऽसिताह्वयः ।  
 क्षीयमाणतिथिप्रायः पक्षो रिक्तोऽपरस्त्वणिः ॥ ७६ ॥  
 अणिकूर्चस्त्वमावास्या भूतेष्टा प्रतिपत्क्षयात् ।  
 मासः सांवत्सरस्तान्तः संक्रान्त्या तु स तारणः ॥ ७७ ॥  
 ज्योतिषः पुनराचारात् सावनो दिनसंख्यया ।  
 आग्रहायणिको मार्गशीर्षो वर्षमुखः सहाः ॥ ७८ ॥



सहस्ये स्युस्तैषपौषसैधा माघे तु शानकः ।  
 शातरश्च तपाश्चाथ द्वौ फल्गुनिकफल्गुनौ ॥ ८२ ॥  
 तपस्ये फल्गुनालश्च चैत्रे मौहनिको मधुः ।  
 चैत्रिको मन्मथसखो वैशाखो राघ उच्छुनः ॥ ८३ ॥  
 ज्येष्ठामूलीय ईजानो ज्यैष्ठश्च खरकोमलः ।  
 ते शुके स्युरथाषाढे शुचिः श्रावणिको नभाः ॥ ८४ ॥  
 श्रावणश्च नभस्ये तु भाद्रो भाद्रपदोऽपि च ।  
 अपि प्रौष्ठपदस्तस्मिन्नाश्विनाश्वयुजाविषे ॥ ८५ ॥  
 कार्तिके स्यात् कार्तिकिको बाहुलः शैलकौमुदौ ।  
 क्लीबेऽप्येषु सकारान्ता ऋतुर्बीजं सतेरकम् ॥ ८६ ॥  
 हेमन्तः प्रसवो लोभ्रः शैखस्तु शिशिरोऽस्त्रियाम् ।  
 मधुर्वसन्तः सुरभिर्वलाङ्गः पुष्पसारणः ॥ ८७ ॥  
 पुष्पकालोऽपीधमस्त्री श्रीधमस्त्वाखोर ऊष्मकः ।  
 शुचिरुष्णागमः पात्म उष्ण ऊष्माऽप्यथ क्षरी ॥ ८८ ॥  
 प्रावृट् वार्षी भूमिर्न वर्षाः कालोक्षी च घनागमः ।  
 घनात्ययः शरत् स्त्री स्याद्विसर्गो दक्षिणायनम् ॥ ८९ ॥  
 उत्तरायणमाग्नेयं विषुवान् विषुवोऽस्त्रियौ ।  
 संवत्सरोऽब्द आग्नेयो वत्सरः परिवत्सरः ॥ ९० ॥  
 वत्सवायव्यसौर्याश्च वर्षोऽस्त्री स्त्री शरत् समाः ।  
 कृतं सत्ययुगं सौम्यं त्रेताग्रेयी द्विसर्गिका ॥ ९१ ॥  
 द्वापरे यज्ञियाग्नेयौ पुण्यो भर्भरकः कलिः ।  
 त्रियुगं तु युगासारं द्वायायोगं तु युगद्वयम् ॥ ९२ ॥  
 मन्वन्तरं त्वन्तरं स्यात् कल्पभागे चतुर्दशे ।  
 चतुर्युगसहस्रं तु कल्पस्तद् ब्रह्मणो दिनम् ॥ ९३ ॥  
 तद्रात्रौ तु महासुप्तिः समसुप्तिर्जगत्क्षयः ।  
 महाप्रलयकल्पान्तौ युगान्तो भूतसम्प्लवः ॥ ९४ ॥  
 प्रतिसर्गस्तु संहारः प्रलयः प्रतिसञ्चरः ॥ ९४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या-  
 मन्तरिक्षकाण्डे ष्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

## मेघाध्यायः ॥ २ ॥

मेघोऽब्दो जलदो नभ्राट् तटित्वान् जलमुग्धनः ।  
 धाराधरो वारिधरो धूमयोनिर्बलाहकः ॥ १ ॥  
 तटित्पतिः पयोगर्भो नदनुर्मुदिरोऽम्बुभृत् ।  
 कादम्बिनी मेघमाला काली कृष्णनवाम्बुदः ॥ २ ॥  
 इन्द्रायुधं त्विन्द्रधनुस्तदीर्घमृजु रोहितम् ।  
 ऐरावतं च विद्युत्तु चञ्चला चपला चला ॥ ३ ॥  
 आकालिकी शतावर्ता जलदा जलपालिका ।  
 क्षणांशुः क्षणिका चम्पा तटिहीना शतहृदा ॥ ४ ॥  
 सौदामिन्यैरावती च तद्भेदेऽप्यन्तिमत्रयम् ।  
 गर्जितं स्तनितं शीर्णं वज्रे ह्लादुनयः स्त्रियः ॥ ५ ॥  
 वज्रपातस्तु निर्घातश्चण्डकोऽप्यशस्त्रिर्न षण् ।  
 स्फूर्जथुर्वज्रनिष्पेषो न स्त्री वज्रोऽशस्त्रिर्न षण् ॥ ६ ॥  
 वर्षोऽस्त्री वर्षणं वृष्टिः शीकरोऽस्त्र्यम्भस्तः कणः ।  
 घनोपलस्तु करकः पुष्पिका मचटीति च ॥ ७ ॥  
 विप्रुट् स्त्री पृषतो बिन्दुः स्तोको द्रप्सः पृषन्न पुम् ।  
 अनावृष्टिरवप्रादो मेघच्छन्नेऽहि दुर्दिनम् ॥ ८ ॥  
 अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुद्दिनं हिमम् ।  
 प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ ९ ॥  
 कुहिदोऽस्त्री कुहेलिः स्त्री कुहेडिर्धूमिका त्रयी ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां  
 वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे मेघाध्यायः ॥ २ ॥



## खगाध्यायः ॥ ३ ॥

पक्षी पत्ररथः पत्री पित्सन् पिपतिषन् पतन् ।  
 पतङ्गः पतगः प्लावी पतत्र्यङ्गुपतत्रयः ॥ १ ॥  
 विहङ्गमो विविहङ्गो विहङ्गो नभसङ्गमः ।  
 नीडोद्भवः शुको नीडी मल्लको विप्रुषो भस्मन् ॥ २ ॥  
 वशाकुर्मदनः पीतुर्मशाको मदुरो द्विजः ।  
 ऊकः शकुन्तः शकुनिः शकुन्तिः शकुनः खगः ॥ ३ ॥  
 शलको विकिरस्तुण्डी नीडजो वातगाम्यपि ।  
 पक्षिपोतस्तु चित्लाकश्चम्पुकः पीलुकावटौ ॥ ४ ॥  
 गृह्याश्छेकाश्च गेहेषु संसक्ता मृगपक्षिणः ।  
 हंसो मरालो नीलाशश्चक्रपक्षः सितच्छदः ॥ ५ ॥  
 मानसौकाः परिप्लावी वक्राङ्गो जालपादकः ।  
 सूतिः सङ्कुचितः शङ्कुर्ज्येष्ठः प्रास्थितधोरणौ ॥ ६ ॥  
 क्षीराशश्चाप्यसौ राजहंसो रक्तैः पदाननैः ।  
 मलिनैर्मल्लिकाक्षस्तैर्धातिराष्ट्रः सितैरैः ॥ ७ ॥  
 कादम्बः कलहंसश्च हंस आधूसरच्छदः ।  
 वरटा हंसकान्ता स्याद् वरालाव रलाऽपि च ॥ ८ ॥  
 हंससाचिः क्षुद्रहंसः क्षयिस्तु कुवलायिकः ।  
 चक्रवाको रथः कोकश्चक्रश्चक्राह्वयाह्वयः ॥ ९ ॥  
 बको बकोटः कङ्कोऽथ बलाका विसकण्ठिका ।  
 बकजातिर्दर्वितुण्डो दर्विः क्रौञ्चश्च दर्विदा ॥ १० ॥  
 मदुस्तु जलकाकः स्यादातिस्त्वाटिः शराटिका ।  
 कारण्डवो महापक्षो जलरङ्गुस्तु वज्जुलः ॥ ११ ॥  
 दात्यूहश्चाथ शकटात्रिले प्लवपरिप्लवौ ।  
 अन्वर्थनामधेयौ द्वौ जालपादाम्बुकुटौ ॥ १२ ॥  
 कुक्कुटो दीर्घवागदक्षः शिखी चूलिक आरणी ।  
 कृकवाकुर्विवृत्ताक्षस्ताम्रचूडः शिखण्डिकः ॥ १३ ॥  
 मयूरश्चटकः शौण्डः पादायुधनखायुधौ ।  
 पारावतः कलरवो रक्तदृष्टिर्मदोत्कटः ॥ १४ ॥

काकस्तु द्विक एकाक्षश्चिरजीवी दिवाटनः ।  
 आत्मघोषो महानेमिः कण्टको मौकलिः कुणः ॥ १५ ॥  
 बलिपुष्ट उल्लकारिर्नाडिजङ्घोऽप्रहृष्टकः ।  
 धूलिजङ्घोऽन्यवापश्च परभृद्वायसोऽन्यपुट् ॥ १६ ॥  
 द्रोणः सकृत्प्रजोऽरिष्टो ध्वाङ्गः करट इत्यपि ।  
 कृष्णकाको वृद्धकाक पेन्द्रः काकोल आसुरः ॥ १७ ॥  
 धूङ्गणा तु श्वेतकाकोऽथ चटको वर आटकः ।  
 बलिभुक् कलविङ्कश्च सेव्यस्तिलककण्टकः ॥ १८ ॥  
 कलविङ्कस्त्वसौ पीतमुण्डः श्यामा तु पोतकी ।  
 व्याघ्राटस्तु भरद्वाजः क्षिप्रः श्येन सुपर्णकः ॥ १९ ॥  
 श्येनायां प्राचिका चित्रपक्षे शरुकपिञ्जलौ ।  
 वाचाला मुखरा शारिः कोयष्टिः शिखरी समौ ॥ २० ॥  
 कुलालकुक्कुटो गर्तकुक्कुटः पेचिका पुनः ।  
 उल्लकचेटी हिका स्यात् कनकाक्षी च पिङ्गला ॥ २१ ॥  
 उल्लकः पेचकः कोण्टः काकारिर्हरिलोचनः ।  
 नक्तञ्जरो घर्घरको निशादर्शी बहुस्वनः ॥ २२ ॥  
 महापक्षी च कृष्णोऽसौ नक्तकः कृतमालकः ।  
 कपोतो बालवत्सः स्यात् खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ २३ ॥  
 मिथुनी चञ्चलश्चाथ सुमोऽस्मिन् कृष्णवक्षसि ।  
 गोलनिका खञ्जरीटी शार्ङ्गः कीर्शा च पिप्पिका ॥ २४ ॥  
 शुक्लिकेतुर्मेधावी श्रीमान् वाग्मी फलाशनः ।  
 दरणो दण्डिकीरौ च लोपालोपायिके समे ॥ २५ ॥  
 पात्रं तु कुण्डूणाची स्त्री कण्ठपालस्तु वज्जुलः ।  
 काकपुष्टस्त्वन्यभृतस्ताम्राक्षः कोकिलः पिकः ॥ २६ ॥  
 वसन्तघोषो मधुवाक् कलकण्ठो वनप्रियः ।  
 भृङ्गः कलिङ्गो धूम्राटो राजभृङ्गस्तु बुद्धिमान् ॥ २७ ॥  
 मान्धीरी वाग्गुदस्तुल्यः स तु मान्धीलवो महान् ।  
 आतापी चिल्लिकोऽथ स्यात् स्वस्तिकः पुष्टिवर्धनः ॥ २८ ॥  
 किकिदीविः स्वर्णचूडश्चापो राजविहङ्गमः ।  
 मणिकण्ठश्चित्रवाजो विशोकः पूर्णकूटकः ॥ २९ ॥  
 गृध्रस्तु पुरुषव्याघ्रो दूरदर्शी सुदर्शनः ।  
 दाक्षाय्यश्चाप्यथ श्येनो वर्तुलाक्षः शशादनः ॥ ३० ॥  
 कङ्कस्तु कर्कटस्कन्धः पर्कटः कमलच्छदः ।



दीर्घपादः प्रियापत्यो लोहपृष्ठश्च मल्लकः ॥ ३१ ॥  
 पूर्णकूटे कुटपुरिः शकुन्ते भासकुक्कुटौ ।  
 चातकस्त्वम्बुजोऽनम्बुः पौरेन्द्रः स्तोककः खगः ॥ ३२ ॥  
 सारसो मैथुनी कामी गोनर्दः पुष्कराह्वयः ।  
 दार्वाघाटे शतपत्रो लक्ष्मणा सारसप्रिया ॥ ३३ ॥  
 क्रौञ्चस्तु कुङ्कुथोऽक्रोशः कुररो मत्स्यनाशनः ।  
 टिट्ठिभस्तु कटुकाण उत्पादशयनोऽण्डुकः ॥ ३४ ॥  
 तित्तिरिस्तु खरकाणो वरिष्ठश्चेश्वरप्रियः ।  
 चकोरस्तु चलच्चक्षुरुत्पिबश्चन्द्रिकाप्रियः ॥ ३५ ॥  
 कृकरो त्वथ्यकृकणौ दात्यूहे कालकण्ठकः ।  
 मयूरो बर्हिणो बर्ही शुक्लापाङ्गः शिखावतः ॥ ३६ ॥  
 वर्षामदः शिखी केकी शिखण्डी चित्रपत्रकः ।  
 भुजङ्गारिः शापटिको मयूकश्चित्रपिङ्गलः ॥ ३७ ॥  
 मार्जारकण्ठः केकालिर्विष्करो वर्तनप्रियः ।  
 मेघनादानुलासी च दार्वण्डश्चन्द्रकीति च ॥ ३८ ॥  
 शब्दोऽस्य केका बर्हस्तु प्रचलाककलापकौ ।  
 शिखण्डः पिच्छमप्यस्य मेचको बर्हचन्द्रकः ॥ ३९ ॥  
 पक्षिभेदाः खिलिखिलश्रीकर्णायकवर्तकाः ।  
 लावकुक्कुटहारीतजीवञ्जीवादयोऽपि च ॥ ४० ॥  
 हंसादयो जलचरा ग्राम्याः स्युः कुक्कुटादयः ।  
 वनजाः पीतमुण्डाद्या भृङ्गाद्याः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४१ ॥  
 भृङ्गे भ्रमरभृङ्गाणमधुलिणमधुपालिनः ।  
 अलिद्विरेफो लोलम्बो भसलः पुष्पलोलुपः ॥ ४२ ॥  
 इन्दिन्दिरो मधुकरश्चञ्चरीको मधुव्रतः ।  
 शित्पुटः षट्पदश्चाथ पतङ्गः शलभः समौ ॥ ४३ ॥  
 जतुकाऽजिनपत्रा स्यात् परोष्णी तैलपायिका ।  
 मलिम्लुचास्तु मशका भम्भराली तु मक्षिका ॥ ४४ ॥  
 चर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ।  
 अरण्यमक्षिका दंशो दंशी तज्जातिरल्पिका ॥ ४५ ॥  
 कषायिका तु जलजा घोणा कुम्भीरमक्षिका ।  
 गण्डोली वरटा न ह्री गृहिणी गृहकारिका ॥ ४६ ॥  
 अन्वर्थाख्या कोष्ठकारी कण्टका कण्टकानना ।  
 निशामणिर्ध्वान्तमणिः खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ ४७ ॥

भृङ्गारी मीरिका चीरी भिक्षिकाऽथ प्लुषिः पुमान् ।  
 पुत्तिका च पतङ्गी च पूत्यण्डाः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४८ ॥  
 छदः पत्रो गरुडाजश्छदनं च तनूरुहम् ।  
 पतत्रं च कुलायस्तु पञ्जरं नीडमस्त्रियाम् ॥ ४९ ॥  
 पेशी कोशश्च डिम्बोऽण्डं त्रोटिश्चञ्चुः स्तृपाटिका ।  
 डयनं गतिरुड्डीनसण्डीनादि विशेषकम् ॥ ५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे खगाध्यायः ॥ ३ ॥



## शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

शब्दो व्योमगुणस्वानस्वननिस्वाननिस्वनाः ।  
निर्हादो रवणो नादो दवेडो ध्वानो ध्वनिः कवः ॥ १ ॥  
कणिर्हादो रसो ध्रूणा घोषो गुञ्जनमुञ्जने ।  
गञ्जनं मशनं कानं गानं कोरणरेभणे ॥ २ ॥  
कूजनं कूजितं गर्जा न क्लीबे गर्जना न ना ।  
क्रोश उच्चस्वने प्राणिस्वने त्वाराव आरवः ॥ ३ ॥  
रवो विरावः संरावो रुतं चेत्यथ वाशनम् ।  
वाशितं च तिरश्चां स्यात् ध्वाङ्गो ह्री घोरवाशितम् ॥ ४ ॥  
घोरितं तुरगादीनां नासापुटभवे ध्वनौ ।  
तन्दनं रम्भणं रम्भा रम्भितं च गवां ध्वनिः ॥ ५ ॥  
बुक्कनं श्वृकध्वाने भषणं भषितं शुनः ।  
वृकस्य रेषणं रेषा हेषा हेषा च वाजिनाम् ॥ ६ ॥  
बृंहितं करिणां शब्दो राणोऽस्त्री मणितं रतेः ।  
काकुः स्त्री भिन्नकण्ठोत्थः शोककोपादिवैकृतात् ॥ ७ ॥  
डक्कनं हात्कृते पत्रवस्त्रादीनां तु मर्मरः ।  
पर्दनं गुदजे शब्दे कर्दनं कुक्षिकूजिते ॥ ८ ॥  
विष्फारो धनुषः स्वानो भूषादीनां तु शिञ्जितम् ।  
प्रणादस्वनुरागोत्थश्चित्कृतं स्यन्दनध्वनौ ॥ ९ ॥  
स्रोतसां खरको युद्धध्वाने क्रन्दनयोधने ।  
माजना मुरजध्वाने गुन्दिलो मर्हलध्वनौ ॥ १० ॥  
वाणं हुडुकहिकायां भेरीनादे तु टट्टरः ।  
कणनं कणितं काणो निक्काणो निक्कणः कणः ॥ ११ ॥  
वीणायाः कणतेः प्रादेः प्रकाणप्रकणादयः ।  
स्त्री प्रतिश्रुत् प्रतिध्वाने तुमुलो व्याकुले भृशम् ॥ १२ ॥  
गम्भीरे मन्द्र उच्चे तु तारो रम्यास्फुटे कलः ।  
समाहितस्तु निर्दोषवर्णे दोषयुताः परे ॥ १३ ॥  
अत्युच्चारणगर्वेण पीडितोऽपि समाहितः ।  
एणीकृतः प्रतिध्वानदन्तुरो माहिषश्च सः ॥ १४ ॥  
कल्हस्तु गलमूलस्थो गद्गदः स मनाक् स्फुटः ।

लालको बालानुकृतौ लल्लरो जिह्वया हतः ॥ १५ ॥  
शिथिलोऽस्पष्टसंयोगस्तुम्बुकः सानुनासिकः ।  
सान्त्वं स्यान्मधुरं वाक्यं स्यादवाच्यमनक्षरम् ॥ १६ ॥  
अनिर्बद्धं तूच्चावचमक्लिष्टार्थं तु सङ्कुलम् ।  
अनृते वितथालोकावाहतं तु मृषार्थकं ॥ १७ ॥  
अम्बूकृतं सनिष्टीवं स्यादबद्धमनर्थकम् ।  
कल्या तु वाचि कल्याण्यां रुशती तद्विपर्यये ॥ १८ ॥  
छलवाक्यं निरानन्दा शोकभारे तु तीरिता ।  
क्रोधगर्भा तु वैद्योता दैन्यगर्भा तु नश्वरी ॥ १९ ॥  
निर्वेदगर्भा निस्सङ्गा स्नेहगर्भा तु मालुकी ।  
विरहे खण्डिता मोहे शून्या लोभे तु जाङ्गली ॥ २० ॥  
निष्ठुरा परुषा क्षेपे त्रिषु स्युस्तुमुलादयः ।  
अस्त्रियौ वर्णमर्णं च वाक्यं तु वचनं वचः ॥ २१ ॥  
आम्नेडितं द्विस्त्रिरुक्तं गुणितं घोषितं समे ।  
अरणर्ना मुहुः प्रोक्तमनुलापश्च वर्तनम् ॥ २२ ॥  
सम्भाषणं त्वाभाषणमालापः कुरुकुञ्चिका ।  
उपसम्भाषणं साम्नि तत्तत्पच्छन्दनं यदि ॥ २३ ॥  
धनादि स्यात् प्रतिज्ञातं गुह्ये तदुपमन्त्रणम् ।  
विभाषणं विवादे स्यादनुवादोऽनुभाषणम् ॥ २४ ॥  
आख्यायनी तु सन्देशो दिष्टं संवदनं च तत् ।  
संवादनं वाचिकं च बलना त्वतिचाटुवाक् ॥ २५ ॥  
लुञ्जना पिञ्जना चेति सूत्रिते वचनद्वयम् ।  
भञ्जना स्याद्विवरणे पोटना तूत्कटं वचः ॥ २६ ॥  
कोलाहलः कलकलः कुञ्जनाऽस्मिन्नपक्रुधि ।  
चर्चरी चर्भटिस्तुल्ये रथ्यावादे तु कोहलम् ॥ २७ ॥  
उद्धूमस्तु कौरक्या विगर्वा गर्वहारिका ।  
लोचना तु विचारोक्तिर्लोटना सानुसारवाक् ॥ २८ ॥  
विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ।  
काका वर्णनमुल्लापो विलापः परिदेवनम् ॥ २९ ॥  
प्रलापोऽनर्थकं वाक्यमपलापस्त्वपहवः ।  
अपठ्ययोऽप्यवज्ञाऽपि हूतिस्त्वाकारणा हवः ॥ ३० ॥  
हकारामन्त्रणाह्वानं संहृतिर्बहुभिः कृता ।  
अभिधानं नामधेयं नामाख्याऽऽह्वाऽभिधाऽऽह्वयः ॥ ३१ ॥



मिथ्याऽभियोगोऽभिख्यानमभिशापोऽभिशंसनम् ।  
 शापोऽधिपक्षेप आक्रोशः परिवादोऽप्यवर्णवत् ॥ ३२ ॥  
 अवर्णवादो निर्वादोऽप्यपवादो विरुक्षणम् ।  
 क्षारणं गर्हणं निन्दा जुगुप्सागालिकुत्सनाः ॥ ३३ ॥  
 जनवादस्तु वचनं भर्त्सनं प्रतितर्जनम् ।  
 आक्षारणं विधुवनमाक्रोशो मैथुनं प्रति ॥ ३४ ॥  
 उत्साहः स्यादुपालम्भः परिवाग्भाषणीति च ।  
 श्लाघा शंसा प्रशंसा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ३५ ॥  
 यशो जयोदाहरणं साधुवादो गुणावली ।  
 ख्यातिः कीर्तिः समज्ञा च सन्देशगिरि वाचिकम् ॥ ३६ ॥  
 अर्थवादः परार्थोक्तिः प्रश्नः पर्यनुयोगवत् ।  
 अनुयोगश्च पृच्छा च प्रतिवाक्यं तदुत्तरम् ॥ ३७ ॥  
 कथा त्वाख्यानिकाऽऽख्यानं पुराणं पञ्चलक्षणम् ।  
 इतिहासः पुरावृत्तमैतिह्यमितिहाऽव्ययम् ॥ ३८ ॥  
 वार्तोदन्तोऽपि वृत्तान्तः किंवदन्ती जनश्रुतिः ।  
 प्रवल्हिका प्रहेलिका प्रजल्पनं बहुदितम् ॥ ३९ ॥  
 विकल्पना पृथक्क्रियाऽवधारणाऽन्यनिहृतिः ।  
 समस्या तु समासः स्यात् सङ्क्षेपः स्यादविस्तरः ॥ ४० ॥  
 उपोद्धात उदाहार उपन्यासः पुरोवचः ।  
 प्रस्तावः पुनरुद्धातः सोऽधिकार उपक्रमः ॥ ४१ ॥  
 गद्यपद्यमयी चम्पूः सारणी पद्यमात्रिका ।  
 शृङ्गाराद्यधिकं काव्यं समासाढ्यं तु दण्डकम् ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

द्वितीयोऽन्तरिक्षकाण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

### ३. अथ भूमिकाण्डः

देशाध्यायः ॥ १ ॥

भूमिरुर्वी घनश्रेणी स्थगणा गिरिकर्णिका ।  
 क्षोणी सर्पभृता दक्षा कुः क्षमा क्षान्तिः क्षमा क्षरिः ॥ १ ॥  
 धरित्री धरणी धात्री भूतधात्री धरा स्थिरा ।  
 वसुन्धरा वसुमती वसुधा विपुला रसा ॥ २ ॥  
 रमा विश्वा पृथिवी पृथ्वी हेमा सर्वसहा मही ।  
 अब्धिवस्त्रा नगाधारा मेदिनीला गिरिस्तनी ॥ ३ ॥  
 अचला कीलिनी पेरा बीजसू रत्नसूः स्वसूः ।  
 रत्नगर्भा काश्यपी भूः कुह्यवनिर्बरा ॥ ४ ॥  
 द्यावापृथिव्यावेकोक्तौ रोदस्यौ रोदसी इति ।  
 नाभीदं भारतं वर्षं हिमाद्रेस्तच्च दक्षिणम् ॥ ५ ॥  
 तेन हैमवतं नाम पराण्यप्येवमुन्नयेत् ।  
 हेमकूटं किम्पुरुषं हरिवर्षं तु नैषधम् ॥ ६ ॥  
 इलावृत्तं सौमेरवं सुमेरुं परितो हि तत् ।  
 भद्राश्वं तु ततः पूर्वं केतुमालं तु पश्चिमम् ॥ ७ ॥  
 वर्षावेतौ क्रमात् पूर्वगन्धिकापरगन्धिकौ ।  
 उदक् तु रम्यकं नैलं नीलाद्रेरुत्तरं हि तत् ॥ ८ ॥  
 ततो हिरण्यं श्वेतं तच्च श्वेताद् गिरेरुदक् ।  
 कुरुवर्षं शार्ङ्गवतं कुरवश्च त उत्तराः ॥ ९ ॥  
 जम्बूद्वीपः कुमारी स्याद्यत्रेमे भारतादयः ।  
 लावणो लवणोदः स्याद्येनासौ वेष्टितोऽब्धिना ॥ १० ॥  
 प्लक्षद्वीपादयोऽप्येवं वृता इक्षूदकादिभिः ।  
 मन्थोदधिस्तु क्षीराब्धिः क्षीरोदः कलशोदधिः ॥ ११ ॥  
 अथाप्यन्येऽन्तरद्वीपा भारतात् सप्त दक्षिणाः ।  
 एको वैद्युत्वतो नाम विद्युत्वान् यत्र पर्वतः ॥ १२ ॥  
 मालं मैनं व्रतं जालं नारासङ्गे पराणि षट् ।  
 अनुद्वीपाश्च षट् तेषामङ्गद्वीपादयो यथा ॥ १३ ॥  
 अङ्गद्वीपं यवद्वीपं मलयद्वीपमित्यपि ।



शङ्खद्वीपं कुशद्वीपं वराहद्वीपमित्यपि ॥ १४ ॥  
 अङ्गद्वीपं चाक्रगिरं मध्ये पश्चिमवारिधिः ।  
 पूर्वाब्धौ तु यवद्वीपं यत्र कालोदकोऽर्णवः ॥ १५ ॥  
 मलयद्वीपमब्धौ स्यादक्षिणे तच्च दार्दरम् ।  
 मालयं माहामलयं तत्पार्श्वे तु चतुर्थकम् ॥ १६ ॥  
 अतः पूर्वं कुशद्वीपं चम्पकद्वीपमप्यदः ।  
 यतः पुरो रक्तवहो लोहित्यो नाम वारिधिः ॥ १७ ॥  
 अथ प्रतीच्यां वाराहं वराहद्वीपमायतम् ।  
 यत्र यज्ञवराहोऽसौ हरिरद्यापि तिष्ठति ॥ १८ ॥  
 बर्हिणं सिंहलं हेमकुड्यं द्वारवतीपदम् ।  
 पारसीककुलं स्वर्णद्वीपं वैद्युतमार्षभम् ॥ १९ ॥  
 अयोमुखं तार्णसौमं स्यात्तार्णं ग्रामणीकुलम् ।  
 इत्याद्या भारते वर्षे क्षुद्रा द्वीपाः सहस्रशः ॥ २० ॥  
 नीवृज्जनपदो देशस्तद्भेदाः पुंसि भूमिनि च ।  
 स्त्रियो वरेन्द्री स्त्रावस्तीराढाद्या नैव भूमनि ॥ २१ ॥  
 प्राग्दक्षिणः शरावत्याः प्राच्योऽस्याः पश्चिमोत्तरः ।  
 उदीच्यो मध्यदेशस्तु देशो यो मध्यमस्तयोः ॥ २२ ॥  
 आर्यावर्तो ब्रह्मवेदिर्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः ।  
 अथोदीच्या जनपदास्तत्र चीनाः खरम्भराः ॥ २३ ॥  
 गान्धारास्तु दिहण्डाः स्युर्यवनास्तु हुरुण्डकाः ।  
 सम्भालाः स्युः शूरसेना अपि ते शूरसेनयः ॥ २४ ॥  
 मध्ये तु शूरसेनानां मधुरा नाम वै पुरी ।  
 लम्पाकास्तु मुरुण्डाः स्युस्तोक्षारास्तु युगालिकाः ॥ २५ ॥  
 जालन्धरास्त्रिगर्ताः स्युर्होलाः स्युः खरटी स्त्रियाम् ।  
 प्रत्यग्रथास्त्वहिच्छत्रास्तैतुलास्तु कलिङ्गकाः ॥ २६ ॥  
 टर्कवादीककाश्मीरतुरुण्डकेषु ससिन्धुषु ।  
 बाह्लीका बाह्लिकाः कीराः शाखयो दारदाः क्रमात् ॥ २७ ॥  
 कुमालकास्तु सौवीरा यौधेयास्तु नृगालिकाः ।  
 अप्यन्ये पारदाः किञ्जाः कुल्या इत्यादिनीवृतः ॥ २८ ॥  
 अथ प्राच्या जनपदास्तत्र मुद्रकाः कुजाः ।  
 प्राग्येतिषाः कामरूपास्तथा प्राग्जालिका अपि ॥ २९ ॥  
 विदेहास्तीरभुक्तिः स्त्री स्त्रावस्ती तु परञ्जकाः ।  
 राढा तु सुद्धाः पुण्ड्रास्तु वरेन्द्री पुण्ड्रलक्षणा ॥ ३० ॥

भौरिकाः स्युः समतटा अङ्गाश्चम्पोपलक्षणाः ।  
 वङ्गास्तु हरिकेलीया मगधाः कीकटाः स्मृताः ॥ ३१ ॥  
 अप्यन्येऽन्ध्रा व्रताः सात्वा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ।  
 विन्ध्यास्तु दक्षिणा देशा दक्षिणापथसंज्ञिताः ॥ ३२ ॥  
 तत्र पाण्ड्याः पाण्डियाः स्युः कुन्तलाः स्तूपहालकाः ।  
 चोलाः स्युरुत्पलावर्ता महाराष्ट्रास्तु दण्डकाः ॥ ३३ ॥  
 अप्यन्ये केरलाः कुल्याः सेतुजाः कुलकालकाः ।  
 इषीकाः शबरारट्टा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ॥ ३४ ॥  
 अपरान्तास्तु पाश्चात्यास्ते च सूर्यारकादयः ।  
 अथेमे मलदाद्याख्या विन्ध्यपर्वतवासिनः ॥ ३५ ॥  
 तत्र स्युर्मलदाः स्थौराः करुशास्तु बृहद्गृहाः ।  
 त्रैपुरास्तु हहालाः स्युश्चैद्यास्ते चेदयश्च ते ॥ ३६ ॥  
 दाशार्णाः स्युर्वेदिपरा मालवाः स्युरवन्तयः ।  
 अप्यन्ये मेकला भोजाः कोसलाद्याश्च नीवृतः ॥ ३७ ॥  
 अथ देशा मध्यदेशे मरवस्तु दशेरकाः ।  
 सात्वास्तु कारकुत्सीयास्तेषां त्ववयवाः परे ॥ ३८ ॥  
 उदुम्बरास्तिलखला महाकारा युगन्धराः ।  
 हुलिङ्गाः शरदण्डाश्च षट् सात्वावयवा इमे ॥ ३९ ॥  
 अप्यन्ये कुन्तलाः कुल्याः कलिङ्गाः काशिकोसलाः ।  
 मेकलाः कुसटाः सौरा जाङ्गलाः पृथवो वृकाः ॥ ४० ॥  
 पटञ्चरादयश्चान्ये मध्यदेशस्य नीवृतः ।  
 उक्तानामन्तरालेषु बहवः क्षुद्रनीवृतः ॥ ४१ ॥  
 मरवः पुंसि धन्वान आसारी तु स्थली स्थलम् ।  
 कचङ्गला तु नीलिङ्गी भूर्नानाजन्तुसंयुता ॥ ४२ ॥  
 पङ्किलः पङ्कवान् देशो वेतस्वान् बहुवेतसः ।  
 शाद्वलः शादहरितः कुमुद्वान् कुमुदाधिकः ॥ ४३ ॥  
 सनलो नडवल्लो नडवाब्धार्करः शर्कराधिकः ।  
 देशः शर्करिलोऽप्येवमुन्नेयौ सिकतावति ॥ ४४ ॥  
 कृष्णभूमः पाण्डुभूमः कृष्णा पाण्डुश्च यत्र मृत् ।  
 अनूपः साम्बुरन्यस्तु जाङ्गलः शून्य उच्चटः ॥ ४५ ॥  
 स्फुटिते सारणारट्टौ राजन्वास्तु सुराजनि ।  
 अन्यत्र राजवान् वृष्टिजीवनो देवमातृकः ॥ ४६ ॥  
 स्यान्नदीमातृको देशो नद्यम्बूत्पादसस्यकः ।  
 पद्यः पदाङ्गयोग्यः स्यात् त्रिष्वेते पङ्किलादयः ॥ ४७ ॥



रमशानं स्यात् पितृवनं स्त्रीवासः क्रिमिपर्वतः ।  
 शतमूर्धा वामद्वरो नाकुर्वल्मीकमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥  
 मार्गोऽध्वा पदवी पन्थाः पद्या चैकपदी स्रुतिः ।  
 सुपन्था अतिपन्थाश्च सत्पथश्च शुभे पथि ॥ ४९ ॥  
 विपथः कापथो व्यध्वो दुरध्वश्च कदध्वनिः ।  
 अपन्थास्त्वपथं दूरशून्ये प्रान्तरमध्वनिः ॥ ५० ॥  
 वृतिमार्गस्त्वर्धपदः प्राग्वंशः पदिकोऽपि च ।  
 संक्रमस्तित्तिरिस्तुत्यौ शृङ्गाटं तु चतुष्पथः ॥ ५१ ॥  
 जङ्घापदं चतुष्पादस्त्रिपादस्तु गृहान्तरम् ।  
 अङ्गुलोऽस्त्री यवा अष्टौ समस्तु चतुरङ्गुलः ॥ ५२ ॥  
 धनुर्ग्रहश्च दिष्टिश्च स्यातामष्टाङ्गुलावुभौ ।  
 दशाङ्गुलः क्रकचिको वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलाः ॥ ५३ ॥  
 किष्कुः स्यादवटो हस्तश्चतुर्विंशतिरङ्गुलाः ।  
 बद्धेन मुष्टिना हस्तः स्याद्विर्मुष्टिको वसुः ॥ ५४ ॥  
 अरन्निर्निष्कनिष्ठोऽसौ स प्रजापतिहस्तकः ।  
 कुत्सश्चाप्यथवाकुत्सः सधनुर्मुष्टिरेव सः ॥ ५५ ॥  
 अथ वर्धकिहस्तः स्याद् द्वाचत्वारिंशदङ्गुलः ।  
 तस्मिन् विकिष्कुः क्रकचः किष्कुःक्रकचिकोऽपि च ॥ ५६ ॥  
 हस्तद्वयं तु सत्किष्कुर्हस्तत्रयमलीमकम् ।  
 चतुर्हस्तो धनुर्दण्डो धनुर्धन्वन्तरं युगम् ॥ ५७ ॥  
 ऐश्वरं नालिका चाथ पञ्चहस्तोऽर्धहस्तकः ।  
 अष्टहस्ता तु रज्जुः स्यान्नवहस्ता तु नालिका ॥ ५८ ॥  
 दशहस्तः पितृनल्वो दीर्घदण्डो निदेशकः ।  
 स प्राणेशानिकश्चाथ परिवेषो द्विरज्जुकः ॥ ५९ ॥  
 निवर्तनं तु तिसृभौ रज्जुभिर्बलिशं च तत् ।  
 नल्विकः किष्कुभिः षष्ट्या नल्वः किष्कुचतुश्शतम् ॥ ६० ॥  
 दशधन्वन्तरं स्तोमो दशस्तोमस्तु वंशिकः ।  
 दशवंशिक आनाहो दशानाहो नलान्तरः ॥ ६१ ॥  
 धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशो गव्या तु तद् द्वयम् ।  
 स्त्री गव्यूतिश्च गव्यूतं गोरुतं गोमतं च तत् ॥ ६२ ॥  
 गव्यूतानि तु चत्वारि योजना कोसलादिषु ।  
 गव्यूतिद्वयमेव स्याद्योजनं मगधादिषु ॥ ६३ ॥  
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां  
 वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे देशाध्यायः ॥ १ ॥

### शैलाध्यायः ॥ २ ॥

शैलोऽगः पर्वतः दमाभृत् सानुमान् दुर्गमोगिरिः ।  
 अहार्यगोत्रकुटीरकुट्टारा भूधरोऽचलः ॥ १ ॥  
 बन्धाकिः फलिकः कुध्रः प्रपात्यद्रिः शिलोच्चयः ।  
 सुबेलः स्याच्चित्रकूटस्त्रिकूटस्त्रिकुचः सः ॥ २ ॥  
 लोकालोकश्चक्रवालो लोकान्ताद्रिः पराचलः ।  
 मलये त्रिकलापाटो विन्ध्यस्तु जलवालकः ॥ ३ ॥  
 हिरण्यनाभो मैनाकः सुदारुः पारियात्रकः ।  
 मातृवांस्तु प्रस्रवणो हिमवांस्तु हिमाचलः ॥ ४ ॥  
 रजताद्रिस्तु कैलासो दराद्रिर्महितश्च सः ।  
 वेङ्कटो वृषभः सिंहः केशरः केशवप्रियः ॥ ५ ॥  
 उदयस्तूदयाद्रिः स्यादस्तस्त्वस्तमयाचलः ।  
 दरी गुहा कन्दरोऽक्ली प्रपातस्तु तटो भृगुः ॥ ६ ॥  
 उत्सः प्रस्रवणं तोयप्रवाहे भरनिर्मरौ ।  
 स्तुर्वप्रोऽस्त्री सानुरस्त्री पादाः पर्यन्तपर्वताः ॥ ७ ॥  
 कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं नितम्बः कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 पाषाण उपलोऽश्मा च प्रस्तरश्च शिला दृपत् ॥ ८ ॥  
 गण्डशैलास्तु पाषाणाः स्थूलाः प्रगलिता गिरेः ।  
 उपत्यका त्वधोभूमिगिरेरुर्ध्वमधित्यका ॥ ९ ॥  
 कुडङ्गोऽस्त्री निकुञ्जोऽस्त्री कुञ्जो वृक्षवृत्तान्तरे ।  
 आकरः स्त्री खनिर्गञ्जा रुमा तु लवणाकरः ॥ १० ॥  
 गैरिकं पीतधातुः स्यात् कुनटी तु मनःशिला ।  
 रोचनी रञ्जनी हृद्या रसनेत्री महासना ॥ ११ ॥  
 करवीरा कला विद्युन्नागमाता विगन्धिका ।  
 शिला मनोऽभिधा काला नागजिह्वा च ताः समाः ॥ १२ ॥  
 शुक्रधातौ पाक्शुक्रा कठिनी कक्खटी खटी ।  
 हरितालं तु खर्जूरं पिञ्जरं नटभूषणम् ॥ १३ ॥  
 तालमालं वंशपत्रं पीतनं रोमहृद्वरम् ।  
 सौगन्धिकस्तु पामारिः पीतो गन्धाश्मगन्धकौ ॥ १४ ॥  
 बोलो गोलः शशः पिण्डः प्राणो गन्धरसो रसः ।



अभ्रकं व्योममेघाख्यं चक्रसंज्ञं तु माक्षिकम् ॥ १५ ॥  
 शिलाजतु तु गौरैयमर्थ्यमश्मजमद्रिजम् ।  
 सौराष्ट्री पार्वती काक्षी कालिका पर्पटी सती ॥ १६ ॥  
 आढकी तुवरी काली भूनामा च मृदाह्वया ।  
 सुराष्ट्रजाऽप्यथो गोला नैपाली कुनटीति च ॥ १७ ॥  
 रुक्मं कार्तस्वरं स्वर्णं महारजतमोजसम् ।  
 चामीकरं जातुरूपं तपनीयं शिलोद्भवम् ॥ १८ ॥  
 लोभनं कनकं शुक्रं सुवर्णं चन्द्रकाञ्चने ।  
 दाक्षायणं श्रीमकुटं गारुडं तारजीवनम् ॥ १९ ॥  
 अग्निबीजं रत्नवरं गैरिकं हेम कर्बुरम् ।  
 जाम्बूनदं शातकुम्भं हाटकं भूरिरस्त्रिगौ ॥ २० ॥  
 वैष्णवं कर्णिकाराभं वेणूतटजकाञ्चनम् ।  
 सुवर्णद्वीपजाः स्वर्णशुक्तिकाभ्रकसन्निभाः ॥ २१ ॥  
 रसविद्धं तु देवार्हं पवित्रं वज्रधारणम् ।  
 अलङ्कारसुवर्णं तु शृङ्गीकनकमाशु च ॥ २२ ॥  
 रूप्यहेम्नी तु संश्लिष्टे घनगोलकमस्त्रियाम् ।  
 रजतं त्रापुपं रूप्यं चन्द्रभीरु यवीयसम् ॥ २३ ॥  
 सौधं सुभीरुकं शुभ्रं खर्जूरं वङ्गजीवनम् ।  
 ताम्रं शुल्बं मर्कटास्यं रक्तं व्यष्टं कनीयसम् ॥ २४ ॥  
 म्लेच्छं वरिष्ठं म्लेच्छास्यं श्रेष्ठं काम्यमुदुम्बरम् ।  
 रिरी तु रीतिरुत्साहा पीतलोहं सुलोहकम् ॥ २५ ॥  
 लोह्यमप्यारकूटोऽस्त्री पित्तलं त्वारमस्त्रियाम् ।  
 राजरीत्यां ब्रह्मरीतिः स्वर्णरीतिर्महेश्वरी ॥ २६ ॥  
 काञ्चनी कपिला राज्ञी ब्राह्मणी कपिलोहकम् ।  
 मीलिकायां तु सरटी निष्ठुरं दारुकण्टकम् ॥ २७ ॥  
 गुरुज्येष्ठं सिंहमलं पञ्चलोहान्यलोहके ।  
 कांस्यं तु कृत्रिमं नाट्यं प्रभासमसुराह्वयम् ॥ २८ ॥  
 घण्टास्वनं भूरिलोहं रवणं लोहजं मलम् ।  
 सौराष्ट्रं चाथ सीसोऽस्त्री योगेष्टं भुजगाह्वयम् ॥ २९ ॥  
 यवनेष्टं समोल्लुकं हेमघ्नं भूतलोद्भवम् ।  
 त्रपु नागं चीनपट्टं रङ्गमप्यथ पिच्छटम् ॥ ३० ॥  
 रङ्गं वङ्गं त्रपु क्षोभ्यं मृदङ्गं नागजीवनम् ।  
 परासं सिंहलं ज्येष्ठं वक्राख्यं मुखभूषणम् ॥ ३१ ॥

कस्तीरं शोभनं नागमरिजं हेमजं शठम् ।  
 गुरुपत्रं तमरकं घनं सलवणं रजः ॥ ३२ ॥  
 अयः कृष्णायसं चीनं शस्त्राख्यं विषमायुधम् ।  
 धीवरं धीमकं लोहं लौहकालद्वानि च ॥ ३३ ॥  
 स्त्री कुटिर्ना पारशवो गिरिसारोऽश्मसारकः ।  
 अथ कालायसं तीक्ष्णं सुलोहं रुक्षमासुरम् ॥ ३४ ॥  
 वैकृन्तः स्याद् रसवरो रसज्ञो व्योमधारणः ।  
 रसकम्बवयसः सारो विकारो लोहजः कुशी ॥ ३५ ॥  
 धूर्तमण्डूरसिंहाणविष्टाख्यानि त्वयोमले ।  
 लोहं तु तैजसं सर्वं वसु रत्नं मणिनं पण् ॥ ३६ ॥  
 स्फटिकाऽर्को रविप्रावा सूर्यकान्तोऽनलोपलः ।  
 चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः सुतामोऽथ त्वयोमणिः ॥ ३७ ॥  
 अयस्कान्तस्तद्विशेषाश्चुम्बकभ्रामकादयः ।  
 गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भं हरिन्मणिः ॥ ३८ ॥  
 शोणरत्नं लोहितकं पद्मरागोऽरुणोपलः ।  
 विद्रुमो ना प्रवालोऽस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकः पुमान् ॥ ३९ ॥  
 इन्द्रनीलं महानीलं वैडूर्यं बालवायजम् ।  
 कुरुविन्दास्तु कुलमापा रत्नभेदास्तु मौक्तिकम् ॥ ४० ॥  
 माणिक्यं पौष्पकं शङ्खः पुलको विमलादयः ।  
 रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं शैलेयं रसगर्भकम् ॥ ४१ ॥  
 स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कपोताञ्जनयामुने ।  
 तुल्याञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ॥ ४२ ॥  
 रीतिपुष्पं पुष्पकेतुः पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।  
 तुत्थं तु दार्विका काथसम्भवं कर्परीति च ॥ ४३ ॥  
 कुलत्थिका तु चक्षुष्या कुम्भकारी कुकालिका ।  
 रसस्तु पारतः सूतो हिङ्गुलो दारदो रसः ॥ ४४ ॥  
 हिङ्गुलं हंसपादं च कुरुविन्दं च के चन ॥ ४५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे शैलाध्यायः ॥ २ ॥



## वनाध्यायः ॥ ३ ॥

अटवी काटिकाऽरण्यं विपिनं काननं वनम् ।  
 कक्ष्यकं कुन्दिलं वार्क्षं वनी गहनमित्यपि ॥ १ ॥  
 महाटवी त्वरण्यानी प्रस्तारस्तु तृणाटवी ।  
 कृत्रिमं वनमारामोऽपवनोपवने अपि ॥ २ ॥  
 तदेव राज्ञ उद्यानमाक्रीडश्चाथ तस्य तत् ।  
 सान्तःपुरस्य प्रमदावनं गेहस्य लिङ्कुटः ॥ ३ ॥  
 पुष्पवाटी त्वमात्यादेख्यी वाटी फलाय चेत् ।  
 वृक्षो द्रुमो भूरुहो द्रुविटपी विष्ट्रोऽङ्घ्रिपः ॥ ४ ॥  
 अलोकहो जगो भूरुट् तरुः शाखी कुटः कुजः ।  
 वसुः करालिकोऽगच्छो जर्णो रुक्षः पुलाक्यपि ॥ ५ ॥  
 बानस्पत्यः पुष्पफली फली त्वेव वनस्पतिः ।  
 ओषधिः फलपाकान्ता ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ६ ॥  
 अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मावुलपस्तु प्रतानिनी ।  
 गुमिन्यपि च वल्ली तु व्रततिव्रतती लता ॥ ७ ॥  
 बन्ध्यो वृक्षोऽवकेशी स्यादबन्ध्यस्तु फलेग्रहिः ।  
 पुष्पितः स्यात् कुसुमितः फलितः फलिनः फली ॥ ८ ॥  
 फुल्ले प्रफुल्लसम्फुल्लव्याकोचविकचस्फुटाः ।  
 उत्फुल्लोन्मिषितोन्निद्रा उद्बुद्धोन्मिलितस्मिताः ॥ ९ ॥  
 फलमामं शलाढुः स्याद् वानं शुष्कतरं फलम् ।  
 त्रिपु बन्ध्यादयोऽथ स्यादङ्कुरोऽङ्कूरमस्त्रियौ ॥ १० ॥  
 प्ररोहश्चाथ वंशः स्याद् योऽङ्कुरः पर्वसूत्थितः ।  
 परुः पर्व पुमान् ग्रन्थिर्निर्यासः खपुरो लशः ॥ ११ ॥  
 शिफाजटाऽवरोहस्तु सा शाखाजा वटादिषु ।  
 मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामास्मादास्कन्धात् स्यात्प्रकाण्डकम् ॥ १२ ॥  
 स दारुमात्रः स्थाण्वस्त्री दारु काण्डमथ त्रयी ।  
 छल्ली त्वक् स्त्री त्वचा न ह्री वल्कलं चोलकोऽस्त्रियौ ॥ १३ ॥  
 चोचं वल्कं च सारस्तु मज्जा सारः किनाटकम् ।  
 निष्कुटः कोटरो न स्त्री विदलं दारु पादितम् ॥ १४ ॥  
 स्कन्धः प्रघाणोऽथ शिखा शाखाऽथ शिखरं शिरः ।  
 स्कन्धशाखा तु शाला स्यात् प्रवालः पल्लवाङ्कुरः ॥ १५ ॥

विस्तारो विटपः स्तम्ब उच्छ्रायस्तु समुन्नतिः ।  
 छदस्तु छदनं पत्रं पलाशं पतनं दलम् ॥ १६ ॥  
 पर्णं बर्हं पतत्रं च त्रयी शुङ्गास्य कोशिका ।  
 पल्लवोऽस्त्री किसलयं किसलोऽपि नवे दले ॥ १७ ॥  
 पत्रमध्यशिरा माढिः पुष्पोऽस्त्री कुसुमं सुसम् ।  
 मणीचकं प्रसूनं च सूतं सुमनसः स्त्रियः ॥ १८ ॥  
 मकरन्दो मरन्दोऽस्य रसे जालं तु जालकम् ।  
 कलिका कोरकश्चाथ कुट्मलो मुकुलोऽस्त्रियौ ॥ १९ ॥  
 गुच्छो गुलुच्छः स्तम्बको मञ्ज्यां मञ्जरिवल्ली ।  
 प्रसवः पिप्पलं सस्यं फलं वृन्तं तु बन्धनम् ॥ २० ॥  
 पण्डास्त्वाम्रादयः शब्दा आम्रादिफलपुष्पयोः ।  
 हरीतक्यादिकं स्त्री स्यादश्वत्थादिफले पुनः ॥ २१ ॥  
 आश्वत्थमैङ्गुदं प्लाक्षं नैयप्रोधं च बार्हतम् ।  
 वैणवं शैप्रवं चाथ जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ॥ २२ ॥  
 जात्यादयः स्वलिङ्गाः स्युः पुष्पार्थे व्रीहयः फले ।  
 विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पाटला कुसुमे न ना ॥ २३ ॥  
 सप्तम्यन्तपदारम्भाः पर्याया इह कुत्रचित् ।  
 सप्तम्यन्तं च पुंलिङ्गं विज्ञेयं संशये सति ॥ २४ ॥  
 आम्ने कामाङ्गमाकन्दौ चूतो वेलोऽङ्गनाप्रियः ।  
 करको वलयश्चाथ श्रेष्ठेऽत्र सहकारकः ॥ २५ ॥  
 अथ श्यामलके लाला लवली लावली फला ।  
 केसरे वकुलो मद्यलालसः सिंहकेसरः ॥ २६ ॥  
 द्राक्षाफलो गुडश्चाथ न्यग्रोधो बहुपाट्टः ।  
 श्रीवृत्ते पिप्पलोऽश्वत्थः प्लक्षश्चलदलोऽङ्गुलः ॥ २७ ॥  
 उदुम्बरे प्राणिफलो मशकी हेमदुग्धकः ।  
 प्लक्षस्तु पर्कटिजटिकलापिगिरिलक्ष्मणाः ॥ २८ ॥  
 पलाशे किशुकः पर्णो वातपोथस्त्रिपर्णकः ।  
 आस्फोटो ब्रह्मवृक्षश्च हस्तिकर्णदले कृती ॥ २९ ॥  
 बिल्वे मात्सरमङ्गल्यौ श्रीफलो गोहरीतकी ।  
 परिव्याधे बालभीरुभीरुबालोऽम्बुवेतसः ॥ ३० ॥  
 शीतेऽभ्रपुष्पो वानीरो वञ्जुलो वेतसो रथः ।  
 विदुले प्रिय आम्राते द्वौ पीतनकपीतनौ ॥ ३१ ॥



कपित्थे स्युर्दधिकलो दधित्थग्राहिमन्मथाः ।  
 हृद्यो दन्तशठः पुष्पफलोऽरिष्टे तु फेनिलः ॥ ३२ ॥  
 मातुलुङ्गे तु रुचको वराम्लः केसरी शठः ।  
 बीजपूरे मातुलुङ्गो लुङ्गः सुफलपूरकौ ॥ ३३ ॥  
 देविकायां महाशल्का दूष्याङ्गी मधुकुङ्कुटी ।  
 अथात्यम्ला मातुलुङ्गी पूतिपुष्पी वृकाम्लिका ॥ ३४ ॥  
 छागे तु करुणो लक्षो मल्लिककुसुमप्रियः ।  
 जम्बीरे जम्भको दन्तशठो जम्भीरजम्भलौ ॥ ३५ ॥  
 नागरङ्गे तु नारङ्गो नार्यङ्गस्तक्रवासनः ।  
 त्वग्गन्ध एलको योगी मुचुलिन्दे तु निम्बकः ॥ ३६ ॥  
 न्युब्जे कर्मफलो भव्यः कर्मरङ्गः शठेश्वरौ ।  
 महीपतिर्दन्तशठः कर्ता नेता च कर्म च ॥ ३७ ॥  
 विकङ्कते ग्रन्थिलः स्याद्व्याघ्रपात्र मधुच्छदः ।  
 सर्जेश्वकर्णः साले तु कार्प्यकः सस्यसंवरः ॥ ३८ ॥  
 पीतसाले गौरसर्जप्रियकासनपीवराः ।  
 रक्तपुष्पोऽप्यथो सिन्धुसर्ज बाणः खरोऽर्जुनः ॥ ३९ ॥  
 रोहिते रौहिषो रोही रक्तो रौहितकोऽपि च ।  
 स्त्रीप्रिये वज्रुलोऽशोकः कङ्कलिः कर्णपूरकः ॥ ४० ॥  
 हेमपुष्पोऽप्यथाङ्गोले निचोलोऽङ्गोदशोधनौ ।  
 रसाले वरणः सेतुस्तिक्तशाकोऽश्मरीरिपुः ॥ ४१ ॥  
 दोषग्रहे तु कतको द्रावणः स्रवणः सरः ।  
 उल्लेखनीयो लक्ष्मीवांस्तेरस्तोयप्रसादनः ॥ ४२ ॥  
 राजादने फलाध्यक्षः प्रियकश्च मधुस्रवः ।  
 मधुपुष्पे मधुष्ठीलो वानप्रस्थो मधूकवत् ॥ ४३ ॥  
 गुडपुष्पोऽप्यद्रिजेऽस्मिन् गौरशाको मधूलकः ।  
 पारिभद्रस्य भेदे च मन्दारः पारिजातकः ॥ ४४ ॥  
 भूर्जपत्रे भुजो भूर्जो मृदुत्वक् चर्मचर्मिकौ ।  
 पीलौ गुडफलः खंसी श्यामश्चाथात्र शैलजे ॥ ४५ ॥  
 अक्षोडः कर्परालश्च नेमीये त्वतिमुक्तकः ।  
 चित्रकृत् तिमिशो नेमी वज्रुलोऽथायुगच्छदे ॥ ४६ ॥  
 सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।  
 कोविदारे चमरिको रक्तपुष्पो युगच्छदः ॥ ४७ ॥  
 काञ्चनारोऽप्यागर्वधे तु व्याघातश्चतुरङ्गुलः ।  
 आरग्वध आरेवतः शम्याकः प्रग्रहोऽगर्वधः ॥ ४८ ॥

कृतमालः सुपर्णश्च मदने तु फणी रसः ।  
 पिण्डीतके मरुवक इक्ष्वाकुर्गालवामनौ ॥ ४९ ॥  
 विचुलः पिचुलो राक्षः कैडर्यो विषपुष्पकः ।  
 काकदर्शश्छदनश्चीनो गरलः कण्टकीति च ॥ ५० ॥  
 कालस्कन्धे तिन्दुकोऽक्ली स्फूर्जकः शितिसारकः ।  
 काकेन्दौ कालपीलुः स्यात् कुलकः काकतिन्दुकः ॥ ५१ ॥  
 सिते लोध्रे महालोध्रः शवरश्चाथ लोहिते ।  
 तिरीटो मार्जनश्चित्तः कृष्णेऽस्मिन् लोध्रगालवौ ॥ ५२ ॥  
 गुग्गुलौ कालनिर्यासो देवधूपो महेश्वरः ।  
 श्रीमान् स्निग्धः सर्वसहः श्लेष्मी तिक्तः कटुर्लघुः ॥ ५३ ॥  
 कामः पुरो जटायुश्च कुम्भोद्धखलकं वरम् ।  
 रज्जुदाले नीचुदारः कच्छुदारो गृहद्रुमः ॥ ५४ ॥  
 गूढवृक्षः श्लेष्मफलो विषघ्नो द्विजकुत्सितः ।  
 उदालो बहुवारो ना सेलुः श्लेष्मातकी न षण् ॥ ५५ ॥  
 शोभाञ्जने तीक्ष्णगन्धः शिश्रुः काक्षीवमोचकौ ।  
 उष्णो मुरुङ्गी रक्तेऽस्मिन् मधुशिश्रुः सुभञ्जनः ॥ ५६ ॥  
 गुञ्जनः स्वादुगन्धा च प्रियालुस्तु धनुः पटः ।  
 काष्मर्ये गोपभद्रा स्यात् काष्मरी कृष्णवृन्तिका ॥ ५७ ॥  
 श्रीपर्णी कुमुदा गृष्टिर्गम्भारी भद्रपर्णिका ।  
 कैडर्यं कटफलः कुम्भी श्रीपर्णी कुमुदेति च ॥ ५८ ॥  
 सुपार्श्वे स्यात् कन्दरालो गर्दभाण्डः कपीतनः ।  
 ताम्रपाकी फलेपाकी प्लक्षको गन्धमुण्डकः ॥ ५९ ॥  
 कदम्बे पुलकी श्रीमान् प्रावृषेण्यो हलीमकः ।  
 महाकदम्बके नीपो धूर्तो धूर्तारदीपनौ ॥ ६० ॥  
 वासन्ते स्यात् कुरवकस्तिलकः कुवको मधुः ।  
 शुक्लपुष्पः कुरुवको मदनो धूर्तनागरौ ॥ ६१ ॥  
 करञ्जे स्यान्नक्तमालः प्रकीर्यश्चरिबिल्वकः ।  
 कालिङ्गे पूतिकरजः पूतिके कलिकारकः ॥ ६२ ॥  
 बालपत्रे तिक्तसारः खदिरा दन्तधावनः ।  
 सिते तु तस्मिन् कदरः शल्यकश्च मरुन्धवः ॥ ६३ ॥  
 मरुद्भवे विट्खदिराऽप्यरिमोऽप्यरिमेदकः ।  
 कण्टकी चाप्यथैरण्डे हस्तपर्णोऽप्यलम्बकः ॥ ६४ ॥



रुवुः पञ्चाङ्गुलश्चञ्चुरामण्डस्तरुणोऽम्बुकः ।  
 गन्धर्वहस्तो रुवुको वातघ्नो व्याघ्रपुच्छकः ॥ ६५ ॥  
 प्रियके तु प्रियङ्गुवाख्या कारम्भा फलिनी फली ।  
 विष्वक्सेना बला वृन्ता गुन्दा गोबन्दिनी लता ॥ ६६ ॥  
 भावज्ञा सर्षपी स्याख्या वृत्ताङ्गी सुयमावनी ।  
 कन्या चापि कदम्बस्तु निचुलोऽम्बुज इज्जलः ॥ ६७ ॥  
 स्योनाके शोणकट्वाङ्गौ दीर्घवृन्तः कुटन्नटः ।  
 मण्डूकपर्णः पत्रोर्णो भल्लुकः शुकनाशकः ॥ ६८ ॥  
 भूतपुष्पो नटो ढङ्क ऋक्षण्डुण्डुक आरलुः ।  
 तिलके फलकः श्रीमान् सुगन्धो मुखमण्डनः ॥ ६९ ॥  
 कर्णपूरोऽल्पपुष्पश्च पुन्नागे सुरवल्लभः ।  
 किदिरे दीनकम्बोजौ तद्भेदे सुरपर्णिका ॥ ७० ॥  
 पारिभद्रे दुकिलिमं देवदारु सुराह्वयम् ।  
 पूतिकाष्ठं भद्रदारु पीतदारु च दारु च ॥ ७१ ॥  
 वृक्षोत्पले कर्णिकारः परिव्याधोऽथ भण्डिले ।  
 कपीतनः शिरीषश्च करके दाडिमी त्रयी ॥ ७२ ॥  
 कुटजे कुटचो वत्सः शक्राख्यो गिरिमल्लिका ।  
 एतस्यैवास्त्रियाविन्द्रयवभद्रयवौ फले ॥ ७३ ॥  
 पनसे कण्टकिफलः पयोऽण्डो जघनेफलः ।  
 कर्कशी मधुबीजश्च सरले पूतिकाष्ठकम् ॥ ७४ ॥  
 निम्बे पार्वतकैड्यद्वेषिच्छर्दनमाधिकाः ।  
 रोमशः पिचुमन्दश्च लकुचे लिङ्कुचो डहुः ॥ ७५ ॥  
 पिचुले भ्रातुकः शाके पृथुच्छदहलीमकौ ।  
 उन्मत्ते धूर्तधुत्तूरधुस्तूरकितवाः शठः ॥ ७६ ॥  
 धूर्धूरः काञ्चनाहोऽथ त्रिपुरे मदमत्तकः ।  
 प्रेतालये तु तिक्तीकः शाखोटो गन्धमालहा ॥ ७७ ॥  
 कूसरे भीरुमार्जारकिंशुका इङ्गुदी न षण् ।  
 पिण्डारके तु पिण्डीकः कृष्णे त्वस्मिन् वलाहकः ॥ ७८ ॥  
 पुत्रजीवे त्वक्षफलो रुद्राक्षे तु महामुनिः ।  
 एकास्ये त्वत्र माभीदो द्विमुखे तु वरार्गलः ॥ ७९ ॥  
 चतुर्मुखे ब्रह्मसंज्ञः पञ्चवक्त्रे हराह्वयः ।  
 षण्मुखे तु गुहाख्योऽथ किम्पाके काकमर्दकः ॥ ८० ॥  
 तिन्तुडीकेऽम्लिका चित्रा शुक्तिनारी कपिप्रिया ।  
 तिन्त्रिणी चाप्यथो हेमपुष्पे चाम्पेयचम्पकौ ॥ ८१ ॥

हरणः शीतलः कान्तः कमनीयः पचम्पचः ।  
 हीने त्वङ्गिः कुम्भफलश्चाम्पेयो नागकेसरः ॥ ८२ ॥  
 करमर्दे वशश्चोलः कृष्णपाकफलैः पदैः ।  
 व्यस्तैः समस्तैर्युग्मैश्च पुंसि पञ्चदशाभिधाः ॥ ८३ ॥  
 शुषेणो विप्रकोऽप्यल्पफलेऽस्मिन् करमर्दिका ।  
 वन्दाके वृक्षको वन्दा जीवन्त्यपद्रोहिणी ॥ ८४ ॥  
 वृक्षादनी वृक्षरुहा सेव्यास्मिन् क्षीरवृक्षजे ।  
 तनुस्तुष्टो जयः कान्तः कुणिः कातुलको दुमः ॥ ८५ ॥  
 अग्निमन्थे हविर्मन्थोऽप्यरणिः पावको वशा ।  
 गणिकार्यप्यथो देवताडे वेणी खरागरी ॥ ८६ ॥  
 कालस्कन्धे तमालोऽस्त्री तापिच्छे काकतुण्डिका ।  
 बदर्या कुवली कोलिः कूली क्रूरा तिरीटिका ॥ ८७ ॥  
 लताकोलौ तु खलकी गिरिकोलौ तु सौरसा ।  
 हस्तिकोलौ महाघोण्टा गोपघोण्टा महाफला ॥ ८८ ॥  
 जलकोलौ तु सङ्गाली नरकोलौ तु कर्कशी ।  
 सृगालकोलौ हिंसाऽथ शमी सक्तुफला जया ॥ ८९ ॥  
 काकस्थाल्यां कुबेराक्षी कृष्णवृन्ता फलेरुहा ।  
 आमोघा पाटलिर्न क्ली पूरण्यां शालमलिर्न षण् ॥ ९० ॥  
 काण्ठीला तूलिनी तूलफलाऽथ कूटशाल्मलौ ।  
 रोचनः शिशपायां तु तीक्ष्णधूमावसादनी ॥ ९१ ॥  
 कपिला पिच्छिला भस्मगर्भा मण्डलपत्रिका ।  
 जम्बवां त्रिसारा विरजा महाजम्बवां महाफला ॥ ९२ ॥  
 सुरसाथो राजजम्बवां सुफलः सुरभिच्छदः ।  
 काकजम्बवां तु मेघाभः शिवेष्टः शीतपल्लवः ॥ ९३ ॥  
 जम्बूटनीलजम्बूटौ शफर्या श्लक्ष्णपत्रकः ।  
 शिलीन्द्राश्मन्तकाम्लोटा धवे गौरधुरन्धरौ ॥ ९४ ॥  
 भल्लातक्यां त्रिलिङ्गायामग्निमुख्यप्यरुक्करः ।  
 कम्पिल्ले रोचनी गुण्डा रक्ताङ्गश्चन्द्रकर्कशौ ॥ ९५ ॥  
 सल्लक्यां सुरभिर्हस्तिप्रिया हस्त्यशना ध्रुवा ।  
 वैजयन्त्यां तु तर्कारी नादेयी च जयन्त्यपि ॥ ९६ ॥  
 घातक्यामनलज्वाला सुभिक्षा धातुपुष्पिका ।  
 स्नुषां समन्तदुग्धा स्नुग्वा नन्दासिपत्रिका ॥ ९७ ॥



सिद्धगुण्डः सिन्धुरण्यस्यां विपत्रायां त्रिकण्टकः ।  
 वज्री गण्डर्यथो घण्टारवायां शणपुष्पिका ॥ ६८ ॥  
 तुण्डिकेर्या रवा शीरा केसरा बदराफला ।  
 कार्पास्यकल्यत्र वन्यायां भारद्वाज्यपि कुष्ठनुत् ॥ ६९ ॥  
 विषण्ण्यां भञ्जिका भाञ्जी विष्ठा ब्राह्मणयष्टिका ।  
 ब्रह्मदण्डी च पद्मा च सारपण्यां स्थिरा ध्रुवा ॥ १०० ॥  
 कोकिलाक्षस्तु काण्डेश्वरिभुरः क्षुरकः क्षुरः ।  
 वासके त्वाटरूपः स्यात् सिंहास्यो वाजिदन्तकः ॥ १०१ ॥  
 वाशा सिंही वैद्यमाता वार्ताक्यां दुष्प्रधर्षिणी ।  
 वातिङ्गनस्तु भण्डाकी वार्ताकुर्हिङ्गुलुः स्त्रियाम् ॥ १०२ ॥  
 गोष्ठवातिङ्गने त्वेला परुका जलजम्बुका ।  
 हस्तिवातिङ्गने त्विभ्या विशाला ददुनाशिनी ॥ १०३ ॥  
 बृहत्यां प्रसहा काली वार्ताकी हिङ्गुदी कुली ।  
 लतावृहत्यां सुस्निग्धा धन्या प्रसहनी लता ॥ १०४ ॥  
 निदिग्धिकायां सन्धानी महासन्धा गिरिप्रिया ।  
 कण्टकाल्यां परिकूरा कुल्या कुल्यस्पृशी वरा ॥ १०५ ॥  
 दुःस्पर्शा राष्ट्रिका सिंही कण्टकाली निदिग्धिका ।  
 दण्डोत्पले सहा देवा तलपोटे प्रमेहनुत् ॥ १०६ ॥  
 हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।  
 मार्कवे भृङ्गराजः स्यात् पर्पणस्तु श्वपामनः ॥ १०७ ॥  
 कालमेष्ठां कृष्णफला वागूची वसुवञ्जिका ।  
 सोमवल्ली पूतिफली सोमराजिरवत्गुजः ॥ १०८ ॥  
 पारित्राण्यां त्रायमाणा त्रायन्ती बलभद्रिका ।  
 रेवत्यां रामदूती स्याद्धारुणी नागदन्त्यपि ॥ १०९ ॥  
 श्रीफल्यां क्लीतकी नीली नीलकेशी महारसा ।  
 ग्रामीणा रञ्जनी तुत्था कारवाही च नीलिनी ॥ ११० ॥  
 फल्गुः काकोदुम्बरिका बलयूर्जघनेफला ।  
 दास्यां षडश्रा शार्ङ्गष्टा काकजङ्घा विलोमिका ॥ १११ ॥  
 काकनासा तु काकाङ्गी जीवनीया शिरोरुहा ।  
 तृङ्घ्यां वयस्या काकोली काकमाची तु वायसी ॥ ११२ ॥  
 प्रत्यक्छ्रेण्यां सुतश्रेणी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ।  
 चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ॥ ११३ ॥  
 देव्यां मूर्वा धनुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्णिका ।  
 मधूलिका तिक्तवल्का पीलुनी तेजनी स्त्रवा ॥ ११४ ॥

प्रत्यक्पर्णी तु शिखरी किणिही खरमञ्जरी ।  
 अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ११५ ॥  
 अजशृङ्गायां विषाणी स्याद् गोजिह्वादाविके समे ।  
 शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात् केशिनी चाप्यथो लघु ॥ ११६ ॥  
 वर्षा लङ्कायिका स्पृक्का मरुमाला लता मरुत् ।  
 कच्छूरके द्राविडकः काल्यको वेधमुख्यकः ॥ ११७ ॥  
 निर्गुण्ड्यामिन्द्रसुरसः सिन्धुवारश्च सिन्दुकः ।  
 कुठेरके तु पर्णासो मालोर्जरकटिञ्जरौ ॥ ११८ ॥  
 सितेऽस्मिन् मञ्जरी तीक्ष्णस्तीक्ष्णगन्धोऽर्जकोऽत्रः तु ।  
 सुगन्धौ श्वेतसुरसा भारती तुलसी शिवा ॥ ११९ ॥  
 अल्पपत्रस्तु जम्बीरः फणिर्जकसमीरणौ ।  
 अस्मिन् सुगन्धौ सौवासो मञ्जरीकमयूरकौ ॥ १२० ॥  
 तीक्ष्णे तीक्ष्णार्जको गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः ।  
 अल्पमात्रे तु वैकुण्ठो बिल्वगन्धो वचाच्छदः ॥ १२१ ॥  
 कालपर्ण्यां तु सुरभिः करालः कालमालकः ।  
 मालो ब्रह्मजटायां तु सलज्जं दानवाञ्जनम् ॥ १२२ ॥  
 पुण्डरीकं दमनकं कान्तं दान्तं मुनिः पुमान् ।  
 विष्णुकान्ता तु सुमुखी गवसी स्यान्महारसा ॥ १२३ ॥  
 ऋषणी द्रोणिका छत्रा चक्षुष्या द्रोणपुष्पिका ।  
 सूर्यावर्ते पणिकायां मोरटा मूलपुष्पिका ॥ १२४ ॥  
 मुण्ड्यां मुण्डितिका मुण्डा श्रमणी श्रमणी बुधा ।  
 रोदन्यां कच्छुरानन्ता ताम्रमूला दुरालभा ॥ १२५ ॥  
 यासो यवासो दुस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।  
 वृश्चिकाल्यामुष्ट्रधूम्रपुच्छिका नागवृन्तिका ॥ १२६ ॥  
 सर्पदंष्ट्रयमरा काली विषघ्नी वृश्चिकच्छदा ।  
 वाटपुण्यां बला वाट्या सम्मासा चान्नसंज्ञिका ॥ १२७ ॥  
 वाट्यालोऽतिबलायां तु पुष्पवीर्या जनी सहा ।  
 अश्वकन्दस्त्वश्वगन्धी तिक्ते तु कटुपर्पटौ ॥ १२८ ॥  
 ऋषभी त्वजहाध्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ।  
 कपिकच्छूः शूकशिम्बिरात्मगुप्ता च कच्छुरा ॥ १२९ ॥  
 अस्थिमांस्त्वस्थिसङ्घातोऽप्यस्थिसन्नहोऽपि च ।  
 एकाष्टीला पापचेली स्थापनी वनतिक्तिका ॥ १३० ॥



पाठाम्बुषा विद्वकर्णी प्राचीना श्रेयसी रसा ।  
 गुड्ढ्यां कुण्डली धीरा छन्ना छिन्नरुहा धरा ॥ १३१ ॥  
 वत्सादनी सोमवल्ली विशल्या चक्रलक्षणा ।  
 जीवन्ती खरुहा देवी विषघ्न्यमृतवल्लिका ॥ १३२ ॥  
 दीर्घवल्ल्यां वेत्रवन्यौ कुरुवेत्रश्च भूरदः ।  
 गवाक्ष्यां किणिही जैत्री प्रत्यक्छेप्यपराजिता ॥ १३३ ॥  
 विष्णुकान्ता परास्फोताश्वखुरी शीतलात्र तु ।  
 श्वेतायां चारिणी सूर्या गिरिकर्णी गवादिनी ॥ १३४ ॥  
 नीलायां तु महाश्वेता निष्ठयान्ता स्थूलपुष्पिका ।  
 जिङ्ग्यां समङ्गा विकसा मञ्जिष्ठाञ्जनवल्लिका ॥ १३५ ॥  
 पृथिनपर्ण्या पृथक्पर्णी लाङ्गली पदपर्णिका ।  
 गुहा कलशिधावन्यौ दीर्घा सा चित्रपर्णिका ॥ १३६ ॥  
 सिंहपुष्पी फेरुविन्ना चित्राङ्गी क्रोष्टुमेखला ।  
 नागर्था केशिका त्र्यशना त्रिपुटा त्रिपुटी त्रिवृत् ॥ १३७ ॥  
 रेचनी महती श्वासा माया कुठरुणात्र तु ।  
 कृष्णायां रोचनी श्यामा काला चित्रा सुषेण्यपि ॥ १३८ ॥  
 गोपा तु शारिबा भद्रा नागजिह्वा सुगन्धिका ।  
 ज्योतिष्मत्यां पीतरसा लगणा कटभीङ्गुदी ॥ १३९ ॥  
 पारावतपदी पिण्या जीवन्ती स्फुटवल्लिका ।  
 नागवल्ली तु ताम्बूली तथा ताम्बूलवल्लिका ॥ १४० ॥  
 क्षुरे तु कण्टकिफलः स्त्रीगोभ्यां कण्टकः परः ।  
 गोक्षुरः स्थलशृङ्गाट इक्षुगन्धा पलङ्कषा ॥ १४१ ॥  
 श्वदंष्ट्रा भीरुपर्ण्या तु शतमूली शतावरी ।  
 इन्दीवरी बहुसुताप्यहेरुः पीवरीति च ॥ १४२ ॥  
 सुदर्शनायां चक्राङ्का दध्याली वृषपर्ण्यपि ।  
 जीवन्त्यां जीवनी जीवा जीवनीया मधुश्च सा ॥ १४३ ॥  
 चर्मपर्ण्या तु शार्ङ्गाष्टा सुताहायामुपोदिका ।  
 ब्रह्म्यां सत्यवती ब्राह्मी मत्स्याक्षी सोमवल्लरी ॥ १४४ ॥  
 मण्डूकपर्ण्या भण्डीरी भाण्डी योजनवल्ल्यपि ।  
 शोफघ्न्यां पूरणा पूरी वर्षाभ्वी जीवबोधिनी ॥ १४५ ॥  
 पुनर्नवा च रक्तायां तस्यां योग्या कटिल्लिका ।  
 श्वेतायां वृश्चिकोऽल्पायां दीर्घपत्री विटाटिका ॥ १४६ ॥  
 अस्या जात्यन्तरे स्वल्पे पूरणी हस्तिपूरणी ।  
 तुण्डिकेर्था रक्तफला बिम्बोष्ठी पीलुपर्ण्यपि ॥ १४७ ॥

लज्जालुस्तु नमस्कारी बदर्यञ्जलिकारिका ।  
 गण्डकाली खदिर्या तु लज्जालुः स्याच्छमीफला ॥ १४८ ॥  
 कलम्ब्यां शतपर्वा स्यात् कलम्बूर्वायसी वधा ।  
 पटुश्चिकायां तु शिवः शान्तः स्वस्तिककुक्कुटौ ॥ १४९ ॥  
 निद्रालुः करुणो मानी वनालुः सुनिषण्णकः ।  
 मारिषे जीवशाकः स्यादत्रालेपे तण्डुलीयकः ॥ १५० ॥  
 मेघनादो विगण्डीरमथ स्युर्देवमारिषे ।  
 विभाजनो रसोत्सृष्टौ काणमारिष ओलकः ॥ १५१ ॥  
 लतामारिषतुवरौ वरशाकोलताटिकाः ।  
 जलजोऽसौ चञ्चटकः कुकुण्डे कबकोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥  
 भूवल्लूरमहिच्छत्रं भूस्फोटं भूमिकन्दकम् ।  
 छत्राकश्च सिलिन्धश्च मुकुलेऽस्मिन् पलाण्डुकम् ॥ १५३ ॥  
 सृगालवास्तुके त्वारुर्वास्तुके क्षारपत्रकः ।  
 प्रवालौ वीरशाकश्च श्रूषायां कासमर्दकः ॥ १५४ ॥  
 हरिणो मल्लकोऽस्त्री सेकिमं बुस्तिका न षण् ।  
 नीलकण्ठोऽथ मरुजे शिवं चाणक्यमूलकम् ॥ १५५ ॥  
 मत्स्याक्ष्यां शालशालीनौ पत्तरो लोहमारकः ।  
 अगस्त्ये मुनिमार्जारावगस्तिर्वङ्गसेनकः ॥ १५६ ॥  
 शुक्रनासोऽप्यथो पश्चात् सुन्दरो ग्रीष्मसुन्दरः ।  
 कपित्थपत्र्यधःपुष्पी व्रणघ्नी भरसी भरा ॥ १५७ ॥  
 प्रपुष्पाडे त्वेडगजो दद्रुन्नश्चक्रमर्दनः ।  
 घोषे कोशफला घण्टा घण्टाला फलिनी फली ॥ १५८ ॥  
 जाली पटोली भण्डाली कोशातक्यपि चात्र तु ।  
 पृथौ महाकोशातकी मृदङ्गः कृतवेधनः ॥ १५९ ॥  
 ज्योत्स्न्यां स्वल्पफला ग्राम्या मृदङ्गः कृतवेधनः ।  
 अथ जिङ्गी दीर्घफला मागधी मलनोत्तमा ॥ १६० ॥  
 बहुजाल्यां कोशफला वन्या तिक्तपटोलिका ।  
 कर्कोटक्यां कोशफला राजकोशातकी फला ॥ १६१ ॥  
 महाजाली पीतघोषा क्षोडो धामार्गवोऽपि च ।  
 हस्तिघोषे तरङ्गोऽल्पे त्वादाली देवदाल्यपि ॥ १६२ ॥  
 चाङ्गेर्था चुक्रिका दन्तशाठाम्बुष्ठांल्लोप्यपि ।  
 सुषण्यां तिक्तच्छदनः कारवेल्लः कटिल्लकः ॥ १६३ ॥



राजवल्ल्युरुवल्ल्यम्बुवल्ली रञ्जनवल्ल्यपि ।  
 सुगन्धके तु कर्कोटः किलासन्नः पटुच्छदः ॥ १६४ ॥  
 बृहत्कर्कोटके त्वेहो हस्तिकर्कोटको बली ।  
 पटोलके तु राजीवान् रवणः कर्कशः पटुः ॥ १६५ ॥  
 राजी राजामृतापण्डुभूतेभ्यश्च फलः परः ।  
 तित्के राजपटोलश्च भीरुस्त्वर्वारुकर्कोटः ॥ १६६ ॥  
 चोदनुर्वारुवालकयोऽप्यल्पा सा राजकर्कोटिः ।  
 तुम्ब्यां पिण्डफलालाबूः कटुतुम्ब्यां नृपात्मजा ॥ १६७ ॥  
 इक्ष्वाकुर्वासनी निम्ना वृन्ततुम्ब्यां तु तुम्बुका ।  
 अल्पतुम्ब्यां कुक्कुटाक्षो वृन्ते कर्कालिचित्रलौ ॥ १६८ ॥  
 कालिङ्गोऽल्पेऽत्र चेन्नाणचेन्नालौ क्रोष्टुकर्कोटिः ।  
 कालिङ्ग्यां छत्रकः सोमः कर्कार्धनवासकः ॥ १६९ ॥  
 कूश्माण्डकः पुष्पफलः पीतपुष्पो नृपात्मजः ।  
 महाफला शाकफला सुभद्रा शङ्कुलापि च ॥ १७० ॥  
 सुखवासे शीर्णवृन्त उग्रगन्धः सुवासकः ।  
 त्रिलिङ्गे त्रपुषे तालुः छर्दनी हस्तिपर्णिनी ॥ १७१ ॥  
 चिद्भिटे पुनरुर्वारुर्मुगाद्यां गजचिद्भिटा ।  
 विटङ्कोऽतिमृगेर्वारुर्विशालैन्द्रीन्द्रवारुणी ॥ १७२ ॥  
 अथो गवाक्ष्यां गोडुम्बा चित्रा च कदले पुनः ।  
 वृषा वारवुषा रम्भा काण्ठीलान्शुमत्फला ॥ १७३ ॥  
 कदली दीर्घपर्णी च रम्भा सा गौरपर्णिका ।  
 कृष्णा तु लम्पा कदली माहेन्द्री तु बृहत्फला ॥ १७४ ॥  
 सुगन्ध्यल्पफला मोचा साण्ठी काण्ठी कदल्यसौ ।  
 बिभीतकखिलिङ्गः स्यात् कलिस्तिष्यः कलिद्रुमः ॥ १७५ ॥  
 बिभीदकः कर्षफलो भूतवासो वहेटकः ।  
 दैत्यः पापस्तुषः कल्पः कालेयस्तुमुलाक्षकः ॥ १७६ ॥  
 संवर्तश्च षडश्रायां त्रिलिङ्ग्यामलकी शिवा ।  
 धात्री कर्षफला तिष्या सेठ्याध्यण्डा भट्टा दृढा ॥ १७७ ॥  
 हरीतक्यां शुक्रसृष्टा नन्दिनी साधिकाभया ।  
 अव्यथा चेतकी पथ्या धारणी कालकूणिका ॥ १७८ ॥  
 गुञ्जायां कृष्णला ताम्रा शार्ङ्गश्ठा रक्तिका वरा ।  
 षूडामणिः कपिक्रोडा कालवृन्ती परा नव ॥ १७९ ॥  
 काकशब्दात् पीलुपीथ्यौ चिञ्चाणन्यदनी नखी ।  
 जङ्गा तित्का च दक्षा च सा शुक्रा चेन्मधुस्रवा ॥ १८० ॥

द्राक्षायां कृष्णिका स्वाद्वी प्रियाला कालमेषिका ।  
 हारभूरा दारुफला मृद्वीका गोस्तनी रसा ॥ १८१ ॥  
 मालत्यां रेवती जातिर्यूथिकायां मनोज्वला ।  
 मानवी चात्र पीतायां वासन्ती हेमपुष्पिका ॥ १८२ ॥  
 मल्लिकायां विचकिलो भूपदी मुक्तबन्धना ।  
 शीतभीरुर्मदयन्ती गवाक्षी तृणशून्यकम् ॥ १८३ ॥  
 देवमाल्यां वरारोहा गोधामाल्यां तु सेवनी ।  
 सुरुपायां तृणं वेश्यं काकमाल्यां वनोद्भवा ॥ १८४ ॥  
 आस्फोता चैकपटलमाल्यां बालाऽथ रक्तकः ।  
 बन्धूको बन्धुजीवश्च सप्तलायां विभावनी ॥ १८५ ॥  
 सुगन्धा ग्रैष्मिकाताना मालिका नवमालिका ।  
 शोफालिका तु निर्गुण्डी नीलिका निवहात्र तु ॥ १८६ ॥  
 सितायां श्वेतसुरसा वासन्त्यां माधवी लता ।  
 निस्सङ्गजा कान्तनाला प्रहसन्ती कुटुम्बिका ॥ १८७ ॥  
 अतिमुक्तश्च कन्यायां कुमारी तरुणी सहा ।  
 महासहायामल्लानः पीताम्लाने कुरण्डकः ॥ १८८ ॥  
 शोणे बली कुरवको भाटेऽस्मिन् कलशोदकः ।  
 किङ्किराते किङ्किराटः प्रलोही चापि लातकः ॥ १८९ ॥  
 सैरेयके तु फिण्टी स्त्री तस्मिन् कुरवकोऽरुणे ।  
 दासी सहाऽप्यार्तगलः कुरण्डश्च सनीलकः ॥ १९० ॥  
 पीतेऽव्ययः कुरवकः सहा स्त्री सहचर्यषण् ।  
 कुन्दे माष्यः शुक्रपुष्पो वासोऽथ करवीरकः ॥ १९१ ॥  
 प्रतिहासः शतप्रासः शितिकुम्भोऽश्वमारकः ।  
 चण्डातोऽश्वरिपुः श्वेते मरालोऽत्रातिलोहिते ॥ १९२ ॥  
 भुज उग्रविषः काकनासायां शिवमल्लिका ।  
 बकपुष्पस्तूलपुष्पः काकशीर्षः शिवप्रियः ॥ १९३ ॥  
 वसुभट्टः पाशुपत एकाग्रिलोऽम्बुको वसुः ।  
 नन्द्यावर्ते तु तगरस्तारावटनभोऽङ्गणौ ॥ १९४ ॥  
 जपायामोदपुष्पं स्यादत्र पद्मादयोऽपि च ।  
 विदार्या भूमिकुष्माण्डः सा तु कृष्णा पलाशिका ॥ १९५ ॥  
 कोष्टिका क्षीरशुक्लेक्षुगन्धिकेक्षुविदारिका ।  
 श्वेता क्षीरविदारी सा महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ १९६ ॥



शारद्यां लाङ्गली तोयपिप्पली शकुलादनी ।  
 गोलोभ्यां जटिलोभोग्रगन्धा तीक्ष्णा जया वचा ॥ १६७ ॥  
 मङ्गल्या चाथ शुक्ला सा षडग्रन्था जललम्बिका ।  
 श्यामा तु सा घुणाभीष्टा काश्मीरी देवदुन्दुभिः ॥ १६८ ॥  
 कैवर्ती मुस्तकेत्वासौ गुन्द्रायां भद्रमुस्तकः ।  
 महोदरी वरारोहा नादेयी वलयो वरम् ॥ १६९ ॥  
 मुस्तायां मुस्तकं न स्त्री सुगन्धः कर्णपूरकः ।  
 शकुलाक्षः श्वेतमध्ये हंसः पीठरदुन्दुभे ॥ २०० ॥  
 जलमुस्ते तु प्लवनं गोदर्भं परिपेलवम् ।  
 कुटन्नटं दशपुरं गोपुरं वर्तकं प्लवम् ॥ २०१ ॥  
 बालं तु पिङ्गलं वज्रं ह्रीवेरं दीर्घरोमकम् ।  
 चामरं चमकं ज्येष्ठं बहिष्ठं जटिलं जटा ॥ २०२ ॥  
 शैलमूलं तु कञ्चोरं पलाशो हिमजा जटी ।  
 अशोभ्यां मुसली ताली तालमूली फलिन्यपि ॥ २०३ ॥  
 खञ्जेऽरिष्ठो गुहोच्छिष्टो रसोनो गुञ्जनः कटुः ।  
 कायाङ्गं लशुनं दिव्यं महाकन्दामृतोद्भवे ॥ २०४ ॥  
 जीर्णकञ्जं पलाण्डुस्तु श्वेतकन्दो मुकुन्दकः ।  
 हरितेऽस्मिन् लतार्कः स्यात् फण्डो दुद्रुमो रसः ॥ २०५ ॥  
 स्वल्पकन्दे हरिद्रक्ते गुञ्जनो गर्जनो गुजः ।  
 लशुनं दीर्घपत्रं च पिच्छनद्धो महौषधः ॥ २०६ ॥  
 फण्डश्च पलाण्डुश्च लतार्कश्च परारिका ।  
 गुञ्जनो यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः ॥ २०७ ॥  
 कन्दं त्वक्नी चित्रदण्ड उत्लुः कण्डूरसूरणौ ।  
 अशोभो दैत्यमदनः कचूस्तु दलकूर्चिका ॥ २०८ ॥  
 शकटश्चाथ कालार्चं नूतनं वेष्टितं दलम् ।  
 शोथशत्रौ महापद्मो मोहो माणो बृहच्छदः ॥ २०९ ॥  
 वराहकन्दे वाराही चक्रोष्ठ्यां मालुवा स्त्रियाम् ।  
 मध्वालुको मधुरसः कन्दलः कन्दली समौ ॥ २१० ॥  
 गौर्या हरिद्रा रात्र्याख्या हेमघ्नी काञ्चनी परा ।  
 रोचनी रञ्जनी पीता पिञ्जा पिण्डा मनश्शिला ॥ २११ ॥  
 तोषणी वर्णिनी बाला विटकान्ता तरङ्गिणी ।  
 दाव्या दारुहरिद्रा स्यात् पीतदारुश्च पर्जनी ॥ २१२ ॥  
 पचम्पचा कर्कटिनी पर्परा पर्पटी वरा ।  
 कटक्कटेरी कालेयः प्रकोट्यां तु कटूकटम् ॥ २१३ ॥

कटुभृङ्गं शृङ्गिवेरमाद्रमाद्रकमस्त्रियौ ।  
 वेणौ तु वंशकर्मारौ मृत्युपुष्पस्तृणध्वजः ॥ २१४ ॥  
 त्वचिसारो यवफलः खेलस्तेतनमस्करौ ।  
 चपश्च तेषु पवनोद्धूतध्वनिषु कीचकाः ॥ २१५ ॥  
 निस्सुषौ विषमो वेणौ क्षुद्रे लगुडवंशिका ।  
 तृणराजे तलस्तालो महापत्रः फलेरुहः ॥ २१६ ॥  
 क्रमुके वाटिका घोण्टा गुवाकः क्रूर आसवः ।  
 कषयो रागवान् पूगः फले पर्कटमस्य तत् ॥ २१७ ॥  
 पकं जोडं खरं शुष्कं चिक्कणे चक्कचक्कणे ।  
 दीर्घवृन्ते रामपूगो लतापूगो तु योजनः ॥ २१८ ॥  
 भूपूगो लघुकः क्षुद्रफले पाधोवकापि च ।  
 पूगे गैरेयकः शैलजातेऽथ स्याल्लताङ्कुरः ॥ २१९ ॥  
 हिन्तालस्तृणराजश्च नालिकेरे तु लाङ्गली ।  
 दाक्षिणात्योऽफलोऽबालः सुतङ्गः कूर्चकेसरः ॥ २२० ॥  
 सदाफलो बली चास्मिन् ह्रस्वे स्यात् खुड्डकोऽत्र तु ।  
 रक्ते स्वर्णोऽग्निकश्चाथ परिकोणास्य पट्टके ॥ २२१ ॥  
 खपुरः पूगपट्टोऽथ मधुक्षीरो महारसः ।  
 परुषः पाण्डुखर्जूरौ तस्मिन् खर्जूरिकाऽल्पके ॥ २२२ ॥  
 हलीमे केतकी न क्ली दीनो व्यञ्जनजम्बुलौ ।  
 स्त्रीभूषणो रजःपुष्पो गुप्तरागो वलीनकः ॥ २२३ ॥  
 ताल्यां वृद्धदला ताडी पत्रताली वराङ्गना ।  
 पत्रला फलपाकान्ता तालाद्याः स्युस्तृणद्रुमाः ॥ २२४ ॥  
 सवेणवस्ते त्वक्सारास्तृणानीक्षुयवादयः ।  
 इक्षुर्वृष्यो मधुतृणो मृत्युपुष्पो महारसः ॥ २२५ ॥  
 खड्गपत्रोऽप्यथानिक्षुर्वायसालीक्षुपालिका ।  
 इक्षुभेदास्तु कान्तारवंशपुण्ड्रादयो नरि ॥ २२६ ॥  
 दर्भोऽश्ववालः काशिर्ना काशोऽस्त्री स्त्रीक्षुगन्धिका ।  
 कुशे मुनिः कुथो दर्भो वीनाहो यज्ञजागरः ॥ २२७ ॥  
 लताकुशे तु शीरी स्त्री धमने शुषिरो नलः ।  
 शरो मुखो भद्रमुञ्जो गुन्द्रस्तेजनकः खरः ॥ २२८ ॥  
 मुञ्जस्तु यज्ञियो मेध्यो मृदुत्वग्ब्रह्ममेखलः ।  
 उत्लुकस्तूलपो दर्भ ऊर्ध्वमूलः खरच्छदः ॥ २२९ ॥



बालकेश्यां दृढदला जूर्णा कृकणपत्रिका ।  
 पुंभूम्नि बल्वजा वात्यां त्विल्कटः स्यात् पराशकः ॥ २३० ॥  
 स्याद्वीरणं वीरवृणं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।  
 सेव्या मृणालनलदलामज्जानि जलाशयम् ॥ २३१ ॥  
 नियुतस्तम्बजट्टदैत्यगौरकुदानवम् ।  
 अभयं चावदाहं च दूर्वा तु हरितालिका ॥ २३२ ॥  
 वरा सहस्रवीर्या च भार्गवी चाथ सा सिता ।  
 गोलोमी शतवीर्या च गोऽर्गलस्त्वेरका वृणम् ॥ २३३ ॥  
 सौगन्धिकं देवजग्धं ध्यामकं कत्तुणं पुरम् ।  
 छत्रातिच्छत्रापालघ्नौ मालावृणकभूस्तृणे ॥ २३४ ॥  
 पुञ्जीलस्तु वृणस्तम्ब इषीका तूलिका समे ।  
 शष्पं बालवृणं शादः सर्वं तु वृणमर्जुनम् ॥ २३५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या  
 भूमिकाण्डे वनाध्यायः ॥ ३ ॥

### पशुसङ्गहाध्यायः ॥ ४ ॥

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यः पारीन्द्रः श्वेतपिङ्गलः ।  
 व्यादीर्णास्यो महानादः शार्दूलस्तुल्यविक्रमः ॥ १ ॥  
 कण्ठीरवो मृगरिपुः सुगन्धिहरितो हरिः ।  
 हलीचणस्तृणसिंहः स्यात् कूटरुर्मृगर्हिसकः ॥ २ ॥  
 व्याघ्रो मृगारिः शार्दूलो हिंसारुश्चन्द्रकी मृगात् ।  
 हुण्डश्चाल्पस्त्वयं द्वीपी चुलुको भेलमेहिनौ ॥ ३ ॥  
 तरक्षुस्तु मृगाजीवस्तिर्लत्सकमृगादनौ ।  
 पिण्डारकस्तु चित्राङ्गो महादंष्ट्रो वरोत्कटः ॥ ४ ॥  
 वराहः सूकरो घोणी वक्रदंष्ट्रो जलप्रियः ।  
 पीनस्कन्धः स्तब्धरोमा कामरूपी तलेक्षणः ॥ ५ ॥  
 भूदारः कुमुखो घृष्टिः स्थूलनासो बहुप्रजः ।  
 पङ्कक्रीडनकः पोथी किटिराखनिकः किरिः ॥ ६ ॥  
 भङ्गूको दीर्घरोमर्क्षो भङ्गाटो वृकधूर्तकः ।  
 विकरालोऽच्छभङ्गश्च गण्डके खड्गखड्गिनौ ॥ ७ ॥  
 वार्ध्राणसो गणोत्साहः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ।  
 महिषः सैरिभोऽश्वारिर्जलात्मा गद्रवस्वरः ॥ ८ ॥  
 लुलायः कासरः शृङ्गी हेरम्बः कृष्णशृङ्गकः ।  
 जरन्तः कलुषः पोथी वीरस्कन्धो रजस्वलः ॥ ९ ॥  
 स्कन्धशृङ्गो यमरथः कटाहो दंशालालिकः ।  
 हंसकालीसुतश्चाथ सृजया महिषोऽसितः ॥ १० ॥  
 गवलश्च परस्वांश्च महिषः स्यादरण्यजः ।  
 मृगः प्लावी भीरुचेता वननो मरुको लिगुः ॥ ११ ॥  
 नित्यशङ्की च कृष्णस्तु कृष्णसारो निरञ्जनः ।  
 यक्षाङ्ग एणस्तात्रस्तु हरिणस्तृणसंवरः ॥ १२ ॥  
 राजीवस्त्वेष राजीमान् सितक्रोडः स चीनकः ।  
 शम्बरस्त्वल्पहरिणः पृषतस्तु स बिन्दुमान् ॥ १३ ॥  
 रुरुर्महान् कृष्णसारः कुरङ्गो हरिणो महान् ।  
 रोहिदृश्यो हरिणवन्मृदुशृङ्गः प्रतापसः ॥ १४ ॥



न्यकुस्तु शम्बराकारस्त्रिकेण विपुलोज्जतः ।  
 परम्परस्तु गोकर्णः पोटरूपस्तु तत्समः ॥ १५ ॥  
 रौहिषो गर्दभाभासो रोहितः श्वेतराजिमान् ।  
 वातायुः स्याद्वातमृगो जवी वातप्रमीः शिवः ॥ १६ ॥  
 प्रियको रोमभिर्युक्तो मृदूश्चमसृणैर्घनैः ।  
 नीलः स श्वेतरखावानथवा श्वेतचन्द्रकः ॥ १७ ॥  
 कदली तु बिले शेते मृदुरूक्षोश्चकर्वुरैः ।  
 नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विंशत्यङ्गुलायता ॥ १८ ॥  
 श्यामिका तु श्वेतबिन्दुः श्यामला षोडशाङ्गुला ।  
 चतुरा तु घनस्निग्धरोमा श्यामा सचन्द्रका ॥ १९ ॥  
 कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गबिन्दुका ।  
 सामूना तु समूरुर्ना सार्धहस्तसमायता ॥ २० ॥  
 गोधूमाभाऽथवा कृष्णा स्निग्धोश्चमदुरोमिका ।  
 चीनस्तु चीनसी स्त्रीत्वे कपोता त्रिंशदङ्गुला ॥ २१ ॥  
 मरुजा तूचमसृणमृदुपाण्डुरोमिका ।  
 रोमराजीमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसमिता ॥ २२ ॥  
 चनका तु चमूरुर्ना सिताभा यदि वासिता ।  
 कृष्णरोमानुविद्धा वा पुच्छोऽस्या न भवत्यपि ॥ २३ ॥  
 सेलिमस्तु मृदुश्वेतरूक्षोश्चघनरोमकः ।  
 चमूरुस्तु महाग्रीवः सितः केसरवान् जवी ॥ २४ ॥  
 कदली तु श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी ।  
 एते स्युः कृष्णसाराद्या मृगा अजिनयोनयः ॥ २५ ॥  
 शशतुल्या विजातिश्च रक्ताभा मृगमातृका ।  
 बिलेशया तु कृमिरा कुमारी तु हिमद्युतिः ॥ २६ ॥  
 कुचारुश्चारुपुच्छः स्यात् सुविषाणो वृषाकृतिः ।  
 कृतारुस्तु न निष्पुच्छो जायते हिमवत्तटे ॥ २७ ॥  
 रुचुस्तु शुक्लो मेषाभः स पीतः सूकराकृतिः ।  
 कृष्णे शृङ्गे च तस्याथ कृतमालो वृकाकृतिः ॥ २८ ॥  
 सृमरः स्याद्वालमृगः परुर्ना चमरी न षण् ।  
 कालपुच्छस्तु तत्प्रायो नामार्थेनैव भिद्यते ॥ २९ ॥  
 चारुकस्तु किशोराभः कन्दरस्तूचजानुकः ।  
 मृगाः स्युः कृष्णसाराद्यास्त एव पशवः सह ॥ ३० ॥  
 सिंहाद्यैश्च शशाद्यैश्च प्राण्यैश्चैव गवादिभिः ।  
 शशस्तु रोमकर्णः स्यान्मृदुरोमा च शूलिकः ॥ ३१ ॥

गन्धर्वः स्याद्गोलपुसो रामस्तु वृकधोरणः ।  
 शरभस्तु गजारातिरुत्पादश्चाष्टपादपि ॥ ३२ ॥  
 गवयः स्याद् वनगवो गोवाही वाहवारणः ।  
 कोलाङ्गकस्तु जलको भालुको भल्लुकाकृतिः ॥ ३३ ॥  
 पुरोही स्यात् कुलचरो ललनाक्षो वृकाकृतिः ।  
 कोटङ्गः स्याज्जन्तुधरो मार्जारी चमराकृतिः ॥ ३४ ॥  
 शालिजादस्तु खट्वासः पूतिः खट्वासिकापि च ।  
 शिवेव स्याद् गन्धमृगः कस्तूरी मृगपालिका ॥ ३५ ॥  
 अण्डौ तु तस्याः कस्तूरी राजार्ह शितिचन्दनम् ।  
 मार्जारिका वेधमुख्या मदनी गन्धचेलिका ॥ ३६ ॥  
 श्वाविच्छललशल्यौ तल्लोम्न्यना शलली शलम् ।  
 सृगालो भरुजः क्रोष्टा श्वभीरुर्मृगमत्तकः ॥ ३७ ॥  
 शयालुः सूचको घोरः फेरुफेरुण्डफेरवाः ।  
 मृगधूर्तो भूरिमायो गोमायुर्वृकधूर्तकः ॥ ३८ ॥  
 किखिः स्त्री क्रोष्टुभेदेऽल्पे पृथौ लोपाशगृण्डवौ ।  
 वानरो मर्कटः कीशः कपिः शाखामृगो हरिः ॥ ३९ ॥  
 महावेगो दधिमुखः कुरङ्गो भल्लुकः पृथुः ।  
 वलीमुखो वनौकाः स गोलाङ्गुलोऽसिताननः ॥ ४० ॥  
 नीलशीर्षोऽप्यथ द्विङ्को वानरो रोहिताननः ।  
 शृङ्गिणी सौरभेयी गौरर्घ्या माहेय्युषा शुभा ॥ ४१ ॥  
 अनड्वाह्यनड्वाह्यस्त तम्बा तम्पा निलिम्पिका ।  
 रजःपूता च कृष्णाऽसौ बहुला क्षितिसम्भवा ॥ ४२ ॥  
 सिता तु धवला पुण्ड्रा सुनन्दा जलसम्भवा ।  
 कपिला त्वग्निजा दाक्षी सुरभिः कामरूपिणी ॥ ४३ ॥  
 रक्तवर्णा रोहिणी स्याच्छीतला वायुसम्भवा ।  
 शबली तु प्रक्षराङ्गी सुमना व्योमसम्भवा ॥ ४४ ॥  
 वराङ्गा तु चतुर्वर्षा द्विवर्षा तु द्विहायनी ।  
 एकहायन्येकवर्षा बहुक्षीरा तु वज्रुला ॥ ४५ ॥  
 नैचिकी गौर्गवां श्रेष्ठा भद्रा गौर्गोमतल्लिका ।  
 काल्योपसर्या प्रजने पलिकनी बालगर्भिणी ॥ ४६ ॥  
 पष्ठौह्यन्या वशा वन्ध्या वेहद्रर्भोपघातिनी ।  
 अवतोका स्रवद्रर्भा वत्सकामा तु वत्सला ॥ ४७ ॥



चिरसूता वष्कयणी गृष्टिः सूतवती सकृत् ।  
 समांसमीना सा गौर्या प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ४८ ॥  
 पीनस्तनी तु पीनोद्धनी सुखदोद्या तु सुव्रता ।  
 दुःखदोद्या तु करटा प्रस्तुता प्रसवोन्मुखी ॥ ४९ ॥  
 द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा बहुसूतिः परेषुका ।  
 घेनुर्नवप्रसूता गौर्धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥ ५० ॥  
 अभिवान्यान्यवत्सा गौर्वृषाकान्ता तु सन्धिनी ।  
 आपीनमूधो वृन्तं तु स्तनो वत्सस्तु तर्णकः ॥ ५१ ॥  
 विषाणी वृषभः शृङ्गी बाहो गौरक्षधूर्तिलः ।  
 उक्षा गौर्वृषलोऽनड्वान् बाह्यः स्कन्धवहो वही ॥ ५२ ॥  
 सौरभेयो बलीवर्दो बाडवेयश्च शाकरः ।  
 षण्डस्तु गोपतिः श्रीमान् डङ्क इट्वर ईश्वरः ॥ ५३ ॥  
 ककुदी गोवृषो घोणः ककुद्भान् मदकोहलः ।  
 जातोक्षो जातमात्रोक्षा दम्यो वत्सतरः समौ ॥ ५४ ॥  
 महोक्षः स्यादुक्षतरो वृद्धोक्षस्तु जरद्वरः ।  
 आर्षभ्यः षण्डतायोग्यो नैचिक्याः प्राक् परे त्रिषु ॥ ५५ ॥  
 भग्नशृङ्गपशुः कूटः प्रष्टवाड् युगपार्श्वगः ।  
 स्थूरी पृष्ठयः पृष्ठवाह्यः स्कन्धिकः स्कन्धवाहकः ॥ ५६ ॥  
 नस्योतो नस्तिते षोडन् षड्देऽथो धुरन्धरे ।  
 धुरीणधुर्यधौरेयाः प्रासङ्गादेस्तु वोदृषु ॥ ५७ ॥  
 प्रासङ्ग्यः शाकटो युग्यो हालिकः सैरिकदयः ।  
 एवं सर्वधुरीणैकधुरीणैकधुरा अपि ॥ ५८ ॥  
 कर्णः कर्णविहीनः स्यात् षण्डस्तु च्छिन्नपुच्छकः ।  
 गोमान् गोमी च गोस्वामी गोविन्दोऽधिकृतो गवाम् ॥ ५९ ॥  
 नैचिकी गोः शिरोदेशः सास्ना तु गलकम्बलः ।  
 गोशकृद्गोमयो न स्त्री गोग्रन्थिः शुष्कगोमयः ॥ ६० ॥  
 दोहलं तु करीषोऽस्त्री गोकुलं गोधनं समे ।  
 गोमहिष्यादिकं जीवधनं स्यात् पाशबन्धनम् ॥ ६१ ॥  
 छगस्तु छगलश्छागो लम्बकर्णः स्तभः पशुः ।  
 बस्तोऽजश्च छगी मञ्जी सर्वभक्षा गलस्तनी ॥ ६२ ॥  
 चुलुम्पा चित्रला हृद्या पर्णादा पलिकिन्यजा ।  
 इलिकस्तु वनच्छागो बालवीज्यो निरायसः ॥ ६३ ॥

मेघे शृङ्गिणसम्फालवृष्टिपेत्वहुलहृदाः ।  
 एडकोऽप्युरणो मीढ उरभ्रो रोमशोऽप्यविः ॥ ६४ ॥  
 मेघी तु कुररी वेणी जालकिन्यविला रुजा ।  
 खररासभचक्रीवद्वाहबालेयगर्दभाः ॥ ६५ ॥  
 रुक्षस्वरो धूककर्णो नेमिर्भारसहः शलः ।  
 चिरमेही गोर्दनकः कोलिण्टो बडबापतिः ॥ ६६ ॥  
 करभश्च मयस्तूष्ट्रो महाप्रीवः क्रमेलकः ।  
 दाशेरकश्च रवणः करभः स्यादसौ शिशुः ॥ ६७ ॥  
 करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ।  
 श्वा सारमेयः शुनको भषणो मृगदंशकः ॥ ६८ ॥  
 दीर्घनादी गृहमृगः कुकुरः क्रोधनः शुनिः ।  
 यक्ष इन्द्रमहश्चालः कपिलो मण्डरः शुनः ॥ ६९ ॥  
 जिह्वापानः पुरोगामी कृतज्ञो रात्रिजागरः ।  
 कौलेयकोऽस्थिखादश्च भवनो भलुहोऽपि च ॥ ७० ॥  
 शुनी तु सरमा श्वाली विट्चारो ग्रामसूकरः ।  
 ओतुर्बिडालो मार्जार आखुमुक् पृषदंशकः ॥ ७१ ॥  
 जाहको गात्रसङ्कोची मण्डली नखरायुधः ।  
 पशुस्तु मलुको मोकः कपः शुद्धो जडश्चरिः ॥ ७२ ॥  
 बाले तु बर्करः सूता तूबरः शृङ्गवर्जितः ।  
 हिंस्रो व्याघ्रादिको व्यालः श्वापदो मरुलः शरिः ॥ ७३ ॥  
 पुच्छोऽस्त्री लूम लाङ्गूलं बालहस्तश्च बालधिः ।  
 खुरः शफः शको विष्ठा घासस्तु यवसः शरिः ॥ ७४ ॥  
 रोमन्थनन्तु रोमन्थो रोमोर्णोर्णास्तुकोऽपि च ॥ ७५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे पशुसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ४ ॥



## मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नरः ।  
 द्विपादो नहुषा गोधा त्राताः पञ्चजना नराः ॥ १ ॥  
 ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा इति वर्णाश्चतुष्टये ।  
 उपवर्णास्तु सङ्कीर्णा विवर्णास्त्वन्यजातयः ॥ २ ॥  
 एकवर्णाः सवर्णाः स्युर्हीनवर्णास्तु जङ्गिताः ।  
 सवर्णं ब्राह्मणाद्राज्ञी सूते मूर्धावसिक्तकम् ॥ ३ ॥  
 वैश्याऽम्बष्ठं निषादं तु शूद्रा पारशवश्च सः ।  
 एते विवाहजाः पुत्रा व्यभिचारसुताः पुनः ॥ ४ ॥  
 अभिषिक्तः कुम्भकारः शूलिकश्च यथाक्रमम् ।  
 विप्रादावृतमुग्रस्त्री निषादी तु मनोजवम् ॥ ५ ॥  
 अम्बष्ठकन्या त्वाभीरं खञ्जमन्तावसायिनी ।  
 आयोगवी धिग्वनकं कुक्कुटी तु पराजकम् ॥ ६ ॥  
 भृज्जकण्ठी तु सौधातं शनकी तु बहिर्गरम् ।  
 वैदेहकी कारुविन्दं मैत्री रन्ध्रं भटी सटम् ॥ ७ ॥  
 चण्डाली तु श्वचण्डालं शबरी तु परिच्छदम् ।  
 कालकिञ्चं तु करणी यवनी यावशादनम् ॥ ८ ॥  
 नटी भटं खषी द्रोहं मागधी तु दमण्डकम् ।  
 पराजकी तु सिद्रुण्डं कारुविन्दी कुविन्दकम् ॥ ९ ॥  
 रथकारी रथाश्मानमावृती तु खरुञ्जकम् ।  
 सूता पारावतं सूते श्वपाकी पालुखञ्जनम् ॥ १० ॥  
 पुलकसी भर्मिणं सूते धीवरी तीवरं ततः ।  
 एते ब्राह्मणपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ११ ॥  
 सूते विप्रा नृपाद्वैश्या माहिष्यं यवनश्च सः ।  
 अश्वपण्यमनूढा सा शूद्राऽनूढैव शूलिकम् ॥ १२ ॥  
 उग्रमूढा निषादी तु वेणुकं कुक्कुटी कुटम् ।  
 तीवरी महिषं वेनी रट्टासं पुलकसी बकम् ॥ १३ ॥  
 चण्डाली रुचिटं मल्ली पल्लमुग्री भूषा परम् ।  
 श्वपाकी कलुषं सूता कीलुषं घर्घरी मिषम् ॥ १४ ॥  
 सिद्रुण्डी डिण्डिकं जल्ली भ्रुकुञ्चं शनकी कचम् ।  
 कची भ्रेणं भ्रुकुञ्ची तु पागलं पागली गिलम् ॥ १५ ॥

एते क्षत्रियपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ।  
 वैश्याद्वैदेहकं विप्रा क्षत्रकन्या तु मागधम् ॥ १६ ॥  
 शूद्रा तु करणं सैव जारात् कटकरं ततः ।  
 कटकर्मा स वेनी तु वागुरं वेणुकी वटम् ॥ १७ ॥  
 अम्बष्ठी कोहलं रन्ध्री घर्घरं विन्दकी भ्रषम् ।  
 कारुविन्दी पराविद्धमुग्रीवेशं कुटी सटम् ॥ १८ ॥  
 कुक्कुटी पलिनं मेदी मालुकं मालुकी मकम् ।  
 चण्डाली नीलिकं वाटी मेणकं करणी वशम् ॥ १९ ॥  
 रथकारी सनालिङ्गं वैदेही वानवासिकम् ।  
 श्वपाकी पाणिशं मल्ली विबुक्कं डिण्डिकी कशम् ॥ २० ॥  
 मैत्री वाटं नटी भोलं प्रसूते कीलुषी किटम् ।  
 घर्घरी धर्मिणं घोलमित्येते वैश्यसूनवः ॥ २१ ॥  
 चण्डालं ब्राह्मणी शूद्रात् क्षत्रिया पारधेनुकम् ।  
 वेलवं सैव चौर्येण वैश्या त्वायोगवं ततः ॥ २२ ॥  
 चौर्यात् सा चाक्रिकं वेनी वंशिकं फलिनी कुथम् ।  
 निषादी कुक्कुटं भिल्ली शबरं कोहली नसम् ॥ २३ ॥  
 पुलकसी कवटं वाटी मञ्जनं मालुकी मलम् ।  
 वैदेहकी नीवलकं धीवरी कलशीनकम् ॥ २४ ॥  
 भृज्जकण्ठी कुवादुष्कं करणी कालशीनकम् ।  
 सूता मालसुपर्णाण्डौ सैरन्ध्री रथवारकम् ॥ २५ ॥  
 नटी भ्राणञ्जकं वाटी विभण्डं द्रमिडी द्रुहम् ।  
 कैवर्ती धीवरं रन्ध्री कलशं यवनी क्षुदम् ॥ २६ ॥  
 कारावती सुललिकं कुवादुष्की वशामखम् ।  
 चण्डाली पाण्डुकं द्रोही छाणकं महिषी पुरम् ॥ २७ ॥  
 वरुटी रुण्डकं घोली वीलकं कवटी पुटम् ।  
 एते शूद्रस्य पुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ २८ ॥  
 निषादाब्राह्मणी भेकं क्षत्रिया कालकुण्डकम् ।  
 वैश्या सूचिं हरिं शूद्रा सोऽपि चायोगवः कचित् ॥ २९ ॥  
 कैवर्ती बुरुलं भिल्ली शनकं शनकी रसम् ।  
 श्वपाकी गर्मुटं घोली घर्घरं द्रमिडी कणम् ॥ ३० ॥  
 वैदेही कलशं द्रोही भ्रेणकं छाणकी लुषम् ।  
 रथकारी मन्दुपालं मागधी मड्डुकैरिकम् ॥ ३१ ॥



आयोगवी तु कैवर्त निषादान्मार्गरश्च सः ।  
 एते निषादपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३२ ॥  
 जालं वैदेहकाद्विप्रा क्षत्रिया रथकारकम् ।  
 वैश्या धन्ववनं शूद्रा गैरुषं करणी कृमिम् ॥ ३३ ॥  
 अम्बष्ठी बेनमुग्री तु गर्गरं शनकी हनुम् ।  
 आयोगवी तु मैत्रेयं पुलकसी कणकुक्कुटम् ॥ ३४ ॥  
 निषादी मेदमन्धं तु सैव चेन्नान्यपूर्विका ।  
 एते वैदेहपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३५ ॥  
 मैत्रेयाद् ब्राह्मणी लालं क्षत्रिया जालभूषणम् ।  
 वैश्या छण्डभटं शूद्रा निषादी लोहमालकम् ॥ ३६ ॥  
 आयोगवी तु मधुकं घण्टिकं नान्यपूर्विका ।  
 एते मैत्रेयपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३७ ॥  
 विप्रा नाविकमम्बष्ठादस्मिन् कापि श्वपाकवाक् ।  
 वैणवं सैव माहिष्याद्रजकं पारधेनुकात् ॥ ३८ ॥  
 श्वपचं सैव चण्डालाश्चर्मकश्चुकजीवनम् ।  
 मागधात्ताम्रजीवं सा तक्षार्णं करणादसौ ॥ ३९ ॥  
 आयोगवाश्चर्मकारं राज्ञी वार्मिकसूचकौ ।  
 माहिष्याश्चर्मकारं सा खनकं मागधादसौ ॥ ४० ॥  
 उद्बन्धं खनकाच्छूद्रा स्पृश्यमम्बरनेजकम् ।  
 अधोनापितमम्बष्ठी करणान्मत्स्यबन्धकम् ॥ ४१ ॥  
 वैश्या सामुद्रमाजीवेत् पण्यं सामुद्रमेव सः ।  
 निषादी धिग्वनाश्चर्मकारं कारावरोऽपि सः ॥ ४२ ॥  
 कारावरो निषादेन वैदेह्यामिति केचन ।  
 वैदेही पाण्डुसोपाकं चण्डालात् कुङ्कुणश्च सः ॥ ४३ ॥  
 आहिण्डिकं निषादात् सा कवटी तु हुरिञ्जकम् ।  
 निष्ठयाच्छूद्रा मधुश्रेणि शौण्डिकं मण्डहारकम् ॥ ४४ ॥  
 उग्री क्रमेलकं तस्मान्निर्णक्ता रजकश्च सः ।  
 सोपाकं पुलकसी निष्ठयाश्चण्डालादिति केचन ॥ ४५ ॥  
 अन्ध्री तु शबराभिष्टयं भिन्नं सा निष्ठयपूर्विका ।  
 किरातं पर्णशबरी शबरान्निष्ठयपूर्विका ॥ ४६ ॥  
 पुलिन्दपर्णशबरौ किराती निष्ठयपूर्विका ।  
 पुलिन्दश्वपचौ निष्ठयात् किराती नान्यपूर्विका ॥ ४७ ॥  
 रथकारं तु माहिष्यात् करणी माहिषाडुकम् ।  
 पुलकसं सैव चण्डालात् किरातात् पलगण्डकम् ॥ ४८ ॥

चण्डालात् पुलकसी डोम्बं निषाद्यन्तावसायिनम् ।  
 डोम्बी खपं सैव निष्ठयाद् विभेणं हड्डिकं खपी ॥ ४९ ॥  
 तीवरी धीवरात् पौण्ड्रं बबरं यवनादसौ ।  
 पुलकसात् पामरं वेनाच्छुषं डोम्बाद्वाराणकम् ॥ ५० ॥  
 श्वपाकं क्षत्रुग्रस्त्री केचिदाहुविषयम् ।  
 चूचु किराती शबराद्वैदेहात् पुलकसात् कचित् ॥ ५१ ॥  
 निष्ठयात् वरुटी मदगुं बल्लारं तु किरातिका ।  
 निषादपुलकसाद्यास्तु पूर्वोक्ता इह नोत्तरे ॥ ५२ ॥  
 विप्रा ब्रात्याद् भृजकण्ठमावन्त्यं विप्रपूर्विका ।  
 अध्येढा वाटधान्यं सा शैखं सा नान्यपूर्विका ॥ ५३ ॥  
 सा पुष्पवं पुष्पवती सम्यगूढा द्विजन्मना ।  
 लिच्छिवि क्षत्रिया ब्रात्याज्जलं सा विप्रपूर्विका ॥ ५४ ॥  
 ब्रात्यपूर्वा तु सा मल्लं क्षत्रपूर्वा तु सा नटम् ।  
 प्राक्प्रसूतस्वजातिः सा वरुटं करणश्च सः ॥ ५५ ॥  
 सा वैश्यपूर्वा द्रमिडं शूद्रपूर्वा तु सा खषम् ।  
 वैश्या ब्रात्यात् सुधन्वानमाचार्यं विप्रपूर्विका ॥ ५६ ॥  
 सुधन्वाचार्य एको वा मैत्रं सा वैश्यपूर्विका ।  
 शूद्रपूर्वा द्विजन्मानं सात्त्वतं क्षत्रपूर्विका ॥ ५७ ॥  
 अपूर्वा भारुषं कारुं ब्रह्मक्षत्रविशाममी ।  
 ब्रात्यानां क्रमशः पुत्राः शूद्रा ब्रात्याच्छुकण्डकम् ॥ ५८ ॥  
 कुर्वन्त्यनुपनीता ये विवाहं ब्राह्मणादयः ।  
 ब्रात्या ब्राताश्च ते सर्वे तत्सुताश्चावृतासु ये ॥ ५९ ॥  
 अवरेटः सवर्णायां जाराजातः सवर्णकात् ।  
 पत्यौ जीवति कुण्डोऽसौ भर्तृर्यसति गोलकः ॥ ६० ॥  
 अविवाह्यासु जाताश्च तथा स्युः कुण्डगोलकाः ।  
 ये च प्रव्रजितापुत्रास्तथा प्रव्रजितस्य ये ॥ ६१ ॥  
 क्षत्रकुण्डः पट्टबन्धो भोजः क्षत्रियगोलकः ।  
 देवप्रैष्यो विप्रकुण्डो ग्रामप्रैष्यस्तु गोलकः ॥ ६२ ॥  
 मणिकारो वैश्यकुण्डः शङ्करास्तु गोलकः ।  
 शूद्रकुण्डो मालवको वासहारस्तु गोलकः ॥ ६३ ॥  
 एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते ।  
 उक्ता प्रागेव केषाञ्चिन्नाम्ना केषाञ्चिद्भूयते ॥ ६४ ॥



मूर्धावसिक्तः सेनेशो धनुर्वेद्यस्त्रधारकः ।  
 मणिमन्त्रौषधिज्ञश्च सोऽम्बष्ठो यानशिक्षया ॥ ६५ ॥  
 चिकित्सागणितज्योतिर्ज्ञानी स्यादभिषिक्तकः ।  
 अम्बष्ठो भृज्जकण्ठोऽस्य चिकित्सा शस्त्रसाधना ॥ ६६ ॥  
 कट्याजीवात्स दौष्पन्तो निषादो ध्वजघोषणात् ।  
 कुम्भकारो भाण्डवृत्तिरेष स्यादूर्ध्वनापितः ॥ ६७ ॥  
 नाभेरूर्ध्वं वपन् पुंसां सूतकप्रेतकादिषु ।  
 चित्रमर्हलनृत्तज्ञः कालीं पारशवोऽर्चयेत् ॥ ६८ ॥  
 शूलिको दण्डयेदण्ड्यान् शूलारोपादिकर्मणा ।  
 निषादो मृगघातात् स माहिष्यो नृत्तगीतवित् ॥ ६९ ॥  
 स एव मङ्कुशोऽथासौ निषादः सस्यरक्षया ।  
 जीवन् सवर्णा नक्षत्रैः सोऽम्बष्ठो वैद्यशास्त्रवित् ॥ ७० ॥  
 महानर्मा च मदगुश्च स श्रेष्ठी वैश्यवृत्तितः ।  
 अश्वपण्यस्त्वाश्विकाख्यः सोऽश्वव्यापारजीवनः ॥ ७१ ॥  
 उग्रो दण्ड्यान् दण्डयेत् स दौष्पन्तो मत्स्यघातनात् ।  
 निषादो व्यालादिवधाद्यवनः कुक्षरग्रहात् ॥ ७२ ॥  
 पुरो धावन् पारशवो राज्ञः शस्त्रञ्च धारयन् ।  
 धनान्तःपुररक्षश्च शूलिकः शूलिकोपमः ॥ ७३ ॥  
 करणो लेखको राज्ञां वारकः शकनामकः ।  
 चुचूकः शाकताम्बूलक्रमुकादिकविक्रयात् ॥ ७४ ॥  
 रथकारो निधिप्रभृद्यूतापणनिरूपणात् ।  
 रथकारो व्यालमृगहिसावृत्तिरिति कचित् ॥ ७५ ॥  
 उग्रः पारशवो दुर्गधनान्तःपुरपालनात् ।  
 अन्वर्थः स्यात् कटकरो द्वादशैतेऽनुलोमजाः ॥ ७६ ॥  
 इतिहासपुराणज्ञः सूतो देवांश्च पूजयेत् ।  
 सूत ऊढासुतः पक्ता स्थानालङ्कारादिकृत् ॥ ७७ ॥  
 सोऽनूढाजो रथाश्वानां वाहको रथकारकः ।  
 वैदेहकस्य स्त्रीरक्षा स वन्दी स्तुतिजीवनात् ॥ ७८ ॥  
 मौकल्यो रामको वस्त्रस्यूतिरञ्जनजीवनात् ।  
 मागधोऽसावनूढाजो जङ्घाकरिकवृत्तिकः ॥ ७९ ॥  
 वाण्याद्यवतरेच्छुद्धयै क्षालयेन्मलिनाम्बरम् ।  
 वणिक्पथे मागधस्य वाग्भी राजप्रबोधनम् ॥ ८० ॥

चूचुको वेधनेनासौ स वन्दी स्तुतिकर्मणा ।  
 वैतालिको बोधनया वेणुवीणादिवादनैः ॥ ८१ ॥  
 धीवरो मार्गसन्त्राणाद् रामको दौत्यजीवनात् ।  
 आयोगवः पुलकसश्च स वासःकांस्यजीवनात् ॥ ८२ ॥  
 चौर्याज्जातः पुलिन्दोऽसौ स हन्ता दुष्टसत्त्वकान् ।  
 चण्डालो भल्लरीकक्षो वद्ध्रीकण्ठो मलं हरेत् ॥ ८३ ॥  
 स्यात् पारधेनुको वेनो गोधादिवधबन्धकृत् ।  
 स निषादो मत्स्यघातान्मद्गुराघोषणेन सः ॥ ८४ ॥  
 क्षत्ता दौत्यद्वारपाल्यात् पुलकसो मद्यविक्रयात् ।  
 पेलवः पुनरस्पृश्यो जम्भको नृत्तगानवित् ॥ ८५ ॥  
 आयोगवस्तैजसकृद्भूमिन्मणिवेधकृत् ।  
 स तक्षा तक्षणाज्जीवन् स्थपतिर्नगराधिकृत् ॥ ८६ ॥  
 अन्तावसायी वपनान्मागधश्चित्रकर्मणा ।  
 स वैदेहः पाशुपाल्यात् तद्रसानां च विक्रयात् ॥ ८७ ॥  
 पुलकसस्तान्तवेनासौ चाक्रिकस्तैलविक्रयात् ।  
 लवणक्रीतकोऽसौ स्याल्लवणस्यैव विक्रयात् ॥ ८८ ॥  
 एवमेकादश प्रोक्ता वर्णानां प्रतिलोमजाः ।  
 गोधादिवधबन्धास्तु हरीणां पुलकसाश्च ते ॥ ८९ ॥  
 रथकारो वास्तुवृत्तिरिज्याधानोपनीतिमान् ।  
 आवृतानां तु हस्त्यश्वस्यन्दनेष्वधिकारिता ॥ ९० ॥  
 शूर्पच्छत्रादिकर्माणि सूचीनां ते च पुलकसाः ।  
 कैवर्तानां पक्षिपशुमृगघातनजीवनम् ॥ ९१ ॥  
 आन्ध्राणां तु गृहद्वाररथ्यावस्करशोधनम् ।  
 मेदानां चक्रवृत्तित्वं विष्णुमूत्रप्रहणोज्झनम् ॥ ९२ ॥  
 आहिण्डिकानां कारासु बहिः स्थित्वाऽभिरक्षणम् ।  
 मेदान्ध्रचूचुमद्गूनामारण्यपशुर्हिसनम् ॥ ९३ ॥  
 मैत्रेयकः प्रशंसेन्नृन् घण्टाताडोऽरुणोदये ।  
 पारावरश्छत्रधरो दीपधृद्वाहको नृणाम् ॥ ९४ ॥  
 कुर्यादासनरक्षां च चर्मच्छेदनसीवनम् ।  
 कुक्कुटानां शस्त्रकृती राज्ञां कुक्कुटखेलनम् ॥ ९५ ॥  
 मागधादपि शूद्रायां कुक्कुटो नाम जायते ।  
 योऽन्वेष्टोद्यानवप्रादेवैश्याज्जातोऽपि कुक्कुटः ॥ ९६ ॥



निषाद्यां तन्तुवायोऽसौ वृक्षच्छेदावरोपकृत् ।  
 धिग्वनानां तु कार्मार्यं वेनानां भाण्डवादनम् ॥ १७ ॥  
 वेणः कुशीलवश्चासौ लङ्घनप्लवनादिभिः ।  
 वेणो राज्ञीसुतोऽप्युग्रान्मायासम्मोहनादिकृत् ॥ १८ ॥  
 वैदेह्यम्बष्ठजो वेनो नाट्यरङ्गावतारकृत् ।  
 आभीराणां जीवधनं कूटानामश्मतक्षणम् ॥ १९ ॥  
 नौवाहो मार्गरो नद्यां नाविकस्त्वन्धिनौगमः ।  
 शैखोऽभिचारं कुर्वीत कार्मणं भृजकण्ठकः ॥ २० ॥  
 मन्त्रौषधैर्द्विषत्सेनां वशीकुर्वीत पुष्पवः ।  
 आदन्त्यो वाटधानश्च स्वसेनाचित्तवृत्तिवित् ॥ २१ ॥  
 ब्राह्म्याः क्षत्रसुताः शत्रुकोशमन्त्रादिवेदिनः ।  
 खषाणां तोयाहरणं द्रमिलानां प्रपाकान्तः ॥ २२ ॥  
 नटानां करणानां च चारवृत्तिः स्फुटास्फुटा ।  
 भारुषस्त्वर्चयेन्मातृः श्मशानादि चतुष्पथम् ॥ २३ ॥  
 सुधन्वाचार्य ईशानं शाक्यचैत्यादि मैत्रकः ।  
 भूतप्रेतपिशाचांस्तु विजन्मा सूतिवेश्म च ॥ २४ ॥  
 सात्त्वतः पूजयेद्विष्णुमुक्ते भागवतश्च सः ।  
 सन्ति भागवताश्चान्ये ब्राह्मणा भगवत्पराः ॥ २५ ॥  
 श्वकण्ठकस्य शूद्रादि मालवस्याश्वपालनम् ।  
 वैणवीं पाण्डुसोपाकः सोपाको मूलवृत्तिकः ॥ २६ ॥  
 श्मशानचेलरक्षादिवृत्तयोऽन्तावसायिनः ।  
 वनश्मशानरक्षा तु चण्डालान्तावसायिनाम् ॥ २७ ॥  
 गारानलप्रयोगाश्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः ।  
 ब्राह्मणस्य त्रयः पुत्रा वर्णस्त्रीष्वनुलोमजाः ॥ २८ ॥  
 शूद्रस्य च त्रयः पुत्रास्तास्वेव प्रतिलोमजाः ।  
 त्रयस्त्रयः क्षत्रविशोः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ २९ ॥  
 एते द्वादश वर्णानां पुत्रा एकैकशस्तु ते ।  
 चातुर्वर्ण्ये प्रसूयन्ते चतुरश्रतुरः सुतान् ॥ ३० ॥  
 ते चत्वारिंशदष्टौ च पूर्वैर्द्वादशभिः सह ।  
 ब्राह्मणाद्यैश्चतुर्भिश्च चतुष्पष्टिर्हि जातयः ॥ ३१ ॥  
 ते सर्वे दस्यवो दोषैश्चौर्याद्यैः सद्बहिष्कृताः ।  
 आसाविकस्तु सैरिन्द्रो दस्योरायोगवीसुतः ॥ ३२ ॥

दस्यूनां बहुजातित्वाद् बह्वयः सैरिन्द्रजातयः ।  
 प्रसाधनोपचारज्ञा मृगादिवधजीवनाः ॥ ३३ ॥  
 शाकपुष्पफलानां च विक्रेतारो बहिष्कृताः ।  
 राजस्त्रीणां सूतिकानां द्वास्थ्याः प्रेताम्बरावृताः ॥ ३४ ॥  
 विक्रेतारः सुरां कृत्वा सैरिन्द्राः स्युर्यथोचितम् ।  
 दस्युम्लेक्षगणानां तु कृषिशस्त्रोपजीवनम् ॥ ३५ ॥  
 म्लेच्छाः स्युर्विप्रकृष्टा ये म्लेच्छवाचो वनौकसः ।  
 कार्या क्षत्रुप्रवैदेहैरन्या वृत्तिरगर्हिता ॥ ३६ ॥  
 मेदान्ध्रैर्गर्हिता वृत्तिरनुक्ताः कुलवृत्तयः ।  
 तत्रापि मातृकीं वृत्तिं गर्हितामनुलोमजाः ॥ ३७ ॥  
 भजेरन् प्रतिलोमास्तु पैतृकं कर्म गर्हितम् ।  
 अनुलोमा निकृष्टायामुत्कृष्टादुद्भवन्ति ये ॥ ३८ ॥  
 प्रतिलोमा विपर्यस्ता ब्राह्म्यास्तत्प्रतिलोमजाः ।  
 अनुलोमप्रतिलोम्यादान्तरालिकसंज्ञिताः ॥ ३९ ॥  
 वर्णमात्रानुलोमा ये षट् तेऽपशदसंज्ञिताः ।  
 षडपध्वंसजा ये स्युर्वर्णानां प्रतिलोमजाः ॥ ४० ॥  
 रजकश्चर्मकारश्च वेनो बुरल एव च ।  
 कैवर्तमेदभिज्ञाश्च सप्तैता अन्यजातयः ॥ ४१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥



## ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

ब्राह्मणो मुखजो विप्रो भूदेवो मैत्र एतशः ।  
 अग्रजन्मा वेदगर्भो बाडबश्च त्रयीपुषः ॥ १ ॥  
 संस्कारास्तु निषेकाद्याः श्मशानान्ता द्विजन्मनाम् ।  
 गर्भाधानं तु यौनं स्यात् प्राजापत्यं च मौलिकम् ॥ २ ॥  
 आधानिकं पुंसवनं पौस्नमप्यथ गार्भिणम् ।  
 सीमन्तोन्नयनं नामकर्मात्मन्त्रणिके समे ॥ ३ ॥  
 चौले तु चूडाकरणं क्षुरकर्म तु मुण्डनम् ।  
 मौण्डिकं भद्राकरणं वपनं परिवापणम् ॥ ४ ॥  
 सशिखं वपनं तोडं निशिखं भिक्षुलोचकम् ।  
 ओद्वितं त्वतिष्ठं स्यात् पञ्चचीरोद्वितं पुनः ॥ ५ ॥  
 आडिण्डिकं त्रिषु परे मुण्डः स्यान्मुण्डितोऽशिखः ।  
 शिखावानवमुण्डः स्यात् पञ्चचूडस्तु सारणः ॥ ६ ॥  
 उपनायस्तूपनय आनायश्च वदकृतिः ।  
 ब्रह्मचारी व्रती वर्णी नैष्ठिकस्तु स आश्रमी ॥ ७ ॥  
 गायत्रस्तूपकुर्वाणो वैदिकोऽधीतवेदकः ।  
 प्राजापत्यः कृतोद्वाहः स एवौदुम्बरायणः ॥ ८ ॥  
 वर्णिलिङ्गी लिङ्गवृत्तिर्निस्स्वाध्यायो निराकृतिः ।  
 वान्ताशी भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् ॥ ९ ॥  
 उच्छिष्टभोजनो देवनिवेद्यबलिभोजनः ।  
 जातिमात्रोपजीवस्तु यः स स्याद् ब्राह्मणव्रतः ॥ १० ॥  
 अजपस्त्वसदध्येता देवाजीवस्तु देवलः ।  
 अधायवो वधरता विगीताः ख्यातगर्हणाः ॥ ११ ॥  
 अवगीताश्च हन्ता तु गुरुणां नरकीलकः ।  
 शिशिवदानो दुराचारो निषिद्धैकरुचिः खरुः ॥ १२ ॥  
 त्यक्तात्मा त्यक्तसंवासो ह्यवकीर्णी क्षतव्रतः ।  
 शाखारण्डोऽन्यशाखास्थो वर्णिलिङ्गयादयस्त्रिषु ॥ १३ ॥  
 वानकं तु ब्रह्मचर्यं नियमप्रयमौ व्रते ।  
 अग्नीन्धनं त्वमिकार्यमाग्नीध्री चाभिकारिका ॥ १४ ॥  
 ग्रासे तु पावनी भिक्षा पुष्कलस्तच्चतुष्टयम् ।  
 ते चत्वारो हन्तकारो हन्तकारद्वयं घनः ॥ १५ ॥

मुष्ट्यष्टकेऽन्ययं किञ्चित् पुष्कलं तु तदष्टके ।  
 पुष्कलानि तु चत्वारि पूर्णपात्रकमस्त्रियाम् ॥ १६ ॥  
 भिक्षाचारः कौक्कुटिकस्त्रिषु स्यादौर्ध्वरथ्यकः ।  
 मौञ्जी तु मेखला क्षोणी मौर्वी त्वेकलमात्रिका ॥ १७ ॥  
 सौत्री तु धटिनी रम्भा दण्डस्तु दमयन्तिका ।  
 पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ॥ १८ ॥  
 बैल्वः सारस्वतो रौच्यः पैलवस्त्वौपरोधिकः ।  
 आश्वत्थस्त्वजितनेमिरोदुम्बर उल्लखलः ॥ १९ ॥  
 द्विजायनी ब्रह्मसूत्रं सूत्रं यज्ञोपवीतकम् ।  
 पवित्रञ्चोपवीतं तु प्रोद्धृते दक्षिणे भुजे ॥ २० ॥  
 प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ।  
 कृष्णाजिनं कर्णिकं स्यात् कृत्तिः स्त्री चर्म चाजिनम् ॥ २१ ॥  
 गुरुर्दिशानो बोधानः क्षाणी च ब्राह्मिकोऽथ सः ।  
 (देशिकः परमाप्तः स्यादात्मलाभकरो गुरुः ।)  
 मन्त्रव्याख्यादिनाऽऽचार्य उपाध्यायस्तु पाठनात् ॥ २२ ॥  
 पाठके तु पठिर्वेदपठिता कलपाठकः ।  
 पाठको धर्मशास्त्राणां धार्मिको धर्ममाणवः ॥ २३ ॥  
 एकतीर्थी सतीर्थ्यैकगुरु स ब्रह्मचार्यपि ।  
 धर्मभ्राता सहाध्यायी शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥ २४ ॥  
 छात्रस्तु शिष्यो मोकः प्राडुपज्ञा ज्ञानमादिमम् ।  
 समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ ज्ञात्वाऽऽरम्भ उपक्रमः ॥ २५ ॥  
 पाठे बिन्दुर्ब्रह्मबिन्दुर्ब्रह्माञ्जलिर्लिहाञ्जलिः ।  
 ऋक् स्त्री साम यजुश्चेति वेदास्ते तु त्रयस्त्रयी ॥ २६ ॥  
 आथर्वणं पौरोहितं वेदाश्चत्वार एव ते ।  
 छन्दो ब्रह्म श्रुतिर्वेदोऽप्यथ विद्याश्चतुर्दश ॥ २७ ॥  
 शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः ।  
 ज्योतिषामयनं चेति वेदाङ्गान्यङ्गिभिः सह ॥ २८ ॥  
 सीमांसया पुराणेन स्मृत्या न्यायगणेन च ।  
 आयुर्वेदो वैद्यशास्त्रं गान्धर्व गीतिशासनम् ॥ २९ ॥  
 अर्थशास्त्रं दण्डनीतिर्धनुर्वेदोऽस्त्रशासनम् ।  
 चत्वार उपवेदास्ते विद्याश्चाष्टादशोदिताः ॥ ३० ॥  
 आन्वीक्षिकी तर्कविद्या निरुक्तं पदमञ्जना ।  
 नामशास्त्रे निघण्टुर्नो सर्वविद्या कदन्निका ॥ ३१ ॥



अध्यायः कामिकः काव्ये तूच्छासः सर्ग इत्यपि ।  
 प्रपाठकस्त्वाह्निकोऽथो अनुवाकश्च खण्डिका ॥ ३२ ॥  
 ब्राह्मणश्चेत्यवच्छेदा एकग्रन्थस्तु फक्किका ।  
 विध्यर्थवादमन्त्रास्तु खिलान्युपखिलानि च ॥ ३३ ॥  
 छन्दोभेदास्तु गायत्रीप्रमुखा एकविंशतिः ।  
 स्त्रियस्तासु क्रमात् क्लीबे स्युर्गायत्रौष्णिहादयः ॥ ३४ ॥  
 मुखशोभा वेदशालिमुखे चित्रावनिश्च सा ।  
 विधा ह्युच्चारणाभेदाः स्पृष्टसंवृततादयः ॥ ३५ ॥  
 कादयो व्यञ्जना क्ली वा स्पर्शास्ते मावसानकाः ।  
 स्त्रियोऽन्तस्स्था यरलवा ऊष्माणः शषसाः सहाः ॥ ३६ ॥  
 विसर्गस्त्वभिनिष्ठानः परे त्रिध्वनुनासिकः ।  
 नीचोऽनुदात्तो निहत उदात्तः स्वरितोऽपि च ॥ ३७ ॥  
 वरिवस्या तु शुश्रूषा सेवा भक्तिरुपासना ।  
 परिचर्याऽऽराधनञ्च सेवनञ्च प्रसादनम् ॥ ३८ ॥  
 पूजाऽर्चना नमस्याऽर्चा सपर्येज्याऽर्हणाऽञ्जनम् ।  
 नमस्या तु नमस्कारो वन्दनं चाभिवादनम् ॥ ३९ ॥  
 उपसङ्ग्रहणं पादग्रहणेनाभिवादनम् ।  
 गृहस्थः स्नातकश्चक्री गृहमेधी गृहीति च ॥ ४० ॥  
 तस्मिन् सावित्रशालीनौ यः कुसूलेन धान्यभृत ।  
 पृथुचित्रः कुण्डधान्यो विघ्नताशी दिनत्रयी ॥ ४१ ॥  
 यायावरश्चक्रचरः सद्यःप्रक्षालितान्नकः ।  
 परिवेत्ताऽग्रजेऽनूदे कृतदारपरिग्रहः ॥ ४२ ॥  
 परिवित्तस्तु तज्ज्यायान् परिवित्तिः कुरी च सः ।  
 भ्रातुर्मृतस्य जायायां संस्तुतो दिधिषूपतिः ॥ ४३ ॥  
 स तु स्यादग्रदिधिषुर्योऽनुजो रमते तथा ।  
 स्यादग्रेदिधिषुश्चासौ स्यादग्रेदिधिषूरपि ॥ ४४ ॥  
 या ज्येष्ठायामनूढायामूढाऽग्रेदिधिषूरसौ ।  
 पुनरूढा पुनर्भूः स्यादूर्मिला त्यक्तभर्तृका ॥ ४५ ॥  
 देवरे विनियुक्ता या यात्यन्यं साऽभिसारिका ।  
 प्रसभा निरिणा मीढा निर्लज्जा धर्षणी च सा ॥ ४६ ॥  
 विस्तीर्णजानुर्विकटा नतजानुस्तु सिंहिका ।  
 दूषिका क्रोधविवशा पृषता श्वेतबिन्दुका ॥ ४७ ॥

अन्यानुरक्ता विगता नष्टा संस्पृष्टमैथुना ।  
 कन्याप्रसूतिजा जारी हारी नास्नैव दूषिता ॥ ४८ ॥  
 हारिता पतितोत्पन्ना कोहली मुखरा भृशम् ।  
 जडा तु पाली कुब्जा तु दुर्दर्शा कालिकापि च ॥ ४९ ॥  
 धृष्टा प्रापणिका व्यङ्गा निघृष्टा कुत्सिता हता ।  
 अरणिर्निस्स्पृहा पालिर्हर्षुला विकला सरुक् ॥ ५० ॥  
 शरभा तु विशीर्णाङ्गी स्वल्पदेहा मद्धृषिका ।  
 द्योता पिङ्गलकेशाक्षी ऋषभा वृषलक्षणा ॥ ५१ ॥  
 वर्षकारी स्रवत्पाणिपादा राता विहारिणी ।  
 साङ्कारिका तु पित्रादिगृहेष्वग्न्यादिदायिनी ॥ ५२ ॥  
 वैधव्यलक्षणोपेता पतिघ्नी खण्डनाऽपि च ।  
 सुता त्वजीववत्साया मातुर्या सा विदूषिका ॥ ५३ ॥  
 विकटाद्यास्तु नोद्वाह्याः कन्यकाः सप्तविंशतिः ।  
 उपयामः परिणयो विवाहो दारसङ्ग्रहः ॥ ५४ ॥  
 उद्वाहोपयमौ पाणिग्रहो जम्बूलमालिका ।  
 कन्यादाने तु यद्वत्तं यौतकं यौतुकं च तत् ॥ ५५ ॥  
 गोपाली वर्णके शान्तियात्रावरनिमन्त्रणे ।  
 दौन्दुभी वरयात्रायां धूलिभक्ते तु वार्तिकम् ॥ ५६ ॥  
 स्यादिन्द्राणीमहे हेलिरुद्धलुर्मङ्गलध्वनिः ।  
 धोरी हुलिहुली चासौ सैव मङ्गलमालिका ॥ ५७ ॥  
 क्लीबे स्वस्त्ययनं पूर्णकलशे मङ्गलाह्निकम् ।  
 नन्दिकौ तोरणस्तम्भौ शुककूटस्तयोः स्रजि ॥ ५८ ॥  
 सैव वन्दनमालाऽपि कुहलिः पूगपुष्पिका ।  
 हस्तसूत्रं प्रतिसरस्तद्वन्धे हस्तकोहलिः ॥ ५९ ॥  
 तद्ग्रन्थिस्त्ववका धानी कर्णं हस्तलेपनम् ।  
 उत्सवेषु सुहृद्भिर्हृद् बलादाकृष्य गृह्यते ॥ ६० ॥  
 वस्त्रमाल्यादि तत् पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत् ।  
 उत्सवो मह उद्धर्ष उद्धवो हर्षवेणुकः ॥ ६१ ॥  
 क्षणः पर्व च कल्याणं भोज्यं तु जठरोत्सवः ।  
 मधुपर्कस्तु निष्ठङ्कः शङ्खपात्रं तु पाटली ॥ ६२ ॥  
 यज्ञाध्ययनदानानि याजनाध्यापनग्रहाः ।  
 षट्कर्माणि महायज्ञा देवयज्ञादिपञ्चकम् ॥ ६३ ॥



निवापः पितृदानं स्यादामपात्रं तु वापिमम् ।  
 मृतस्नानमपस्नानं श्राद्धं तु पितृभोजनम् ॥ ६४ ॥  
 दशाहे श्राद्धमाग्नेयं साज्यमेकादशेऽहनि ।  
 सम्प्रेषणी द्वादशेऽहि मासप्राप्तौ तु मासिकम् ॥ ६५ ॥  
 एवं त्रिपक्षी षाण्मासी ज्ञेया सांवत्सरीति च ।  
 गयायां पिण्डदानं यत् पितृकार्यं तदार्यकम् ॥ ६६ ॥  
 आम्रसेकस्तु यस्तत्र सा चारी सा पितृप्रपा ।  
 त्रिष्वतिथ्यमतिथ्यर्थं विघसो विप्रशोषतम् ॥ ६७ ॥  
 आवेशिकः स्यादागन्तुरातिथ्यः प्राहुणोऽतिथिः ।  
 सूर्योदस्तु स सम्प्राप्तो यः सूर्येऽस्तं गतेऽतिथिः ॥ ६८ ॥  
 अथान्याधानमाधेयमाधानं चाग्निसङ्ग्रहः ।  
 होमस्तु सवनं होत्रं हवनं हुतिराहुतः ॥ ६९ ॥  
 अग्निहोत्रं नित्यहोमः कुत्सितास्त्वग्निहोत्रिणः ।  
 वीरोज्ज्वलप्रमुखास्तत्र वीरोज्ज्वो न जुहोति यः ॥ ७० ॥  
 अग्निहोत्रं स्वयं वर्षमुत्सन्नाग्निस्तु वीरहा ।  
 अग्निहोत्रच्छलाद् याच्वापरो वीरोपजीवकः ॥ ७१ ॥  
 वीरविप्लावको जुह्वद् धनैः शूद्रसमाहृतैः ।  
 जातमात्रगृहीताग्निः स जातारणिर्द्विजः ॥ ७२ ॥  
 यस्यौपासन एवाग्निरेकाग्निः काल्पिकश्च सः ।  
 अग्न्याहितस्त्वाहिताग्निर्नमः पुनरनग्निकः ॥ ७३ ॥  
 पर्याधाताऽग्रजेऽनग्नौ कृताधानोऽग्रजस्त्वसौ ।  
 पर्याहितस्तथा न्यायः परियष्टृपरीष्टयोः ॥ ७४ ॥  
 इज्याशीलो यायजूकः सोमपीथी तु सोमपः ।  
 सुत्वा त्वभिषवाद्धूर्ध्वं चितवानग्निमग्निचित् ॥ ७५ ॥  
 यष्टा तु यजुरादेष्टा यजमानश्च होत्ववत् ।  
 सोमे तु दीक्षितः सोत्वो यज्वा स्यादिष्टवानसौ ॥ ७६ ॥  
 सर्ववेदाः स यो यागे दत्तसर्वस्वदक्षिणः ।  
 यज्ञत्यागी वृथाजातोऽपञ्चयज्ञो मलिम्लुचः ॥ ७७ ॥  
 याजका भरता यज्ञलिहः कुरव ऋत्विजः ।  
 यतस्तुचो देवयवो वाधतो वृक्तबर्हिषः ॥ ७८ ॥  
 अध्वर्युद्वातृहोतारो ब्रह्मा चेति महर्त्विजः ।  
 मन्त्राणां दैवतं छन्दो निरुक्तं ब्राह्मणान्यधीन् ॥ ७९ ॥

कृत्तद्धितादि चाज्ञात्वा यजन्तो यागकण्टकाः ।  
 याजयन्तो लैङ्गधूमाः कौटास्तूभयकारिणः ॥ ८० ॥  
 प्रसर्पको दृशीकुश्च दर्शनायाध्वरं गतः ।  
 उपद्रष्टा सदस्यः स्याच्छान्दसश्रोत्रियौ समौ ॥ ८१ ॥  
 अधीतसाङ्गवेदो यः सोऽनूचानो युगी गणिः ।  
 यज्ञो यागोऽध्वरः स्तोमः सप्ततन्तुर्मखः सवः ॥ ८२ ॥  
 सहसानुर्यजः सानुर्वसुनो विश्वहर्षकः ।  
 पाकयज्ञाः पार्वणाद्या हविर्यज्ञास्त्वसोमकाः ॥ ८३ ॥  
 पशुबन्धास्तु पशवः सोमाः सौम्याश्च सोमिनः ।  
 सवनैस्त्रिभिरेकाहास्तैरावृत्तैरर्हणाः ॥ ८४ ॥  
 ते दीक्षितैः कृताः सत्राण्यहीना याजकैः कृताः ।  
 अहीना द्वादशाहात् प्राक् सत्राण्यूर्ध्वं स तु द्वयः ॥ ८५ ॥  
 सर्वेऽमी यज्ञकृतवस्त एवैन्द्राः प्रजागमाः ।  
 ज्योतिष्टोमश्चतुष्टोमो ज्योतिरानृण्यमित्यपि ॥ ८६ ॥  
 अग्निष्टोमादयः संस्थाभेदाः सप्तास्य तन्तवः ।  
 सौमिकी दीक्षणीयेष्टिर्दीक्षा तु व्रतसङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥  
 प्रायणीयोदयनीयौ त्रिष्वान्येऽन्त्ये च कर्मणि ।  
 पुरोडाशस्य प्रथमे प्रणिकं प्रथिकैरुके ॥ ८८ ॥  
 प्रोक्षण्यासादनं दैष्टं पत्नीसन्नहनं स्पशा ।  
 सुधां सम्मार्जनं शुद्धिः सुगासादनमाहुतिः ॥ ८९ ॥  
 हुतिराज्याधिश्रयणमाज्यावेक्षणमक्षतिः ।  
 स्यादिधमप्रोक्षणं काष्णश्चैत्यमाज्याधिवासनम् ॥ ९० ॥  
 वेद्यास्तरणमाप्रासः प्रस्तरः स्तरणं छदिः ।  
 त्रैहोत्रं समिदाधानमदितिस्तासु सेचनम् ॥ ९१ ॥  
 पावकं सोमपानं स्यान्मिश्रकं तु घृताञ्जनम् ।  
 उपांशुस्तु प्राणिकः स्यादन्तर्यामस्त्वपानिकः ॥ ९२ ॥  
 श्यैतनौघसयोगानं सान्नोरुपनिमन्त्रणम् ।  
 व्यञ्जनाः पशुमंस्काराः सामिकं त्वभिमन्त्रणम् ॥ ९३ ॥  
 परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च पशोर्वधे ।  
 अथ यज्ञोपकरणं यजत्रं यजनं च तत् ॥ ९४ ॥  
 होमधेनुस्त्वग्निहोत्री होमकाष्ठी तु नालिका ।  
 होमधूमस्तु निगणो होमभस्म तु वैष्णुतम् ॥ ९५ ॥



होमेन्धने स्यादिध्मोऽस्त्री पुमानेधः समित् स्त्रियाम् ।  
 इन्धनं त्वेध आलाद्यमहोत्रं तु तृणेन्धनम् ॥ ६६ ॥  
 काष्ठेन्धनं तु गरहं गोकरीषेन्धनं बुसा ।  
 यवादि त्वकृतं हव्यं तण्डुलास्तु कृताकृतम् ॥ ६७ ॥  
 अन्नादि कृतमामिक्षा दध्मोष्णं संयुतं पयः ।  
 पयस्या च क्षीरशरस्तन्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ ६८ ॥  
 सान्नाय्यं तु दधिक्षीरं पृषदाज्यं पृषातकः ।  
 पृषतोऽपि च दध्याज्ये पुरोडाशस्तु तृप्रकः ॥ ६९ ॥  
 हवनी सुक् सुचो भेदाः स्युर्जुहूरुपभृद्भुवा ।  
 अथामिहोत्रहवणी श्रपण्याधारणः सुवः ॥ १०० ॥  
 चमसोऽस्त्री त्रिपात्राणि वायव्यं सौमिके त्रिषु ।  
 परिप्लवार्थदण्डा सुक् दर्वी तु घृतलेखनी ॥ १०१ ॥  
 चमूः स्त्री चर्म सुत्यार्थं प्रावाणस्त्वध्नयोऽश्मसु ।  
 विघ्नो घ्नो मुद्रे नरः फयोद्धननन्दनाः ॥ १०२ ॥  
 यूपोऽस्त्री संस्कृतः स्तम्भो होमयूपस्तु शौभिकः ।  
 यूपावग्निषु पार्श्वस्थावुपस्थाविति संज्ञितौ ॥ १०३ ॥  
 अग्निष्ठं त्रिषु यूपादि यदग्नेः सम्मुखे स्थितम् ।  
 यूपमध्यं समादानं यूपाग्रं तर्म न स्त्रियाम् ॥ १०४ ॥  
 कटकेऽस्य चषालोऽस्त्री मूले तूपरमक्षते ।  
 वेष्टनं तु परिव्याणं कुम्बा सुगहना वृत्तिः ॥ १०५ ॥  
 यूपे सप्तदशारत्नावरन्निर्मेथिकोऽधरः ।  
 उत्तरेषां क्रमादाख्या उत्त्रासत्वरुमोचनः ॥ १०६ ॥  
 तथाञ्जनो वैयतिथः क्षालनः शवशीर्षकः ।  
 सुधन्वो रथगरुतः शैखालीकरञ्जकौ ॥ १०७ ॥  
 वासवो वैष्णवस्त्वाष्ट्रः सौम्यो माधुरवेजनौ ।  
 संघातिकारणिर्न क्ली कुशा वरुणकाष्ठिका ॥ १०८ ॥  
 खर्जनी कृष्णविषाणा वेदिर्भूमिः परिष्कृता ।  
 कुण्डं हवित्री हवनी कुण्डे स्याद्वर्तुले परम् ॥ १०९ ॥  
 वेदिः स्त्रियां चतुष्कोणे त्रिकूटं तु त्रिकोणके ।  
 तस्मिन्नास्तावसंस्तावौ स्तुवते यत्र सामभिः ॥ ११० ॥  
 चात्वालोऽस्त्री मृत्वनः स्यादुत्करोऽवकरालयः ।  
 शस्त्राण्युक्तानि सामानि स्तोत्राणि स्तुतयोऽपि च ॥ १११ ॥

याज्या पुरोऽनुवाक्या च याज्यापुटमिति द्वयम् ।  
 सौविष्टकृत्यौ संयाज्ये कूर्चालोलस्फुटी पशुः ॥ ११२ ॥  
 स्त्र्यावित् क्रमो विधिः कल्प उपकल्पोऽनुकल्पकः ।  
 पौर्वापर्यं त्वानुपूर्व्यं पर्यायोऽनुक्रमः क्रमः ॥ ११३ ॥  
 अनुपात्यय आवृत् स्त्री परिपाठ्यानुपूर्व्यपि ।  
 पर्ययस्त्वतिपातः स्यादतिक्रम उपात्ययः ॥ ११४ ॥  
 इष्टं यागात्मकं कर्म पूर्तं खातादिकर्मणि ।  
 आचारो वृत्तचारित्रचरित्रचरणानि च ॥ ११५ ॥  
 वृत्तस्याध्ययनस्यापि सम्पत्तिर्ब्रह्मवर्चसम् ।  
 पतनं सत्पथाद् भ्रंशश्चर्या त्वीर्यापथस्थितिः ॥ ११६ ॥  
 हिसाकर्माभिचारः स्यान्मूलकर्म तु कार्मणम् ।  
 वशीकारः संवननं विकर्माकार्यसेवनम् ॥ ११७ ॥  
 त्यागो दानं वितरणं विश्राणनविसर्जने ।  
 विहापनं निर्वपणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ ११८ ॥  
 उत्सर्जनं प्रादेशनमपवर्जनमंहतिः ।  
 अतोयं सात्त्विकं दानमुदपूर्वं तु पौष्टिकम् ॥ ११९ ॥  
 आशिषा शान्तिकं दानं काम्यदानं प्रवापणम् ।  
 आशासनेऽर्थना याच्ना याचनाऽध्येषणाऽर्दना ॥ १२० ॥  
 भिक्षा च सनिरङ्गी स्यान्मार्गणा तु गवेषणा ।  
 पर्येषणा परीच्छा च मृगणाऽन्वेषणा मृगः ॥ १२१ ॥  
 यस्तु नीलवृषोत्सर्गः स षण्डो वृषपूतनः ।  
 उद्धन्धवृषभश्चायमापिङ्गलक इत्यपि ॥ १२२ ॥  
 लोहितः स्यान्नीलवृषः पुच्छशृङ्गखुरे सितः ।  
 यष्टिर्न ह्री स्त्रियां मीना खनित्री तु विशाखिका ॥ १२३ ॥  
 बद्धदर्भो वेदयष्टिः कुण्डिका ना कमण्डलुः ।  
 वैखानसो वनेवासी वानप्रस्थश्च तापसः ॥ १२४ ॥  
 कापोतो वर्षमात्रस्य स वन्याहारसङ्ग्रहात् ।  
 औदुम्बरस्तु षाण्माससंग्रही तुर्यकालभुक् ॥ १२५ ॥  
 परे त्रिषु तपस्वी स्यात्तापसः पारिकाङ्क्षिकः ।  
 चतुर्थकालिको भिक्षुर्व्यष्टिरष्टमकालभुक् ॥ १२६ ॥  
 चान्द्रायणरतश्चन्द्रव्रतिकः सौमिकश्च सः ।  
 षष्ठकाली तु बलिको नौसो नक्षत्रकालिकः ॥ १२७ ॥



पुष्पाढ्यस्तु स्वयंशीर्णपुष्पमूलफलाशनः ।  
 भुङ्क्ते पक्षान्तयोरेव यो यवान् स द्विकालिकः ॥ १२८ ॥  
 शीर्णकः शीर्णपर्णाशी वृक्षमूली तु मूलिकः ।  
 भूमौ विपरिवृत्त्यास्ते यः स पातालमूलिकः ॥ १२९ ॥  
 वर्षवातातपानङ्गे बिभ्रदभ्रावकाशिकः ।  
 शिवव्रती स यो विप्रः पादेनैकेन तिष्ठति ॥ ३० ॥  
 रुद्रव्रती क्षत्रियश्चेद् वाताहारस्त्वहिव्रती ।  
 मत्स्यव्रती जलाचारस्तृणशय्यस्तु पर्णशः ॥ १३१ ॥  
 तथैव स्यात् स्थण्डिलश औलुकोऽङ्गारशाकटे ।  
 पाणिपात्रस्तु खपुटो दन्तोल्बलको व्युपः ॥ १३२ ॥  
 पिबत्यधोमुखो धूमं यः स धुर्यावकतिकः ।  
 जानुभ्यां जानुकस्तिष्ठन्नष्टप्रासो मुनिव्रती ॥ १३३ ॥  
 पद्मासनी तु वसिकः क्षीराहारस्तु लोचकः ।  
 नीवारपिष्टकानष्टावशनाति मुनिपिष्टकी ॥ १३४ ॥  
 एकान्तर्येकान्तरिती तथा कालावलोलकः ।  
 और्वव्रती जलाहारो घृताशी घृतभुग् घृती ॥ १३५ ॥  
 तपो व्रतोऽस्त्री कृच्छ्रोऽस्त्री तच्च चान्द्रायणादिकम् ।  
 चान्द्रायणं चन्द्रव्रतं प्राजापत्यं तु कृच्छ्रकम् ॥ १३६ ॥  
 प्राजापत्यं तु गोकृच्छ्रं कृतं गोमूत्रयावकैः ।  
 शिशुकृच्छ्रं कृतं पच्छः कच्छ्रमद्भिस्तु यः कृतः ॥ १३७ ॥  
 कृच्छ्रः कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसौ स्याद्वाहान्येकविंशतिम् ।  
 शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्रं तत्त्रिसन्ध्यं चेदपः पिबेत् ॥ १३८ ॥  
 प्राजापत्यं पाणिपात्रं पूर्णान्नेनातिकृच्छ्रकम् ।  
 तप्तकृच्छ्रं तदस्नानात् क्षीरसर्पिर्जलैः कृतम् ॥ १३९ ॥  
 एकैकं त्र्यहमभ्युष्णैः शीतैस्तैः शीतकृच्छ्रकम् ।  
 बिल्वेन मासं श्रीकृच्छ्रं मूलकृच्छ्रं बिसाशनात् ॥ १४० ॥  
 पानेन साम्बुसक्तूनां मासं वरुणकृच्छ्रकम् ।  
 त्रिस्सप्ताहं पयःपानं कचित् कृच्छ्रातिकृच्छ्रकम् ॥ १४१ ॥  
 पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तून् भुक्त्वा क्रमादहः ।  
 उपोष्य सौम्यकृच्छ्रं स्याज्जलाचामौ विनैव वा ॥ १४२ ॥  
 स्यात् तुलापुरुषोऽभ्यासादेकैकस्य दिनत्रयम् ।  
 सौम्यस्य तु द्विरभ्यासात् स्यात्तुलापुरुषः शिशोः ॥ १४३ ॥

उपवासस्तूपवस्तुः सन्यासः स्यादनाशकम् ।  
 द्वादशाहे पराको ना षोडशाहे तुरायणम् ॥ १४४ ॥  
 तुरायणद्वये सौम्यं चातुर्मास्ये परायणम् ।  
 पारायणं जलेनैतत् क्षीरेणैतत् परावसु ॥ १४५ ॥  
 एकान्तरितमर्धांशं षष्ठकालेषु पाष्टिकम् ।  
 गोमूत्रयावकैर्मासो वज्रोऽस्त्री यावकैः पुनः ॥ १४६ ॥  
 त्र्यहं वज्राभिषवणं पयसा तु पयोव्रतम् ।  
 पञ्चरात्रं पयःपानं सङ्गमः सङ्गतश्च सः ॥ १४७ ॥  
 मासं गोष्ठे पयःपानं गोव्रतं ब्राजिकं च तत् ।  
 पिबेद् ब्रह्मसुवर्चलामुपोष्योपस्करव्रतम् ॥ १४८ ॥  
 कणान्नस्यैव भोजनं द्वादशाहं वसुव्रतम् ।  
 कुशापीडः कुशवटो व्रतिनामासनं व्रती ॥ १४९ ॥  
 योगपट्टस्तु चीना स्यात् पर्यस्तिरवसक्थिका ।  
 ऋषिस्त्रिकालदर्शी स्यान्मौनी वाचंयमो मुनिः ॥ १५० ॥  
 अगस्त्यः कलशीपुत्रस्तपनः पीतसागरः ।  
 और्वशेयः कुम्भयोनिरगस्तिर्विन्ध्यकूटकः ॥ १५१ ॥  
 मैत्रावरुणिराग्नेयो मुनिर्वातापिसूदनः ।  
 दक्षिणाशारतः काथिः सत्याग्निश्चाग्निमारुतः ॥ १५२ ॥  
 तस्य कौषीतकी भार्या लोपामुद्रा वरप्रदा ।  
 प्राचेतसस्तु वाल्मीकिर्वाल्मीकश्च कुशी कविः ॥ १५३ ॥  
 सालातुरीयको दाक्षीपुत्रः पाणिनिराहिकः ।  
 हलभूतिस्तूपवर्षः कृतकोटिकविश्च सः ॥ १५४ ॥  
 याज्ञवल्क्यस्तु योगास्त्रिर्योगेशो ब्रह्मरात्रिकः ।  
 आपवस्तु वसिष्ठः स्याद्यज्ञाढ्यस्तु पराशरः ॥ १५५ ॥  
 गौतमस्तु शतानन्दो यवक्रीतस्तु रोहितः ।  
 यायावरो जरत्कारुर्दुर्वासास्तु कुंशारणिः ॥ १५६ ॥  
 अष्टावक्रस्तु गर्भाजिर्दृढच्युत्स्विधमवाहकः ।  
 मत्स्यगुश्चयवनोऽथ स्याद् गोनर्दीयः पतञ्जलिः ॥ १५७ ॥  
 अथ व्यालिर्विन्ध्यवासी नन्दनीनन्दनोऽपि च ।  
 कात्यायनो वररुचिर्मेधजिश्च पुनर्वसुः ॥ १५८ ॥  
 वात्स्यायनस्तु कौटिल्यो विष्णुगुप्तो वराणकः ।  
 द्राविलः पक्षिलः स्वामी मल्लनागोऽङ्गुलोऽपि च ॥ १५९ ॥



यतिः पाराशरी भिक्षुः परिव्राट् पाररक्षिकः ।  
 अनाशकी प्रव्रजितः कर्मन्दी मस्करी यती ॥ १६० ॥  
 परमात्मा परो ब्रह्म जीवः क्षेत्रज्ञ आविशः ।  
 शक्तिस्तु माया प्रकृतिर्व्योमाख्यं मूलकारणम् ॥ १६१ ॥  
 असदक्षरमव्यक्तं तमः सदसदात्मकम् ।  
 अलिङ्गं गुणसामान्यं गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ १६२ ॥  
 महान्तु लैङ्गिको ब्रह्मा लिङ्गज्येष्ठश्च चेतना ।  
 मनीषा शेमुषी बुद्धिर्धीः पूः ख्यातिर्विदा बुधा ॥ १६३ ॥  
 ज्ञप्तिः पण्डोपलब्धिस्तु संवित्तरनुभूश्चितिः ।  
 अवगत्यनुभूती चिज्ज्ञप्तिर्ज्ञानं च बोधनम् ॥ १६४ ॥  
 षोढा धीस्तत्त्वधीः पण्डा मेधा धीर्धारणक्षमा ।  
 ऊहापोहक्षमा चार्वी गृहीतिर्ग्रहणक्षमा ॥ १६५ ॥  
 शुश्रूषाबहुला श्रौषिः श्रवणज्ञा तु चत्वंरी ।  
 धृतिस्तु तुष्टिः सन्तोषः प्रौढिस्तु कियदेतिका ॥ १६६ ॥  
 यत्नोत्साहोद्यमायामास्तरिषोऽध्यवसायवत् ।  
 बैराग्यं मर्दमुद्वेगो निर्वेदश्च विरागवत् ॥ १६७ ॥  
 धर्मोऽस्त्री सुकृतं पुण्यं पाप्माधर्मौ तु दुष्कृतम् ।  
 दुरितं पातकं पापं त्रस्तमंहोऽघकल्मषे ॥ १६८ ॥  
 स्मयोऽभिमानोऽहङ्कारो गर्वः स्त्री गर्विरस्मिता ।  
 शौटीर्यञ्चाथ शृङ्गारगर्वे घञ्जोरवेङ्गरो ॥ १६९ ॥  
 आहोपुरुषिका सा यद् गर्वादात्मनि गौरवम् ।  
 अहं पूर्यमहं पूर्वमित्यहम्पूर्विकोन्नतिः ॥ १७० ॥  
 सा स्यादहमहमिका योऽहङ्कारः परस्परम् ।  
 अत्याकारः परिभवस्तिरस्कारोऽप्यनादरः ॥ १७१ ॥  
 रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽप्यवहेलमसूक्ष्मम् ।  
 उच्चलं मानसं चेतश्चित्तमुच्चलितं मनः ॥ १७२ ॥  
 स्वान्तं गूढपदं हृच्च सङ्कल्पो मानसी क्रिया ।  
 मनो बुद्धिरहङ्कार इत्यन्तःकरणं त्रिधा ॥ १७३ ॥  
 आकृतिर्मतमाकृतं भावोऽभिप्राय आशयः ।  
 चित्ताभोगो मनस्कार उत्प्रेक्षा स्वमनीषिका ॥ १७४ ॥  
 मीमांसा तु विजिज्ञासा प्रत्यगृष्टिर्विकुण्ठना ।  
 तर्कमूलिकसम्मर्श ऊहो न क्ल्यूहना न ना ॥ १७५ ॥

सम्भाषना स्यादाशङ्का वितर्कस्तर्कमस्त्रियाम् ।  
 प्रतिभा प्रतिभासः स्यान्निर्णयोऽन्तश्च निश्चयः ॥ १७६ ॥  
 विचिकित्सा तु सन्देहः संशयो विशयो भ्रमः ।  
 विस्मरणं प्रस्मरणमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ १७७ ॥  
 तन्द्रा कौसीद्यसालस्यं प्रमादोऽनवधानता ।  
 स्यादायल्लकमौत्सुक्यमुत्कण्ठोत्कलिका रतिः ॥ १७८ ॥  
 हृल्लेखो रणरणकोऽप्यभिध्या विषमस्पृहा ।  
 तृषिः काङ्क्षा स्पृहेहेच्छा वाञ्छा कामो मनोरथः ॥ १७९ ॥  
 अभिलाषश्च लिप्सा तु धनायेप्सा च गर्धना ।  
 गर्भिण्याः पुनरिच्छायां श्रद्धा दोहलदौहदे ॥ १८० ॥  
 रागोऽनुरागोऽनुरतिर्वीक्षायां मोहविस्मयौ ।  
 शोषुर्ना शुषकोदन्या पिपासाऽप्यपलासिका ॥ १८१ ॥  
 क्षुभुचेच्छाऽशनाया क्षुजिघत्साऽशिशिषा पचिः ।  
 राव्यलौल्यं तु कौहोलं तपसीच्छा प्रशान्तिकम् ॥ १८२ ॥  
 शोकस्तु मन्युरुत्खेदः शुक् स्त्री दैन्यानुशोचने ।  
 क्रोधः कोपोऽमर्षरोषौ रुषा रुट्क्रुतक्रुधाः स्त्रियः ॥ १८३ ॥  
 मर्षः क्षमा तितिक्षा स्यादसूया दोषहगुणे ।  
 वैरं विरोधो विद्वेष ईर्ष्या मात्सर्यमुन्नते ॥ १८४ ॥  
 तङ्कोऽस्त्री भीर्भिया भीतिः साध्वसं भयनं भयम् ।  
 विप्रतिसारेऽनुशयः पश्चात्तापोऽनुतापवत् ॥ १८५ ॥  
 स्नेहोऽस्त्री प्रेम सौहार्दमजय्यं हार्दसौहृदे ।  
 आनन्दनं सङ्गतं स्यादप्रच्छन्नं सभाजनम् ॥ १८६ ॥  
 सख्यं सात्तपदीनं स्यात् कौतुकं तु कुतूहलम् ।  
 कौतूहलं विनोदश्च दुःखं पीडाव्यथाऽऽर्तयः ॥ १८७ ॥  
 सम्भरस्तु मदो हर्षः प्रमोदो मोदसम्मदौ ।  
 आनन्दो नन्दथुह्लादस्तृप्तिमुन्नन्दिदृष्टयः ॥ १८८ ॥  
 शर्म शातं सुखं सौख्यमयः शुभफलो विधिः ।  
 विधौ दैवं दिष्टभाग्ये विपाको भवितव्यता ॥ १८९ ॥  
 उपलिङ्गं त्वरिष्टं स्यादजन्यं डिम्बविप्लवौ ।  
 डमरोपप्लवोत्पाता उपसर्ग उपद्रवः ॥ १९० ॥  
 सम्पत् सम्पत्तिलक्ष्म्यौ श्रीर्विपत्तिर्विपदापदौ ।  
 अवसादस्तु सादः स्याद्विषादश्च श्लिक्कुर्न ना ॥ १९१ ॥



उग्रता तूष्णिका रौद्री करुणा तु दया कृपा ।  
 घृणाऽनुकम्पाऽनुक्रोशः कारुण्यं चाथ कौकृटे ॥ १६२ ॥  
 क्लेशायासौ जुगुप्सा तु हृणीया हृणिया घृणा ।  
 ऋतिः कुत्साऽप्युपक्रोशो गर्हा दोषश्च गर्हणा ॥ १६३ ॥  
 मन्दाक्षं ह्रीन्मृगा लज्जा ब्रीला साऽपत्रपाऽन्यतः ।  
 हासिका तु हसो हासो हसनं हास्यघर्घरे ॥ १६४ ॥  
 व्याजो मिषं छलं छद्म निभं च कपटोऽस्त्रियाम् ।  
 दम्भो दण्डाजिनं कूटं दौन्दुभिश्छन्दनोपधा ॥ १६५ ॥  
 रेभटिः कुक्कुटिर्मिथ्याचर्या च परिकल्पना ।  
 जागरितं जागरणं जागर्या जागरा न षण् ॥ १६६ ॥  
 प्रमीला तामसी तन्द्रा स्वापस्तु स्वप्नसंशयौ ।  
 निद्रा गुडाका सुप्तं च स्वप्नस्त्वेवात्र दर्शनम् ॥ १६७ ॥  
 संस्कारमात्रजः स्वप्नः कामिको रसकोऽपि च ।  
 अदृष्टजस्त्वत्र चाग्रो दोषजस्त्वाङ्गलौकिकः ॥ १६८ ॥  
 प्रदोषे बलकः स्वप्नो निशीथे लोचमालकः ।  
 नचकोऽपररात्रे स्यात् सद्यःपाको निशात्यये ॥ १६९ ॥  
 नन्दीमुखी श्वासहेतिः सुषुप्तिः सुखसुप्तिका ।  
 मूर्च्छा तु मूर्च्छना मौढ्यं वैचित्त्यं कश्मलं लयः ॥ २०० ॥  
 कालधर्मस्तु दिष्टान्तो निपातो गमिरन्धकः ।  
 कटमोषो भूमिलाभो दीर्घनिद्रा निमीलनम् ॥ २०१ ॥  
 पञ्चत्वं मरणं मृत्युरक्ली स्यादमतोऽस्त्रियाम् ।  
 सर्वलोकतते मृत्यौ मारिः स्त्री मारकोऽस्त्रियाम् ॥ २०२ ॥  
 हृषीकमिन्द्रियं प्राणः प्राणा ना भूमिर्ना चासवः ।  
 प्राणापानादयस्त्वस्य वृत्तयः पञ्च वायवः ॥ २०३ ॥  
 श्वासस्तु श्वसितं सोऽन्तर्मुख उच्छ्वास आहरः ।  
 आनश्चाथ बहिर्वृत्तो निश्वासः पान एतनः ॥ २०४ ॥  
 स्थिरस्त्वाश्वास एती च स्यादूवद्धयं गुदानिले ।  
 तन्मात्राण्यविशेषाः स्युर्विशेषाः पञ्च खादयः ॥ २०५ ॥  
 महाभूतानि भूतानि लोको भुवनविष्टपे ।  
 मर्त्यलोको जीवलोको मर्त्योऽप्यथ भुवोऽव्ययम् ॥ २०६ ॥  
 स्वर्महश्च क्रमाल्लोका महरेव महानपि ।  
 प्राजापत्यो जनस्तस्माद् गोलोकस्तु तपो न पुम् ॥ २०७ ॥

ब्रह्मलोकः सत्यलोकस्तत्र पुर्यपराजिता ।  
 योगस्त्वाध्यात्मिकोऽथासावष्टाङ्गोऽङ्गैर्यमादिभिः ॥ २०८ ॥  
 अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमसङ्गप्रहः ।  
 यमाः स्युर्नियमाः शौचसन्तोषतपआदयः ॥ २०९ ॥  
 आसनं करणं तस्य भेदाः पद्मासनादयः ।  
 उत्तानौ चरणावूर्वोन्यस्येन्नाभौ करद्वयम् ॥ २१० ॥  
 दक्षिणोत्तरमुत्तानं घ्राणदृक् पद्माकासनी ।  
 अर्धपद्मासनं त्वेकपाद ऊरोरधःस्थिते ॥ २११ ॥  
 निगूढचरणं तूर्वोरधश्चेच्चरणवुभौ ।  
 पादोपवेशस्त्वन्वर्थः संयुज्य पदयोस्तले ॥ २१२ ॥  
 ते चत्वारोऽपि पर्यङ्का पृष्ठवंशशिरोधरम् ।  
 नियम्य मीलिताक्षश्चेत्पर्यस्तकरणेन वा ॥ २१३ ॥  
 नागदन्तकमूर्ध्वज्ञोर्जातुस्थौ प्रसृतौ भुजौ ।  
 सूचीमुखमिदं पाणितलौ चेत्संहतौ मिथः ॥ २१४ ॥  
 अर्धसूची तु तौ द्वौ चेत् प्रादेशान्तरतो मुखात् ।  
 कुट्मलं मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ॥ २१५ ॥  
 अस्पृष्टौ नागदन्तस्य स्फिचौ चेद् भुवमुत्कटम् ।  
 वहित्रकर्णः संयुज्य जङ्घायुग्मप्रसारणात् ॥ २१६ ॥  
 एष पादप्रसारोऽपि स्यादथो मरणालसम् ।  
 वस्तिशुण्डकमप्यस्य जङ्घिका चेत्प्रसारिता ॥ २१७ ॥  
 अर्धनाकुलमूर्ध्वज्ञोर्जङ्घे बद्धे भुजेन चेत् ।  
 द्वाभ्यां चेन्नाकुलं दोर्भ्यामथ वज्रासनं यदि ॥ २१८ ॥  
 जङ्घे पद्मासनावस्थे तत्सन्धिनिहितौ करौ ।  
 ताभ्यामेव स्थितौ भूमावन्तरिक्षासनं च तत् ॥ २१९ ॥  
 गोधासनं तदेकेन स्थितश्चेत् पाणिना भुवि ।  
 पद्मासनस्य पदयोः पाणिना पृष्ठगामिना ॥ २२० ॥  
 वामेन दक्षिणाङ्गुष्ठं वामं चान्येन पीडयेत् ।  
 वेतालासनमित्येतदेकाङ्गुष्ठप्रहात् किणः ॥ २२१ ॥  
 कर्णयोर्जानुपार्श्वाभ्यां स्पर्शं जानुनिकुञ्चनम् ।  
 भुजवेष्टितजङ्घोरश्चूलिकाश्लेषितावनेः ॥ २२२ ॥  
 पृष्ठतो भुजपाशश्चेन्मृत्युसंयमनोऽपि सः ।  
 बिन्दुभेदोऽप्यथो जानुसन्ध्योः पादप्रवेशनात् ॥ २२३ ॥  
 स्वास्तिकोऽथ समस्थानं पादौ कुञ्चितसम्पुटौ ।  
 आसीनस्यासनान्येतान्यथ सुप्तस्य साम्यतः ॥ २२४ ॥



गवादीनां निषण्णानां स्याद्वोनिषदनादिकम् ।  
 उत्तानस्योर्ध्वपादत्वमित्येतद्विद्विभासनम् ॥ २२५ ॥  
 दण्डासनादिभेदेन पञ्चधा स्यात् स्थितासनम् ।  
 दण्डासनं स्यादन्वर्थं यत्र दण्डवदुत्थितः ॥ २२६ ॥  
 स्याद्वीरासनमुत्पादः कृत्वा भूमौ शिरः स्थितः ।  
 दुर्योधनासनमपि मृत्युसंयमनोऽपि सः ॥ २२७ ॥  
 दण्डपद्मासनं तस्मिन् जङ्घे पद्मासनोचिते ।  
 त्रिविक्रमासनं तादर्यासनमित्यपि साम्यतः ॥ २२८ ॥  
 प्राणायामः प्राणयम उत्खातो मानमस्य यत् ।  
 छोटिकास्त्रिः परामृश्य जानुस्फोटक्रियाऽथ ताः ॥ २२९ ॥  
 षट्त्रिंशन्मन्द उत्खातो द्विगुणत्रिगुणौ पुनः ।  
 मध्यमश्चैवोत्तमश्च प्रथमो द्वादशैव वा ॥ २३० ॥  
 प्रत्याहारस्त्विन्द्रियाणां विषयेभ्यः समाहृतिः ।  
 धारणा तु कचिद्ध्येये चित्तस्य स्थिरबन्धनम् ॥ २३१ ॥  
 ध्यानं तु विषये तस्मिन्नेकप्रत्ययसन्ततिः ।  
 समाधिर्ना तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् ॥ २३२ ॥  
 प्रयुक्तं धारणाद्येतत्त्रयमेकत्र संयमः ।  
 ओङ्कारः प्रणवस्तारस्तारकं सर्वविन्मतिः ॥ २३३ ॥  
 विद्वान् सन् कोविदः सूरिर्मैधावी पण्डितो बुधः ।  
 सुधीर्विपश्चित् सङ्ख्यावान् प्राज्ञो धीमान् विचक्षणः ॥ २३४ ॥  
 दीर्घदर्शी दूरदर्शी लघ्ववर्णो मनीष्यपि ।  
 त्रिवर्गो धर्मकामार्थाश्चतुर्वर्गः समोक्षकः ॥ २३५ ॥  
 सबलैस्तैश्चतुर्भद्रः शास्त्रीयं तु फलं गतिः ।  
 सान्द्रष्टिकं फलं सद्यः कार्यं कृत्यं प्रयोजनम् ॥ २३६ ॥  
 प्राप्तिरैक्येन सायुज्यं सार्ष्टिरैश्वर्यतुल्यता ।  
 ब्रह्मभूयं ब्रह्मभावो देवभूयादिकं तथा ॥ २३७ ॥  
 अमृतत्वं तु कैवल्यं मुक्तिर्मोक्षोऽपुनर्भवः ।  
 मोक्षावलम्बिनः प्रायः पाषण्डा बाह्यलिङ्गिनः ॥ २३८ ॥  
 ते च हेरुकशोभाद्याः प्रोक्ताः षण्णवतिः क्वचित् ।  
 दशोत्तरं शतं कैश्चित् पाषण्डानां प्रदर्शितम् ॥ २३९ ॥  
 शतत्रयं षष्ट्यधिकमुक्तं चीनेशसंसदि ।  
 वेषाजीवकृतान्ताद्यैस्तेषां भेदः परस्परम् ॥ २४० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

### क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

क्षत्रं बाहुजराजन्यौ भूशक्रः क्षत्रियो विराट् ।  
 राजा तु पार्थिवो भूभुग् राड् भूपो नृपतिर्नृपः ॥ १ ॥  
 नरेन्द्रो नरदेवश्च वश्यामात्यस्त्वधीश्वरः ।  
 सार्वभौमश्चक्रवर्ती नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥  
 स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।  
 राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ ३ ॥  
 गुणाः साङ्ग्रामिकाः सर्वे स्वामिनस्त्वाभिगामिकाः ।  
 इन्द्रव्रतादयश्चाष्टौ सम्पत्तिर्विपदोऽपराः ॥ ४ ॥  
 तत्र याः शक्तयस्तिष्ठः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।  
 षाड्गुण्यमस्त्राद्यभ्यासो गुणाः साङ्ग्रामिका इमे ॥ ५ ॥  
 षड्गुणा आसनं यानं द्वैधं विग्रह आश्रयः ।  
 सन्धिश्चेन्द्रयमादीनां वृत्तिमिन्द्रव्रतादिकम् ॥ ६ ॥  
 अथ विद्यार्जनं दानमष्टवर्गस्य वर्धनम् ।  
 द्विकपञ्चकषट्काणां विजयः सप्तवर्जनम् ॥ ७ ॥  
 उपायनैपुणं धर्म इत्याद्याः शोभनाः क्रियाः ।  
 दृष्टादृष्टोदयार्था यास्ते गुणा आभिगामिकाः ॥ ८ ॥  
 तत्राष्टवर्ग आरम्भः कृषिः सेतुर्वणिक्पथः ।  
 खनिस्थानं वनच्छेदो दुर्गं शून्यनिवेशनम् ॥ ९ ॥  
 द्विकं तु मनआत्मानाविन्द्रियाणि तु पञ्चकम् ।  
 षट्कं कामो मदो मानो लोभो हर्षो रुषाऽपि च ॥ १० ॥  
 मृगायाक्षाः स्त्रियः पानं वाक्पारुष्यार्थदूषणे ।  
 दण्डपारुष्यमित्येतन्महाव्यसनसप्तकम् ॥ ११ ॥  
 मुख्योपायास्तु सामाद्याः क्षुद्रोपायाः पुनस्तयः ।  
 मायोपेक्षेन्द्रजालं चेत्येते माया तु शाम्बरी ॥ १२ ॥  
 इन्द्रजालं तु कुहकमुपेक्षा त्ववधीरणम् ।  
 उपजापस्तु भेदः स्यात् साम सान्त्वं च सान्त्वनम् ॥ १३ ॥  
 तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तनम् ।  
 अदृष्टं वह्नितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ॥ १४ ॥



राज्ञामहिभयं तु स्यात् स्वपक्षप्रभवं भयम् ।  
 हैमं सिंहासनं भद्रासनं त्वन्यन्नुपासनम् ॥ १५ ॥  
 छत्रं स्यादातपत्रं तन्नृपलक्ष्म नृपस्य चेत् ।  
 अभिसारस्त्वनुचरः सहायोऽनुप्लवोऽनुगः ॥ १६ ॥  
 सेवकश्चानुजीवी च यस्तु केलिसहायकः ।  
 वैहासिकः केलिकिलस्तस्मिन् हासनिकोऽपि च ॥ १७ ॥  
 सामन्ता राजसन्धिस्था आरक्षाः पुररक्षणः ।  
 मन्त्र्यमात्यौ तु धीकर्मसहायेऽतः परे त्रिषु ॥ १८ ॥  
 अध्यक्षः स्यादधिकृतः स्थाने चेत् स्थानिको ह्यसौ ।  
 क्षुद्रोपकरणेषु स्यादध्यक्षः पारिकर्मिकः ॥ १९ ॥  
 कुमारोऽमात्यको मन्त्री वर्गे धर्मे तु धार्मिकः ।  
 हट्टे धीकर्मिकः पुर्या चोरिको दण्डपाशिकः ॥ २० ॥  
 रजते नैष्किको ग्रामे स्थायुको हेमि भौरिकः ।  
 महानसे पौरोगवो दण्डपालोऽखिले बले ॥ २१ ॥  
 अन्तःपुरेऽन्तर्बशिको गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।  
 कालिकोऽधिकृतः शुल्के सौविदस्तु सौविदः ॥ २२ ॥  
 स्थापत्यकञ्चुक्यार्याश्च षण्डो वर्षवरः समौ ।  
 प्रदेशा पञ्चजनीनो भाण्डागारिक इत्यपि ॥ २३ ॥  
 दौवारिको वेत्रधरो द्वास्थः क्षत्ता च दर्शकः ।  
 द्वारपाले पुरोधास्तु सौवस्तिकपुरोहितौ ॥ २४ ॥  
 मौहूर्तिकमौहूर्तज्यौतिषिकज्ञानिगणकदैवज्ञाः ।  
 सावत्सर आदेशी कार्तान्तिक इत्यमी तुल्याः ॥ २५ ॥  
 यथार्हवर्णो मन्त्रज्ञो भीमरो गूढपुरुषः ।  
 चारोऽप्यथ वणिग्भिक्षुश्छात्रो लिङ्गी कृषीवलः ॥ २६ ॥  
 इति संस्थाचराः पञ्च तत्र भिक्षुरुदास्थितः ।  
 कृषीवलो गृहपतिश्छात्रे कापटिकश्चरे ॥ २७ ॥  
 सञ्चारास्त्वपरे चाराः स्थिताः संस्थाचरेषु ये ।  
 तीक्ष्णोऽतिहिंसनः शूरश्छत्री छद्मप्रधारवान् ॥ २८ ॥  
 अपसर्पाः कर्मकरव्याजात् स्थाने वसन्ति ये ।  
 वार्तिकः सन्देशहरो दूतः सान्देशिको रभूः ॥ २९ ॥  
 वैतालिको बोधकरो वन्दी तु स्तुतिपाठकः ।  
 मागधो मधुको घण्टाताडे घण्टिकचातिकौ ॥ ३० ॥

कृताभिषेका महिषी महादेव्यप्यथापरा ।  
 देवी राजकुलोत्था चेत् परिवृत्ती तु पूजिता ॥ ३१ ॥  
 वावाता तु प्रियतमा स्वामिनी त्वनृपात्मजा ।  
 फालाकली युद्धजिता नृपस्योढाः प्रिया इमाः ॥ ३२ ॥  
 अनूढास्तु प्रिया राज्ञः कलाज्ञा गणिकाः स्मृताः ।  
 गणिका सा प्रगणिका यानाप्तपरिचारिका ॥ ३३ ॥  
 आज्ञा स्यादाज्ञागणिका या राज्ञाप्तपरिच्छदा ।  
 अथालगन्धिकाऽप्याज्ञागणिका कुलसम्भवा ॥ ३४ ॥  
 या तु भोगाय वेश्यात्वं गता वैषयिकीति सा ।  
 बन्धकी तु गता वेशमर्थयानाप्तसत्कृतिः ॥ ३५ ॥  
 शय्यास्त्रभूषणादौ तु निधुक्ता परिचारिका ।  
 सञ्चारिका महाकार्ये कथायां द्रविणादिषु ॥ ३६ ॥  
 विचारिका तूपवनकक्षान्तरविचारिणी ।  
 आशीस्स्वस्त्ययनाभिज्ञा या वृद्धा सा महत्तरी ॥ ३७ ॥  
 प्रतिहारी तु राजानं सम्भावयति या सदा ।  
 आयुक्तिविनियुक्ता या सा ताम्बूलकरङ्गिका ॥ ३८ ॥  
 असिक्न्यन्तःपुरप्रेष्याऽनाप्तभोगा कुमारिका ।  
 विषयानन्तरो राजा शत्रुमित्रमतः परम् ॥ ३९ ॥  
 उदासीनः परस्तस्मात् पाणिग्राहस्तु पृष्ठतः ।  
 शत्रुर्दस्युरमित्रारी अरातिरहितो द्विषन् ॥ ४० ॥  
 द्वेषणः प्रत्यनीको द्विड् जिघांसुर्हिसनो रिपुः ।  
 सपत्नोऽसहनो वैरी दूषकः शात्रवः परः ॥ ४१ ॥  
 प्रत्यर्थी पर्यवस्थाता प्रतिपक्षो विपक्षकः ।  
 दुर्हृद् द्वेष्यभियातिश्च परिपन्थी विरोध्यपि ॥ ४२ ॥  
 मित्रं नपुं त्रिषु स्निग्धवयस्येष्टहितप्रियाः ।  
 निजात्मीयाप्तसुहृदः सहायः सद्गुचिः सखा ॥ ४३ ॥  
 कोशोऽर्थसञ्चयो राज्ञां भाण्डान्यर्था हि कोशगाः ।  
 आयोदयौ धनोत्पत्तौ तत्क्षयेऽपचितिवर्ययः ॥ ४४ ॥  
 पर्याहारः प्रजास्वायो भागधेयो बलिः करः ।  
 उपदा तूपहारः स्यादुपग्राह्यमुपायनम् ॥ ४५ ॥  
 प्रदेशनं प्राशृतं च लम्बा तृकोच आमिषः ।  
 दण्डो दमः साहसोऽस्त्री द्विपाद्यो द्विगुणो दमः ॥ ४६ ॥



अपराधो मन्तुरेनः खसृमं विप्रियागसी ।  
 अपवादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं तथा ॥ ४७ ॥  
 शिष्टिराज्ञाऽप्यथ न्यायो देशरूपं समञ्जसम् ।  
 राष्ट्रं तु विषयः सोऽपि युक्तो ग्रामैः शताधिकैः ॥ ४८ ॥  
 उपवर्त्तनमप्यस्मिन्मण्डलं तैः शताधिकैः ।  
 दुष्प्रापं तु पुरं दुर्गं यन्त्रशैलजलादिभिः ॥ ४९ ॥  
 वारकादीनि यन्त्राणि परिखाया बहिभवि ।  
 पादुका कण्टकी गर्तः पांसुच्छन्नो महापथे ॥ ५० ॥  
 तलयन्त्रं क्षुराकारं यदि वा क्रकचोपमम् ।  
 श्वदंष्ट्रागलशृङ्गाटमण्डूकाद्यन्वितार्थकम् ॥ ५१ ॥  
 शरभा जानुमात्री दा दारुजा जानुभञ्जिनी ।  
 अवपातस्तु हस्त्यर्थो गर्तश्छन्नस्तृणादिना ॥ ५२ ॥  
 स्यात् कण्टकप्रतीसारा रज्जुः कण्टकसञ्चिता ।  
 अहिपृष्ठं तु निर्मासपृष्ठास्थ्याभमयोमयम् ॥ ५३ ॥  
 उपस्करप्रस्त्रलिनी भूमिः स्थपुटपिच्छिला ।  
 छन्नैरेतैश्छन्नपथं सुरुङ्गादिः कृतश्च यः ॥ ५४ ॥  
 सैन्यं चक्रं बलं सेना चमूर्वाहिन्यनीकिनी ।  
 पताकिनी च पृतना ध्वजिनी च वरूथिनी ॥ ५५ ॥  
 सैन्यं तु भिन्नकूटं तन्नष्टावान्तरनायकम् ।  
 शून्यमूलं तदस्थानमन्तश्शाल्यं तदोषकम् ॥ ५६ ॥  
 त्रिहयं पञ्चपादात् यदेकरथकुञ्जरम् ।  
 सैन्यं सा पत्तिरेतस्यास्त्रैगुण्यात् स्युर्यथाक्रमम् ॥ ५७ ॥  
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।  
 अनीकिनीत्यनीकिन्यः पुनरक्षौहिणी दश ॥ ५८ ॥  
 प्रत्यासारश्चमूपाणिः सज्जनं तूपरक्षणम् ।  
 हस्त्यश्चरथपादात् बलं स्याच्चतुरङ्गकम् ॥ ५९ ॥  
 इभो मतङ्गजो हस्ती दन्ती कुम्भी करी रदी ।  
 सम्बेरमो गजो गर्जो द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ ६० ॥  
 दन्तावलो महाकायो वारणः कुञ्जरोऽसुरः ।  
 महामृगः शूर्पकर्णः सामजः सिन्धुरः कपिः ॥ ६१ ॥  
 मदवृन्दः कुपी कम्बुः शुण्डालः षष्टिहायनः ।  
 भद्रो मन्द्रो मृग इति गजाः सङ्करजास्तथा ॥ ६२ ॥

अङ्गप्रत्यङ्गभद्रत्वं संक्षिप्तं भद्रलक्षणम् ।  
 पृथुत्वं श्लथता स्थौल्यं संक्षिप्तं मन्द्रलक्षणम् ॥ ६३ ॥  
 तनुप्रत्यङ्गदीर्घोच्चप्रायो मृगगणो मृगः ।  
 भद्रमन्द्रो भद्रमृगो भद्रमन्द्रमृगोऽपि च ॥ ६४ ॥  
 मन्द्रभद्रादयोऽप्येवमिति सङ्करजा नव ।  
 ऊर्ध्वाधःकायभेदात्ते द्विधेत्यष्टादशोदिताः ॥ ६५ ॥  
 पञ्चवर्षो गजो बालः पोतस्तु दशवर्षकः ।  
 त्रिंशद्वर्षस्तु कलभो विक्को विंशतिवर्षकः ॥ ६६ ॥  
 कालेऽप्यजातदन्तश्च स्वल्पाङ्गोऽपि च मकणः ।  
 आज्ञाकृद्विनयग्राही यूथनाथस्तु यूथपः ॥ ६७ ॥  
 लग्नो मदकलो मत्तः प्रभिन्नोऽप्यथ निर्मदः ।  
 उद्वान्तोऽसौ परिणतस्तिर्यग्दन्तप्रहारकः ॥ ६८ ॥  
 औपवाह्यो राजवाह्यः सन्नाह्यः समरोचितः ।  
 स्थूलह्रस्वरदोऽसोढ ईषादन्त उदग्रदन् ॥ ६९ ॥  
 करेणुः करिणी धेनुः कल्पना सज्जना घटा ।  
 गण्डूषको बहिष्कर्षः सम्भोगश्चातिहस्तकः ॥ ७० ॥  
 स्थूलहस्तः फलीहस्तः पृथुहस्त इति क्रमात् ।  
 उपर्येते गजाङ्गुल्याः प्रदेशाः सा तु कर्णिका ॥ ७१ ॥  
 आकर्षः परिकर्षश्च बहिष्कर्षस्य पार्श्वयोः ।  
 किरीटी दन्तमूलं स्यात् प्रवेष्टस्तु ततः परम् ॥ ७२ ॥  
 मध्येमुखं तु वाहित्थं पिलाटौ तस्य पार्श्वयोः ।  
 कर्णमूले पीतलिका चूलिका पिप्पलीति च ॥ ७३ ॥  
 तस्यास्तु पर उद्धात आरक्षः कुम्भयोरधः ।  
 उरःपार्श्वौ तु विश्वोभौ दर्दरौ गलपार्श्वयोः ॥ ७४ ॥  
 करटोऽस्य कटो गण्डो गात्रं पूर्वोऽङ्घ्रिरस्य तु ।  
 मूलेधोऽधः प्रदेशास्तु क्षयश्च पलिपादकः ॥ ७५ ॥  
 कूर्मः सन्दानभागश्च प्रोह उत्सङ्ग इत्यपि ।  
 विशेषभागो जघनभागो वैशाख्यपि क्रमात् ॥ ७६ ॥  
 गात्रे सप्त नखादूर्ध्वं पिण्डकान्तमवस्थिताः ।  
 पुच्छवंशोऽपवशः स्यान्निष्कोशः कुक्षिमध्यकम् ॥ ७७ ॥  
 अवरं पश्चिमः पादस्तत्राधोऽधः स्थिताः क्रमात् ।  
 कालभागो बहिष्पार्श्वस्तथा जघनपिण्डका ॥ ७८ ॥



मण्डुकी शकुटा पाणिस्तलप्रोहश्च सक्थि च ।  
 सन्दानभागः कूर्मश्च प्रदेशाः स्युर्नखावधेः ॥ ७१ ॥  
 अत्यूहः ककुदं मेढ्रे क्षीरिका चूचुकान्तरम् ।  
 अथ पुच्छे स्थिता किङ्गी संवालो बालपुष्कलम् ॥ ८० ॥  
 बालपाशक इत्येवमधोऽधः स्युर्यथोत्तरम् ।  
 दन्तभागः पुरोभागः पुच्छभागस्तु पार्श्वतः ॥ ८१ ॥  
 मुखे पृषन्ति पद्मानि वमथुः करशीकरः ।  
 प्रवृत्तिर्मद आलानं स्तम्भस्तोत्रं तु वेणुकम् ॥ ८२ ॥  
 अन्दुको निगलो न स्त्री भिदुरं शृङ्गला त्रयी ।  
 कलापकः कण्ठबन्धस्त्रिपदी पादबन्धनम् ॥ ८३ ॥  
 चूषा कक्ष्या वरत्रा स्यादकुशोऽस्त्री सृणिर्न षण् ।  
 अपष्टं त्वङ्कुशस्याग्रं सूना दण्डोऽर्पिताङ्कुशः ॥ ८४ ॥  
 सूनापष्टान्तरं मन्या वक्रकीलो हुरुट्टकः ।  
 कीलस्तु पुण्यलः शङ्कुर्हिस्त्रीरो लोहशृङ्गलः ॥ ८५ ॥  
 पश्चाच्चरणशङ्कौ तु पङ्क्तीशो घुटिकोऽपि च ।  
 कदलिः करिणां केतुः शृङ्गारो गजमण्डनः ॥ ८६ ॥  
 स्थासको नक्षत्रमाला कर्णशङ्कौ तु शङ्किलौ ।  
 गजोपचारकुशलो वाहितो मलहारकः ॥ ८७ ॥  
 आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।  
 तत्प्रधाना महामात्रा आरोहा गजजीवनाः ॥ ८८ ॥  
 पादकर्म यतं तेषां यातमङ्कुशवारणम् ।  
 वीतं तदुभयं यच्च निस्सारं हयकुञ्जरम् ॥ ८९ ॥  
 अश्वस्तुरङ्गस्तुरगो हयः सप्तिस्तुरङ्गमः ।  
 शालिहोत्री व्रती कुण्डी प्रोथी वारुः प्रकीर्णकः ॥ ९० ॥  
 कुदरो घोटकस्तार्क्ष्यः क्रमणो ग्रहभोजनः ।  
 पाकलः परुलः पीतिर्माषाशी हि सविक्रमः ॥ ९१ ॥  
 श्रीवृक्षकी वक्षसि चेद्रोमावर्तो मुखेऽपि च ।  
 मल्लिकाक्षः सितैर्नैत्रैः कृष्णैरिन्द्रायुधो हयः ॥ ९२ ॥  
 पञ्चभद्रस्तु हृत्पृष्ठमुखपार्श्वेषु पुष्पितः ।  
 पुच्छोरःखुरपुच्छास्यैः सितैः स्यादष्टमङ्गलः ॥ ९३ ॥  
 आजानेयाः कुलीना स्युः पारसीकादयश्च ते ।  
 पारसीकादिसंज्ञास्तु पारसीकादिदेशजाः ॥ ९४ ॥

ये तु काम्बोजवाह्नीकवनयुजमुखा हयाः ।  
 ते निहीनकुलाः किञ्चित् (पश्चि)मोत्तरदेशजाः ॥ ९५ ॥  
 निहीनास्त्वञ्जलारट्टशम्भला दोषिणः परे ।  
 तत्र शृङ्गी शृङ्गपदे मांसबुद्बुदवान् हयः ॥ ९६ ॥  
 मुसल्यन्यप्रभैर्कार्णवः कराली तु जरुद्वदः ।  
 ऋषभः ककुदावर्तो यमो हीनाधिकाङ्गकः ॥ ९७ ॥  
 इन्द्रवृद्धिस्तु निर्मुष्कः स्त्री सरी तु खुरे त्रिके ।  
 कृत्तिकापिञ्जरः स स्याद्यः पृष्ठपुञ्जपिञ्जरः ॥ ९८ ॥  
 अश्वानामागमे संज्ञा वर्णिता वर्णहेतवः ।  
 सिते द्वौ कर्ककोकाहौ खोज्जाहः श्वेतपिङ्गलः ॥ ९९ ॥  
 आनीलः स्यान्नीलकोशः पुङ्गाहः कृष्णवर्णकः ।  
 शोणः कोकनदच्छायस्त्रियूहः कपिलो हयः ॥ १०० ॥  
 कियाहो लोहितः पीतरक्तस्तूद्रकलाहकः ।  
 उराहस्तु मनाक् पाण्डुः कृष्णं जङ्गाद्वयं यदि ॥ १०१ ॥  
 पाटलो वोरुखानः स्याद् गर्दभाभः सुरूहकः ।  
 हलाभश्चित्रलो रेखाऽप्यस्य कृष्णाऽस्ति पृष्ठगा ॥ १०२ ॥  
 कलाहस्तु मनाक् पीतः कृष्णः स्याद्यदि जानुनि ।  
 खेल्लाहः कपिलच्छायः पाण्डुवालधिकेसरः ॥ १०३ ॥  
 पीतस्तु हरियाः पीतहरिते हरिहालकौ ।  
 पीयूषवर्णे सेराहः पङ्गुलः सितकाचसः ॥ १०४ ॥  
 सर्व एवान्यसंज्ञाः स्युः कर्काद्याः पुण्ड्रके सति ।  
 कोकुराहः खुराहो हलुराह इति क्रमात् ॥ १०५ ॥  
 कर्काद्याः खुराहस्तु फाले रेखा च पृष्ठगा ।  
 सरुराहः सेरुराहो द्वौ सेराहे सपुण्ड्रके ॥ १०६ ॥  
 अश्वपोतः किशोरः स्याद्दाम्यश्वा वडबाऽवती ।  
 लुठितोऽश्व उपावृत्तः सुकरो दुर्विनीतकः ॥ १०७ ॥  
 अह्नाऽश्वगम्यमाश्वीनं त्रिष्वेतेऽश्वतरः पुमान् ।  
 स्याद्वेसरो वेगसरो मूकरुण्डौ तु वेसरात् ॥ १०८ ॥  
 अश्वो सूतेऽश्वतर्या तु मूकाज्जातः किसिद्रकः ।  
 निगालस्तु गलोद्देशे नासाग्रे प्रोथमस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥  
 आवर्तो रोमजो देवमणिस्त्वेष निगालजः ।  
 कश्यमश्वस्य मध्यं स्याद्वन्तवेष्टस्तु नालिका ॥ ११० ॥



कालिका दन्तरेखा स्यादन्तच्छिद्रमुल्लुखली ।  
 कर्तनं धूलिलुठितं वर्तनं तूपवर्तनम् ॥ १११ ॥  
 लोठभूर्मुखरज्जुस्तु स्यादन्ताल्यवरक्षणी ।  
 दामाञ्जनं पादपाशो नासारज्जुस्तु लालिका ॥ ११२ ॥  
 कवियोऽस्त्री खलीनोऽस्त्री पञ्चाङ्गी कविका कवी ।  
 प्राक्पादरज्जुरातालो बका स्याद् द्विप्रहे द्वयोः ॥ ११३ ॥  
 पर्याणं स्यात् पल्ययनं वल्गावक्षेपणी कुशा ।  
 कशा कात्रा वक्त्रपट्टे तलिका तलसारकम् ॥ ११४ ॥  
 पादपुट्यां पादफली प्रक्षरं प्रखरोऽस्त्रियाम् ।  
 युग्याशनप्रसेवे तु द्वौ बाक्काणप्ररोहकौ ॥ ११५ ॥  
 आयानं स्यादलङ्कारो ग्रीवाभूषा तु गण्डकः ।  
 लवणस्य प्रदानाय कृता लवणलायिका ॥ ११६ ॥  
 तैलस्य नालिका सूत्रसङ्ग्रहोऽश्वस्य कर्षकः ।  
 केशकारक्षौरकारौ नालिवाहस्तु चासिकः ॥ ११७ ॥  
 अश्वानां तु गतिधारा विभिन्ना सा तु पञ्चधा ।  
 आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ११८ ॥  
 इत्येतेषाञ्च पञ्चानामेकैकं बहुभेदकम् ।  
 गत्यर्थास्तद्वदर्थश्च सर्वे ते बाच्यालङ्काराः ॥ ११९ ॥  
 तत्रास्कान्दतकं कोपादिव सर्वैः पदैर्मुहुः ।  
 उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गमनमुपकण्ठापराभिधम् ॥ १२० ॥  
 अथ धौरितकं धौर्यं धौरितं धौरणं च तत् ।  
 तच्च कङ्कशिखिक्रोडनकुलानां गतैः समम् ॥ १२१ ॥  
 रेचितं स्याद्भारवहं तच्चावक्रगतिर्द्रुता ।  
 वल्गितं बल्गनं पद्भिर्भेदाश्चाष्टौ यमादयः ॥ १२२ ॥  
 प्लुतं तु लङ्घनं पक्षिमृगधर्मेण भिद्यते ।  
 यानं सांयात्रिकं युग्यं वाहनं बाह्यधोरणे ॥ १२३ ॥  
 योग्यं चास्मिंश्चक्रयुते शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।  
 वहित्रं वहनं चास्मिंश्चतुरश्रे सकूबरे ॥ १२४ ॥  
 दीर्घद्विपक्षवहनमनः क्ली शंकटोऽस्त्रियाम् ।  
 प्रवाहिनी वृत्तमध्ये पक्षकूबरवर्जिते ॥ १२५ ॥  
 देवतार्थो देवरथो युद्धार्थः साम्परायिकः ।  
 क्रीडार्थः स्यात् पुण्यरथः कृतः कर्णीरथो मृदा ॥ १२६ ॥

कर्णीरथं प्रवहणं हयनं रथगर्भके ।  
 गन्त्री स्त्री कूबरं न स्त्री रथे कम्बलिवाहयके ॥ १२७ ॥  
 रथस्तु जयकृजैत्रो यात्रार्थः पारियाणकः ।  
 रथेऽत्र द्वैपवैयाघ्रौ प्रावृते व्याघ्रचर्मणा ॥ १२८ ॥  
 वृते रथे पाण्डुभिः स्यात् कम्बलैः पाण्डुकम्बली ।  
 एवं काम्बलवाह्याद्याः कम्बलादभिरावृते ॥ १२९ ॥  
 योग्यारथो वैनयिको जैत्रप्रभृतयस्त्रिषु ।  
 धूः स्त्री धूर्वा यानमुखं युगमीषान्तबन्धनम् ॥ १३० ॥  
 कस्तम्भि युगमध्येऽस्त्री स्यादक्षश्चक्रधारणम् ।  
 अक्षकीले त्वर्णिर्न क्ली ध्रुवः कीलोऽप्यनिर्न पण् ॥ १३१ ॥  
 रथलीडो रथस्यान्तं बन्धुरा तनुकूबरम् ।  
 रथगुप्तिर्वरुथो ना कूबरो ना युगन्धरः ॥ १३२ ॥  
 अनुकर्पो रथस्याधोधरणन्दार्थान्नसः ।  
 युगो द्वितीयः प्रासङ्गः पताका तु ध्वजोऽस्त्रियाम् ॥ १३३ ॥  
 अस्योच्चूडावचूडौ द्वावूर्ध्वाधोमुखचूडकौ ।  
 अरि चक्रं रथपदं रथाङ्गं केशवायुधम् ॥ १३४ ॥  
 स्त्री नेमिनी प्रधिश्चक्रप्रान्ते तुम्बा तु नाभिका ।  
 अरास्तयोः स्थिता मध्ये रथाङ्गानि त्वपस्कराः ॥ १३५ ॥  
 शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला हेलार्थरूपणम् ।  
 प्रेङ्खोलनं तु प्रेङ्खोलं प्रेङ्खो रिङ्खोलनाद्यपि ॥ १३६ ॥  
 आन्दोलनं स्यादान्दोलो दोला स्याद्दोलिकाऽपि च ।  
 परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ १३७ ॥  
 नियन्ता प्राजिता क्षत्ता यन्ता सूतश्च सारथिः ।  
 सव्येष्टो दक्षिणेस्थश्च स्यन्दपाणिसारथिने ॥ १३८ ॥  
 सेवका युधि योद्धृणां भटा यौधाश्च यौधकाः ।  
 पदातिपत्तिपादातपदातिकपदाजयः ॥ १३९ ॥  
 पातिकः पादिकः पट्टो रथिको रथिनो रथी ।  
 सेनास्थाः सैनिकाः सैन्याः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ॥ १४० ॥  
 पाणिग्राहास्तु पृष्ठस्थाः साहस्रास्तु सहस्रिणः ।  
 परिधिस्थाः परिचराः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ १४१ ॥  
 दंशिते स्युः कवचित्तसज्जसन्नद्धवमिताः ।  
 आबद्धः पुनरामुक्तः प्रतिमुक्तः पिनद्धवत् ॥ १४२ ॥



काण्डपृष्ठस्वायुधिक आयुर्धायोऽस्त्रजीवनः ।  
 धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्गचस्त्री धनुधरः ॥ १४३ ॥  
 चर्मि शाक्तीकयाष्टीकपारश्वधिककौन्तिकाः ।  
 काण्डीरखाङ्गिकाद्याश्च चर्मशक्त्यादधारिणः ॥ १४४ ॥  
 छायाकरश्छत्रधरः पताकी वैजयन्तिकः ।  
 पुरस्सरः पुरोगोऽग्रेसरः प्रष्टोऽप्रतस्सरः ॥ १४५ ॥  
 पुरोगमः पुरोगामी यस्त्वलं यात्यरीन् प्रति ।  
 सोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रिणोऽप्यभ्यमित्रिय इत्यपि ॥ १४६ ॥  
 शूरो वीरश्च विक्रान्तः पटुश्चारभटोऽपि च ।  
 अशूरो हतकः क्लीबो जिघ्णौ तु जयिजित्वरौ ॥ १४७ ॥  
 शक्ये तु जेतुं जय्यः स्याज्जेयो जेतव्यमात्रके ।  
 जैत्रो जेता जितो भग्नः कृतहस्तस्तु शिक्षितः ॥ १४८ ॥  
 लघुदस्तः सुदस्तश्च कृतास्त्रः कृतपुङ्गवः ।  
 सायुगीनो रणे साधुरत्यन्तीनो भृशं गते ॥ १४९ ॥  
 कामङ्गाम्यनुकामीनो जवी तु जवनो जवः ।  
 जङ्घालोऽतजवे धीरमन्थरौ मन्दगामिनि ॥ १५० ॥  
 स्यादुरस्वानुरसिल ऊर्जस्व्यूजस्वलोजितौ ।  
 बली प्रबल ओजस्वी वाच्यवद्रथिकादयः ॥ १५१ ॥  
 संशप्तकास्तु संग्रामात् समयेनानिवर्तिनः ।  
 त्वक्त्रं तु दंशनं वर्म तनुत्रं कवचोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥  
 माठिः स्त्री जागरो वक्षश्छदः सन्नाहकङ्कटौ ।  
 तत्सूत्रकं सूत्रमयं जालिका स्यादयोमयी ॥ १५३ ॥  
 नागोदर्युदरत्राणं जङ्घात्राणं तु मत्कुणम् ।  
 पटुस्तु लिपिसन्नाहः प्रकोष्ठादौ कृतो यथा ॥ १५४ ॥  
 बाहुलं बाहुरक्षा च मर्दनी पादरक्षणी ।  
 गोधा तला च न नरौ हस्तज्ज्ञो ज्यानिवारणे ॥ १५५ ॥  
 अङ्गलित्रे कपी शीर्षत्राणे शीर्षण्यशीर्षके ।  
 अधिकाङ्गं सारसनं मध्ये धार्य सकङ्कटैः ॥ १५६ ॥  
 सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।  
 न क्ली हेतिः शस्त्रमस्त्रमायुच्छत्रुप्रमायुधम् ॥ १५७ ॥  
 ऋष्टिः खड्गः प्रचारोऽसिर्धर्मपालः प्रजागरः ।  
 धर्मो विशसनो देवो मनुष्येष्टः शिवङ्करः ॥ १५८ ॥

श्रीगर्भो विजयः शास्ता कृपाणासङ्गरिष्टयः ।  
 कौक्षेयको भद्रसुतो ह्रस्वनिर्वशकस्त्वसिः ॥ १५९ ॥  
 स्नुहीदलाभो निस्त्रिशो मण्डलाग्रोऽन्वितार्थकः ।  
 चन्द्रहासोऽर्धचन्द्राग्र इली तु करवालिता ॥ १६० ॥  
 जम्बूगतेस्तु खड्गाम्बु न्यस्ततैलरुचिर्यदि ।  
 वराभोऽनिल एरण्डबीजाभपुलकावलिः ॥ १६१ ॥  
 हुण्डुतः पुत्रकैरण्डः सितदीर्घानवस्थिनैः ।  
 हरकस्तरवारिः स्त्री यष्टिश्चापि मृदौ पृथौ ॥ १६२ ॥  
 कुण्डलो दीर्घनिर्वशो पुलकास्त्वणुराजयः ।  
 अथासिपुत्री क्षुरिका शस्त्रिका चासिधेनुका ॥ १६३ ॥  
 साऽतिदीर्घा पत्रफला कुट्टन्ती हुलमात्रिका ।  
 पटुसो लोहदण्डो यस्तीक्ष्णधारः खुरोपमः ॥ १६४ ॥  
 कण्टकच्छेदनोऽप्येवं द्विमुखश्च भवत्यसौ ।  
 प्रासः कुन्तो हाटकस्तु स त्रिकण्टकसंज्ञितः ॥ १६५ ॥  
 भिण्डपालः क्षेपणीयः सृगो दीर्घे महाफले ।  
 तोमरोऽस्त्री लोहहुलदण्डे कासूश्च सर्वला ॥ १६६ ॥  
 कणयो लोहमात्रोऽथ शङ्कुर्ना शल्यमस्त्रियाम् ।  
 वराहकर्णकोऽन्वर्थः क्षुरिकाद्याः हुलाग्रकाः ॥ १६७ ॥  
 हुलं द्विफलपत्राग्रं मुनयोऽस्त्र्यस्य शेखरम् ।  
 प्रत्याकारपरीवारौ कोशो मुष्टौ त्सरुः पुमान् ॥ १६८ ॥  
 शतग्री तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।  
 अयःकण्टकसंछन्ना शतघ्न्येव महाशिला ॥ १६९ ॥  
 भुसुण्डी स्याद्धारुमयी वृत्तायःकीलसञ्चिता ।  
 हस्तिचारो गजत्रासहेतुः शरभसन्निभः ॥ १७० ॥  
 देवदण्डोऽरन्निमात्रो दीर्घा मुसलयष्टिकः ।  
 दुघणे मुद्गरघनौ परिघः परिघातनः ॥ १७१ ॥  
 अस्त्रियौ चापधनुषावासेष्वासौ धनुर्दणम् ।  
 कार्मुकं धन्व कोदण्डमायुधाग्रथं शरासनम् ॥ १७२ ॥  
 कार्मुकं तु चतुर्हस्तं कोदण्डं त्र्यङ्गुलं विना ।  
 कार्मुकात् तु क्रमात् पञ्च विद्वायुधशरायुधे ॥ १७३ ॥  
 गोतमं रथायुधकं कोसलं गाण्डिवोऽस्त्रियाम् ।  
 पातनं मार्गणं चेति द्विगुणानि यथोत्तरम् ॥ १७४ ॥



उच्चलं ब्रह्मदण्डश्च वैशिखं बिम्बसारकम् ।  
 द्विगुणानि क्रमादाद्यं त्वष्टोत्तरशताङ्गुलम् ॥ १७५ ॥  
 केतनं पञ्चविंशत्या पलैर्द्वे द्विगुणे परे ।  
 करीरपृष्ठं व्यासञ्च सहितं तु शतैस्त्रिभिः ॥ १७६ ॥  
 पलानां पञ्चभिस्त्वेष्टां शतैः स्यात् सहितोत्तरम् ।  
 लस्तुको धनुषो मध्यमं लुस्तमटन्यपि ॥ १७७ ॥  
 अतिरार्तिः किरिः कोटी ज्या जीवा मौर्विका द्रुणा ।  
 तूणी तूण उपासङ्गतूणीरौ विशिखाश्रयः ॥ १७८ ॥  
 निषङ्ग इषुधिर्न क्ली पत्री तु विशिखः खगः ।  
 पृषत्को रोपणो बाणः कलम्बो मर्मभेदनः ॥ १७९ ॥  
 चित्रपुङ्खो वीरशङ्कुः शरो रोध इषुर्न षण् ।  
 प्रद्वेलनस्तु नाराच एषणश्चायसे शरे ॥ १८० ॥  
 अर्धशल्योऽर्धनाराचः कङ्कपत्रः शिलीमुखः ।  
 त्रिभागशल्यनाराचे द्वौ दण्डासनदण्डिकौ ॥ १८१ ॥  
 अर्धचन्द्रः क्षुरप्रः स्याद्विकर्णः कर्णिकारलः ।  
 स्नुहीदलफलो भल्लश्चिपाटोऽल्पस्तदाकृतिः ॥ १८२ ॥  
 पाददण्डोऽन्वितार्थः स्याद् बाणस्तु गतपत्रणः ।  
 तीरी त्वल्पा वेगवती त्वग्बलाः शरजालकाः ॥ १८३ ॥  
 अयश्शलाका कूटोऽस्त्री पत्रकूटः सपत्रणः ।  
 द्विद्विंशत्यङ्गुलिः स्यान्निचोटे द्व्यङ्गुलोत्तराः ॥ १८४ ॥  
 स्युश्चोटलिङ्गकस्तालः कुलिको बिम्बसारकः ।  
 कर्तरी पुङ्ख आराग्रं त्वग्रं वाजश्छदावलिः ॥ १८५ ॥  
 पत्रणा पक्षरचना धारा शस्त्रमुखं फलम् ।  
 स्थानानि धन्विनां पञ्च तत्र वैशाखमस्त्रियाम् ॥ १८६ ॥  
 त्रिवितस्त्यन्तरौ पादौ मण्डलं तोरणाकृती ।  
 अन्वर्थं स्यात् समपदमालीढं तु ततेऽग्रतः ॥ १८७ ॥  
 दक्षिणे वाममाकुञ्च्य प्रत्यालीढं विपर्यये ।  
 वैहायसञ्च वेधे तु योगावाप उपक्रमः ॥ १८८ ॥  
 हस्तावापः शरादानं प्रमाथो लस्तकग्रहः ।  
 मुष्ट्यायोजनमादानमिषोर्ज्यायां समूहनम् ॥ १८९ ॥  
 वितानं संहितस्येषोः किञ्चिदेव विकर्षणम् ।  
 निमित्तग्रहणं लक्ष्यग्रहो बुद्धिदृग्गादिना ॥ १९० ॥

आकर्णकर्षणं 'पूर्णमायामं त्वङ्गुलाधिकम् ।  
 ततोऽप्यर्धङ्गुलाकृष्टसन्धानं तेजनं न ना ॥ १९१ ॥  
 मुष्टिमान्द्यं निर्हरणं व्यवच्छेदस्तु मोक्षणम् ।  
 कैराती गतिरूर्ध्वाऽधःप्रकर्षस्तु गतेर्लयः ॥ १९२ ॥  
 दृढदुष्करचित्राणि कर्माणि हरणानि च ।  
 मुचुटी सिःकर्णी च पताका चेति मुष्टयः ॥ १९३ ॥  
 लक्षं तु लक्षणं लक्ष्यमभिसन्धानमासिकम् ।  
 वेध्यं शरव्यं न नरि श्रमस्थानं खलुरिका ॥ १९४ ॥  
 योगाभ्यासः परिचयो बाणाभ्यास उपासनम् ।  
 शक्त्याद्यस्त्रं पाणिमुक्तं यन्त्रमुक्तं शरादिकम् ॥ १९५ ॥  
 मुक्तामुक्तं धृतं मुक्तं नागपाशादिदीर्घकम् ।  
 अमुक्तं छुरिकादि स्यादिति शस्त्रं चतुर्विधम् ॥ १९६ ॥  
 धौते निशातं निशितं क्षणुतं तेजितमर्थवत् ।  
 फलं चर्ममयं चर्म फलकं खेटकं समम् ॥ १९७ ॥  
 अन्तर्लोहेन बद्धान्ते फलान्ते स्याद्वलाहका ।  
 हस्तिकर्णः परोवण्टः फली फलकिकाल्पिका ॥ १९८ ॥  
 कावाटो लघुकाष्ठः स्यात् सयष्टिर्यष्टिवारणः ।  
 कटिका सूत्रसंयूता शलाकाः परिमण्डलाः ॥ १९९ ॥  
 अङ्गुलं सैव वेत्राद्यैः सङ्ग्राहो मुष्टिरेषु या ।  
 लोहाभिसार उद्योगे राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ २०० ॥  
 यत्सेनयाऽभिनिर्याणं पत्युस्तदभिषेकनम् ।  
 आसारस्तु प्रसरणी प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥ २०१ ॥  
 विरतं तु भटोद्योगोऽभिक्रमो यानमभ्यरीन् ।  
 वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ॥ २०२ ॥  
 नासीरोऽस्यग्रयानं स्यादवस्कन्दस्तु सौप्तिकः ।  
 मृधमास्कन्दनं युद्धं समिकं साम्परायिकम् ॥ २०३ ॥  
 आयोधनं रणं सङ्ग्रहं प्रथनं प्रविदारणम् ।  
 सम्प्रहारसमाघातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ २०४ ॥  
 अभिमर्दाभिसम्पातप्रघाताभ्यागमाहवाः ।  
 समुदायः समुदयः सम्मर्दः सङ्गरः स्पशः ॥ २०५ ॥  
 संग्रामः समरोऽस्त्री स्त्री संयुदायुष्य युत् समित् ।  
 वीराशंसनमाजेर्भूर्धोरा लोलो महारणम् ॥ २०६ ॥



नियुद्धं बाहुयुद्धं स्यादवमर्दस्तु पीडनम् ।  
 अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं स्वलितं चलम् ॥ २०७ ॥  
 अविषादो धृतिर्धैर्यमवष्टम्भस्तु सौष्ठवम् ।  
 वीराणां यद्रेणे नृत्तं तस्मिन् वीरजयन्तिका ॥ २०८ ॥  
 प्रसभोऽस्त्री बलात्कारो हठश्च विजयो जयः ।  
 प्रतीकारो वैरशुद्धिरपदानं पराक्रमः ॥ २०९ ॥  
 शौर्यं वीर्यमथ स्थाम बलं शुष्म तरः सहः ।  
 नाशस्त्वपक्रमोऽपायो विप्रयाणं पलायनम् ॥ २१० ॥  
 सन्द्रोवोद्द्रावसन्द्रावप्रदावद्रवविद्रवाः ।  
 विशस्तु घात उन्मथो विशरः प्रमथो वधः ॥ २११ ॥  
 निर्वासनं निहननं निबर्हणनिषूदने ।  
 निस्तर्हणं निशरणं निकारणनिशुम्भने ॥ २१२ ॥  
 निर्वापणं निरसनं निर्ग्रन्थननिर्हिसने ।  
 प्रमापणं प्रमथनं प्रवासनमपासनम् ॥ २१३ ॥  
 परासनं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ।  
 उद्वासनं प्रशसनं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ २१४ ॥  
 उज्जासनं संज्ञपनं काथनं प्रविसारणम् ।  
 व्यापादनं च हिंसा च कदनं सङ्कुलो वधः ॥ २१५ ॥  
 रुण्डोऽशिराः कबन्धोऽस्त्री कुणपस्तु शवोऽस्त्रियाम् ।  
 शवयानं कटः खाटिश्चिता चित्या चित्तिः स्त्रियाम् ॥ २१६ ॥  
 अरुः क्षतं ना क्षणितुर्त्रणोऽपीर्मोऽपि न स्त्रियौ ।  
 किणो रूढं व्रणस्थाने तुमुलं रणसङ्कुलम् ॥ २१७ ॥  
 जितकाशी जितरणः कान्दिशीको भयद्रुतः ।  
 अपराद्धशरोऽसौ स्याद्यस्य लक्ष्याच्छयुतः शरः ॥ २१८ ॥  
 पराजितः पराभूतः प्रणष्टस्त्वगृहीतदिक् ।  
 प्रस्कन्नपतितौ ध्वस्ते मूढे मूर्छालमूर्छितौ ॥ २१९ ॥  
 परासुरपसम्पन्नः प्रमीतः संस्थितो मृतः ।  
 जीवो जीवन् किणादूर्ध्वं त्रिषु जीवस्तु जीवितम् ॥ २२० ॥  
 आयुर्जीवितकाले ह्यी जीवातुर्जीवितागदः ॥ २२० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

## वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

अर्या भूमिस्पृशो वैश्या ऊरुव्या ऊरुजा विशाः ।  
 आजीवो जीविका वृत्तिर्वार्ता वर्तनजीवने ॥ १ ॥  
 मृतं क्ली याचितं भैक्षममृतं स्यादयाचितम् ।  
 उच्छ्रो धान्यश आदानं कणिशावर्जनं सिलम् ॥ २ ॥  
 ऋतं तदुभयं स्त्री तु कृषिः क्ली प्रमृतानृते ।  
 सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या वणिजा स्त्रियौ ॥ ३ ॥  
 पाशुपाल्यं जीववृत्तिः स्यादृणं पर्युदञ्चनम् ।  
 तदवृद्धिकमुद्धारः कुसीदं तु सवृद्धिकम् ॥ ४ ॥  
 वार्धुष्यं वार्धुषं धान्यवृद्धिर्धृष्टिः पुनः कला ।  
 सा कायिकान्वहं देया प्रतिमासं तु कालिका ॥ ५ ॥  
 कारिका तु स्वयं दृष्टा चक्रवृत्तिस्तु वृद्धिजा ।  
 परिवर्तेन निर्वृत्तं वस्तु स्यादापमित्यकम् ॥ ६ ॥  
 सेवा श्ववृत्तिरेताश्च याजनाद्याश्च वृत्तयः ।  
 त्रिष्वालेखात् कुडुम्बी तु क्षेत्राजीवः कृषीवलः ॥ ७ ॥  
 कर्षकोऽथ द्वैगुणिको वृद्ध्याजीवः कुसीदिकः ।  
 वार्धुषी स्याद्वार्धुषिके प्रयोक्त्युत्तमर्णकः ॥ ८ ॥  
 गृहीतर्यधमर्णः स्यादाप्तः प्रत्ययितः समौ ।  
 मध्यस्थः प्राशिनकः साक्षी मूली स्याद्दुष्टसाक्षिणि ॥ ९ ॥  
 कूटसाक्षी मृषासाक्षी प्रतिभूलग्नकोऽन्तरः ।  
 अभियोक्ता शिरोवर्ती शिरस्थोऽथाभियुक्तके ॥ १० ॥  
 सन्दंशितोऽभिशास्तश्च वसुराक्षारिकोऽपि च ।  
 सदेवासत्कृतं सभ्यैस्तिरितं साक्षिणा तु चेत् ॥ ११ ॥  
 अनुशिष्टमथो लेखो लेख्यं दिव्यं तु दैविकम् ।  
 न्यासस्तूपनिधिस्थाप्यनिक्षेपा न्यस्तकोऽस्त्रियाम् ॥ १२ ॥  
 सदस्या देशिकाः स्थेयाः सभास्ताराः सभासदः ।  
 सभ्याः सामाजिकाश्चाथ गोष्ठ्यास्था परिषत् सभा ॥ १३ ॥  
 समज्या तारणी संसद् घटा स्थानं सदोऽप्यना ।  
 द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राङ्वावपाकोऽक्षदर्शकः ॥ १४ ॥  
 न्यायोऽक्षो व्यवहारोऽथ सम्प्रश्नः सम्प्रधारणम् ।  
 समर्थनं च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥ १५ ॥



अर्थिनो वचनं भाषा स्यात् प्रत्यर्थिन उत्तरम् ।  
 कारणं त्वभ्यवस्कन्दः प्रत्यवस्कन्द इत्यपि ॥ १६ ॥  
 अवस्कन्दश्च भाषार्थमङ्गीकृत्य विशेषगीः ।  
 केदारः केदारः क्षेत्रमुर्वरा सर्वसस्यभूः ॥ १७ ॥  
 भूमिच्छिद्रं कृष्ययोग्या प्रहतं नालमुत्थितम् ।  
 खिलं त्वप्रहतं स्थानमूषवत्यूषरेरिणौ ॥ १८ ॥  
 मौद्गीनकौद्रवीणाद्याः क्षेत्रे मुद्रादिसम्भवे ।  
 यव्यत्रैहेयशालेयषष्टिक्याः सयवक्यकाः ॥ १९ ॥  
 यवादेस्तिलतैलीनौ तिलस्योमाणुभङ्गतः ।  
 माप्राचचैवं द्विरूपत्वं शाकाच्छाकिनशाकटौ ॥ २० ॥  
 एवं वास्तुकवार्ताकबालकाशेक्षुमूलकात् ।  
 द्रोणाढकादिवापेषु द्रौणिकाढकिकादयः ॥ २१ ॥  
 खारीवापे तु खारीकं हल्यं सीत्यं च कृष्टके ।  
 तृतीयाकृतं त्रिसीत्यं त्रिहल्यं त्रिगुणाकृतम् ॥ २२ ॥  
 त्रिष्कृष्ट एवं द्विष्कृष्टे शम्बाकृतमिहाधिकम् ।  
 बीजाकृतं तूमकृष्टं प्रहतप्रमुखास्त्रिषु ॥ २३ ॥  
 लोष्टोऽस्त्री दरिणिर्न क्ली लेष्टुर्न मृत्तु मृत्तिका ।  
 पुरीषं मृत्तिकाचूर्णं मृत्सा मृत्सना प्रशस्तमृत् ॥ २४ ॥  
 मृत्का त्विष्टकाया विद्धुषस्तु क्षारमृत्तिका ।  
 धूलिः स्त्रियां रजः पांसू रेणुः पुंस्यथ कर्दमे ॥ २५ ॥  
 दारिपत्परिपत्पङ्कचिकिलाश्च निषद्वरः ।  
 शादावकीलजम्बाला वप्रोऽस्त्री पालिराल्यपि ॥ २६ ॥  
 क्षेत्रमध्ये कृता सालपा स्थाला स्यादथ लाङ्गलम् ।  
 हलं गोदारणं सीरमीषा सीरादिदण्डकः ॥ २७ ॥  
 निरीषः कृषकः फालः शम्या तु युगकीलकम् ।  
 योक्त्रं तु योत्रमाबन्धः खनित्रमवदारणम् ॥ २८ ॥  
 गोदारणं तु कुन्दालमभिः स्त्री त्णूस्तु तन्मुखे ।  
 प्रतोदः प्राजनं तोत्रं कोटिशो लोष्टभस्त्रनः ॥ २९ ॥  
 दात्रं लवित्रमसिदो योऽस्य मुष्टिः स वण्टकः ।  
 स्यात्समीकरणं मत्स्यं सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ ३० ॥  
 न स्त्री मेथिः खले पाली खलधानं पुनः खलः ।  
 ग्रीहिर्वरेणुको बीज्यो धान्यं सस्यं लवेटिका ॥ ३१ ॥

ग्रीह्यः स्तम्बकरयः शालयः श्वेततण्डुलाः ।  
 सुगन्धिको महाशाली रक्तशालिः सलोहितः ॥ ३२ ॥  
 सांवत्सरः कृष्णशालिर्बालकश्चावरोहकः ।  
 श्वेतशालोऽपौरशूरचपलाः करसूकरौ ॥ ३३ ॥  
 षष्टिको गर्भपाकी स्यात् प्रवरः शालियष्टिकः ।  
 कलापकास्तु कलमा हायनास्तु महाबुसाः ॥ ३४ ॥  
 माषस्तु मलदो नन्दी घरी बीजवरो बली ।  
 वृष्यो महावृषो गुच्छा कुलिङ्गाटी फलाङ्कुरा ॥ ३५ ॥  
 मुद्रस्तु प्रथनो लोभ्यो बलाङ्गो हरितो हरिः ।  
 पीतेऽस्मिन् वसुखण्डीरप्रवेतजयशारदाः ॥ ३६ ॥  
 सुराष्ट्रचीनचक्षुष्या हरिमन्थार्धरूपकौ ।  
 कृष्णे प्रवरवासन्तौ हरिमन्थजशिम्बिकौ ॥ ३७ ॥  
 वनमुद्रे तु वरकनिगूढककुलीमकाः ।  
 खण्डी च राजमुद्रगे तु मरिष्टकमयष्टकौ ॥ ३८ ॥  
 जर्तिलोऽरण्यजतिलो जालकश्चूलिकस्तिलः ।  
 कृष्णेऽस्मिस्तिलके ( षण्डे ) पिञ्जपेजौ तिलात्परौ ॥ ३९ ॥  
 तिलपुष्पं वज्रपुष्पं मसुरस्तु मसूरकः ।  
 मङ्गल्यं पृथुसूयश्च ग्रीहिकङ्को मसूरिका ॥ ४० ॥  
 कदम्बकस्तु शुभकः सर्षपोऽस्मिन् पुनः सिते ।  
 त्रिष्टुभभ्रातरक्षोष्णाः शठः सिद्धार्थतोटकौ ॥ ४१ ॥  
 पत्तिका त्रिष्टुभा चास्मिन् गौरैऽथो राजसर्षपे ।  
 क्षुधा क्षुधाभिजननस्त्वाष्ट्रको राजिकासुरी ॥ ४२ ॥  
 वंशवर्णे कृष्णवर्णः संवर्तो वातुलश्चणः ।  
 कलायः स्यात् कालपूरः खण्डिकः कालपूरकः ॥ ४३ ॥  
 पूरकोऽप्योलहा जाड्यो वर्तुलेऽत्र सतीनकः ।  
 खुडारे त्रिपुटः खेलौ रङ्कुटी तु हरेणुकः ॥ ४४ ॥  
 स्नेहपूरे तु फलकः कर्षायौ पाकचूडकौ ।  
 सुवर्चलामसृण्यौ च क्षुमा चोमाऽप्यतस्यपि ॥ ४५ ॥  
 खल्वे तु पवनिष्पावौ शिम्बिकाऽस्य प्रियैलिका ।  
 अलसान्द्रे राजमाषो निष्पावः श्वेतशिम्बिका ॥ ४६ ॥  
 काकाण्डः स्याच्चोदनिका कृष्णशिम्बिर्विचक्षणा ।  
 कृष्णवृन्ते खलकुलं ताम्रवृन्तः कुलस्थकः ॥ ४७ ॥



प्रचूडकः कफहरी प्रवृत्तिश्च कुलुत्थिका ।  
 आढकी तुवरी वल्ला सौराष्ट्री करवीरिका ॥ ४८ ॥  
 पतङ्गना च पृथ्वी सा वर्णा स्यात् पाटलिङ्गिका ।  
 छत्रा कुस्तुम्बरी धान्या धन्या धाना धनीयिका ॥ ४९ ॥  
 कुमारी मुसली वंश्या गुडुची कटुकैषणा ।  
 सुचरित्रा च धन्याकधन्येयकतकानि च ॥ ५० ॥  
 कुस्तुम्बुरु च धान्यं च भृङ्गा स्यान्मातुलानिका ।  
 यवे रूढो दीर्घशूकः शितशूकः महाबुसः ॥ ५१ ॥  
 आरूढश्च पवित्रश्च याज्ञिकोऽश्वप्रियोऽपि च ।  
 महायवे प्ररूढोऽल्पे वनाशोऽतियवोऽपि च ॥ ५२ ॥  
 यावके बलकुल्माषौ यवके तोयपर्णिका ।  
 गोधूमस्तु स्लेच्छभोज्यः सुमनः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ५३ ॥  
 शतपर्वा बहुवक्रः कोद्रवे कोरदूषकः ।  
 बालनाटकवाट्यालौ वरकः कूरदूषकः ॥ ५४ ॥  
 विरूक्षकोद्रवोन्नालमदनाः वनकोद्रवे ।  
 चिककाणकजुनी कजुः प्रियङ्गुः पीततण्डुला ॥ ५५ ॥  
 शीतकजुस्तु मुसुटी पीतकजुस्तु मागवी ।  
 श्यामकजुस्तु मधुका यवनालस्तु जोनलः ॥ ५६ ॥  
 जूर्णाह्वयो देवधान्यं जोन्नाला बीजपुष्पिका ।  
 नीवारस्तु वृषावाहः प्रतीचो मुनिसोवतः ॥ ५७ ॥  
 अव्यादा लोलिका सेव्या जलजा तृणधान्यकम् ।  
 श्यामाको नीलपुष्पः स्यात् स्मयाकश्च मुनिप्रियः ॥ ५८ ॥  
 स्त्री काककजुश्चीनः स्यात् तृणकोलोऽप्युदारकः ।  
 गर्मुत् पुनर्गमुटिका धुलुञ्छस्तु गवीधुका ॥ ५९ ॥  
 ज्योतिष्मती सुलवणा गोजिह्वा भक्षिणी शिवा ।  
 गुन्द्रा कुत्रफला गुच्छा चेत्रिया बालनायिका ॥ ६० ॥  
 रूक्षणीया जन्तुफला गवेथुश्च गवेथुका ।  
 गाङ्गेरुकी नागबला भूषा हस्वगवेथुका ॥ ६१ ॥  
 गोरक्षतण्डुलश्चाथ शाको मर्कटकः समौ ।  
 मापादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ॥ ६२ ॥  
 कोद्रवाद्याः कुधान्यानि व्रीहयः शालिकादयः ।  
 स्तम्बे गुचक्षुपौ काण्डे नाली त्रय्यफला तु सा ॥ ६३ ॥

पलालोऽस्त्री कर्णिका स्त्री पूलोऽस्त्री तृणपञ्चिका ।  
 कडङ्गरो बुसोऽथ स्यात् कर्णशं धान्यमञ्जरी ॥ ६४ ॥  
 पीनकोशी शमी शिम्बा तीक्ष्णाग्रे शूकमस्त्रियाम् ।  
 धान्यराशिस्तु वलजा वरण्डस्तृणसञ्चयः ॥ ६५ ॥  
 गृहार्थोऽसौ कपोलः स्त्री विक्षिप्तः खस्तरो ह्यसौ ।  
 समौ प्रयामनीवाकौ क्रपुकात्प्राक् परे त्रिषु ॥ ६६ ॥  
 ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ।  
 खलपूः स्याद्बहुकरश्छादिपेयं छदिस्तृणम् ॥ ६७ ॥  
 क्रायिकः क्रयिकः क्रेता विपूर्वाः क्रेयवस्तुदे ।  
 क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रकम् ॥ ६८ ॥  
 विक्रेयं पणितव्यं च पण्येऽथ क्रपुकः क्रयः ।  
 भेटकः प्रक्रयः क्रेणी विक्रयो विपणः पणः ॥ ६९ ॥  
 वस्नोऽर्घोऽवक्रयो मूल्यं बन्धः प्रणय आधिकः ।  
 नीवी परिपणं मूलं धनं लाभोऽधिकं फलम् ॥ ७० ॥  
 परिवर्तो विनिमयो वैमेयो निमयोऽपि च ।  
 सत्यङ्कारः पुनः सत्याकृतिः सत्यापनं च तत् ॥ ७१ ॥  
 पण्याजीवः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।  
 वैदेहकः प्रापणिकः क्रयविक्रयिकोऽपि च ॥ ७२ ॥  
 विटपोऽर्थः स्वापतेयं रिक्थं पृक्थं धनं वसु ।  
 वित्तं च द्रविणं द्युम्नं हेमरूप्यात्मकं तु तत् ॥ ७३ ॥  
 अकुप्यं कुप्यमन्यत् स्याद्द्रव्यं तद्द्रव्यमाहतम् ।  
 कोशमस्त्री हिरण्यं च हेमरूप्यं कृताकृतम् ॥ ७४ ॥  
 ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ।  
 स्त्री शुण्ठिरूषणं विश्वभेषजं सिंहलं कटम् ॥ ७५ ॥  
 शृङ्गिबेरं महाकन्दं हंसच्छत्रं कलापकम् ।  
 पिप्पली मागधी शौण्डी वृषलं चोषणा बला ॥ ७६ ॥  
 श्यामोपकुल्या वैदेही ग्रन्थिनी तीक्ष्णतण्डुला ।  
 जालिनी तण्डुला तन्वी काल्यम्बष्ठा मनोहरी ॥ ७७ ॥  
 कपिवल्त्यां कोलवल्ली गण्डीरी हस्तिपिप्पली ।  
 काण्डी वसीरकाण्डीरौ गृहकाण्डः शिरः पुमान् ॥ ७८ ॥  
 मरीचं तु विरावृत्तमुषणं धर्मपत्तनम् ।  
 ( मरिचं ) पलितं श्यामं वेङ्गनं पेन्नवं कटु ॥ ७९ ॥



लोहाख्यं श्यामवल्ली च द्यूषणं (तूषणादिकम्) ।  
 कावेरं त्रिकटु व्योषमप्यं कोलं कटूत्कटम् ॥ ८० ॥  
 ग्रन्थिकान्तलचव्यैस्तु चतुष्पञ्चषड्वषणम् ।  
 चव्यं तु चविकं कोला भार्गी पद्मा च विष्टिका ॥ ८१ ॥  
 त्रिफला तु मदोदका भूतसारी फलत्रिका ।  
 बलकाली बलारोहा चित्रकस्त्वग्निसंज्ञकः ॥ ८२ ॥  
 पञ्चकोलं कणाशुण्ठीचव्यग्रन्थिकचित्रकाः ।  
 अजाजी तु जया दीप्यो जीरको जीरणः सितः ॥ ८३ ॥  
 मागधश्चाथ सूक्ष्मोऽसौ कणजीरण ओसरः ।  
 अग्निमन्थो हृद्यगन्धः सुगन्धिः कालिका कणा ॥ ८४ ॥  
 कृष्णे तु जीरके पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चका ।  
 सुषवी कारवी फारी पृथ्विका पृथुशालिका ॥ ८५ ॥  
 कटुः कटुम्भराऽशोका रोहिणी कटुरोहिणी ।  
 कृष्णभेदी मत्स्यपित्ता चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ ८६ ॥  
 निष्कुट्यां चन्द्रबालैला पृथ्वीका त्रिदिवाऽत्र तु ।  
 सूक्ष्मायां त्रिपुटा कुन्तिखुटिस्तुत्थोपकुञ्चिका ॥ ८७ ॥  
 कोराङ्गी नन्दिनी शाला कलुषी संयतोऽपि च ।  
 काश्मीरं पौष्करे मूले पद्मपत्रं च पुष्करम् ॥ ८८ ॥  
 अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।  
 जन्या जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥ ८९ ॥  
 शृङ्गी विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ।  
 शिप्रुजं श्वेतमरिचं त्वक्क्षीरा वंशरोचना ॥ ९० ॥  
 पद्मोत्तरं वह्निशिखं महारजतमित्यपि ।  
 कुसुम्भे पिप्पलीमूले ग्रन्थिकं चटिका शिरः ॥ ९१ ॥  
 वर्हिपुष्पे ग्रन्थिपर्णं स्थौणेयं कुक्कुरं शुक्रम् ।  
 शतपर्वं च मित्रश्च कमलश्च शिलश्च तत् ॥ ९२ ॥  
 समृद्धिः प्राणदा सिद्धिर्लक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ।  
 ऋश्यप्रोक्ता श्रोत्रकान्ता श्रावणी हस्तिपादिका ॥ ९३ ॥  
 ऋषिः सृष्टा वृषा वृष्या हृद्या योष्या युगाह्वया ।  
 अथ वृद्धिर्बोधनीया महाश्रावणिका बुधा ॥ ९४ ॥  
 हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ।  
 प्लावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ ९५ ॥

वालुकं चाथ शैलेयं वृद्धं गिरिशिलाह्वयम् ।  
 कालानुसार्य पाषाणपुष्पं शितशिवं शिवम् ॥ ९६ ॥  
 क्रिमिघ्नस्तुण्डुलो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ।  
 विडङ्गोऽस्त्री सुगन्धा तु सुरसा गन्धनाकुला ॥ ९७ ॥  
 नाकुली सुवहा रास्ना छत्राकी सर्वलोचना ।  
 गन्धिनी स्यात्तालपर्णी दैत्या गन्धकुटी मुरम् ॥ ९८ ॥  
 कुष्ठं वाप्यं पारिभाष्य रोगाख्यं पाकलोत्पले ।  
 व्यालानुयुधं व्याघ्रनखं करञ्जं चक्रकारकम् ॥ ९९ ॥  
 सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ।  
 जटिला लोमशी मांसी तपस्विन्यामिषी जटा ॥ १०० ॥  
 धमन्यञ्जनकेश्यौ तु हनुर्हृद्विलासिनी ।  
 अपि शुक्तिः खुरः शङ्खो नखं कालदलं समाः ॥ १०१ ॥  
 अजमोदा तूष्पगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।  
 कारवी च खराश्वोष्ट्रा दीप्यका लोचमस्तकः ॥ १०२ ॥  
 मधुं क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ।  
 लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं च बरालकम् ॥ १०३ ॥  
 त्वक्पत्रं तु त्वचं चोचं बरान्गं भृङ्गमुत्कटम् ।  
 मृगनाभिर्मृगमदो नगः कस्तूरिकाऽपि च ॥ १०४ ॥  
 घनसारस्तु कर्पूरः सिताङ्गो हिमवालुका ।  
 चन्द्रनामानि चाथ स्यात् तक्कोलं कोलकं परम् ॥ १०५ ॥  
 अपि कोशफलं फालं कार्पासकृतमालकौ ।  
 जातीकोशं कोशफलमथागर नृपार्हकम् ॥ १०६ ॥  
 लोहाख्यं कृमिजं भृङ्गं जोङ्गकं जाङ्गलं मतम् ।  
 वंशकं वंशिकं शीर्षं प्रकरं मृदुलं लघु ॥ १०७ ॥  
 वनमायः पुरमदः काकतुण्डो वनद्रुमः ।  
 कालागरु तु मङ्गल्या मङ्गिकासमगन्धि चेत् ॥ १०८ ॥  
 श्रीवेष्टः पायसं श्रयाख्यं श्रीवासो रक्तशीर्षकः ।  
 वेष्टः श्रीवत्सपिण्याको दधिश्च सरलद्रवे ॥ १०९ ॥  
 वृकधूपश्च तूणस्तु पिण्डकश्चपलश्चलः ।  
 कप्याख्यः कपिलः सिङ्गः कृत्रिमः क्षेत्रिको वरः ॥ ११० ॥  
 तुरुष्कः पावनश्चाथ सर्जनो लालनो रसः ।  
 बहुरूपो यक्षधूपोऽप्यरालोऽप्यथ कृत्रिमे ॥ १११ ॥



वृकधूपोऽङ्गुलालस्तु महिषाक्षः पलङ्कषः ।  
 चन्दनोऽस्त्री मलयजो भद्रश्री रोहणद्रुमः ॥ ११२ ॥  
 श्रीखण्डो गन्धसारश्च ताम्रसारं तु चन्दनम् ।  
 पीतचन्दनमर्कष्टं गोशीर्षं हरिचन्दनम् ॥ ११३ ॥  
 किरातजं बला हार्या पिञ्जनं तैलपर्णिकम् ।  
 तथा कुचन्दनं पीतदारु रक्ते तु चन्दने ॥ ११४ ॥  
 पत्राङ्गं रञ्जनं सेव्यं धूर्तमैरावतं लसम् ।  
 कुचन्दनं जघन्यञ्च रक्तं च तिलपर्ण्यपि ॥ ११५ ॥  
 कुङ्कुमं घुसृणं वर्ण्यं रक्तं लोहितचन्दनम् ।  
 करटं चितकावेरं गौरवं वासनीयकम् ॥ ११६ ॥  
 काश्मीरजं पुष्परजः सङ्कोचं पीतनं वरम् ।  
 घोरं चाग्निशिखं चापि जपापुष्पं प्रियङ्गु च ॥ ११७ ॥  
 नागोद्भवं तु सिन्दूरं कुङ्कुमेन समप्रभम् ।  
 गवलं माहिषं शृङ्गं शशोणं शशलोमनि ॥ ११८ ॥  
 अब्धिजे लवणे खण्डं त्रिकूटं त्रिकुटं कुटम् ।  
 भोजनीयं कटकटमणु प्रवरवारिजे ॥ ११९ ॥  
 अक्षीवं बिसिरं सेव्यं सैन्धवं तु नदीभवम् ।  
 माणिमन्थं शितशिवं नादेयं वेधकं पटु ॥ १२० ॥  
 विशुन्थलवणं सङ्गं सिन्धि सिन्दूद्भवं मुखम् ।  
 सम्भरी पुनरेतद्वद्रौमकं तु रुमाभवम् ॥ १२१ ॥  
 वस्नं चाथो भूलवणं कनिष्ठं पाक्यमुद्भिदम् ।  
 क्षुद्रकं पांसुलवणं कुप्यं पानीयसम्भवम् ॥ १२२ ॥  
 ऊषमूषरजं क्षेय्यं पांशुजं यवनं पटु ।  
 शूलिका तु महाजाली वेष्टावारं महाविडम् ॥ १२३ ॥  
 विडं तु पाक्यं बहुलं कृत्रिमद्राविणासुराः ।  
 घटिकालवणं तृणं विडवद्धनकालकम् ॥ १२४ ॥  
 सौवर्चलं तु रुचकं दुर्गन्धं शूलनाशकम् ।  
 अक्षं तादर्यं रुचिष्यं च तिलकं त्वत्र कृष्णके ॥ १२५ ॥  
 सौवर्चलं द्रवस्तु स्याज्जारणं लोहितोऽस्त्रियाम् ।  
 दशेत्थं लवणानि स्युरथोपलवणास्त्रयः ॥ १२६ ॥  
 तत्र क्षारो यवक्षारो निपीती कासनुद्धरः ।  
 श्वेतक्षारस्तीक्ष्णरसो विपाकी च स तु द्विधा ॥ १२७ ॥

यवाग्रजो यावशूकस्तत्रान्त्यो बहुसारकः ।  
 रसाढ्यो रसको योगी पत्रकः पत्रसारकः ॥ १२८ ॥  
 वीज्योऽसुवर्चिका क्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।  
 स्नुघ्निका स्वर्जिका स्वर्जियोगवाही सुवर्चिका ॥ १२९ ॥  
 टङ्कणस्तु क्रामणको लोहसंश्लेषकः कटुः ।  
 रसयोनिः पावनको मालतीतीरसम्भवः ॥ १३० ॥  
 परशुः शस्त्रकण्टकः शस्त्रक्षारो महाबलः ।  
 सहस्रवेधि बाह्लीकं जतुकं हिङ्गु रामठम् ॥ १३१ ॥  
 पत्रेऽस्य करवी बाष्पी पृथिविका कारवी पृथुः ।  
 तिन्त्रणीके तु वृक्षाम्लं चुक्रं शुक्ती रुचिः स्त्रियाम् ॥ १३२ ॥  
 सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेधयपि ।  
 गूथः क्षारस्य विकृतौ मत्स्यण्डी खण्डशर्करा ॥ १३३ ॥  
 फाणितं क्षुद्रकं खण्डं न स्त्रयथो शर्करा सिता ।  
 मधूलं तु मधुनं स्त्री मधुकं तत्पुरातनम् ॥ १३४ ॥  
 भ्रामरं तु भ्रमरकं क्षौद्रं सारघमाक्षिके ।  
 अन्वर्थं पौत्तिकं दालं दद्रुजं रूक्षवालुकम् ॥ १३५ ॥  
 औदालकं तु शालाकं विषजिन्मधुराम्लकम् ।  
 छात्रं सर्वौघमत्यर्थस्वाद्विमा मधुजातयः ॥ १३६ ॥  
 मदनस्तु मधुच्छिष्टं स्नेहोऽस्त्री पिच्छिले रसे ।  
 स्नेहे तिलानां तैलं स्यादन्येषां नामपूर्वकम् ॥ १३७ ॥  
 घृतमाज्यं हविः सर्पिः कौम्भं त्वाज्यं दशाब्दिकम् ।  
 द्वैयङ्गवीनं पीथं च नवनीतं तु तक्रजम् ॥ १३८ ॥  
 दधि विप्रप्रियं हृद्यं क्षीरजं श्रीघनं गुरु ।  
 स्थूलं श्वेतं च मङ्गल्यं कट्वारः शण्डगोरसौ ॥ १३९ ॥  
 सञ्जावने तूप्त्रमात्रे प्राङ्मन्दात् सर्जकं दधि ।  
 मन्दन्तु मण्डजातं तद् बालजातं तु बालकम् ॥ १४० ॥  
 अम्लजुण्डी तु गर्भात् प्राग्गर्भस्तु मुखबन्धनम् ।  
 वलीमुखं तु गाढास्यं तत्स्थं तु सशरं दधि ॥ १४१ ॥  
 छिन्नं दधि वुसं रूक्षं खलं सेव्यं च निश्शरे ।  
 बहुसुदनमप्यस्मिन् द्रव्यं स्यादघनं दधि ॥ १४२ ॥  
 पत्रलं चाथ पक्वं स्यात् सञ्जातं पयसः शृतात् ।  
 धुक्षिमं तूद्घृतस्नेहान्मथितात् प्रमाथितम् ॥ १४३ ॥



तक्रपिण्डं चाथ मस्तु प्राग्राढं दधिमण्डके ।  
 आतञ्चनं सञ्जावनं प्रतीवापञ्च मूतकम् ॥ १४४ ॥  
 पयो दुग्धं च पीथं च स्तन्यं पुंसवनं सरम् ।  
 गव्यं ज्येष्ठं मधु क्षीरं योग्यं सोमरसोद्भवम् ॥ १४५ ॥  
 ऊधस्यं जीवनीयं च धारोष्णं त्वमृतं पयः ।  
 आसप्ताहात्तु पीयूषं ततो मोरटमोरके ॥ १४६ ॥  
 अविसोढाविमरीसे अविदूंसमवेः पयः ।  
 सन्तानिनी क्षीरशरः शरोम्रद्रवसंहतिः ॥ १४७ ॥  
 तिलाटः कूर्चिका चेति क्षीरस्य विकृती उभे ।  
 घोलं तृणं कालशेयं दण्डाहतरसायने ॥ १४८ ॥  
 मोरटं गोरसश्चाथ घोलः पादाम्बुसंयुते ।  
 तक्रं कट्वरमशोघ्नं श्वेतच्छाणं च सारणम् ॥ १४९ ॥  
 निरम्बु घोलं मथितमुदश्चित्तु जलार्धकम् ॥ १४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

## शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

शूद्रोऽन्त्यवर्णो वृषलो द्विजपोतो जघन्यजः ।  
 पञ्जः पद्योऽप्येकजातिः शूद्राः सङ्करजा अपि ॥ १ ॥  
 दासे भृत्यः परिस्कन्दः परजातः परैधितः ।  
 नियोज्यचेटकप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ २ ॥  
 लाडीककिङ्करप्रेङ्खपाळकपरिकर्मिणः ।  
 सञ्चारिते धीकरश्च गोण्याः स्युर्दाससूतवः ॥ ३ ॥  
 बन्धके स्थित आयत्तो भक्त्यायैव स्थितः कृतः ।  
 स्वस्कन्दो भिन्नकुम्भश्च भुजिष्यो दासमोचितः ॥ ४ ॥  
 भृतके भृतिभुक्तर्मकरो वैतनिकश्चिषु ।  
 भरणं भरणं भर्म वेतनं निष्कयो भृतिः ॥ ५ ॥  
 कर्मण्या तुलिका भृत्या भारवाहस्तु भारिकः ।  
 वार्त्ताहरो वैवधिको भारयष्टिर्विहङ्गिका ॥ ६ ॥  
 शिष्यं तल्लम्बि काचश्च पाथेयं शम्बलोऽस्त्रियाम् ।  
 कारवः शिल्पिनः सर्वे कुलिकास्ते कुलोत्तमाः ॥ ७ ॥  
 कला शिल्पं च कर्माथ तन्तुवायः कुविन्दकः ।  
 वाणिर्व्यतिश्च वानं स्याद् वेमा ना वानदण्डकः ॥ ८ ॥  
 तर्कुः कर्तनभाण्डे ना त्रसरः सूत्रवेष्टनः ।  
 धराः कार्पासतूलाः स्युस्तूलमस्त्री पिचुः पुमान् ॥ ९ ॥  
 पिञ्जनं स्याद्विहननं धराणां प्रविसारणम् ।  
 कल्पनं कर्तनं तुल्ये त्रिवृतं तु त्रिवित् त्रिषु ॥ १० ॥  
 आवर्तनं तु वलनं सूत्राणि नरि तन्तवः ।  
 सौचिकस्तुन्नवायः स्यात् सूचिः सूचा च सीवनी ॥ ११ ॥  
 सूचिसूत्रं पिप्पलकमोतं प्रोतमुभे त्रिषु ।  
 सीवनं सेवनं स्यूती रङ्गाजीवस्तु चित्रकृत् ॥ १२ ॥  
 लेखनी तूलिका कूर्ची पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ।  
 या तु लेप्यमयी नारी सा स्यादञ्जलिकारिका ॥ १३ ॥  
 पाञ्चालिका तु वस्त्रादिपुत्रिका सालभञ्जिका ।  
 पल्लगण्डो लेपकारः कल्पाणिः समलेपनी ॥ १४ ॥  
 संवाहकोऽङ्गमर्दी स्याच्छस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।  
 मणिकारो वैघटिकः शौल्बिकस्ताम्रकुट्टकः ॥ १५ ॥



नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो 'मौष्टिकः समाः ।  
 कर्मारः स्यादयस्कारो व्योकारो लोहकारकः ॥ १६ ॥  
 शाङ्गिकः स्यात् काम्बविको भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।  
 सन्दंशः स्यात् कङ्कमुखः काणा मूका लुषा स्मृता ॥ १७ ॥  
 विध्यते येन मण्यादिराविधोऽसौ निघोऽपि च ।  
 आस्फोटनी वेधनिका भ्रमः कुन्दश्च यन्त्रकम् ॥ १८ ॥  
 नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ।  
 रोषाणस्तु घृषिघृष्वो हेमादिनिकषाश्मनि ॥ १९ ॥  
 यत्र निक्षिप्य कूटेन हन्यते सा निघानिका ।  
 प्रतिच्छाया प्रतिकृतिः प्रतिमा प्रतियातना ॥ २० ॥  
 प्रतिच्छन्दः प्रतिनिधिर्बेरं च प्रतिरूपकम् ।  
 प्रतिबिम्बोपमाने च सादृश्ये सन्निभं निभम् ॥ २१ ॥  
 हरिणी हेमप्रतिमा सूर्मिः स्थूणान्यलोहजा ।  
 कूटोऽश्मकुट्टकोऽथ स्यादृक्कः पाषाणदारकः ॥ २२ ॥  
 कायस्थः स्याल्लिपिकरः करणोऽक्षरजीवनः ।  
 लेखकोऽक्षरचञ्चुश्च लिबिलेखाक्षरस्य या ॥ २३ ॥  
 लिपिस्त्वालेख्यलेखा स्याद्रेखा तु स्यादकृत्रिमा ।  
 वर्णान्तरस्य सर्पादौ लाजिलेखा तु कृत्रिमा ॥ २४ ॥  
 मेलाभन्दो मषिघटी मेलाम्बु मलिनाम्बु च ।  
 मेला (मणिर्न षण् तस्या लेखन्या) कणिकोद्धृता ॥ २५ ॥  
 चण्डिलः क्षुरमर्दी स्यान्नापितोऽन्तावसायपि ।  
 क्षुरोऽस्य वपनं शस्त्रं कत्रिका कर्तनी कृवी ॥ २६ ॥  
 कुम्भकारः कुलालोऽस्य पचनं पाकमण्डलम् ।  
 धूसरश्चाक्रिकस्तैली पिण्याको ना खलिः स्त्रियाम् ॥ २७ ॥  
 आभीरस्तु महाशूद्रो गोपो गोसङ्घयगोदुहौ ।  
 गोपालो वल्लवश्चाथ वत्सीयस्त्रिषु तद्धिते ॥ २८ ॥  
 जाबालः स्यादजाजीवः कोणोऽक्ली लगुडो नरि ।  
 सन्दानं दामनी दामा न ना दाम पशोस्तु या ॥ २९ ॥  
 रज्जुः सा बन्धनी तन्त्री त्वल्पा पाशस्तु कर्णिका ।  
 गुणो वराटो रज्जुः स्त्री न ना शुल्बा वटी त्रयी ॥ ३० ॥  
 ग्रन्थिबन्धो ब्रजो गोष्ठो गौष्टीनं तु पुरा ब्रजः ।  
 मन्थस्तु मन्था मन्थानो वैशाखः खजकोऽपि च ॥ ३१ ॥

कुठारो मन्थविष्कम्भो मन्थपात्रं तु गर्गरी ।  
 घोष आभीरपल्ली स्यात् पक्वणोऽस्त्रयन्त्यजालयः ॥ ३२ ॥  
 मालाकारो माल्यजीवी मालिकः प्रातिहारकः ।  
 ऊर्णा स्नावः कदल्यादेः करण्डी तु पुटी त्रयी ॥ ३३ ॥  
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ।  
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ३४ ॥  
 स उद्हनो यत्र काष्ठे काष्ठं निक्षिप्य तद्ध्यते ।  
 व्रश्चनः पत्रपरशुः परशुस्तु परश्वधः ॥ ३५ ॥  
 स्वधितिर्ना कुठारोऽक्ली वासी स्याद्धारुतक्षणी ।  
 ऋकचोऽस्त्री करपत्रं स्वधितिः कर्तनः समौ ॥ ३६ ॥  
 जीवान्तको मांसिकश्च कौटिको मांसविक्रयी ।  
 सूनातटिर्वधस्थानं कृपाणीली च कर्तरी ॥ ३७ ॥  
 मृगयुर्लुब्धको व्याधो द्वौ वागुरिकजालिकौ ।  
 आच्छोटनं खेटनश्च मृगव्यं मृगयाऽपि च ॥ ३८ ॥  
 आखेटश्च वराधिश्च वागुरा मृगबन्धनी ।  
 श्वा विश्वकद्रुर्मृगयादक्षोऽलर्कस्तु योगितः ॥ ३९ ॥  
 दक्षिणेर्मा तु स मृगो यो लुब्धैर्दक्षिणे हतः ।  
 वैतंसिकः शाकुनिक उन्माथः कूटयन्त्रकम् ॥ ४० ॥  
 शल्यमस्त्री शलाका स्याद् वितंसः पक्षिबन्धनम् ।  
 पक्षिणा येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये स दीपकः ॥ ४१ ॥  
 कैवर्तो धीवरो दाशो नौजीवी जालिमार्गरौ ।  
 मत्स्यधानी कुवेणी स्याद् बलिशं मत्स्यवेधनम् ॥ ४२ ॥  
 जालमानाय उद्दालस्तूत्रतो मुकुलाकृतिः ।  
 पादकृष्णमकारः स्यादारा चर्मप्रभेदनी ॥ ४३ ॥  
 वद्धी नद्धी वरत्रा च शौण्डिकस्त्वासुतीवलः ।  
 कल्यापालो ध्वजी चाथ मद्यं स्यात् कपिशायनम् ॥ ४४ ॥  
 शीघ्रु कश्यमिरा कल्या शुण्डा देवी परिस्तुता ।  
 परिस्तुन्माधवी हाला प्रसन्ना मदिरा सुरा ॥ ४५ ॥  
 मदना मोहकलिका मदिष्ठा काचमालिका ।  
 कादम्बरी वारुणी च मधूलैस्तु मधूलिका ॥ ४६ ॥  
 पकैस्त्वक्षुरसैरक्षा शीघ्रुः पङ्कुरसः शिवः ।  
 शीतपङ्को रुक्षणीयोऽप्यपक्कै रसिकासवौ ॥ ४७ ॥



मधुमद्ये तु माध्वीकं कामिकान्तं मदोत्कटम् ।  
 विक्रान्तं कपिशं हृद्यं मुखवासः सुखोदयः ॥ ४८ ॥  
 मध्वासवोऽसितः सेव्यः शार्करो माधवोऽस्त्रियाम् ।  
 मैरेयमासवो धात्रीधातकीगुडवारिभिः ॥ ४९ ॥  
 काकोली पैष्टिकी श्वेताऽप्यापानं पानगोष्ठिका ।  
 नग्नहूर्ना मद्यबीजं किण्वमप्यथ मेदकः ॥ ५० ॥  
 जगलोऽथ सनिस्सारो मर्कसो मासरोऽपि च ।  
 आसूतिर्मद्यसन्धानमासवोऽभिषवोऽपि च ॥ ५१ ॥  
 कारोत्तरः सुरामण्ड आसवोऽप्यथ भक्षणम् ।  
 उपदंशोऽपदंशश्च मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ५२ ॥  
 शुण्डापानं मदस्थानं सपीतिः सहपानकम् ।  
 सरकं चषकं चास्त्री गल्वर्तोऽप्यनुकर्षणम् ॥ ५३ ॥  
 पानगोष्ठीषु यन्नृत्तं तत्र स्यादुच्चतालकम् ।  
 प्लवचाण्डालचण्डालमातङ्गास्तु जनङ्गमे ॥ ५४ ॥  
 विष्टिर्ना कारितं कर्म हठाद्येऽपि च तत्कृतः ।  
 अथैकागारिकश्चोरः परिमोषी मलिस्तुचः ॥ ५५ ॥  
 प्रतिरोधी परास्कन्दी तस्करः प्रतिरोधकः ।  
 स्तेनो रात्रिचरो दस्युर्मोषकः पारिपन्थिकः ॥ ५६ ॥  
 पश्यतो यो हरत्यर्थं स चोरः पश्यतोहरः ।  
 पटच्चरः पटच्चरो बन्दी स्त्री प्रग्रहो ग्रहः ॥ ५७ ॥  
 लोप्त्रं हृतोऽर्थश्चौर्यं तु स्तेयं स्तेन्यं च चौरिका ।  
 धूर्तोऽक्षधूर्तः कितवो द्यूतकृत् कृष्णकोहलः ॥ ५८ ॥  
 चौरिकश्चाक्षजीवी च सभिका द्यूतकारकाः ।  
 द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती तद्भेदाः पञ्चकादयः ॥ ५९ ॥  
 समाधिश्च समङ्गश्च परिवी रञ्जनं च तत् ।  
 पणो ग्लहो देवनस्तु पाशकोऽक्षोऽथ शारयः ॥ ६० ॥  
 शाराः स्युः परिणायस्तु तेषां सञ्चारणेऽभितः ।  
 अक्षपाता अयास्ते तु चतुस्त्रिव्येकयोगिनः ॥ ६१ ॥  
 कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति यथाक्रमम् ।  
 जायाजीवस्तु शैलूषः शैलाली भरतो नटः ॥ ६२ ॥  
 रङ्गाजीवो नृतुर्नग्नो नण्डो रङ्गावतार्यपि ।  
 सर्वकेशी कृशाधी च नर्तकस्त्वभ्रफुल्लकः ॥ ६३ ॥

यो यष्टिरञ्जुखड्गेषु प्रनृत्यति स पूरकः ।  
 केलकः प्रवकश्चासौ चारणास्तु कुशीलवाः ॥ ६४ ॥  
 नर्तको भूमिकां प्राप्नो देवानामर्धमानुषः ।  
 रङ्गावतारी रुद्रस्य (कृष्णस्य) त्वर्धमानवः ॥ ६५ ॥  
 रामस्य स्याद्देवरथः शक्रस्य तु शचीबलः ।  
 रावणस्य तु रङ्गोपमर्दी कंसस्य भूमिकाम् ॥ ६६ ॥  
 प्राप्तः फालगलालेपो यस्तु स्त्रीभूमिकां गतः ।  
 स भ्रूकुंसो भ्रूकुंसश्च भ्रूकुंसश्च भ्रूकुंसवत् ॥ ६७ ॥  
 तत्तद्वेषो भूमिका स्यात् तद्वारी भूमिकागतः ।  
 पात्राणि नाट्येऽधिकृताः सूत्रधारस्तु सूचकः ॥ ६८ ॥  
 नान्दी तु पाठको नान्याः पार्श्वस्थाः पारिपाथिकाः ।  
 विदूषकः केलिकिलः प्रहासी प्रतिभोऽपि च ॥ ६९ ॥  
 वेश्याचार्यः पीठमर्दः शिद्रो वातसुतो विटः ।  
 मार्दङ्गिको मौरजिको वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ ७० ॥  
 वेणुधमाः स्युर्वैणिकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ।  
 नृत्तं गीतं वाद्यमिति नाट्यं तौर्यत्रिकं त्रिकम् ॥ ७१ ॥  
 सङ्गीतकं प्रेक्षणार्थं नाट्योक्ते नाट्यधर्मिका ।  
 उत्तमोत्तमिकं श्लोकैः सैन्धवं प्राकृतोक्तिभिः ॥ ७२ ॥  
 ताण्डवोऽस्त्री नृत्तलास्यनटनाक्षजनर्तनम् ।  
 नटितिर्नाटकी रासो नृत्तं बाह्यं स्वकल्पितम् ॥ ७३ ॥  
 रसभावाङ्गहाराद्यैः शास्त्रोक्तै रूपकाश्रयम् ।  
 नृत्तमाभ्यन्तरं नाम स्थायिभावात्मको रसः ॥ ७४ ॥  
 शृङ्गारहास्यबीभत्सवीराद्भुतभयानकाः ।  
 रौद्रश्च करुणश्चाष्टौ रसाः शान्तोऽपि च कचित् ॥ ७५ ॥  
 स्थायिभावाः क्रमादेशां रतिर्हासो जुगुप्सनम् ।  
 उत्साहो विस्मयो भीतिः क्रोधः शोकः शमोऽपि च ॥ ७६ ॥  
 बीभत्समाने बीभत्सो विस्मेतर्त्यद्भुतो रसः ।  
 भयानको रसो भीते हास्यो हसितरि स्थितः ॥ ७७ ॥  
 बीभत्सो विक्रतिश्चित्रं त्वाश्रयं फुल्लमद्भुतम् ।  
 भयानकं प्रतिभयं भीमं भीष्मं भयङ्करम् ॥ ७८ ॥  
 भैरवं भीषणं घोरमाभीलं दारुणं च तत् ।  
 करुणः सकृपो रौद्रस्तूषोऽमी विंशतिस्त्रिषु ॥ ७९ ॥



भावो मनोविकारः स्यादनुभावोऽस्य सूचकः ।  
 विभावो हेतवस्तस्य भावस्य हृदि वत्स्यतः ॥ ८० ॥  
 स्थायिसञ्चारिभेदेन द्विधा भावो व्यवस्थितः ।  
 स्वेदो घर्मो निदाघः स्यात् कालिका तु विवर्णता ॥ ८१ ॥  
 रोमोद्गमो रोमहर्षो रोमाञ्चः कण्टकोऽपि च ।  
 रोमाङ्क उल्लसनकमप्युल्बणकमित्यपि ॥ ८२ ॥  
 स्मितं त्वदृष्टदशने हासो वक्रोष्ठिका न ना ।  
 रुचिः स्त्री हसितं दृष्टदन्ते विहसितं श्रुते ॥ ८३ ॥  
 सोत्प्रासे त्वाच्छ्रुरितकं तथोपहसितं भवेत् ।  
 निकुञ्चितशिरोगात्रमट्टहासो महाहसे ॥ ८४ ॥  
 अतिहासस्त्वनुस्यूतोऽपहासोऽकारणात् कृते ।  
 स्वरभेदस्तु कल्कत्वं स्वरकम्पस्तु वेपथुः ॥ ८५ ॥  
 आकारगोपनायामपटीकाप्यवकटापि स्त्री ।  
 न पुमानवहित्था स्यादक्ली गृहजालिकाप्यस्याम् ॥ ८६ ॥  
 क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं लोतोऽश्रु नयनोदकम् ।  
 अश्रु रोदनमास्रं च क्रीडा खेला च कुर्दनम् ॥ ८७ ॥  
 न स्त्री केलिः परीहासः क्रीडा लीला च नर्म च ।  
 जृम्भणं तु त्रयी जृम्भा मुखभेदस्तु जृम्भिका ॥ ८८ ॥  
 एजनं वेपथुः कम्पः प्रलयोऽस्पन्दनस्थितिः ।  
 आटोपावेगसंरम्भसम्भ्रमास्तु त्वरा त्वरी ॥ ८९ ॥  
 असौम्येऽक्षयदृष्टिः स्यादवलोकस्त्वधः कृतः ।  
 उन्मीलनं स्यादुन्मेषो निमिषस्तु निमीलनम् ॥ ९० ॥  
 स्फुरितं स्पन्दितमथ भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।  
 भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः सारी काली तीरतरङ्गिका ॥ ९१ ॥  
 चतुरं त्वल्पा भ्रुकुटी रेचितं त्वेकया भ्रुवा ।  
 चेष्टाः शृङ्गारजाः स्त्रीणां हावा लीलादयो दश ॥ ९२ ॥  
 वल्लभानुकुतिलीला विलासः श्लिष्टविक्रिया ।  
 विच्छित्तिर्वस्त्रमाल्यादेर्न्यासोऽनास्थोपशोभितः ॥ ९३ ॥  
 सकृत्सुश्लिष्टरुदितस्मितादि किलिकिञ्चितम् ।  
 बिम्बोकोऽहङ्कृतेनैव प्राप्तेऽभीष्टेऽप्यनादरः ॥ ९४ ॥  
 विकृतं तूचितस्यापि लज्जादिभिरभाषणम् ।  
 मोट्टायितं वल्लभस्य चिन्ता कुट्टमितं पुनः ॥ ९५ ॥

स्तनोष्ठादेर्दृढस्पर्शाद् (दुःखवत्) सुखसम्भ्रमः ।  
 विभ्रमो दृग्विपर्यासो ललितं कोमलक्रमः ॥ ९६ ॥  
 सत्त्वाद्भावस्ततो हावो लीला हावात् समुत्थिता ।  
 अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो नानाकरणसंहतिः ॥ ९७ ॥  
 करणान्यङ्गचेष्टाः स्युर्हरणं करणं समे ।  
 व्यञ्जकोऽभिनयो यस्तु सूच्योऽर्थोऽभिनयः स च ॥ ९८ ॥  
 भूषणाद्यैर्गिराऽङ्गेन सत्त्वेनाभिनयाः कृताः ।  
 त्रिषु क्रमात् स्युराहार्यवाचिकाङ्गिकसात्त्विकाः ॥ ९९ ॥  
 नाटकं नाटिका भाणो वीथिः प्रहसनं डिमः ।  
 ईहामृगः प्रकरणमङ्कः समवकारकः ॥ १०० ॥  
 व्यायोगश्चेति रूपाणि नाट्यस्यैता विकल्पनाः ।  
 भारती सात्त्वती चैव कैशिक्यारभटीति च ॥ १०१ ॥  
 चतस्रो वृत्तयो भाषाः संस्कृताद्या विकल्पिताः ।  
 भारती संस्कृता वाणी शेषाश्चेष्टा इति क्वचित् ॥ १०२ ॥  
 अथ नाट्योक्तयो राजा देवो भट्टारकोऽपि च ।  
 महाराजश्च राज्ञी तु स्वामिनी महिषी तु चेत् ॥ १०३ ॥  
 देवो स्याद्भट्टिनी त्वन्या गणिका पुनरञ्जुका ।  
 भट्टारिका राजमाता तत्पुत्री भर्तृदारिका ॥ १०४ ॥  
 तनयस्त्वस्य गोस्वामी (स्वामी) चाप्यथ राष्ट्रियः ।  
 स्यालोऽस्य युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १०५ ॥  
 पतिस्त्वार्थ आर्यपुत्र आर्यौ मारिषमार्षकौ ।  
 आबुक्स्तु पिताऽम्बा तु माता व्येष्टा स्वसौप्तिका ॥ १०६ ॥  
 बला दुसा कनिष्ठा स्यादाबुक्ता भगिनीपतिः ।  
 बाला वासुर्भदन्ताः स्युः शाक्यक्षपणकादयः ॥ १०७ ॥  
 आर्यभ्राता क्षुल्लतातो देवरस्त्वार्थपुत्रकः ।  
 हण्डे हञ्जे हलाऽऽह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १०८ ॥  
 अब्रह्मण्यमवद्यं स्यान्निष्ठा निर्वहणं समे ।  
 गीतं गेयं च गानं च यत्तु तन्त्रीसमुद्भवम् ॥ १०९ ॥  
 तन्निर्गीतं बहिर्गीतं गान्धर्व दिव्यमैश्वरम् ।  
 सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छना एकविंशतिः ॥ ११० ॥  
 तानान्येकोनपञ्चाशदित्येष स्वरविस्तरः ।  
 स्थानान्युरः शिरः कण्ठः श्रावकः कण्ठजो गुणः ॥ १११ ॥



यो दूराच्छ्रावयत्यन्ये त्वन्वर्था मधुरादयः ।  
 काकीत्याद्याः कण्ठदोषास्तत्र काकी नृलिङ्गकः ॥ ११२ ॥  
 अगम्भीरः स्वरोऽथ स्यात्तम्बिकी घ्राणनिर्गतिः ।  
 सन्दष्टो भेदसम्मिश्रः कफिलो घर्घरः कफात् ॥ ११३ ॥  
 काकली तु कले सूक्ष्मे रागा गीतेर्विधाः पृथक् ।  
 वादित्रं वादनं वाद्यमोतोद्यं तच्चतुर्विधम् ॥ ११४ ॥  
 ततं वीणादिकं वाद्यं तालाद्यं विततं घनम् ।  
 वंशादिकं तु सुषिरमानद्वं मुरजादिकम् ॥ ११५ ॥  
 घनं चाथाद्यवाद्ये द्वे विततं सहकीर्तने ।  
 विपञ्ची वल्लकी वीणा घोषवत्यनुवादिनी ॥ ११६ ॥  
 स्यात् कण्ठकूणिका चाथ स्याच्चित्रा परिवादिनी ।  
 तन्मयश्चेत् सप्त ताश्चेत् स्युश्चतुर्दश चतुर्दशी ॥ ११७ ॥  
 एकादशेकादश चेदेवं वीणा त्रयोदशी ।  
 वीणा स्थाणोरनालम्बी गणानां तु प्रभावती ॥ ११८ ॥  
 विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।  
 महती नारदस्य स्यात् सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥ ११९ ॥  
 कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः ककुभस्तु प्रसेवकः ।  
 वीणा वंशशलाका तु कणिका कूणिका च सा ॥ १२० ॥  
 परिवादो वादनार्थ उपनाहस्तु बन्धनम् ।  
 तन्त्रीष्वङ्गुष्ठसंस्पर्शः कलस्तासां तु ताडनम् ॥ १२१ ॥  
 निष्कोटितोऽस्त्री सव्येन तलस्त्वन्येन पाणिना ।  
 लयस्तु साम्यं दशभिश्छन्दोऽक्षरपदैः सह ॥ १२२ ॥  
 विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।  
 तालः कालक्रियामानं क्रियाङ्गुलिकरोद्भवा ॥ १२३ ॥  
 ताली त्रयी कांस्यताली विताली तालपत्रिका ।  
 मिङ्गिल्लस्तु पयोऽथ स्याद् दर्दरः कलशीमुखः ॥ १२४ ॥  
 वंशे तु वंशिका पूरी मुरली वेणुका च सा ।  
 शृङ्गवाद्ये खरमुखं स्यादाघट्टलिकेति च ॥ १२५ ॥  
 तोट्टभी चाथ पिच्छोला पाली तु जतुकाहला ।  
 काहला तु कहाला स्याच्चण्डकोलाहलेति च ॥ १२६ ॥  
 नालिका सुषिरच्छेदे मुरली पुष्पिकेति च ।  
 वाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ १२७ ॥

काण्डवीणा कुवीणा च ढकारी किन्नरीति च ।  
 सारिका कुङ्कुणी चाथ यो दण्डोऽल्पकलस्वनः ॥ १२८ ॥  
 दण्डिका कारवी सृष्टा किङ्गिरो जर्जरश्च सः ।  
 मुरजास्तु मृदङ्गास्ते त्वङ्ग्यालिङ्गयोर्ध्वकाश्चयः ॥ १२९ ॥  
 पूर्वः पूर्वो महानेषामेतत्पुष्करमण्डले ।  
 व्यापारस्त्वङ्गुलीनां यो मार्जना सा त्रिधा त्वियम् ॥ १३० ॥  
 मायूरी चार्धमायूरी तथा कर्मारवीति च ।  
 घर्घरी स्याद् घर्घरिका वादने मूर्च्छना न ना ॥ १३१ ॥  
 स्युः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः पञ्चमस्तथा ।  
 धैवतश्च निषादश्च तन्त्रीकण्ठोद्भवाः स्वराः ॥ १३२ ॥  
 ते केकिचातकाजक्रुड पिकभेकगजस्वराः ।  
 दुन्दुभिस्त्वानको भेरी भम्भा नासूश्च नान्यपि ॥ १३३ ॥  
 स्याद् यशःपटहो ढक्का पटहस्त्वानकोऽस्त्रियौ ।  
 हुडुकस्तु हडकोऽस्त्री समौ पणवमर्हलौ ॥ १३४ ॥  
 वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिमभर्भराः ।  
 तिमिलाटट्टरीवेध्यालुम्बिकाकुञ्जिकादयः ॥ १३५ ॥  
 वादित्रलगुडे कोणो न नपुं शारिका स्त्रियाम् ।  
 तूर्योऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वादित्रं वादनञ्च तत् ॥ १३६ ॥  
 तूरकामध्वजौ चाथ सायन्तूर्येऽक्षताडनम् ।  
 संवेशने तु भ्रुकुटः प्रकटः प्रतिबोधने ॥ १३७ ॥  
 पटहाडम्बरौ युद्धे मङ्गले प्रियवादिना ।  
 देवतार्चनतूर्ये तु धूमलोऽस्त्री बलिर्न षण् ॥ १३८ ॥  
 क्षुण्णकं मृतयात्रायामर्धतूरो रणोद्यमे ।  
 नटोत्साहनमङ्के स्यात् पूर्वरङ्गास्त्वतः परे ॥ १३९ ॥  
 प्रत्याहारोऽत्र कुतपविन्यासे कुतपः पुनः ।  
 वाद्यवादकसामग्र्यामारम्भः गीत्युपक्रमे ॥ १४० ॥  
 निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।  
 लोकपालार्चने दिक्षु करणीपरिवर्तनम् ॥ १४१ ॥  
 नन्दी चारी महाचारी कथा सूत्रं प्ररोचना ॥ १४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

तृतीयो भूमिकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥



## ४. अथ पातालकाण्डः

सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

पातालं बलिसद्माधोभुवनं वडबामुखम् ।  
 रसातलं तलं नागलोको दैत्यक्षयो रसा ॥ १ ॥  
 अगाधो भुवनं रोकं रन्ध्रं निर्व्यथनं बिलम् ।  
 कुहरं सुषिरं छिद्रं श्वभ्रोऽस्यक्ली सुषिर्वपा ॥ २ ॥  
 गर्तः पतेरो भूश्वभ्रमवखातोऽवटोऽवधिः ।  
 शेषोऽनन्तो नागराजः सर्पराजस्तु वासुकिः ॥ ३ ॥  
 नागा बहुफणाः सर्पास्तेषां भोगवती पुरी ।  
 सर्पो द्विरसनो व्यालो दन्दशूकः सरीसृपः ॥ ४ ॥  
 उरगो भुजगो जिह्वो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ।  
 फुल्लरीको लेलिहानः कुण्डल्याशीविषः फणी ॥ ५ ॥  
 दीर्घपृष्ठो विषधरः पन्नगो दृक्श्रवा हरिः ।  
 बिलौका गूढपाञ्चकी नाकुसद्धानिलाशनः ॥ ६ ॥  
 दर्वीकरा मण्डलिनो राजिमन्तश्च पन्नगाः ।  
 रथाङ्गलाङ्गलच्छत्रस्वस्तिकाङ्कुशलाञ्छनाः ॥ ७ ॥  
 फणिनः शीघ्रगतयः सर्पा दर्वीकराभिधाः ।  
 दीर्घा मन्दा मण्डलिनो मण्डलैर्विविधैर्युताः ॥ ८ ॥  
 राजिमन्तो राजियुता राजीला राजिलाश्च ते ।  
 वैकरञ्जाः सङ्करजास्त्रयाणां व्यन्तरास्तथा ॥ ९ ॥  
 षड्विंशतिर्मण्डलिनस्तथा दर्वीकराभिधाः ।  
 त्रयोदश च राजीला वैकरञ्जाभिधास्त्रयः ॥ १० ॥  
 निर्विषा द्वादशेत्येवमशीतिः सर्पजातयः ।  
 दर्वीकरा महासर्पः फुल्लः पुष्पाभिकीर्णकः ॥ ११ ॥  
 कुम्भीनसो लोहिताहिः कृष्णसर्पः कुलस्थकः ।  
 शङ्खपालो महापद्मः काकोदर इतीदृशाः ॥ १२ ॥  
 आशीविषाश्च सर्वेऽथ कृष्णसर्पो वलाहकः ।  
 अथ मण्डलिनस्तन्तुर्गोनसो वृद्धगोनसः ॥ १३ ॥  
 किशुकः पीनसः पिङ्गो देवभिन्न इतीदृशाः ।  
 गोनसस्तु तिलित्सः स्याद् गोनसो घोणसोऽपि च ॥ १४ ॥

राजिलाः स्युः पुण्डरीकश्चित्रको लोहिताक्षकः ।  
 दिव्येलकः सर्पराजः किकीसादः इतीदृशाः ॥ १५ ॥  
 अथ पुष्करसादः स्यात् सर्पराजश्च सर्पभुक् ।  
 वैकरञ्जाः पोटगलस्तथा पुष्पाभिकीर्णकः ॥ १६ ॥  
 दिव्योऽलर्कोऽप्यथो सर्पा निर्विषा दिव्यकालिनी ।  
 पैङ्गराजोऽप्यजगरः शुकपोत्रो वलाहकः ॥ १७ ॥  
 वर्षाभीः शकलज्योतिः कोलकः पादवाहिकः ।  
 पुष्पकोऽहिपताकश्च गन्धाहिक इतीदृशाः ॥ १८ ॥  
 अलगर्द्धो जलव्यालो वाहसोऽजगरः शयुः ।  
 मालुधानो मातुलाहिः पुण्डरीकस्तु डुण्डुभः ॥ १९ ॥  
 राजिलः क्षीरकश्चाथ नानीपातः स्वजः समौ ।  
 अहीरिणिः स्त्री द्विमुखी निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ॥ २० ॥  
 सर्पाश्चरस्तु निर्मोकः कञ्चुको नित्वयन्यपि ।  
 अहिनित्वयनी चाथ स्फटा भोगः फणा न षण् ॥ २१ ॥  
 गरलं तु विषं द्वेलो गरस्तु कृतकं विषम् ।  
 द्वेलास्तु कालकूटाद्या मूलपुष्पफलात्मकाः ॥ २२ ॥  
 कालकूटः कटोऽथ स्याद् गौरार्द्रो ब्रह्मबालुकम् ।  
 ब्रह्मघोषश्च घौषश्च पुण्डरीकं तु बालुकम् ॥ २३ ॥  
 एवमन्येऽपि काकोलो वत्सनाभो हलाहलः ।  
 सौराष्ट्रिको ब्रह्मपुत्रशौक्लिकेयेन्द्रदारदाः ॥ २४ ॥  
 मुस्तः कुष्ठो मेषशृङ्ग इत्याद्याश्चाथ वातिकः ।  
 विषवैद्यो जाङ्गलिको व्यालम्राह्याहितुण्डिकः ॥ २५ ॥  
 गोधा निहाका मुसली वृक्षजा सा शयण्डकः ।  
 अथ गौधेरगौधारौ भुजगीगोधयोः सुते ॥ २६ ॥  
 गौधेयश्चाथ चिक्रोडस्तालको रोमशीति च ।  
 नकुलः पिङ्गलोऽथैष कर्शो रोमशपुच्छकः ॥ २७ ॥  
 नकुलस्तु महान् बभ्रुर्धरीको नकुलाकृतिः ।  
 कृकलासः प्रतिरिबिः शयानः सरटः शयः ॥ २८ ॥  
 स कामरूपी बिम्बः स्यात् कृकवाकुः सुदुष्प्रभः ।  
 हालाहलस्त्वञ्जानिका ब्राह्मणी रक्तपुच्छिका ॥ २९ ॥  
 सृजया चाथ दैवज्ञा ज्येष्ठा स्याद् गृहगौलिका ।  
 टट्टनी मुसली पल्ली माणिक्या गृहगोधिका ॥ ३० ॥



कुड्यमत्स्या सुरश्वेता कुण्डणाची सुराजिका ।  
 उन्दुर्मुषिकः काण्डमाखुस्तु खनकः क्रमः ॥ ३१ ॥  
 चुचुन्दरी तु गन्ध्राखुगिरिका बालमूषिका ।  
 वृश्चिके त्वात्यलिद्रूणा मलं तत्पुच्छकण्टकः ॥ ३२ ॥  
 खर्जुरो वृश्चिका न क्ली शूककीटोऽपि वृश्चिकः ।  
 आढा शतपदी कर्णजल्लुका ढारिकापि च ॥ ३३ ॥  
 मूषिका लूतिका लूता तन्तुवायश्च जालिकः ।  
 ऊर्णनाभस्तन्तुनाभः कृमिमर्कटकोऽपि च ॥ ३४ ॥  
 ऊर्णाबहिश्चोर्णवाहीराशाबन्धोऽस्य जालकम् ।  
 लूतापट्टस्तु तत्कोश उदंशो मत्कुणः समौ ॥ ३५ ॥  
 घुणः कृमिः काष्ठभवा लूतातः स्यात् पिपीलिका ।  
 ब्राह्मणी स महान् पिङ्गः कपिशा तु गृहेडिका ॥ ३६ ॥  
 उलङ्कलो महान् कृष्णः सा मर्कोटपिपीलिका ।  
 या कृष्णाऽल्पाऽथ सूक्ष्माऽन्या जातिः कन्यापिपीलिका ॥ ३७ ॥  
 वम्बो वम्बुचुपदीकोपजिह्विका चोपदेहिका ।  
 तत्प्राया शिथिली पिङ्गा यूकस्तु शिरसि क्रिमिः ॥ ३८ ॥  
 नीलाङ्गा कृमिरन्तर्जः क्षुद्रः कीटो बहिर्भवः ।  
 पुल्लकास्तूभयेऽपि स्युः कीकसाः कृमयोऽणवः ॥ ३९ ॥  
 सरीसृपास्तु सर्पाद्या दन्दशूकास्तु दंशकाः ।  
 शलभाद्याः पतङ्गाः स्युर्यादांसि जलजन्तवः ॥ ४० ॥  
 पृथुरोमा ऋषो मत्स्यो मीनो वैसारिणस्तिमिः ।  
 जलपिप्पिक आत्माशी शकुली स्वकुलक्षयः ॥ ४१ ॥  
 स्थिरजिह्वः सङ्गचारी विसारः शम्बरोऽण्डजः ।  
 अथो सहस्रदंष्ट्रः स्याद् गलेबालोऽपदालकः ॥ ४२ ॥  
 वदालस्त्वहिकश्चित्रः पाठीनो मृदुकण्टकः ।  
 फलकी स्याच्चित्रफली लोहितस्त्वावतारिकः ॥ ४३ ॥  
 एत्थालः स्याच्चाननको महाशल्कः सितायुधः ।  
 शृङ्गी तु सर्पशफरी प्रोष्ठी तु शफरी न षण् ॥ ४४ ॥  
 नलमीनश्चिलिचिमो गण्डकाः शकुलार्भकाः ।  
 क्षुद्राण्डो मत्स्यसङ्घातः पोताधानं नपुंसकम् ॥ ४५ ॥  
 उदण्डपालनदलद्वेकराजीवकोत्पलाः ।  
 कुलीरः कर्कटः पृष्ठचक्षुः पार्श्वोदरप्रियः ॥ ४६ ॥

बिल्वकोऽण्डप्रहरणः षोडशाङ्घ्रिद्विधागतिः ।  
 भेके शालुः प्लवव्यङ्गशालूराण्डुककेण्डुकाः ॥ ४७ ॥  
 मण्डूकश्चैष गृहजो म्लानः कोणेपिशाचकः ।  
 पीतेऽस्मिन् कूलमण्डूको वारिपिण्डोऽश्ममध्यजः ॥ ४८ ॥  
 कृष्णास्या कृतभीः श्वेता कोटिका तद्विपर्यये ।  
 चित्रे चित्राणुकः कूपे भवः कूपेपिशाचकः ॥ ४९ ॥  
 कूर्मः कच्छप ओहारः पञ्चगूढश्चतुर्गतिः ।  
 गुहाशयस्तूपपृष्ठः कश्यपो जीवथो भृथः ॥ ५० ॥  
 दुली दुणी च तत्कान्ता मकरो मत्स्यराड् भूषः ।  
 खड्गनामा खड्गपुच्छस्तिमिशत्रुस्तिमिङ्गिलः ॥ ५१ ॥  
 तद्भेदो हस्तिमकरोऽथ स्याद् वारुणपाशकः ।  
 ग्राहस्तन्त्रस्तन्तुनागस्तन्द्रश्चामोघतन्तुकौ ॥ ५२ ॥  
 नके तु कुम्भी कुम्भीरो गोमुखश्च महामुखः ।  
 तालुजिह्वः शङ्खमुख आलास्यस्त्वम्बुसूकरः ॥ ५३ ॥  
 उद्रस्तु जलमार्जारः पारी परकुलो वशी ।  
 शिशुमारस्त्वम्बुकपिरुणवीर्यो महावसः ॥ ५४ ॥  
 असिप्लवोऽम्बुलुकी स्त्री वीरलस्तु महाभूषः ।  
 त्रयी तु कम्बुः शङ्खोऽस्त्री सुग्रीवो मधुरस्वनः ॥ ५५ ॥  
 त्रिरेखः षोडशावर्तः स तु शङ्खनखोऽल्पकः ।  
 मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी शुक्तिर्युक्ता तु मौक्तिकम् ॥ ५६ ॥  
 मुक्ताफलं शौक्तिकेयं गङ्गेष्टिः कटशर्करा ।  
 शम्बूकः क्षुब्धकः शङ्खः कपर्दस्तु वराटकः ॥ ५७ ॥  
 स्त्री चूर्णिरथ शुक्तिः स्याद् दुर्नामा दीर्घकोशिका ।  
 जल्लुका तु जलालोका स्रक्था भूम्नि जलौकसः ॥ ५८ ॥  
 या जलौका वृणचरी सा स्यात् वृणजलायुका ।  
 गण्डपदः किञ्चुलको भूलता तत्प्रिया शिली ॥ ५९ ॥  
 स्थले करिनराश्वाद्या यावन्तः सन्ति जन्तवः ।  
 ते जलेऽपि जलारूपाः स्युर्जलपर्यायपूर्वकाः ॥ ६० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥



## जलाध्यायः ॥ २ ॥

सलिलं मलिनं तोयं मरुलं मेघजं कतम् ।  
 नीरं वारि पयोऽम्भोऽर्णो मेघपुष्पं कुलीनसम् ॥ १ ॥  
 पानीयं जीवनीयं कं जलमम्बूदकं दकम् ।  
 विषं पाथो घनपदं भुवनं जीवनं वनम् ॥ २ ॥  
 वार्नं पुंसि स्त्रियो भूमन्यापो घनरसः पुमान् ।  
 वल्खरं तु सितं तोयमतिक्षारं तु किट्टिमम् ॥ ३ ॥  
 काचिमं स्यादतिस्वच्छमूतं कलुषमाविलम् ।  
 शीतलं स्वादुनि जले द्राग्भृतं तत्क्षणोद्धृतम् ॥ ४ ॥  
 जलाशया जलाधारास्ते त्वगाधजला ह्रदाः ।  
 अखातं देवखाते स्यात् पुष्करिण्यां तु खातकम् ॥ ५ ॥  
 आधारस्तु तटाकोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।  
 आवाहो दीर्घिका वापी वेशन्तस्त्वल्पपल्वले ॥ ६ ॥  
 अन्धुरब्धः प्रहिः कूपश्चुण्डी चौण्डश्च चूतकः ।  
 अवखातस्तु कीर्णः स्यादुत्कीर्णश्च पुरी स्त्रियाम् ॥ ७ ॥  
 विकिरः स्यात् कीर्णजल उद्भिदस्तु जलोद्गमः ।  
 पीनाहस्तु स्त्रियां नेमिः कूपस्य मुखबन्धनम् ॥ ८ ॥  
 आहावश्च निपानश्च कूपपार्श्वजलाश्रयः ।  
 प्रदरस्तूदपानोऽस्त्री बद्धाम्बु स्रोतसो धृतम् ॥ ९ ॥  
 आवालमालवालं स्यात् सेतौ वारणसंवरौ ।  
 उदधिः सागरोऽपारो जलराशिरपापतिः ॥ १० ॥  
 रत्नाकरो जलनिधिः समुद्रो मकरालयः ।  
 उदन्वान् वरुणावासः सरितापतिरुत्पतिः ॥ ११ ॥  
 सरित्पतिरूपारः पारावारोऽब्धिरर्णवः ।  
 मितद्रुः संवरः पेरुः स्तम्भी स्तम्भिमर्होदधिः ॥ १२ ॥  
 कूजेऽस्य वेला मर्यादा पूर्णर्वेलाम्बुवर्धनम् ।  
 डिण्डीरोऽम्बुकफः फेनो बुद्बुदस्थासकौ समौ ॥ १३ ॥  
 भङ्गस्तरङ्गो वीचिः स्त्री तस्मिन्स्त्वेव महत्यषण् ।  
 ऊर्मिः कल्लोल उल्लोलो लहर्युत्कलिकेति च ॥ १४ ॥

पोहित्थं तु प्रवहणं पोथश्चाप्यथ मङ्गिनी ।  
 नौस्तरिस्तरणी वेटी द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ १५ ॥  
 उडुपं तु प्लवो भेल आरोह्योऽसौ तरण्डकः ।  
 केनिपातास्त्वरित्राणि पोलिन्दास्तु पुलिन्दकाः ॥ १६ ॥  
 कर्णं पृष्ठस्थितारित्रं नौशिरो मङ्गमस्त्रियाम् ।  
 नावो दण्डः क्षेपणी स्त्री कूपस्तु गुणवृक्षकः ॥ १७ ॥  
 आतरस्तरपण्यं स्यात् सेकपात्रं तु सेचनम् ।  
 सांयात्रिकः पोतवणिक् पोतवाहो नियामकः ॥ १८ ॥  
 कर्णधारस्तु निर्यामो नावारोहास्तु नाविकाः ।  
 अगाधमतलस्पर्शमस्थानञ्च गभीरकम् ॥ १९ ॥  
 गम्भीरञ्चाथ नौतार्यं नाव्यं स्यात्ते नव त्रिषु ।  
 घट्टोऽवतारस्तीर्थोऽस्त्री प्रणाल्यङ्गी पयोवहा ॥ २० ॥  
 सरणी हरणिर्भूणिर्निर्ममद्वारि तु भ्रमः ।  
 उद्धाटनं घटीयन्त्रं पादावर्तोऽरघट्टकः ॥ २१ ॥  
 नदी स्रोतस्विनी कुल्या स्रवन्ती निम्नगा सरित् ।  
 हिरण्यवर्णा गिरिजा रोधोवक्त्रा पयस्विनी ॥ २२ ॥  
 तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्यादिनी धुनी ।  
 अब्धा कूलङ्कषा सिन्धुरापगा वाहिनी वहा ॥ २३ ॥  
 त्रिस्रोता जाह्नवी गङ्गा देवसिन्धुस्त्रिमार्गागा ।  
 भागीरथी विष्णुपदी स्वर्वापी हरशेखरा ॥ २४ ॥  
 धर्मद्रवी त्रिमार्गा च पाताले भोगवत्यसौ ।  
 यमस्वसा तु यमुना कालिन्धर्कात्मजा यमी ॥ २५ ॥  
 नर्मदा स्यात् सोमभवा रेवा मेकलकन्यका ।  
 बाहुदा त्वर्जुनी सैता श्यामाङ्गी सैतवाहिनी ॥ २६ ॥  
 टापी तु तापिनी शैव्या चन्द्रभासा तु चन्द्रिका ।  
 शतद्रुस्तु शुतुद्री स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ २७ ॥  
 गोदावरी तु गोदा स्यात् कावेरी त्वर्जजाह्नवी ।  
 शरावती वेत्रवती तुङ्गभद्रा सरस्वती ॥ २८ ॥  
 ताम्रपर्णी कृष्णवर्णा गोमत्याद्याश्च निम्नगाः ।  
 नदः सरस्वान् भिद्योद्धयौ कुल्या कर्षूः कृता नदी ॥ २९ ॥



वेणिर्धारा प्रवाहौघौ पूरस्तु जलबृंहणम् ।  
 चक्राणि पुटभेदाः स्युरावर्तः पयसां भ्रमः ॥ १० ॥  
 जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।  
 सञ्छेद्यं सङ्गमो नद्योः सम्भेदोऽप्यथ रोधसि ॥ ११ ॥  
 तीरं कूलं प्रपातश्च प्रान्ते कच्छस्तटी त्रयी ।  
 पारावारे परात्रत्ये कूले पात्रं तदन्तरम् ॥ १२ ॥  
 अस्त्री द्वीपोऽन्तरीपं ह्री पुलिनं तज्जलोत्थितम् ।  
 सैकतं सिकताप्रायं सिकता भूमिन् बालुकाः ॥ १३ ॥  
 उत्पल स्यात् कुवलयं कुवेलं कुवलं कुवम् ।  
 नीलोत्पलश्च कन्दोष्ठं कन्दोब्जं कर्णभूषणम् ॥ १४ ॥  
 इन्दीवरश्च नीलाब्जं रक्तपाणिकमुत्पले ।  
 वरोत्पलं तु कल्हारं सौगन्धिकशिशुप्रिये ॥ १५ ॥  
 कंसोत्पलं विगन्धि स्याद् वनजं वन्यकं जले ।  
 पद्मोऽस्त्री पङ्कजं कञ्जं कुविलीनं सरोरुहम् ॥ १६ ॥  
 सरसीजं सरसिजं सारसं सरसीरुहम् ।  
 सरोजमब्जमप्युष्पमरविन्दं महोत्पलम् ॥ १७ ॥  
 सहस्रपत्रं नलिनं शतपत्रं कुशेशयम् ।  
 बिसप्रसूनं राजीवं निर्लेपं बिसनाभिजम् ॥ १८ ॥  
 पङ्केरुहं तामरसं कमलं दारदोलके ।  
 रक्ते तु पद्मे कण्डारं बिसखण्डमथोऽम्बुजम् ॥ १९ ॥  
 चारुनालं कोकनदं श्वेते तु शुचिकर्णिकम् ।  
 पुण्डरीकं महापद्मं पवित्रं पुण्यगन्धिकम् ॥ २० ॥  
 श्रीपुष्पं स्वर्णराजश्च कुमुदं गर्दभाङ्गयम् ।  
 गन्धसोमं कुमुच्चन्द्रं कैरवश्चाथ लोहिते ॥ २१ ॥  
 अस्मिन् कोकनदं जारं सुनालं रक्तकुण्डलम् ।  
 करहाटः शिफा कन्दं नाला नालमथ त्रिषु ॥ २२ ॥  
 मृणाली शतपर्व ह्री बिसश्च नलिनी पुनः ।  
 बिसिनी पद्मिनीत्याद्याः पद्मस्तम्बे सरस्यपि ॥ २३ ॥  
 भवेत् पुटकिनी पद्मस्तम्बमात्रे प्रकीर्तिता ।  
 कुमुद्वती कुमुदिनी शास्त्रिकं कन्दमौत्पलम् ॥ २४ ॥

संवर्तिका नवदलं पद्म ह्री कुसुमच्छदः ।  
 किञ्जल्कः केसरो न स्त्री बीजकोशो वराटकः ॥ ४५ ॥  
 कर्णिका कर्णिकं चाथ पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।  
 हठः कुम्भी वारिपर्णी किञ्चोलस्त्वङ्गलोड्यकः ॥ ४६ ॥  
 शुक्लकारं तु कृसरं वृष्यकन्दं कशेरु च ।  
 शृङ्गाटकस्तु गरुलो दन्तबीजश्चिकण्टकः ॥ ४७ ॥  
 क्षीरबीजः क्षीरशुक्लस्तर्पणो जलकण्टकः ।  
 चिञ्चोटिका स्यादवका स्वादुमुस्ता गरोलिका ॥ ४८ ॥  
 शैवलो जलशूरः स्यादवका जलनील्यपि ।  
 शैवालश्चाथ शेवालं चूर्णाभं लोहितं जले ॥ ४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 पातालकाण्डे जलाध्यायः ॥ २ ॥



## पुराध्यायः ॥ ३ ॥

पुर्यन्ता नगरी पूः स्त्री स्थानीयं नगरं पुटः ।  
 पुर्याः शाखापुरी गृह्या पुरेऽल्पे खेटमस्त्रियाम् ॥ १ ॥  
 ग्रामः पर्युपसन्निभ्यः प्रतेश्च वसथः परः ।  
 स्थानीयं तु महाग्रामो ग्रामाः क्षुद्राः परे क्रमात् ॥ २ ॥  
 स्युः कर्वटं कार्वटिकं कार्वटं नृङ्गपट्टने ।  
 कर्वटोऽस्त्री द्रोणमुखं पट्टनं पुटभेदनम् ॥ ३ ॥  
 पत्तनं चाप्यथानृङ्गे नृङ्गो द्रङ्गं विवेशिका ।  
 कटकोऽस्त्री संवासः स्कन्धावारश्च राजधानी स्यात् ॥ ४ ॥  
 शिविरं मार्गनिवेशो गामार्थं वाटकोऽस्त्री स्यात् ।  
 साकेतं स्यादयोध्यायां कोसलानन्दिनीति च ॥ ५ ॥  
 द्वारका तु द्वारवती मथुरा तु मधूषिका ।  
 मथुरा च मधूपद्मा कौशं तु स्यात् कुशस्थली ॥ ६ ॥  
 वाराणसी शिवपुरी वारणास्यपि काशिका ।  
 मिथिला पूर्वदेहेषु कन्याकुब्जो महोदयः ॥ ७ ॥  
 हस्तिनी हास्तिनपुरं नागाहं हस्तिनापुरम् ।  
 अथास्त्री खाण्डवप्रस्थं जयन्तीपुरमाहुकम् ॥ ८ ॥  
 अवन्ती स्यात्तक्षशिला काकुन्दी वारणावतम् ।  
 देवीकोटः कोटिवर्षं माहिष्मत्यां वृकस्थली ॥ ९ ॥  
 ग्रामादिभूमिर्वास्त्वस्त्री सन्दंशस्त्वस्य कोणभूः ।  
 ब्रह्मस्थली वास्तुमध्यं ब्रह्मधारा तदन्तभूः ॥ १० ॥  
 प्रशस्ता वास्तुभूमिर्या प्रवीरा नन्दिनी च सा ।  
 सीमा तु सीमा मर्यादा ग्रामसीमोपशल्यकम् ॥ ११ ॥  
 प्रान्तरं ग्रामयोर्मध्यमुपग्रं त्वन्तिकाश्रयः ।  
 पर्यन्तभूः परिसरः कटो ग्रामेयकः पुनः ॥ १२ ॥  
 ग्रामीणं च त्रिषु ग्राम्ये ग्रामधान्यं तु खेटकम् ।  
 खेयं तु परिखाऽथास्त्री वप्रः प्राकारमूलिकः ॥ १३ ॥  
 प्राकारो वरणः सालः प्राचीरं त्वेष सच्छदिः ।  
 आवेष्टकस्तु वाटोऽस्त्री विवृतश्च वृत्तिद्रुमैः ॥ १४ ॥

वारिकूटो हस्तिमुखो नगरद्वारकुट्टके ।  
 गोपुरं तु पुरद्वारं दिक्तु निस्सारणं मुखम् ॥ १५ ॥  
 रथ्या प्रतोली विशिखाऽप्युपरथ्या तु दर्शनी ।  
 राजमार्गे संसरणं श्रीघण्टाभ्यां पथः परः ॥ १६ ॥  
 स एव पुरि दिङ्मार्गो वाहनी चोपविष्करम् ।  
 अगारं भवनं धाम वस्तं वस्त्यं निकेतनम् ॥ १७ ॥  
 शय्यं निवसनं सद्य बुन्दिरं वेश्म मन्दिरम् ।  
 निकार्यवासावसथनिकायनिलयालयाः ॥ १८ ॥  
 न नोदवसितं न स्त्री गोहं पुम्भूम्नि वा गृहम् ।  
 महाकीर्तनमोकश्च केतरं केतनं क्षयः ॥ १९ ॥  
 आथर्वणं शान्तिगृहमास्थानगृहमिन्द्रकम् ।  
 वासागारं तल्पगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ २० ॥  
 कुण्डशाला तु सन्धानी पक्षिशाला कुनालिका ।  
 चतुरं हस्तिनां शाला वाजिशाला तु मन्दुरा ॥ २१ ॥  
 सन्दानिनी तु गोशाला हविशाला विषाणिका ।  
 आवेशनं शिल्पिशाला तन्त्रशाला तु गर्तिका ॥ २२ ॥  
 कुम्भशाला पाकपुटी चित्रशाला तु जालिनी ।  
 संवासनं कर्मशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ २३ ॥  
 वेशनी मुखशाला च पक्षशाला तु पक्षकः ।  
 तैलशाला यन्त्रगृहं पोटकी कटकी च सा ॥ २४ ॥  
 इक्षुपीडनयन्त्रस्य शालिका त्विक्षुसूनिका ।  
 वपनी स्यात् खरकुटी शिल्पा चाप्यथ कुण्डिनी ॥ २५ ॥  
 क्षणा बुशाल्याश्रमे तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ।  
 चतुश्शालं सञ्जवनं सत्रशाला शुभा स्थली ॥ २६ ॥  
 मठावसथ्यौ छात्रादिवासो वेण्टं विटाश्रये ।  
 कुटीरस्तु कुटी पल्ली चैत्रपल्ली तु गर्गरी ॥ २७ ॥  
 सन्यासपल्ली निर्वीरा मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।  
 देवतायतनं चैत्यं विहारो लयनालिकः ॥ २८ ॥  
 सौधोऽस्त्री सुधया श्वेतं मेटो हर्म्यं च मालिका ।  
 तदेव राजदेवानां स्यात् प्रासादः प्रसादनः ॥ २९ ॥  
 राजवेश्मोपकार्यो स्यादुपकार्योपकारिका ।  
 स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्दावर्तादयोऽपि च ॥ ३० ॥



पिच्छन्दिका राजधान्यां सन्निवेशो निकर्षणम् ।  
 कूटागारं तु बलभी निर्यूहो मत्तवारणम् ॥ ३१ ॥  
 कुट्टिमोऽस्त्री बद्धभूमिः कोद्रङ्गस्तु तमङ्गकः ।  
 इन्द्रकोशोऽप्यथो मञ्च उद्धातो डुण्डुरोऽपि च ॥ ३२ ॥  
 वेश्यागृहे कायमानं तथेदं केलिमण्डपे ।  
 अट्टालयोऽट्टः क्षौमोऽस्त्री तलिन्यट्टालिके समे ॥ ३३ ॥  
 चन्द्रशाला शिरोगेहं पणिकस्तु वणिगृहम् ।  
 आपणस्तु निषद्या स्यान्माटङ्को लवणापणः ॥ ३४ ॥  
 संवासो विपणिः पण्यवीथी हट्टस्तु पण्यभूः ।  
 आवालिर्हट्टवेश्माली वेशो वेश्याजनाश्रयः ॥ ३५ ॥  
 अवरोधः पराविद्धः शुद्धान्तोऽन्तःपुरं वृषम् ।  
 अङ्कणस्त्वजिरं चारं वेदिका तु वितर्दिका ॥ ३६ ॥  
 कुड्योऽस्त्री भित्तिका कन्थाऽप्येड्ढकं त्वन्तरस्थिकम् ।  
 नीत्रं बलीकं चोलान्ते चोलोऽस्त्री पटलं छदिः ॥ ३७ ॥  
 सन्धिस्तु कुड्यच्छदिषोः कावातायनिका कला ।  
 अपशाला तु संहारी विटका तु विटाटिका ॥ ३८ ॥  
 गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि ।  
 वेश्मस्थूणा गृहस्थूणमुल्बस्थूणा तु पादिका ॥ ३९ ॥  
 मेढी तु पादिकाशीर्षे स्थूणाशीर्षे शिली शिला ।  
 नासा धारकदारु स्यात् पालिकाष्ठं तु धारणा ॥ ४० ॥  
 कोणप्रतिग्राहि शिरोविष्टब्धिकरमाढकम् ।  
 सूकरी तूपरिस्थूणा सन्धिकाष्ठं तु वासिकम् ॥ ४१ ॥  
 द्वाः स्त्री द्वारं पक्षकं तु पक्षद्वारं खड्गिका ।  
 तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं प्रच्छन्नद्वारमान्तरम् ॥ ४२ ॥  
 कवाटं द्वारबन्धोऽस्य धारके व्याघ्रकोऽस्त्रियाम् ।  
 उत्तराङ्गं तूर्ध्वदारु द्वारस्यैरुण्डकः पुनः ॥ ४३ ॥  
 गृहावग्रहणी देहल्यम्मरोदुम्बरोम्बुरा ।  
 सट्टं सपट्टी तत्पार्श्वे वृकवाला परालिनी ॥ ४४ ॥  
 नासा तु द्वार्यधोदारु शिला नासाविधारिणी ।  
 प्रघाणप्रघणालिन्दाः पिण्डकोऽलिन्दवासनौ ॥ ४५ ॥  
 बहिर्द्वारप्रकोष्ठे स्युर्गृहश्रेणी तु वीथिका ।  
 अथ त्रय्यौ कवाटोऽपि कुवाटोऽप्यररं न पुम् ॥ ४६ ॥

पार्श्वद्वयस्थं तद्युग्ममनीरिति निगद्यते ।  
 विष्कम्भकेऽस्य गुडको द्रुमशोऽप्यर्गला न षण् ॥ ४७ ॥  
 सूचिस्त्वयोऽर्गलैषा चेद् द्वारोर्ध्वे तूर्ध्वसूचिका ।  
 मर्कटं मर्कटी सूची विष्कम्भार्थमथाङ्कुटः ॥ ४८ ॥  
 साधारणी कुञ्जिका च द्वारयन्त्रं तु तालकम् ।  
 एतस्योद्घाटनं यन्त्रं ताल्यपि प्रतिताल्यपि ॥ ४९ ॥  
 अर्गलं द्वारपटलं विदण्डस्त्वर्गला त्रयी ।  
 अस्त्री तु चर्घरोऽट्टादेरधोद्वारकवाटिका ॥ ५० ॥  
 गर्भागारोऽपवरको भ्रमन्तो गृहकोऽल्पकः ।  
 आरोहणं स्यात् सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरौहणी ॥ ५१ ॥  
 कोणाश्रौ नर्यणिनं क्ली स्त्रियोऽश्रिस्तुक्तिकोटयः ।  
 सम्मार्जनी शोधनी तन्मलेऽवकरसङ्करौ ॥ ५२ ॥  
 दन्तिका नागदन्ताः स्युर्लङ्गनी वस्त्रधारणी ।  
 कपोतपाली स्त्री न स्त्री विटङ्कोऽथ गवाक्षकम् ॥ ५३ ॥  
 वातायनं गवाक्षश्च रसवत्यां महानसम् ।  
 उद्धानमश्मन्तमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ॥ ५४ ॥  
 हसन्यङ्गारशकटी हसन्यङ्गारधान्यपि ।  
 पिठरः स्थाल्युखा कुम्भिः पिधानं स्यादुदञ्चनम् ॥ ५५ ॥  
 कंटाहः कर्परो लट्वा मणिकः स्यादलिङ्गारम् ।  
 भ्राष्ट्रः पुंस्यम्बरीषोऽस्त्री कन्दुर्ना स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ५६ ॥  
 ऋचीषं पिष्टपचनं मल्लो मल्ली च कोशिका ।  
 वर्धनी तु गलन्त्यालुः कर्करी करकोऽपि च ॥ ५७ ॥  
 भृङ्गारो हेमकरकः करङ्को नालिकेरजः ।  
 निपो घटः कुटः कुम्भः करीरः कलशी त्रयी ॥ ५८ ॥  
 घटी पारी कपाली तु त्रयी घोलश्च कर्परः ।  
 शालाजिरो वर्धमानः शरावोऽस्त्री दृतिस्तु ना ॥ ५९ ॥  
 खल्वं क्लीबे चर्ममयी त्वालुः करकवर्तिका ।  
 स्नेहपात्रं कुतूः कृत्तिः सैवालपा कुतुपः पुमान् ॥ ६० ॥  
 अवगाहो जलद्रोणिरुष्टिका काञ्जिकादिभृत् ।  
 भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः स्थालं स्यात् कांस्यपात्रकम् ॥ ६१ ॥  
 भाण्डमावपनेऽमत्रं भाजने पात्रमित्युभे ।  
 चर्मकोशं तु कललं करालं तरलं च तत् ॥ ६२ ॥



पेटकः पिटकः पेटा मञ्जूषा सा तु चर्मणा ।  
 वृता तरिः स्त्री तमतो वस्त्रकोशं करोटकम् ॥ ६३ ॥  
 स्यूतः प्रसेवकोऽथ स्यात् समुद्रगः सम्पुटः पुटः ।  
 धान्यकोष्ठे कुसूलोऽथ कण्डोलः पिटकः पिटः ॥ ६४ ॥  
 प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री न स्त्री तितउ चालनी ।  
 अथोनिर्मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ ६५ ॥  
 प्रस्फोटनं तु पवनमवघातस्तु कण्डनम् ।  
 फलीकृतस्तण्डुलः स्याद्धान्यानां तु तुषस्त्वचि ॥ ६६ ॥  
 शम्बूकास्तु कणाः सूक्ष्मास्तण्डुलस्य च यो मलः ।  
 शम्बूकः कण्डनं चासौ ज्येष्ठाम्बु तु तदम्बुनि ॥ ६७ ॥  
 गोधूमचूर्णे शमिता चिकसो यवचूर्णके ।  
 पृथुक्त्रिपिटो लाजाः पुंभूम्नि परिवारकः ॥ ६८ ॥  
 खदिका तु गुडाद्याह्यलाजसक्तुषु तर्पणम् ।  
 सुस्विन्नभृष्टमृदिता उत्कुञ्चः कल्कपिण्डिकाः ॥ ६९ ॥  
 पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे गौडी तु ममरा ।  
 उलुम्बं बुम्बिका बुम्बी चक्षुष्या सक्तवः कणाः ॥ ७० ॥  
 ते घृतादियुता मन्थः करम्भो दधिसक्तवः ।  
 धानाः स्त्रियो भृष्टयवा दारपत्रस्तु पोलिकः ॥ ७१ ॥  
 पूषस्तु पिष्टकोऽपूपः कोकुन्दाः पिष्टपिण्डिकाः ।  
 उत्कारिका चूर्णपूपे कुलमाषा यवपिष्टकाः ॥ ७२ ॥  
 शमिता त्वम्लदुग्धार्द्रा पक्का खण्डे घृतोत्तरे ।  
 संयावोऽयं युतश्चूर्णैः खण्डैलामरिचार्द्रकैः ॥ ७३ ॥  
 क्षीराह्यः शमितापिण्डो घृतपुरो घृते शृतः ।  
 फेनकः शमिता शुक्ला घृतपक्वालपशर्करा ॥ ७४ ॥  
 शङ्कुली त्वायता पिष्टगुडतैलतिलैः कृता ।  
 जीवनान्नाशनान्धांसि कूरं भक्तं प्रसादनम् ॥ ७५ ॥  
 पाजो वाजोऽप्योदनोऽस्त्री भिस्सा स्त्री दिदिविर्न षण् ।  
 पुन्नपुंसकयोश्चोरं करमाहार्यमित्यपि ॥ ७६ ॥  
 दग्धान्नं भिस्सिटा भिज्जी परमान्नं तु पायसम् ।  
 क्षैरेयी चाथ मण्डोऽस्त्री रसाम्रोऽथ करोटिका ॥ ७७ ॥  
 व्यागुल्या स्याद्धानाम्लायां व्यागुली मण्डिका समे ।  
 मासराचामनिस्त्रावप्रस्त्रावा भक्तमण्डके ॥ ७८ ॥

वाट्यमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डोऽन्वितार्थकः ।  
 तिलतण्डुलमाषैस्तु त्रिरसा कृसरान् त्रयी ॥ ७९ ॥  
 यवागुरुष्णिका श्राणा पिच्छा सा तु घनाद्रवा ।  
 विलेपी स्याद्विलेप्या च सा पेया तरणान्यथा ॥ ८० ॥  
 खलिः स्त्री तण्डुलैः पिष्टैर्जले पक्का घनद्रवा ।  
 सौवीरं काञ्चिकं कुण्डमारनालं गृहोदकम् ॥ ८१ ॥  
 अवन्तिसोमं रक्षोघ्नं शुक्ताभिपुतकुञ्जलम् ।  
 गोलकुलमाषसन्धानान्यौदरो मधुरा न षण् ॥ ८२ ॥  
 तद्धान्ययोनि धान्याम्लं तुषाम्बु तुषसंहितम् ।  
 मूलकाद्यैः संहिते स्यान्मूलकादिसुतं न ना ॥ ८३ ॥  
 मूलकच्छदसन्धानं शिण्डाकी स्वादुसुद्रवा ।  
 यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्चिकम् ॥ ८४ ॥  
 त्रिरात्रं धान्यराशिस्थं तच्छुक्तं शुद्धमित्यपि ।  
 निष्ठानं तेमनं तच्च व्यञ्जनं स्याद् घृतादि च ॥ ८५ ॥  
 सूपोऽस्त्री प्रहितं सूदोऽप्युपदंशोऽपदंशकः ।  
 स्त्री पक्कभृष्टे भरुटा सगुडाज्योषणैः पुनः ॥ ८६ ॥  
 वेशवारः पिष्टमांसे पक्के भूतिस्ततोऽन्यथा ।  
 रसको मांसनिष्काथः पिष्टमांसकृतो रसः ॥ ८७ ॥  
 सोरावासो निर्लवणः परिशुष्कं पुनर्घृते ।  
 सिक्त्वा मांसे मृदूष्णाम्बुपक्वं युक्तं कणादिभिः ॥ ८८ ॥  
 उत्तमं शुष्कमांसं स्याद्वल्लूरा त्रय्यथ स्त्रियाम् ।  
 पेशिः शुण्ठः पिचिण्डस्तु निकृत्तोऽवयवः पशोः ॥ ८९ ॥  
 शाकोऽस्त्री हरितं शिग्रुः स्त्री तन्नाले कडम्बकः ।  
 कन्दमस्त्री मूलसस्यं वेशवार उपस्करः ॥ ९० ॥  
 लेह्यं पेयञ्च चूष्यञ्च खाद्यमास्वाद्यमित्यपि ।  
 पञ्चामृतमिदं स्वाद्यं मुक्त्वा त्वन्नं चतुर्विधम् ॥ ९१ ॥  
 त्रिष्वामृतान्नाद्भ्यकारे द्वौ कान्दविकपौपिकौ ।  
 सूपकारे त्वारालिकसूदान्धसिकवल्गवाः ॥ ९२ ॥  
 गुणौदनिकसूपाश्च लवणो लवणोत्कटः ।  
 पक्वं तु रन्धितं सिद्धं भृष्टं पक्वं विनाम्बुना ॥ ९३ ॥  
 प्रणीतमुपसम्पन्नं प्रयस्तं स्यात् सुसंस्कृतम् ।  
 शूलाकृतं भटित्रं च शूल्यमुख्यं तु पैठरम् ॥ ९४ ॥



सार्पिष्कदाधिकाद्यं स्यात्सर्पिर्द्ध्यादिसंस्कृते ।  
 शीनं स्त्यानं शृतं पक्वं विलीनं विद्रुतं द्रुतम् ॥ ६५ ॥  
 तक्रं कपित्थचाङ्गेरीमरीचाजाजिचित्रकैः ।  
 यत्पक्वं गुडजूषोऽसावलकाम्बलिकोऽपरः ॥ ६६ ॥  
 दध्यम्लो लवणस्नेहतिलमाषविपाचितम् ।  
 अपकतक्रं सव्योषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥ ६७ ॥  
 सजीरकं रसालः स्यान्मार्जिता शिखरिण्यपि ।  
 सा जाजी डाडिमव्योषं पटे घृष्टं च सट्टकम् ॥ ६८ ॥  
 बलकं स्याद् गुडक्षीरं यमकं तैलसर्पिषी ।  
 त्रिस्नेहं त्रैवृतं मार्जा चतुस्नेहं वसान्वितम् ॥ ६९ ॥  
 मधु सर्पिश्च मिथुनं यूषोऽस्त्री यूः पुमान् रसे ।  
 परिवेषणं वर्धनं च प्रतीच्छा पततो ग्रहः ॥ १०० ॥  
 कबलः कबतो ग्रासो गुडः पिण्डो गुडेरकः ।  
 गण्डोरश्च गडोलश्च चर्वणं चूषणं रदैः ॥ १०१ ॥  
 जग्धिस्तु निघसो न्यादो लेपोऽप्यभ्यवहारवत् ।  
 प्रत्यवसानमशनं भोजनं जेमनादने ॥ १०२ ॥  
 स्वदनं परिपत्रं च सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।  
 चूषणं तु रसादानं जिह्वास्वादस्तु लेहनम् ॥ १०३ ॥  
 धीतिस्तु धयनं पानं जक्षा खादनभक्षणे ।  
 कामं निकामं पर्याप्तं प्रकामं च यथेप्सितम् ॥ १०४ ॥  
 पर्याप्तं तु परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ।  
 तृप्तिः सुधा च सौहित्यं तृप्तं तु सुहितं त्रिषु ॥ १०५ ॥  
 करम्बः सेकमिश्रात्रे फेला पिण्डेऽधिकोऽस्मिन्ते ।  
 खण्डपकटमुद्वेगं ताम्बूलं मुखभूषणम् ॥ १०६ ॥  
 अम्बलोर्णं चर्वितेऽस्य चूर्णेऽस्य त्वम्बला रसे ।  
 करङ्को वेडादिक्वते पूगताम्बूलभाजने ॥ १०७ ॥  
 स्यात् पूगावपनी गन्त्री कर्त्तर्युद्वेगकर्तरी ।  
 भवेत् क्षुरसमुद्गं तु त्रिष्वाकर्णकरन्धके ॥ १०८ ॥  
 अस्त्री तु पुस्तकं सिन्दूरादेर्दारवभाजने ।  
 चातुरीकं त्रिषु भवेच्चन्दनद्रवभाजने ॥ १०९ ॥  
 नागवल्लीपलाशानां तैलाक्तानां रसातलः ।  
 निष्ठानं वीतकं प्रोक्तं चन्द्रमन्दारचूर्णधृतम् ॥ ११० ॥

वीरस्त्राका या तु शरशलाकायन्त्रनिमिता ।  
 पाठार्थमुद्गृहीता स्यात् कबली पत्रपञ्चिका ॥ १११ ॥  
 परिकर्माङ्गसंस्कारः कङ्कतस्तु प्रसाधनः ।  
 प्रसाधनं स्यादभ्यङ्गः सोत्पाताच्छुरिते समे ॥ ११२ ॥  
 उद्वर्तनं तूसादनं स्नानं त्वाप्लाव आप्लवः ।  
 उपस्पृशोऽभिषेकश्च गोसव्यं गोमयेन तत् ॥ ११३ ॥  
 सुगन्धामलकैः स्नानं यत्तल्लक्ष्मीनिकेतनम् ।  
 यत्तु सर्वौषधिसनानं तन्मङ्गल्यमलोचकम् ॥ ११४ ॥  
 यन्मृत्तिकाऽम्भसा स्नानं दिष्टं देशनिकं च तत् ।  
 ऋषीणां तर्पणं यत्तत् कौलकुल्यं कुलं च तत् ॥ ११५ ॥  
 सिक् स्त्री पटोऽस्त्री सिचयो वासो वसनमंशुकम् ।  
 आच्छादनं निवसनं वसितं वस्त्रमम्बरम् ॥ ११६ ॥  
 चेलं च तच्चतुर्धा स्यात् त्वक्फलकिमिरोमजम् ।  
 बालकं क्षौमादिके वस्त्रे फाले कार्पासवादरौ ॥ ११७ ॥  
 कौशेयं कृमिकोशोत्थे राङ्गवं मृगरोमजे ।  
 पत्रोर्णं धौतकौशेयं महामूल्यं महाधनम् ॥ ११८ ॥  
 अग्निगौचं वक्रवल्लीपदे वज्रांशुकं तथा ।  
 राजावर्तं चित्रपटे राजवर्तो नवश्रियाम् ॥ ११९ ॥  
 अहतं निष्प्रवाणिः स्यात् तन्त्रकं च नवांशुके ।  
 निवीतं प्रावृते धौतयुग्मं तूद्गमनीयकम् ॥ १२० ॥  
 आप्रपदीनं प्रपदव्यापि वालकादयस्त्रिषु ।  
 अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽशुके ॥ १२१ ॥  
 चण्डातकं वरस्त्रीणां स्यादधोरुक्मम्बरम् ।  
 संव्यानमुत्तरीयं क्षौमं सूदमं दुक्कलं स्यात् ॥ १२२ ॥  
 बैकत्यं तु बृहतिका प्रावारश्चोतरासङ्गः ।  
 चन्द्रोदय उल्लोचः कदरश्चन्द्रातपो वितानोऽस्त्री ॥ १२३ ॥  
 मशकहरी तु चतुष्की शिरसि सिगुष्णीषमस्त्री स्यात् ।  
 काण्डपटः स्यादपटी प्रतिसारायवनिका तिरस्करिणी ॥ १२४ ॥  
 दूष्यं स्थूलं पटकुटी गुणलयनी केणिका तुल्याः ।  
 नालकं नलकं चापि नलिकं चेत्यपि त्रयः ॥ १२५ ॥  
 पर्याया धनुरादीनां कवचेऽप्राणिनामसी ।  
 निचोलः प्रच्छदपटो वरासी स्थूलशाटका ॥ १२६ ॥



चोली तु शाटिका शाटो वरकोऽस्त्री द्विखण्डकः ।  
 निशारो हिमसम्पातत्राणे जीर्णे पटम्बरम् ॥ १२७ ॥  
 निचोलः कञ्चुकश्चोलः कूर्पासश्चाङ्गिकोऽस्त्रियाम् ।  
 चीवरं भिक्षुसङ्घाटी कन्थाकन्थटिके समे ॥ १२८ ॥  
 कद्यापटस्तु कौपीनं समौ रत्नककम्बलौ ।  
 विशालस्त्वाविकौरभ्रौ हस्तिकर्णस्तु रोचकः ॥ १२९ ॥  
 शाणी गोणी छिद्रवस्त्रैश्चिरं खण्डलमस्त्रियाम् ।  
 नक्तकः कर्पटो वस्त्रप्रन्थोऽस्त्री नीविरुच्यः ॥ १३० ॥  
 कक्षः कच्छो गुह्यबन्धः कद्या पृष्ठे कृतोऽञ्चलः ।  
 वस्त्रान्तस्त्वञ्चलो वस्तिस्त्वक्ली भूम्नि दशा न षण् ॥ १३१ ॥  
 पुष्कलस्तुम्बिका चाथ प्रान्तत्रसरकेसराः ।  
 आकल्पवेषौ नैपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ १३२ ॥  
 अलङ्कारस्त्वाभरणं भूषणं मण्डनं पुनः ।  
 विभूषणं परिष्कारः कर्णिका कर्णभूषणम् ॥ १३३ ॥  
 उत्क्षिप्तिका तु कर्णाकस्तालपत्रं तु तालकम् ।  
 कर्णपूरस्तु पुष्पाद्यैस्ताडङ्गो दन्तकादिभिः ॥ १३४ ॥  
 वालिका कर्णपृष्ठस्था कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ।  
 मौलिः कोटीर उष्णीषं किरीटं मकुटोऽस्त्रियाम् ॥ १३५ ॥  
 चूडामणिः शिरोरत्नं स्वस्तिकस्तु त्रिकोणकः ।  
 बालपाश्या पारितध्या पत्रपाश्या ललाटिका ॥ १३६ ॥  
 ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं तु ललन्तिका ।  
 स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरस्सूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १३७ ॥  
 हारो मुक्तावली स्त्री स्यात्तद्भेदा यष्टिसङ्ख्यया ।  
 देवच्छन्दः शतं साष्टमिन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ॥ १३८ ॥  
 तस्यार्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ।  
 अर्धं रश्मिकलापोऽस्य द्वादशस्त्वर्धमाणवः ॥ १३९ ॥  
 द्विर्द्वादशोऽर्धगुच्छोऽथ पञ्च हारफलं लताः ।  
 अर्धहारश्चतुष्पष्टिर्गुच्छमाणवमन्दराः ॥ १४० ॥  
 अपि गोस्तनगोपुच्छावर्धमर्धं यथोत्तरम् ।  
 एकावत्यनुकण्ठी च हारः स्यादेकयष्टिकः ॥ १४१ ॥  
 यष्टिर्नक्षत्रमालैका सप्तविंशतिमौक्तिका ।  
 गुडकैर्मणिसोपानं चाटुकारश्च हेमजैः ॥ १४२ ॥

हारमध्यस्थितं रत्नं तरलो नायकोऽपि च ।  
 केयूरमङ्गदं भूषा दोर्मूले कङ्कणं करे ॥ १४३ ॥  
 आवापकः पारिहार्यं वलयं कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 पादेऽसौ हंसकः स्त्रीणामङ्गुलीयकमूर्मिका ॥ १४४ ॥  
 साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा सा क्षुद्रघण्टा तु किङ्किणी ।  
 शिङ्गिनी ना तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियौ ॥ १४५ ॥  
 कटिसूत्रं सारसनं मेखला रशनाऽथ सा ।  
 स्त्रीकट्यां सप्तकी काञ्ची पुंस्कट्यां शृङ्खला त्रयी ॥ १४६ ॥  
 स्त्री चर्क्तिर्वर्णकालेपावनुबोधः प्रबोधनम् ।  
 माष्टिश्चर्चा च चर्चिक्यं समालम्भनमित्यपि ॥ १४७ ॥  
 स्थासको हस्तबिम्बः स्यात् पत्तिच्छेदास्तु राजयः ।  
 चित्रं तमालपत्रं क्ली तिलकोऽस्त्री विशेषकम् ॥ १४८ ॥  
 पत्तिस्तु पत्रकं लेखा बाहुगण्डस्तनादिषु ।  
 पत्राङ्गुलिः पत्ररेखा सा ललाटे ललाटिका ॥ १४९ ॥  
 राढा शोभा छवी रुक् त्विट् सुषमा परमा छविः ।  
 त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैस्त्रिसुगन्धं त्रिजातकम् ॥ १५० ॥  
 चतुर्जातं तदेव स्यान्नागकेसरकेसरैः ।  
 सर्वगन्धमिदं सेन्दुतक्कोलागरुसिलहकम् ॥ १५१ ॥  
 लवङ्गपूगतक्कोलजातीफलहिमांशवः ।  
 पञ्च पञ्चसुगन्धं स्यादथ तक्कोलकुङ्कुमैः ॥ १५२ ॥  
 कस्तूर्यगरुकर्पूराः सुगन्धो यक्षकर्मसः ।  
 यावो द्रुमामयोऽलक्तो लाक्षा रक्ता जतु क्रिमिः ॥ १५३ ॥  
 कालानुसार्यं कालेयं जावकं चाप्यथ स्रजि ।  
 मालाङ्किलिरथापीडे वतंसोत्तंसशेखराः ॥ १५४ ॥  
 केशेषु गर्भकं माल्यं प्रालम्बं कण्ठलम्बितम् ।  
 प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १५५ ॥  
 वैकट्यं तिर्यगुरसि स्थितं निर्माल्यमुष्मिते ।  
 संस्कारो गन्धधूपाद्यैरपुमानधिवासनम् ॥ १५६ ॥  
 अञ्जनं त्वक्षिसंस्कारः कज्जलं धूमयोनि तत् ।  
 चूर्णानि वासयोगाः स्युः पिष्टातः पटवासकः ॥ १५७ ॥  
 रचना स्यात् परिस्कन्धो भावना वासना समे ।  
 अथोपकरणं सर्वं परिबर्हः परिच्छदः ॥ १५८ ॥



व्यजनं तालवृन्तं स्याद् धवित्रं चर्मणा कृतम् ।  
 आलावर्तस्तु वस्त्रेण चामरं तु प्रकीर्णकम् ॥ १५६ ॥  
 पन्तद्वहः प्रतिग्राहो वालोऽस्त्री दारुणा कृतः ।  
 आसन्दी स्त्री नरि प्रेङ्खो दीपवल्ली तु दीपिका ॥ १६० ॥  
 दीपवृक्षस्तदाधारो दशा वर्तिरथ स्त्रियाम् ।  
 वर्तिर्गृहमणिर्दीपो गिरीयकगुडौ गिरिः ॥ १६१ ॥  
 दर्पणो मुकुरादशौ कन्दुको गण्डकः समौ ।  
 पादुकाऽनुपदीना स्यादुपानत् पादरक्षिणी ॥ १६२ ॥  
 उपला तु दृष्टपुत्रः शिला माता दृष्टसमाः ।  
 दर्विस्तु कम्बिस्तर्जः स्यात् खजाका दारुहस्तकः ॥ १६३ ॥  
 विष्टरं त्वासनं पीठं दारुजं वेत्रजं पुनः ।  
 आसन्दी मञ्चकः खट्वापाश्रयो मत्तवारणम् ॥ १६४ ॥  
 शय्या पर्यङ्कपल्यङ्कौ शयनं शयनीयवत् ।  
 प्रस्तरः संस्तरः शय्या रचिता पल्लवादिभिः ॥ १६५ ॥  
 कटः किलिञ्जो वर्णस्तु परिस्तोमः कुथा त्रयी ।  
 नमतं चाप्यास्तरणं प्रस्तरस्तूत्तरच्छदः ॥ १६६ ॥  
 उपधानं तूपबर्हमुच्छीर्षमुपबर्हणम् ।  
 संवापः शयनं स्वापः संवासो वासनं सह ॥ १६७ ॥  
 शयने शयसंवेशावुपशायोऽन्तिकेशयः ।  
 पर्यादेरथ पर्यायाः परिशायः समन्ततः ॥ १६८ ॥  
 कामध्वजः कामोत्सवः शृङ्गारः कामविक्रिया ।  
 परिरम्भः परिष्वङ्ग आश्लेष उपगूहनम् ॥ १६९ ॥  
 आलिङ्गनमपि क्रोडीकरणं चाङ्गपाल्यपि ।  
 ग्राम्यधर्मः कामकेली रतिर्निधुवनं रतम् ॥ १७० ॥  
 मेहनं मिथुनत्वं च समे निसनचुम्बने ॥ १७० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

षातालकाण्डे पुराध्यायः ॥ ३ ॥

### भूताध्यायः ॥ ४ ॥

भूतानि प्राणिनो जीवा जन्तवो जन्यवोऽङ्गिनः ।  
 पुंसः प्राक् त्रिषु गुल्माद्यमुद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ १ ॥  
 स्वेदजा दंशयूकाद्या नृपश्वाद्या क्षरायुजाः ।  
 अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः पुमांस्तु पुरुषो वृषः ॥ २ ॥  
 पूरुषो नाऽप्यथ क्लीबः पण्डः षण्डो नपुंसकम् ।  
 तृतीयाप्रकृतिश्चाथ पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ ३ ॥  
 स्त्री योषिल्ललना योषा वशा सीमन्तिनी वधूः ।  
 वनिता महिला नारी तद्भेदास्तु नितम्बिनी ॥ ४ ॥  
 प्रतीपदर्शिनी वामा प्रमदा भीरुरङ्गना ।  
 अबला भामिनी कान्ता कामिनी वामलोचना ॥ ५ ॥  
 सुन्दरी रमणी रामा वेणिनी चान्वितार्थकाः ।  
 कुमारी कन्यका कन्या किञ्चित्प्रौढा महोदया ॥ ६ ॥  
 अचिरव्यूढा तु वधूः पतिवरा तु स्वयंवरा वर्या ।  
 कुलपालिका कुलस्त्री कुल्याऽथ सती पतिव्रता साध्वी ॥ ७ ॥  
 स्त्रीव्यञ्जनकृता श्यामा चीरिणी तु सुवासिनी ।  
 प्रातर्तुर्दिक्करी राका युवतिस्तलुनी चरी ॥ ८ ॥  
 वधूटी च चिरण्टी च द्वितीयवयसि स्त्रियाम् ।  
 स्वैरिणी धर्षिणी पुंश्चल्यसती कुलदेत्वरी ॥ ९ ॥  
 बन्धकी पांसुला चर्चा चला नगना तु कोट्वी ।  
 भिक्षुकी श्रमणी मुण्डा तीव्रकोपा तु भामिनी ॥ १० ॥  
 विप्रशिनका त्वीक्षणिका दैवज्ञा प्रश्नवादिनी ।  
 कामुकेच्छुः कामुकी तु वृषस्यन्ती रतार्थिनी ॥ ११ ॥  
 वरारोहोत्तमा नारी सैव स्मन्मत्तकाशिनी ।  
 कामात् कान्तं याति याऽसावविनीताऽभिसारिका ॥ १२ ॥  
 अध्यूढा चाधिविन्ना च कृता यस्यः सपत्निका ।  
 वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसूः ॥ १३ ॥  
 पतिवली जीवपतिर्विश्वस्ता विधवाऽथ सा ।  
 कात्यायनी द्वितीयं चेद्वयः काषायमम्बरम् ॥ १४ ॥



उदक्या मलवद्वासा आत्रेयी पुष्पवत्यपि ।  
 रजस्वला च मलिना स्त्रीधर्मिण्यृतुमत्यपि ॥ १५ ॥  
 ऋतुः पुंस्यार्तवं रक्तं पुष्पं चाथानृतुर्वधूः ।  
 निष्कलाऽऽपन्नसत्त्वा तु स्यन्तर्वन्त्री च गर्भिणी ॥ १६ ॥  
 अद्यश्चोना तु सा या स्याद्य श्वः प्रसवोन्मुखी ।  
 विजाता तु प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १७ ॥  
 जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।  
 गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ १८ ॥  
 बालस्य नाभिनालायाममरा कालिनीति च ।  
 सूतिमासो वैजननो जीवतोका तु जीवसूः ॥ १९ ॥  
 बिन्दुर्नश्यत्प्रसूतिः स्यादशिष्वी शिशुवर्जिता ।  
 अवीरा निष्पतिसुता किमिला बहुसूतिका ॥ २० ॥  
 कुटुम्बिनी तु गृहिणी पुरन्ध्री मातृकेति च ।  
 वृद्धा पलिकनी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ २१ ॥  
 उपाध्यायान्युपाध्यायी शूद्रार्थी क्षत्रियीति च ।  
 आचार्यानी च पुंयोगादर्थार्थोण्यौ तु जातितः ॥ २२ ॥  
 क्षत्रिया क्षत्रियाणी च शूद्रा चेत्यपि जातितः ।  
 स्यादुपाध्याय्युपाध्यायाऽप्याचार्या च स्वयंकृता ॥ २३ ॥  
 पण्यस्त्री गणिका वेश्या वारस्त्री रूपजीवना ।  
 वारमुख्या सत्कृताऽसौ दूती सञ्चारिणी समे ॥ २४ ॥  
 कुट्टिनी शम्फली चुन्दी वयस्याली सखी सुहृत् ।  
 सैरन्ध्री परवेशमस्था स्वतन्त्रा शिल्पकारिणी ॥ २५ ॥  
 दासी तु चेटिका चेटा वडबा कुम्भधारिका ।  
 जनयित्री जनन्यम्बा माताऽथ भगिनी स्वसा ॥ २६ ॥  
 सा ज्येष्ठाम्बाऽप्यवन्ती च कनिष्ठा कन्यसाम्बिका ।  
 ननान्दा तु स्वसा पत्युः ननन्दा नन्दिनीति च ॥ २७ ॥  
 पत्न्यास्तु भगिनी ज्येष्ठा ज्येष्ठश्वश्रूः कुलीति च ।  
 कनिष्ठा स्थालिका हाली पत्रिणी केलिकुञ्चिका ॥ २८ ॥  
 बीजी तु जनको वप्ता तातो जनयिता पिता ।  
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ॥ २९ ॥  
 मातुर्मातामहाद्येवं तदूर्ध्वं वृद्धपूर्वकाः ।  
 दम्पत्योर्व्यत्ययान्माता श्वश्रूः स्यात् श्वशुरः पिता ॥ ३० ॥

सहजः स्वसरो भ्राता कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।  
 पूर्वजस्त्वग्रजो ज्येष्ठः पितृज्याः सहजाः पितुः ॥ ३१ ॥  
 ज्येष्ठतातः पितृज्येष्ठः क्षुल्लतातोऽनुजः पितुः ।  
 स्यालः स्यादनुजः पत्न्यास्तस्याः स्यादबलोऽग्रजः ॥ ३२ ॥  
 देवरो देवदेवानौ मातुर्भ्राता तु मातुलः ।  
 दम्पत्योराजिकोऽन्योन्यो वैमात्रेयो विमातृजः ॥ ३३ ॥  
 समानोदर्यसोदर्यौ सगर्भः सोदरः समाः ।  
 भार्या जाया सहचरी द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ३४ ॥  
 सधर्मचारिणी पाणिगृहीती पालुषी बधूः ।  
 पत्नी क्षेत्रं कलत्रं च गृहाः पुंभूमिं दारवत् ॥ ३५ ॥  
 जाया प्रजावती मातुर्ज्येष्ठभ्रातुः प्रिया वधूः ।  
 स्नुषा वधूर्जनी सूनोर्मातुलानी तु मातुली ॥ ३६ ॥  
 भ्रातृवर्गस्य या भार्या यातरस्ताः परस्परम् ।  
 रुच्यः प्रियः पतिर्भर्ता सेक्ता वरयिता धवः ॥ ३७ ॥  
 पतिर्ननान्दुः कौतूलो नशिको भगिनीपतिः ।  
 जारस्तु स्यादुपपतिर्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३८ ॥  
 वेश्यापतौ विद्गकुम्भभुजङ्गविटपल्लवाः ।  
 पुत्रस्तु तनयः सूनुरात्मजो नन्दनोऽङ्गजः ॥ ३९ ॥  
 सुतः पोतश्च पुङ्गवे नरो दुहितरि स्त्रियः ।  
 द्वयोश्च गर्भसन्तानौ प्रसवश्च नरः सदा ॥ ४० ॥  
 तोकापत्ये नपुं स्त्री तु प्रसूतिः सन्ततिः प्रजा ।  
 जामेयभागिनेयौ तु स्वस्त्रीयोऽथ पितृष्वसुः ॥ ४१ ॥  
 पुत्रे पैतृष्वसेयश्च पितृष्वस्त्रीय इत्यपि ।  
 एवं मातृष्वसुश्च द्वौ भ्रात्रीयो भ्रातुरात्मजः ॥ ४२ ॥  
 सौभागिनेयकानीनौ सुभगाकन्ययोः सुतौ ।  
 दास्या दासेयदासेरौ पौत्रलेयोऽसतीसुते ॥ ४३ ॥  
 बन्धुलबान्धकिनेयौ च कौलदेयश्च कौलदेरश्च ।  
 साध्वी तु भिक्षुकी चेत् कौलटिनेयश्च कौलदेयश्च ॥ ४४ ॥  
 पौनर्भवः पुनर्भूज उरस्यस्त्वौरसः स्वजः ।  
 नप्तरौ पौत्रदौहित्रौ प्रतिनप्ता प्रपौत्रकः ॥ ४५ ॥



परम्परस्तु तत्पुत्रस्तत्पुत्रोऽपि परम्परः ।  
 अयं पत्ययनोऽपि स्यात् कल्पनस्तु तदात्मजः ॥ ४६ ॥  
 सह प्रवाच्यौ भगिनीभ्रातरौ भ्रातराविति ।  
 मातापितरौ पितरौ मातरपितराविति प्रसूतातौ ॥ ४७ ॥  
 श्वश्रूश्चशुरौ श्वशुराविति पुत्राविति सुतापुत्रौ ।  
 जायापती तु मिथुने जम्पती दम्पती इति ॥ ४८ ॥  
 पितरस्तु पितुर्वश्या मातुर्मातामहाः कुले ।  
 अन्ववायोऽन्वयो वंशः सन्तानो जननं कुलम् ॥ ४९ ॥  
 राजबीजी राजवंश्यो बीज्यो वंश्यश्च वंशजः ।  
 स्युर्जातयः सगोत्राश्च सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ५० ॥  
 स्वजनो बान्धवो बन्धुः कुटुम्बन्तु सुतादिकम् ।  
 परिवारः परिजनः परिस्पन्दः परिग्रहः ॥ ५१ ॥  
 देहोऽस्त्री स्त्री तनुर्गात्रं क्षेत्रमङ्गं कलेबरम् ।  
 चतुश्शाखं संहननं शरीरं करणं सिनम् ॥ ५२ ॥  
 बन्धः प्रजानुकः कायो भूषणः सञ्चरोऽपि च ।  
 प्राया वयांस्यस्य दशास्तारुण्यं यौवनं वयः ॥ ५३ ॥  
 ज्यानिर्जीर्णिः स्थाविरं तु पात् स्त्री विस्त्रंसजा जरा ।  
 शिशुत्वं शैशवं बाल्यं सामुद्रं देहलक्षणम् ॥ ५४ ॥  
 गात्राण्यङ्गानि चास्यांशाः प्रतीकापघनावपि ।  
 अंशस्त्ववयवो भाग एकदेशः कलेति च ॥ ५५ ॥  
 भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।  
 अस्त्री चरणमङ्घ्रिर्ना पत् पादः क्रमणं पदम् ॥ ५६ ॥  
 तद्वन्थी घुटिकौ गुल्फौ प्रपदं चरणाग्रकम् ।  
 गुल्फशीर्षस्त्विन्द्रवस्तिः कूर्चस्त्वङ्गुष्ठकान्तरम् ॥ ५७ ॥  
 पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमध्ये क्षिप्रं क्षेत्रमस्त्रियाम् ।  
 प्रसृता जाघनी जङ्घा पिण्डिका स्यात् पिचिण्डिका ॥ ५८ ॥  
 नलतीरं तूरुपर्व जानुरष्टीवदस्त्रियौ ।  
 सक्थि क्लीबं पुमान् वोरुरुरुमूलानि वङ्गणाः ॥ ५९ ॥  
 अङ्गस्तूपस्थ उत्सङ्गः पीठीवं त्वण्डमूलकम् ।  
 पायुस्तु ना गुदापाने त्रिवलीकं बुलिश्च्युतिः ॥ ६० ॥

शङ्कुर्महः शोफकोशौ शिशनं मेहनशोफसी ।  
 पुषो भगं कामपदमक्ली योनिश्च्युतिर्बुलिः ॥ ६१ ॥  
 उक्तद्वयमुपस्थोऽस्त्री गुह्यप्रजनने नपुम् ।  
 सीवन्यस्मादधःसूत्रं गुह्यमध्यं गुडो मणिः ॥ ६२ ॥  
 धारका गुह्यधारायां पुष्फिका गुह्यजे मले ।  
 अस्त्रियो मुष्ककोशाण्डाः फेलुको वृषणोऽण्डुकः ॥ ६३ ॥  
 काञ्चीपदं कलत्रं च कटिः श्रोणिः ककुब्धनी ।  
 पुरोभागोऽस्य जघनो नितम्बोऽपरभागकः ॥ ६४ ॥  
 ऊखौ पुंसि कटिप्रोथौ पूलकौ च स्फिचौ स्त्रियौ ।  
 कुकुन्दरे कटीकूपौ कटौ तु कटिशीर्षकौ ॥ ६५ ॥  
 वंशस्तु पृष्ठमध्यास्थि ( मूलभागोऽस्य तु त्रिकम् ) ।  
 मूत्राशयो वस्तिरक्ली नाभिर्नाभी प्रतारिका ॥ ६६ ॥  
 कुक्षिको मलुकस्तुन्दं जठरं चोदरं न ना ।  
 अवलग्नवलग्रौ तु मध्यमो मध्यमस्त्रियाम् ॥ ६७ ॥  
 हृदयं हृदुरो वक्षः स्तनो वक्षसिजः कुचः ।  
 स्तनाग्रे पिप्पलं वृन्तं चूचुकं मेचकं शिखा ॥ ६८ ॥  
 न क्ली कक्षा बाहुमूलं पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।  
 पश्चिमाङ्गं तनोः पृष्ठमंससन्धी तु जत्रुणी ॥ ६९ ॥  
 उल्लखलं तु सन्धिः स्यात् कक्षाया वङ्गणस्य च ।  
 कण्ठेगुडः कण्ठमणिरंसान्तौ पीठबन्धनौ ॥ ७० ॥  
 स्कन्धो दोशिशखरोऽसोऽस्त्री बाहा बाहुभुजौ न षण् ।  
 दोर्न स्त्री करपोणिर्ना हरणः करणः प्लवः ॥ ७१ ॥  
 प्रवेष्टश्च कफोण्यां तु कूर्परः कफणिर्न षण् ।  
 प्रगण्डः कूर्परादूर्ध्वं प्रकोष्ठः कूर्परादवाक् ॥ ७२ ॥  
 मणिबन्धो मणिः पाणिमूले पाणौ करः शयः ।  
 पञ्चशाखस्तलो हस्तस्तर्जनी तु प्रदेशिनी ॥ ७३ ॥  
 अनामिका तु सावित्री कनिष्ठा तु कनीनिका ।  
 ज्येष्ठा तु मध्यमाऽङ्गुष्ठस्त्वङ्गुलोऽथाङ्गुलिः स्त्रियाम् ॥ ७४ ॥  
 करशाखाऽथ करभो मध्यं मणिकनिष्ठयोः ।  
 तीर्थानि हस्तावयवा नखरस्तु नखोऽस्त्रियाम् ॥ ७५ ॥



पुनर्भवः पाणिरुहो महाराजः पुनर्भवः ।  
 खरूलः करजश्चाथ स प्रवृद्धः स्मराङ्कुशः ॥ ७६ ॥  
 चपेटश्चर्पटस्तालः प्रहस्तः प्रतलस्तलः ।  
 षट् ते तताङ्गुले हस्ते न्युब्जेऽस्मिन् प्रसृते करे ॥ ७७ ॥  
 तौ संहतौ संहतलः सोऽञ्जलिः करभावपि ।  
 प्रसृते तु द्रवाधारे गण्डूषश्चुलकश्चुलः ॥ ७८ ॥  
 पताकः कुञ्चिताङ्गुष्ठे संश्लिष्टप्रसृताङ्गुलौ ।  
 अक्लीबौ मुष्टिमुस्तू द्वौ सङ्ग्राहो मुचुटिः स्त्रियाम् ॥ ७९ ॥  
 घण्टाङ्गुष्ठेन भिन्ना सा खेटकस्त्वर्धमुष्टिकः ।  
 प्रदेशतालगोकर्णा वितस्तिः स्त्री यथाक्रमम् ॥ ८० ॥  
 तर्जन्यादिभिरङ्गुष्ठे वितते विततैः सह ।  
 अवटोमनहस्तः स्यात् सप्रकोष्ठं तताङ्गुलिः ॥ ८१ ॥  
 दन्नद्वयसमात्रास्तु जान्वादेस्तत्तदुन्मिते ।  
 व्यायामो न्यग्रोधो व्यासश्च भुजौ प्रसारितौ तिर्यक् ॥ ८२ ॥  
 त्रिषु तु परे चत्वारः पौरुषमुद्राहुपुम्माने ।  
 गलो निगारणः कण्ठो गरो ग्रीवा तु कन्धरा ॥ ८३ ॥  
 शिरोधरावशुषिरा शिरोधिव्यापलण्डिका ।  
 कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा शिरःपीठः कृकाटिका ॥ ८४ ॥  
 घाटाऽप्यवदुरक्लीब उत्तमाङ्गं पुनः शिरः ।  
 उष्णीषं शीर्षमक्षत्रं पुंसि मूर्ध्ना च मस्तिकः ॥ ८५ ॥  
 मुण्डोऽस्त्री मस्तकोऽप्यस्त्री मुखं तु वदनं घनम् ।  
 तेरं तुण्डं वक्त्रमास्यमाननं च द्विजालयम् ॥ ८६ ॥  
 ओष्ठस्याधस्तु चिबुकं चुबुकं चबुकं च तत् ।  
 अधरस्त्वधरोष्ठः स्यादोष्ठो दन्तच्छदोऽपि च ॥ ८७ ॥  
 दन्तवस्त्रं च तत्प्रान्तौ सृक्कणी दशनाः पुनः ।  
 रदनाः खादना दन्ता दंशा मल्ला रदा द्विजाः ॥ ८८ ॥  
 मध्यदन्ता राजदन्ता दंष्ट्रा तत्पार्श्वयोर्द्वयोः ।  
 तत्पार्श्वयोः स्थिता दन्ता जम्भास्तालु तु काकुदम् ॥ ८९ ॥  
 रसज्ञा रसना जिह्वा राजिः सूनाऽप्यधः स्थिता ।  
 गण्डो गल्लः कपोलश्च तत्परा तु हनुर्न षण् ॥ ९० ॥

वक्रो नकुटकं घ्राणं घोणा नासा विघूणिका ।  
 शिङ्गाणी नासिका चाथ धमनौ नासिकापुटौ ॥ ९१ ॥  
 नासाग्रे दृष्टिबन्धोऽथ शिङ्गाणो नासिकामलः ।  
 पिण्डूषः कर्णजमलः कर्णः शब्दग्रहः श्रवः ॥ ९२ ॥  
 पैण्डूषोऽस्त्री श्रुतिः श्रोत्रं श्रोतश्च श्रवणं श्रवः ।  
 पालिस्तु कर्णलतिका वेष्टनं कर्णशङ्कुली ॥ ९३ ॥  
 ईक्षणं नयनं चक्षुरक्षि लोचनमम्बकम् ।  
 दृष्टिर्दृक् चाथ न पुमांस्तारकाक्षः कनीनिका ॥ ९४ ॥  
 बल्गु पद्म च दृग्लोमिन् दृक्छदो वर्त्मवर्त्मनी ।  
 बिडालको नेत्रपिण्डो दूषिका त्वक्षिजं मलम् ॥ ९५ ॥  
 ललाटमलिकं गोधिः स्त्री तत्प्रान्तौ तु शङ्खकौ ।  
 भ्रूमिल्लिकाऽथ शिरसः पृष्ठे नापितकोलिका ॥ ९६ ॥  
 जटुले कालकः पिप्लुस्तिलके तिलकालकः ।  
 तनूरुहं रोम लोम केशाः शिरसिजाः कचाः ॥ ९७ ॥  
 वालाः कञ्जास्तीर्थवाहाः कुन्तलाश्च शिरोरुहाः ।  
 कुञ्चितास्ते कर्कराला बर्बरा अलका अपि ॥ ९८ ॥  
 ते ललाटे भ्रमरकाः कुरुला भ्रमरालकाः ।  
 पर्पर्या स्याद्वल्लरीका मल्लर्या मम्पटिः क्षुवः ॥ ९९ ॥  
 केशकूटस्तु धम्मिल्लः कबरी कर्परी समे ।  
 चोचुस्तु वालकूर्चालः सीमन्तः केशपद्धतिः ॥ १०० ॥  
 तद्वन्थिः सन्धितोऽथ प्ता जालिनी गरुडा जटा ।  
 प्रलोभ्यं तु शिरस्यं च शीर्षण्यं चामलाः कलाः ॥ १०१ ॥  
 चूडा केशी केशपाशी शिखण्डी कमुजा शिखा ।  
 बालानां सा काकपक्षः शिखण्डश्च शिखण्डकः ॥ १०२ ॥  
 श्मश्रु तु व्यञ्जनं चोटः समे शिङ्गाणशिङ्गिनी ।  
 त्वक् स्त्री छदिस्तनुः कृत्तिः संछादन्यप्यसृग्धरा ॥ १०३ ॥  
 रसस्तु घनधातुः स्यादात्रेयः षड्रसासवः ।  
 मूलधातुर्वहिसुतो महाधातुरसृक्करः ॥ १०४ ॥  
 रुधिरं लोहितं रक्तमस्त्रं क्षतजमासुरम् ।  
 राक्थं शोध्यं मांसकरं रसतेजो रसोद्भवम् ॥ १०५ ॥



आग्नेयं प्राणदं विस्त्रं वासिष्ठं शोणितासृजी ।  
 मांसं तु काश्यपं क्रव्यं तरसं पललं पलम् ॥ १०६ ॥  
 रक्ततेजो रक्तभवं पिशितं कीनमामिषम् ।  
 मेदस्करं च मेदस्तु पलतेजः पलोद्भवम् ॥ १०७ ॥  
 विस्त्रमस्थिकरं स्नेहवरं गौतममित्यपि ।  
 अथास्थि कीकसं विडुं कललं कूरमादिकम् ॥ १०८ ॥  
 कुल्यं मेदोभवं मेदस्तेजो मज्जाकरं बलम् ।  
 भारद्वाजं श्वदयितं सारसङ्घातकर्कराः ॥ १०९ ॥  
 मज्जा स्त्री कौशिकं सूक्ष्ममस्थितेजोऽस्थिसम्भवम् ।  
 अस्थिस्नेहो वीर्यकरो मज्जतेजस्विनौ बली ॥ ११० ॥  
 रेतो बीजं वरं वीर्यं हर्षजं स्नेहु पौरुषम् ।  
 शुक्लं प्रधानधातुश्च धातवोऽमी नवाष्ट वा ॥ १११ ॥  
 तिलकं ह्योम गोर्दं तु मस्तिष्को मस्तुलुङ्गकः ।  
 पेशिर्मांसलताऽथ द्वौ वृक्यौ पार्श्वगतौ गुडौ ॥ ११२ ॥  
 अस्त्री परीतदान्त्रं स्यात् कालखण्डं पुनर्यकृत् ।  
 गुल्मः प्रीहा च डिम्बः स्यादष्टीला गर्भसम्पुटः ॥ ११३ ॥  
 अग्रमांसं तु हृदयं हृद्वसा त्वामिषो रसः ।  
 कङ्कालोऽस्त्री तनोरस्थि करङ्कोऽप्यस्थिपञ्चरम् ॥ ११४ ॥  
 पार्श्वस्य वङ्किः पश्वस्त्री पृष्ठस्यास्थि कशेर्बना ।  
 कर्परो ना करोटिः स्त्री कपालोऽस्त्री शिरोऽस्यनि ॥ ११५ ॥  
 शाखास्थि नलकं जानोरष्टी स्यात् कूर्परस्य च ।  
 धमनी त्वीलिका नाली सिरा दोषप्रणालिका ॥ ११६ ॥  
 ग्रीवायास्तु शिरा मन्या महास्नायुस्तु कन्धरा ।  
 नखारुस्तु स्नसा स्नावः स्नाय्वना सन्धिबन्धनम् ॥ ११७ ॥  
 लसीका लसिका रक्तसमांसविपाकजाः ।  
 पूयं तु कुणपं दूष्यं पुरीषं शमलं शकृत् ॥ ११८ ॥  
 उच्चारो विणन ना गूथो वर्चस्को मलमस्त्रियाम् ।  
 विष्ठा चाप्यथ लण्डोऽस्त्री विष्ठा राजियुता दृढा ॥ ११९ ॥  
 प्रस्रावो देहवारि स्यान्मूत्रमेकाङ्गुलं च तत् ।  
 सृणिका स्यन्दिनी लाला मलं किट्टं च न स्त्रियाम् ॥ १२० ॥

पित्तं मायुर्नरि श्लेष्मा बलासः खेटकः कफः ।  
 क्षुत् स्त्री क्षुतः क्षवः पुंसि प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ १२१ ॥  
 दध्नुः परितापः स्याद् ग्लानिः स्त्री ग्लवधुः पुमान् ।  
 शोफोऽस्त्री श्वयधुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ १२२ ॥  
 स्फोटकः कीलको गण्डो विस्फोटः पिटका त्रयी ।  
 खसः पुमान् स्त्रियः कच्छूपामपामाविचचिकाः ॥ १२३ ॥  
 कण्डूकण्डूतिकण्डूयाः खर्जुः कण्डूयने स्त्रियः ।  
 यक्ष्मा यक्ष्मः क्षयः शोषः कोठः कुष्ठं च मण्डलम् ॥ १२४ ॥  
 श्वित्रं श्वेतेऽत्र चक्रं तु ददुः स्त्री मुखजः पुनः ।  
 पुंहलोऽपि वरण्डोऽपि व्यङ्गो नीलं पृष्णमुखे ॥ १२५ ॥  
 मङ्कुस्तु सिद्धम सिद्धं च केशघ्नं त्विन्द्रलुप्तकम् ।  
 उद्गालो वमथूद्गारौ वान्तिः प्रच्छदिका वमिः ॥ १२६ ॥  
 भ्रिणिका वातसञ्चारो हिक्का हेक्का च हिक्किका ।  
 उच्छ्वासरोधो योऽकस्मात् क्राथोऽसौ कथनं क्षणम् ॥ १२७ ॥  
 अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् प्रमेहस्त्वतिमूत्रतः ।  
 आनाहो मलविष्टम्भ उत्थानं तु मलस्रुतिः ॥ १२८ ॥  
 नातिभिन्नस्त्वतीसारो ग्रहणी स्त्री प्रवाहिका ।  
 गलगण्डो गण्डमालो रोहिणी तु गलाङ्कुरः ॥ १२९ ॥  
 गुल्मः स्यादुदरग्रन्थिः सीवनीजो भगन्दरः ।  
 शम्बूकावर्त एष स्यात् त्रिदोषोत्थोऽथ पित्तजः ॥ १३० ॥  
 स्यादुष्टग्रीवकोऽथ स्त्री परिस्त्रावी कफोद्भवः ।  
 अशौ दुर्नाम वृद्धिस्तु कुरण्डश्चाण्डवर्द्धने ॥ १३१ ॥  
 उपदंशो लिङ्गशोफ उदावर्तो गुदग्रहः ।  
 नेत्ररुक् कामला ह्रीबं कुम्भः स्यात् सा महत्तरा ॥ १३२ ॥  
 श्लेष्मदः पदवल्मीको गतिर्नाडीव्रणः पुमान् ।  
 अर्बुदो मांसकीलः स्यात् पृष्ठग्रन्थिर्गुडो गडुः ॥ १३३ ॥  
 सुप्तः कुक्कुट एकाङ्गग्रहश्च वरुणग्रहः ।  
 गजे ज्वरस्य नामानि सिंहे तोये च सोऽण्डिकः ॥ १३४ ॥  
 उष्ट्रे लसोऽभितापोऽश्वे व्याघ्रे पोतो गवीश्वरः ।  
 बिडाले कणकः पोत्रिण्यलसः छर्दनः शुचिः ॥ १३५ ॥



क्रमाद्धारिद्रेन्द्रमदौ मृगरोगौ पपा ततः ।  
 महिषे मत्स्यमृगयोः खगे चाक्षेपकोऽनिले ॥ १३६ ॥  
 धरण्यां करकोत्पाटावुद्भिजे पाण्डुवर्णकः ।  
 मारिर्मसूरी रुग्भेदाः शूलाद्या विद्रधिर्न षण् ॥ १३७ ॥  
 व्याधिव्याप्यामया माथरोगामा देहमर्दनः ।  
 सन्तापोऽपाटवं मान्यमाकुल्यं रुध्रजे स्त्रियौ ॥ १३८ ॥  
 उपचर्या चिकित्सा स्याल्लङ्घनं त्वपतर्पणम् ।  
 कुशी भग्नास्थिबन्धः स्यादरिष्टो दंशबन्धनम् ॥ १३९ ॥  
 पट्टस्तु व्रणबन्धः स्यान्नस्यं नस्तं च नावनम् ।  
 अङ्गुल्यग्रेण चूर्णौघैर्घर्षणं प्रतिसारणम् ॥ १४० ॥  
 जायुः पुंस्यगदस्तन्त्रं भैषज्यौषधभेषजम् ।  
 काथः कषायो निर्यूहः फाण्टोऽतिक्वाथजो रसः ॥ १४१ ॥  
 काथादेस्तु पुनः काथाद् घनीभावो रसक्रिया ।  
 वार्त पाटवमारोग्यं सङ्गन्धं स्वास्थ्यमनामयम् ॥ १४२ ॥  
 त्रिष्वतः पटुरुल्लाघो वार्तः कल्यो निरामयः ।  
 रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यश्चिकित्सकः ॥ १४३ ॥  
 निदानज्ञस्तु दोषज्ञ आयुर्वेदी तु शास्त्रवित् ।  
 आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तो विकृतो व्याधितोऽपटुः ॥ १४४ ॥  
 आमयावी समौ ग्लास्तुग्लानौ पामनकच्छुरौ ।  
 वाताशोदद्रुमन्तः स्युर्वातलार्शसदद्रुणाः ॥ १४५ ॥  
 श्लेष्मसूः श्लेष्मलः खेटी सातिसारोऽतिसारकी ।  
 किलासी सिध्मलो वृद्धनाभौ तुन्दिभतुन्दिनौ ॥ १४६ ॥  
 खलवाटः खलतिर्बध्नुः शिपिविष्टैन्द्रलुप्तिकौ ॥ १४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे भूताध्यायः ॥ ४ ॥

चतुर्थः पातालकाण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

## ५. अथ सामान्यकाण्डः

गणाध्यायः ॥ १ ॥

पूगप्रकरसङ्घातविसरव्रातसञ्चयाः ।  
 वारस्कन्धगणस्तोमसमवायचयव्रजाः ॥ १ ॥  
 सन्दोहनिवहव्यूहसमूहनिकराकराः ।  
 समुदायः समुदयो निकुरुम्बं कदम्बकम् ॥ २ ॥  
 वृन्दं जातं चक्रवालं जालकं पेटकं जटा ।  
 धान्यादिवृन्दे कूटोऽस्त्री राशिपुञ्जोत्करा नरि ॥ ३ ॥  
 वृन्दे तिरश्चां यूथोऽस्त्री निकायस्तु सधर्मणाम् ।  
 सङ्घसार्थौ तु जन्तूनां वर्गस्तु सदृशां गणे ॥ ४ ॥  
 पशूनां समजोऽन्येषां समाजो धीमतां सभा ।  
 उद्भिज्जानां तु षण्डोऽस्त्री स्कन्धोऽश्वनरहस्तिनाम् ॥ ५ ॥  
 पटल्यपुं सुश्लिष्टानां सजातीयगणे कुलम् ।  
 शौककापोतशावाद्याः शुकादीनां गणे नपुम् ॥ ६ ॥  
 क्ली गोत्रप्रत्ययान्तेभ्यः स्यादौपगवकादिकम् ।  
 माणवानां तु माणव्यं बाडव्यं तु द्विजजन्मनाम् ॥ ७ ॥  
 राजन्यकं मानुष्यकं राजकं च पृथक् पृथक् ।  
 गार्भिणं यौवनं तासां गाणिक्यं गणिकागणे ॥ ८ ॥  
 जनबन्धुगजग्रामसहायानां गणे स्त्रियः ।  
 जनताबन्धुतेत्याद्या बाडवं बडवागणे ॥ ९ ॥  
 हास्तिकमौष्ट्रकमौक्षकमौरश्चक्रमाजकं गजादीनाम् ।  
 एवं धैनुकवात्सकमाश्वीयं त्वाश्वमश्वानाम् ॥ १० ॥  
 सवर्मणां कावचिकं पादातं पादचारिणाम् ।  
 आपूपिकं शाकुलिकमित्यादिकमचेतसाम् ॥ ११ ॥  
 कैदारिकं तु कैदार्यं क्षेत्रं कैदारकं समम् ।  
 केशानां कैशिकं कैश्यं खल्या तु खलिनी समे ॥ १२ ॥  
 भैक्षसाहस्रकारीषवार्मणानि च तद्गणे ।  
 रथकट्या तु रथ्या स्याद् गोत्रा गव्या च गोगणे ॥ १३ ॥



धूम्या वात्या पाश्या हल्या गल्या नट्या वन्या तृण्या ।  
 पृष्ठ्यं तत्तद्वृन्दे सर्वं पार्श्वं वृन्दे पर्शूनां स्यात् ॥ १४ ॥  
 मिथुनं द्वितयं द्वैतं द्वयं द्वन्द्वं युगं यमम् ।  
 यमलं युगलं युगमं युतकं च द्वयोगे ॥ १५ ॥  
 त्रयं त्रयाणां त्रितयं मिथुनं तद्वति त्रिषु ।  
 स्त्रीपुंसयोस्तु मिथुनं कशिपुः स्यन्नवस्त्रयोः ॥ १६ ॥  
 औशीरं शय्यासनयोलिङ्गं बुद्ध्यादिसङ्गतौ ।  
 ग्रामः परोऽस्त्राद्विषयाद् (गुणाद्) भूतेन्द्रियार्थकात् ॥ १७ ॥  
 पक्षः पाशश्च हस्तश्च केशार्थेभ्यः परो गणे ।  
 पशूनां गोयुगं युग्मे तत्तदाह्वयपूर्वकम् ॥ १८ ॥  
 गणपूरणं गणतिथं पूगतिथं चैवमेव सङ्गतिथम् ।  
 बहुतिथिसंवत्सरतममासतमान्यर्धमासतमम् ॥ १९ ॥  
 यावतिथैतावतिथे तावतिथं कतिथमपि च कतिपयथम् ।  
 पञ्चमसप्तमनवमान्यष्टमदशमद्वितीयानि ॥ २० ॥  
 षष्ठं प्रथमतृतीये तुरीयतुर्ये चतुर्थश्च ।  
 द्वादशमेकादशमिति रूपं स्याद् विंशतेरर्वाक् ॥ २१ ॥  
 विंशं विंशतितममेकविंशमिति वत्परं द्विधा सर्वम् ।  
 षष्टितममिति वदेकं रूपमसङ्ख्यादिषष्ट्यादेः ॥ २२ ॥  
 शततममेकशततमं सहस्रतममिति च सर्वमेकविधम् ।  
 ओजमयुगमं युगमं युगिति द्वितीयतुर्यादि ॥ २३ ॥  
 त्रिष्वेते पूरणार्थाः स्युः शब्दा गणतिथादयः ।  
 आवलिः पद्धतिः पङ्क्तिरालिलेखा च मालिका ॥ २४ ॥  
 एकादयश्च सङ्ख्येये शब्दाः प्राग्विशतेस्त्रिषु ।  
 द्वित्रा द्वौ वा त्रयो वा स्थुरेवं त्रिचतुरा अपि ॥ २५ ॥  
 चतुःपञ्चाः पञ्चषाश्च षट्सप्ताद्याश्च तादृशाः ।  
 स्त्री पङ्क्तिर्विंशतिस्त्रिंशच्चत्वारिंशच्च पञ्चाशत् ॥ २६ ॥  
 षष्टिः सप्तत्यशीतिश्च नवतिश्च दशोत्तराः ।  
 क्रमेणैव परेणैव परे दशगुणोत्तराः ॥ २७ ॥  
 शतं सहस्रमयुतं नियुतं प्रयुतार्बुदे ।  
 न्युर्बुवं वृन्दस्वर्वं च निस्वर्वं शङ्खमम्बुजम् ॥ २८ ॥

समुद्रो मध्यमन्तं च परार्धं च यथाक्रमम् ।  
 परं परार्धाद् द्विगुणमथ स्त्री कोटिरर्बुदे ॥ २९ ॥  
 व्यत्यासेन च दृश्येते नियुतप्रयुते कचित् ।  
 वृन्दादिषु तु षट्स्वन्ये निस्वर्वं बद्धमक्षितम् ॥ ३० ॥  
 व्योम चान्तश्च सर्वश्च समुद्राद्यास्तु वा त्रिषु ।  
 अन्ये त्वाहुः शतं कोटिः शङ्खवृन्दं महागुणः ॥ ३१ ॥  
 पद्मं महाम्बुजं चेति क्रमाक्षगुणोत्तरम् ।  
 सहस्राणां शते लक्षा लक्षं च नियुतश्च तत् ॥ ३२ ॥  
 पङ्क्त्यादयः स्युः संख्यायां संख्येयेषु च वस्तुषु ।  
 संख्यायां द्व्येकबहुताः संख्येयेषु सदैकता ॥ ३३ ॥  
 तद्यथा विंशतिर्गावः स्वावृत्तौ जातु नैकता ।  
 तद्यथा विंशतिर्विप्रास्तिस्रो विंशतयो भटाः ॥ ३४ ॥  
 बहुव्रीहौ बहुवचो वाच्यलिङ्गं च तद्यथा ।  
 उपविशैर्भुजैर्भुक्तमुपत्रिंशा अजा इति ॥ ३५ ॥  
 कला गणनसंख्याने हननं ताडनं समे ।  
 वर्गस्तावत्कृतिश्चेति तावत्कृत्वः कृतेर्द्वयम् ॥ ३६ ॥  
 तन्मूले तु पुमान् हेतुर्गच्छा वाञ्छितराशयः ।  
 गण्डः कपर्दाश्चत्वारस्ते बोधो पञ्च तद्द्वयम् ॥ ३७ ॥  
 बिन्दुकोऽस्त्री तद्द्वये तु पणपाणिकपादिकाः ।  
 क्रमात्ततोऽङ्गजो रुच्यः कार्षिकश्च चतुर्गुणाः ॥ ३८ ॥  
 कार्षापणः कार्षिकः स्यात् स षोडशपणः कचित् ।  
 लोहे विंशतिमाषोऽसौ कार्षिके ताम्रिके पणः ॥ ३९ ॥  
 ताम्रकर्षकृता मुद्रा कचित् कार्षापणः पणः ।  
 स एव चाधिकेत्युक्ते धानका तच्चतुष्टयम् ॥ ४० ॥  
 ता द्वादश सुवर्णोऽस्त्री निष्को दीनार इत्यपि ।  
 साशीतिपणसाहस्रो दण्ड उत्तमसाहसः ॥ ४१ ॥  
 त्रसरेणुभिरष्टाभिलिङ्गा सैव मरीचिका ।  
 रथरेणुश्च रेणुश्च तास्तिस्त्रो राजसर्षपः ॥ ४२ ॥  
 धुरणश्च यवाग्रश्च ते त्रयो गौरसर्षपः ।  
 तेऽष्टौ यवः षोडश तु यवा माषोऽथवा त्रिभिः ॥ ४३ ॥



यवैर्गुञ्जा पञ्च गुञ्जा माषः कुप्ये तु सप्त ताः ।  
 रूप्यमाषो द्विगुञ्जो वा धरणं षोडशैव ते ॥ ४४ ॥  
 शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च ।  
 माषस्तण्डुलमात्रो वा हेम्नस्तैरष्टभिः पणः ॥ ४५ ॥  
 निष्कोऽस्त्री विंशतिपणस्तेऽष्ट वा दश वा पलम् ।  
 यः पञ्चकृष्णलो माषः कुप्ये वा सप्तकृष्णलः ॥ ४६ ॥  
 तौ द्वौ माषावर्णिका स्याज्जोहितीकं त्रिमाषकम् ।  
 शाणो मण्डः पिचूलं च माषाः स्युश्चतुरादयः ॥ ४७ ॥  
 मधुणं सप्तमाषं स्यादण्डिका तच्चतुर्थवा ।  
 द्रक्षुणं द्रक्षुमं कोलं वटकं चाष्टमाषके ॥ ४८ ॥  
 तृतीये ध्वानका शाणभागे माषास्तु षोडश ।  
 सुवर्णोऽक्षः पिचुः पाणिः कर्षोऽस्त्री क्रोडबिन्दुके ॥ ४९ ॥  
 बिडालपादकं हंसपदं ग्रासग्रहं तलम् ।  
 शतमानं तु कर्षे द्वे शुक्तिरष्टमिका न ना ॥ ५० ॥  
 ते द्वे चतुर्थिका वा क्ली निकुञ्च्याज्यपलानि च ।  
 बिल्वः प्रकुञ्चं मुष्टिश्च हेम्नोऽस्ते विस्तवारटौ ॥ ५१ ॥  
 पादिकं ताम्रकर्षं स्यादिन्दुः स्याद्रजते पले ।  
 कुरुविस्तः पले हेम्नः प्रसृतोऽस्त्री द्विमुष्टिके ॥ ५२ ॥  
 प्रसृतौ द्वावज्जलिः स्यात् कुडपो वाहिकोऽध्युषः ।  
 तौ द्वौ मान्यष्टमानं च ते द्वे प्रस्थः स कुप्यके ॥ ५३ ॥  
 द्वात्रिंशत्पलकोऽन्येषां द्वादशैव पलानि सः ।  
 चतुष्प्रस्थः पुना राशिर्महोद्रेको बृहाणकः ॥ ५४ ॥  
 पात्रं शूर्पावरं पिष्टं सेहिका द्वाढकोऽस्त्रियाम् ।  
 कंसं चाथ चतुष्के स्युर्द्रोणोऽस्त्री कलशो घटः ॥ ५५ ॥  
 अमर्णं नल्वलं शौर्पमुन्मानं तद्द्वयं पुनः ।  
 कुम्भः शूर्पोऽस्त्रियां तौ द्वौ गोणी वाहस्तु तद्द्वयम् ॥ ५६ ॥  
 तौ द्वौ खारी परे त्वेनां विदुः कुम्भीं परे पुनः ।  
 खारीं कंसयुगेनान्ये मानीं वाहं परे विदुः ॥ ५७ ॥  
 वाहं केचिच्चतुःखारी खारीभागं च गोणिकाम् ।  
 वाहं प्रस्थद्वयं केचित् कुम्भानां विंशतिर्जटी ॥ ५८ ॥

दश कुम्भाः पाञ्चमिकः कुम्भोऽयमिति केचन ।  
 धारणं तु पलान्यष्टौ हेम्नस्तान्नस्य सप्ततिः ॥ ५९ ॥  
 दशान्येषां शतं मानं साधै रूप्यपलैस्त्रिभिः ।  
 तुला पलशतं तास्तु दशार्धं घटिकोऽस्त्रियाम् ॥ ६० ॥  
 तौ तु द्वौ शाकटो भारः शाकटीनः शलाटवत् ।  
 भारा दश समं सङ्गं धारभारं च शाकटम् ॥ ६१ ॥  
 आचितं द्वायाचितं होढं हेलकं समकं समम् ।  
 वाहितं भारितं चाष्टावृक्षादशगुणाः क्रमात् ॥ ६२ ॥  
 माषः शाणस्तलं मुष्टिरज्जलिः प्रस्थ आढकः ।  
 द्रोणो गोणी च खारी च क्रमादेतच्चतुर्गुणम् ॥ ६३ ॥  
 पाय्यं हस्तादिभिर्मानं द्वयं कुडबादिभिः ।  
 पौतवं तुलया तस्य सूत्रं स्याद्रागसूत्रकम् ॥ ६४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे गणाध्यायः ॥ १ ॥



## धर्मकर्मध्यायः ॥ २ ॥

रूपं तत्त्वं सतत्त्वं च स्वरूपं च सलक्षणम् ।  
 सहजं निजमाजानं धर्मसगौ निसर्गवत् ॥ १ ॥  
 स्वभावः प्रकृती रीतिरवस्था तु दशा स्थितिः ।  
 प्रभावः प्रभवन्ती स्यात् प्रभुता प्रभविष्णुता ॥ २ ॥  
 परभागो गुणोत्कर्षः प्राग्भारोऽतिशयो भरः ।  
 विस्तारो विग्रहो व्यासः स तु शब्दस्य विस्तरः ॥ ३ ॥  
 अनायासार्थकं फाण्टं दौर्मत्यं तु करैरकम् ।  
 विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहो रोषे त्वादीनवाश्रवौ ॥ ४ ॥  
 दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ।  
 वैपरीत्यं विपर्ययो व्यत्ययश्च विपर्ययः ॥ ५ ॥  
 व्यत्यासो व्यतिहारः स्यादन्तर्गडु निरर्थकम् ।  
 तत्क्षणं स्यादेकपदं यदृच्छा नियमोऽस्मिन् ॥ ६ ॥  
 वण्टो विभागो भागोऽशः पादस्त्वंशश्चतुर्थकः ।  
 कला तु षोडशो भागो वारस्त्ववसरः क्षणः ॥ ७ ॥  
 प्रतिकूलानुकूलार्थे अपष्ठुरमपष्ठु च ।  
 पृष्ठमांसादनं पश्चाद् गतस्यार्थस्य गर्हणम् ॥ ८ ॥  
 आग्नेडनं ऋटप्पः स्याज्जम्पः सम्पातपाटवम् ।  
 कर्म क्रियाऽप्यनुष्ठानं तद्भेदा गमनादयः ॥ ९ ॥  
 यात्रा व्रज्या च गमनं प्रस्थानं च गतिर्गमः ।  
 चक्रावर्तो भ्रमो भ्रान्तिर्भ्रमिर्घूर्णिश्च घूर्णनम् ॥ १० ॥  
 ईहनं शीघ्रगमनं सारणं छद्मना गतिः ।  
 व्रज्याऽटाटया पर्यटनमल्पेऽध्वनि गतागतम् ॥ ११ ॥  
 सविकारा गतिः सोरो भेलनं तरणं प्लवः ।  
 कादाचित्कस्तु भेयोऽसौ क्षेपो लङ्गनलङ्घने ॥ १२ ॥  
 निर्याणं स्यान्निर्गमनमंहनं वक्षसा गतिः ।  
 प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भः सम्बन्धः प्राप्तिरापनम् ॥ १३ ॥  
 निर्बन्धोऽभिनिवेशः स्यात् प्रवेशोऽन्तरगाहनम् ।  
 आस्थासनोपवेशश्च निवेशो रचना स्थितिः ॥ १४ ॥

अथाभ्यादानमारम्भः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।  
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगः स्यादारोहणमभिक्रमः ॥ १५ ॥  
 आक्रमोऽभिक्रमः क्रान्तिर्व्युत्क्रमस्तूत्क्रमो मृतम् ।  
 विक्रमः शौर्यकरणमत्याधानमतिक्रमः ॥ १६ ॥  
 भूमानं विक्रमः पद्भ्यां निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।  
 अनुहारोऽनुकारः स्यात् परिहारो निवर्तना ॥ १७ ॥  
 प्रत्याहार उपदानमभिहारस्त्वभिग्रहः ।  
 समास उपसंहारः समाहारः समुच्चयः ॥ १८ ॥  
 अपहारस्त्वपादानं प्रहारस्त्वभिताडनम् ।  
 उपलम्भस्त्वनुभवो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥ १९ ॥  
 विप्रलम्भो विसंवादः प्रतिलम्भस्तु लम्भनम् ।  
 स्वतन्त्रवृत्तिर्व्युत्थानमभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ २० ॥  
 संस्थानं सन्निवेशः स्यादुपस्थानं तु सङ्गतिः ।  
 धान्योत्क्षेपणमुत्कारः पराकारस्तु धिक्क्रिया ॥ २१ ॥  
 विकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।  
 उपक्रियोपकारः स्यादपकारोऽन्यतः कृतिः ॥ २२ ॥  
 प्रकार इत्थम्भावः स्यादपकारोऽन्यपीडनम् ।  
 प्रत्याख्यानं निराकारः प्रत्यादेशो निरासवत् ॥ २३ ॥  
 परिणामोऽन्यथाभावः सन्नामस्त्वन्यथाकृतिः ।  
 प्रणामः प्रणिपातः स्यादुन्नामस्तुङ्गतोन्नतिः ॥ २४ ॥  
 उद्योगोऽस्त्री समुत्थानं विनियोगोऽर्पणं फले ।  
 विधिर्नियोगः सम्प्रेष उपयोगः फलक्रिया ॥ २५ ॥  
 संयोगसम्प्रयोगौ सम्भेदः सन्निपातसंश्लेषौ ।  
 सम्पाते विश्लेषे तु विप्रयोगविरहवियोगाः ॥ २६ ॥  
 विगमोऽपगमोऽपायो मेलने सङ्गसङ्गमौ ।  
 शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ॥ २७ ॥  
 बन्धनं प्रसितिर्बन्धः क्लान्तिस्तु क्लमथः क्लमः ।  
 परिसर्या परीसारः परिसर्पः परिक्रमः ॥ २८ ॥  
 लवे विलावो लवनं तेमः स्तेमः समुन्दनम् ।  
 प्रतिश्रवः प्रतिख्यातिरपेक्षा प्रतिजागरः ॥ २९ ॥  
 संयामसंयमौ यामो वियामो वियमो यमः ।  
 संवाहनं मर्दनं स्यात् पर्यवस्था विरोधनम् ॥ ३० ॥



संस्तवः स्यात् परिचय उदजः प्रेषणे पशोः ।  
 पवनं पवनिष्पावौ जूतिस्तु जवनं जवः ॥ ३१ ॥  
 प्रेजनं स्यादपसरो रन्धनं पचनं पचा ।  
 क्षयः क्षिया नयो नायो मदो मादः स्तवः स्तवः ॥ ३२ ॥  
 उद्वेग उद्भ्रमः श्रायः श्रयणं प्रमितिः प्रमा ।  
 स्फातिस्तु वृद्धिः स्फुरणं स्फुलनं क्षेपणं क्षिपा ॥ ३३ ॥  
 उद्यमो गुरणं श्च्योतिः प्रघारः प्रथनं प्रथा ।  
 भङ्गिस्तु व्याकृतिः खेदो निर्वेदो घटना घटा ॥ ३४ ॥  
 यत्प्रेषणं समाहूय तस्मिन् स्यात् प्रतिशासनम् ।  
 वञ्चनं त्वतिसन्धानं व्यलीकं च प्रतारणम् ॥ ३५ ॥  
 निष्ठीवोऽस्त्री निष्ठीवनमपि निष्ठीवनं च निष्ठ्यूतिः ।  
 उपरत्यारत्यपरतिविरतय उपरमण उपरामः ॥ ३६ ॥  
 संविदागूः प्रतिज्ञाऽऽस्थाऽऽप्यभ्युपायः प्रतिश्रवः ।  
 अङ्गीकाराभ्युपगमनियमाश्रवसंश्रवाः ॥ ३७ ॥  
 प्रणीतिः स्यादनुनयः प्रश्रयः सान्त्वनं तथा ।  
 सपत्राकृतिनिष्पत्राकृती त्वत्यन्तपीडने ॥ ३८ ॥  
 वर्णनं स्याद्विभजनं प्रवाहस्तु परम्परा ।  
 श्रन्थनं ग्रन्थनं गुम्फः सन्दर्भो रचना न ना ॥ ३९ ॥  
 विधूननं विधुवनं त्यागो हानं च वर्जनम् ।  
 आवर्जनं द्रवक्षेपे निधानं क्षेपणासने ॥ ४० ॥  
 सम्मूर्छनं व्यापनं स्याद् विदरः स्फुटनं भिदा ।  
 आवर्तनं कथनं स्यात् कथनं पाकवर्तनम् ॥ ४१ ॥  
 संवीक्षणं विचथनं लोटनं तु विवेष्टनम् ।  
 इत्यादयः क्रियाशब्दा लक्ष्या धातुषु लक्षणैः ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 सामान्यकाण्डे धर्मवर्माध्यायः ॥ २ ॥

### गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

गुणो जसुर्द्रव्यपदो द्वौ स्नेहे मार्जमार्जनौ ।  
 मसृणत्वे तु मारुङ्गकासनौ द्रवणे द्रुतिः ॥ १ ॥  
 खादीनां तु गुणाः शब्दः स्पर्शो रूपं रसः क्रमात् ।  
 गन्धश्चेतीन्द्रियार्थास्ते विषया गोचराश्च ते ॥ २ ॥  
 सत्यं तथ्यमृतं सम्यक् समीचीनं तथार्थवाक् ।  
 कर्कशे परुषो रूक्षो मठरः खोरणः खरः ॥ ३ ॥  
 उक्षुद्रलोऽथ मसृणे श्लक्ष्णसोमालचिकणाः ।  
 पिच्छिले स्याद् विजविलः कठिने खरटः खटः ॥ ४ ॥  
 कठोरनिष्ठुरकूरुदृढदारुणकक्खटाः ।  
 खरश्च सुकुमारे तु कोमलो मृदुलो मृदुः ॥ ५ ॥  
 शीतले शीकरः शीतः सुषिकः सुषिमो जडः ।  
 समीकः सोलिकः सोलः स्कन्दोलो मेकलस्तलः ॥ ६ ॥  
 तुषारः शिशिरः स्फीतः सेभ्यः सीमो हिमोऽपि च ।  
 उष्णं ज्वलः खरः क्रूरो बालस्तिग्मः कृशश्चुपः ॥ ७ ॥  
 सोमलो वह्निको व्यक्तस्तालको जलशीनकः ।  
 अङ्गारो दहनस्तप्तः प्रूषो धूम्रः प्रतापनः ॥ ८ ॥  
 तीक्ष्णश्चण्डोलबणप्रोन्द्रकरालविकारालिनः ।  
 मन्दोष्णमोष्णं कोष्णं च कवोष्णं च कदुष्णवत् ॥ ९ ॥  
 शुक्ले शुभ्रशुचिश्वेताः पुण्ड्रको धवलोऽर्जुनः ।  
 अवदातः सितो गौरो विशदश्येतपाण्डराः ॥ १० ॥  
 काले कृष्णासितश्यामनीलश्यामलमेचकाः ।  
 रोहिते लोहितो रक्तो हारिद्रे पीतपीतले ॥ ११ ॥  
 उत्पिशस्तु सितश्यामे हरिणे पाण्डुपाण्डरौ ।  
 कपोतस्तु कपोताभः पद्मः पीतसितासितः ॥ १२ ॥  
 पिच्छो नीलसितश्यामः सोवालः कृष्णधूमलः ।  
 सितकाचस्तु पिङ्गाणः कण्डारः सितकाचरः ॥ १३ ॥  
 वरालः सितपिङ्गाणः स्तोकपाण्डुस्तु धूसरः ।  
 कोसलः पाण्डुलः श्यामश्चाटः कृष्णहरिः सितः ॥ १४ ॥



वलक्षस्तु सितश्यामः सैराभः श्वेतपीतलः ।  
 सितपीतहरित्रीलस्तरलो वृद्धपत्रवत् ॥ १५ ॥  
 रक्तपीतासितश्वेते बोलः कारीषभस्मवत् ।  
 उत्तिपशाद्यास्त्वमी मिश्रवर्णाः शुक्लप्रधानकाः ॥ १६ ॥  
 शोणोऽरुणश्च सन्ध्याभः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ।  
 मरालोऽल्पः पीतरक्तः पीतरक्तस्तु पिञ्जरः ॥ १७ ॥  
 बभ्रुः कडारः कपिलो विदग्धो दुष्टरक्तवत् ।  
 श्यावे तु कपिशः पिङ्गे पिशङ्गः कटुपिङ्गलौ ॥ १८ ॥  
 नीलपीतारुणः शारो जोणालो नीललोहितः ।  
 इति लोहितवर्गीणा अथ पीतप्रधानकाः ॥ १९ ॥  
 सेरालोऽल्पसितः पीतः पेरालः पीतधूमलः ।  
 पीतश्यामल ओरालो गौरः स्यात् पीतलोहितः ॥ २० ॥  
 कीनाशः पीतहरितो हरितो नीलपीतलः ।  
 कृष्णवर्ग्याः पुनर्धूमधूमलौ कृष्णलोहिते ॥ २१ ॥  
 पीतकृष्णहरिद्राभः काचरः कृष्णधूमलः ।  
 कृष्णपीतस्तु काचोऽथ पालाशो हरितो हरित् ॥ २२ ॥  
 तारावतारकिर्मीरशबलैतास्तु चित्रके ।  
 स चान्योन्यानवष्टम्भान्नावर्णसमुन्नयः ॥ २३ ॥  
 कर्बुरः शुक्लहरित आरुः स्यात् कृष्णपिङ्गलः ।  
 सितकृष्णस्तु कल्माषः पिञ्ज्रूषः सितकाचरः ॥ २४ ॥  
 कृष्णरक्तसितः शारः क्रिमिरः सितलोहितः ।  
 मधुरस्तु रसज्येष्ठो गुली स्वादुर्मधूलकः ॥ २५ ॥  
 अम्लस्तु पाचनः शुक्तो लवणस्तु पटुः सरः ।  
 ऊषणस्तु कटुस्तीक्ष्णस्तित्तस्तु विसरः कटुः ॥ २६ ॥  
 कषायोऽस्त्री स्वप्रतिष्ठस्तुवरो मधुराङ्गकः ।  
 मधुराम्लौ सलवणौ कटुतिक्तकषायकाः ॥ २७ ॥  
 षट् ते मूलरसाः शेषा रसका योगयोनयः ।  
 स्युः शाडवराश्रयूषाः श्रयूष आसोऽपि च क्रमात् ॥ २८ ॥  
 अम्लाद्या मधुरोपेताः साम्लास्तु लवणादयः ।  
 चाटसस्तीक्ष्णचो रूपः शुक्तश्च लवणेन तु ॥ २९ ॥  
 युक्ता वैखारकः क्षारः स्वाद्यश्च कटुकादयः ।  
 तिक्तिकः कटुतिक्ते स्यात् कुल्या कटुकषायके ॥ ३० ॥

तैलित्सस्तित्तकाषाय एवं पञ्चदश द्विकाः ।  
 क्रमेण शोणिकः श्यावो रातपं रागशालवः ॥ ३१ ॥  
 सस्वादम्लता लवणाद्याः सस्वादुलवणेषु ते ।  
 कटुकादिषु कट्वारो माधुरो मधुकः क्रमात् ॥ ३२ ॥  
 तिक्तकषायौ सस्वादुकटू मधुमधूलिकौ ।  
 स्वादुतिक्तकषाये तु मधुलोऽमी दश त्रिकाः ॥ ३३ ॥  
 कट्वाद्याः साम्ललवणा बोसरः खलुषः क्रमात् ।  
 कोलश्चाथो साम्लकटू कलुषत्रिखरौ क्रमात् ॥ ३४ ॥  
 कषायतिक्तौ सोलस्तु शुक्ततिक्तकषायके ।  
 अम्लतिक्तकषायेऽस्मिन् बालाम्लो बालचूतकः ॥ ३५ ॥  
 कषायतिक्तौ सपटुकटू वेलानवेलजौ ।  
 कषायतिक्तलवणेऽसोलोऽथैलारसालकः ॥ ३६ ॥  
 कटुतिक्तकषाये स्यात् तदेवं विंशतिस्त्रिकाः ।  
 स्वाद्वम्ललवणोपेता कट्वाद्या मधुमालकः ॥ ३७ ॥  
 मधुबोलः सोरणश्च कचिदन्त्यः करोलकः ।  
 सस्वाद्वम्लकटौ तिक्ते लीमुषः परुषः पुनः ॥ ३८ ॥  
 कषायेऽत्रैव कलुषाकषायौ जालनः पुनः ।  
 स्वाद्वम्लतिक्ततुवरे सस्वादुलवणोषणे ॥ ३९ ॥  
 रसकोपशाडविकौ कषाये बलजः पुनः ।  
 तिक्ते तिक्तपटुस्वादुकषाये फलसोत्थुसौ ॥ ४० ॥  
 सस्वादुकटुतिक्ते तु कषाये स्यात् कलापकः ।  
 जलोलकः साम्लपटुकटौ तिक्ते कषायके ॥ ४१ ॥  
 तुवरः स्यात् कुवेलश्च खरस्तु लवणे युते ।  
 अम्लतिक्तकषायैस्तैः संयुते पलुषः कटौ ॥ ४२ ॥  
 कट्वाद्यालोडकास्त्वेवं चतुष्का दश पञ्च च ।  
 स्वादुमेकं विहायान्ये युक्ताः पञ्च स्युरोलकः ॥ ४३ ॥  
 आलुकस्तु विहायाम्लं पटुं हित्वा पराञ्जनः ।  
 ओलकः कटुकं हित्वा विना तिक्तेन चोलकः ॥ ४४ ॥  
 समोलकः कषायेण षडेवं पञ्चका रसाः ।  
 षट्कस्त्वेकः षड्रसः स्यात् त्रिषष्टिः स्युस्ततो रसाः ॥ ४५ ॥  
 मधुराम्लादिसंज्ञाश्च शाडवादौ समुन्नयेत् ।  
 न स्यात् पूर्व्वरसस्याख्या परावररसाह्वयात् ॥ ४६ ॥



सुरभ्यसुरभी गन्धौ विभिन्नौ तौ च योगतः ।  
 बहुधा तत्र सुरभिः कटुस्तिक्तः कषायकः ॥ ४७ ॥  
 समष्टिरप्यतोऽन्यो यो गन्धोऽसुरभिरित्यसौ ।  
 मल्लिकायां स्थितो गन्धो मङ्गल्या मङ्गलश्च सः ॥ ४८ ॥  
 जात्यां सौमनसो नागकेशरे गन्धसारणः ।  
 चम्पके सुरभिः पद्मे वासनः कुटजे घृणः ॥ ४९ ॥  
 कस्तूरिकायामामोदः कुङ्कुमे पलशीनकः ।  
 पारिहाव्यो मरुवके पाटले तृणशोणकः ॥ ५० ॥  
 चन्दने चन्द्रिकः साले शोणो गन्धिक उत्पले ।  
 केतके शोणितं सर्जधूपे सरलशोणिकः ॥ ५१ ॥  
 वकुले स्यात् परिमलो वलनोऽगरुधूपके ।  
 सहकारे सरलिको गुग्गुलौ त्ववलोलुकः ॥ ५२ ॥  
 कुन्दोपरालो मदने दुलो जम्बीर(के स्थितः) ।  
 मल्ल्यां (स्थितस्तु) खवुकः कर्पूरे मुखवासनः ॥ ५३ ॥  
 आज्ये समशनोऽशोके सुरवस्तिलके कुलः ।  
 गात्रे गन्धो गन्धके तु गन्धिकः पित्तले लसः ॥ ५४ ॥  
 गुदवायौ तु दुर्गन्धः किट्टे कोलः कफे घनः ।  
 मस्त्यत्वच्यामिषो निम्बे तिक्तको गोमुखे सणिः ॥ ५५ ॥  
 उद्दंशे देहलिर्गोविण्मूत्रयोर्मुकमुर्मुर् ।  
 शुक्ले मांसिर्मदे रूक्षो मूत्रिते त्वन्धमेहलः ॥ ५६ ॥  
 स्नेहदोषे मेचटिको गूधे स्थालिकवैणिकौ ।  
 चिक्षो यकृति पूये तु पूतिर्मूत्रे तु मेहलः ॥ ५७ ॥  
 दुष्टव्रणे तु कथितो रुधिरं त्वाममांसकः ।  
 गन्धशब्दास्त्वमी योज्याः साम्याद् द्रव्यान्तरेष्वपि ॥ ५८ ॥  
 एते सत्यादयः शब्दाः शब्दस्पर्शादिगोचराः ।  
 उक्तलिङ्गा गुणार्थास्ते सर्वेऽपि गुणिनि त्रिषु ॥ ५९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

### अर्थवह्निङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

गुणयुक्तं क्रियायुक्तं द्रव्ययुक्तं च वक्ति यः ।  
 स शब्दो वाच्यवह्निङ्गो बालो वक्ता धनी यथा ॥ १ ॥  
 बालो हिम्भोऽर्भकः शावः कुमारो दारकः शिशुः ।  
 अप्युत्तानशयो वत्सः स्तनपस्तु स्तनन्धयः ॥ २ ॥  
 वटुर्माणवकोऽथ स्याद् वयस्थस्तरुणो युवा ।  
 जीनो जीर्णो वृद्धवयाः प्रवयाः स्थविरो जरन् ॥ ३ ॥  
 वर्षीयान् दशमी व्यायान् कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।  
 जघन्यजो बवीयांश्च पूर्वजे त्वग्निजोऽग्रजः ॥ ४ ॥  
 पितुर्विभक्तः संसृष्टी भ्रात्रार्थेनैकतां गतः ।  
 पृथिः किरातोऽल्पतनुर्दुर्बलस्तु कृशस्तनुः ॥ ५ ॥  
 पीनस्तु पीवरः पीवा प्रबलो मांसलोऽसलः ।  
 सिंहसंहननः स्वङ्गस्तुण्डिरुन्नतनाभिकः ॥ ६ ॥  
 पिचण्डिलस्तूद्रिलस्तुन्दिलस्तुन्दितुन्दिकौ ।  
 वलिनो वलिभो बिभ्रद्वली राजीस्तु राजिलः ॥ ७ ॥  
 एवं सिरालमणिलौ प्रलम्बाण्डस्तु मुष्करः ।  
 केशवः केशिकः केशी रोमशो लोमशः समौ ॥ ८ ॥  
 शमश्रुलो जटिलश्चैवं दन्तुरः स्यादुदग्रदन् ।  
 किरिभस्तद्विपर्यासे मिर्मिरः स्तब्धलोचनः ॥ ९ ॥  
 आसीन उपविष्टः स्यादूर्ध्वस्तूर्ध्वजानुकः ।  
 संजुः संहतजानुः स्यात् प्रजुः प्रगतजानुकः ॥ १० ॥  
 विकलाङ्गस्तु पोगण्डो गडुले न्युब्जकुब्जकौ ।  
 खुरणाः स्यात् खुरणसो नःक्षुद्रः क्षुद्रनासिकः ॥ ११ ॥  
 खरणाः स्यात् खरणसो विग्रो विगतनासिकः ।  
 नतनासेऽवटीटः स्यादवनाटोऽप्यवभटः ॥ १२ ॥  
 केकरो वलिरोऽनेडमूकोऽन्धः काण एकदृक् ।  
 एडस्तु वधिरः कण्व एडमूकस्त्ववाक्कुतिः ॥ १३ ॥  
 अनेडमूकस्तु जडो जलो मूकः कलोऽप्यवाक् ।  
 पङ्गुः श्रोणे खङ्गकोलौ खोडेऽथ कुकरे कुणिः ॥ १४ ॥



शिपिविष्टस्तु दुश्चर्मा दुर्बलश्च द्विनम्रकः ।  
 क्षपणश्रमणौ नम्रो नम्राटश्च दिगम्बरः ॥ १५ ॥  
 आजीवो जीवको जैनो निर्ग्रन्थो मलवार्यपि ।  
 हृदयालुः सुहृदयो महेच्छस्तु महाशयः ॥ १६ ॥  
 प्रौढः प्रगल्भः प्रतिभायुक्तोऽन्यस्त्वपगल्भकः ।  
 धृष्टो धृष्टुर्विजातश्च शालीनस्तु विपर्यये ॥ १७ ॥  
 अधीरे कातरत्रस्तुभीरुभीरुकभीलुकाः ।  
 दरिते भीतचकितत्रस्ताः स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १८ ॥  
 प्रवीणोऽभिजनोऽभिज्ञो विज्ञो वैज्ञानिकः कृती ।  
 कृतकृत्यः कृतमुखो निष्णातो दक्षशिक्षितौ ॥ १९ ॥  
 अग्राम्ये सरलोदारविदग्धच्छेकदक्षिणाः ।  
 गर्विते स्तब्ध उद्वीवो बाहो धीरः स इत्यपि ॥ २० ॥  
 मूर्खे त्वनेडो देवानांप्रियो यो नामवर्जितः ।  
 अपि वैधेयमूढाज्ञा मातृशिष्टयथोद्भूतौ ॥ २१ ॥  
 नीचे तु हीनापशदपामरेतरबबेराः ।  
 नैकृतः स्यान्नैकृतिकः शठः कौनृतिकोऽनृजुः ॥ २२ ॥  
 कुहकः स्यात् कापटिको दाण्डाजिनिकजालिकौ ।  
 दौण्डुको दण्डुकश्चाथ कोलाकोऽर्यरतः सदा ॥ २३ ॥  
 क्रूरो नृशंसोऽप्यदये धूर्ते व्यसकवञ्चकौ ।  
 कौकृतो मायिको मायी मायावी प्रातिहारिकः ॥ २४ ॥  
 ना दुर्जनः खले कर्णेजपः पिशुनसूचकौ ।  
 कद्वदः कुत्सितोऽत्यर्थं परिभोक्ता गुरुस्वभृत् ॥ २५ ॥  
 नीलीरागः स्थिरप्रेमा हरिद्रारागकः पुनः ।  
 अस्थिरप्रेमिण गोष्ठश्वः पुनः स्थाने स्थितो द्विषन् ॥ २६ ॥  
 अन्वेष्टा स्यादनुपदी चिद्रूपस्तु सुमानसः ।  
 स्वच्छन्दोऽपावृतः स्वैरी स्वतन्त्रो निरवग्रहः ॥ २७ ॥  
 परच्छन्दः पराधीनः परवान् परतन्त्रकः ।  
 निम्नः प्रसव्य आयत्तो विधेयो गृह्यको वशः ॥ २८ ॥  
 अहंयुः स्यादहङ्कारी शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।  
 सूक्ष्मदर्शी कुशाग्रीयधीर्विलक्षः सविस्मयः ॥ २९ ॥  
 यद्भविष्यो दैवपरो यद्वदः स्यादनुत्तरः ।  
 परीक्षकः कारणिक उद्युक्ते प्रसितोत्सुकौ ॥ ३० ॥

अन्तर्वाणिः शास्त्रवित् स्यादविनीतः समुद्धतः ।  
 प्रत्युत्पन्नमतिस्तु स्यात् तत्कालोत्पन्नधीर्नरः ॥ ३१ ॥  
 प्रणेत्यः प्रश्रितो वश्यो विधेयो निभृतो यतः ।  
 क्रोधनः कोपनोऽमर्षी चण्डस्तु भृशकोपनः ॥ ३२ ॥  
 सहिष्णुः सहनः सोढा तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ।  
 हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना मुदितः समुत् ॥ ३३ ॥  
 दुर्मना त्रिमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।  
 दोषदर्शी पुरोभागी कमनः कामनोऽनुकः ॥ ३४ ॥  
 कामुकः कमिताऽभीकः कम्पः कमयिताऽभिकः ।  
 तृष्णक् तु गर्धनो गृध्नुर्लिप्सुर्लब्धोऽभिलाषुकः ॥ ३५ ॥  
 लोलुपे लोलुभो लोलो लम्पटो लालसोऽपि च ।  
 लुसुक्षुः क्षुधितः श्रान्तो जिघत्सुरशनायितः ॥ ३६ ॥  
 पिपासितस्तु तृषितः पिपासुस्तपितः सत् ॥  
 मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबा श्राद्धः श्रद्धालुरास्तिकः ॥ ३७ ॥  
 नास्तिकस्तद्विपर्यासे गृह्यालुर्ग्रहीतरि ।  
 संशयालुस्तु सन्देग्धा पतयालुस्तु पातुकः ॥ ३८ ॥  
 दयालुः स्यात् कारुणिकोऽनुकम्प्यः कारुणः समौ ।  
 स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणः शयितः समाः ॥ ३९ ॥  
 लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ।  
 निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्याद् वर्धिष्णुर्वर्धनः समौ ॥ ४० ॥  
 उन्मदिष्णुस्तु सोन्मादोऽलङ्कारिष्णुस्तु मण्डनः ।  
 भूष्णुर्भविष्णुर्भविता प्रजनिष्णुस्तु भावुकः ॥ ४१ ॥  
 उत्पतिष्णुस्तुत्पतिता रोचिष्णू रोचनः समौ ।  
 स्थास्नुस्तु स्थायुकः स्थायी शरारुर्हिंस्रघातुकौ ॥ ४२ ॥  
 वेदिता विदुरो विन्दुः सान्द्रः स्निग्धस्तु मेदुरः ।  
 आशंसुराशंसितरि वन्दारुर्भवादकः ॥ ४३ ॥  
 जागरूको जागरिता ऋक्षवाक् तु प्रियंवदः ।  
 शक्नो मधुरवाक् चाथ रूक्षो लूक्षो विपर्यये ॥ ४४ ॥  
 वदो वदावदो वक्ता वागीशो वक्त्रपतिः समौ ।  
 वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकश्च दक्षवाक् ॥ ४५ ॥  
 जल्पपाकस्त्वपि वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।  
 मुखरो दुर्मुखोऽबद्धमुखो मातृमुखोऽपि च ॥ ४६ ॥



कद्वदो गह्वर्वादी स्याल्लोहलोऽस्फुटभाषणः ।  
 अधरो दीनवादी स्यात् सम्मुखः प्रतिभातवाक् ॥ ४७ ॥  
 नालीकरस्तु नालीकवाक् स्वनोऽशोभनस्वरः ।  
 कुवदे कुचरः शब्दकारे रवणशब्दनौ ॥ ४८ ॥  
 व्युत्पन्नः प्रहतः क्षुण्णो वचनेस्थित आश्रवः ।  
 पराजः परपिण्डादः परजातपरैधितौ ॥ ४९ ॥  
 सर्वाङ्गीनः सर्वभक्ष आमिषादी तु शौलिकः ।  
 आत्मम्भरिः कुक्षिम्भरिर्भक्षको घस्मरोऽङ्गरः ॥ ५० ॥  
 आद्यूनः स्यादौदरिको विमुक्तो विजिगीषया ।  
 ह्रीणो ह्रीतो लज्जितः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ५१ ॥  
 अदुते धीरविस्त्रब्धावुत्तालः कर्मणि द्रुतः ।  
 कुटुम्बव्यापृते तु द्वावभ्यागारिक उत्थितः ॥ ५२ ॥  
 दीर्घदृष्टिस्तु यो दूरादर्थानर्थौ निरीक्षते ।  
 आमुष्यायण उत्पन्नः प्रख्यातकुलतः पितुः ॥ ५३ ॥  
 वैरङ्गिको विरागार्ह उत्पश्यः पुनरुन्मुखः ।  
 चतुरः पेशलो दक्षः सूत्थानः पटुरुष्णकः ॥ ५४ ॥  
 मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसः ।  
 चेमङ्करोऽरिष्टतातिः शिवतातिः शिवङ्करः ॥ ५५ ॥  
 लक्ष्मीवान् लक्ष्मणः श्रीलो महामात्रोऽधिकर्षिकः ।  
 उदारोदीर्घधन्यास्तु महात्मा सुकुतीति च ॥ ५६ ॥  
 समृद्धः स्यादुपचितो धनवानस्तिमान् समौ ।  
 आढ्यस्त्विम्यो धनी नेता त्वीश्वरो नायकः प्रभुः ॥ ५७ ॥  
 अधिभूरधिपोऽधीश ईशिताऽधिपतिः पतिः ।  
 ईशः परिवृढः स्वामी स्थूललक्षो बहुव्यये ॥ ५८ ॥  
 कदर्ये कृपणक्षुद्रकिम्पचानमितम्पचाः ।  
 आशयश्चाप्यदाता च दरिद्रे स्यादकिञ्चनः ॥ ५९ ॥  
 अपि दुस्स्थकूरदीननीचदुर्गतदुर्विधाः ।  
 मार्गणः स्याद् याचनको याचकोऽर्थी वनीपकः ॥ ६० ॥  
 आर्यः कौलेयको जात्यः कुलीनः कुलजोऽभिजः ।  
 जगत्प्रसन्नचरणमिषदिङ्गञ्च जङ्गमम् ॥ ६१ ॥  
 स्थावरं तस्थिवच्चान्यदुभयं तु चराचरम् ।  
 वा ह्री प्रधानं प्रमुखप्रबर्हप्रवरोत्तमाः ॥ ६२ ॥

मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवेकोऽनपराध्यवत् ।  
 श्रेष्ठः प्राग्रहरं प्राग्रमग्रमग्रीयमग्रियम् ॥ ६३ ॥  
 परार्थ्य ग्रामणीः स्पर्ध्य जात्यं च वरमग्रणीः ।  
 उपाग्रस्तु गुणः पुंसि ह्रीवे स्यादुपसर्जनम् ॥ ६४ ॥  
 तत्तु स्यादासेचनकं न तृप्तिर्यस्य दर्शनात् ।  
 पवित्रं प्रयतं पूतं मेध्यं शुद्धं शुचीति च ॥ ६५ ॥  
 निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निश्शोध्यमनवस्करम् ।  
 विमले वीदुधं मलिने द्वौ कश्चरमलीमसौ ॥ ६६ ॥  
 आत्तगन्धोऽभिभूतः स्याद् बद्धे कीलितसंयतौ ।  
 आक्षिप्तो हतकः क्षिप्तो विह्वलो विह्वलः समौ ॥ ६७ ॥  
 विहस्तो व्याकुलो व्यग्रश्चले सङ्कुसुकोऽस्थिरः ।  
 व्यसनार्तस्तूपरक्त आततायी बधोद्यतः ॥ ६८ ॥  
 शत्रूणां तापयितरि द्विषन्तपपरन्तपौ ।  
 द्वेष्यस्त्वक्षिगतोऽनिष्टो दुर्भगोऽपि च विप्रिये ॥ ६९ ॥  
 चक्षुष्यः सुभगः कान्तो दयितो वल्लभः प्रियः ।  
 गेहेनर्दी गृहेशूरः पिण्डीशूरो गृहे प्रभुः ॥ ७० ॥  
 बध्यो विध्यो विषेण स्यान्मुसल्यो मुसलेन च ।  
 निष्कासितोऽपकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ७१ ॥  
 कर्मक्षमोऽलङ्कर्मिणः कर्मशूरस्तु कर्मठः ।  
 कर्मस्तु कर्मशीलः स्याद्दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ॥ ७२ ॥  
 कर्मण्यकृत् कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।  
 निर्वार्यः कार्यकृद्यः स्याद्युक्तः सन् सत्त्वसम्पदा ॥ ७३ ॥  
 क्रियावान् कर्मवान् कर्मी कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ।  
 स आयश्शूलिको यः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ७४ ॥  
 गह्वेऽपकृष्टचेलावरेफयाप्याधमावमाः ।  
 प्रतिकृष्टावद्यखेटनिकृष्टाणककुत्सिताः ॥ ७५ ॥  
 जघन्यं तु कुपूयं स्यादसारं लघु फल्गु च ।  
 पुंस्यादिराद्यपौरस्त्यप्रथमप्रमुखादिमाः ॥ ७६ ॥  
 अग्र्यं त्वग्रिममग्रस्थं मध्यमीयं तु मध्यमम् ।  
 अन्त्ये जघन्यपाश्चात्यचरमान्तिमपश्चिमाः ॥ ७७ ॥  
 करम्बः कम्बरो मिश्रः सम्पृक्तः खचितः समाः ।  
 चलाचलं तु प्रचलं चपलं चञ्चलं चलम् ॥ ७८ ॥



चिकुरं चटुलं कम्प्रं पारिप्लवपरिप्लवौ ।  
 स्थास्नवेकरूपं कूटस्थं स्थेयान् स्थेष्टोऽप्यतिस्थिरे ॥ ७६ ॥  
 विशालमुरु विस्तीर्ण विपुलं पृथुलं पृथु ।  
 स्फारं भद्रं बृहद् व्यूढमुदूढं बहुलं बहु ॥ ८० ॥  
 प्रांशुश्चमुन्नतं तुङ्गमुदग्रं तूच्छिताग्रकम् ।  
 न्यङ्नीचह्रस्वखर्वास्तु वामने दीर्घमायते ॥ ८१ ॥  
 विशालं विकरालं स्याद् विकटं च विशङ्कटम् ।  
 वर्तुलं निस्तलं वृत्तं सुवृत्तं परिमण्डलम् ॥ ८२ ॥  
 चिपिटः पिच्छितो व्यूढे स्थपुटं विषमोन्नतम् ।  
 आनतं तु नतं नम्रं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ८३ ॥  
 क्षीणं क्षामं विलिष्टं स्यात् स्थूलं तु बहलं दृढम् ।  
 प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यं बहलं बहुलं बहु ॥ ८४ ॥  
 अदभ्रमधिकं भूरि भूयिष्ठं पुरुहं पुरु ।  
 समग्रं सकलं सर्वं समस्तं निखिलाखिले ॥ ८५ ॥  
 अखण्डकृत्स्ननिशेषपूर्णविश्वसमानि च ।  
 खण्डनेमोनविकलाः पूर्णे भरितपूरितौ ॥ ८६ ॥  
 सम्पूर्णश्चाथ वशिकं शून्यं तुच्छं च रिक्तकम् ।  
 पुराणे प्राक्तनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ॥ ८७ ॥  
 नूतने त्वभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।  
 शाश्वते त्वमृतो नित्यः सनातनसदातनौ ॥ ८८ ॥  
 सद्यस्तने तु साद्यस्कप्रत्यग्राभ्यग्रशारदाः ।  
 ह्यस्तनश्चस्तनाद्याः स्युर्ह्यआदिस्थेषु वस्तुषु ॥ ८९ ॥  
 कालवाच्यव्ययेभ्यः स्यादन्येभ्योऽपि तथा तनः ।  
 न्यक् स्यादधोमुखं न्युब्जमुदुब्जोत्तानमुन्मुखे ॥ ९० ॥  
 उदक् प्रत्यक् परागर्वाक् प्राक् च तिर्यग्वागपाक् ।  
 विष्वक् चैवमुदीचीनप्रमुखाः स्युर्यथाक्रमम् ॥ ९१ ॥  
 दिग्देशकालवचनमुदगादिकमव्ययम् ।  
 दिग्देशकालसम्बन्धिपदार्थेष्वभिधेयवत् ॥ ९२ ॥  
 यः सहाञ्चति सध्रयङ् स विष्वद्रयङ् विष्वगञ्चति ।  
 देवानञ्चति देवद्रयङ् सधीचीनादि चोन्नयेत् ॥ ९३ ॥  
 अविलम्बितमुच्चण्डं संशितं तु सुतेजितम् ।  
 उत्पिञ्जलं समुत्पिञ्जमिति द्वे भृशमाकुले ॥ ९४ ॥

अनादृते त्ववज्ञातमवतीर्णापहस्तितम् ।  
 चलितप्रेङ्खिताधूतवेङ्खिताकम्पिता धुते ॥ ९५ ॥  
 रुचिते हृद्यलपितवाङ्मिष्टोष्टेडितेहिताः ।  
 संवीतं स्याद् बलयितं वेष्टितं रुद्धमावृतम् ॥ ९६ ॥  
 नुन्नास्तनुत्तप्रहितक्षिप्तविद्धाः स्युरीरिते ।  
 बद्धे सन्नाहितं नद्धं मुद्रितं सन्दिगतं सितम् ॥ ९७ ॥  
 सन्तापितं धूपायितं दूनं तप्तञ्च धूपिते ।  
 मार्गिते मृगितान्विष्टावन्वेषितगवेषितौ ॥ ९८ ॥  
 लब्धात्मासादितप्राप्तभूतविन्नास्तु भाविते ।  
 प्रयत्ने मुदितप्रीतहृष्टाः सुहितवृषवत् ॥ ९९ ॥  
 आबर्हिते तूद्वृहितोन्मूलितोत्पाटितोदधृताः ।  
 ऊतगोपायितत्रातत्राणगुप्तास्तु रक्षिते ॥ १०० ॥  
 मनिते विदितज्ञातौ बुधिते बोधबुद्धवत् ।  
 त्यक्ते तु विधुतोत्सृष्टहीनधूतसमुष्मिताः ॥ १०१ ॥  
 कृत्ते लूनच्छिन्नदातवृक्कणच्छातच्छितार्दिताः ।  
 स्रस्ते भ्रष्टध्वस्तपन्नगलितस्कन्नविच्युताः ॥ १०२ ॥  
 प्रेङ्खोलितं तरलितं लुलितं प्रेङ्खितं च तत् ।  
 भजमाने प्राप्तयुक्तन्यायान्यौपयिकोचिते ॥ १०३ ॥  
 न्यस्ते त्वारोपितोऽध्यस्तो निहितोऽपहितो हितः ।  
 उपसन्नं तूपनतमुपप्राप्तमुपस्थितम् ॥ १०४ ॥  
 शुश्रूषितं परिवसितमुपासितञ्च वरिवसितञ्च समम् ।  
 अपचायितं नमसितं नमस्यितं सममपचितञ्च ॥ १०५ ॥  
 पणितपणायितपनिताः पनायितस्तुतनुतेडिताः शस्ते ।  
 वर्णितगीर्णौ च तथा सङ्गीर्णौपश्रुतौ प्रतिज्ञाते ॥ १०६ ॥  
 उन्नोत्ततिमितक्लिन्नस्नपितार्द्राणि सार्द्रवत् ।  
 स्युः प्रत्यवसिते प्सातजग्धान्नाशितखादिताः ॥ १०७ ॥  
 प्रस्तग्लस्ताभ्यवहृतभुक्तभक्षितजक्षिताः ।  
 परिक्षिप्तं तु निवृतं निदिग्धोपचितौ समौ ॥ १०८ ॥  
 प्राप्ते प्रणिहितापन्नौ विस्मृतोऽन्तर्गतेऽस्मृते ।  
 सङ्गूढं स्यात् सङ्कलितं स्यन्नं रीणं स्तुतं स्तुतम् ॥ १०९ ॥  
 अवरीणो धिक्कृतः स्याद् दृब्धे प्रथितमुद्रितौ ।  
 सङ्कीर्णे सङ्कुलाकीर्णौ विस्मृते विस्मृतं ततम् ॥ ११० ॥



सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ भिन्ने भेदितदारितौ ।  
 वेधितच्छिद्रतौ विद्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ॥ १११ ॥  
 ऊतं स्यूतमुतं तन्तुसन्तते प्रार्थितेऽर्दितम् ।  
 उद्धृतं समुदस्तं स्यान्मर्मस्पृक् स्यादरुन्तुदम् ॥ ११२ ॥  
 गुण्डितं रुषिते क्लिष्टे क्लेशितं पूजितेऽञ्चितम् ।  
 ज्ञप्तं तु ज्ञापिते हन्नं गूने मीढं तु मूत्रिते ॥ ११३ ॥  
 पुषिते पुष्टमुद्गूर्णोद्यत(यत्ताः प्रयत्नवान्) ।  
 दमिते दान्तं शमिते शान्तमुद्धान्तमुद्गते ॥ ११४ ॥  
 पन्नं प्रपतिते सन्नं लिष्टे तुन्नं तु पीडिते ।  
 निष्पके कथितं सोढे क्षान्तं निचितमाचिते ॥ ११५ ॥  
 मुषिते लुण्ठितं यस्ते निसृष्टं वृद्धमेधिते ।  
 काचितं शिक्थिते दिश्यं दिग्भवेऽध्रभवेऽध्रिथम् ॥ ११६ ॥  
 यज्ञियं यज्ञकर्माहं चक्षुष्यं चक्षुषे हितम् ।  
 तत्तद्वात्रभवे दन्त्वं हस्त्यमोष्ठ्यमितीदृशाः ॥ ११७ ॥  
 पुंसः पौंसं स्त्रियाः स्त्रौणमग्नेराग्नेयमित्यपि ।  
 दण्डवान् दण्डिको दण्डीत्येवं नेयमदन्ततः ॥ ११८ ॥  
 ब्रीहिणो ब्रीहिमन्तः स्युर्यवमन्तो यवान्विताः ।  
 निर्जने स्थान एकान्तं विविक्तं विजनं तथा ॥ ११९ ॥  
 छन्नं गुह्यं निश्शलाकं रहः क्लीबोऽथवाऽव्ययम् ।  
 गुह्यं रहस्यमित्येतावप्रकाशयेऽपि वस्तुनि ॥ १२० ॥  
 समं समानं सविधं सदृक्षं सदृशं सदृक् ।  
 तुल्यं सवर्णं शब्देभ्यः परे स्युः प्रतिमा प्रभा ॥ १२१ ॥  
 आभा प्रख्योपमाभिख्या प्रकारः सन्निभं निभम् ।  
 निकाशाद्याश्च साम्यार्थाः समे स्युः शब्दतः पराः ॥ १२२ ॥  
 परस्परं स्यादन्योन्यमितरेतरमित्यपि ।  
 वक्रं वृजिनमाविद्धमूर्मिमत् कुञ्चितं नतम् ॥ १२३ ॥  
 अरालं कुटिलं भुग्नमवक्रे प्रगुणोऽप्यजुः ।  
 सत्वरं त्वरितं तूर्णमरं क्षिप्रं लघु द्रुतम् ॥ १२४ ॥  
 अजिरं चपलं शीघ्रमविलम्बितमाशु च ।  
 विरलं तनु विश्लिष्टमघनं तलिनं तथा ॥ १२५ ॥

निबिडं निबिरीसं स्याद् घनं सान्द्रं निरन्तरम् ।  
 विकटं तु विरूपं स्यात् सम्बाधः सङ्कटः समौ ॥ १२६ ॥  
 प्रतीपं प्रतिकूलं स्यादनुकूलं विपर्यये ।  
 अनुलोममनूचीनं प्रतिलोमं विपर्यये ॥ १२७ ॥  
 अव्ययीभावोऽनुपदमन्वगन्वक्षमित्यपि ।  
 एकसर्गोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनैकगम् ॥ १२८ ॥  
 अप्येकतान एकान्तोऽप्येकायनगतोऽपि च ।  
 साधारणं तु सामान्यं मोघं व्यर्थमपार्थक्यम् ॥ १२९ ॥  
 नित्यानवरताजस्रसतताश्रान्तसन्तताः ।  
 अनारतं चाविरतमसक्तं चानिशं नपुम् ॥ १३० ॥  
 अतिमात्रेऽतिमर्याद मतिवेलातिमानकम् ।  
 भृशमत्यन्तमत्यर्थमधिकोद्गाढनिर्भरम् ॥ १३१ ॥  
 तीव्रं तु गाढमेकान्तं नितान्तं दृढबाढवत् ।  
 वशेऽनर्गलमुद्दाममुच्छृङ्खलमयन्त्रितम् ॥ १३२ ॥  
 परोक्षेऽतीन्द्रियोऽध्यक्षप्रत्यक्षौ तु समक्षवत् ।  
 सकाशं स्यात् सन्निहिते समन्तं तु समन्तिकम् ॥ १३३ ॥  
 प्रकाशं प्रकटं स्पष्टमुल्बणं विशदं स्फुटम् ।  
 सुन्दरं रुचिरं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ १३४ ॥  
 शोभनं सुषमं चारु हृद्यं चौक्षं मनोहरम् ।  
 न्युङ्क्तं हारि प्रियं साधु लडहं च मनोरमम् ॥ १३५ ॥  
 अल्पं सूक्ष्ममणु स्तोकं दहं दहरमर्हकम् ।  
 किञ्चिन्मात्रं मितं दध्रं श्लक्ष्णं तनु च पेलवम् ॥ १३६ ॥  
 अतिरिक्तोऽतिशयितो दृढः समधिकोऽधिकम् ।  
 चतुरं पेशलं दक्षं कटु तूल्बणमुत्कटम् ॥ १३७ ॥  
 विशेषणं क्रियाया स्युः समाद्याः क्ली च तद्यथा ।  
 पुत्रं धत्ते सममिति नित्याद्यास्तु गुणस्य च ॥ १३८ ॥  
 नित्यं धत्ते सितो नित्यमिति द्रव्ये पुनस्त्रिषु ।  
 उभयेऽपि यथा धत्ते समो नित्योऽर्थवानिति ॥ १३९ ॥



प्रथमं चरमं पूर्वमित्याद्यप्येवमुन्नयेत् ।  
समीपनिकटाभ्यग्राभ्यर्णाभ्याशान्तिमा इव ॥ १४० ॥

सदेशसविधासन्नसन्निकृष्टसवेशवत् ।  
उपकण्ठसमर्यादसवेधानि सनीडकम् ॥ १४१ ॥

उपान्ते विप्रकृष्टे तु दूरं व्यवहितं परम् ।  
भासुरं भविकं भव्यं कल्याणं श्रवसीयसम् ॥ १४२ ॥

श्वश्रेयसं शिवं भद्रं कुशलं सूनृतं शुभम् ।  
श्रेयश्चैते समीपाद्या धर्मे क्ली तद्वति त्रिषु ॥ १४३ ॥

सुखं दुःखं मलं छिद्रं किलासं सिध्ममर्मरौ ।  
रभसः पलितं श्वित्रमेतेऽपि त्रिषु धर्मिणि ॥ १४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां सामान्यकाण्डे

अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमः सामान्यकाण्डः समाप्तः ॥ ५ ॥

## ६. अथ व्यत्तरकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अथ काण्डैरनेकार्थाः प्रोच्यन्तेऽत्र परैस्त्रिभिः ।  
द्वयक्षरास्त्रयक्षराः शेषा इति काण्डेषु ते क्रमात् ॥ १ ॥  
अकारादिहकारान्तं नाम्नामाद्यक्षरक्रमात् ।  
संग्रहो द्वयक्षरादीनां प्रोक्तान् प्रायो विना पुरा ॥ २ ॥  
अर्थः स्याद्विषये मोक्षे शब्दवाच्ये प्रयोजने ।  
व्यवहारे धने शास्त्रे वस्तुहेतुनिवृत्तिषु ॥ ३ ॥  
अर्कोऽर्कपणे स्फटिके ज्येष्ठभ्रातरि भास्वति ।  
अवयः शैलमेषार्का अद्रयोऽर्कगिरिद्रुमाः ॥ ४ ॥  
अट्टावतिशयक्षौमावधौ पूजाप्रतिक्रयौ ।  
अर्योः शास्तृस्वामिवैश्याः सर्पे वृत्रासुरेऽप्यहिः ॥ ५ ॥  
अंशुः सूत्रादिसूत्रमांशेऽप्यङ्कश्चिह्नेऽन्तिकोरसोः ।  
आत्मा जीवे धृतौ देहे स्वभावे परमात्मनि ॥ ६ ॥  
यत्नेऽर्केऽग्नौ मतौ वातेऽप्याखू सूकरमूषिकौ ।  
आधिस्तु व्यसने चित्तदुःखेऽधिष्ठानबन्धयोः ॥ ७ ॥  
इन्द्रो विषात्मशक्रार्केष्वीश्वरे नामतः परः ।  
इष्वोऽभिलाष आचार्य ऊमो व्योम्नि पुरेऽपि च ॥ ८ ॥  
ग्रीष्मोष्णबाष्पा ऊष्माण ऊर्जावुत्साहकार्तिकौ ।  
ऋषिस्तु वेदे भृगवादौ ज्ञानवृद्धे दिगम्बरे ॥ ९ ॥  
ओषः परम्परायां स्याज्जलस्रोतसि सञ्चये ।  
करो घनोपले हस्ते प्रत्याये रश्मिशुण्डयोः ॥ १० ॥  
दातुं भूषितकन्यायां कूपो गते प्रहावपि ।  
क्षणो व्यापारवैकल्ये कालभेदाल्पकालयोः ॥ ११ ॥  
उत्सवे परतन्त्रत्वे मध्यावसरपर्वसु ।  
कन्तू कुसूलकन्दर्पौ प्राज्ञकाव्यकृतौ कवी ॥ १२ ॥



कण्ठो गलेऽन्तिके शब्दे कपयोऽर्कभवानराः ।  
 गुडभस्मरसाः क्षाराः क्षोदो रजसि पेषणे ॥ ११ ॥  
 क्रतू अध्वरसङ्कल्पौ कल्पान्तेऽपचये क्षयः ।  
 कुक्षौ वासे च कच्छस्तु पार्श्वे गुह्याम्बरे तटे ॥ १४ ॥  
 कारुस्तु विश्वकर्मापि धान्यांशे शीकरे कणः ।  
 कालो दिष्टे यमे काचो मृद्भेदे शिख्यदृग्जोः ॥ १५ ॥  
 उत्पातेऽङ्के ध्वजे केतुः क्लेदौषधिशशाङ्कयोः ।  
 कोणाः शब्दाश्रितगुडा कल्पो न्याये सुरद्रुमे ॥ १६ ॥  
 विकल्पेऽपि च कक्षस्तु गुल्मे स्पर्धापदे तृणे ।  
 काम्यस्पृहास्मराः कामाः कलहेऽन्त्ययुगे कलिः ॥ १७ ॥  
 कुम्भो गजशिरोऽन्तेऽपि पद्मकेऽवनिताः खगाः ।  
 खरुः पुंस्मररुद्रेषु गर्मुद्रुक्मे खगे रवौ ॥ १८ ॥  
 गणाः प्रमथसङ्ख्यौघाः प्रावाणौ पर्वतोपलौ ।  
 तन्तुनागाग्रहौ ग्राहौ गुल्मो व्यूढा च वाहिनी ॥ १९ ॥  
 गण्डो गर्वेऽप्यथार्कादिसत्त्वादानाग्रहा ग्रहाः ।  
 गुणस्त्वावृत्तिशब्दादिज्येन्द्रियामुख्यतन्तुपु ॥ २० ॥  
 ग्रन्थो द्रव्यं वचश्शास्त्रं द्वात्रिंशद्वर्णसञ्चयः ।  
 गर्भोऽपवरकेऽन्नेऽग्नौ सुते पनसकण्टके ॥ २१ ॥  
 कुक्षौ कुक्षिस्थजन्तौ च गन्धो लेशो महीगुणे ।  
 घृणिर्ज्वालांशुवीचीषु चरुः स्थाल्यां हविष्यपि ॥ २२ ॥  
 चटुश्चाटुश्च राजादिस्तुतौ पशुपिचिण्डके ।  
 चक्री विष्णौ कुलालेऽहौ च्युपौ पवनसङ्क्रमौ ॥ २३ ॥  
 वशाभिप्राययोश्छन्दो जूर्णी रविहविर्भुजौ ।  
 टङ्कौ प्रमाणगर्वौ च डिम्बः ग्रीहखगाण्डयोः ॥ २४ ॥  
 तर्काः काङ्क्षावितर्कोहास्त्वष्टा तदिण्युशिल्पिनि ।  
 मणिदोषे भये त्रासस्तिष्यः पुष्ये कलौ युगे ॥ २५ ॥  
 द्वारपाले यमे दण्डी दन्तोऽद्रिकटके रदे ।  
 दायो दाने यौतकादिधने वित्ते च पैतृके ॥ २६ ॥  
 दवदावौ वनारण्यवह्नयोः खगार्कयोद्युवा ।  
 धवो वृत्ते नरे पत्यौ ध्वाङ्कः स्याद् वायसे बके ॥ २७ ॥  
 धातुर्वातादिशब्दादिगैरिकादित्वगादिषु ।  
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु शब्दयोनिस्वभावयोः ॥ २८ ॥

लोहेऽर्थे गैरिकस्वर्णरेतोऽस्थिषु विशेषतः ।  
 नरोऽर्जुने मनुष्ये च नाकः स्वर्गान्तरिक्षयोः ॥ २९ ॥  
 ग्राहाभ्राहिगजा नागा नाभिः क्षत्रे महानृपे ।  
 न्यङ्कुर्गुरुकुलेवासी शिष्यो मुनिमृगावपि ॥ ३० ॥  
 नाशः पलायने मृत्यौ परिवर्त्तसेऽप्यदर्शने ।  
 नम्रा वैतालिकाद्याश्च पिण्डो वृत्ते तनौ गुडे ॥ ३१ ॥  
 पीयुः काल उल्लूके च पीलुः काण्डे गजे द्रुमे ।  
 पुण्ड्राः कृमीक्षुतिलकाः पत्री श्येने शरे खगे ॥ ३२ ॥  
 प्रेषणे मर्दने प्रैषः पुङ्खः श्वेतशराङ्गयोः ।  
 पवी वातास्त्रधारे च पाकपोतौ शिशावपि ॥ ३३ ॥  
 पट्टो नेत्रेऽपि शाणे स्यात् पिण्डः कल्केऽपि तैलजे ।  
 पणो मूल्ये ग्लहे माने कार्षिकव्यवहारयोः ॥ ३४ ॥  
 घृते विक्रय्यशाकादिबद्धमुष्टौ भृतौ धने ।  
 पक्षः पार्श्वगरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥ ३५ ॥  
 पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्धमासे चुल्लिलबिलेऽन्तिके ।  
 प्रायो वयसि बाहुल्ये तुल्यानशनमृत्युषु ॥ ३६ ॥  
 पाशो रज्जौ कर्णशब्दात् परः कर्णेऽतिशोभने ।  
 क्रमनिम्नमहीभागकपिप्लुतिखगाः प्लवाः ॥ ३७ ॥  
 प्राणस्तु प्रणवे जीवे जीविते परमात्मनि ।  
 इन्द्रिये वायुभेदे च बलान्तर्यामिणोरपि ॥ ३८ ॥  
 श्वेतार्के ङाडिमे फालो बन्धाः सीसाधियन्त्रणाः ।  
 बलिः पूजोपहारे च दैत्यभेदे करेऽपि च ॥ ३९ ॥  
 बाष्पोऽश्रण्यम्बुधूमे च भानवोऽर्कहरांशवः ।  
 भूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे गर्भिण्यां श्रोत्रियद्विजे ॥ ४० ॥  
 भवो भद्रे हरे प्राप्नौ सत्तासंसारजन्मसु ।  
 भागा भाग्यांशतुर्यांशा भरभारौ गरिष्यपि ॥ ४१ ॥  
 भरवीवधयोश्चान्त्यौ भूस्पृशौ वैश्यमानवौ ।  
 विश्लेषे दारणे भेदो भेनः सूर्ये निशाकरे ॥ ४२ ॥  
 भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजन्तुषु ।  
 पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्वभावयोः ॥ ४३ ॥  
 भोगो राज्ये धने सौख्ये पालनाभ्यवहारयोः ।  
 फणे देहे च सर्पस्य वेश्यादीनां भृतावपि ॥ ४४ ॥



मन्त्रावृणादिगुह्योक्ती मन्युर्दैन्येऽध्वरे क्रुधि ।  
 मर्को मनसि वायौ च मोहाः क्रुन्मौर्ख्यमूढताः ॥ ४५ ॥  
 मार्गो मृगपदे मासि सौम्यर्क्षेऽन्वेषणेऽध्वनि ।  
 मृत आतश्चने व्रीहौ व्रीह्यादेर्बन्धने तृणैः ॥ ४६ ॥  
 मृगस्तु मृगशीर्षेऽपि मोक्षो मृत्यौ मरुद्गिरौ ।  
 यन्ता हस्तिपके सृते यक्षोऽग्न्यात्महरीष्टिषु ॥ ४७ ॥  
 ययुरश्वेऽश्वमेधाश्वे योगो विस्त्रब्धघातिनि ।  
 प्राप्तौ सन्नहनोपायध्यानसङ्गतिर्युक्तिषु ॥ ४८ ॥  
 रसो राने विषे वीर्ये तिक्तादौ पारदे द्रवे ।  
 रेतस्यास्वादाने हेम्नि निर्यासेऽमृतशब्दयोः ॥ ४९ ॥  
 रश्मी ज्वालाप्रग्रहौ च रदो दन्तविलेखयोः ।  
 राजा तु क्षत्रिये चन्द्रे लताभेदे नृपे प्रभौ ॥ ५० ॥  
 रागोऽनुरागे लाक्षादौ त्विषि राकस्तु पूष्णि च ।  
 रङ्गौ तु स्थानरागौ च भूप्रदेशे मृगे लिगुः ॥ ५१ ॥  
 भोजने लेपने लेपो लोकः स्याद् विष्टपे जने ।  
 वंशः पृष्ठास्त्रिंशो गोहोर्ध्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥ ५२ ॥  
 नासोर्ध्वास्त्रोक्षुभेदे च वहिरुद्दिण ह्येऽनले ।  
 वलो धान्येऽसुरे काके गवां श्वासेऽनिले वहः ॥ ५३ ॥  
 वेणू वेदसहस्रांशू गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ।  
 वालौ पुच्छाश्चपुच्छौ च व्याजश्छद्वापदेशयोः ॥ ५४ ॥  
 विधी तु दैवकालौ च वाजी त्वश्वे शरे खगे ।  
 विधुर्निशाकरे काले विष्णौ वातेऽग्निरक्षसोः ॥ ५५ ॥  
 वृन्दविन्यासयोर्व्यूहो वृषोऽप्यग्रये पुमिन्द्रयोः ।  
 वृत्राः शत्रुतमोदैत्या वेगः किम्पाकरंहसोः ॥ ५६ ॥  
 वेधसो विष्णुधातृज्ञाः शादः कर्दमशष्पयोः ।  
 शम्भुर्धातृहरार्हत्सु शक्रः कुटजवज्रिणोः ॥ ५७ ॥  
 शम्भो वज्रे लोहमयवलये मुसलाग्रगे ।  
 शरो रसाग्रसारेऽपि शूकोऽनुकोशशुङ्गयोः ॥ ५८ ॥  
 शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये खे श्रवणे ध्वनौ ।  
 शङ्कुः पत्रसिराजाले कीलेऽस्त्रे मेढ्रसङ्ख्ययोः ॥ ५९ ॥  
 कुक्कुटेऽग्नौ मयूरैऽशौ वृत्ते केतुग्रहे शिखी ।  
 पद्ये यशसि च श्लोकः षण्डौ विट्चरपण्डकौ ॥ ६० ॥

पृथूमसूमौ जले चन्द्रे तन्तुमङ्गलरश्मिषु ।  
 सन्नाजोऽग्नीन्द्रविष्णवर्का यश्च स्यान्मण्डलेश्वरः ॥ ६१ ॥  
 राजसूयेन येनेष्टं राज्ञः शास्त्याज्ञया च यः ।  
 सर्गास्तु सर्जनाध्यायस्वभावोत्साहनिश्चयाः ॥ ६२ ॥  
 सन्धिः श्लेषे सुरुङ्गायां नाट्याङ्गे योनिरन्ध्रयोः ।  
 स्वरोऽकाराद्युदात्ताद्योः षड्जादौ प्राणिनां स्वने ॥ ६३ ॥  
 सरटौ पक्षिजलदौ स्पशौ तु चरसंयुगौ ।  
 स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ यूपांशे कुलिशे स्वरुः ॥ ६४ ॥  
 स्कन्दो धाता नदीकूलं साद्यश्चःरोहसूतयोः ।  
 सालो मत्स्ये वृक्षभेदे प्राकारद्रुममात्रयोः ॥ ६५ ॥  
 सिक्थो ना भक्तपूलाके मधूच्छिष्टे कचिन्नपुम् ।  
 सुतः पुत्रे सोमरसे सोमौ व्योमनिशाकरौ ॥ ६६ ॥  
 स्तूपा वायुरणोच्छ्वाया आज्ञाऽऽह्वानाध्वरा हवाः ।  
 हर्तुर्मृत्यौ महारागे हरा रुद्राग्निगर्दभाः ॥ ६७ ॥  
 हंसोऽश्वेऽर्के हरे विष्णौ खगे निर्लोभभूभुजि ।  
 जीवे श्वेतवृषे भिक्षौ पार्श्विकाप्रसभौ हठौ ॥ ६८ ॥  
 वारिपर्णी च हेतुस्तु कारणे कर्मजन्मनोः ।  
 हीरः सर्पे हरे सिंहे हेलिरालिङ्गने रवौ ॥ ६९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥



## स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चा पूजाप्रतिमयोरर्तिश्चापाग्रपीडयोः ।  
 अन्दूस्तु शृङ्खला पादभूषाऽप्यष्टी फलास्थयपि ॥ १ ॥  
 आस्था गोष्ठ्यां प्रतिज्ञायां तत्परत्वेऽवलम्बने ।  
 आशीरुगदंष्ट्रायां शुभवाक्याभिलाषयोः ॥ २ ॥  
 आलिः सेतौ सखीपङ्क्तयोराशा दिगतिवृष्णयोः ।  
 आजिः समेऽपि भूभागे गोनाडीभूद्युवाह्विडा ॥ ३ ॥  
 इलाऽप्येतासु चार्धे च स्याद्विज्या यागपूजयोः ।  
 इष्टिः स्पृहायजनयोरिरा भूवाक्सुराम्बुपु ॥ ४ ॥  
 अन्ने च स्यादथो ईतिरुपसर्गप्रवासयोः ।  
 ईहा तु लिप्सोद्यमयोरुतिः सूत्यभिरक्षयोः ॥ ५ ॥  
 ऊर्णा भ्रूमध्यगावर्ते तन्तौ मेपादिलोमसु ।  
 हिंसाविच्छेपयोः कीणिः कीर्तिः पङ्क्ते यशस्यपि ॥ ६ ॥  
 कक्ष्या कच्छे वरत्रायां काञ्च्यां गेहप्रकोष्ठके ।  
 कर्मा हाटकपुङ्ग्यां स्यादपि शालापलालयोः ॥ ७ ॥  
 कासूर्बुद्धौ कुवाच्यस्त्रे कान्तिः शोभाभिकामयोः ।  
 काष्ठोत्कर्षे सीम्नि दिशि क्षोण्यां वासे क्षये क्षितिः ॥ ८ ॥  
 क्रिया तु निष्कृतौ शिक्षाचिकित्सोपायकर्मसु ।  
 करणारम्भपूजासु चेष्टायां सम्प्रधारणे ॥ ९ ॥  
 काले शिल्पे वित्तवृद्धौ चन्द्रांशे कलने कला ।  
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु ज्ञानावयवयोरपि ॥ १० ॥  
 कोटिस्त्वश्रौ प्रकर्षेऽग्रे दशोपायगमे गतिः ।  
 गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि गुञ्जा भाण्डेऽपि वादने ॥ ११ ॥  
 घृणा जुगुप्साकृपयोर्घोणाऽपि रथकणिका ।  
 चिन्ताचचिक्ययोश्चर्चा चूर्णिग्रन्थे कपर्दके ॥ १२ ॥  
 चापाग्रे पिष्टके चूलिशृङ्गिर्द्वान्तिरेतसोः ।  
 छाया त्वनातृपे कान्तौ प्रतिबिम्बार्कजाययोः ॥ १३ ॥

जनिर्वरस्त्रीपत्योश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।  
 जातिश्छन्दसि मालत्यां सामान्ये जन्मगोत्रयोः ॥ १४ ॥  
 अलक्ष्म्यग्रजयोर्ज्येष्ठा गृहगोत्र्यक्षभेदयोः ।  
 जिह्वा वाग्रसनार्चिषु तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १५ ॥  
 तन्त्रीगुण्वीसिरयो रज्ज्वां वीणादिगे गुणे ।  
 तन्दूर्द्रोणिप्लवे दर्व्या वाद्ये काले लवे तुटिः ॥ १६ ॥  
 तुला साम्ये स्तम्भपीठे लेशशंशययोस्तुटिः ।  
 तूली शय्याकूर्चिकयोस्त्रेता त्वग्नित्रये युगे ॥ १७ ॥  
 दरदो भीतिहृद्गूढा दृष्टिर्धीदर्शनादिषु ।  
 द्रोणी स्यादम्बुवाहिन्यां द्रवभाण्डे गिरिप्लवे ॥ १८ ॥  
 दिष्टिः सुखे च दाने च धात्री भूव्युपमातरि ।  
 धनुः सुखीधनुर्ज्योसु धाना बीजेऽपि भूरुहाम् ॥ १९ ॥  
 धारास्त्राग्रेऽम्बुसन्तत्यां सैन्याग्रेऽश्वगतिष्वपि ।  
 धीता सुतायां बुद्धौ च धृतिः सौख्येऽपि धारणे ॥ २० ॥  
 निष्ठोत्कर्षे व्यवस्थायां नाशेऽन्ते व्रतयज्ञयोः ।  
 भित्तिमूले प्रधौ नेमिर्निन्दा कुत्साऽपवादयोः ॥ २१ ॥  
 पालिरश्रिः प्रदेशोऽङ्कः सशमश्रुः स्त्री त्सरुश्छदः ।  
 छन्दः सङ्ख्यावली पङ्क्तिः पक्तिर्गौरवपाकयोः ॥ २२ ॥  
 क्षुद्रग्रामेऽपि पल्ली स्यात् प्रभाऽर्चिषि च भासि च ।  
 प्रज्ञा प्राज्ञस्त्रियां बुद्धौ प्रजा तु जनपुत्रयोः ॥ २३ ॥  
 प्रसूर्जनन्यामश्वयां पारिः सृणिगुणेऽपि च ।  
 पादुकोपानहोः पादूः प्राप्ती अभिगमोदयौ ॥ २४ ॥  
 पीडाऽवमर्दकृपयोः प्रीतिः प्रेमप्रमोदयोः ।  
 प्रेक्षा नृत्तेक्षणे बुद्धौ बाधा दुःखनिषेधयोः ॥ २५ ॥  
 भसदौ गुह्यवित्कोष्ठौ भक्तिर्भागे निषेवणे ।  
 भिक्षा तु भिक्षितान्नादौ याच्यवायां भृतिसेवयोः ॥ २६ ॥  
 भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे भूतिः श्रीजन्मभस्मसु ।  
 मतिः काङ्क्षा शेमुषी च मल्लिर्मुत्पात्रपीठयोः ॥ २७ ॥



माता तु गव्यकारादौ ब्राह्मणाद्यासु प्रसूतयोः ।  
 मूर्तिर्देहप्रतिमयोः काककाठिन्ययोरपि ॥ २८ ॥  
 पुंश्चल्यां मौक्तिके मुक्ता कारासंयमयोर्यतिः ।  
 गमने जीवने यात्रा रुजा रुग्भृङ्गमृत्यवः ॥ २९ ॥  
 राजिः पङ्क्तौ राजसर्पे क्षेत्रेऽधो रसनस्य च ।  
 रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयोः ॥ ३० ॥  
 प्रचारे श्रवणे पङ्क्तौ रण्डा स्याद्विधवाऽपि च ।  
 रुचिः कान्त्यर्चिषोर्भासि तिन्त्रिडीके स्पृहाश्रियोः ॥ ३१ ॥  
 रेटिर्वहेश्च रटितं वाणी चासंयतोत्कटा ।  
 रेखायामावलौ रेखा लङ्का पूर्वेदशाखयोः ॥ ३२ ॥  
 लीला क्रिया विलासश्च वपा गोण्डो बिलं तथा ।  
 बलिर्मध्यगरेखोर्मिजीर्णत्वग्गृहदारु च ॥ ३३ ॥  
 वर्ध्री स्नायुनि नध्र्या च ब्रज्या पर्यटने गतौ ।  
 विधा विधाने हस्त्यन्ने भृत्यामृद्धिप्रकारयोः ॥ ३४ ॥  
 वीरुधौ गुल्मगुल्मिन्यौ वीथी पङ्क्त्यध्वनोरपि ।  
 वीचिः पङ्क्त्यूर्मिलेशेषु व्युष्टी फलसमृद्धते ॥ ३५ ॥  
 वृत्तिर्ग्रन्थाजीवयोश्च वेलाऽब्धिजलवर्धने ।  
 काले सीमि च वेणी तु केशबन्धे जलस्रुतौ ॥ ३६ ॥  
 वृद्धिः सुखेऽपि जङ्घापि वारुः शुक्तिस्तु हृज्जि ।  
 अश्ववर्ते च शाला तु गृहाङ्गस्कन्धशाखयोः ॥ ३७ ॥  
 शक्तिः कासूर्बलं लक्ष्मीः शारदावृतुवत्सरौ ।  
 शङ्का वितर्कभययोः श्रद्धाऽऽस्तिक्याभिलाषयोः ॥ ३८ ॥  
 शाखा वेदप्रभेदेषु बाहौ पादद्रुमाङ्गयोः ।  
 श्यामा कन्या निशा चाथ शान्तिः प्रशममङ्गले ॥ ३९ ॥  
 शिखा षालाकेकिमौल्योः शिफा शाखाप्रमौलिषु ।  
 शुण्डा करिकरे मद्ये श्रुतिर्वेदे श्रवस्यापि ॥ ४० ॥  
 शय्या तल्पे ग्रन्थगुम्फे शंसा तु स्तववाक्ययोः ।  
 संविद् युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥ ४१ ॥

सम्भाषणे क्रियाकारे विज्ञाने तोषणेऽपि च ।  
 सभा तु संसदि द्यूते गृहे सामाजिकेषु च ॥ ४२ ॥  
 संज्ञाऽर्कभार्या चैतन्यं हस्ताद्यैः सूचनाऽभिधा ।  
 संस्था व्यवस्थाप्रणिधिसमाप्त्याकारमृत्युषु ॥ ४३ ॥  
 सन्धाऽवधौ प्रतिज्ञायां सातिर्दानावसानयोः ।  
 सीमसीमे तु कूलेऽपि स्थानमर्यादयोः स्थितिः ॥ ४४ ॥  
 गङ्गेष्टिमूर्वयोः स्नुह्यां लेपभेदेऽमृते सुधा ।  
 राश्ममेखलयोः स्थूना सीता सस्ये हलाध्वनि ॥ ४५ ॥  
 स्थूणा सूर्म्या गृहस्तम्भे हिंसा चौर्यादिके वधे ।  
 हेलाऽवज्ञाभावचारौ हेतिर्ज्वालांशुरायुधम् ॥ ४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥



## नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अभ्रं सलिलदे व्योमन्यस्त्रं कोदण्ड आयुधे ।  
 अभ्रं पुरःशिखामानशैष्ट्याधिक्यफलेषु च ॥ १ ॥  
 मुष्के पद्यादिकोशोऽण्डं दुःखेनोव्यसनेष्वधम् ।  
 अर्शसी व्याधिदुर्नाम्नी आज्ये श्रीवाससर्पिषि ॥ २ ॥  
 वर्षार्थजीवितेष्वायुरास्थं मुखविले मुखे ।  
 उरस्तु वक्षसि श्रेष्ठ ऋतं तथ्यशिलोऽद्भयोः ॥ ३ ॥  
 ओजोऽवष्टम्भबलयोरोकसी मन्दिराश्रमौ ।  
 क्रियायजनयोः कर्म क्षीरं दोहजम्बु च ॥ ४ ॥  
 कुण्डं स्थात्यां जलाधारविशेषेऽनलगर्तके ।  
 पिण्याको नम्रहः किण्वं कूलं तीरे चमूकटौ ॥ ५ ॥  
 क्षेत्रं गृहे पुरे देहे केदारे योनिभार्ययोः ।  
 पुण्यस्थाने समूहे च घृतं त्वाज्येऽम्बुसर्पिषोः ॥ ६ ॥  
 चक्रं सैन्ये जलावर्ते रथाङ्गे चयराष्ट्रयोः ।  
 संसारे मण्डले वृत्ते छद्मभेदास्त्रभेदयोः ॥ ७ ॥  
 चैत्यं चिताङ्गे बुद्धाण्डे उद्देशेऽद्रौ सुरालये ।  
 चिह्नमङ्गे पताकायां छद्म सद्धानि कैतवे ॥ ८ ॥  
 छन्दः श्रुतीच्छापद्येषुच्छिद्रं रन्ध्रापराधयोः ।  
 जालं गवाक्ष आनाये क्षारके कपटे गणे ॥ ९ ॥  
 जीलं चर्मपुटः कोशो दृतिः करकपत्रिका ।  
 ज्योतिस्ताराग्निभाज्वालाहकपुत्रार्थाध्वरात्मसु ॥ १० ॥  
 तन्त्रं स्वराष्ट्रव्यापारे तन्तुवाने परिच्छेदे ।  
 शास्त्रौषधान्त्रमुख्येषु प्रयोगेऽध्वरकर्मणम् ॥ ११ ॥  
 एकस्यैवोभयार्थत्वे कुड्मुम्बव्यापृतावपि ।  
 तल्पं शय्याट्टजायासु तनुषी तनुविस्मृती ॥ १२ ॥  
 त्रपु सीसे च रङ्गे च तरसी बलरंहसी ।  
 तीर्थ मन्त्राद्युपाध्यायशास्त्रेष्वम्भसि पावने ॥ १३ ॥  
 पात्रोपायावतारेषु स्त्रीपुष्पे योनियज्ञयोः ।  
 तेजो बले प्रभावेऽन्ने ज्योतिष्यर्चिषि रेतसि ॥ १४ ॥

नवनीतेऽनले धर्मे दानं हस्तिमदेऽपि च ।  
 द्वयं गुणानामाधारे भेषजे योगवित्तयोः ॥ १५ ॥  
 द्वन्द्वं युग्मं हिमोष्णादि मिथुनं कलहो रहः ।  
 धाम जन्मप्रभावान्नभाःसु खे भोजने गृहे ॥ १६ ॥  
 नेत्रं नाड्यां तरोर्मूले वस्त्रे दृशि मथो गुणे ।  
 नाट्यं तौर्यत्रिके नृत्ते नालं विवरशेषसोः ॥ १७ ॥  
 पदं स्थाने शरे त्राणे पादाङ्के पादचिह्नयोः ।  
 शब्देऽशुवस्तुवाक्येषु व्यवसायापदेशयोः ॥ १८ ॥  
 पर्व ग्रन्थौ पञ्चदश्यां प्रस्तावे विषुवादिके ।  
 पक्ष्म सूत्राद्यवयवे किञ्चल्के नेत्रलोमसु ॥ १९ ॥  
 पत्रं तु वाहने पर्णे क्षुरिकागरुतोरपि ।  
 पयोऽम्भसि च दुग्धे च पाथसी सलिलौदनौ ॥ २० ॥  
 पात्रं तु भाजने योग्ये वित्ते कूलद्वयान्तरे ।  
 पार्थीषि स्वर्गचन्द्रार्का पिच्छं बर्हे खगच्छदे ॥ २१ ॥  
 पोत्रं मुखाग्रदेशे स्यात् सूकरस्य हलस्य च ।  
 नवनीतं पयः पीथं बर्हं पर्णशिखण्डयोः ॥ २२ ॥  
 बीजं शुक्ले फलास्थन्यन्ने भर्मणी स्वर्णवेतने ।  
 वणिङ्मूलधने पात्रे भाण्डं भूषाश्वभूषयोः ॥ २३ ॥  
 भाग्यं कर्मण्यन्यजन्मकर्मण्यपि शुभाशुभे ।  
 भर्गसी रेतआलोकौ महसी तेजउत्सवौ ॥ २४ ॥  
 माल्यं पुष्पे पुष्पदाम्नि मूल्यं वेतनवस्त्रयोः ।  
 मुखं तु वदने मुख्ये ताम्रे द्वाराभ्युपाययोः ॥ २५ ॥  
 मूलं वशीकृतौ स्वीये शिफातारान्तिकादिषु ।  
 गमने वाहने यानं रत्नं श्रेष्ठे मणावपि ॥ २६ ॥  
 रहो रहस्ये सुरते रिष्टं नाशे शुभेऽशुभे ।  
 रुक्मं हेम सुलोहं च रेतसी शुक्लम्बु च ॥ २७ ॥  
 रूपं शब्दे पशौ श्लोके ग्रन्थावृत्तौ सितादिषु ।  
 सौन्दर्ये च स्वभावे च शरद्रेण्वार्वे रजः ॥ २८ ॥  
 ललं पल्लव उद्याने लक्ष्म चिह्नवरिष्ठयोः ।  
 स्यादुपच्छन्दने लालं गुह्यार्थपरभार्ययोः ॥ २९ ॥  
 लिङ्गं शेषसि वेषेऽशे चिह्ने बुद्ध्यादिसंहतौ ।  
 वयः खगेऽन्ने वर्षेऽर्थे शुभाकारे तनौ वपुः ॥ ३० ॥



वर्चोऽर्चिरूपविड्भाःसु वनं भास्यप्सु कानने ।  
 व्रतं विष्णुवृतुवर्षेज्यातपोमासाग्निभुक्तिषु ॥ ३१ ॥  
 वीर्यं पराक्रमे रेतस्यन्नमाहात्म्ययोरपि ।  
 वेष्टं ब्रह्मणि नाके च शल्के शकलवल्कले ॥ ३२ ॥  
 शास्त्राण्यस्त्रमयःशंसा शास्त्रं ग्रन्थनिदेशयोः ।  
 शार्ङ्गं चापे हरेश्चापे शीलं वृत्तस्वभावयोः ॥ ३३ ॥  
 शुल्बं ताम्रे यज्ञकर्मण्याचारे जलसन्निधौ ।  
 शोचिः शोकांशुपैङ्गल्यशुद्धत्वेषु सरोऽप्सु च ॥ ३४ ॥  
 यज्ञभेदे सदादाने सत्रमाच्छादने वने ।  
 सर्पिर्घृते च तोये च सान्त्वे दाक्षिण्यसान्त्वने ॥ ३५ ॥  
 स्नानीयेऽभिषवे स्नानं स्थानं स्यादाश्रये स्थितौ ।  
 सूत्रं तन्तौ सङ्ग्रहोक्तौ सुखमानन्दतोययोः ॥ ३६ ॥  
 स्रोतोऽम्बुनिर्गमद्वार इन्द्रियेऽप्सु जलस्रुतौ ।  
 हविर्हव्ये घृते तोये हेम्नी काञ्चनवेतने ॥ ३७ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

### अथवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अर्थोऽर्थयुक्तात्मवतोरन्त्योऽन्त्यजनिर्कृष्टयोः ।  
 क्लृप्तेऽर्घ्यार्घ्यमर्घाहेऽप्यदस्त्वत्र परत्र च ॥ १ ॥  
 अन्यौ विभिन्नसदृशावार्यः साधुकुलीनयोः ।  
 आद्यमादिभवे भक्ष्येऽप्युत्पत्तिरहितेऽप्यृजुः ॥ २ ॥  
 मुख्यान्यकेवलेष्वेकः कष्टौ गहनदुःखितौ ।  
 कल्या नीरुग्दक्षसज्जा योग्ययुक्तहिताः क्षमाः ॥ ३ ॥  
 कटुस्तिक्ताप्रियाकार्यसुरभ्यूषणमत्सरे ।  
 क्रूरो भयङ्करे क्रुद्धे नृशंसे कठिनोष्णयोः ॥ ४ ॥  
 गौरोऽरुणे सिते पीते गृह्यस्त्वस्वैरिपक्षयोः ।  
 छिन्नाक्षौ छिन्ननेत्रे च चिल्लं चुल्लं च पिब्लवत् ॥ ५ ॥  
 चोद्यं चित्रे चोदनाहं चारु चित्रवचस्यपि ।  
 जडो जालमश्रु निबुद्धौ स्तब्धेऽनालोच्यकारिणि ॥ ६ ॥  
 ज्यायान् ज्येष्ठश्चाग्रजन्मन्यतिवृद्धातिशस्तयोः ।  
 जात्यः श्रेष्ठे कुलीने च डिम्भो बालिशबालयोः ॥ ७ ॥  
 द्रुतं शीघ्रे शीघ्रगतेऽप्यवदीर्णविलीनयोः ।  
 दृढं गाढेऽधिके स्थूले धूतं त्यक्ते प्रकम्पिते ॥ ८ ॥  
 धृष्णुर्धृष्टे प्रगल्भे च कुटिले बन्धुरे नतम् ।  
 न्यक्षं छिष्टे निकृष्टे च निजमात्मीयनित्ययोः ॥ ९ ॥  
 नीचं खर्वं निकृष्टे च समर्थेऽधिपतौ प्रभुः ।  
 प्राप्तं न्याय्ये च लब्धे च विपुलानेकयोर्बहु ॥ १० ॥  
 बालो मूर्खे शिशौ भव्यो भावी योग्यः शुभोऽपि च ।  
 मिश्रेऽपि भिन्नं म्लिष्टं तु म्लानाविस्पष्टवाक्ययोः ॥ ११ ॥  
 मुग्धं सौम्ये नवे मूढे मूढो मोहिनि तन्द्रिते ।  
 मृद्वतीक्षणे कोमले च बद्धोपरतयोर्यतः ॥ १२ ॥  
 याप्यं गह्वं यापनीये पृथक्संयुक्तयोर्युतम् ।  
 न्याय्यसंयुक्तयोर्युक्तं रूक्षो निष्प्रेम्यचिक्कणे ॥ १३ ॥  
 रथ्यो रथहितेऽमुष्य स्वीयेऽस्याश्वे च वोढरि ।  
 रागवद्रोहितौ रक्तौ रामश्चारौ सितेऽसिते ॥ १४ ॥



न्याय्यलब्धव्ययोर्लभ्यं लितो भक्षितदिग्धयोः ।  
 लघु त्वसारागुरुणोरिष्टे क्षिप्रमनोज्ञयोः ॥ १५ ॥  
 लोलं चले लोलुपे च व्यग्रो व्यापृत आकुले ।  
 वल्गु मञ्जौ च वामस्तु सौम्ये सव्यप्रतीययोः ॥ १६ ॥  
 विद्धं विदारिते तुल्ये विन्नं लब्धे विचारिते ।  
 शितिः श्वेते च नीले च शुभो मञ्जुप्रशस्तयोः ॥ १७ ॥  
 शुभ्रं शुक्ले भास्वरे च शुक्तं तु परुषाम्लयोः ।  
 सभ्यः सामाजिके साधौ सव्यो दक्षिणवामयोः ॥ १८ ॥  
 सन्नमलपे विशीर्णादौ स्वादुर्मधुरमृष्टयोः ।  
 स्फुटाः स्पष्टव्याप्तकुलाः स्थूलौ तु जडपीवरौ ॥ १९ ॥  
 मन्त्रिण्यपि सुहृत्स्निग्धे प्रतिज्ञावत्यपि स्थितः ।  
 मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरो हीनो मुक्तविगर्हयोः ॥ २० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 द्वयक्षरकाण्डे अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

### नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

नानालिङ्गेषु सर्वत्र स्वयमेव कचित् कचित् ।  
 उन्नेयमर्थवलिङ्गं गुणद्रव्यक्रियार्थकम् ॥ १ ॥  
 अक्षो रथाङ्ग आधारे व्यवहारे विभीतके ।  
 शकटे पाशके कर्षे द्यूतभेदेऽक्षमिन्द्रिये ॥ २ ॥  
 अब्जो धन्वन्तरौ शङ्खे चन्द्रे क्ली तवणेऽम्बुजे ।  
 प्रदेशेऽश उपायेऽङ्गमङ्गो देशेऽङ्गशालिनि ॥ ३ ॥  
 अविर्भूतपुष्पवत्योः स्त्री वायुप्राकारभाः सु ना ।  
 अजः पितामहेऽनादौ छागे विष्णौ हरे रवौ ॥ ४ ॥  
 अन्तोऽस्त्र्यवसिते मृत्यौ स्वरूपे निश्चयेऽन्तिके ।  
 नार्धमासेऽणिरकल्यश्रौ रूप्येऽक्षाप्रध्रुवे ध्रुवे ॥ ५ ॥  
 अर्हन्तौ जिनसम्मान्यावर्चन्तौ हयकुत्सितौ ।  
 अन्धोऽचक्षुस्तमोऽप्यन्धमर्चिर्भास्वालयोर्न ना ॥ ६ ॥  
 अस्त्र आस्रश्च पुंलिङ्गौ क्लेशे क्ली रुधिरेशुणि ।  
 आद्यो मुख्ये धातृपूर्वेष्वाभ्यामोऽपकेऽपि रुज्यपि ॥ ७ ॥  
 इनास्त्वात्माधिपार्काह्या उष्णोऽग्नौ चतुरेऽपि च ।  
 उशिर्नागनावुशीरेऽस्त्री न नोषः कल्यसन्ध्ययोः ॥ ८ ॥  
 उस्त्रः किरण उस्त्रा गौर् ऋक्षं निर्लोमनीन्द्रिये ।  
 कम्ब्वस्त्री वलये शंखे शम्बूके कणसंख्ययोः ॥ ९ ॥  
 कल्को ना सिंहके न स्त्री किट्टे दम्भेऽघपिष्टयोः ।  
 कारा बन्धनगेहे स्त्री करे ना बन्धने न षण् ॥ १० ॥  
 कांस्यं कंसोऽस्त्रियां पानपात्रे तैजस आढके ।  
 काण्डोऽस्त्रीषौ बले नाले गर्ह्येऽवसरवर्गयोः ॥ ११ ॥  
 ग्रन्थौ स्तम्भे प्रकाण्डेऽप्सु कश्यं मद्यकशार्हयोः ।  
 क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे नृशंसेऽल्पनिकृष्टयोः ॥ १२ ॥  
 क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ।  
 कूटोऽस्त्री पुञ्जमायाघेष्वाद्रिशृङ्गेषुभेदयोः ॥ १३ ॥  
 अयोधनेऽनृते फाले दम्भे निश्चलयन्त्रके ।  
 कृष्णं सीसाघलोहेषु कृष्णो नीले नले कलौ ॥ १४ ॥



शूरे काके पिके व्यासे ध्वान्तपक्षेऽर्जुने हरौ ।  
 कोशोऽस्त्री कुड्मले दिव्ये शास्त्रेऽर्थौ गृहे तनौ ॥ १५ ॥  
 गुह्येऽण्डे वेष्टके पेश्यां पुस्तकासिपिधानयोः ।  
 कोलं बदरतकोलशुण्ठीव्योषेऽर्धकर्षके ॥ १६ ॥  
 कोला चव्येऽस्त्रपिप्पल्योः कोलः खञ्जे प्लवे कटौ ।  
 कायो लक्ष्ये तनौ वृन्दे पुमांस्त्रिषु कदैवते ॥ १७ ॥  
 कर्षूः स्त्री तुषकोष्ठे कुल्यायां ना च ना करीषाग्नौ ।  
 श्रोण्यां भृशे कलिञ्जे गजगण्डे शवरथे शवे च कटः ॥ १८ ॥  
 किङ्कुर्वितस्तावनपुं सप्रकोष्ठकरे पुमान् ।  
 कीलोऽस्त्री कफणौ ज्वाले बाहौ ना शङ्कुशर्वयोः ॥ १९ ॥  
 पीठे श्मश्रुणि कूर्चोऽस्त्री भ्रूमध्ये कथने कुशे ।  
 कृत्या क्रियादेवतयोः कार्ये स्त्री कुपिते त्रिषु ॥ २० ॥  
 युगेऽक्षपाते पर्याप्ते कृतं स्त्री विहितेऽर्थवत् ।  
 द्वेढा वेणुशलाकायां सिंहनादे विषे तु ना ॥ २१ ॥  
 चेमो ना प्राप्तरक्षायां मोक्षेऽप्यस्त्री तु मङ्गले ।  
 स्वीयेऽन्तःकुक्षि कोष्ठोऽस्त्री कुसूलेऽन्तर्गृहे पदे ॥ २२ ॥  
 क्रोडं स्त्री कर्ष उत्सङ्गे सूकरे ना न नोरसि ।  
 औषधे रुजि कुष्ठोऽस्त्री कुब्जोऽस्त्री गह्वरे हनौ ॥ २३ ॥  
 दर्भे कुशोऽस्त्री तोये क्ली कुटिवेके गृहे नषण् ।  
 कृष्टिर्विलेखे प्राज्ञे ना खेटो ग्रामे कफेऽधमे ॥ २४ ॥  
 अर्धे गुडविकारे च खण्डोऽस्त्री खण्डिते त्रिषु ।  
 खलं भूस्थानकल्केषु खलो नीचः खलेत्वरी ॥ २५ ॥  
 गव्यूतौ गोगणे गव्या ज्यायागद्रव्ययोर्नपुम् ।  
 भाण्डागारे पुमान् गञ्जः स्त्री तु खन्यां सुरागृहे ॥ २६ ॥  
 गुडौ पिण्डेक्षुविकृती स्नुहीगुलिकयोर्गुडा ।  
 गुरुगोष्पतिपित्राद्योः पौरोहित्यकरे च ना ॥ २७ ॥  
 मात्रादौ स्त्री बृहत्खातदुर्भरालघुषु त्रिषु ।  
 गोत्रा गोनिचये भूम्यां गोत्रं नास्ति कुलेऽचले ॥ २८ ॥  
 गङ्गुः पृष्ठगुडे कुब्जे गदो रोगो गदायुधम् ।  
 गोप्यो रक्ष्ये दाससुते घ्राणमाघ्रातनासयोः ॥ २९ ॥  
 घनाः कठिनसङ्घातमेषकाठिन्यमुद्गराः ।  
 चित्रा सुभद्रा तारा च चित्रमालेख्यमिश्रयोः ॥ ३० ॥

चेलं वासोऽक्षमं काम्यं गहितं बहिचन्द्रकः ।  
 चुम्नो नाशे विषण्णे च चोक्षो गीतमनोज्ञयोः ॥ ३१ ॥  
 छेको विदग्धे गृह्ये च जिह्वं मन्देऽघवक्रयोः ।  
 जन्यं रणे जनितरि विगीतजननीययोः ॥ ३२ ॥  
 ज्ञातिभृत्या नवोढाया जन्याः स्निग्धा वरस्य च ।  
 जीवः प्राणे त्रयी ना तु जन्तवात्मनि गोष्पतौ ॥ ३३ ॥  
 त्रिषु जीवति मौर्व्या स्त्री स्याज्जीर्णो वज्रवृद्धयोः ।  
 भ्रूषा नागबलायां स्त्री ना मत्स्ये मकरे वने ॥ ३४ ॥  
 तनुः स्त्री त्वचि देहे च त्रिष्वल्पे विरले कृशे ।  
 तमा राहुस्तमोऽघं शुक् स्वरूपेऽधस्तलोऽस्त्रियाम् ॥ ३५ ॥  
 क्ली तुल्यदेशे तारस्तु मुक्ताशुक्लौ समौक्तिके ।  
 उडुहृद्ध्ययोरकली तुच्छं त्वसुखशून्ययोः ॥ ३६ ॥  
 ताम्रं शुल्बे शुल्बनिभे तिग्मास्तीक्ष्णोष्णभास्कराः ।  
 तीक्ष्णमुष्णे क्षण्ते युद्ध आत्मत्यजि विषेऽयसि ॥ ३७ ॥  
 कर्णमूलेऽभ्रहरितोस्तोक्मं तोक्मो हरिद्यवः ।  
 दण्डोऽस्त्री शासने राज्ञां हिंसायां लगुडे दमे ॥ ३८ ॥  
 मिथ्याऽऽज्ञायां सैन्यभेदे दलो भागे दलं छदे ।  
 दरोऽस्त्री शङ्खभीगर्तेष्वल्पार्थे त्वव्ययं दरम् ॥ ३९ ॥  
 दंष्ट्री ग्राहे सदंष्ट्रेऽहौ शार्दूले मूषिके कटौ ।  
 परिमाणे दारुपात्रे द्रोणोऽस्त्री वायसे पुमान् ॥ ४० ॥  
 दिग्धो विषप्रलिप्तेषौ लिप्ते स्नेहप्रवृद्धयोः ।  
 दुर्गो राष्ट्रे वने दुर्गं दुर्गमे नरके पुरे ॥ ४१ ॥  
 दृश्या स्यात् पृतना दृश्यं दर्शनीये विभूषणे ।  
 धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे ना तु सोमपे ॥ ४२ ॥  
 न्यायाचारयमाहिंसास्वस्त्री मेढाङ्कयोर्ध्वजः ।  
 धिष्ण्यौ शुक्रानलौ धिष्ण्यमृत्ते स्थाने बले गृहे ॥ ४३ ॥  
 ध्रुवो धात्रीशकीलर्क्षनित्येषु स्त्री तु भूस्त्रुचोः ।  
 स्त्री तर्के निश्चिते व्योम्नि धीरोऽब्धौ मन्थरे बुधे ॥ ४४ ॥  
 निष्कोऽस्त्री हेम्नि दीनारे साष्टे कर्षशते पले ।  
 वक्षोविभूषणे कर्षे नाथस्त्वन्द्रे प्रभावपि ॥ ४५ ॥  
 न्युब्जं कुब्जे कर्मरङ्गे न्युब्जो व्याधावधोमुखे ।  
 नेमः पुरोहिते तुल्ये प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ॥ ४६ ॥



बन्धने दूरमार्गे च प्राध्वं क्ली प्रवणे त्रिषु ।  
 पूर्वोऽर्थलिङ्गः प्राच्यादौ पूर्वजेषु नृभूमवान् ॥ ४७ ॥  
 पद्मोऽस्त्रयब्जेऽष्टकायां क्ली सङ्ख्यायां गजबिन्दुषु ।  
 ना तु नागे निधौ व्यूहे पङ्क्तोऽस्त्री कर्दमैनसोः ॥ ४८ ॥  
 परं दूरान्यमुख्येषु परोऽरिपरमात्मनोः ।  
 पार्त्तिरुन्मत्तनार्या स्त्री पादग्रन्थेरधोऽपि च ॥ ४९ ॥  
 पुमांस्तु प्रतनाकट्यां पापं स्यात् कूरपाप्मनोः ।  
 पुण्यं धर्मे जले हेम्नि पुष्पे क्ली सुन्दरेऽर्थवत् ॥ ५० ॥  
 पार्श्वमस्त्री समीपेऽपि पूज्यः श्वशुरमान्ययोः ।  
 स्नेहे केलौ प्रेम न स्त्री पीतिः पाने हये तु ना ॥ ५१ ॥  
 स्यात् परेत इव प्रेतो मृतप्राणिविशेषयोः ।  
 लाभनिष्पत्तिभोगेषु बीजे फाले धने फलम् ॥ ५२ ॥  
 फली ताम्रादिफलके बहिर्नाऽग्नौ नपुं कुशे ।  
 ब्रह्मा रुद्रेन्द्रभृगवादिविप्रविग्नधातृषु ॥ ५३ ॥  
 अर्केऽग्नौ क्ली तु वेदेऽन्ने स्वाध्यायात्मतपःसु च ।  
 बलं रूपेऽस्थनि स्थौल्ये शक्तिरेतश्चमूषु च ॥ ५४ ॥  
 बलो रामे बलाढ्ये च बाढं त्वनुमते दृढे ।  
 बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमामुखलक्ष्मसु ॥ ५५ ॥  
 प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ क्ली तु स्याद् बिम्बिकाफले ।  
 साज्ये मधुनि तक्कोले बोलं बोलोऽम्भसां भ्रमः ॥ ५६ ॥  
 बोधिरर्थे सुविज्ञाने कुक्कुटाश्वत्थयोस्तु ना ।  
 बालोऽकली नीलभिण्ड्यां च भेलौ तूडुपभीरुकौ ॥ ५७ ॥  
 भगं योन्यां भगो यत्ने यशोवीर्याकभूतिषु ।  
 कान्तीच्छाज्ञानवैराग्यधर्मैश्वर्यतपःसु च ॥ ५८ ॥  
 खादौ जन्तौ च भूतं क्ली समातीतोचिते त्रिषु ।  
 भास्वानिन्दौ भास्वरेऽर्के भेको वर्षाभिव कातरे ॥ ५९ ॥  
 अन्नतत्परयोर्भक्तं भद्रं कल्याणसौख्ययोः ।  
 मन्दाः सरोगनिर्भाग्यस्वल्पाज्ञापदुसूर्यजाः ॥ ६० ॥  
 क्षौद्रादौ तद्रसेऽप्यस्त्री ना वसन्ते रसेऽसुरे ।  
 चैत्रे मधूके क्ली त्वप्सु मद्ये पुष्परसे मधु ॥ ६१ ॥  
 अकली मणिरजाकण्ठस्तने रत्नेऽप्यलिङ्गरे ।  
 मात्रा परिच्छदेऽर्थेशे प्रवृत्तौ कर्णभूषणे ॥ ६२ ॥

अक्षरावयवे माने मात्रं कात्स्न्येऽवधारणे ।  
 मध्यं युक्तेऽन्तराले च महद्राज्यविशालयोः ॥ ६३ ॥  
 मोचा कदल्यां स्त्री वृक्षरसे ना पाटले नषण् ।  
 मौलिः संयतकेशेषु चूडायां मुकुटेऽप्यषण् ॥ ६४ ॥  
 मलं किट्टाघयोश्चास्त्री यमजान्तकयोर्यमः ।  
 ययुर्ना मोक्षमार्गेऽश्वे स्त्री त्वाप्तौ दीर्घयष्टिके ॥ ६५ ॥  
 युगोऽस्त्री स्यन्दनाद्यङ्गे क्ली तु युग्मे कृतादिके ।  
 योनिः स्त्रीणां भगे स्थाने कारणे ताम्रकेऽप्यषण् ॥ ६६ ॥  
 योग्यं यन्त्रक्षमापूपयानोपायिषु चन्दने ।  
 योग्याभ्यासः क्षमापुण्ये रोको रश्मौ बिले नपुम् ॥ ६७ ॥  
 राजते भूषणे रूप्यं रजते हेम्नि चाहते ।  
 त्रिषु प्रशस्तरूपेऽथ रणोऽस्त्री युधि ना ध्वनौ ॥ ६८ ॥  
 राष्ट्रेऽस्त्री विषये जन्तौ लोहोऽस्त्री तैजसायसोः ।  
 लक्षं नपुं शरव्ये ना स्त्री व्याजे नियुते न ना ॥ ६९ ॥  
 वर्णो नीलादिविप्राद्योः कीर्तौ गीतिक्रमे स्तुतौ ।  
 कुथे वृतेऽक्षरे त्वस्त्री प्रकारे लेपशोभयोः ॥ ७० ॥  
 वशा करिण्यां बन्ध्यायां रामायां दुहितर्यपि ।  
 वशो जनस्पृहायत्तेष्वायत्तत्वप्रभुत्वयोः ॥ ७१ ॥  
 वरो ना रूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते वृत्तौ ।  
 त्रिष्वग्रये क्ली मनागिष्टे व्यक्तं स्पष्टे बुधे तु ना ॥ ७२ ॥  
 वत्सो ना कुटजे वर्षे तर्णके तनयादिके ।  
 बाले च वक्षसि त्वस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकास्त्रयोः ॥ ७३ ॥  
 व्यालो दुष्टगजे सर्पे श्वापदे च पुमांस्त्रिषु ।  
 शठेऽथ वित्तमर्थे क्ली त्रिषु ख्याते विचारिते ॥ ७४ ॥  
 वीतं शान्ते दुर्गजाश्वे वधो हिंसितृहिसयोः ।  
 वार्ता वातिङ्गणोदन्तवाणिज्यादिषु वर्तने ॥ ७५ ॥  
 निःसारारोग्ययोः षण्डो वृत्तिमन्त्रीरुजोस्त्रिषु ।  
 वृत्तं स्वरूपे चरिते वृत्तौ छन्दोविधासु च ॥ ७६ ॥  
 त्रिष्वतीतदृढाधीतवर्तुलेष्वथ गीष्पतौ ।  
 श्रेष्ठोक्षाश्वाखुरेतःसु पुं धर्मेन्द्रबले वृषः ॥ ७७ ॥  
 वसुर्हृदेऽग्नौ योक्त्रेऽशौ वसु तोये धने मणौ ।  
 विश्वं जगति सर्वस्मिन्स्त्रिषु शुण्ठ्यां पुनर्न ना ॥ ७८ ॥



वप्रः पितरि ना न स्त्री क्षेत्रे रोधसि सानुनि ।  
 वर्षोऽस्त्री भारताद्यब्दवृष्टिषु प्रावृष्टि स्त्रियः ॥ ७६ ॥  
 वास्त्वस्त्री गृहभूपूर्योगृहे सीमसुरुङ्गयोः ।  
 वानं शुष्के गतौ व्यूतौ गन्धे वृद्धौ सुधीयमौ ॥ ८० ॥  
 वर्ष्म न स्त्री शुभाकारे सौम्ये देहप्रमाणयोः ।  
 विभुः सर्वगते पत्यौ चन्द्रे रविकुबेरयोः ॥ ८१ ॥  
 वीरो राहौ हरे शक्रे शूरे स्कन्दकुबेरयोः ।  
 गजग्रहणभूमौ स्त्री वारिः स्यात् सलिलं नपुम् ॥ ८२ ॥  
 शङ्खोऽस्त्री वलये कम्बौ संख्यायां च निधौ तु ना ।  
 अमावस्यां च नागे च शितौ बाणतनूकृतौ ॥ ८३ ॥  
 शिवा हरीतकी क्रोष्टा शमी नद्यामलक्युमा ।  
 शिवो घोले पद्मरागे हरे कीले शिवं जले ॥ ८४ ॥  
 भद्रे चाथोपधा शुद्धसचिवेऽग्नौ हरौ शुचिः ।  
 चन्द्रेऽर्के च त्रिषु त्वेष शुद्धेऽनुपहते शिते ॥ ८५ ॥  
 शुक्रः सिते कवौ चन्द्रे मासभेदेऽनले द्विजे ।  
 शुक्रं मेध्येऽप्सु पुण्येऽर्थे रुक्मेऽक्षिरुजि रेतसि ॥ ८६ ॥  
 क्रीडाम्बुयन्त्रे शृङ्गोऽस्त्री पर्वताग्रप्रभुत्वयोः ।  
 पश्वङ्गे चाथ शेषस्त्रिष्वन्यस्मिन्नुपयुक्तः ॥ ८७ ॥  
 माल्याक्षतादिदाने स्त्री ना नागेशाप्रधानयोः ।  
 ना पर्याणे विहङ्गे स्त्री शारिर्घूते गुडे नषण् ॥ ८८ ॥  
 पथि देये शुल्कमस्त्री जामात्रा यच्च दीयते ।  
 श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्नपुमाकर्णितेऽर्थवत् ॥ ८९ ॥  
 सजातिशिल्पसंहत्यामषण्डः श्रेणिरावलौ ।  
 शौण्डी जलदमालायां शौण्डी समदकुक्कुटौ ॥ ९० ॥  
 शको विष्ठा पशूनां स्याद्देशे च गवये शकाः ।  
 शबले मारुते शारः शुद्धाः पूतार्ककेवलाः ॥ ९१ ॥  
 शुभ्रिर्नार्केऽर्थवत्सौम्ये शूरौ विक्रान्तकुक्कुटौ ।  
 शूलोऽस्त्री रुजि शस्त्रे च श्वेतं धवलरूपयोः ॥ ९२ ॥  
 शीतो ना वेतसे शैलौ शैत्ये क्ली तद्वति त्रिषु ।  
 सत्त्वोऽस्त्री जन्तुषु क्ली तु व्यवसाये पराक्रमे ॥ ९३ ॥  
 आत्मभावे पिशाचादौ द्रव्ये सत्तास्वभावयोः ।  
 प्राणे बलेऽन्तःकरणे स्वामी पत्यौ षडानने ॥ ९४ ॥

समा स्त्री वत्सरे साधुसर्वतुल्येषु वाच्यवत् ।  
 परमार्थेऽर्थवत् सत्यं षण्डः शपथतथ्ययोः ॥ ९५ ॥  
 स्पर्शः संस्पर्शने स्पर्शर्युपताप्रदानयोः ।  
 साधुस्त्रिषुचिते सौम्ये सज्जने वार्धुषौ पुमान् ॥ ९६ ॥  
 सारो बले स्थिरांशेऽर्थे पुमान् न्याये वरेऽर्थवत् ।  
 स्त्री नद्यां ना नदे सिन्धुर्देशभेदेऽम्बुधौ गजे ॥ ९७ ॥  
 सौम्यो विप्रे सोमजेऽब्दे सुन्दरे सोमदैवते ।  
 सखा सहाये बन्धौ ना सूक्ष्ममध्यात्मदभ्रयोः ॥ ९८ ॥  
 सूनं पुष्पे सुतायां स्त्री स्नेहोऽस्त्री द्रवहादयोः ।  
 विष्णुचन्द्रेन्द्रवातार्कयमाश्वांशुशुक्राग्निषु ॥ ९९ ॥  
 कपिभेकाहिसिंहेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ।  
 हयो वशीक्रिया मन्त्रे हृद्यं दध्युपलेपने ॥ १०० ॥  
 हत्प्रिये हृद्धिते हज्जे ह्रीकौ नकुललज्जितौ ।  
 यमेऽल्पे वामने ह्रस्वो हरित् स्त्री दिशि षण् तृणे ॥ १०१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

द्वयक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ६ ॥



## ७. अथ त्र्यक्षरकाण्डः

पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अविनौ विहगाध्वर्यु अरन्त्री हस्तकूर्परौ ।  
 अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे मरणे दण्डदोषयोः ॥ १ ॥  
 आसारः स्यात् प्रसरणे वेगवृष्टौ सुहृद्वले ।  
 आम्रहः स्यात् स्वीकरणे निर्बन्धेऽनुग्रहेऽपि च ॥ २ ॥  
 आम्नायोऽध्ययने वेदे सम्प्रदाये कुलेऽपि च ।  
 आकर्षः शारिफलको घृत आकृष्टिपाशकौ ॥ ३ ॥  
 गन्धमाल्योपहारे स्यादायोगो व्यावृतावपि ।  
 आनर्त्तो नृत्तशालायां देशभेदे जने युधि ॥ ४ ॥  
 आक्रन्दः क्रन्दने रावे नाथे घोररणेऽपि च ।  
 आधार आलवालेऽम्बुबन्धेऽधिकरणेऽपि च ॥ ५ ॥  
 आशिरः क्षीरविकृतौ भोजने पावके रवौ ।  
 आवापो न्यास आवाले स्मरे धातरि चात्मभूः ॥ ६ ॥  
 श्रोण्याञ्चारोह आकारस्त्वाकृतावात्मवैकृते ।  
 आमोदौ हर्षसौगन्धे आभोगौ यत्नपूर्णते ॥ ७ ॥  
 आघातौ घातसीमानावाहारौ भक्षणान्धसी ।  
 आलोकौ दर्शनोद्योतावागमौ शास्त्रमागतिः ॥ ८ ॥  
 रुभीतितापेष्वातङ्क आशुगोऽर्के शरेऽनिले ।  
 तदात्वे पात आपात आकरो निकरे खनौ ॥ ९ ॥  
 अग्न्याकर्षणमाक्षेप आलम्भः स्पर्शहिंसयोः ।  
 ईशानौ हरिधातारावुत्सेधौ वपुरुन्नती ॥ १० ॥  
 उपाधिर्धर्मचिन्तायां कुडुम्बव्यापृतेऽपि च ।  
 उत्सवस्त्वच्छाप्रसर उत्सेधामर्षयोर्महे ॥ ११ ॥  
 उदर्क उत्तरे काले यच्च स्यात् फलमुत्तरम् ।  
 उदान उदरावर्त्ते सर्पवायुप्रभेदयोः ॥ १२ ॥  
 ऊर्णायुर्णनाभे स्थान्मेघतल्लोमकम्बले ।  
 ऋषभोऽग्रये मत्तगजे श्रोत्ररन्ध्रे स्वरे वृषे ॥ १३ ॥

कुम्भीरपुच्छे च जलस्थाने त्वृक्षर ऋत्विजि ।  
 वेणौ दुमाङ्गे रोमाञ्चे क्षुद्रशत्रौ च कण्टकः ॥ १४ ॥  
 कञ्चुकः सर्पनिर्मोके कवचे वारवाणके ।  
 कलापो भूषणे काञ्च्यां सङ्घाते बर्हतूणयोः ॥ १५ ॥  
 क्षारको मत्स्यपद्यादिपिटके पुष्पजालके ।  
 दैवे कृतान्तः सिद्धान्ते यमाकुशलकर्मणोः ॥ १६ ॥  
 कौशिको गुग्गुलुलृकशक्रषिष्वाहितुण्डिके ।  
 कलङ्कोऽङ्केऽपवादे च कलहो द्वन्द्वयुद्धयोः ॥ १७ ॥  
 कलमोऽङ्कुरलेखन्योः कठाकुः खगशिल्पिनोः ।  
 कारुजः कलभे नाके क्ष्वथुः क्षुतकासयोः ॥ १८ ॥  
 कर्परोऽग्नौ कपालेऽपि करभोऽपि खरोष्ट्रयोः ।  
 शरे किशारुकादम्बौ कुरण्डस्तु ऋषेऽपि च ॥ १९ ॥  
 कुटीरस्तु कुलीरेऽपि कुम्भीलस्तस्करेऽपि च ।  
 कपोतः पारावतेऽपि कोकिलस्तूल्मुकेऽपि च ॥ २० ॥  
 वायौ वसन्ते क्षिपणुः क्षिपणो वायुकालयोः ।  
 कुषाकुः पावके सूर्ये केसरी हयसिंहयोः ॥ २१ ॥  
 किङ्किरौ क्रोष्टुखट्वाङ्गौ खेचरः पवनेऽपि च ।  
 खपुरः पूगवेष्टेऽपि पूगनिर्यासयोरपि ॥ २२ ॥  
 खोलकः पूगकोशे स्याद् भग्नभाण्डे शिरस्त्रके ।  
 गोलको मणिके पिण्डे कम्बले विधवासुते ॥ २३ ॥  
 अन्तराभवसत्त्वे स्याद् गन्धर्वो गायने हये ।  
 गरुत्मान् विहगे तार्क्ष्ये वृषार्केन्द्रेषु गोपतिः ॥ २४ ॥  
 चङ्कुरः स्यन्दने दैत्ये चाक्रिकौ तैलघाण्टिकौ ।  
 चिकिरोऽहौ गेहबध्नौ जसुरिः पावके शनौ ॥ २५ ॥  
 जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ जम्बालौ पङ्कशैवलौ ।  
 श्वेतस्तिलोऽपि जामाता जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ २६ ॥  
 जगलो मेदके पिष्टमद्येऽपि कितवेऽपि च ।  
 जनिमा मातापितरावुत्पत्तिस्तनयोऽपि च ॥ २७ ॥  
 त्रिवर्गस्त्रिफला व्योषं स्थितिवृद्धिक्षया अपि ।  
 तमोनुदोऽग्निचन्द्रार्कास्तक्षकौ नागवर्धकौ ॥ २८ ॥  
 तपनो भास्करे ग्रीष्मे त्रिदिवो व्योम्नि दिव्यपि ।  
 त्रिशङ्कू तार्क्ष्यमार्जारौ त्रिधामा केशवेऽनले ॥ २९ ॥



सपिण्डपुत्रौ दायादौ द्वापरौ युगसंशयौ ।  
 दिवौकाश्चातके देवे दुघणौ धातुमुद्गरौ ॥ ३० ॥  
 दरथो विवरे भीत्यां दिक्षु चापि प्रसारणे ।  
 द्विजातिश्च द्विजन्मा च ब्राह्मणादिपतत्रिणोः ॥ ३१ ॥  
 दुहिणौ हरिधातारौ शास्त्रोदाहरणयोस्तु दृष्टान्तः ।  
 दोषज्ञौ बुधभिषजौ धरुणाः स्तनधातुलोकार्काः ॥ ३२ ॥  
 धाराटश्चातकेऽश्वे च नभसौ व्योमसागरौ ।  
 निवेशौ शबिरोद्वाहौ निरोधौ रोधसंक्षयौ ॥ ३३ ॥  
 निदेशावाज्ञाकथने विग्रहः सीम्नि भर्त्सने ।  
 निवहो वायुभेदेऽपि निषङ्गस्तूणसङ्गयोः ॥ ३४ ॥  
 ऊर्णाविकारे नमतो धूमे दिनकरेऽपि च ।  
 निगमो निश्चये वेदे पुरे पथि वणिक्पथे ॥ ३५ ॥  
 नितम्बः पश्चिमश्रोणिभागेऽद्रिकटके कटौ ।  
 निष्क्रमो बुद्धिसामर्थ्ये निगतौ चाथ भूपतौ ॥ ३६ ॥  
 नरेन्द्रो विषवैद्ये च नैगमस्तु श्रुतावपि ।  
 निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि ॥ ३७ ॥  
 द्वार्यापीडे काथरसे निर्यूहो नागदन्तके ।  
 निषधोऽद्रौ देशभेदे कठिने तस्य राजनि ॥ ३८ ॥  
 निहवः स्यादविश्वासेऽपह्वे निक्वतावपि ।  
 निर्वेशः सम्मूर्च्छने स्यात् कर्मभृत्युपभोगयोः ॥ ३९ ॥  
 प्रतिज्ञायन्त्रणाऽऽज्ञासु नियमो निश्चये व्रते ।  
 पतङ्गः शलभे शालौ मार्जारोऽग्नौ रवौ खगे ॥ ४० ॥  
 परिधिर्यज्ञिये काष्ठे प्राकारे परिवेषणे ।  
 परिघाते मूढगर्मे परिघोऽर्गलदण्डयोः ॥ ४१ ॥  
 परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।  
 पर्जन्यो गर्जदध्रेऽध्रध्वाने शक्रेऽस्त्रयन्त्रके ॥ ४२ ॥  
 प्रलयो मरणे श्लेषे मूर्च्छासंवर्तयोरपि ।  
 प्रवहो वायुभेदे स्याद् वायुमात्रे बहिर्गतौ ॥ ४३ ॥  
 प्रयोगो ग्राम्यधर्मे स्यात् कुसीदे कर्मणां विधौ ।  
 प्रणयः स्यात् परिचये याच्न्यायां सौहृदेऽपि च ॥ ४४ ॥  
 प्रवाहस्तु प्रकृष्टाश्वे जलवेगे प्रवर्तने ।  
 पादपः पादपीठे स्यात् पादयाने द्रुमेऽपि च ॥ ४५ ॥

पिण्याकः सिंहके किण्वे श्रीवासतिलकल्कयोः ।  
 पुरुषो धातुपुन्नागपुंस्त्वात्मपरमात्मनोः ॥ ४६ ॥  
 पुलकोऽस्त्रे रत्नराज्यां रोमास्त्रे हीरके क्रिमौ ।  
 पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात् सङ्क्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ४७ ॥  
 प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयोः ।  
 पारम्पर्ये प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने ॥ ४८ ॥  
 तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्रहः प्रग्रहः पुनः ।  
 तयोश्च संयमोद्योतपूलाबन्धगर्वधेषु च ॥ ४९ ॥  
 प्रभवः स्यादपां मूले विक्रमे जन्मकारणे ।  
 आद्योपलब्धिस्थाने च पुद्गलो देह आत्मनि ॥ ५० ॥  
 प्रत्ययस्तु ख्यातिरन्ध्रविश्वासाधीनहेतुषु ।  
 विज्ञाने शपथे शब्दे प्रस्तरोऽश्मा मणिः कुशः ॥ ५१ ॥  
 पर्यस्त्यामपि पर्यङ्कः प्रकोष्ठोऽलिन्दकेऽपि च ।  
 गजस्कन्धेऽपि पणवः प्रघणौ लोहमुद्गरौ ॥ ५२ ॥  
 प्रियकः कृकलासेऽपि पेचकस्त्वचि हस्तिनाम् ।  
 पुच्छमूले प्रपातस्तु पाते रोधसि सौप्तिके ॥ ५३ ॥  
 पदाजिर्युधि मार्गे च रक्षोवृक्षौ पलाशिनौ ।  
 प्रतिघौ रुद्रप्रतीघातौ प्रतापौ पौरुषातपौ ॥ ५४ ॥  
 प्रसादौ स्वाच्छयानुरोधौ पर्यायोऽवसरे क्रमे ।  
 प्रदोषौ दोषराज्यशौ प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥ ५५ ॥  
 वरुणेऽनले प्रचेताः प्रतापमाहात्म्ययोः प्रभावः स्यात् ।  
 भेदसमते प्रकारौ विपर्यये विस्तरे प्रपञ्चः स्यात् ॥ ५६ ॥  
 रुग्भङ्गबाणाः प्रदराः श्रेष्ठोक्षाणौ तु पुङ्गवौ ।  
 पिशाचौ सत्त्वमार्जारौ पिचण्डः कुक्षिशय्ययोः ॥ ५७ ॥  
 पृथुक्श्चिपिटे बाले पृदाकुर्व्याघ्रसर्पयोः ।  
 भासन्तावर्कनक्षत्रे सूर्यश्चाग्निश्च भास्करौ ॥ ५८ ॥  
 भ्रातृव्यौ भ्रातृजामित्रौ भुरण्यु विष्णुभास्करौ ।  
 भूमिस्पृशौ वैश्यनरौ भुवन्यौ वह्निभास्करौ ॥ ५९ ॥  
 भूतात्मा पवने देहे यश्च कर्त्ता तनौ पुमान् ।  
 राजभेदाहिमार्जारश्चार्कशुक्रेषु मण्डली ॥ ६० ॥  
 धुतूरे सर्पभेदे च मातुलो मदनः पुनः ।  
 सिक्थे वसन्ते धुतूरे कन्दर्पेऽप्यथ माधवः ॥ ६१ ॥



विष्णौ वसन्ते वैशाखे मरुकौ भेककेकिनौ ।  
 मिहिं वायुमेघार्का यज्वरौ तु हयाध्वरौ ॥ ६२ ॥  
 युञ्जानः सारथौ विप्रे रभसो विषवेगयोः ।  
 रक्ताक्षौ रक्षोमहिषौ रमती स्वर्गमन्मथौ ॥ ६३ ॥  
 रुचको भूषणे दन्ते रुचथः कुक्कुटे ध्वनौ ।  
 वज्रथः कोकिले काले वर्तकोऽश्वसुरे खगे ॥ ६४ ॥  
 व्यवाथो मैथुनेऽन्तर्धौ चित्रे दर्पे च विस्मयः ।  
 वाहसौ वह्नयजगरौ दुप्रवालो तु विद्रुमौ ॥ ६५ ॥  
 विस्त्रम्भौ स्नेहविश्वासौ विबुधौ सुरपण्डितौ ।  
 विकारौ रोगविकृती विष्किरौ शिखकुक्कुटौ ॥ ६६ ॥  
 रहःप्रकाशौ वीकाशौ विपाकः स्वेदपाकयोः ।  
 विश्वात्माकेऽपि विष्कम्भो विस्तारप्रतिबन्धयोः ॥ ६७ ॥  
 स्पर्धायां पौरुषे व्यामे व्यायामोऽथ परिक्रमे ।  
 विहारः सौगतावासे क्रीडायां चाथ विग्रहः ॥ ६८ ॥  
 युद्धे देहे विस्तरे च कुशमुष्टौ च विष्टरः ।  
 विभ्रमः संशये भ्रान्तौ शोभायां चाथ वालुका ॥ ६९ ॥  
 विकीर्णोऽर्थश्च विकिरौ विसर्गौ मुक्तिवर्चसौ ।  
 विनयो धर्मविद्याधीशिक्षाचारप्रशान्तिषु ॥ ७० ॥  
 विवधो वीवधश्च द्वौ पर्याहारेऽध्वभारयोः ।  
 वृत्तान्तः स्यात् प्रकरणे कात्स्न्ये वार्ताप्रकारयोः ॥ ७१ ॥  
 वासरौ नागदिवसौ वैकुण्ठाविन्द्रकेशवौ ।  
 विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ ७२ ॥  
 शपथः कर आक्रोशे शपने च सुतादिभिः ।  
 बालके शिशुमारे च शिशुकोऽथाध्वरे पशौ ॥ ७३ ॥  
 अध्वर्यौ च श्रपायः स्याच्छकुन्तौ भासपक्षिणौ ।  
 कक्ष्यान्तरेऽपि शुद्धान्तः श्वश्रुर्यौ स्यालदेवरौ ॥ ७४ ॥  
 मन्त्री सहायः सचिवः सहुरी वृषभास्करो ।  
 स्यमीकौ वृक्षवल्मीकौ समीकौ मिथुनार्णवौ ॥ ७५ ॥  
 सरण्यू वायुजलदौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।  
 क्षये रोधे च संरोधः संवर्तोऽब्दे जगत्क्षये ॥ ७६ ॥  
 सङ्घर्षौ घर्षणं स्पर्धा शरखड्गौ तु सायकौ ।  
 समिको वृक्षवल्मीको सृदाकू व्याघ्रपावकौ ॥ ७७ ॥

सविता सारथौ रुद्रे पितर्यर्के सुजातिभिः ।  
 सन्निवेशे गणे गेहे संस्त्यायः संग्रहाः पुनः ॥ ७८ ॥  
 स्वीकारोच्छ्वायसङ्क्षेपाः सम्भ्रमोऽत्यादरे भये ।  
 सम्भवो जन्मसंहत्योराधारानतिरेचने ॥ ७९ ॥  
 आधेयस्याथ सम्भोगो भोगे करिकरे रते ।  
 प्रत्यक्षे सन्निधाने च सन्निधिः स्थपतिः पुनः ॥ ८० ॥  
 स्थापत्येऽधिपतौ तद्दिण बृहस्पतिसवी च यः ।  
 समाधिर्ध्याननीवाकप्रतिज्ञासु समर्थने ॥ ८१ ॥  
 सन्नयः समवाये च पृष्ठस्थायिबलेऽपि च ।  
 समयस्तु क्रियाकारे सङ्केते चरिते सताम् ॥ ८२ ॥  
 सिद्धान्ते शपथे काले स्वाध्यायो जपवेदयोः ।  
 सारसो विहगे चन्द्रे हिमारिः पावके रवौ ॥ ८३ ॥  
 हर्यक्षो धनदे सिंहे व्रीह्याब्दाचिष्णु हायनः ।  
 महोदरेऽपि हेरम्बो हरिमा मृत्युरोगयोः ॥ ८४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्रयक्षरकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥



## श्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अमनिः पशुवङ्ग्यां जलपात्रे च दारवे ।  
 अदितिः शैलकन्यायां पृथिव्यां देवमातरि ॥ १ ॥  
 अभिरुया त्विड्यशोनामस्वम्बिका मातुलान्युमा ।  
 अमतिर्मरणे मोहेऽप्याकारे देह आकृतिः ॥ २ ॥  
 आयतिर्दीर्घतायां स्यात् प्रभावागामिकालयोः ।  
 उपधा सुपरीक्षाऽपि कृपाण्यामपि कर्तरी ॥ ३ ॥  
 कल्पना समर्थनाऽपि कषिके सस्यमक्षिके ।  
 कणिका तिलकाण्डेऽशो गोधूमे तस्य चूर्णके ॥ ४ ॥  
 करिका यातनायां स्याच्छ्लोके विवरणे कृतौ ।  
 कूचिका मस्तुपिण्डेऽपि सूचितूलिकयोरपि ॥ ५ ॥  
 तुर्थेऽशो मापदण्डस्य मापस्यापि च काकणी ।  
 विशतौ च कपर्दानां पादुकैककपर्दयोः ॥ ६ ॥  
 गृहिणी काञ्चिकं जाया देहली गृहकारिका ।  
 वेश्याकरिण्योर्गणिका वेष्टनेऽपि च गोलका ॥ ७ ॥  
 पार्या कालेऽपि घटिका रथ्यायामपि चत्वरि ।  
 जुगुप्सा निन्दाघृणयोर्जननी करुणाऽम्बयोः ॥ ८ ॥  
 जगती विष्टपे मह्यां वास्तुच्छन्दविशेषयोः ।  
 छत्रान्तालाम्बिवस्त्रेऽपि भल्लरी केशवाद्ययोः ॥ ९ ॥  
 चापे तृणत्वे तृणता दारिद्र्येऽपि च दुर्गतिः ।  
 पद्माकरेऽब्जे नलिनी स्वास्थ्ये नाशे च निर्वृतिः ॥ १० ॥  
 निवृत्तिस्तु मनस्तोषे मोक्षेऽस्तमयबाढयोः ।  
 नालिका चुल्लिकारन्ध्रे विवरे वेणुभाजने ॥ ११ ॥  
 नाले काले देशमाने नियतिः संयमे विधौ ।  
 प्रकृतिः पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥ १२ ॥  
 छन्दःकारणगुह्येषु जन्त्वमात्यादिमातृषु ।  
 पक्षतिर्गरुतो मूले द्वयोः प्रतिपदोरपि ॥ १३ ॥  
 अधिकारे प्रकारे च प्रक्रियोत्पादनेऽपि च ।  
 गृहादिधिष्ठये पिण्डे च जङ्गामांसे च पिण्डिका ॥ १४ ॥  
 परीष्टिर्मार्गणे भक्तौ पङ्क्तौ पथि च पद्धतिः ।  
 प्रतिष्ठे स्थितिमाहात्म्ये प्रतती ततिवीरुधौ ॥ १५ ॥

बोधे तिथौ च प्रतिपत् प्रवृत्तिर्वृत्त्युदन्तयोः ।  
 प्रवेणी तु कुथावेण्योः प्रसूतिः पुत्रजन्मनोः ॥ १६ ॥  
 पाताली वागुरा स्थाली बन्धकी तु करिण्यपि ।  
 वृद्धी पद्यवार्ताक्योः कण्टकार्या च वाचि च ॥ १७ ॥  
 भित्तिका तु शतावर्या वज्रे चाप्यथ मेखला ।  
 श्रोणिस्थानेऽद्रिकटके कटिबन्धेऽसिबन्धने ॥ १८ ॥  
 महिषी पशुराट्पत्न्योर्मर्यादा सीम्नि धारणे ।  
 पेटा पुरी च मञ्जूषा मनाका कामिनी गजी ॥ १९ ॥  
 गव्ये रेवती देव्यां शुक्लायां रजनी निशि ।  
 रोचना रक्तकल्हारे गवां पित्ते वरस्त्रियाम् ॥ २० ॥  
 पथ्यायां गव्यमाकन्यालोहिनीषु च रोहिणी ।  
 नक्षत्रे कण्ठरोगे च वर्तनी वृत्तिमार्गयोः ॥ २१ ॥  
 विपणिस्तु निषद्यापि वालुकोमिश्र च वालुका ।  
 बडवा स्त्रीविशेषेऽपि वाशिता करिणीस्त्रियोः ॥ २२ ॥  
 वसतिस्तु निशि स्थित्यां जैनानामाश्रमे गृहे ।  
 वाणिनी तु विदग्धायां नर्तक्यां मत्तयोषिति ॥ २३ ॥  
 वीणा विपञ्ची सैवालपदण्डा सा नवतन्त्रिका ।  
 वृषत्युतुमती कन्या शूद्रा बन्ध्या मृतप्रजा ॥ २४ ॥  
 वनिता स्निग्धनार्याञ्च नार्याश्चाप्यथ वेदिका ।  
 वेदिश्चाङ्गुलिमुद्रा च काञ्ची छन्दश्च शकरी ॥ २५ ॥  
 शङ्कुल्यूपभेदेऽपि शिञ्जिनी नूपुरज्ययोः ।  
 शर्करा तु शिलाभेदे रुग्भेदाल्पकपालयोः ॥ २६ ॥  
 शर्करावत्प्रदेशेषु सितायां शकले गुडे ।  
 समितिः परिषत्स्थाने युद्धे संसदि सङ्गमे ॥ २७ ॥  
 सन्ततिस्त्वन्ववाये स्यात् पारम्पर्ये सुतेऽपि च ।  
 संहिता वर्णसंयोगे शास्त्रवेदैकदेशयोः ॥ २८ ॥  
 सिद्धौ स्वभावे संसिद्धिर्वाञ्छाऽनुज्ञा च सम्मतिः ।  
 संविती ज्ञानसंवादौ ह्यादन्यौ वज्रविद्युतौ ॥ २९ ॥  
 हरिणी हरिता पाण्डुः सुवर्णप्रतिमा मृगी ॥ २९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

अक्षरकाण्डे श्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥



## नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अयनं निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागतौ ।  
 अंशुकं केवले वस्त्रे सूक्ष्मवस्त्रोत्तरीययोः ॥ १ ॥  
 अभीक्ष्णमव्ययं वा स्यात् पौनःपुन्यभृशार्थयोः ।  
 अरुलं सलिले पोतेऽप्यलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ २ ॥  
 अनुकमन्वये शीलेऽप्यास्पदं स्थानकृत्ययोः ।  
 स्तम्भमात्रेऽपि चालानं हस्तिर्नोऽसेऽपि चासनम् ॥ ३ ॥  
 रेतसीन्द्रियमन्त्रे च दर्शनेऽक्षणि चेक्षणम् ।  
 उद्यानं सङ्ग्रहोद्गत्योवनभेदे प्रयोजने ॥ ४ ॥  
 उत्थानमुद्यमे वास्तौ तन्त्रेहापौरुषेषु च ।  
 उद्धानमुद्गमे चुल्ल्यामौशीरे दण्डचामरे ॥ ५ ॥  
 कटीरं कन्दरे कट्यां कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।  
 क्रन्दनं रुदिते ध्वाने कार्मुकं शस्त्रचापयोः ॥ ६ ॥  
 कारणं हेतुवधयोः कारकं हिंसकेऽपि च ।  
 कीलालं रुधिरं तोये कुहरं गह्वरे बिले ॥ ७ ॥  
 कुरीरं प्राम्यधर्मेऽब्जे कुन्नानं कुण्डशिक्ययोः ।  
 कैतवं कपटे घृते कृपीटमुदरे जले ॥ ८ ॥  
 करणं कारणे काये साधने बवकादिषु ।  
 स्पृष्टाद्युच्चारणाभेदध्यानपद्मासनादिषु ॥ ९ ॥  
 रतबन्धे नाड्यभेदे गीतके कर्मणीन्द्रिये ।  
 कौतुकं विषयाभोगे हस्तसूत्रे कुतूहले ॥ १० ॥  
 कामे ख्याते मङ्गले च हस्तसूत्रेऽपि कङ्कणम् ।  
 कटिचर्म चर्म सुस्यूतं कटीवेष्टनचर्म च ॥ ११ ॥  
 कोदण्डं तु चतुर्हस्तं धनुर्वेणुधनुर्धरः ।  
 केतौ तु केतनं चापे कृत्यार्थोपनिमन्त्रणे ॥ १२ ॥  
 कौलीनं प्राणिभिर्घृते कुलीनत्वापवादयोः ।  
 गुह्यकार्ये च कौपीनं गन्धनं तु प्रकाशने ॥ १३ ॥  
 सूचनेऽपि च हिंसायां परस्योत्साहनेऽपि च ।  
 ग्रहणं बन्दिरादानमादरोऽर्काद्यप्लवः ॥ १४ ॥

गह्वरं कन्दरे दम्भे चलनं पादयन्त्रयोः ।  
 जघनं स्यात् कटौ पूर्वश्रोणिभागापराङ्गयोः ॥ १५ ॥  
 तलिमं कुट्टिमे तल्पे तर्पणं त्विन्धनेऽपि च ।  
 तानितं तूलितपटे गुणवादित्रभाण्डयोः ॥ १६ ॥  
 तेमनं व्यञ्जने क्लेदे तोत्रे तोदे च तोदनम् ।  
 दर्शनं चक्षुषि स्वप्ने बुद्धिशस्त्रोपलब्धिषु ॥ १७ ॥  
 दुकूलं शुक्लवस्त्रेऽपि द्योतनं दीपनेऽक्षिण च ।  
 धाराग्रमवतारेऽश्रौ निमित्तं हेतुलक्षयोः ॥ १८ ॥  
 नाभीलं नाभिगन्धश्च वङ्कणं च वरस्त्रियाः ।  
 निर्याणं हस्तिनेत्रान्ते मरणे निर्गमेऽपि च ॥ १९ ॥  
 निर्वाणं निर्वृतौ मोक्षे विनाशे गजमज्जने ।  
 निदानमपदाने स्यात् खण्डनेऽप्यादिकारणे ॥ २० ॥  
 पललं तिलचूर्णे स्यान्मांसकर्मभेदयोः ।  
 प्रयाणं गजद्वक्पूर्वप्रदेशे मरणे गतौ ॥ २१ ॥  
 प्रज्ञानं लाञ्छने बुद्धौ प्रसूनं फलपुष्पयोः ।  
 पातालं लोक और्वरच पतत्रं खे गरुत्यपि ॥ २२ ॥  
 नवसूतगवीदुग्धे पीयूषममृतेऽपि च ।  
 प्रमाणं बोधनेयत्तामर्यादाशास्त्रहेतुषु ॥ २३ ॥  
 सम्यग्वक्तरि चाथ स्यात् प्रायणं मरणे गतौ ।  
 पुष्करं हस्तिहस्ताग्रे जले वाद्यमुखे युधि ॥ २४ ॥  
 खेऽब्जे दिव्यसिधारायां तीर्थभेषजभेदयोः ।  
 ब्राह्मण्यं ब्राह्मणत्वे स्याद्विप्रौषे विप्रकर्मणि ॥ २५ ॥  
 वाल्मीकिं कुङ्कुमं हिङ्गु भण्डनं कवचे रणे ।  
 भूतिकं भूमिनिम्बे च भूस्तृणे कत्तणेऽपि च ॥ २६ ॥  
 मणीचमग्रहस्तेऽपि पुष्पमौक्तिकयोरपि ।  
 मन्दिरं देहपुर्योश्च सम्बन्धे मैथुनं रते ॥ २७ ॥  
 यापनं स्यान्निरसने नृत्ते प्रस्थापनेऽपि च ।  
 लक्षणं कार्षिके चिह्ने नाम्नि मुद्राङ्गसम्पदोः ॥ २८ ॥  
 लाङ्गूलं वालधौ मेढ्रे वर्जनं त्यागहिंसयोः ।  
 वराङ्गं स्त्रीभगे मूर्ध्निच्छेदे वृद्धौ च वर्धनम् ॥ २९ ॥  
 व्यञ्जनं श्मश्रुनिष्ठानचिह्नेष्ववयवेऽक्षरे ।  
 वृद्धत्वे वृद्धसङ्घाते वृद्धकर्मणि वार्द्धकम् ॥ ३० ॥



बालकं त्वङ्गुलीये स्याद् बर्हिष्ठे वलयेऽपि च ।  
 व्युत्थानं प्रतिकूलत्वे स्वातन्त्र्यकरणेऽपि च ॥ ३१ ॥  
 व्यसनं शक्तिविपदोद्वेगानिष्टफलैऽहसि ।  
 पैशुन्यादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ॥ ३२ ॥  
 विधानं हस्तिकबले प्रेरणेऽभ्यर्चने धने ।  
 वेतने चाप्युपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ॥ ३३ ॥  
 वेष्टने मकुटोष्णीषौ शकले खण्डवल्कले ।  
 शालूकं पङ्कजे कन्दे जले शमलमप्यधे ॥ ३४ ॥  
 शासनं निग्रहे लेख्ये वेदवाक्येषु कर्मणि ।  
 वाङ्मनियोगे प्रहरणे शास्त्रे ग्रामे च निष्करे ॥ ३५ ॥  
 साधनं शेफास धने सिद्ध्युपायनिवृत्तिषु ।  
 मारणे मृतसंस्कारे दापनेऽनुगमे गमे ॥ ३६ ॥  
 सेनाङ्गे यातनायाञ्च सेवनं स्यूतिसेवयोः ।  
 मृत्यौ समाप्तौ संस्थानं सन्निवेशे चतुष्पथे ॥ ३७ ॥  
 मणौ शीधौ शीधुपाने सरकं मद्यभाजने ।  
 सामर्थ्ये शक्तिसम्बन्धौ हृदयं तु मनस्यपि ॥ ३८ ॥  
 हिरण्यं काञ्चने वित्ते मानभेदेऽप्यकुप्यके ।  
 हरणं करणे नृत्ते चापेनान्यास्त्रवारणे ॥ ३९ ॥  
 हृतौ कथितशीताप्सु पणने यौतकादिके ॥ ४० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

### अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अधमौ गर्हितन्यूनावभीकौ निर्भयाभीकौ ।  
 प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षमखिलं गर्ह्यकृत्स्नयोः ॥ १ ॥  
 आविष्टौ क्षिप्रकुटिलावाहतौ सादरार्चितौ ।  
 विपन्नप्राप्तावापन्नावाभीलौ कष्टभीषणौ ॥ २ ॥  
 आप्लुतौ स्नातकस्नातावाहतं गुणिते हते ।  
 आयस्तः कुपिते क्षिप्ते क्लेशिते तेजितेऽपि च ॥ ३ ॥  
 इरिणं तूषरस्थाने भूभागे च निराश्रये ।  
 उदारो महति ख्याते दक्षिणे दानशौण्डिके ॥ ४ ॥  
 उद्धृतं भुक्तनिर्मुक्ते तुलिते चाप्यथोच्छ्रितम् ।  
 वृद्धे तुङ्गे समुत्पन्नेऽप्युदितौ कथितोद्गतौ ॥ ५ ॥  
 उदूढावूढप्रथुलावुत्तमौ प्रवरान्तिमौ ।  
 महत्युदात्त उच्चोक्तेऽप्युपोढो निकटोदयोः ॥ ६ ॥  
 अभ्यस्तेऽप्युचितं न्याय्येऽप्युषितं स्थितदग्धयोः ।  
 उत्तालो द्रुत उत्तानेऽप्युत्कटो मत्त उद्धटे ॥ ७ ॥  
 करालो दन्तुरे तुङ्गे विशाले विकृतेऽपि च ।  
 कर्कशः प्रखरस्पर्शे निर्दये साहसिन्यपि ॥ ८ ॥  
 द्वौ कनिष्ठकनीयांसौ यून्यत्यल्पेऽनुजेऽपि च ।  
 क्षुल्लका नीचनिःस्वाल्पाः कलितो ज्ञातबद्धयोः ॥ ९ ॥  
 कल्माषौ कृष्णमिश्रौ च कुहकोऽपीर्ष्यया युते ।  
 क्षेत्रियं दुष्प्रतीकारे व्याधौ क्षेत्रोद्भवे तृणे ॥ १० ॥  
 देहान्तरचिकित्साहं गरले पारदारिके ।  
 चतुरौ दक्षधीमन्तौ जघन्योऽन्त्यकुपूपयोः ॥ ११ ॥  
 जरठः कठिने जीर्णे तलिनो विरलाल्पयोः ।  
 पशुः कालेऽपि निःशृङ्गो नरोऽश्मश्रुश्च तूपरौ ॥ १२ ॥  
 दुर्विधो निर्धने नीचे निहतो न्यक्स्वरे हृते ।  
 निर्ग्रन्थः श्रमणे निःस्वे निरस्तस्तु निराकृते ॥ १३ ॥  
 निष्ठयूते प्रास्तवान्ते च वचने च द्रुतोदिते ।  
 निवातो दृढसन्नाहे निर्वातेऽप्याश्रयेऽपि च ॥ १४ ॥  
 निर्दयः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।  
 प्रणायोऽसम्भतेऽपि स्यादभिव्यङ्गवत्यपि ॥ १५ ॥



प्रतीतो भूषिते ख्याते ज्ञाते प्रत्ययिते बुधे ।  
 प्रार्थितं त्वभियुक्ते स्यान्निहिते याचितेऽपि च ॥ १६ ॥  
 पिण्डलः स्थूलजङ्घे च गणनाकुशलेऽपि च ।  
 प्रतीच्यौ प्रतिपाल्याच्यौ प्रथमौ प्रवरादिमौ ॥ १७ ॥  
 प्रहतौ क्षुण्णव्युत्पन्नौ प्रयतौ पूतसंस्कृतौ ।  
 सव्यायत्तौ प्रसव्यौ द्वौ प्रवृद्धौ प्रसृतैधितौ ॥ १८ ॥  
 पिण्डितौ घनसङ्ख्यातौ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ।  
 पेशलौ चारुचतुरौ पूर्णश्रेष्ठौ तु पुष्कलौ ॥ १९ ॥  
 मिश्रास्त्रिगधौ च परुषौ प्रगाढौ गहने दृढे ।  
 पामरोऽपशदेऽङ्गे च बालशो बालमूर्खयोः ॥ २० ॥  
 बीभत्सौ कृरविकृतौ बहलौ सान्द्रपुष्कलौ ।  
 बन्धुरौ नम्रसुन्दरौ भङ्गुरौ वक्रनश्वरौ ॥ २१ ॥  
 भावितौ लब्धवासितौ भुजिष्यौ स्वैरिक्किङ्करौ ।  
 मधुरौ स्वादुसुन्दरौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ २२ ॥  
 विधुतौ त्यक्तकम्पितौ विदितौ ज्ञानसंश्रुतौ ।  
 विलीनौ लीनविद्रुतौ वेल्लितौ धूतकुञ्चितौ ॥ २३ ॥  
 विगतौ वीतनिस्पृहौ विविक्षौ शुद्धनिर्जनौ ।  
 विवर्णौ मूर्खदुर्वर्णौ व्यायतो व्यापृते दृढे ॥ २४ ॥  
 विकृतौ रोगिदूरूपौ विशदो धवले शुचौ ।  
 वल्लभौ दयिताध्यक्षौ वरिष्ठोऽतिवरेऽत्युरौ ॥ २५ ॥  
 पृथौ कराले विकटो विसृतं विगते तते ।  
 वदान्यो बल्लुगवाग्दात्रोर्वरीयान् सत्तमेऽत्युरौ ॥ २६ ॥  
 विवशस्त्वस्वतन्त्रात्माप्यरिष्टेन च दुष्टधीः ।  
 विधुरः पत्न्यपेते स्यात् क्लिष्टविश्लिष्टयोरपि ॥ २७ ॥  
 संस्कृतं लक्षणोपेते कृत्रिमे निर्मलीकृते ।  
 मिश्रीकृते च संसृष्टं शुद्धे च वमनादिभिः ॥ २८ ॥  
 साधीयोऽनुमतेऽत्यर्थं सत्तमे शोभनेऽपि च ।  
 तथ्यपथ्यार्थवाक्येऽपि सूनृतोऽथ क्षमे हिते ॥ २९ ॥  
 सम्बद्धेऽपि समर्थः स्यात् स्तिमितं स्तम्भवत्यपि ॥ ३० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

व्यक्षरकाण्डे अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

### नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

गुणाद्यर्थेऽर्थलिङ्गत्वमिहाप्युह्यं स्वयं क्वचित् ।  
 अन्तरः परिधानीये बाह्ये स्वीयेऽन्तरात्मनि ॥ १ ॥  
 क्ली तु मध्येऽवकाशे च तादर्थ्येऽवसरेऽवधौ ।  
 विशेषविवरान्तर्ध्ववसानविनार्थयोः ॥ २ ॥  
 अक्षरोऽसौ हरौ धातर्यक्षरं प्रणवे विधौ ।  
 धर्मे वर्णे तपःक्रत्वोः खे मोक्षे मूलकारणे ॥ ३ ॥  
 अनन्तो नागराड्विष्णुरनन्तं खनिरन्तयोः ।  
 अनन्ता पूर्णिमा दूर्वा यवाषः शारिबा मही ॥ ४ ॥  
 अर्जुनः पाण्डवे पाण्डौ मातुरेकसुते द्रुमे ।  
 नेत्ररोगे चाजुनं तु तृणे हेमन्यर्जुनी गवि ॥ ५ ॥  
 विषारुणारुणं ताम्रमरुणः सूर्यसारथौ ।  
 अव्यक्तराने शशिजे सन्ध्याभ्रे लोहिते रंभौ ॥ ६ ॥  
 अमृतं व्योम्नि देवान्ने यज्ञशेषे रसायने ।  
 अयाचिते जले जग्धौ मोक्षेऽन्ने हेमिन् गोरसे ॥ ७ ॥  
 क्लीबो ना त्वमरे स्त्री तु गुल्फ्यां मद्यभिश्चयोः ।  
 आमलक्यां हरीतक्यां त्रिषु तु स्वादुनित्ययोः ॥ ८ ॥  
 अरिष्टो वायसे निम्बे गोरसे निरुपद्रवे ।  
 क्ली तु वर्णे मृत्युचिह्ने मये ताम्रे शुभेऽशुभे ॥ ९ ॥  
 अङ्गजो ना सुतेऽनङ्गे क्ली रोगे रुधिराऽपि च ।  
 न ना कवाटे क्ली लोहे सोमे स्यादररः पुमान् ॥ १० ॥  
 लाजेऽवभ्योषमभ्योषाः साज्याम्भःपेयसक्तवः ।  
 कृकलासेऽण्डजो मत्स्ये खगे कसूरिकाऽण्डजा ॥ ११ ॥  
 अविषो निर्विषेऽम्भोधावविषो दिवि पुंसि वा ।  
 अपानो देहजो वायुरपानं वृषणे गुदे ॥ १२ ॥  
 प्रधानेऽव्यक्तमव्यक्तो ब्रह्मण्यस्पष्टमूर्खयोः ।  
 अमरेन्द्रपुरी स्थूणा गुडुची चामराः सुराः ॥ १३ ॥  
 कृत्यक्षतं तण्डुले धान्ये न ना लाजेषु ना यवे ।  
 अजिरं जर्जरे कामे विषयाङ्कणयोर्दृते ॥ १४ ॥  
 अलसौ पादरुङ्मन्दावण्डीरौ शक्तपूरुषौ ।  
 विद्युत्पव्योरक्लृपशानिरनीकोऽस्त्री चमूयुधोः ॥ १५ ॥



अधरोऽनूर्ध्वहीनोष्ठेष्वनृतं वितथे कृषौ ।  
 आश्रमोऽस्त्री मुनिस्थाने ब्रह्मचर्यादिके मठे ॥ १६ ॥  
 कोट्टारे कृपणे जीर्णे स्थानेऽभिप्राय आशयः ।  
 शर्करायां दृष्टपुत्रे स्त्र्यस्त्र्यश्मन्युपलो मणौ ॥ १७ ॥  
 उत्तरं प्रतिवाक्ये स्यादुदीच्ये प्रवरोर्ध्वयोः ।  
 स्त्रीलिङ्गत्वे धनुर्लक्ष्म्यां पुरुषे पावके च ना ॥ १८ ॥  
 करीरो ना घटे न स्त्री पादपे वैणवाङ्कुरे ।  
 करेणुस्तु करिण्यां स्त्री कर्णिकारे गजे च ना ॥ १९ ॥  
 भिक्षापात्रे तु कमठं कमठौ खर्बकच्छपौ ।  
 अस्त्री कशिपु शय्यायां वस्त्रेऽन्ने तद्द्वयेऽपि च ॥ २० ॥  
 करटो दुर्दुरुटे स्याद् बिल्वे काकेभगण्डयोः ।  
 कल्याणी क्षोमयोः क्ली तु मङ्गलेऽक्षयरुक्मयोः ॥ २१ ॥  
 रागे काथे कषायोऽस्त्री निर्यासे सौरभे रसे ।  
 कान्तार इक्षुभेदे ना न स्त्री व्यध्वे महावने ॥ २२ ॥  
 कीनाशो रक्षसि यमे कदर्ये कर्षकेऽर्थवत् ।  
 कुहनो मूषिके सेष्ये कुहना दम्भशोलता ॥ २३ ॥  
 कुशलं निपुणे पुण्ये पर्याप्तौ मङ्गले क्षमे ।  
 कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥ २४ ॥  
 कुण्डली चित्रलमृगे सर्पे कुण्डलवत्यपि ।  
 कुङ्कुमे महारजने कुसुम्भं ना कमण्डलौ ॥ २५ ॥  
 केवलं निश्चिते क्लीवे वाच्यवत्त्वेककृत्स्नयोः ।  
 कमलं छुरिकादीनां हेमाद्यैश्चित्रिताजिने ॥ २६ ॥  
 रक्ताब्जजेऽप्सु च श्रीस्तु कमला कमलो मृगः ।  
 अक्ली कोल्यां क्रोष्टुकोल्यां कर्कन्धूः स्त्री तु संयुगे ॥ २७ ॥  
 तथा मध्वाज्यसंसिक्तधवलजजतर्पणं ।  
 कुमारः स्याद् गुहे बाले वरणेऽश्वानुचारके ॥ २८ ॥  
 युवराजे च ना क्ली तु द्वीपे पुंस्त्री मृगोमयोः ।  
 कुतपो भागिनेयेऽर्के विप्रेऽग्नावतिथौ गवि ॥ २९ ॥  
 अस्त्री त्वहोऽष्टमे भागे तिलेषु ह्यागकम्बले ।  
 दर्भे च केसरस्त्वस्त्री सिंहकेशाश्वकेशयोः ॥ ३० ॥  
 कलिलं गहने वृन्दे सैन्येऽपि कटकोऽस्त्रियाम् ।  
 किञ्चलकः केसरे स्त्रे क्ली कृषकौ फालकर्षकौ ॥ ३१ ॥

कातरः पण्डके त्रस्नौ क्षेत्रज्ञावात्मशिक्षितौ ।  
 कुसीदमृणवृद्धौ क्ली वाच्यवद् वृद्धिजीविनि ॥ ३२ ॥  
 कलिङ्गं तु यवे ना तु देशपक्षिशेषयोः ।  
 खनको भूमिवित्तज्ञे मूपिकेऽप्यवदारके ॥ ३३ ॥  
 गर्जितो मत्तमातङ्गे क्ली तन्नादेऽम्बुध्वनौ ।  
 गण्डूषोऽस्त्री गण्डपूतौ प्रसृते गजपुष्करे ॥ ३४ ॥  
 पार्थचापे चापमात्रे गाण्डीवो गाण्डिवोऽस्त्रियौ ।  
 कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं गाङ्गेयो गुहभीष्मयोः ॥ ३५ ॥  
 ग्रामणीः स्वामिनि श्रेष्ठे ग्रामेशे नापिते तु ना ।  
 गोमुखोऽस्त्री वाद्यभेदे नक्रे नाले वने नपुम् ॥ ३६ ॥  
 गोष्पदं गोखुरश्वभ्रे मानगोगम्ययोरपि ।  
 वृत्तैकमक्ते चरणे चरणा बह्वृचादयः ॥ ३७ ॥  
 स्थण्डिले प्राङ्गणे च क्ली चत्वरं ना चतुष्पथे ।  
 चातुरः शकटे चक्रगण्डे नयनगोचरे ॥ ३८ ॥  
 चपलः पारदे शीघ्रे दुर्विनीते चले कपौ ।  
 चले केशे च चिकुरो जराटवस्त्र्यम्बुजेऽपि च ॥ ३९ ॥  
 जृम्भितं जृम्भणोऽङ्गुलविष्टेषु विचेष्टिते ।  
 जीवकः प्रवरे जन्तौ श्रमणे वृद्धिजीविनि ॥ ४० ॥  
 जर्जरस्त्रिषु जीर्णे स्यात् पुमानिन्द्रध्वजे पिके ।  
 टगरष्टङ्गनक्षारे ना केकरदृशि त्रिषु ॥ ४१ ॥  
 स्त्री नौनद्योर्ब्रजस्तम्भे तरणिर्नार्णवे रवौ ।  
 भुवीन्द्रपुत्र्यां तविषी ताविष्यब्धिवोर्नरौ ॥ ४२ ॥  
 तमिस्रा स्त्री ध्वान्तनिशि निश्यन्धतमसे न ना ।  
 तातगुः शुद्धताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ॥ ४३ ॥  
 तातलो लोहकूटे ना त्रिषु तप्ते मनोजवे ।  
 तरलो भास्वरे हारे चञ्चलेऽप्यथ तारका ॥ ४४ ॥  
 न नाक्षिमध्ये नक्षत्रे द्विजिह्वौ सूचकोरगौ ।  
 दुर्वर्णं दुष्प्रभे रूप्ये देयभेदे तु दक्षिणा ॥ ४५ ॥  
 त्रिष्ववाकसरलावामेष्वन्यच्छन्दानुवर्तिनि ।  
 कनिष्ठपत्न्यामरतौ पुनर्भूपरिविन्नयोः ॥ ४६ ॥  
 स्त्री पुनर्भवास्तु पत्यौ ना दिधिषुर्दिधिषूरपि ।  
 स्याद् दीपकमलङ्कारे स्वरूपे दीप्तिमत्यपि ॥ ४७ ॥



दुन्दुभिः पुंसि भेर्या स्त्री त्वक्षबिन्दुत्रिकद्वये ।  
 धर्षणं सुरते धाष्ट्ये कुलटायां तु धर्षणी ॥ ४८ ॥  
 चारौ श्रेष्ठे वृषे श्वेते धवलो धवली गवि ।  
 धौताञ्जले रजक्याञ्च धावनी धावनं गतिः ॥ ४९ ॥  
 धिषणा स्त्री धियां गौर्या स्त्रीचिहे ना तु गीष्पतौ ।  
 नागरं पुरजे चुक्रे शुण्ठीराजकशेरुणोः ॥ ५० ॥  
 निधनोऽस्त्री कुले नाशे निखिशः क्रूरखड्गयोः ।  
 नालीकमञ्जे बाणे ना निशान्तं गृहशान्तयोः ॥ ५१ ॥  
 केशादिशौक्ये पलितं शैलेये ना तु कर्दमे ।  
 पटलं ह्यमुक्छदिषोः क्ली न ना पिटके गणे ॥ ५२ ॥  
 पर्याप्तं स्याद्यथाकामे तृप्तौ शक्तौ निवारणे ।  
 प्रवणो दक्षिणे प्रहे क्रमनिम्ने चतुष्पथे ॥ ५३ ॥  
 प्रकाशोऽर्चिषि दीधित्यां ना तुल्यस्फुटयोस्त्रिषु ।  
 मुखे प्रतीकस्त्रिषु तु प्रतिकूलानुरूपयोः ॥ ५४ ॥  
 वीणादण्डे प्रवालोऽस्त्री विद्रुमे नवपल्लवे ।  
 प्रसूनमर्थवज्जाते पुष्पे क्ली सारथौ पुमान् ॥ ५५ ॥  
 प्रमीवमस्त्री कलशे प्रीवाप्रासादयोरपि ।  
 पाटला गवि पाटल्यामाशुग्रीहिस्तु पाटलः ॥ ५६ ॥  
 पिनाकोऽस्त्री रजोवर्षे शूले शङ्करधन्वि ।  
 त्रिषूर्ध्वबाहुपुमात्रे क्ली पुंसो भावकर्मणोः ॥ ५७ ॥  
 पौरुषं पल्लवं त्वस्त्री प्रकोष्ठेऽप्यतिविस्तृतौ ।  
 पवित्रोऽग्नौ हरौ पूते क्ली तु ताम्रेऽप्सु गोमये ॥ ५८ ॥  
 मन्त्रे दध्नि ब्रह्मसूत्रे हेम्नमर्थे कलशे कुशे ।  
 पुलस्त्यवंश्ये पुरुषे पौलस्त्यः क्ली तु संयुगे ॥ ५९ ॥  
 फलकी चन्दने स्त्री न स्त्री दार्वासनचर्मणोः ।  
 फेनिलं बदरे फेनयुक्तेऽथ ब्राह्मणो द्विजे ॥ ६० ॥  
 आमत्से क्ली तु विधिवद्वेदभागतदंशयोः ।  
 बहुलः कृष्णपक्षेऽग्नौ पुमांस्त्रिष्वसिते बहौ ॥ ६१ ॥  
 स्त्री स्यात् प्रथिव्यामुस्त्रायामेलायां कृत्तिकासु च ।  
 भविलं भवने भव्ये भ्रमरः कामुकेऽलिनि ॥ ६२ ॥  
 उद्याने मलयं ना तु गिर्यशगिरिभेदयोः ।  
 मत्सरोऽन्योदयद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥ ६३ ॥

मन्थरः सूचके कोपे मन्थाने मन्दगामिनि ।  
 मार्गणं मृगणायां स्यान्मार्गणो याचके शरे ॥ ६४ ॥  
 दूर्वायां स्त्रीक्षुमूले क्ली गोरसेऽपि च मोरटम् ।  
 त्रिलिङ्गं मण्डलं वृन्दे ग्रामौघप्रतिबिम्बयोः ॥ ६५ ॥  
 उपसृत्यं कुष्ठरोगे देशे द्वादशराजके ।  
 मुचिरौ धर्मदातारौ मोदकौ खाद्यहर्षकौ ॥ ६६ ॥  
 पित्रादेः कन्वयाऽऽप्येऽर्थे क्ली स्वीये त्रिषु यौतकम् ।  
 युतकं युगले युक्ते यौतके वसनाञ्जले ॥ ६७ ॥  
 संश्रयेऽग्रे च शूर्पस्य वस्त्रभेदे च योषितः ।  
 रसनं क्ली कषायेऽन्ने द्रवे स्नेहे विषे फले ॥ ६८ ॥  
 निर्यासे हेम्नि रूप्ये च जिह्वास्वादनयोर्न ना ।  
 रेवतं दक्षिणावर्तशङ्खे रेणौ तु रेवटः ॥ ६९ ॥  
 वातूले विषवैद्येऽथ रजतं शोणिते हृदे ।  
 श्वेते हारेऽप्यथोष्ठेऽलौ रवणः शब्दनेऽर्थवत् ॥ ७० ॥  
 रोषाणो रोषणे स्वर्णघर्षणप्राणि पारदे ।  
 रौहिषं रक्तकतुणे मत्स्यभेदे मृगे च ना ॥ ७१ ॥  
 लालसा तु ना नौत्सुक्ये दौहदाद्यभिलाषयोः ।  
 ललामोऽस्त्री ललामापि प्रभावे पौरुषे ध्वजे ॥ ७२ ॥  
 श्रेष्ठे भूषापुण्ड्रशृङ्गपुच्छचिह्नाश्वलिङ्गिषु ।  
 लोचको मांसपिण्डे स्यान्नोलिङ्ग्यां चर्मणि भ्रुवि ॥ ७३ ॥  
 रक्तांशुके दुष्टबुद्धौ क्रोष्टृधूर्तौ तु वज्रकौ ।  
 विनीतस्त्रिष्वपि प्राप्ते निभृते विजितेन्द्रिये ॥ ७४ ॥  
 विनयं ग्राहिते चैष सुखवाहिहये पुमान् ।  
 विषयी राज्ञि कन्दर्पे विषयस्थजने च ना ॥ ७५ ॥  
 अर्थवद्विषयोपेत इन्द्रिये तु नपुंसकम् ।  
 अस्त्री वितानमुल्लोचे विस्ताराध्वरयोः क्षणे ॥ ७६ ॥  
 त्रिषु शून्ये च मन्दे च विषाण्युक्षेभशृङ्गिषु ।  
 भैक्यां पुनर्नवायां स्त्री वर्षाभूर्दुर्दुरे न वण् ॥ ७७ ॥  
 वयःस्थाऽऽमलकीपथ्याब्राह्मीषु तरुणे त्रिषु ।  
 वलजा वरनार्या च क्षेत्रे द्वारि च सा न ना ॥ ७८ ॥  
 वर्णकौऽस्त्री प्रकारे स्याच्चन्दने स्यङ्गलैपनै ।  
 दुःखे विलक्षे व्यलीकमप्रियाकार्ययौस्तु ना ॥ ७९ ॥



वातूलो वातसङ्घाते वातले मरुतोऽसहे ।  
 विहायाः पुंनपुं व्योम्नि पुमानैव पतत्रिणि ॥ ८० ॥  
 विशिखा तु खनित्री च क्ली चित्ते ना त्वसौ शरे ।  
 विमानोऽस्त्री देवयाने सप्तभूमे च सद्मनि ॥ ८१ ॥  
 विटपोऽस्त्री द्रुविस्तारे पल्लवे स्तम्बशाखयोः ।  
 विषाणस्त्रिषु लिङ्गेषु पश्वङ्गाजदन्तयोः ॥ ८२ ॥  
 वेदना दुःखानुभवे ज्ञाने च स्त्रीनपुंसकम् ।  
 स्कन्दे विशाख ऋते स्त्री विहायः स्फुटहासयोः ॥ ८३ ॥  
 पापेऽपि वृजिनं केशे पुमानिन्दुस्तु शर्वरः ।  
 स्त्री रात्रिसन्ध्याशर्वर्योदैत्ये ना शम्बरोऽप्सु षण् ॥ ८४ ॥  
 शयथुस्त्रिषु निद्रालौ मृत्यावजगरे च ना ।  
 शय्यायां शयनं न स्त्री निद्रासुरतयोर्नपुम् ॥ ८५ ॥  
 शरत्पकादिशालीनौ प्रत्यग्रोऽब्जश्च शारदः ।  
 गम्भार्या कट्फले श्रीपर्ण्यग्निमन्थाब्जयोर्नपुम् ॥ ८६ ॥  
 यमेऽपि शमनो ध्वान्ते क्ली हिंसे त्रिषु शार्वरः ।  
 करञ्जभेदे षड्ग्रन्थः षड्ग्रन्था ग्रन्थिकं वचा ॥ ८७ ॥  
 समानः प्राणभेदे ना त्रिष्वेकसमसाधुषु ।  
 संस्कारो ना संस्कृतिः स्त्री सङ्कल्पप्रतियत्नयोः ॥ ८८ ॥  
 स्पर्शनः पवमाने स्यात् स्पर्शनं सृष्टिदानयोः ।  
 सारङ्गः शबलो वर्णश्चातकः षट्पदो मृगः ॥ ८९ ॥  
 छिद्रे छिद्रान्विते वाद्ये सुपिरं सुषिरो नडः ।  
 सुमनाः पुष्पमालत्योः स्त्री देवबुधयोः पुमान् ॥ ९० ॥  
 सैन्धवोऽश्वेऽश्वभेदे ना न स्त्री तु लवणोत्तमे ।  
 बदरेऽपि च सौवीरं ना नीवृद्रोपघोण्टयोः ॥ ९१ ॥  
 सङ्गरो ना क्रियाकारे प्रतिज्ञाविपदोर्युधि ।  
 शमीफले तु षण्डोऽथ सम्बाधौ योनिः सङ्कटौ ॥ ९२ ॥  
 सुरभिर्वाच्यवत् सौम्ये सुगन्धौ स्त्री त्वसौ गवि ।  
 पुमांश्चैत्रे वसन्ते च सेवकौ स्यूतभाजकौ ॥ ९३ ॥  
 सुकृतं शोभने धर्मे हर्षुलो मृगकामिनोः ॥ ९३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

त्र्यक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ७ ॥

## ८. अथ शेषकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अकारादिक्रमेणादाविहोक्त्वा चतुरक्षरान् ।  
 अध्यायान्तेषु सङ्कीर्णाः कृताः पञ्चाक्षरादयः ॥ १ ॥  
 अनुबन्धो दोषभावे प्रकृत्यादेर्विनश्वरे ।  
 मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ॥ २ ॥  
 अपहारः पुनश्चोरे द्यूतयुद्धादिविश्रमे ।  
 निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राहाख्ययादसि ॥ ३ ॥  
 अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबन्धे गजालिके ।  
 अवष्टम्भः समालम्भे स्तब्धिकाञ्चनयोरपि ॥ ४ ॥  
 पिशाचादिग्रहे तीर्थेऽप्यवतारोऽवतारणे ।  
 अवरोहोऽवतरणं शाखाण्याग्रादुगताङ्घ्रितः ॥ ५ ॥  
 अधिवासो निवासे स्याद् गन्धधूपादिसंस्कृतौ ।  
 अपवर्गः क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयोः ॥ ६ ॥  
 अपभ्रंशोऽपशब्दे स्याद् भाषाभेदप्रपातयोः ।  
 अपदेशस्तु लक्षे स्यान्निमित्तव्याजयोरपि ॥ ७ ॥  
 अनुभावः प्रभावे स्यान्निश्चये भावसूचके ।  
 पश्चात्तापे त्वनुशयो दीर्घद्वेषानुबन्धयोः ॥ ८ ॥  
 अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवर्तने ।  
 अभिमानस्तु विज्ञाने प्रणये दर्पहिंसयोः ॥ ९ ॥  
 अभिषङ्गस्त्वभिभावे सङ्ग आक्रोशनेऽपि च ।  
 अभिहारोऽभियोगे च चौर्यसन्नाहयोरपि ॥ १० ॥  
 स्नाने मद्यस्य सन्धानेऽभिषवः सवनेऽपि च ।  
 अभिग्रहोऽभियोगे च समन्ताद्ग्रहणेऽपि च ॥ ११ ॥  
 संयुगे स्यादभिमरः सबलादपि साध्वसे ।  
 कुले त्वभिजनो जन्मभूमौ चाथामरे ऋषे ॥ १२ ॥  
 अनिमेपोऽप्यनिमिषोऽप्यथ चण्डालशिष्ययोः ।  
 स्यादन्तेवास्यथर्वज्ञे त्वथर्वाणिः पुरोहिते ॥ १३ ॥  
 नृपरक्षिष्वनीकस्थो हस्तिशिक्षाविचक्षणे ।  
 अपवादौ तु निन्दाज्ञे स्तुतिस्नेहावपह्नवौ ॥ १४ ॥



वह्निवातावपाङ्गभौं गृह्यगूधाववस्करौ ।  
 कूर्मेशोऽब्धावकूपारोऽवलेपो लेपगर्वयोः ॥ १५ ॥  
 अशिःस्कौ बाहुरुण्डाववलोणेऽस्फुटापि वाक् ।  
 आशाचनी तु वहीन्दू आत्मयोनी स्मरानिलौ ॥ १६ ॥  
 ब्रह्माऽप्यथोपचर्यायामुपचार उपायने ।  
 उपनाहो वैरबन्धे वीणायाश्च निबन्धने ॥ १७ ॥  
 उपक्रमश्चित्सायामुपधाऽऽरम्भयोरपि ।  
 उपग्रहस्तु बन्दौ स्याद् ग्रहणेऽप्यनुकूलने ॥ १८ ॥  
 उपतापौ रुजातापौ द्वारपालेऽप्युदास्थितः ।  
 स्नानाचान्त्योरुपस्पर्शो हरावुच्चैःश्रवा ह्ये ॥ १९ ॥  
 दात्यौहाली कलकाणौ खड्गिखड्गौ करालिकौ ।  
 कलहंसो राजहंसे कादम्बे श्रेष्ठभूभुजि ॥ २० ॥  
 कुरुविन्दो हिङ्गुलेऽपि मुस्तेऽप्यथ गुहाशयः ।  
 ऋक्षे सिंहे च कूर्मे च ग्रहराजोऽर्कचन्द्रयोः ॥ २१ ॥  
 घनाघनो मत्तगजे वासवे वार्षुकाम्बुदे ।  
 चक्रपादौ रथगजौ चित्रभानू इनानलौ ॥ २२ ॥  
 देशे जने जनपदश्चन्द्रेऽर्केऽग्नौ तमोनुदः ।  
 तमोपहोऽप्यथोल्लुके तस्करे कुमुदाकरे ॥ २३ ॥  
 दिवाभीतो दिवाकीर्ती पुनश्चण्डालनापितौ ।  
 ददुरीकोऽनले वाद्ये पार्थाम्रीन्द्रा धनञ्जयाः ॥ २४ ॥  
 अग्न्युत्पातौ धूमकेतू धन्वन्तरिरिनाब्जयोः ।  
 पर्परीकौ वह्निभक्ष्यौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ २५ ॥  
 अग्निरुद्रौ पशुपती नाशावज्ञपराभवौ ।  
 रक्षःसन्तौ पुण्यजनौ नीचमूर्खौ पृथग्जनौ ॥ २६ ॥  
 द्वारद्वाःस्थौ प्रतीहारौ स्तनाम्भोदौ पयोधरौ ।  
 काशे नडे पोटगलः पवमानोऽग्निवातयोः ॥ २७ ॥  
 परिमर्देऽपि परिमलः पितामहौ ब्रह्मपितृतातौ ।  
 परिवारः प्रावारोऽपि नृपार्हर्षेऽपि परिबर्हः ॥ २८ ॥  
 परिवर्तो जगन्नाशौ निमचेऽब्दे परिभ्रमे ।  
 पर्युप्तौ च परीवाप आलवाले परिच्छेदे ॥ २९ ॥  
 पानीस्वीकारशपथमूलेष्वपि परिग्रहः ।  
 परिक्षेपो हस्तिपादपार्श्वे सम्परिवेष्टने ॥ ३० ॥

प्रतियत्नस्तु संस्कार उपग्रहणलिप्सयोः ।  
 स्थाने गोष्ठ्यां सत्रशाले प्रत्याहारे प्रतिश्रयः ॥ ३१ ॥  
 प्लवङ्गमः कपौ भेके प्लवङ्गप्लवगाविव ।  
 मौक्तिकेऽस्त्रे पारशवो विप्राच्छूद्रासुतेऽयसि ॥ ३२ ॥  
 विवेके स्यात् परिकरः पर्यस्तिपरिवारयोः ।  
 प्रगाढगात्रिकाबन्धे समूहारम्भयोरपि ॥ ३३ ॥  
 प्रतिग्रहः क्रियाकारे चमूष्ठे पतद्गृहे ।  
 दानद्रव्ये स्वीकृतौ च त्वष्ट्यर्के प्रजापतिः ॥ ३४ ॥  
 दक्षादिष्वभिजामात्रो राज्ञि ब्रह्मणि धातरि ।  
 ब्रह्मपुत्रस्तु रुद्रेऽपि बाहुलेयो गुहे वृषे ॥ ३५ ॥  
 धूम्याटेऽलौ भृङ्गराजो महाराजौ नृपार्थपौ ।  
 महालयो महागेहे विहारे परमात्मनि ॥ ३६ ॥  
 महाकालस्तु किम्पाके हरे बाणासुरेऽपि च ।  
 रजसानू घर्ममेघौ रौहिणेयौ हलीन्दुजौ ॥ ३७ ॥  
 लक्ष्मीपुत्रोऽश्व आढ्ये च राज्ञि लक्ष्मीपतिर्हरौ ।  
 लोकपालो नृपेन्द्राद्योर्हये वातप्रमीर्मृगे ॥ ३८ ॥  
 बाडबेयोऽश्विनोर्विप्रे वासुदेवो ह्ये हरौ ।  
 विश्वगोप्ता हरौ शक्रे चन्द्रेऽर्केऽग्नौ विभावसुः ॥ ३९ ॥  
 वृषसानुः पुंसि मृत्यौ विष्णौ रुद्रे वृषाकपिः ।  
 वानप्रस्थौ मधुष्ठीलपलाशावथ सङ्करे ॥ ४० ॥  
 व्यसने च व्यतिकरो विश्वकर्माब्जजो रविः ।  
 त्वष्टा च विप्रलापस्तु विप्रलम्भोपमर्दयोः ॥ ४१ ॥  
 वारवाणिश्रौतिषिके धर्माध्यक्षेऽप्यथो वटे ।  
 वनस्पतिर्वृक्षमात्रेऽप्यग्नीन्द्रकौ विरोचनाः ॥ ४२ ॥  
 व्यवहारो वाक्प्रयोगौ सम्बन्धे द्यूतदण्डयोः ।  
 शासने वित्तसंवादे विवादेऽसिषिष्ययोः ॥ ४३ ॥  
 वर्धमानः शरावे स्यादेरण्डे भूषणेऽपि च ।  
 शङ्कुर्णौ गर्दभोष्ट्रावलिबाणौ शिलीमुखौ ॥ ४४ ॥



श्रीवत्साङ्गौ हरिवृकौ सिंहकाकौ सकृत्प्रजौ ।  
 सहसानुर्मयूरेऽहौ सम्प्रयोगो रतेऽन्वये ॥ ४५ ॥  
 स्तनयितुर्गर्जितेऽभ्रे विरोधे तु समुच्छ्रयः ।  
 उन्नतावप्यथ क्रोष्टौ शुनि सालावृको वृके ॥ ४६ ॥  
 समाहारस्तु सङ्क्षेप एकत्र करणेऽपि च ।  
 समाह्वयस्तु पद्याद्यैर्घूते नामनि संयुगे ॥ ४७ ॥  
 सम्परायस्तु सङ्ग्राम आपदागामिकालयोः ।  
 स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते ॥ ४८ ॥  
 सोमयोनिः सुरे विप्रे हरिरोमाब्जजेन्द्रयोः ।  
 हस्तिमल्लो गणपतौ महेन्द्रस्य च कुञ्जरे ॥ ४९ ॥  
 ( इति चतुरक्षराः )

वर्णमात्रेऽभिनिष्ठानो हरीशावपराजितौ ।  
 आशुशुक्ष्णिरर्केऽग्नौ यज्वन्यप्यासुतीवलः ॥ ५० ॥  
 शौण्डिके चाप्यथानन्ते कुबेरे चैककुण्डलः ।  
 आम्ने चामरपुष्पः स्यात् काशकेतकयोरपि ॥ ५१ ॥  
 ज्योतिषाम्पतिरर्के च चन्द्रे चाप्यथ चुम्बने ।  
 ओष्ठे च दशनोच्छिष्ट उच्छ्वासेऽप्यथ नीपके ॥ ५२ ॥  
 धूलीकदम्बो वरुणफलेऽथो नागवारिकः ।  
 गणस्थे हस्तिपाले च यमेऽपि पृथिवीपतिः ॥ ५३ ॥  
 प्राचीनबर्हिर्निद्राग्न्यो रुद्रेन्द्रौ मेघवाहनौ ।  
 मातुलपुत्रस्तून्मत्तफले मातुलसुतेऽपि स्यात् ॥ ५४ ॥  
 कुटजेऽपि च यवफलको बडबामुख और्ववह्नौ च ।  
 विकङ्कते गोक्षुरे च कोल्यां च स्वादुकण्टकः ॥ ५५ ॥  
 निम्बेऽपि हिङ्गुनिर्यासो हिङ्गुवृक्षरसेऽपि च ।  
 हिरण्यबाहुः शोणाख्ये नदे विषमलोचने ॥ ५६ ॥  
 ( इति पञ्चाक्षराः )

निदाघ ऊष्मणि ग्रीष्मे स्वेदे घर्मस्तु तेषु च ।  
 आतपे च दिने चाथ वरुणे यादसापतिः ॥ ५७ ॥

यादस्पतिश्च तावन्धावप्यथो यक्षगृह्यकौ ।  
 धनदेऽप्यथ वृक्षेऽद्रौ शिखर्यगनगागमाः ॥ ५८ ॥  
 भ्रमरेष्टालिप्रियाद्या आम्ने जम्बूकनीपयोः ।  
 वतंसोत्तंसावतंसाः कर्णपूरेऽपि शेखरे ॥ ५९ ॥  
 अंशौ च केतुसूक्ष्माग्रा अप्यद्रौ शृङ्गिभैरवौ ।  
 ( इति विषमाक्षराः )  
 आकाशे दिवसे च द्युर्विः पक्षिपरमात्मनोः ॥ ६० ॥  
 पुमांसौ पुरुषात्मानौ मासौ मासनिशाकरौ ॥ ६०३ ॥  
 ( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥



स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चनायामपचितिः प्रक्षये निष्कृतौ व्यये ।  
अजमोदा शाल्मलेश्च निर्यासेऽथ गद्गुहि ॥ १ ॥  
धात्र्यां पाल्यां चाङ्कपालिरभिशस्तिस्तु दूषणे ।  
प्रार्थने चान्तशय्या तु भूमिशय्याश्मशानयोः ॥ २ ॥  
अनर्थवाचीतिकथा स्यादश्रद्धेयवाचि च ।  
रहस्यार्थे तूपनिषद्धर्मवेदान्तयोरपि ॥ ३ ॥  
उपलब्धिस्तु शेमुष्यां प्राप्तिविज्ञानयोरपि ।  
ऋश्यप्रोक्ता शतावर्या कण्डूरातिबलधिषु ॥ ४ ॥  
फलिनी स्याद् गण्डफली कलिका चम्पकस्य च ।  
वाद्यभेदे घर्घरिका वाद्यानां लगुडेऽपि च ॥ ५ ॥  
श्रीवेष्टे तैलपर्णी स्याद् धवलेऽपि च चन्दने ।  
दाक्षायणी भवान्यां भुव्यश्विन्याद्युडुषु श्रियाम् ॥ ६ ॥  
गौरीदिशोर्दक्षकन्या प्रतिपत्तिस्तु गौरवे ।  
प्रत्याप्तिप्रतिभाज्ञानेष्वथ नीलीविशल्ययोः ॥ ७ ॥  
मधुपर्णीत्यथ द्राक्षादूर्वे मधुरसेत्युभे ।  
चुच्छन्दर्या राजपुत्री राजकन्या पिचिण्डके ॥ ८ ॥  
वैजयन्ती पताकायां जयन्त्यां केशवस्रजि ।  
गुञ्जायूथ्यौ शिखण्डिन्यौ द्राक्षा स्वादुरसा सुरा ॥ ९ ॥  
समुद्रान्ता यवाषे च कार्पासीस्पृक्कयोरपि ।  
गौर्योमपि सिनीवाली मदिरापि हरिप्रिया ॥ १० ॥  
गङ्गा पथ्या हैमवती गौरी शुक्लवचापि च ।

( इति चतुरक्षराः )

गोरक्षजम्बूगोधूमधान्ये गोरक्षतण्डुले ॥ ११ ॥  
चिलिमीलिकातसी स्यात् खद्योते कण्डभूषणे चापि ।  
योजनगन्धा सीता कस्तूरी व्यासमाता च ॥ १२ ॥  
वृषाकपायी श्रीगौर्योः शोफज्यां प्रावृषायणी ।  
हरिद्रायां वरायां च रामायां वरवर्णिनी ॥ १३ ॥

( इति पञ्चाक्षराः )

व्यथने सूचना सूचा दर्शनेऽभिनयेऽपि च ।  
पार्वत्यामपि मातङ्गी रौद्रयुग्मा कौशिकीति च ॥ १४ ॥

माषपर्ण्या कृष्णवृन्ता सिंहपुच्छी महासहा ।  
रात्रावप्यर्जुनी सौम्या शिखा चूडा शिरस्यपि ॥ १५ ॥  
( इति विषमाक्षराः )

भूः क्षितौ स्थानमात्रे च वस्त्रिकायोषितोः स्त्रियौ ।  
उपायद्वारयोर्द्वीः स्यात् पूः स्यान्नगरदेहयोः ॥ १६ ॥  
धूः स्याद्यानमुखे भारे नौस्तु काले तरावपि ।  
ज्या पृथिव्यां च मौर्व्या च स्वर्व्योऽन्योर्द्यौर्दिवातुभौ ॥ १७ ॥  
ऋशब्दः स्याद्विव्यदितौ त्विड् ज्वालाकान्तिदीप्तिषु ।  
उत्साहेऽन्नरसेऽप्यूर्क् स्यात् सुक् सुवे शोपणे गतौ ॥ १८ ॥  
लक्ष्मीरिव लवङ्गे श्रीः पद्मायां कान्तिसम्पदोः ।  
रुग्ज्वालाकान्तिवाञ्छासु तृट् तु लिप्सापिपासयोः ॥ १९ ॥  
यथा तृष्णा यथा तर्षस्त्वगन्धद्रव्यवत्कयोः ॥ १९ ॥  
( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां दैजयन्त्यां  
शेषकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥



## नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

आत्याहितं महाभीत्यां प्राणानाकाङ्क्षिकर्मणि ।  
 अपादानं कर्मणि स्यादतिवृत्तेऽवखण्डने ॥ १ ॥  
 आभ्याधानमभिन्यासे वह्न्यर्थं चेध्मसङ्ग्रहे ।  
 अन्वाहार्यममावास्याश्राद्धमिष्टेश्च दक्षिणा ॥ २ ॥  
 समूहे स्यादाकलनं कलनज्ञानयोरपि ।  
 आच्छादनं संविधाने स्यादावरणवाससोः ॥ ३ ॥  
 आतञ्चनं प्रतीवापे जपाप्यायनयोरपि ।  
 आराधने तोषणाप्री घात आयोधनं रणे ॥ ४ ॥  
 जन्मोद्गमावुत्पत्तने रहोऽन्तिकमुपहरे ।  
 उद्भासने वधोद्भासावधुत्सादनमुन्नतौ ॥ ५ ॥  
 स्यादुद्धरणमुद्धान्तभक्तेऽप्युत्पाटनेऽपि च ।  
 तिन्त्रिडीकं तु वृक्षाम्ले चिञ्चायामम्लवेतसे ॥ ६ ॥  
 त्रिवर्णकं त्रिगन्धे स्यात् त्रिफलायां कटुत्रये ।  
 निर्यातनं प्रतीकारे दाने न्यासघनार्पणे ॥ ७ ॥  
 निर्भर्त्सनमलक्तेऽपि मोक्षे निःश्रेयसं शुभे ।  
 शस्त्रे युद्धे प्रहरणं कार्ये हेतौ प्रयोजनम् ॥ ८ ॥  
 प्रतिदानं परीवर्ते न्यासद्रव्यस्य चार्पणे ।  
 पारायणं कात्स्न्यवचस्यङ्कुशस्य च बन्धने ॥ ९ ॥  
 प्राणिद्युतं तु सङ्ग्रामे द्यूते च पशुपक्षिभिः ।  
 शुण्ठ्यामतिविषायां च लशुने च महौषधम् ॥ १० ॥  
 रतर्धिकं सुखे स्नाने दीनमङ्गलयोरपि ।  
 विदारणं तु काष्ठादेर्द्वैधीकारे विडम्बने ॥ ११ ॥  
 संसारे स्यात् संसरणमसन्बाधचमूगतौ ॥ १२ ॥  
 समापनायां हिंसायां समाप्तौ च समापनम् ।

( इति चतुरक्षराः )

अवतरणं भूतादिग्रहे निवसनाञ्चले ॥ १३ ॥  
 स्यादुपस्पर्शनं स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।  
 दुग्धाम्ने दुग्धतालीयं स्यात् फेनेऽपि च दुग्धजे ॥ १४ ॥

निन्दोपालम्भ आलापे नियमे परिभाषणम् ।

( इति पञ्चाक्षराः )

पराक्रमे धने द्युम्नं द्रविणं तु ग्रहेऽपि च ॥ १५ ॥  
 आगः किल्बिषमेनश्च त्रीणि पाप्मापराधयोः ।  
 शकुनं च निमित्तं च शुभादेः सूचकेऽपि च ॥ १६ ॥  
 यज्ञोपवीतोपवीते ब्रह्मसूत्रोत्तरीययोः ।  
 गम्भीरं गहनं रत्नं गह्वरं शरणं वपुः ॥ १७ ॥  
 स्नेहं सेव्यं महच्छुद्धं धरुणं सर्वतोमुखम् ।  
 पातालं स्वादु दिव्यं च तानि पञ्चदशास्वपि ॥ १८ ॥

( इति विषमाक्षराः )

खमिन्द्रिये दिवि व्योम्नि रन्ध्रनक्षत्रयोरपि ॥ १८ ॥

( इत्येकाक्षरः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥



## अभिधेयवह्निज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

( अर्थवह्निज्ञाध्यायः )

अभिजातः कुलीने च न्याय्यपण्डितयोरपि ।  
 अभिनीतः सुयुक्ते स्यादमर्षवति संस्कृते ॥ १ ॥  
 अभिपन्ना विपन्नाप्रस्तात्तद्रुतदक्षिणाः ।  
 अधिक्षिप्तं प्रणिहिते प्रेषिते भत्सितेऽपि च ॥ २ ॥  
 निश्चिते स्यादवसितं समाप्त उषितेऽपि च ।  
 अवदातः सिते गौरे शुद्धे चाथावलम्बिते ॥ ३ ॥  
 अविदूरेऽप्यवष्टब्धमसम्पृक्तो रहस्यपि ।  
 उज्जिते धिक्कृतेऽपि स्यादवध्वस्तोऽवचूर्णिते ॥ ४ ॥  
 स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च सम्पदा ।  
 उत्कीर्णे स्यादुल्लिखितमनुषक्ते तनूकृते ॥ ५ ॥  
 उद्ग्राहितमुपन्यस्ते बद्धग्राहितयोरपि ।  
 कौक्कुटिको दाम्भिके स्याद् यश्चादूरेरितेक्षणः ॥ ६ ॥  
 दशमीस्थस्तु स्थविरे नष्टबीजे मृताशने ।  
 परिप्राप्ते परिगतं प्रज्ञाते परिवेष्टिते ॥ ७ ॥  
 प्रतिशिष्टप्रतिक्षिप्तावाहूय प्रेषितास्तयोः ।  
 विशिष्टे स्यात् प्रतिहतं प्रतिस्खलितवस्तुनि ॥ ८ ॥  
 समाहिते प्रणिहितं न्यस्ताभिप्राप्तयोरपि ।  
 पुरस्कृतः पूजिते द्विडभियुक्तेऽग्रतः कृते ॥ ९ ॥  
 पौरुषेयं वधे पुंसो वृन्दे कार्यविकारयोः ।  
 ब्रह्मबन्धुरधिष्ठेप्ये निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ॥ १० ॥  
 यातयामं यातयामे जीर्णे भुक्तोज्जितेऽपि च ।  
 लालाटिकः प्रभोश्छन्ददर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ ११ ॥  
 विशारदो बुधे धृष्टे वञ्चिते तु विलम्बितम् ।  
 मन्दे चाथ समुन्नद्धौ पण्डितम्भन्यगर्वितौ ॥ १२ ॥  
 ( इति चतुरक्षराः )  
 कथाप्रसङ्गस्तु विषवैद्ये वाताधिकेऽपि च ।  
 ( इति पञ्चाक्षरः )

प्रहृष्टो हृषितो हृष्टः प्रहर्षवति विस्मिते ॥ १३ ॥  
 सरोमाञ्चे प्रतिहतेऽप्यथ सप्रभदग्धयोः ।  
 स्युः प्रदीप्तप्रज्वलितदीप्ता ज्वलित इत्यपि ॥ १४ ॥  
 कुत्सिते वाच्यवक्तव्यौ वदितव्यविहीनयोः ।  
 प्राप्तरूपोऽभिरूपश्च पण्डिते रूपवत्यपि ॥ १५ ॥

( इति विषमाक्षराः )

सन् सत्येऽभ्यर्हिते श्रेष्ठे साधीयसि भवत्यपि ।  
 किं प्रश्नाच्चेपकुत्सानां वितर्कस्य च गोचरे ॥ १६ ॥  
 ( इत्येकाक्षरौ )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे अभिधेयवह्निज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥



## नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

सुखाध्यर्का अय्यथिषा अय्यथिष्यौ निशाक्षिती ।  
 अवगीतं मुहुर्दृष्टे निर्वादे गर्हितेऽपि च ॥ १ ॥  
 पुमानधिपतिर्मूर्ध्न आवर्तेऽधीश्वरे त्रिषु ।  
 काञ्चने शारिफलके स्यादष्टापदमस्त्रियाम् ॥ २ ॥  
 अम्बरीषं रणे वर्षे तृणे नार्ककिशोरयोः ।  
 आत्मनीनः सुते स्याले प्राणधारिणि दूषके ॥ ३ ॥  
 आडम्बरोऽस्त्री संरम्भे पटहे गजगर्जिते ।  
 उदुम्बरो द्रुदेहत्योर्ना स्त्री हेमाक्षताम्रयोः ॥ ४ ॥  
 वचाजमोदयोरुग्रगन्धा ना लशुने सिते ।  
 कलधौतं रूप्यहेम्नोः षण्डस्त्री तु कलध्वनौ ॥ ५ ॥  
 कर्णपूरो वतसे ना स्त्री सौगन्धिक उत्पले ।  
 काण्डपृष्ठः क्रीतमुते दत्ते शूद्रासुताम्भसोः ॥ ६ ॥  
 शास्त्राजीवे च यश्चान्यकुलं याति स्वकं विना ।  
 नासा गन्धवहा गन्धवहो मृगनभस्वतोः ॥ ७ ॥  
 जलेशयो जलकपौ मत्स्ये पद्मं जलेशयम् ।  
 जीवितेशः प्रेतनाथे दायते द्रविणागमे ॥ ८ ॥  
 जैवातृकश्चन्द्रभिषगायुष्मत्सु कृषीवले ।  
 अम्ललोण्यां दन्तशठा त्रिष्वम्लेऽम्लगुणे तु ना ॥ ९ ॥  
 दुरोदरे नपुं द्यूते पणे द्यूतकरे तु ना ।  
 नारायणी शतावर्या लक्ष्म्यां गौर्या च ना हरौ ॥ १० ॥  
 निश्चारको निर्गमके पुरीषोत्सर्गिमारुते ।  
 निषद्वरी निशा कामकर्दमौ तु निषद्वरौ ॥ ११ ॥  
 निरूपणा नपुं स्त्री च निरीक्षणविचारयोः ।  
 निशाचर्यसती फेरु रक्षःसर्पौ निशाचरौ ॥ १२ ॥  
 यूथभ्रष्टे पक्षचरः स्यादेकचरपक्षिणोः ।  
 परायणमभिप्रेते तत्परे परमाश्रये ॥ १३ ॥  
 प्रतिष्कशः पुमान् द्यूते त्रिष्वग्रसहाययोः ।  
 अस्त्री प्रतिसरो हस्तसूत्रे ना तु चमूकटौ ॥ १४ ॥

आरत्ते व्रणशुद्धौ च नियोज्ये त्वभिधेयवत् ।  
 पारावतः खगातस्योरीषत्पाण्डौ च पारदे ॥ १५ ॥  
 नीचे व्रीहाविन्द्रनीले प्राणनाथो यमे प्रिये ।  
 पुण्डरीकं सितच्छत्रे कुण्ठभेदे सिताम्बुजे ॥ १६ ॥  
 ना त्वाम्रे दिग्गजे व्याघ्रे राजिलाहौ गजे ज्वरे ।  
 दीप्त्यां प्रद्योतनं नार्के घोरे प्रतिभयं भये ॥ १७ ॥  
 नकुले मूषिकेऽहौ ना गोधायां स्त्री बिलेशयः ।  
 वृन्दारकः पुमान् देवे श्रेष्ठसुन्दरयोस्त्रिषु ॥ १८ ॥  
 भागधेयं नपुं भाग्ये दायादे ना करे न षण् ।  
 मस्तुलुङ्गः शिरःस्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥ १९ ॥  
 ओतौ चारौ धौतिदेशे मार्जालीयोऽङ्गशोधने ।  
 महावीरो यज्ञपात्रे गरुडे सुभटे खगे ॥ २० ॥  
 वज्रेऽश्वे तनये हंसे शूरेऽग्नौ प्रवरे हरौ ।  
 राजादनं प्रियाले ना क्षीरिकायां पलाशके ॥ २१ ॥  
 वारवाणं तु कूर्पासे कवचेऽपि च न स्त्रियाम् ।  
 विश्वम्भरा धरित्री स्यादग्नौ विश्वम्भरो हरौ ॥ २२ ॥  
 विश्वावसुस्तु गन्धर्वभेदे ना स्त्री पुनर्निशि ।  
 वेणौ ना दूर्वावचयोः स्त्री बिले शतपर्व षण् ॥ २३ ॥  
 शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ।  
 पलमाने षोडशिका न ना न स्त्री पलद्वये ॥ २४ ॥  
 सनातनो हृषीकेशे चतुर्वक्त्रे सदातने ।

( इति चतुरक्षराः )

आशितम्भवमन्नादि तृप्तिः स्यादाशितम्भवः ॥ २५ ॥  
 पर्याप्तावुपसम्पन्नं मृते प्राप्ते सुसंस्कृते ।  
 नक्षत्रनेमी रेवत्यां स्त्री ना विष्णौ हिमद्युतौ ॥ २६ ॥  
 मूर्धाभिषिक्तो ना राज्ञि क्षत्रिये चार्थवत् प्रभौ ।  
 हरिचन्दनमस्त्री स्याच्चन्दने देवपादपे ॥ २७ ॥

( इति पञ्चाक्षराः )

श्रेष्ठे वृषाङ्गे राजाङ्गे ककुदोऽस्त्री ककुन्न षण् ।  
 तपस्वी शिशिरे शोच्ये चन्द्रे मांसी तपस्विनी ॥ २८ ॥  
 द्वीपवत्यौ धरानद्यौ द्वीपवानम्बुधौ नदे ।  
 धर्मे वाद्ये प्रसृत्वा ना प्रतिपत्तिः प्रसृत्वरी ॥ २९ ॥



पद्मी गजे पद्मिनी तु नलिन्यां हस्तिनीश्रियोः ।  
 ब्रह्मचारी व्रती स्कन्दो दुर्गा तु ब्रह्मचारिणी ॥ ६० ॥  
 भगवत्युमा भगवान् बुद्धे पूज्ये हरे हरौ ।  
 भोगी ग्रामाद्यधिकृते सर्पे सुखिमहीभुजोः ॥ ६१ ॥  
 विहाय महिषीमेकां भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।  
 श्रेयोऽत्यन्तं प्रशस्ते स्यात् कल्याणे धर्ममोक्षयोः ॥ ६२ ॥  
 श्रेयसी हस्तिपिपल्यामभयाराक्षयोरपि ।  
 सरस्वती सरिद्धेदे सरिन्मात्रे गवि क्षितौ ॥ ६३ ॥  
 मत्स्याद्यां वाचि गङ्गायां सरस्वानम्बुधौ नदे ।

( इति विषमसङ्ख्याः )

विभूतिभूतिरैश्वर्यमणिमादिकसम्पदोः ॥ ६४ ॥  
 ईशेश्वरौ प्रभौ रुद्रे पार्वत्यामीश्वरेश्वरी ।  
 स्वभावे स्यान्निसर्गश्च सृष्टिश्चोत्पादनेऽपि च ॥ ६५ ॥  
 गेहे कुलायो नीडोऽस्त्री रेतस्यपि रजो मदः ।

( इति विषमाक्षराः )

काश्चित्तात्मार्कधीधातृवाता मूर्ध्नि सुखेऽप्सु कम् ॥ ६६ ॥  
 द्युपश्विष्वंशुवज्राम्बुभूवाग्दिग्दक्षु गौर्न षण् ।  
 दृक् स्त्री स्यादशने बुद्धौ नेत्रे द्रष्टरि तु त्रिषु ॥ ६७ ॥  
 स्वोऽस्त्री धने त्रिषु स्वीय आत्मनि स्वजने तु ना ।  
 गूर्गुदे स्त्री प्रयत्ने ना रा न ह्री धनरुक्मयोः ॥ ६८ ॥  
 आत्मनि ज्ञातरि ज्ञः स्यान्ना विड् वैश्ये जने न षण् ।  
 तेशब्दः क्रीडने स्त्री स्यात् क्रीडके त्वभिधेयवत् ॥ ६९ ॥  
 सेशब्दः सेवने स्त्री स्यात् सेवके त्वभिधेयवत् ॥ ७० ॥

( इत्येकाक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

### पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

घातुः सर्वेऽपि पर्याया रुद्राक्षे स्युश्चतुर्मुखे ।  
 तस्मिन् पञ्चमुखे शम्भोः कुमारस्य तु षण्मुखे ॥ १ ॥  
 गुग्गुलुलृककुटजेष्विन्द्रस्याग्नैश्च चित्रके ।  
 भज्जातकेऽप्यथार्कस्य भज्जातक्यर्कपर्णयोः ॥ २ ॥  
 कर्पूरकम्पिज्जकयोरिन्दोर्वज्रस्य हीरके ।  
 गौर्यास्त्वतस्यां कौबेरा वन्दाके क्षीरवृक्षजे ॥ ३ ॥  
 खस्याभ्रके ब्रह्मणि च मेघस्याभ्रकमुस्तयोः ।  
 भुवो नामानि सौराष्ट्राणां शैलेये प्रावशैलयोः ॥ ४ ॥  
 शर्वर्यास्तु हरिद्रायां प्रियङ्गुव्रततौ स्त्रियाः ।  
 ध्वजधूममृगेन्द्राणां श्वोक्षरासमहस्तिनाम् ॥ ५ ॥  
 वायसस्य पर्यायाः क्रमात् पूर्वादिवेशमसु ।  
 हंसेन्दुकुमुदां रूप्ये कुमुदेऽपि खरस्य षण् ॥ ६ ॥  
 स्योनाके तु सृगालस्य वानरस्य तु सिंहके ।  
 स्पृक्कायां तस्करस्य स्युरुशीरे समरस्य हि ॥ ७ ॥  
 वाट्यालकेऽस्य सान्नस्य शोणितस्य तु कुङ्कुमे ।  
 कुष्ठाख्यभेषजे व्याघ्रेर्मातुर्गौर्या दृषद्गवोः ॥ ८ ॥  
 पिण्डारे त्ववटोः पाणेश्चायुधस्य त्वयस्यपि ।  
 अपराघे तु रन्ध्रस्य बदरस्य तु नागरे ॥ ९ ॥  
 रुक्मस्याञ्जनभेदे क्ली पुंलिङ्गा नागकेसरे ।  
 उन्मत्तेऽपि च बिन्दोस्तु सिध्मादौ देहवैकृते ॥ १० ॥  
 रूप्यस्याञ्जनभेदे स्युरटव्यां जलमुस्तके ।  
 षण्डाः केशस्य बर्हिष्ठे शिरसः शिखरे तरोः ॥ ११ ॥  
 माक्षिके क्ली स्त्रियो लक्ष्म्यां नरः पद्मस्य सारसे ।  
 त्वचो लवङ्गे पर्णस्य पक्षे ह्री किंशुके नरः ॥ १२ ॥  
 गणस्यान्वेषश्च सङ्ख्यायां बर्हिष्ठे मुस्तकेऽप्यपाम् ।  
 मकराम्बुजकूर्माणां निधिभेदेषु ते नरः ॥ १३ ॥  
 सङ्ख्याभेदेऽपि शङ्खस्य मीनमेषविषाणिनाम् ।  
 मिथुनस्य कुलीरस्य सिंहकन्यातुलालिनाम् ॥ १४ ॥



धनुर्मकरकुम्भानां क्रमाद् द्वादशराशिषु ।  
 सर्पस्य सीसके नागकेसरे द्विपसर्पयोः ॥ १५ ॥  
 अगुरुण्यसो गुन्द्रे शरस्य मकरे त्वसे ।  
 शुभस्य फेनिले पुंसि कार्पासे वाससो नरः ॥ १६ ॥  
 धूल्यश्वयोरश्वकन्दे पर्पटे मरिचेऽयसः ।  
 इत्यादीन्यन्यनामानि बोद्धव्यान्यन्यवस्तुषु ॥ १७ ॥  
 वृक्षस्य गृहनामान्ता नरः पक्षिमयूरयोः ।  
 वीरात् परास्ते भङ्गाते ततः शक्राच्च तेऽर्जुने ॥ १८ ॥  
 पलाशे ब्रह्मतोऽश्वत्थे श्रीतः कारस्करे विषात् ।  
 मुनेः पलाशसरलस्योनाकेक्षुद्यगस्तिषु ॥ १९ ॥  
 नौस्तम्भे गुणतश्चैत्यादश्वत्थोद्देशवृक्षयोः ।  
 व्याघाते राजतो दीपाहीपमालाविधारके ॥ २० ॥  
 नरो भुगन्ताः सर्पस्य राजसर्पमयूरयोः ।  
 तार्क्ष्ये चाथारिनामान्ता नकुले केकितादर्ययोः ॥ २१ ॥  
 पञ्चपूर्वास्तु वक्त्रस्य व्याघ्रे सिंहे हरे नरः ।  
 कण्ठस्य नीलनामभ्यो ग्रीवायाश्चेशकेकिनोः ॥ २२ ॥  
 नखस्य शस्त्रनामान्ता नरो मार्जारसिंहयोः ।  
 कुचन्दने कुङ्कुमे च रक्तादेश्चन्दनादयः ॥ २३ ॥  
 एवं संयोगनामानि सलिङ्गान्युन्नयेत् स्वयम् ।  
 पूर्वोक्तेष्वपि शब्देषु योगसम्प्राप्तवृत्तयः ॥ २४ ॥  
 स्वयमूहा यथा कन्दः कं ददातीति वारिदः ॥ २४३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां शेषकाण्डे  
 पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

### अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

उक्ता लिङ्गान्विताः शब्दा निर्लिङ्गान्यव्ययान्यतः ।  
 आङ्गीषदर्थेऽभिविधौ सीम्नि कर्मविशेषणे ॥ १ ॥  
 आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्य आस्तु सन्तापकोपयोः ।  
 ऐ दुःखभावने कोपे प्रत्यक्षे सन्निधावपि ॥ २ ॥  
 ओ स्याद् ब्रह्मण्यनुज्ञायां कं सुखेऽऽम्भसि मूर्ध्नि च ।  
 प्रश्ने क्षेपे विकल्पे किं कु पापेऽल्पार्थकुत्सयोः ॥ ३ ॥  
 चान्वाचये समाहारे मिथोयोगे समुच्चये ।  
 तु भेदावधारणयोदुरशोभनदुःखयोः ॥ ४ ॥  
 धिग्भर्त्सने कुत्सने च नि न्यग्भावनिर्णययोः ।  
 नाभावान्यविरोधेषु निर्निर्णयनिषेधयोः ॥ ५ ॥  
 प्रश्ने विकल्पे तु स्वित्वा प्रादौ यात्राप्रकृष्टयोः ।  
 वि निषेधे पृथग्भावे वा विकल्पोपमानयोः ॥ ६ ॥  
 समुच्चये च वै पापे वाक्यारम्भप्रसिद्धयोः ।  
 स्मृतौ वृत्ते निषेधे स्म स्वः स्वर्गपरलोकयोः ॥ ७ ॥  
 समभेदे समीचीने सुष्ठुपूजासुखेषु सु ।  
 प्रत्यारम्भे प्रसिद्धौ ह हा विषादशुगतिषु ॥ ८ ॥  
 हि स्याद्विशेषणे हेतौ हि हेतावधारणे ।  
 आमन्त्रणे भर्त्सने हुं हूं सम्प्रश्नवितर्कयोः ॥ ९ ॥  
 उ तापेऽव्ययमीशे ना मा निषेधे श्रियां स्त्रियाम् ।  
 अ निषेधे पुमान् विष्णावि विचित्रे स्मरे पुमान् ॥ १० ॥  
 तद्धेतौ त्रिष्वमुष्मिन् स्याद्यद्धेतौ प्रगते त्रिषु ।  
 ह ह्यु तु स्म च वै पादपूरणेऽपि प्रयुज्यते ॥ ११ ॥  
 ( इत्येकाक्षराः )

अमा सहाय्ये सामीप्येऽप्यद्धा प्रत्यक्षसत्ययोः ।  
 अयि प्रश्ने सानुनये विनियोगे क्रियास्वह ॥ १२ ॥  
 पीडेर्ष्याऽनुमतिष्वस्तु स्यादध्यधिक ईश्वरे ।  
 अलं तु भूषणे शक्तौ पर्याप्तौ विनिवारणे ॥ १३ ॥  
 अपि सम्भावनाप्रश्नगर्हाशङ्कासमुच्चये ।  
 अथाथोऽनन्तराऽप्यर्थविकल्पारम्भमङ्गले ॥ १४ ॥



अति स्यादधिकार्थोक्तौ प्रशंसायामतिक्रमे ।  
 पश्चाद्वेतूनसाम्येषु भागे वीप्साप्रकारयोः ॥ १५ ॥  
 लक्षणेऽप्यनु वीप्सादित्रयेऽप्यभिमुखेऽप्यभि ।  
 अतो निन्दाहेतुचित्रेष्वाराद् दूरसमीपयोः ॥ १६ ॥  
 इति हेतुप्रकरणप्रकारादिसमाप्तिषु ।  
 विस्तारेऽङ्गीकृतावूरी स्यादुर्युररी यथा ॥ १७ ॥  
 उपाधिकेऽन्तिके हीनेऽप्युत प्रश्नविकल्पयोः ।  
 समुच्चयेऽनुमत्यां चाप्येव साम्येऽवधारणे ॥ १८ ॥  
 पादपूरणकृत्वायमेवं साम्याभ्यनुज्ञयोः ।  
 कश्चित् प्रश्ने कामवादे वार्तासम्भाव्ययोः किल ॥ १९ ॥  
 निषेधे वागलङ्कारे झीप्सनेऽनुनये खलु ।  
 तूष्णीमर्थे मुखे जोषं तर्हि स्यात् प्रश्न उत्तरे ॥ २० ॥  
 तथा समुच्चये साम्ये परमार्थाभ्यनुज्ञयोः ।  
 तिरोऽन्तर्द्धौ तिरश्चीने दिष्ट्या स्यान्मङ्गलादिषु ॥ २१ ॥  
 तर्कनिश्चितयोनूनं नानाऽनेकोभयार्थयोः ।  
 प्रश्नावधारणैतिह्यसमीहानुमते ननु ॥ २२ ॥  
 नाम प्रकाश्यसम्भाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।  
 प्रबन्धे निकटेऽतीते पुराणेऽनागते पुरा ॥ २३ ॥  
 पुनरप्रथमे प्रश्ने व्यावृत्तावधारणे ।  
 प्रतिदाने प्रतिनिधौ तुल्ये मात्राभिमुख्ययोः ॥ २४ ॥  
 भागे प्रकारकथने वीप्सायां लक्षणे प्रति ।  
 भागादिष्वेषु परि च वर्जनेऽप्यपवत् परि ॥ २५ ॥  
 परा निहीनेऽनावृत्तौ बत त्वामन्त्रणेऽद्भुते ।  
 तोषे खेदे कृपायाञ्च बाढं त्वनुमते भृशे ॥ २६ ॥  
 मुहुः क्षणेऽनुक्षणे च मिथोऽन्योन्यरहस्ययोः ।  
 यथा सादृश्ययोग्यत्ववीप्सास्वर्थानतिक्रमे ॥ २७ ॥  
 यावत्तावच्च साकल्यमानावध्यवधारणे ।  
 वृथा निष्कारणाविध्योः शश्वद् भूयः सदेति च ॥ २८ ॥  
 सकृत् सदैकवारे च सामि स्यादर्धनिन्दयोः ।  
 स्वस्ति मङ्गलनिष्पापक्षेमेष्वाशीर्वचस्यपि ॥ २९ ॥  
 साक्षात् प्रत्यक्षसदृशोः पृथगर्थेऽन्तिके हिरुक् ।  
 वाक्यारम्भेऽनुकम्पायां हन्त हर्षविवादयोः ॥ ३० ॥  
 ( इति द्व्यक्षराः )

अञ्जसा त्वरिते तत्त्वेऽप्यहहाद्भुतखेदयोः ।  
 समीपोभयतश्शीघ्रशाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ ३१ ॥  
 रहस्येऽर्थ उपांशु स्यादश्रुतोच्चारणेऽपि च ।  
 परितोऽन्तिके सर्वतोऽर्थे पूर्वेद्युः प्रत्युषेऽपि च ॥ ३२ ॥  
 पुरस्तात् पूर्वदिश्यमे पुराप्रथमयोरपि ।  
 शीघ्रे सपदि सद्योऽर्थे समयाऽन्तिकमध्ययोः ॥ ३३ ॥  
 सद्योऽर्थे सहसा हेतुशून्ये युक्तेऽपि साम्प्रतम् ॥ ३३ ॥  
 ( इति त्र्यक्षराः )

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥



## अव्ययपर्यायाध्यायः ॥ ८ ॥

शीघ्रार्थे ऋटिति स्नाग्राक् मङ्गद्वहाय सपद्यपि ।  
 चिरेण चिररात्राय दीर्घकाले चिराच्चिरम् ॥ १ ॥  
 विकल्पे किमुताहोस्वित् किमुताहो किमूत च ।  
 सम्बोधने ननु प्याट् पाट् हे हे भो अङ्ग हन्त च ॥ २ ॥  
 बौषड्वोषड्वषड्वौक्षड्ववाक्षट् श्रौषड्वषट्कृतौ ।  
 परितः सर्वतो विष्वक् समन्ताच्च समन्ततः ॥ ३ ॥  
 किमुतातीव बलवत् स्वति सुष्ठु च साधिके ।  
 पृथग्विना हिरुङ् नानाऽन्तरेणते च वर्जने ॥ ४ ॥  
 कालेऽस्मिन्नधुनेदानीं सम्प्रत्येतर्हि साम्प्रतम् ।  
 यदा यर्हि तदा तर्हि तदानीं सर्वदा सदा ॥ ५ ॥  
 शश्वत् सनात् सना ज्योक् च युगपत्त्वेकदा सकृत् ।  
 द्विस्त्रिश्चतुष्पञ्चकृत्व इत्याद्यावर्तने कृतेः ॥ ६ ॥  
 कदाचिज्जातु सद्यस्तु तत्क्षणेऽन्यक्षणेऽन्यदा ।  
 दोषा नक्तं च निश्चहि दिवाद्यैतदहर्निशम् ॥ ७ ॥  
 अपरेऽह्यपरेद्युः स्यादेवं पूर्वैतराधरे ।  
 उत्तरेऽन्यान्यतरयोस्तर्क्याः पूर्वद्युरादयः ॥ ८ ॥  
 उभयेद्युस्तूभयद्युः परे त्वहि परेद्यवि ।  
 ह्यो गतेऽनागते तु श्वः परश्वस्तु ततः परे ॥ ९ ॥  
 सायं साये प्रगे प्रातः काल्ये संवत्तु वत्सरे ।  
 अतीतानन्तरे वर्षे परारि परुद्देशमः ॥ १० ॥  
 अतीते वर्तमाने च स्यादन्ते रजनेरुषा ।  
 मुहुः पुनःपुनः शश्वत् पुरस्तु पुरतोऽग्रतः ॥ ११ ॥  
 सङ्कोचे चिच्चन व्यर्थे मुधा शश्वत्तु शाश्वते ।  
 किञ्चनेषन्मनाक् किञ्चिद् विकल्पेऽवश्यं तु निश्चिते ॥ १२ ॥  
 निष्पमं दुष्पमं दुष्ठु गर्हे सुष्ठु सु शोभने ।  
 मिथ्या मृषा च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ॥ १३ ॥  
 मतप्रदाने यदि चेद् यथास्वं तु यथायथम् ।  
 युक्ते स्थाने रुषोक्तावृम् बहिर्बाह्ये नमो नतौ ॥ १४ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां समयान्ति निका हिक् ।  
 साम्ये व वैवमेवेव प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ १५ ॥  
 प्राध्वं स्यादानुकूल्यार्थमशीघ्रे शनकैः शनैः ।  
 अहो ही विस्मये प्रायो भूमन्यस्तमदर्शने ॥ १६ ॥  
 समकं तु सजुः साकं सार्धं सत्रा समं सह ।  
 सुखे दिष्ट्योपजोषं शमेवमां परमं मते ॥ १७ ॥  
 हठे प्रसह्य मध्ये स्यादन्तरेणान्तरेऽन्तरा ।  
 प्रादुराविः प्रकाशेऽर्वागवरे स्वयमात्मनि ॥ १८ ॥  
 उपरिष्ठादुपयुध्वं स्यादधस्तादवागधः ।  
 तिरश्चि साच्युच्च उच्चैर्नीचैर्नीच्युच्चकैर्भृशे ॥ १९ ॥  
 प्रकारेऽन्यथेतरथा कथमित्थं यथा तथा ।  
 द्विधा द्वेधा त्रिधा त्रेधा चतुर्धा द्वैधमादि च ॥ २० ॥  
 अर्थे यत्रादि सप्तम्याः पञ्चम्या यत आदिकम् ।  
 इतिह स्यात् सम्प्रदाये पारेऽपारे दृशौ पशु ॥ २१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ८ ॥



## लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

नाम्नां पूर्वमिहोक्तानामनुक्तानां च कृत्स्नशः ।  
 सामान्यैर्लक्षणैः कैश्चित् क्रियते लिङ्गसङ्ग्रहः ॥ १ ॥  
 अवाधिते विशेषोक्त्या भवेत् सामान्यलक्षणम् ।  
 एकस्वरं हलादीदृद् दृङ् मा श्रीभूरिति स्त्रियाम् ॥ २ ॥  
 इच्च सर्वमुदन्तेषु पाकुरञ्ज्वादि किञ्चन ।  
 नदीनामाह्वयाः सर्वे प्रायेण च लताह्वयाः ॥ ३ ॥  
 णचोऽञि व्यवहार्याद्या अङ्ङन्तास्तु पचादयः ।  
 अप्रत्यये जुगुप्साद्या युजन्ता भावनादयः ॥ ४ ॥  
 क्तिन्नन्तास्ततिगत्याद्याः क्तिबन्ताः सम्पदादयः ।  
 इञि स्युः कारिबोध्याद्या ण्वुलि प्रच्छर्दिकाऽऽदयः ॥ ५ ॥  
 क्रीडाप्रहरणे णान्ताः पाल्लवाद्या घञस्तु ज्ञे ।  
 क्रियायां दाण्डपाताद्यास्तल्ल्याबूङ्ङ्यन्धतादयः ॥ ६ ॥  
 अके वैरादिवीप्सादौ स्युः काकोल्लुकिवादयः ।  
 क्यपि तु ब्रह्महत्याद्या दल्याद्यल्पत्वकीर्तने ॥ ७ ॥  
 त्रिलोकीत्यादयोऽदन्तैः समाहारार्थकद्विगौ ।  
 त्रिपात्रत्रियुगाद्याः षण्णभवन्यादयस्त्वनौ ॥ ८ ॥

( इति स्त्रीलिङ्गाः )

अदन्ताः पुंस्युपान्ताश्चेत् कणौ भरमटास्तथौ ।  
 षसौ च सान्ता ये च स्युरुदन्ताः प्रायशो नरः ॥ ९ ॥  
 इदन्नेष्वरतिर्वर्णिर्वर्णाहिर्ग्रहिः ग्रहिः ।  
 स्तभिः कपिः सनीरालिरर्दनिर्वमतिर्नरः ॥ १० ॥  
 अङ्ग्याबन्ताश्च वृक्षार्थाः प्रायो रोहितरत्तथा ।  
 शैलानामह्वयाः सर्वे गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ ११ ॥  
 कन्यन्ता राजतक्षाद्या ऋदोरपि करादयः ।  
 इकस्तिपोः शासिशास्त्याद्याः स्युरेरचि जयादयः ॥ १२ ॥  
 अवश्यायादयो णान्ता घान्ता दन्तच्छदादयः ।  
 प्रध्याद्याः प्रादितो घोः कौ स्युर्वमथ्वादयोऽथुचि ॥ १३ ॥  
 प्रशनाद्या नङि पाकाद्या घञि ल्यौ नन्दनादयः ।  
 प्रथिमाद्या इमनिचि कुणप्पीलुकुणादयः ॥ १४ ॥

( इति पुल्लिङ्गाः )

त्रान्तद्वयच्छकासिसुस्नान्तं लोपधं युक्तयोपधम् ।  
 अम्बुपुष्पाणि च क्लीबे रेचकं त्वभयाफले ॥ १५ ॥  
 ब्रह्मोद्याद्या भावकृत्यः शब्दोऽणि त्रिष्टुभादयः ।  
 स्मिताद्या भावनिष्ठान्ताः कर्णजाहादि जाहचि ॥ १६ ॥  
 समूहकर्मभावार्थतद्धिते वार्धकादयः ।  
 सांराविणोपमानदि नोपान्तं भावसंज्ञयोः ॥ १७ ॥  
 एकद्वन्द्वान्वययीभावाः स्युरितोऽकर्मधारये ।  
 अनवृत्तपुरुषे शब्दाः कन्थोशीनरनामसु ॥ १८ ॥  
 यथा सौशमिकन्थं स्याद् बाहुल्ये तु समासभाक् ।  
 छाया यथा खगच्छायं नृपामर्त्यार्थकात् परा ॥ १९ ॥  
 अराजतः सभा भूभृत्सभं रक्षःसभं यथा ।  
 न काष्ठादेरशालार्था सैव दासीसभं यथा ॥ २० ॥  
 उपज्ञोपक्रमान्तं च तदादित्वे विवक्षिते ।  
 पाणिन्युपज्ञमित्यादि पथस्सङ्ख्याऽव्ययात् परः ॥ २१ ॥  
 शशादूर्णा गृहात् स्थूणा क्रियाऽव्ययगुणानुगम् ।  
 एकत्वञ्चास्य पुण्यात्तु सुदिनादप्यहः परः ॥ २२ ॥  
 कुटिलं गच्छतीत्यादि क्रियाणां तु विशेषणम् ।  
 नपुंसकं तु भद्रं स्वरित्यव्ययविशेषणम् ॥ २३ ॥

( इति नपुंसकलिङ्गाः )

स्त्रीप्राण्यर्थाः स्त्रियां पुंसि पुंप्राण्यर्था विना त्विह ।  
 स्त्रीत्वेनोक्तैस्तथाऽपत्येऽणादि ध्वन्नादि शिल्पिनि ॥ २४ ॥  
 कचिद्रश्मिमयूखांशुघृणिघृष्टिगभस्तयः ।  
 सृपाटी त्रिसरा सूर्मिः सुषुम्ना यष्टिरिङ्गुदी ॥ २५ ॥  
 कलम्बी शल्लकी मल्ली वरटा जाटलिः कुटी ।  
 शाटी रेणुहरेणूरुजल्लकाकोलिधूलयः ॥ २६ ॥  
 उत्कण्ठा कङ्कती कन्दूवितस्ती रथिरञ्जलिः ।  
 कूपस्य च त्रिका व्रीडा प्रेङ्गोलिः फलकी कटी ॥ २७ ॥

( इति स्त्रीपुंसलिङ्गाः )

अर्धर्चादिगणे प्रोक्तं सर्वं नृङ्गीबलिङ्गकम् ।  
 तच्च लिङ्गान्तरेऽनुक्तं सर्वमुक्तं घृतादि च ॥ २८ ॥



तत्र केचिद् घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं विदुः ।  
 अत एकेन लिङ्गेन ते पूर्वमिह वर्णिताः ॥ २६ ॥  
 पिशाचादिषु भूतोऽस्त्री शङ्कुरप्राणिगोचरः ।  
 विशेषकश्च तिलकं पुण्ड्रे ब्रह्मा द्विजेऽब्जजे ॥ ३० ॥  
 द्धवेडाश्च कन्दलाः कालकूटाद्याः स्युः कमण्डलुः ।  
 सक्तः परीतन्महिमा कर्म पर्व च लोम दोः ॥ ३१ ॥  
 ( इति नृषण्डाः )

अपुंसि चालनी दाम वणिज्याऽशसन्तिका स्थली ।  
 शरव्यार्चिचर्गुडा पत्री स्यात् कुथे वर्णतर्णिका ॥ ३२ ॥  
 सगरी नटने कृत्या त्वभिचारजदैवते ।  
 मये मधूलकं चेति क्वाप्यथाकर्मधारये ॥ ३३ ॥  
 अनन्तत्पुरुषे सेनाच्छाया शाला निशा सुरा ।  
 नृसेनं पादपच्छायं गोशालं श्वनिशं यथा ॥ ३४ ॥  
 नृसेनेत्यादयोऽप्येवं कुत्रचिद्भावकर्मणोः ।  
 साहायकं साहायिका मैत्र्यं मैत्री च वृद्धयन्तोः ॥ ३५ ॥  
 द्विगुरन्तन्त आबन्तोऽप्येवं नश्चात्र लुप्यते ।  
 यथा त्रितक्षं त्रितक्षी क्षिखट्वं च त्रिट्वयपि ॥ ३६ ॥  
 ( इति स्त्रीषण्डाः )

त्रिलिङ्गां तु कचिच्छुङ्गा कलशी कन्दरी दरी ।  
 पेटी पुटी पटी वाटी कवाटी पिटका वटी ॥ ३७ ॥  
 अर्गला दाडिमी पात्री विडङ्गा कुवली तटी ।  
 मृणाली कन्दली नाली मुस्ता जम्भा हरीतकी ॥ ३८ ॥  
 त्रिजातकी गन्धिघना मठी स्थाने तपस्विनाम् ।  
 ( इति त्रिलिङ्गाः )

गुणद्रव्यक्रियायुक्तं बुवन्तो वाच्यलिङ्गकाः ॥ ३९ ॥  
 येनार्थः प्रस्तुतो नाम्ना तल्लिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ।  
 न त्रिषु स्युर्विशिष्टार्थस्पर्शिनः पङ्कजादयः ॥ ४० ॥  
 भेद्यनिष्ठत्वमेकार्थवृत्तिमात्रैककारणम् ।  
 अतन्नीकृत्य भेदोक्तिः कैश्चिदाश्रीयते पुनः ॥ ४१ ॥

ते स्युरर्थसमा यद्वत् सत्त्वाद्या वाक्यगोचराः ।  
 मचर्चिका मतल्लिका प्रकण्डमुद्धतल्लजौ ॥ ४२ ॥  
 अमीषु नार्थलिङ्गता प्रशस्तवाचकेष्वपि ।  
 योनिसम्बन्धवाचिन्यः पुत्राद्याः पुंगिरो नरि ॥ ४३ ॥  
 मात्राद्याः स्त्रीगिरः स्त्रीत्वे विद्यासम्बन्धगोचराः ।  
 आचार्यत्विगुपाध्यायशिष्या याज्यार्थिकास्तथा ॥ ४४ ॥  
 शास्त्रार्था वैदिकार्थाश्च स्थपतिश्रोत्रियादयः ।  
 अधिकारकृता मन्त्रिस्थापत्याद्यभिधास्तथा ॥ ४५ ॥  
 भट्टारको भट्टारको भट्टस्तत्रभवान् भवान् ।  
 भगवान् पूज्यपादश्च देवाश्चार्थार्थिकास्तथा ॥ ४६ ॥  
 शत्रुमित्रज्ञशिल्प्यर्थाः प्रायस्तद्वन्न तु त्रिषु ।  
 वाच्यवत् स्याद् बहुव्रीहिर्दिङ्नामसु तु स स्त्रियाम् ॥ ४७ ॥  
 कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याद्या ल्युट् च कारके ।  
 सर्वनामान्यणाद्याश्च तद्धिताः संज्ञया विना ॥ ४८ ॥  
 तद्धिताः चतुर्थ्या ये सङ्केतात् कृतकाह्वयाः ।  
 षट्संज्ञा युष्मदस्मच्च त्रिषु लिङ्गेष्वभेदवत् ॥ ४९ ॥  
 ( इत्यभिधेयवल्लिङ्गाः )

कृतद्धितसमासाख्या प्रसिद्धाख्ये च लिङ्गिनि ।  
 तद्यथा चक्रभृद्विष्णुर्लताभेदाभिधा यथा ॥ ५० ॥  
 द्वन्द्वस्तत्पुरुषोऽप्यन्त्यलिङ्गोऽश्वबडबौ नरि ।  
 तथैवोक्षवशावहरात्राहाश्च टजन्तकाः ॥ ५१ ॥  
 क्लीबे सङ्ख्यापरं रात्रमर्धान्ना पञ्चखार्यना ।  
 त्रिष्वर्थः प्राक् चतुर्थ्यन्तस्तद्धितार्थो द्विगुस्त्रिषु ॥ ५२ ॥  
 प्रादिप्राप्तालमापन्नात् परं च प्रवरो यथा ।  
 प्राप्तार्थोऽलङ्कुमारिश्च पुमान् स्त्रीपुंसयोर्युतौ ॥ ५३ ॥  
 ग्राम्यानेकशफाबालबहुपञ्चन्वये स्त्रियः ।  
 क्लृप्तकलीयुतौ षण्णैक्यं वा व्यक्त्यादि लुपि युक्तवत् ॥ ५४ ॥  
 परवद् वानुवादेषु तिङ्गव्ययमलिङ्गकम् ।  
 अचः पुंसि हलो दीर्घाः स्त्रियां लोपधनत्रसाः ॥ ५५ ॥



षण्डे सर्वे गुणद्रव्यक्रियायुक्तार्थकास्त्रिषु ।  
 बहुत्वमेकता च स्याज्जात्याख्यायां यथा यवाः ॥ ५६ ॥  
 यवश्च ब्रीहयो ब्रीहिरित्यथ स्याद् विशाखयोः ।  
 द्वित्वं बहुवचश्चैवं द्वयं प्रोष्ठपदास्वपि ॥ ५७ ॥  
 अनेकमिति शब्दस्य तद्विशेषस्य चैकता ।  
 सङ्ख्यार्थस्याबहुब्रीह्येयथाऽनेका वधूरिति ॥ ५८ ॥  
 विरोधे पूर्वदौर्बल्यं लोकतः शेषमुन्नयेत् ।  
 ( इति सामान्यन्यायाः )

सर्वे जनाः सहस्रास्या युगपद्वक्तुमुद्यताः ॥ ५९ ॥  
 न कलामपि भारत्या ब्रूयुर्वर्षशतैरपि ॥ ६० ॥  
 इति भगवता विदितनिखिलनिगमनिचयरहस्यविद्येन दिनमणिसमतेजसा  
 सकलतत्त्वप्रकाशेन यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां  
 शेषकाण्डे लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥  
 अष्टमः शेषकाण्डः समाप्तः ॥ ८ ॥

### ग्रन्थोपसंहारः

इति यतिवरसङ्घपूजिताङ्घ्रिः  
 प्रथितयशा भुवि यादवप्रकाशः ।  
 व्यरचयदभिधानशास्त्रमेतत्  
 सह वचनैः सह लिङ्गसङ्ग्रहेण ॥ १ ॥  
 एतां शुभामष्टभिरुक्तकाण्डै-  
 भूतस्वरूपैरिव नाममालाम् ।  
 धत्तां विशाले हृदये मुरारि-  
 स्त्वां वैजयन्तीमिव वैजयन्तीम् ॥ २ ॥  
 एवं सूक्ष्मैर्यायनिर्णीतशब्दैः  
 सर्वार्थानां व्यञ्जकोऽसौ निघण्टुः ।  
 संवित्तीनां भूषणं सत्कवीनां  
 प्राप्तः पारं वैजयन्तीनिघण्टुः ॥ ३ ॥  
 [ नानाविद्यावेद्यवाप्रज्ञमाला  
 मूर्तं वेदं वेदयन्ती त्रिवेद्याः ।  
 रोद्धुं बुद्धिध्वंसकध्वान्तचक्रं  
 प्राज्ञैर्ज्ञेया वैजयन्ती जयन्ती ॥ ४ ॥ ]

( इति वैजयन्ती समाप्ता )



## परिशिष्टम्

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

भिदुरम्	११२१३	भिदिरम्	अमरकोषः ( व्याख्यासुधा ) १११४७
कृकरः, कृकरः	२१३३६	कृकरः, कृकणः	२१५९
महलः	२१४१०	मर्दलः	११७१८ ( व्याख्यासुधा )
रुशती	२१४१८	उषती	११७१८
फणिर्जकः	३३१२०	फणिज्जकः	२१४७९
पिण्या	३३१४०	पण्या	२१४१५०
विश्वोष्ठी	३३१४७	विश्विका	२१४१३९
वाध्राणसः	३१४१८	वाध्रीणसः	त्रिकाण्डशेषः २१५३
		वाधीनसः	२१५३
नैचिकी	३१४४६	नैचिकम्	२१५२२
स्थूरी	३१४५६	स्थूरी	अमरकोषः २१८४६
कुक्कुरः	३१४६९	कुक्कुरः	अभिधानचिन्तामणिः ४३४५
		कुर्कुरः	४३४५
कदञ्जिका	३१६३१	कलिन्दिका	२१७०२
		कडिन्दिका	२१७०२ ( मणिप्रभा )
		कलन्दिका	२१७०२
वैष्णुतम्	३१६९५	वैष्णुतम्	३१५०१
		वैष्णुभम्	त्रिकाण्डशेषः २१७०७
व्रसी	३१६१४९	वृषी	अमरकोषः २१७४६
		वृसी	२१७४६ ( व्याख्यासुधा )
क्रियदेहिका	३१६१६६	क्रियदेहिका	त्रिकाण्डशेषः ( व्याख्या ) ११७४४
चूषा	३१७०८४	दूष्या	अमरकोषः २१८४२
जागरः	३१७१५३	जगरः	अभिधानचिन्तामणिः ३१३३०
		जगरः	अभिधानरत्नमाला २१३०४
भिण्डिपालः	३१७१६६	भिन्दिपालः	अमरकोषः ३१८९१
		"	अभिधानचिन्तामणिः ३१४४९

( २२७ )

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डायङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

समिकम्	३१७२०३	समीकम्	अमरकोषः २१८१०४
खले पाली	३१८३१	खलेवाली	अभिधानचिन्तामणिः ३१५५८
मरिष्टक-मयष्टकौ	३१८३८	मकुष्ठक-मयुष्टकौ	" ४२४०
		अमरकोषः	२१९१७
विडङ्गः	३१८९७	विटङ्गम्	" २१२१५
यष्टिमधुका	३१८१०३	यष्टीमधुकम्	" २१४१०९
		मधुयष्टी	" ( व्याख्यासुधा ) २१४१०९
		यष्टी	"
मणिमन्	शितशिवम् ३१८१२०	शीतशिवं माणिमन्धम्	" २१९४२
		सितशिवम्	" ( व्याख्यासुधा ) २१९४२
		माणिबन्धम्	" ( क्षीरस्वामी ) २१९४२
मूका	३१९१७	मूषा	" २१९३३
कुठारः	३१९३२	कुठरः, कुटरः	" २१९७४
		कुटरः	अभिधानचिन्तामणिः ४१८९
कल्कत्वम्	३१९८५	कल्लत्वम्	" २१२२०
निकार्यं	४३११८	निकार्यः	अमरकोषः २१२१५
		निकार्यः	" २१२१५
		निकार्यः	अभिधानचिन्तामणिः ४१५६
कुण्डिनी	४३१२५	कण्डनी	त्रिकाण्डशेषः २१९६६
मण्डपः	४३१२८	मण्डपः	अमरकोषः २१२१९
		"	अभिधानचिन्तामणिः ४१६९
भिरसिटा	४३१७७	भिरसटा	" ३१६०
		"	अमरकोषः २१९४९
मकुटः	४३१३५	मुकुटः	" २१६२०२
		मुकुटः	" ( व्याख्यासुधा ) २१६२०२
		"	अभिधानचिन्तामणिः ३१३१४
		मुकुटः	" ( स्वोपज्ञवृत्तिः ) ३१३१४
पिचिण्डिका	४३१५८	पिचण्डिका	" २१२७९



वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डाद्यङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

प्रसृतः	४।४।७७	प्रसृतिः	अमरकोषः	२।६।८५
कलाः	४।४।१०१	कचाः	"	२।६।९८
गोर्दम्	४।४।११२	गोदम्	"	२।६।६५
		गोदः	" ( मणिप्रभा )	२।६।६५
परीतदान्त्रम्	४।४।११३	पुरीतत्, अन्त्रम्	"	२।६।६६
वातकः	४।४।१४५	वातकी ( -किन् )	"	२।६।५९
श्लेष्मसूः	४।४।१४६	श्लेष्मणः	"	२।६।६०
यौवनम्	५।१।८	यौवतम्	"	२।६।२२
निर्वार्यः	५।४।७३	निर्वार्यः	" ( व्याख्यासुधा )	३।१।१३

## वैजयन्तीकोषस्य शब्दानुक्रमणिका

[ इस अनुक्रमणिका में क्रमशः शब्द, लिङ्गादि के अङ्क ( १. पुलिङ्ग, २. स्त्रीलिङ्ग, ३. नपुंसकलिङ्ग, ४. अव्यय ), ए. = एकवचन, द्वि. = द्विवचन, व. = बहुवचन तथा ( ) इस कोष्ठक के अन्तर्गत ग्रन्थान्तरस्थ पाठान्तर और अन्त में क्रमशः काण्डाङ्क, अध्यायाङ्क, तथा श्लोकाङ्क दिये गये हैं ]

अ	अ	अ	अ	अ	अ
शब्दाः लिङ्गाद्यङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः	शब्दाः लिङ्गाद्यङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः	शब्दाः लिङ्गाद्यङ्काः	काण्डाङ्काः अध्यायाङ्काः श्लोकाङ्काः
अ ४.	८।७।१०	अकुत्स १.	३।१।५५	अक्षपात १.	३।१।६१
अंश १.	४।४।५५	अकुप्य ३.	३।८।७४	अक्षफल १.	३।३।७९
,, १.	५।२।६	अकुप्यसहाय १.	५।१।५४	अक्षर ३.	३।६।१६२
अंशु १.	२।१।१५	अकूपार १.	४।२।१२	,, १ व.	७।५।३
,, १.	२।१।१६	,, १.	८।१।१५	अक्षरचुम्बु १.	३।१।२३
,, १.	२।१।२६	अकृत १.	३।६।९७	अक्षरजीवन १.	३।१।२३
,, १.	६।१।६	अक्ष १.	३।७।१३१	अक्षरपातक १.	२।१।५२
,, १.	८।१।२५	,, १.	३।८।१५	अक्षवती २.	३।१।५९
अंशुक ३.	४।३।११६	,, ३.	३।८।१२५	अक्षि ३.	४।४।९४
,, ३.	७।३।१	,, १.	३।९।६०	अक्षिगत १.२.३.	५।४।६९
अंशुमत् १.	२।१।१५	,, ३.	५।१।४९	अक्षित ३.	५।१।३०
अंस १. ३.	४।४।७१	,, १. ३.	६।५।२	अक्षिसंस्कार १.	४।३।१५७
अंसल १. २. ३.	५।४।६	अक्षकील १.	३।७।१३१	अक्षीव ३.	३।८।१२०
अंससन्धि १.	४।४।६९	अक्षज ३.	३।९।७३	अक्षोड १.	३।३।४६
अंसान्त १.	४।४।७०	अक्षजीविन् १.	३।९।५९	अक्षीहिणी २.	३।७।५८
अंहति २.	३।६।११९	अक्षत १. २. ३.	७।५।१४	अखण्ड १. २. ३.	५।४।८६
अंहन ३.	५।२।१३	अक्षताडन ३.	३।९।१३७	अखात ३.	४।२।५
अंहस् ३.	३।६।१६८	अक्षति २.	३।६।९०	अखिल १. २. ३.	५।४।८५
अकषाय १.	५।३।३९	अक्षत्र ३.	४।४।८५	,, १. २. ३.	७।४।१
अकार्यसेवन ३.	३।६।११७	अक्षदर्शक १.	३।८।१४	अग १.	३।२।१
अकिञ्चन १.२.३.	५।४।५९	अक्षधूर्त १.	३।९।५८	,, १.	८।१।५८
		अक्षधूर्तिल १.	३।४।५२	अगच्छ १.	३।३।५



## [ अगद ]

अगद १.	४११४१
अगदङ्कार १.२.३.	४११४३
अगम १.	८११५८
अगरी २.	३३३८६
अगरु १.	३८११०६
अगस्ति १.	३३३१५६
,, १.	३३३१५१
अगस्त्य १.	३३३१५६
,, १.	३३३१५१
अगाध १.	४११२
,, १. २. ३.	४१२१९
अगार ३.	४३३१७
अगृहीतदिश १. २. ३.	३१७२१९
अग्राथी २.	१२११९
अग्नि १.	१२११५
,, १.	८६१२
अग्निक १.	३३३२२१
अग्निकारिका २.	३३३१४
अग्निकार्य ३.	३३३१४
अग्निकौच ३.	४३३११९
अग्नित्त १.	३३३१७५
अग्निरा २.	३३३१३
अग्निरूर्णमा २.	२११७४
अग्निरुज ३.	३३३२०
अग्निसन्ध १.	३३३८६
,, १.	३३३८४
अग्निसुखी २.	३३३१५
अग्निसिख २.	१२३३२
अग्निसिख ३.	३३३११७
अग्निस्रोम १.	३३३८७
अग्निस्र १. २. ३.	३३३१०४
अग्निस्र १.	१२३१९
अग्निस्रद्ग्रह १.	३३३६८
अग्निस्रज्जक १.	३३३८२
अग्निस्रोत्र ३.	३३३१०
अग्निस्रोत्रहवणी २.	३३३१००
अग्निस्रोत्री २.	३३३१५
अग्निस्रन्धन ३.	३३३१४
अग्निस्रधान ३.	३३३६९

## वैजयन्तीकोषः

अग्न्याहित १.	३३३७३
अग्न्युत्पात १.	१२३३३
अग्र १.	३३३१९८
,, १. २. ३.	५३३६३
,, ३.	६३३१९
,, १.	८१३६०
अग्रज १.	४३३३१
,, १. २. ३.	५३३४
अग्रजन्मन् १.	३३३१९
अग्रणी १. २. ३.	५३३६४
अग्रतः ( -सू ) ४.	८१८११
अग्रतःसर १. २. ३.	३३३१४५
अग्रदिधिषु १.	३३३१४४
अग्रद्रवसंहति २.	३३३१४७
अग्रमांस ३.	४३३११४
अग्रयान ३.	३३३२०३
अग्रसन्धानी २.	१२३३६
अग्रस्थ १. २. ३.	५३३७७
अग्राम्य १. २. ३.	५३३२०
अग्रिम १. २. ३.	५३३७७
अग्रिय १. २. ३.	५३३४
,, १. २. ३.	५३३६३
अग्रीय १. २. ३.	५३३६३
अग्रेदिधिषु १.	३३३१४४
अग्रेदिधिषू १.	३३३१४४
,, २.	३३३१४५
अग्रेसर १. २. ३.	३३३१४५
अग्रय १. २. ३.	५३३७७
अघ ३.	३३३१६८
,, ३.	६३३२
अघन १. २. ३.	५३३१२५
अघायु १. २. ३.	३३३११
अङ्क १.	२१३२९
,, १.	३३३१००
,, १.	४३३६०
,, १.	६३३१६
अङ्कण १.	४३३३६
अङ्कति १.	१२३४८
अङ्कपालि २.	८१२२
अङ्कपाली २.	४३३१७०
अङ्कलि २.	४३३१५४

## [ अङ्गुल ]

अङ्गुट १.	४३३४८
अङ्गुर १. ३.	३३३१०
अङ्गुश १. ३.	३३३७४
अङ्गूर १. ३.	३३३१०
अङ्गोठ १.	३३३४१
अङ्गोल १.	३३३४१
अङ्गुथ १.	३३३१२९
अङ्ग १ व.	३३३१३१
,, ३.	३३३२०८
,, ३.	४३३५२
,, ३.	४३३५५
,, १. २. ३.	६३३३
,, ४.	८१८२१
अङ्गचेष्टा २.	३३३१८
अङ्गज १.	४३३३९
,, १.	५३३३८
,, १. ३.	७३३१०
अङ्गजा २.	४३३३९
अङ्गद ३.	४३३१४३
अङ्गद्वीप ३.	३३३१३
,, ३.	३३३१४
,, ३.	३३३१५
अङ्गना २.	२१३१९
,, २.	४३३५
अङ्गनाप्रिय १.	३३३२५
अङ्गमर्दिन् १.	३३३१५
अङ्गलोड्यक १.	४३३४६
अङ्गविक्षेप १.	३३३१७
अङ्गसंस्कार १.	४३३११२
अङ्गहार १.	३३३१७
अङ्गार १. ३.	१२३३२
,, १.	२१३३१
,, १.	५३३१८
अङ्गारधानी २.	४३३५५
अङ्गारशकटी २.	४३३५५
अङ्गारशकट १. २. ३.	३३३३२
अङ्गिन् १.	४३३१
अङ्गीकार १.	५३३३७
अङ्गु १.	२३३१
अङ्गुल १. ३.	३३३५२

## [ अङ्गुल ]

अङ्गुल १.	३३३२७
,, १.	३३३१५९
,, १.	४३३७९
अङ्गुलाल १.	३३३११२
अङ्गुलि २.	४३३७४
अङ्गुलित्र ३.	३३३१५६
अङ्गुलिमुद्रा २.	४३३१४५
अङ्गुलीयक ३.	४३३१४४
अङ्गुष्ठ १.	४३३७४
अङ्गुष्ठकान्तर १.	४३३५७
अङ्गुष्ठि १.	४३३५६
अङ्गुष्ठिनामन् १.	३३३१२
अङ्गुष्ठिप १.	३३३३४
अचल १.	३३३११
अचला २.	३३३१४
अचिरव्यूढा २.	४३३७
अच्छमल्ल १.	३३३७
अच्युत १.	१३३११
अज १.	३३३६२
,, १. २. ३.	६३३४
अजगर १.	४३३१७
,, १.	४३३१९
अजगाव ३.	१३३५०
अजगाव ३.	१३३५०
अजन्य ३.	३३३१९०
अजप १. २. ३.	३३३११
अजमोदा २.	३३३१०२
,, २.	८३३१
अजय्य ३.	३३३१८६
अजवीथी २.	२३३४६
अजशृङ्गी २.	३३३१४१
अजस्र १. २. ३.	५३३१३०
अजहा २.	३३३१२९
अजा २.	३३३६३
आजाजी २.	३३३८३
अजाजीव १.	३३३२९
अजित १.	१३३१२
अजितनेमि १.	३३३१९
अजिन ३.	३३३२१
अजिनपत्रा २.	२३३४४
अजिनयोनि १.	३३३२५

## शब्दानुक्रमिका

अजिर ३.	४३३१३६
,, १. २. ३.	५३३२५
,, १. २. ३.	७३३४
अजीगव ३.	१३३५०
अजुका २.	३३३१०४
अज्ज १. २. ३.	५३३२१
अज्जति १.	१३३१८
अज्जन ३.	३३३३९
अज्जल १.	४३३३३
अज्जित १. २. ३.	५३३१३
अज्जन १.	२३३८
,, १.	३३३१०७
,, ३.	४३३१५७
अज्जनकेशी २.	३३३१०१
अज्जनवस्त्रिका २.	३३३१३५
अज्जनावती २.	२३३१९
अज्जनिका २.	४३३२९
अज्जलि १.	४३३७८
,, १.	५३३५३
,, १.	५३३६३
,, १.	८३३२७
अज्जलिकारिकार. ३.	३३३१४८
,, २.	३३३१३
अज्जसा ४.	८३३३१
अज्जि १.	३३३८२
अटनी २.	३३३१७७
अटवी २.	३३३११
,, २.	८३३११
अटाव्या २.	५३३११
अट्ट १.	४३३३३
,, १.	६३३१५
अट्टहास १.	३३३८४
अट्टालिका २.	४३३३३
अट्टन ३.	३३३२००
अणक १. २. ३.	५३३७५
अणव्य १. २. ३.	३३३२०
अणि १.	२३३७९
,, १. २.	३३३३३
,, १. २.	४३३५२
,, १. २.	६३३५५
अणिकूर्च १.	२३३८०

## [ अतिमुक्त ]

अणु ३.	३३३११९
,, १. २. ३.	५३३३६
अणुराजि २.	३३३१३३
अणह ३.	२३३५०
,, १.	३३३१६२
,, १. ३.	४३३३३
,, ३.	६३३३२
अण्डज १.	४३३४२
,, १. २. ३.	४३३४२
,, १.	७३३११
अण्डजा २.	७३३११
अण्डप्रहरण १.	४३३४७
अण्डमूलक ३.	४३३६०
अण्डवर्धन ३.	४३३३३
अण्डिक १.	४३३३३
अण्डिका २.	५३३४८
अण्डीर १.	७३३१५
अण्डुक १.	२३३३३
,, १.	४३३४७
,, १.	४३३६३
अतः ( -सू ) ४.	८३३१६
अतलस्पर्श १. २. ३.	४३३१९
अतसी २.	३३३४५
अति ४.	८३३१५
,, ४.	८३३४
अतिकृच्छक ३.	३३३३३
अतिक्रम १.	३३३१४
,, १.	५३३१६
अतिचरा २.	३३३८९
अतिचाटुवाच् २.	२३३२५
अतिच्छत्र १.	३३३३३
अतिजव १. २. ३.	३३३१५०
अतिथि १.	३३३६८
अतिथ्यर्थ १. २. ३.	३३३६७
अतिपथिन् १.	३३३४९
अतिपात १.	३३३१४
अतिबला १.	३३३१२८
अतिमर्याद १. २. ३.	५३३३३
अतिमान १. २. ३.	५३३३३
अतिमानक १. २. ३.	५३३३३
अतिमुक्त १.	३३३१८८



अतिमुक्तक ]

अतिमुक्तक १.	३१३४६
अतिमृगा १.	३१३१७२
अतियव १.	३१८५२
अतिरिक्त १.२.३.	५१३१३७
अतिविषा २.	३१८१९०
अतिवेल १.२.३.	५१३१३१
अतिशय १.	५१२३
अतिशयित १.२.३.	५१३१३७
अतिसन्धान ३.	५१२३५
अतिसर्जन ३.	५१२१९
अतिसारकिन् १.२.३.	४१३१४६
अतिस्थिर १.२.३.	५१३१७९
अतिहस्तक १.	३१७७०
अतिहास १.	३१८८५
अतिहिंसन ३.	३१७२८
अतीन्द्रिय १.२.३.	५१३१३३
अतीव ४.	८१८४
अतीसार १.	४१३१२९
अत्यन्त १.२.३.	५१३१३१
अत्यन्तीन १.२.३.	३१७१४९
अत्यम्ला २.	३१३१३४
अत्यय १.	७१११
अत्यर्थ १.२.३.	५१३१३१
अत्यर्थस्वादु ३.	३१८१३६
अत्याकार १.	३१६१७१
अत्याधान ३.	५१२१६
अत्याहित ३.	८१३१
अत्यूह १.	३१७८०
अत्रिनेत्रज १.	२११२५
अथ ४.	८१७१४
अथर्वाणि ३.	८१११३
अथो ४.	८१७१४
अदन ३.	४१३१०२
अदभ्र १.२.३.	५१४८५
अदय १.२.३.	५१४२४
अदस् १.२.३.	६१४१
अदातृ १.२.३.	५१४५९
अदिति २.	३१६१९१
" २.	७१२१
अदितिनन्दन १.	१११३

वैजयन्तीकोषः

अदृष्ट ३.	३१७१४
अदृष्टि २.	३१९१०
अद्धा ४.	८१७१२
अद्भुत १.	११२२७
" १.	३१७७५
" १.	३१७७७
" १.२.३.	३१७७८
अद्भर १.२.३.	५१४५०
अद्य ४.	८१८७
अद्यश्चीना २.	४१४१७
अद्रि १.	२११११
" १.	३१२१२
" १.	६११४
अद्रिज ३.	३१२१६
अद्रिजा २.	१११५८
अद्रिधृत् १.	१११२५
अद्रुत १.२.३.	५१४५२
अद्वयवादिन् १.	१११३४
अधः ( -स् ) ४.	८१८१९
अधःपुष्पी २.	३१३१५७
अधम १.२.३.	५१४७५
" १.२.३.	७१४१
अधमर्ण १.२.३.	३१८१९
अधर १.	४१४८७
" १.२.३.	५१४४७
" १.२.३.	७१५१६
अधरा २.	२११६
अधरेद्युः ( -स् ) ४.	८१८१८
अधरोष्ठ १.	४१४८७
अधर्म १.	३१६१६८
अधस्तात् ४.	८१८१९
अधि ४.	८१७१३
अधिक १.२.३.	५१४८५
" १.२.३.	५१४१३१
" १.२.३.	५१४१३७
अधिकर्षिक १.२.३.	५१४५६
अधिका २.	५११४०
अधिकाङ्ग ३.	३१७१५६
अधिकार १.	२१४४१
अधिकृत १.२.३.	३१७१९
अधिष्ठित १.२.३.	८१४२

[ अनमिक

अधिलेप १.	२१४३२
अधिल्यका २.	३१३१९
अधिप १.२.३.	५१४५८
अधिपति १.२.३.	५१४५८
" १.२.३.	८१५२
अधिमू १.२.३.	५१४५८
अधिरोहिणी २.	४१३५१
अधिवास १.	८११६
अधिवासन २.३.	४१३१५६
अधिविज्ञा २.	४१४१३
अधिश्रयणी २.	४१३५४
अधिष्ठातृत्व ३.	१११४८
अधीतवेदक १.	३१६१८
अधीर १.२.३.	५१४१८
अधीश १.२.३.	५१४५८
अधीश्वर १.	३१७२
अधुना ४.	८१८५
अधोऽंशुक ३.	४१३१२१
अधोऽञ्ज १.	१११३३
अधोनापित १.	३१५४१
अधोभुवन ३.	४१११
अधोमुख १.२.३.	५१४१०
अध्यक्ष १.२.३.	३१७१९
" १.२.३.	५१४१३३
" १.२.३.	७१४१
अध्यण्डा २.	३१३१२९
" २.	३१३१७७
अध्ययन ३.	३१६१६३
अध्यवसाय १.	३१६१६७
अध्यस्त १.२.३.	५१४१०४
अध्यापन ३.	३१६१६३
अध्याय १.	३१३१३
अध्युष १.	५११५३
अध्यूढा २.	४१४१३
अध्येषणा २.	३१६१२०
अध्वन् १.	३१४१९
अध्वर १.	३१६१८२
अध्वर्यु १.	३१६१७९
अनंशुमत्फला २.	३१३१७३
अनक्षर १.२.३.	२१४१६
अनमिक १.	३१६१७३

अनङ्ग]

अनङ्ग १.	१११२७
अनङ्गह १.	३१४५२
अनङ्गही २.	३१४४२
अनङ्गवाही २.	३१४४२
अनन्त १.	४११३
" १.२.३.	७१५४
अनन्तशायिन् १.	११११३
अनन्ता २.	२११५
" २.	३१३१२५
" २.	७१५४
अनन्यज १.	१११२८
अनन्यवृत्ति १.२.३.	५१४१२८
अनपराध्य १.२.३.	५१४६३
अनम्बु १.	२१३३२
अनर्गल १.२.३.	५१४१३२
अनर्थक १.२.३.	२१४१८
अनल १.	११२१५
" १.	३१८८१
अनलज्वाला २.	३१३१९७
अनलोपल १.	३१२३७
अनवधानता २.	३१६१७८
अनवरत १.२.३.	५१४१३०
अनवस्कर १.२.३.	५१४६६
अनसू ३.	३१७१२५
अनादर १.	३१६१७१
अनादृत १.२.३.	५१४९५
अनामय ३.	४१४१४२
अनामिका २.	४१४७४
अनारत १.२.३.	५१४१३०
अनालम्बी २.	३१९११८
अनावृष्टि २.	२१२८
अनाशक ३.	३१६१४४
अनाशकिन् १.	३१६१६०
अनि १.२.	३१७१३१
अनिच्छु १.	३१३१२६
अनिमिष १.	८१११३
अनिमेष १.	८१११३
अनिरुद्ध १.	१११२९
अनिर्बद्ध १.२.३.	२१४१७
अनिर्वाप १.	२११३३

शब्दानुक्रमिका

अनिल १.	११२४७
" १.	३१७१६१
अनिलाशन १.	४११६
अनिश ३.	५१४१३०
अनिष्ट १.२.३.	५१४६९
अनी २.	४१३४७
अनीक १.३.	७१५१५
अनीकवत् १.	११२२५
अनीकस्थ १.	८१११४
अनीकिनी २.	३१७५५
" २.	३१७५८
अनु ४.	८१७१६
अनुक १.२.३.	५१४३४
अनुकण्ठी २.	४१३१४१
अनुकम्पा २.	३१६१९२
अनुकर्ष १.	३१७१३३
अनुकर्षण ३.	३१९५३
अनुकल्पक १.	३१६११३
अनुकामीन १.	३१७१५०
अनुकार १.	५१२१७
अनुकूल १.२.३.	५१४१२७
अनुक्रम १.	३१६११३
अनुक्रोश १.	३१६१९२
अनुग १.	३१७१६
अनुचर १.	३१७१६
अनुज १.	४१४३१
" १.२.३.	५१४४
अनुजीविन् १.	३१७१७
अनुताप १.	३१६१८५
अनुत्तर १.२.३.	४१४२५
अनुदात्त १.२.३.	३१६१३७
अनुद्वीप १.	३१११३
अनुनय १.	५१२३८
अनुनासिक १.२.३.	३१६१३७
अनुपद ४.	५१४१२८
अनुपदिन् १.२.३.	७१३२७
अनुपदीना २.	४१३१६२
अनुपमा २.	२११९
अनुपात्यय १.	३१६११४
अनूचान १.	३१६१८२
अनूचीन १.२.३.	५१४१२७

[ अन्तर्धि

अनूप १.२.३.	३११४५
अनूराध १ ब.	२११४४
अनूराधारथि १.	२११११
अनूङ्ग १.	४१३४
अनूजु १.	११३४
" १.२.३.	५१४२२
अनृत १.२.३.	२१४१७
" ३.	३१८३
" ३.	७१५१६
अनेक १.२.३.	८१९५८
" १.२.३ ए.	८१९५८
अनेकप १.	३१७६०
अनेह १.२.३.	५१४२१
अनेहमूक १.२.३.	५१४१३
" १.२.३.	५१४१४
अनेहस् १.	२११५२
अनोकह १.	३१३५
अन्त १.	३१६१७६
" १.२.३.	५११२९
" १.	५१३३१
" १.३.	६१५१
अन्तःकरण ३.	२१६१७३
अन्तःपुर ३.	४१३३६
अन्तक १.	११२३४
अन्तर ३.	२११७
" ३.	२१९३
" १.२.३.	३१८१०
" १.	७१५१
अन्तरगाहन ३.	५१२१४
अन्तरद्वीप १.	३१११२
अन्तरा ४.	८१८१८
अन्तराय १.	५१२४
अन्तराल ३.	२११७
अन्तरिक्ष ३.	२१११
अन्तरिक्षासन ३.	३१६१२९
अन्तरीप ३.	४१३३६
अन्तरीय ३.	४१३१२१
अन्तरेण ४.	८१८४
" ४.	८१८१८
अन्तर्गद्ग ३.	५१२६
अन्तर्धि १.	२११६३



अन्तर्मनस् ]

अन्तर्मनस् १.२.३. पा४३४
अन्तर्यामि १. ३१६१२
अन्तर्वक्षिक १. ३१७२२
अन्तर्वह्नी २. ४१४१६
अन्तर्वह्नि १.२.३. पा४३१
अन्तश्चय्या २. ८१२२२
अन्तस्था २. ३१६३६
अन्तावसायिन् १. ३१५४९
" १. ३१५८७
" १. ३१५१०७
" १. ३१५१०७
" १. ३१५१०७
" १. ३१५१०७
अन्तिका २. ४१५५४
अन्तिकाश्रय १. ४१३१२
अन्तिकेशय १. ४१३१६८
अन्तिम १. २. ३. पा४७७
" १. २. ३. पा४१४०
अन्तेवासिन् १. ८१११३
अन्त्य १. २. ३. पा४७७
" १. २. ३. ६१४१
अन्त्यजाति १. ३१५२
" २. ३१५१२१
अन्त्यजालय १. ३१५३२
अन्त्यवर्ण १. ३१५१
अन्दुक १. ३१७८३
अन्दू २. ६१२११
अन्ध १. २. ३. पा४१३
" १. ६१५६
अन्धक १. ३१६२०१
(इन्धक)
अन्धकसूदन १. १११४३
अन्धकार १. ३. २११६२
अन्धकी २. २११४
अन्धतमस ३. २११६२
अन्धता २. ८१५६
अन्धमेहल १. पा३५६
अन्धस् ३. ४१३७५
अन्धु १. ४१२७
अन्ध १ ब. २१३३२
" १. ३१५३५
" १. ३१५९२

वैजयन्तीकोषः

अन्ध १. ३१५९३
" १. ३१५११७
अन्ध ३. ४१३७५
" १. २. ३. पा४१०७
" ३. ८१६८
अन्धमञ्जिका २. ३१३१२७
अन्नाद १. ११२२७
अन्त्य १. २. ३. ६१४२
अन्त्यतरेद्युः ( -स् ) ४. ८१८८
अन्त्यथा ४. ८१८२०
अन्त्यथाकृति २. पा२२४
अन्त्यथाभाव १. पा२२४
अन्त्यदा ४. ८१८७
अन्त्यनिहति २. २१४४०
अन्त्यपीडन ३. पा२२३
अन्त्यपुष् १. २१३१६
अन्त्यभृत १. २१३२६
अन्त्यलोहक ३. ३१२२८
अन्त्यवाप १. २१३१६
अन्त्यशाखास्थ १. २. ३. ३१६१३
अन्यानुक्त २. ३१६४८
अन्येद्युः ( -स् ) ४. ८१७४
अन्योन्य १.२.३. पा४१२३
अन्वत्त १. २. ३. पा४१२८
अन्वच् १.२.३. पा४१२८
अन्वय १. ४१४४९
अन्ववाय १. ४१४४९
अन्वाहार्य ३. ८१३२
अन्वाहार्यवचन १. ११२२३
अन्विष्ट १. २. ३. पा४१९८
अन्वेषणा २. ३१६१२१
अन्वेषित १.२.३. पा४१९८
अन्वेषट्ट १. २. ३. पा४१२७
अप् २ ब. ४१२३
" २. ८१७५३
अप ४. ८१७२५
अपकार १. पा२१२२
" १. पा२१२३
अपकृष्ट १. २. ३. पा४७१

[ अपरान्त

अपकृष्ट १. २. ३. पा४७५
अपक्रम १. ३१७२१०
अपगम १. पा२१२७
अपगतभक्त १.२.३. पा४१७
अपघन १. ४१४५५
अपचायित १. २. ३. पा४१०५
अपचित १.२.३. पा४१०५
अपचित २. ३१७४४
" २. ८१२१
अपक्षयज्ञ १. ३१६१७७
अपटी २. ४१३१२४
अपटीका २. ३१९८६
अपटु १. २. ३. ४१४१४४
अपतर्पण ३. ४१४१३९
अपत्य ३. ४१४४१
अपत्रपा २. ३१६१९४
अपत्रपिण्ड १.२.३. पा४१४०
अपथ ३. ३११५०
अपथिन् १. ३११५०
अपदंश १. ३१९५२
अपदंशक १. ४१३८६
अपदरोहिणी २. ३१३८४
अपदान ३. ३१७२०९
" ३. ८१३११
अपदालक १. ४११४२
अपदिश ४. २११३
अपदेश १. ८११७
अपध्वंसज १. ३१५१२०
अपध्वस्त १.२.३. पा४७१
अपभरणी २. २११४१
अपभ्रंश १. ८११७
अपरगन्धिक १. ३११८
अपरति २. पा२३६
अपररात्रक १. २११६६
अपराजित १. ८११५०
अपराजिता २. २११५
" २. ३१३१३३
" ३. ३१६२०८
अपराद्धशर १. २. ३. ३१७२१८
अपराध १. ३१७४७
अपराण्त १ ब. ३१३१५

अपराह ]

अपराह १. २११६५
अपरुजा २. १११५९
अपरेद्युः ( -स् ) ४. ८१८८
अपर्णा २. १११५९
अपलाप १. २१३३०
अपलासिका २. ३१६१८१
अपवंश १. ३१७४७७
अपवन ३. ३१३२
अपवरक १. ४१३५१
अपवर्ग १. ८११६
अववर्जन ३. ३१६११९
अपवाद १. २१३३३
" १. ३१७४७७
" १. ८१११४
अपवारण ३. २११६३
अपव्यय १. २१३३०
अपशब्द १. ३१५१२०
" १. २. ३. पा४१२२
अपशाला २. ४१३३८
अपष्ट ३. पा२८
अपष्टु ३. पा२८
अपसर १. पा२३२
अपसर्प १. ३१७२९
अपसव्य १. ११२२८
अपस्कर १. ३१७१३५
अपस्नान ३. ३१६६४
अपहस्तित १.२.३. पा४१५५
अपहार १. पा२१९
" १. ८११३
अपहास १. ३१९८५
अपहित १.२.३. पा४१०४
अपह्व १. २१३३०
" १. ८१११४
अपाङ्गर्भ १. ८१११५
अपाच् ४. पा४१९१
अपाचीन १.२.३. पा४१५१
अपाटव ३. ४११३८
अपादान ३. पा२१९
अपान ३. ४१६६०
" १. ७१११२
अपानिक १. ३१३१२

शब्दानुक्रमणिका

अपाङ्गपात् १. ११२३३
अपामार्ग १. ३१३११५
अपास्पति १. ४१२१०
अपास्पत्त ३. ११२१९
अपाय १. ३१७२१०
" १. पा२२७
अपार १. ४१२१०
अपार्थक १.२.३. पा४१२९
अपावृत्त १. २. ३. पा४१२७
अपाश्रय १. ४१२१६४
अपि ४. ८१७१४
अपिधान ३. २११६४
अपुञ्ज १. ११२२१
अपुनर्भव १. ३१६२३८
अपूप १. ४१३७२
अपेक्षा २. पा२२९
अपोनपात् १. ११२२३
अपौर १. ३१८३३
" १. २. ३. पा४१२२
अप्पति १. ११२४५
" १. ४१२११
अप्पित्त ३. ११२१९
अप्पुष्प ३. ४१२३७
अप्फल ३. ३१३२२०
अप्य ३. ३१८८०
अप्रकाण्ड १. ३१३७
अप्रच्छन्न ३. ३१६१३६
अप्रहत १. २. ३. ३१८१८
अप्रहृष्टक १. २१३१६
अप्सरस् २. ११३११
अप्सरसास्पति १. ११२६
अफला २. ३१३१९
अबद्ध १. २. ३. २१४१८
अबद्धमुख १.२.३. पा४४६
अबल १. ४१३३२
अबला २. ४१४५
अबाल ३. ३१३२२०
अब्ज ३. ४१२३७
" १. ६१५३
अब्जल १. ३१७९६
अब्जारि १. २११२६
अब्द १. २११९०

[ अभिनिष्ठान

अब्द १. २१२११
अब्ध १. ४१२३७
अब्धा २. ४१२३३
अब्धि १. ४१२१२
" १. ८१६१३
अब्धिजा २. ११३३६
अब्धिमण्डूकी २. ४११५६
अब्धिवस्त्रा २. ३१३३
अब्धहृण्य ३. ३१९१०९
अभय ३. ३१३२३२
अभया २. ३१३१७८
अभवनि २. ८१९८
अभि ४. ८१७१६
अभिक १. २. ३. पा४३५
अभिक्रम १. ३१७२०२
" १. पा२१५
" १. पा२१६
अभिव्या २. पा४१२२
" २. ७१२२
अभिव्यान ३. २१३३२
अभिग्रह १. पा२१८
" १. ८११११
अभिचार १. ३१६११७
अभिज १. २. ३. पा४१६१
अभिजन १.२.३. पा४१९
" १. ८११११
अभिजात १. २. ३. ८१४१
अभिज्ञ १. २. ३. पा४१९
अभिज्ञान ३. २१३२९
अभितः ( -स् ) ४. ८१७३१
अभिताडन ३. पा२१९
अभिताप १. ४१३३५
अभिधा २. २१३३१
अभिधान ३. २१३३१
अभिध्या २. ३१६१७९
अभिनय १. ३१९१८
" १. ३१९१८
अभिनव १. २. ३. पा४१८८
अभिनवेश १.२.३. पा२११४
अभिनिष्ठान १. ३१६३७
" १. ८११५०



[ अभिनित ]

अभिनीत १. २. ३. ८४११
अभिपन्न १. २. ३. ८४१२
अभिप्राय १. ३६१७४
अभिभूत १. २. ३. ५४१६७
अभिमन्त्रण ३. ३६१९३
अभिमर १. ८१११२
अभिमर्द १. ३७१२०५
अभिमान १. ३६११६९
” १. ८१११९
अभियाति १. ३७१४२
अभियुक्त १. २. ३. ३८११०
अभियोक्तृ १. २. ३. ३८११०
अभिरूप १. २. ३. ८४११५
अभिलाष १. ३६११८०
अभिलाषुक १. २. ३. ५४१३५
अभिवादक १. २. ३. ५४१४३
अभिवादन ३. ३६१३९
अभिवान्या २. ३४१५१
अभिदांसन ३. २४१३२
अभिदास्त १. २. ३. ३८१११
अभिदास्ति २. ८११२
अभिदाप १. २४१३२
अभिषङ्ग १. ८१११०
अभिषव १. ३७१५१
” १. ८११११
अभिषिक्त १. ३५१५५
अभिषिक्तक १. ३५१६६
अभिषुत ३. ४३१८२
अभिषेक १. ४३११३३
अभिषेणन ३. ३७१२०१
अभिसन्धान ३. ३७११९४
अभिसम्पात १. ३७१२०५
अभिसार १. ३७११६
अभिसारिका २. ३६१४६
” २. ४४११२
अभिहार १. ५१११८
” १. ८१११०
अभीक १. २. ३. ५४१३५
” १. २. ३. ७४११
अभीक्षण ३. ७३१२
अभ्यग्र १. २. ३. ५४१८९

वजयन्तीकोषः

अभ्यग्र १. २. ३. ५४११४०
अभ्यङ्ग १. ४३१११२
अभ्यन्तर ३. २१११७
अभ्यमित १. २. ३. ४४११४४
अभ्यमित्र १. २. ३. ३७११४६
अभ्यमित्रिण १. २. ३. ३७११४६
अभ्यमित्रिय १. २. ३. ३७११४६
अभ्यर्ण १. २. ३. ५४११४०
अभ्यवकर्षण ३. ५१११७
अभ्यवस्कन्द १. ३८११६
अभ्यवस्कन्दन ३. ३७१२०७
अभ्यवहार १. ४३११०२
अभ्यवहृत १. २. ३. ५४११०८
अभ्यागम १. ३७१२०५
अभ्यागारिक १. २. ३. ५४१५२
अभ्यादान ३. ५१११५
अभ्याधान ३. ८३१२
अभ्यान्त १. २. ३. ४४११४४
अभ्यारूढ १. २. ३. ८४१५
अभ्याश १. २. ३. ५४११४०
अभ्यास १. ३७११९५
अभ्यासादन ३. ३७१२०७
अभ्युत्थान ३. ५११२०
अभ्युपगम १. ५११३७
अभ्युपाय १. ५११३७
अभ्योष १. ७५१११
अभ्र ३. ६३११
अभ्रक ३. ३२११५
अभ्रनाग १. १२११२
अभ्रपिशाच १. २११३७
अभ्रपुष्प १. ३३१३१
अभ्रफुल्लक १. ३११६३
अभ्रभव १. २. ३. ५४१११६
अभ्रमु २. २१११९
अभ्रमुप्रिय १. १२११२
अभ्रावकाशिक १. २. ३. ३६११३०
अभ्रि १. ३६११०२
” २. ३८१२९

[ अमृतांशु ]

अभ्रिय १. २. ३. ५४१११६
अमत १. ३. ३६१२०२
अमति २. ७२१२
अमत्र ३. ४३१६२
अमन १. ३३१४९
अमनि २. ७२११
अमर १. ७५११३
अमरा २. ३३११२७
” २. ४३११९
” २. ७५११३
अमरावती २. १२११०
अमरावली २. १२१४३
अमर्त्य १. १३१५
अमर्त्यभवन ३. ५११२
अमर्ष १. ३६११८३
अमर्षिन् १. २. ३. ५४१३२
अमलपालिक १. १२१५३
अमा ४. ८७११२
अमात्य १. ३७१३
” १. ३७११९
अमात्यक १. ३७१२०
अमामंस्या २. २११७१
अमामसी २. २११७१
अमावसी २. २११७०
अमावस्या २. २११७१
अमावासी २. २११७०
अमावास्या २. २११७१
अमित्र ३. ३७१४०
अमुक्त ३. ३७११९६
अमुत्र ४. ८८११५
अमृणाल ३. ३३१२३१
अमृत ३. ३८१२
” ३. ३८११४६
” १. २. ३. ५४१८८
( अवमृत )
” ३. ७५११७
अमृतत्व ३. ३६१२३८
अमृतफल १. ३३११६६
अमृतवल्किा २. ३३११३२
अमृता २ ब. २१११८
अमृतांशु १. २११२६

अमृताशन

अमृताशन १. १११४
अमृतोद्भव १. ३३१२०४
अमोघ १. ४११५२
अमोघा २. ३३१९०
” २. ३८१९७
अम्बक ३. ४४१९४
अम्बर ३. २११२
” ३. ४३१११६
अम्बरीष १. ३. ४३१५६
” १. ८५१३
अम्बला २. ४३११०७
अम्बलोर्ण ३. ४३११०७
अम्बष्ठ १. ३५१४
” १. ३५१६५
” १. ३५१६६
” १. ३५१७०
अम्बष्टा २. ३३११३१
” २. ३३११६३
” २. ३८१७७
अम्बा २. ३१११०६
” २. ४४१२६
” २. ४४१२७
अम्बिका २. ४४१२७
” २. ७२१२
अम्बु ३. ४२१२
” ३. ८१११५
अम्बुक १. ३३११५
” १. ३३११९४
अम्बुकपि १. ४११५४
अम्बुकफ १. ४२११३
अम्बुकान्तार १. १२१४५
अम्बुकुकुट १. २३१२२
अम्बुज १. २३१३२
” १. ३३१६७
” ३. ४२१३९
” ३. ५३१२८
” १. ८६११३
अम्बुजा २. १११३६
अम्बुवृत् १. २२१२
अम्बुवर्धन ३. ४२११३
अम्बुवल्ली २. ३४११६४

शब्दानुक्रमणिका

अम्बुवास १. २११४५
अम्बुवेतस १. ३३१३०
अम्बुसूकर १. ४११५३
अम्बुकृत १. २. ३. २४११८
अम्भस् ३. ४२११
अम्भरा २. ४३१४४
अम्ल १. ५३१२६
अम्लजुण्डी २. ३८११४१
( अम्लजुण्डी )
अम्लतित्तकपाय १. ५३१३५
अम्लदुण्डी २. ३८११४१
अम्ललोणी २. ३३११६३
अम्लवेतस १. ३८११३३
अम्लान १. ३३११८८
अम्लिका २. ३३१८१
अम्लोट १. ३३११९४
अय १. ३६११८९
” १. ३११६१
अयन ३. ७३११
अयन्त्रित १. २. ३. ५४११३२
अयश्शालाका २. ३७११८४
अयस ३. ३२१३
” ३. ८६११६
” ३. ८६११७
अयस्कान्त १. ३२१२८
अयस्कार १. ३१११६
अयाचित ३. ३८१२
अयि ४. ८७११२
अयुगच्छद १. ३३१४६
अयुगम १. २. ३. ५४१२३
अयुत ३. ५४१२८
अयोध्या २. ४३१५
अयोऽनि १. ४३१६५
अयोमणि १. ३२१३७
अयोमल ३. ३२१३६
अयोमुख ३. ३११२०
अयोर्गला २. ४३१४८
अर १. ३७१३५
” १. २. ३. ५४११२४
अरघट्टक १. ४२१२१

[ अरुन्तुद ]

अरणि १. २४१२२
” १. ३३१८६
” २. ३६१५०
” १. २. ३६११०८
अरण्य ३. ३३११
अरण्यजतिल १. ३८१३९
अरण्यमक्षिका २. २३१४५
अरण्यानी २. ३३१२
अरति १. ८१११०
अरति १. ३११५५
” १. ७१११
अरर ३. ४३१४६
” १. ७५११०
अरविन्द ३. ४२११७
अराति १. ३७१४०
अराल १. ३८११११
” १. २. ३. ५४११२४
अरि १. ३७१४०
अरिचिन्तन ३. ३८११४
अरिज ३. ३२१३२
अरिज ३. ४२११६
अरिन् ३. ३७११३४
अरिम १. ३३१६४
अरिमर्दन १. १२११२
अरिमेदक १. ३३१६४
अरिश्रेणी २. २११७७
अरिष्ट १. २३११७
” १. ३३१३२
” १. ३३१२०४
” ३. ३३११९०
” ३. ४३१२०
” १. ४४१३२९
” १. २. ३. ७५११९
अरिष्टताति १. २. ३. ५४१५५
अरिष्टनेमि १. ११११२
अरुण १. ५३११७
” १. २. ३. ७५११६
अरुणा २. ३८१९०
” २. ७१११६
अरुणोपल १. ३२१२०
अरुन्तुद १. २. ३. ५४१११२



[ अरुल ]

वैजयन्तीकोषः

[ अललोहित ]

अरुल ३.	७३१२	अर्थ १.	३१८७३
अरुणकर १.	३१३१५	" १.	६११३
अरुसू ३.	३१७२१७	अर्थना २.	३१६१२०
अक १.	२१११०	अर्थवाद १.	२१६३७
" १.	३१२१७	" १.	३१६३३
" १.	५१४४	अर्थशास्त्र ३.	३१६३०
" १.	८१६२	अर्थसञ्चय १.	३१७४४
अर्कवन्धु १.	१११३५	अर्थिन् १. २. ३.	५१६०
अर्कात्मजा २.	४१२२५	अर्थ्य १.	२१३३६
अर्केष्ट ३.	३१८११३	" ३.	३१२१६
अगल ३.	३१७५१	" १. २. ३.	६१४१
" १. २. ३.	४१३४७	अर्दना २.	३१६७०
" ३.	४१३५०	अर्दनि १.	८१९१०
" १. २. ३.	४१३५०	अर्दित १. २. ३.	५१४१०२
" १. २. ३.	८१९३८	" १. २. ३.	५१४११२
अग्वध १.	३१३४८	अध १.	४१४५६
अर्घ १.	३१८७०	अर्धचन्द्र १.	३१७१८२
" १.	६११५	अर्धगुच्छ १.	४१३१४०
अर्घ्य १. २. ३.	६१४१	अर्धजाह्नवी २.	४१२२८
अर्घ्या २.	३१४४१	अर्धतूर १.	३१९१३९
अर्चना २.	३१६३९	अर्धनाकुल ३.	३१६२१८
अर्चा २.	३१६३९	अर्धनाराच १.	३१७१८१
" २.	६१२१	अर्धपद १.	३११५१
अर्चिष्मत् १.	११२१६	अर्धपद्मासन ३.	३१६२११
अर्चिस ३.	११२२९	अर्धमुकुट १.	१११४७
" २. ३.	६१५६	अधमाणव १.	४१३१३९
" २. ३.	७१५३२	अधमानव १.	३१९६५
अर्जक १.	३१३११९	अधमानुष १.	३१९६५
अर्जुन १.	३१३३९	अधमायूरी २.	३१९१३१
" ३.	३१३२३५	अधमास १.	२११७९
" १.	५१३१०	अधमासतम १. २. ३.	५१११९
" १. २. ३.	७१५५	अधमुष्टिक १.	४१४८०
अर्जुनी २.	४१२२६	अधरात्र १.	८१९१२
" २.	७१५५	अधरात्रक १.	२११६६
" २.	८१३५५	अधरूपक १.	३१८३७
अर्ण १. ३.	२१४२१	अर्धर्च १. ३.	८१९२८
अर्णव १.	४१२१२	अर्धशक्त्य ३.	३१७१८१
अर्णसू ३.	४१२१	अर्धसूची २.	३१६२१५
अर्णिका २.	४१४४	अर्धहस्तक १.	३११५८
अर्ति २.	३१७१७८	अर्धहार १.	४१३१४०
" २.	६१२१	अर्धोत्क ३.	४१३१२२

( १० )

[ अलस ]

शब्दानुक्रमिका

[ अवष्टम्भ ]

अलस १.	४१४१३५	अवक्रय १.	३१८७०	अवनाट १. २. ३.	५१४१२
" १. २. ३.	५१४५५	अवक्षेपणी २.	३१७११४	अवनि २.	३११४
" १. २. ३.	७१५५५	अवखात १.	४११३	" २.	३१३६७
अलसान्द्र १.	३१८४६	" १.	४१२७	अवन्ति १ व.	३१३३७
अलस्फुटिन् १.	३१६११२	अवगति २.	३१६१६४	अवन्तिसोम ३.	४१३८२
अलात ३.	११२३२	अवगाह १.	४१३६१	अवन्ती २.	४१३९
अलावू २.	३१३१६७	अवगीत १. २. ३.	३१६१२	" २.	४१३२७
अलि १.	२१३४२	" १. २. ३.	८१५१	अवन्ध्य १. २. ३.	३१३८
अलि (-न्) १.	४१३३२	अवग्रह १.	८११४	अवपात १.	३१७५२
अलिक ३.	४१४९६	अवग्राह १.	२१२४	अवभ्रत १. २. ३.	५१४१२
अलिङ्ग ३.	३१६१६२	अवघात १.	४१३६६	अवम १. २. ३.	५१४७५
अलिङ्गर ३.	४१३५६	अवचूड १.	३१७१३४	अवमर्द १.	३१७२०७
अलिन् १.	२१३४२	अवच्छेद १.	३१६३३	अवमानना ३.	३१६१७२
" १.	८१६१४	अवज्ञा २.	२१४३०	अवमुण्ड १. २. ३.	३१६६६
अलिन्द १.	४१३४५	" २.	३१६१७२	अवयव १.	४१४५५
अलिप्रिय १.	८११५९	अवज्ञात १. २. ३.	५१४९५	अवर ३.	३१७७८
अलीक १. २. ३.	२१४१७	अवट १.	२३१४	( अपर )	
" ३.	७३३२	" १.	३११५४	अवरक्षणी २.	३१७११२
अलीमक ३.	३११५७	" १.	४११३	अवरज १.	४१३३१
अलोचक ३.	४१३११४	अवटीट १. २. ३.	५१४१२	" १. २. ३.	५१४४
अल्प १.	११२५३	अवटु १. २.	४१४८५	अवराविला २.	२११७६
" १. २. ३.	५१४१३६	" १. २.	८१६१९	अवरीण १. २. ३.	५१४११०
अल्पतनु १. २. ३.	५१४५५	अवटोमनहस्त १.	४१४८१	अवरं १.	३१५६०
अल्पतुम्बी २.	३१३१६८	अवतंस १.	८११५९	अवरोध १.	४१३३६
अल्पपच १.	३१३१२०	अवतमस ३.	२११६३	अवरोह १.	३१३१२
अल्पपल्लव ३.	४१२६	अवतरण ३.	८१३१३	" १.	८११५
अल्पपुष्प ३.	३१३७०	अवतार १.	४१२२०	अवरोहक २.	३१८३३
अल्पफला २.	३१३१७५	" १.	५१३२३	अवर्ण १. ३.	२१४३२
अल्पमात्र १.	३१३१२१	" १.	८११५	अवर्णवाद १.	२१४३३
अल्पहरिण १.	३१४१३	अवतारण १. २. ३.	३१९१४१	अवलम्ब १.	४१४६७
अवकटा २.	३१९८६	अवतीर्ण १. २. ३.	५१४९५	अवलेप १.	८१११५
अवकर १.	४१३५२	अवतोका २.	३१४४७	अवलोक १.	३१९९०
अवकरालय १.	३१६१११	अवदात १.	५१३१०	अवलोक १.	८१११६
अवका २.	३१६६०	" १. २. ३.	८१४३	अवलोलुक १.	५१४५२
" २.	४१२४८	अवदारण ३.	३१८२८	अवलुगुज १.	३१३१०८
" २.	४१२४९	अवदाह १.	३१३२३२	अवश्यम् ४.	८१८१२
अवकाश १.	२११७	अवद्य १. २. ३.	५१४७५	अवश्याय १.	२१२९
अवकीर्णिन् १. २. ३.	३१६१३३	अवधारणा २.	२१४४०	" १.	८१९१३
अवकील १.	३१८२६	अत्रधि १.	४११३	अवष्टम्भ १. २. ३.	८१४४
अवकेशिन् १. २. ३.	३१३८	अवधीरण ३.	३१७१३	अवष्टम्भ १.	३१७२०८
अवक्र १. २. ३.	५१४१२४	अवध्वस्त १. २. ३.	८१४४	" १.	८११४

( ११ )



अवसन्धिका ]

अवसन्धिका २.	३६१५०
अवसर १.	५२१७
अवसाद १.	३६१९१
अवसादनी २.	३६१९१
अवसित १. २. ३.	८१३३
अवसुधिरा २.	४१४८४
अवस्कन्द १.	३७२०३
" १.	३८१७
अवस्तर १.	८११५५
अवस्था २.	५२२२
अवहिस्था २. ३.	३९१८६
अवहेल ३.	३६१७२
अवाक ४.	८८१९९
अवाक्श्रुति १. २. ३.	५४१३३
अवाच् १. २. ३.	५४१३४
" ४.	५४१९१
अवाची २.	२११५
अवाचीन १. २. ३.	५४१९१
अवाच्य १. २. ३.	२४११६
अवान्तरदिशा २.	२११३३
अवार ३.	४२१३२
अवि १.	३४१६४
" १.	५४१४४
" १. २.	६५१४४
अविदूस् ३.	३८११४७
अविन १.	७११९९
अविनीत १. २. ३.	५४१३१
अविनीता २.	४११३२
अविमरीस ३.	३८११४७
अविरत १. २. ३.	५४१३०
अवलम्बित १. २. ३.	५४१९४
" १. २. ३.	५४१९५
अविला २.	३४१६५
अविशेष १.	३६१२०५
अविष १. २. ३.	७५१२२
अविषाद १.	३७१२८
अविषोड ३.	३८११४७
अविस्तर १.	२४१४०
अवीची १.	१२१३७
अवीरा २.	४११२०
अव्यक्त ३.	३६१६२
" १. २. ३.	७५११३

वैजयन्तीकोषः

अव्यय १.	३६१९१
अव्यथा २.	३६१७८
" २.	३८१८९
अव्यथिष १. २.	८१५१
अव्यय १. ३.	१११४८
" ३.	८१७१
अव्यादा २.	३८१५८
अशन ३.	४३१७५
" ३.	४३१७२
अशनाया २.	३६१८२
अशनायित १. २. ३.	५४१३६
अशनि १. २.	२२१३६
" १. २.	२२१३६
" १. २.	७५१५५
अशिख १. २. ३.	३६१६
अशित १. २. ३.	५४११०७
अशिरस् १.	३७१२१६
अशिरस्क १.	८१११६
अशिशिषा २.	३६११८२
अशिश्वी २.	४११२०
अशीतांशु १.	२११११
अशीति २.	५११२७
अशूर १. २. ३.	३७११४७
अशोक १.	३६१४०
अशोकवनिता २.	१२१४४
अशोका २.	३८१८६
अशोभनस्वर १. २. ३.	५४१४८
अश्मकुट्टक १.	३९१२२
अश्मगर्भ ३.	३२१३८
अश्मज ३.	३२११६
अश्मन् १.	३२१८
" १.	३६११०२
अश्मन्त ३.	४३११०४
अश्मन्तक १.	३६१९४
अश्मन्तिका २. ३.	८११३२
अश्मरी २.	४११२८
अश्मरीरिपु १.	३६१४१
अश्ममारक १.	३२१३४
अश्र १.	४३१५२
अश्रान्त १. २. ३.	५४१३०

[ अष्टावक्र

अश्रि २.	४३१५२
अश्रु ३.	३९१८७
अश्रुष्टार्थ १. २. ३.	२४११७
अश्व १.	१११३०
" १.	३७१९०
" १.	८६११७
अश्वकन्द १.	३६१२८
अश्वकर्ण १.	३६१३८
अश्वखुरी २.	३६१३४
अश्वगन्धी २.	३६१२८
अश्वतर १.	३७१०८
अश्वस्थ १.	३६१२७
अश्वपण्य १.	३५११२
" १.	३५१७१
अश्वपोत १.	३७१०७
अश्वप्रिय १.	३८१५२
अश्ववडव १ द्वि.	८११५१
अश्वमारक १.	३६१९२
अश्वमुख १.	१३१३
अश्वयुज २.	२११४२
अश्वरिपु १.	३६१९२
अश्ववाल १.	३६१२७
अश्वार २.	३७१०७
अश्वारि १.	३६१८
अश्विन् १ द्वि.	१३१२
अश्विनी २.	२११४२
अषाढा १ व.	२११४३
अष्टकर्मपरिभ्रष्ट १.	१११३५
अष्टग्रास १. २. ३.	३६१३३
अष्टपाद १.	३६१३२
अष्टम १. २. ३.	५११२०
अष्टमक १. २. ३.	५११५०
अष्टमकालभुज १. २. ३.	३६१२६
अष्टमङ्गल १.	३७१९३
अष्टमान ३.	५११५३
अष्टमिका २.	५११५०
अष्टवर्ग १.	३७१९
अष्टाङ्ग १.	३६१२०८
अष्टापद १. ३.	८१५२
अष्टावक्र १.	३६११५७

अष्टी ]

अष्टी २.	३६११६
" २.	६२११
अष्टीला २.	४१११३
अष्टीवत् १. ३.	४११५९
असक्त १. २. ३.	५४१३०
असङ्ग्रह १.	३६१२०९
असत् ३.	३६१६२
असती २.	४११९
असतीसुत १.	४११४३
असद्व्येत १. २. ३.	३६१११
असन १.	३६१३९
असम्पुष १.	१११५५
असम्पुष १. २. ३.	८११४
असहन १.	३७१४१
असार १. २. ३.	५४१७६
असि १.	३७१५८
" १.	३७१५९
" १.	८६११६
असिक्ती २.	३७१३९
असित १.	२११३५
" १.	२११७९
" १.	३९१४९
" १.	५३१११
असितानन १.	३६१४०
असिद १.	३८१३०
असिधावक १.	३९११५
असिधेनुका २.	३७१६३
असिपत्रिका २.	३६१९७
असिपुत्री २.	३७१६३
असिप्लव ३.	४११५५
असु १ व.	३६१२०३
असुर १.	१३१९
" १.	३७१६१
" १.	३८१२४
असुरभि १.	५३१४७
" १.	५३१४८
असुराचार्य १.	२११३४
असुराह्वय ३.	३२१२८
असुराचिका २.	३८१२९
असूया २.	३६१९८४
असूर्जन ३.	३६११७२

शब्दानुक्रमणिका

असृक्कर १.	४११०४
असृग्धरा २.	४११०३
असृज् ३.	४११०६
असोड १.	३७१६९
असोल १.	५३१३६
अस्त १.	३२१६
" १. २. ३.	५४१९७
अस्तम् ४.	८८१६
अस्तमयाचल १.	३२१६
अस्तिमत् १. २. ३.	५४१५७
अस्तु ४.	८७१३३
अस्त्येय ३.	३६१२०९
अस्त्र ३.	३७१५५
अस्त्रग्राम १.	५१११७
अस्त्रजीवन १. २. ३.	३७१४३
अस्त्रशासन ३.	३६१३०
अस्त्रिन् १. २. ३.	३७१४३
अस्थान ३.	३७१५६
" १. २. ३.	४२११९
अस्थि ३.	४११०८
" ३.	४११०८
अस्थिखाद १.	३६१४०
अस्थितेजस् ३.	४१११०
अस्थिपञ्चर ३.	४१११४
अस्थिमत् १.	३६१३०
अस्थिर १. २. ३.	५४१६८
अस्थिप्रेमन् १. २. ३.	५४१२६
अस्थिसङ्घात १.	३६१३०
अस्थिसम्भव ३.	४१११०
अस्थिस्नेह १.	४१११०
अस्पन्दनस्थिति २.	३७१८९
अस्फुटभाषण १. २. ३.	५४१४७
अस्मद् १. २. ३.	८११४९
अस्मिता २.	३६१६९
अस्त्र ३.	४११०५
" १. ३.	६५१७
अस्तु ३.	३९१८७
अस्वप्न १.	१११३३

[ आ

अह ४.	८७१२२
अहंयु १. २. ३.	५४१२९
अहङ्कार १.	३६१६९
अहङ्कारिन् १. २. ३.	५४१२९
अहत ३.	४३१२०
अहन् ३.	३९१५६
अहमहमिका २.	३६१७१
अहम्पूर्विका २.	३६१७०
अहर्गण १.	३६१८४
अहर्पति १.	२१११२
अहर्मुख ३.	२११६८
अहस्कर १.	२१११२
अहस्तान १.	१२१२६
अहह ४.	८७१३२
अहार्य १.	३२१३
अहि १.	४११५
" १.	६११५
अहिंसा २.	३६१२०९
अहिक १.	४११४३
अहिच्छत्र १ व.	३९१२६
" ३.	३६१५३
अहित १.	३७१४०
अहिनिस्वयनी २.	४११२१
अहिपताक १.	४१११८
अहिपृष्ठ ३.	३७१५३
अहिभय ३.	३७११५
अहिर्बुध्न्य १.	१११४२
अहिमतिन् १. २. ३.	३६१३१
अहीन १.	३६१८५
" १.	३६१८५
अहीरिणि २.	४११२०
अहेरु २.	३६१४२
अहो ४.	८८११६
अहोत्र ३.	३६१९६
अहोरात्र ३.	२११५५
अह्नाय ४.	८८११
आ	
आ ४.	८७११
" ४.	८७१२



[ आ ]

वैजयन्तीको

[ आख्य ]

आः ४.	८७१२	आख्यान ३.	२१४३८
आकम्पित १.२.३.	५४१९५	आख्यायनी २.	२४१२५
आकर १.	३२११०	आख्यायिका २.	२४१३८
" १.	५११२	आगन्तु १.	३१६६८
" १.	७११९	आगम १.	७११८
आकर्णक १.२.३.	४३११०८	आगस् ३.	३१७४७
आकर्णकर्षण ३.	३१७१९१	" ३.	८३११६
आकर्ष १.	३१७७२	आगू (-अगुर्) २.	३१८४७
" १.	७११३	आग्निमारुत ३.	३१६१५२
आकलन ३.	८३१३	आग्नीध्री २.	३१६१४
आकल्प १.	४३१३२	आग्नेय ३.	२११९०
आकार १.	५१२२२	" १.	२११९०
" १.	७११७	" १.	२११९२
आकारगोपना २.	३१९८६	" ३.	३१६६५
आकारणा २.	२४३३०	" १.	३१६१५२
आकालिकी २.	२१२४	" ३.	४१४१०६
आकाश १. ३.	२११२	" १. २. ३.	५१४११८
आकीर्ण १.२.३.	५४१११०	आग्नेयी २.	२११४
आकुल्य ३.	४१४१३८	" २.	२११९१
आकूत ३.	३१६१७४	आग्रह १.	७११२
आकूति २.	३१६१७४	आग्रहायणिक १.	२११८१
आकृति २.	७२१२	आग्रहायणी २.	२११३८
आक्रन्द १.	७११५	" २.	२११७४
आक्रम १.	५२११६	आग्रायणी २.	२११७४
आक्रीड १.	३१३३	आघट्टलिका २.	३१७१२५
आक्रोश १.	१४३३२	आघात १.	७११८
आचारण ३.	२४३३४	आघारण १.	३१६१००
आचारित १.२.३.	३१८११	आङ्गलौकिक १.	३१६१९८
आक्षिप्त १. २. ३.	५४१६७	आङ्गिक १. २. ३.	३१७९९
आक्षेप १.	७१११०	" १. ३.	४३३१२८
आक्षेपक १.	४४१३३६	आङ्गिरस १.	२११३३
आक्षोड १.	३३३१४६	आचाम १.	४३३७८
आखण्डल १.	१२१६	आचार १.	३१६११५
आखनिक १.	३१४६	आचारा २.	११११६
आखु १.	४११३१	आचार्य १.	३१५५६
" १.	६११७	" १.	३१६२२
आखुभुज् १.	३१४७१	" १. २.	८११४४
आखुयान १.	१११५४	आचार्या २.	४१४२३
आखेट १.	३१९३९	आचार्यानी २.	४१४२२
आखोर १.	२११८८	आचित ३.	५११६२
आख्या २.	२४३३१	" १. २. ३.	५४१११५

( १४ )

आच्छादन ३.	२११६४
" ३.	४३१११६
" ३.	८३३३
आच्छुरित ३.	४३१११२
आच्छुरितक ३.	३१९१८४
आच्छोटन ३.	३१९३८
आजक ३.	५१११०
आजान ३.	५२११
आजानज १.	१११६
आजानेय १.	३१७९४
आजि २.	६२३३
आजीव १.	३१८११
" १. ३. ३.	५४११६
( आजिल )	
आज्ञा २.	३१७३४
" २.	३१७४८
आज्ञागणिका २.	३१७३४
आज्य ३.	३१८१३८
" ३.	५११५१
" ३.	६३३२
आज्याधिवासन ३.	३१६९०
आज्याधिभ्रयण ३.	३१६९०
आज्यावेक्षण ३.	३१६९०
आटक १.	२३३१८
आटरूष १.	३३३१०१
आटि ३.	२३३११
आटोप २.	३१९१८९
आडम्बर १.	३१९१३८
" १. ३.	८१५४
आडिण्डिक ३.	३१६६
आडक ३.	४३३४१
" १.	५११६३
आडकिक १.२.३.	३१८२१
आडकी २.	३२११७
" २.	३१८४८
आडा २.	४११३३
आदिक ३.	४१११०८
आढ्य १. २. ३.	५४१५७

[ आणवीन ]

शब्दानुक्रमणिका

[ आभिगामिकगुण ]

आणवीन १.२.३.	३१८२०
आतङ्क १.	७११९
आतञ्जन ३.	३१८१४४
" ३.	८३३४
आतनायिन् १.२.३.	५४१६८
आनति २.	२११६२
आतप १.	१२३३१
" १.	२११२२
आतपत्र ३.	३१७१६
आतर १.	४२११८
आताना २.	३३११८६
आतपिन् १.	२३३२८
आताल १.	३१७११३
आति २.	२३१११
आतिथ्य १.२.३.	३१६६७
" १.	३१६६८
आतिवाहिक १.	१२३३८
आतुर १. २. ३.	४१४१४४
आतोद्य ३.	३१९११४
आत्तगन्ध १.२.३.	५४१६७
आत्मगुप्ता २.	३३३१२९
आत्मघोष १.	२३३१५
आत्मज १. २.	४१४३९
आत्मन् १.	६११६
आत्मनीन १.	८१५३
आत्मभू १.	७११६
आत्मरभरि १.२.३.	५४१५०
आत्मयोनि १.	८१११६
आत्मसम्बन्ध १. १११४८	
आत्माशिन् १.	४११४१
आत्मीय १.२.३.	३१७४३
आत्रेय १.	४१४१०४
आत्रेयी २.	४१४१५
आथर्वण ३.	३१६३७
" ३.	४३३२०
आदर्श १.	४३३१६२
आदान ३.	३१७१८९
आदाली २.	३३३१६२
आदि १.	५४१७६
आदितेय १.	१११३
आदित्य १.	११३३

( १५ )

आदित्य १.	११११९
" १.	१३३८
" १.	२१११५
आदिदेव १.	१११५
आदिम १. २. ३.	५४१७६
आदीनव १.	५२३४
आहत १. २. ३.	७१४२
आदेशिन् १.	३१७२५
आद्य १. २. ३.	५४१७६
" १. २. ३.	६१४३
" १.	६१५७
आद्यून १. २. ३.	५४१५१
आधान ३.	३१६६९
आधानिक ३.	३१६३
आधार १.	४२३६
" १.	७११५
आधि १.	६११७
आधिक १.	३१८७०
आधूत १. २. ३.	५४१९५
आधेय ३.	३१६६९
आधोरण १.	३१७८८
आध्यात्मिक १.	३१६२०८
आन १.	३१६२०४
आनक १.	३१९१३३
" १. ३.	३१९१३४
आनकदुन्दुभि १. १११२६	
आनत १. २. ३.	५४१८३
आनद्ध ३.	३१९११५
आनन ३.	४१४८६
आनन्द १.	३१६१८८
आनन्दन ३.	३१६१८६
आनन्दना २ ब.	२१११८
आनर्त १.	७११४
आनाय १.	३१६७
" १.	७११४३
आनाह १.	३१६६१
" १.	४१४१२८
" १.	५२३५
आनील १.	३१७१००
आनुपूर्वी २.	३१६११४
आनुपूर्व्य ३.	३१६११३
" १. ३. ३.	३१७४८



[ आभीर ]

आभीर १.	३१५६
" १.	३१५९९
" १.	३१९२८
आभीरपल्ली २.	३१९३२
आभील ३.	१२३९
" १. २. ३.	३१९७९
" १. २. ३.	७४१२
आभोग १.	७११७
आभ्यन्तरवृत्त ३.	३१९७४
आम् ४.	८८१७
आम १.	४११३८
" १.	६१५७
आमण्ड १.	३१३६५
आमनस्य ३.	१२३९
आमन्त्रण ३.	२४३१
आमन्त्रणिक ३.	३६३३
आमपात्र ३.	३६६४
आममांसक १.	५३७६
आमय १.	४११३८
आमयाचिन् १. २. ३.	४११४५
आमलक १. २. ३.	३१३७७
आमिता २.	३६१८
आमिष १.	३७४६
" ३.	४११०७
" १.	४१११४
" ३.	५३५५
आमिषाशिन १. २. ३.	५४५०
आमिषी २.	३८१००
आमुक्त १. २. ३.	३७१४२
आमुष्यायण १. २. ३.	५४५३
आमोद १.	५३५०
" १.	७११७
आम्नाय १.	७११३
आम्न ३.	३३२१
" १.	३३२५
आम्नात १.	३३३१
आम्नेडन ३.	५२१९
आम्नेडित १. २. ३.	२४१२२

वैजयन्तीकोषः

आय १.	३७४४
आयत १. २. ३.	५४८१
आयति २.	७२३
आयत्त १.	३१९४
" १. २. ३.	५४२८
आयल्लक ३.	३६१७८
आयशूलिक १. २. ३.	५४७४
आयस्त १. २. ३.	७४३३
आयान ३.	३७११६
आयाम १.	३६१६७
" ३.	३७१९१
" १.	५२५५
आयास १.	३६१९३
आयु १.	१२३५
आयुध २.	३७१५७
" २.	३७२०६
आयुध ३.	३२३३
" ३.	३७१५७
" ३.	८६१९
आयुधाय २.	३७१७२
आयुधिक १. २. ३.	३७१४३
आयुधीय १. २. ३.	३७१४३
आयुर्वेद १.	३६१२९
आयुर्वेदिन् १. २. ३.	४११४४
आयुस् ३.	३७२२१
" ३.	६३५
आयोग १.	७११४
आयोगव १.	३१२२
" १.	३१२९
" १.	३१८२
" १.	३१८६
आयोधन ३.	३७२०४
" ३.	८३४
आर १.	३१३१
" १.	३२२६
आरकूट १. ३.	३२२६
आरक्ष १.	३७१८
" १.	३७७४
आरग्वध १.	३३४८
आरट्ट १ व.	३१३३

[ आर्य ]

आरट्ट १. २. ३.	३११४६
" १.	३७९६
आरणिन् १.	३३१३
आरति २.	५२३६
आरनाल ३.	४३८१
आरभट १. २. ३.	३७१४७
आरभटी २.	३९१०१
आरम्भ १.	३९१४०
" १.	५२१५
आरलु १.	३३६९
अरव १.	२४३
आरा २.	३९१३
आराग्र ३.	३७१८५
आरात् ४.	८७१६
आराधन ३.	३६३८
" ३.	८३४
आराम १.	३३३
आरालिक १. २. ३.	४३९२
आराव १.	२४३
आरु १.	३३१५४
" १.	५३२४
आरूढ १.	३८५२
आरेवत १.	३३४८
आरोग्य ३.	४११४२
आरोपित १. २. ३.	५४१०४
आरोह १.	३७८८
" १.	७११७
आरोहण ३.	४३५१
" ३.	५२१५
आरवध १.	३३४८
आर्जिक १. २. ३.	४१३३
आर्तगल १.	३३१९०
आर्तव ३.	४११६
आर्ति २.	३६१८७
" २.	३७१७८
आर्द्र १. ३.	३३२१४
" १. २. ३.	५४१०७
आर्द्रक १. ३.	३३२१४
आर्द्रा २.	२१४०
आर्य १.	३७२३
" १.	३९१०६

[ आर्य ]

आर्य १. २. ३.	५४६१
" १. २. ३.	६४३
आर्यक ३.	३६६६
आर्यपुत्र १.	३९१०६
आर्या २.	११५८
आर्यावर्त १.	३१२३
आर्यभ ३.	३११९९
आर्यभी २.	२११४७
आर्यभ्य १. ३.	३४५५
आल ३.	३२१४
आलगन्धिका २.	३७३४
आलम्भ १.	८११०
आलय १.	४३१८
आलवाल ३.	४२१०
आलस्य ३.	३६१४८
" १. २. ३.	५४५५
आलान ३.	३७८२
" ३.	७३३
आलाप १.	२४२३
आलावर्त १.	४३१५९
आलास्य १.	४२५३
आलि १.	४१३२
" २.	५१२४
" २.	६२३
आलिङ्गन ३.	४३१७०
आलिङ्ग्य १.	३९१२९
आलिन्द १.	४३४५
आली २.	३८२६
" २.	४४२५
आलीढ ३.	३७१८७
आलु २.	४३५७
आलुक १.	५३४४
आलेख्यलेखा २.	३९२४
आलेप १.	४३१४७
आलोक १.	१२३१
" १.	७११८
आवतारिक १.	४११४३
आवन्त्य १.	३५५३
" १.	३५१०१
आवपन ३.	४३६२
आवर्जन ३.	५२४०

शब्दानुक्रमणिका

आवर्त १.	४२३०
आवर्तन ३.	३९१११
" ३.	५२४१
आवलि २.	५१२४
आवसथ १.	४३१८
आवसथ्य १.	१२२५
" १.	४३२७
आवसित १. २. ३.	३८६७
आवाप १.	३७१४
" १.	७११६
आवापक १.	४३१४४
आवाल ३.	४२१०
आवालि २.	४३३५
आवाह १.	४२३
आविः (-स्) ४.	८८१८
आविक १.	४३१२९
आविद्ध १. २. ३.	५४१२३
" १. २. ३.	७४२
आविध १.	३९१८
आविल ३.	४२४
आविश १.	३६१६१
( आवश )	
आवृत्त १.	३९१०७
आवृत् २.	३६११३
" २.	३६११४
आवृत्त १.	३५५
" १.	३५९०
" १. २. ३.	५४९६
आवेग १.	३९१८९
आवेशन ३.	४३२२
आवेशिक १.	३६६८
आवेष्टक १.	४३१४
आशंसितृ १. २. ३.	५४४३
आशंसु १. २. ३.	५४४३
आशङ्का २.	३६१७६
आशय १.	३६१७४
" १. २. ३.	५४११४
" १.	७५१७
आशर १.	१२४१

[ आषाढ ]

आशा २.	२११२
" २.	६२३
आशाबन्ध १.	४१३५
आशासन ३.	३६१२०
आशितम्भव १.	८५२५
आशिर १.	१२१९
" १.	७१३
आशिस २.	६२२
आशीविष १.	४१५
" १.	४११३
आशु ३.	३२२२
" १. २. ३.	५४१२५
आशुग १.	१२४९
" १.	७१९
आशुशुक्ति १.	८१५०
आशोचिनी १.	३११६
आश्वर्य १. २. ३.	३९७८
आश्रम १. ३.	४३२६
" १. ३.	७५१६
आश्रय १.	३७३
आश्रयाश १.	१२१७
आश्रव १.	५२४
" १.	५२३७
" १. २. ३.	५४४९
आश्लेष १.	४३१६९
आश्लेषा २.	२१३३
आश्व ३.	५११०
आश्वकिनी २.	२१४२
आश्वस्थ ३.	३३२२
आश्वयुज १.	२१८५
आश्वस १.	३६२०५
आश्विक १.	३५७१
आश्विन १ द्वि.	१३३६
" १.	२१८५
आश्विनी २.	२१७६
आश्विनेय १ द्वि.	१३३६
आश्वीन १. २. ३.	३७१०८
आश्वीय ३.	५११०
आषाढ १.	२१८४
" १.	३२३



[ आषाढ ]

आषाढ १.	३१६१८
आषाढी २.	२११७६
आस १.	३१७१७२
" १.	५३२८
आसक्त ३.	२११६२
आसङ्ग ३.	३१११३
" १.	३१७१५९
आसन ३.	३१६२१०
" ३.	३१७१६
" ३.	४३११६४
" ३.	५३१४०
" ३.	७३३३
आसना २.	५२११४
आसन्दी २.	४३११६०
" २.	४३११६४
आसन्न १. २. ३.	५३११४१
आसव १.	३३२२१७
" १.	३११४७
" १.	३११४९
" १.	३११५१
" १.	३११५२
आसादित १. २. ३.	५३११९
आसार १.	३१७२०१
" १.	७११२
आसारी २.	३११४२
आसाविक १.	३१५११२
आसिक ३.	३१७१९४
आसीन १. २. ३.	५३११०
आसुतीवल १.	३११४४
" १.	८११५०
आसुर १.	२३११७
" ३.	३२३३४
" १.	३१८१२४
" ३.	४३११०५
आसुरी २.	३१८४२
आसूति २.	३११५१
आसेचनक १. २. ३.	५३१६५
आस्कन्दन ३.	३१७२०३

वैजयन्तीकोषः

आस्कन्दित १. २. ३.	३१७११८
आस्कन्दितक १. २. ३.	३१७१२०
आस्तरण ३.	४३११६६
आस्ताव १.	३१६११०
आस्तिक १. २. ३.	५३१३७
आस्था २.	३१८१३३
" २.	५२१३७
" २.	६२२२
आस्थान ३.	३१८१४४
आस्थानगृह ३.	४३२२०
आस्थानी २.	३१८१४४
आस्पद ३.	७३३३
आस्फोटनी २.	३१९१८
आस्फोट १.	३३२२९
आस्फोता २.	३३११३४
" २.	३३११८५
आस्य ३.	४३१८६
" ३.	६३३३
आस्या २.	५२११४
आस्र ३.	३१९१८७
" १.	६१५७
आस्वाद्य ३.	४३१९१
आहत १. २. ३.	२३११७
" १. २. ३.	७३३३
आहति २.	३१६१८९
आहर १.	३१६२०४
आहव १.	३१७२०५
आहवनीय १.	१२१२४
आहार १.	७११८
आहार्य ३.	३१८११४
" १. २. ३.	३१९१९९
" ३.	४३३७६
आहाव १.	४२१९
आहिक १ व.	२३१३७
" १.	३१६१५४
आहिण्डिक १.	३१५४४
(आहिण्डक)	
" १.	३१५९३

[ इच्छु ]

आहिताग्नि १	३१६१७३
आहितुण्डिक १.	४११२५
आहुक ३.	४३३८
आहुति २.	३१६१६९
आहोपुरुषिका २.	३१६१७०
आहोस्वित् ४.	८१८२
आहिक १.	३१६३२२
आह्वय १.	२३१३१
आह्वा २.	२३१३१
आह्वान ३.	२३१३१
इ ४.	८१११०
इच्छु १.	३३२२२५
इच्छुगन्धा २.	३३११४१
इच्छुगन्धिका २.	३३११९६
(गण्डिका)	
" २.	३३२२२७
इच्छुपालिका २.	३३२२२६
इच्छुभेद १.	३३२२२६
इच्छुर १.	३३११०१
इच्छुविदारिकार. ३.	३३११९६
इच्छुशाकट १. २. ३.	३१८२२
इच्छुशाकिन १. २. ३.	३१८२२
इच्छुसुनिका २.	४३२२५
इच्छुदक ३.	३११११
इच्छुवाकु १.	३३१४९
" २.	३३११६८
इक्ष १.	५२२२२
इक्षत् १. २. ३.	५३१६१
इक्षाल १.	१२३३२
इक्षित ३.	५२२२२
इक्षुद १. २. ३.	३३३१८८
इक्षुदी २.	३३३१३९
इक्षुदा २.	३३११७९
" २.	३३११८२
इक्षुवासु १.	१२१५८
इच्छु २.	४३१११

[ इज्जल ]

इज्जल १.	३३३६७
इज्ज्या २.	३३३३१
" २.	६२२४
इज्ज्याशील १.	३३३७५
इज्ज्वर १.	३३३५३
इडा २.	६२२३
इतर १. २. ३.	५३२२२
इतरथा ४.	८१८२०
इतरेतर १. २. ३.	५३१२३
इतरेषुः (-स्) ४.	८१८१८
इति ४.	८१७१७
इतिकथा २.	८२२३
इतिह ४.	२३३३८
" ४.	८१८२१
इतिहास १.	२३३३८
इत्थम् ४.	८१८२०
इत्थम्भाव १.	५२२२३
इत्थरी २.	४३१९
इत्वास १.	३३३१९९
इदानीम् ४.	८१८१५
इद्ध ३.	२३१२२
इध्म १. ३.	२३११८८
" १.	३३३१९६
इध्मप्रोक्षण ३.	२३३१९०
इध्मवाहक १.	३३३१५७
इन १.	६१५७
इन्दिन्दिर १.	२३३३३
इन्दिरा २.	११३३६
इन्दीवर ३.	४२३३५
इन्दीवरी २.	३३३१४२
इन्दु १.	२३१२५
" १.	५३१५२
" १.	८३३३
" १.	८३३३
इन्द्र १.	१२३११
" १.	६३१८
" १.	८३३३
इन्द्रक ३.	४३३२०
इन्द्रकोश १.	४३३३२
इन्द्रच्छुद १.	४३३३८
इन्द्रजाल ३.	३३३३३

शब्दानुक्रमणिका

इन्द्रजित् १.	१२३४४
इन्द्रदारद १.	४३१२४
इन्द्रधनुस् ३.	२३३३
इन्द्रनील ३.	३२३४०
इन्द्रभगिनी २.	११३६२
इन्द्रमद १.	४३३३६
इन्द्रमह १.	३३३६९
इन्द्रयव १. ३.	३३३७३
इन्द्रलुप्तक ३.	४३३२६
इन्द्रवस्ति १.	४३३५७
इन्द्रवारुणी २.	३३३७२
इन्द्रवृद्धि १.	३३३९८
इन्द्रव्रतादिक ३.	३३३६
इन्द्रसुरस १.	३३३११८
इन्द्रस्वमृ २.	११३६२
इन्द्राणी २.	१२३११
इन्द्राणीमह १.	३३३५७
इन्द्रायुध ३.	२३३३
" १.	३३३९२
इन्द्रावरज १.	११३१९
इन्द्रिय ३.	३३३२०३
" ३.	७३३४
इन्द्रियग्राम १.	५३३१७
इन्द्रियार्थ १.	५३३२
इन्धन ३.	३३३९६
इन्वका २ व.	३३३३९
इभ १.	३३३६०
इभ्य १. २. ३.	५३३५७
इभ्या २.	३३३१०३
इरम्मद १.	१२३२०
इरा २.	३३३४५
" २.	६२३३
इरिण १. २. ३.	३३३१८
" १. २. ३.	७३३४
इर्वारु १.	३३३३६६
" २.	३३३३७२
इला २.	३३३३३
" २.	६२३३
इलावृत्त ३.	३३३३७
इलिक १.	३३३३३
इली २.	३३३३६०

[ ईश्वर ]

ईश्वला २ व.	२३३३९
इव ४.	८१८१५
इष १.	२३३८५
इषीक १ व.	३३३३३
इषीका २.	३३३२३५
इषु १. २.	३३३१८०
इषुधि १. २.	३३३१७९
इष्ट ३.	३३३११५
" १. २. ३.	३३३३३
" १. २. ३.	५३३९६
इष्टका २.	३३३२५
इष्टि २.	६२३३
इष्टव १.	६३३८
इष्टवास १.	३३३१७२
ई ४.	
ईचन ३.	४३३९४
" ३.	७३३४
ईचणिका २.	४३३११
ईजान १.	२३३८४
ईडित १. २. ३.	५३३९६
" १. २. ३.	५३३१०६
ईति २.	६२३५
ईदृश १.	१३३१०
ईप्सा २.	३३३१८०
ईरित १. २. ३.	५३३९६
ईर्म १. ३.	३३३२१७
ईर्यापथस्थिति २.	३३३११६
ईर्या २.	३३३१८४
ईषिका २.	४३३११६
ईली २.	३३३३७
ईश १.	१३३३०
" १. २. ३.	५३३५८
" १.	८३३३५
ईशशक्ति २.	१३३३९
ईशान १.	१३३३०
" १.	७३३१०
ईशित् १. २. ३.	५३३५८
ईश्वर १.	१३३३०
" १.	३३३३७
" १.	३३३३३



[ ईश्वर ]

ईश्वर १.	४१११३५
" १. २. ३.	५१११५७
" १.	७१११३५
ईश्वरप्रिय १.	२१११३५
ईषत् ४.	८१८१२
ईषा २.	३१८१२७
ईषादन्त १.	३१७१६९
ईषान्तवन्धन ३.	३१७१३०
ईषिर १.	११२११९
ईहन ३.	५१२१११
ईहा २.	३१६१७९
" २.	६१२१५
ईहामृग १.	५१५८
" १.	३१७१००
ईहित १. २. ३.	५१११९६
उ	
उ ४.	८१७१०
" ४.	८१७११
उक्थ ३.	३१६१११
उक्षतर १.	३१४१५५
उच्चन् १.	३१४१५२
" १.	८१६१५
उच्चवश १.	८१५१५१
उखा २.	४१३१५५
उख्य १. २. ३.	४१३१९४
उग्र १.	११११४६
" १.	३१५१३३
" १.	३१५१७२
" १.	३१५१७६
" १.	३१५११६
" ३.	३१८१२४
" ३.	३१८१४८
" १. २. ३.	३१९१७९
उग्रगन्ध १.	३१३१७१
" १.	८१५१५
उग्रगन्धा २.	३१३१९७
" २.	३१८१०२
" २.	८१५१५
उग्रता २.	३१६१९२
उग्रधन्वन् १.	११२१६
उग्रविष १.	३१३१९३

वैजयन्तीकोषः

उग्रा २.	३१३१९७
" २.	३१८१०२
" २.	८१२११४
उग्रिका २.	३१६१९२
उचित १. २. ३.	५१४१०३
" १. २. ३.	७१४१७
उच्च १. २. ३.	५१४१८१
उच्चकैः (-स्) ४.	८१८१९९
उच्चण्ड १. २. ३.	५१४१९४
उच्चतालक ३.	३१९१५४
उच्चन्द्र १.	२१११६६
उच्चय १.	४१३१३०
उच्चल ३.	३१६१७२
" ३.	३१७१७५
उच्चलित ३.	३१७१७२
उच्चस्वन १.	२१४१३
उच्चार १.	४१३११९
उच्चारणा २.	३१६१३५
उच्चूड १.	३१७१३४
उच्चैः (-स्) ४.	८१८१९९
उच्चैःश्रवस् १.	११३१११
" १.	८१११९९
उच्छिष्टभोजिन् १. २. ३.	
	३१६११०
उच्छीर्ष ३.	४१२१६७
उच्छुन ३.	२१११८३
उच्छूर १.	२१११६५
उच्छृङ्खल १. २. ३.	
	५१४१३२
उच्छ्राय १.	३१३११६
उच्छ्रित १. २. ३.	७१४१५
उच्छ्रिताग्रक १. २. ३.	
	५१४१८१
उच्छ्रास १.	३१५१३२
" १.	३१६१२०४
उज्जट १. २. ३.	३१३१४५
उज्जासन ३.	३१७१२५
उज्ज १.	३१८१२
उज्ज १. २.	४१३१२६
उहु २. ३.	२१११३८
उहुप ३.	४१२११६

[ उत्तमसाहस ]

उहुराज १.	२१११२७
उहुन ३.	२१३१५०
उहुन १.	११११४५
उत १. २. ३.	५१४११२
" ४.	८१७११८
" ४.	८१८१२
उताहो ४.	८१८१२
उत्क १. २. ३.	५१४१३४
उत्कट १.	३१३१२३०
( इट्कट, तिलकट )	
" ३.	३१६१२१६
" ३.	३१८१८०
" ३.	३१८१०४
" १. २. ३. ५१४१३७	
" १. २. ३. ५१४१३७	
" १. २. ३. ७१४१७	
उत्कण्ठ १. २. ३.	८१९१२७
उत्कण्ठा २.	३१६१७८
उत्कर १.	३१६१११
" १.	५१११३
उत्कलिका २.	३१६१७८
" २.	४१२१२४
उत्कार १.	५१२१२१
उत्कारिका २.	४१३१७२
उत्कीर्ण १.	४१२१७
उत्कुञ्ज १.	४१३१६९
उत्कोच १.	३१७१४६
उत्क्रम १.	५१२११६
उत्क्रोश १.	२१३१३४
उत्क्षिप्तिका २.	४१३१३४
उत्क्षुद्रल १.	५१३१४
उत्खात १.	३१६१२२९
उत्खेद १.	३१६१८३
उत्त १. २. ३.	५१४१०७
उत्तंस १.	४१३१५४
" १.	८१११५९
उत्तस ३.	४१३१८९
उत्तम १. २. ३.	५१४१६२
" १. २. ३.	७१४१६
उत्तमर्णक १. २. ३.	३१८१८
उत्तमसाहस १.	५१११४१

उत्तमा ]

उत्तमा २.	३१३११६०
उत्तमाङ्ग ३.	४१४१८५
उत्तमोत्खात १.	३१६१२३०
उत्तमोत्तमिक ३.	३१९१२
उत्तर ३.	२१४१३७
" ३.	३१८११६
" १. २. ३. ७१५१८	
उत्तरच्छद १.	४१३११६६
उत्तराङ्ग ३.	४१३१३३
उत्तरायण १.	२१११९०
उत्तरासङ्ग १.	४१३१२३
उत्तरीय ३.	४१३१२२
उत्तरेद्युः (-स्) ४.	८१८१८
उत्तान १. २. ३.	५१४१२०
उत्तानशय १. २. ३.	५१४१२
उत्ताल १. २. ३.	५१४१५२
" १. २. ३.	७१४१७
उत्त्रास १.	३१६१०६
उत्थान ३.	४१४१२८
" ३.	७१३१५
उत्थित १. २. ३.	३१८११८
" १. २. ३. ५१४१५२	
उत्थुस १.	५१३१४०
उत्पतन ३.	८१३१५
उत्पतिवृत् १. २. ३.	५१४१४२
उत्पतिष्णु १. २. ३.	५१४१४२
उत्पत्ति २.	४१४११८
उत्पल ३.	३१८१९९
" १.	४१११४६
" ३.	४१२१३४
" ३.	४१२१३५
उत्पलावर्त १ ब.	३१११३३
उत्पश्य १. २. ३.	५१४१५४
उत्पाट १.	४१४१३७
उत्पाटित १. २. ३.	
	५१४१००
उत्पाट १.	३१६११९०
उत्पाद १.	३१४१३२
उत्पादशयन १.	२१३१३४
उत्पिञ्जल १. २. ३.	
	५१४१९४

शब्दानुक्रमणिका

उत्पिब १.	२१३१३५
उत्पिषा १.	५१३११२
उत्प्रास १.	२१४१३५
उत्प्रेक्षा २.	३१६१७४
उत्फुल्ल १. २. ३.	३१३१९
उत्स १.	३१२१७
उत्सङ्ग १.	३१७१७६
" १.	४१४१६०
उत्सन्नाग्नि १.	३१६१७१
उत्सर्जन ३.	३१६११९९
उत्सव १.	३१६१६१
" १.	७१११११
उत्सादन ३.	८१३१५
उत्साधन ३.	४१३११३
उत्साह १.	३१६१६७
" १.	३१९१७६
उत्साहा २.	३१२१२५
उत्सुक १. २. ३.	५१४१३०
उत्सृष्ट १.	३१३१५१
" १. २. ३. ५१४१०१	
उत्सेध १.	७१११०
उदक ३.	४१२१२
उदक्या २.	४१४१५५
उदग्र १. २. ३.	५१४१८१
उदग्रदत् १.	३१७१६९
" १. २. ३. ५१४१९	
उदच् ३.	२१११८
" १. २. ३. ४.	
	५१४१९१
उदज १.	५१२१३१
उदञ्जन ३.	४१३१५५
उदधि १.	४१२११०
उदन्त १.	२१४१३९
उदन्त्या २.	३१६१८१
उदन्वत् १.	४१२११०
उदपान १. ३.	४१२१९
उदय १.	३१२१६
" १.	३१७१४४
उदयनीय १.	३१६१५८
उदयादि १.	३१२१६
उदर ३. २.	४१४१६७

[ उद्गाल ]

उदरग्रन्थि १.	४१४१३०
उदरग्राण ३.	३१७१५४
उदरिल १. २. ३.	५१४१७
उदर्क १.	७१११२
उदर्विस् १.	११२११५
उदवसित १. २. ३.	
	४१३१९९
उदधित् ३.	३१८१५०
उदात्त १. २. ३.	३१६१३७
" १. २. ३.	८१७१६
उदान १.	७१११२
उदार १. २. ३.	५१४१२०
" १. २. ३.	५१४१५६
" १. २. ३.	७१४१४
उदारक १.	३१८१५९
उदावर्त १.	४१४१३२
उदासीन १.	३१७१४०
उदास्थित १.	३१७१२७
" १.	८१११९९
उदाहार १.	२१४१४१
उदित १. २. ३.	७१४१५
उदीची २.	२१११५
उदीचीन १. २. ३.	
	५१४१९१
उदीच्य १.	३१३१२२
उदीर्ण १. २. ३.	५१४१५६
उदुब्ज १. २. ३.	५१४१९०
उदुम्बर १ ब.	३१३१३९
" ३.	३१२१२५
" १.	३१३१२८
" १. ३.	८१५१४
उदुम्बरा २.	४१३१४४
उदूखल २.	४१३१६५
उदूढ १. २. ३.	५१४१८०
" १. २. ३.	७१४१६
उदूत १. २. ३.	५१४११४
उदूमनीयक ३.	४१३१२०
उदूढा १. २. ३.	५१४१३१
उदूढा १.	३१६१७९
उदूगार १.	४१४१२६
उदूगाल १.	४१४१२६



[ उद्गूर्ण ]

उद्गूर्ण १. २. ३. पा१११४
उद्गृहीत १. २. ३. ८१४६
उद्गीव १. २. ३. पा१२०
उद्ग १. ८११४२
उद्गन १. ३११३५
उद्गटन ३. ४२२१
उद्गात १. २१४४१
" १. ३१७२४
" १. ४३३२
उद्गंश १. ४११३५
उद्गण्ड १. ४१४६
उद्गाम १. १२१४६
" १. २. ३. पा११३२
उद्गाल १. ३३३६०
" १. ३११४३
उद्ग्राव १. ३१७२११
उद्गन १. ३१६१०२
उद्गरण ३. ८३३६
उद्गर्ष १. ३१६६१
उद्गव १. ३१६६१
उद्गान ३. ४३१५४
" ३. ७३३५
उद्गार १. ३१८४
उद्गूम १. २१४२८
उद्गृह १. २. ३. पा११००
" १. २. ३. पा१११२
" १. २. ३. ७३१५
उद्गृथ १. ४२२९
उद्गृथ १. ३१५४१
उद्गृथवृषभ १. ३१६१२२
उद्गृह १. २. ३. ३३३९
उद्गृहित १. २. ३. पा११००
उद्गव १. ४१४१८
उद्गिज १. २. ३. ४१४१
उद्गिद् २. ४१४१
उद्गिद् ३. ३१८१२२
" १. ४११८
" १. २. ३. ४१४१
उद्गम १. पा२३३

वैजयन्तीकोषः

उद्यत १. २. ३. पा१११४
उद्यम १. ३१६१६७
" १. पा२३४
उद्यान ३. ३३३३
" ३. ७३३४
उद्युक्त १. २. ३. पा१३०
उद्योग १. ३. पा२२५
उद्योत १. २१११६
उद्ग १. ४११५४
( दर )
उद्गकलाहक १. ३१७१०१
उद्गर्तन ३. ४३३११३
उद्गान्त ३. ३१७६८
" १. २. ३. पा१११४
उद्गासन ३. ३१७२१४
" ३. ८३३५
उद्गाह १. ३१६५५
उद्गेग १. ३१६१६७
" ३. ४३३१०६
" १. पा२३३
उद्गेगकर्तरी २. पा३१०८
उन्दुर १. ४११३१
उन्न १. २. ३. पा११०७
उन्नत १. २. ३. पा११८१
उन्नतनासिक १. २. ३. पा१४६
उन्नतानत १. २. ३. पा१८३
उन्नति २. पा२२४
उन्नाम १. पा२२४
उन्नाल १. ३१८५५
उन्निद्र १. २. ३. ३३३९
उन्मत्त १. ३३३७६
उन्मदिष्णु १. २. ३. पा१४१
उन्मनस् १. २. ३. पा१३४
उन्मथ १. ३१७२११
उन्माथ १. ३१९४०
उन्माद १. ३१६१७७
उन्मान ३. पा१५६
उन्मिषित १. २. ३. ३३३९

[ उपताप ]

उन्मीलन ३. ३१९१०
उन्मीलित १. २. ३. ३३३९
उन्मुख १. २. ३. पा१५४
" १. २. ३. पा१९०
उन्मूलित १. २. ३. पा११००
उन्मेष १. ३१९१०
उप ४. ८१७१८
उपकण्ठ १. २. ३. ३१७१२०
" १. २. ३. पा११४१
उपकर्या २. ४३३३०
उपकल्प १. ३३३११३
उपकार १. पा२२२
उपकारिका २. ४३३३०
उपकार्या २. ४३३३०
उपकुञ्जिका २. ३१८८५
" २. ३१८८७
उपकुर्वाण १. ३१६८
उपकुल्या २. ३१८७७
उपक्रम १. २१४४१
" १. ३३३२५
" १. पा२१५
" १. ८१११८
उपक्रिया २. पा२२२
उपक्रोश १. ३१६१९३
उपखिल ३. ३३३३३
उपगृहन ३. ४३३१६९
उपग्रह १. ८१११८
उपग्राह्य ३. ३१७४५
उपग्र ३. ४३३१२
उपचर्या २. ४१४१३९
अपचार १. ८१११७
उपचित १. २. ३. पा१५७
" १. २. ३. पा११०८
उपचित्रा २. ३३३११३
उपच्छन्दन ३. २१४२३
उपजाप १. ३१७१३
उपजिह्विका २. ४१३३८
उपजोषम् ४. ८१८१७
उपज्ञा २. ३३३२५
उपताप १. ८१११९

उपत्यका ]

उपत्यका २. ३२२९
उपत्रिंश १. २. ३. व. पा१३५
उपदंश १. ३१९५२
" १. ४३३८६
" १. ४१४१३२
उपदा २. ३१७४५
उपदीका २. ४१३३८
उपदेहिका २. ४१३३८
उपद्रव १. ३३३१९०
उपद्रष्टृ १. ३३३८१
उपधा २. ३३३१९५
" २. ७२३३
उपधान ३. ४३३१६७
उपनत १. २. ३. पा११०४
उपनय १. ३३३७
उपनाय १. ३३३७
उपनाह १. ३१९१२१
" १. ८१११७
उपनिधि १. ३१८१२
उपनिमन्त्रण ३. ३३३९३
उपनिवेशिनी २. २११७५
उपनिषद् २. ८२३३
उपन्यास १. २१४४१
उपपति १. ४१३३८
उपप्राप्त १. २. ३. पा११०४
उपप्लव १. २१३३०
" १. ३३३१९०
उपबर्ह ३. ४३३१६७
उपबर्हण ३. ४३३१६७
उपभृत् २. ३३३१००
उपमन्त्रण ३. २१४४
उपमा २. पा११२२
उपमान ३. ३१९२१
" ३. ८१११७
उपयम १. ३३३१५
उपयाम १. ३३३१५
उपयोग १. पा२२५
उपरक्त १. २१३३०
" १. २. ३. पा१४६८

शब्दानुक्रमणिका

उपरक्षण ३. ३१७५९
उपरति २. ४२३३६
उपरथ्या २. ४३३१६
उपरमग ३. पा२३६
उपराग १. २१३३०
उपराम १. पा२३६
उपरि ४. ८१८१९
उपरिष्ठात् ४. ८१८१९
उपरिस्थूणा २. ४३३४१
उपल १. ३२३८
" १. २. ३. ७१५१७
उपलब्धि २. ३३३१६४
" २. ८२३४
उपलम्भ १. पा२१९
उपलवण १. ३१८१२६
उपला २. ४३३१६३
उपलिङ्ग ३. ३३३१९०
उपवन ३. ३३३२
उपवर्ण १. ३१५२
उपवर्तन ३. ३१७४९
" ३. ३१७१११
उपवर्ष १. ३३३१५४
उपवसथ १. ४३३२
उपवस्तु १. ३३३१५४
उपवास १. ३३३१४४
उपविंश १. २. ३. व. पा१३५
उपविषा २. ३१८१९०
उपविष्कर ३. ४३३१७
उपविष्ट १. २. ३. पा११०
उपवीत ३. ३३३२०
" ३. ८३३१७
उपवेद १. ३३३३०
उपवेश ३. पा२१४
उपवेणव ३. २१३३७
उपशक्त्यक ३. ४३३११
उपशाय १. ४३३१६७
उपश्रुत १. २. ३. पा११०६
उपसंव्यान ३. ४३३१२१
उपसंहार १. पा२१८
उपसंग्रहण ३. ३३३४०

[ उपानह ]

उपसन्न १. २. ३. पा११०४
उपसम्पन्न १. २. ३. ३१७२२०
" १. २. ३. ४३३१९४
" १. २. ३. ८१५२६
उपसम्भाषण ३. २१४२३
उपसर्ग १. ३३३१९०
उपसर्जन ३. पा१६४
उपसर्था २. ३३३४६
उपस्कर १. ४३३१९०
उपस्करस्खलिनी २. ३१७५४
उपस्करव्रत ३. ३३३१४८
उपस्थ १. ३३३१०३
( उपस्थाव )
" १. ४३३६०
" १. ३. ४३३६७
उपस्थान ३. पा२२१
उपस्थित १. २. ३. पा११०४
उपस्पर्श १. ४३३११३
" १. ८१११९
उपस्पर्शन ३. ८३३१४
उपहसित ३. ३१९८४
उपहार १. ३१७४५
उपहालक १ व. ३१११७
उपहर ३. ८३३५
उपांशु १. ३३३९२
" ४. ८१७३२
उपाग्र १. २. ३. पा१६४
उपात्यय १. ३३३११४
उपादान ३. पा२१८
उपाधि १. ७११११
उपाध्याय १. ३३३२२
" १. २. ३. ८१९४४
उपाध्याया २. ४३३२३
उपाध्यायानी २. ४३३२२
उपाध्यायी २. ४३३२२
" २. ४३३२३
उपानह २. ४३३१६२



[ उपान्त ]

बैजयन्तीकोषः

[ ऊरव्य ]

उपान्त १. २. ३.	उर्वरा २.	३११४
पा४१४२	" २.	३१८१७
उपायन ३.	उर्वारु २.	३१३१६७
उपालम्भ १.	" १.	३१३१७२
उपावृत्त १. २. ३.	उर्वी २.	३१११
३१७१०७	उलङ्कल १.	४११३७
उपासङ्ग १.	उलन्द १.	१११४६
३१७१७८	उलप १.	३१३१७
उपासत्त ३.	" १.	३१३१२९
३१७१९५	उलम्ब ३.	४१३१७०
उपासना २.	उलक १.	२१३१२२
३१६३८	उलकचेटी २.	२१३१२१
उपासित १. २. ३.	उलकारि १.	२१३११६
पा४११०५	उलखल १.	३१६१९९
उपाहित १.	" ३.	४१३१६५
११२११७	" ३.	४१३१७०
उपेक्षा २.	उलखली २.	३१७१११
३१७१३३	उल्लु १.	३१६१५७
उपेन्द्र १.	उल्का २.	११३१३२
१११११९	उल्का ३.	४१३११८
उपोढ १. २. ३.	उल्ब ३.	४१३११९
७११६	उल्बण १.	५१२१९
उपोदिका २.	" १. २. ३.	५१३१३४
३१३१४४	" १. २. ३.	५१३१३७
उपोद्घात १.	उल्बणक ३.	३१९१८२
२१४११	उल्बस्थूणा २.	४१३१३९
उप्तकृष्ट १. २. ३.	उल्मुक ३.	११३१३२
३१८१२३	उल्लसनक ३.	३१९१८२
उभयद्युः (-स्) ४. ८१८१९	उल्लाघ १. २. ३.	४१३१९३
उभयद्युः (-स्) ४. ८१८१९	उल्लाप १.	२१३१२९
उमा २.	उल्लिखित १. २. ३.	८१३१५
११११५८	उल्लु १.	३१३१२०८
" २.	उल्लुक १.	३१३१२२९
३१८१४५	उल्लेखनीय १.	३१३१३२
उमापति १.	उल्लोच १.	४१३१२३
११११४५	उल्लोल १.	४१२११४
उमासुत १.	उशनस् १.	२११३३४
११११५४	उशि १. ३.	६१५१८
उम्बुरा २.	उशीर १. ३.	३१३१२३१
४१३१४४	उष १.	२११६८
उम्य १. २. ३.	उयण ३.	३१८१७९
३१८१२०	उषर्बुध १.	११२११५
उरग १.		
४१११५		
उरगाशन १.		
१११३७		
उरण १.		
३१४१६४		
उरभ्र १.		
३१४१६४		
उररी ४.		
८१७१७७		
उरस् ३.		
४१४१६८		
" ३.		
६१३३		
उरसिल १. २. ३.		
३१७१५१		
उरस्य १.		
४१४१४५		
उरस्वत् १. २. ३.		
३१७१५१		
उरस्सूत्रिका २.		
४१३१३७		
उराह १.		
३१७१०१		
उरु १. २. ३.		
५१४१८०		
उरुक्रम १.		
१११११९		
उरुवल्ली २.		
३१३१६४		

[ ऊरी ]

शब्दानुक्रमणिका

[ एकविंशतितम ]

ऊरी ४.	८१७१७७	ऊषणा २.	३१८१७६	ऊषभ १.	३१७१७७
ऊरु १. २.	४१४१५९	( दूषणा )		" १.	३१९१३२
" १. २.	८१९१२६	ऊषर १. २. ३.	३१८११८	" १.	७१११३३
ऊरुज १.	३१८११	ऊषरज ३.	३१८१२३	ऊषभा २.	३१६१५१
ऊरुपर्वन् ३.	४१४१५९	ऊषवत् १. २. ३.	३१८११८	ऊषभी २.	३१३१२९
ऊरुमूल ३.	४१४१५९	ऊषमक १.	२११८८	ऊषि १.	१११३०
ऊर्ज २.	८१२११८	ऊषमन् १.	२११८८	" १.	३१६१५०
ऊर्ज १.	६१११३	" १.	३१६१३६	" २.	३१८१९४
ऊर्जस्वल १. २. ३.	३१७१५१	" १.	५१४१९	" १.	६१११९
ऊर्जस्विन् १. २. ३.	३१७१५१	ऊह १. २.	३१६१७५	ऊष्टि १. २.	३१८१५८
		ऊहन ३. २.	३१६१७५	ए	
ऊर्जित १. २. ३.	३१७१५१	ऊ		एक १. २. ३.	५११२५
ऊर्णनाभ १.	४११३४	ऊ २.	८१२११८	" १. २. ३.	६१४३३
ऊर्णवाहि १.	४११३५	ऊक्ष १.	३१३१६९	एककुण्डल १.	८११५१
ऊर्णा २.	३१४२५	" १.	३१४१७	एकग १. २. ६.	५१३१२८
" २.	३१९१३३	" ३.	५११६०	एकगुरु १.	३१६१२४
" २.	६१२१६	" १. २. ३.	६१५१९	एकग्रन्थ १.	३१६१३३
ऊर्णायु १.	७१११३	ऊक्षगन्धिका २.	३१३१९६	एकतान १. २. ३.	
ऊर्णवाहि १.	४११३५	ऊक्षर १.	७१११४	एकतीर्थिन् १.	३१६१२४
ऊर्ध्वक १.	३१९१२९	ऊक्ष २.	३१६१२६	एकदन्त १.	१११५३
ऊर्ध्वजानुक १. २. ३.	५१४१०	ऊक्षीष ३.	४१३१५७	एकदा ४.	८१८१६
ऊर्ध्वजु १. २. ३.	५१४१०	ऊक्षु १. २. ३.	५१३१२४	एकदृष्ट १. २. ३.	५१३१३
ऊर्ध्वधन्वन् १.	११२१३	" १. २. ३.	६१४१२	एकदेश १.	४१४१५५
ऊर्ध्वनापित १.	३१५१६७	ऊक्ष ३.	३१८१३	एकधुर १. २. ३.	३१३१५८
ऊर्ध्वमूल १.	३१३१२२९	" १. २. ३.	५१३१३	एकधुरीण १. २. ३.	
ऊर्ध्वलोक १.	१११११	" ३.	६१३३३		३१४१५८
ऊर्ध्वसूचिका २.	४१३१४८	ऊक्षु १.	२११८६	एकपत्ति २.	२११६९
ऊर्ध्व २.	२१११६	" १.	४१४१६	एकपटलमाली २.	
ऊर्मि १. २.	४१२११४	ऊक्षुमती २.	४१४१५		३१३१८५
ऊर्मिका २.	४१२११४	ऊक्षे ४.	८१८१४	एकपद ३.	५१२१६
ऊर्मिमत् १. २. ३.	५१४१२३	ऊक्षिज् १.	३१६१७८	एकपदी २.	३११४९
ऊर्मिला २.	३१६१४५	" १.	८१९१४४	एकपर्णा २.	१११६१
ऊवध्य ३.	३१६१२०५	ऊक्ष १. २. ३.	३१८१६७	एकपाटला २.	१११६१
ऊष १.	३१८१२५	ऊक्षु १.	१११३३	एकपिङ्ग १.	११२१५८
" ३.	३१८१२३	ऊक्षुक्षिन् १.	११२१४	एकरूप १. २. ३.	५१३१७९
" १.	५१३१२८	ऊक्षय १.	३१३११४	एकवर्ण १.	३१५३३
ऊषण ३.	३१८१७५	ऊक्षयकेतु १.	१११२९	एकविंश १. २. ३.	
" १.	५१३१२६	ऊक्षयप्रोक्ता २.	३१८१३		५१३१२२
		" २.	८१२१४	एकविंशतितम १. २. ३.	
		ऊक्षणी २.	३१३१२४		५१३१२२



[ एकशततम ]

वैजयन्तीकोषः

[ ओषधि ]

ओषधीश ]

शब्दानुक्रमणिका

[ कटक ]

एकशततम १. २. ३.	एतर्हि ४.	८८८५
पा११२३	एतश १.	३१६१
एकसर्ग १. २. ३.	एतावतिथ १. २. ३.	पा११२०
पा११२८	एतिन् १.	३१६२०५
एकहायनी २.	एत्थाल १.	४११४४
पा११४५	एध १.	३१६१६
एकाक्ष १.	एधस् ३.	३१६१६
पा११४७	एधित १. २. ३.	पा१११६
एकाग्नि १.	एनस् ३.	३१७४७
पा११२८	" ३.	८१३१६
एकाङ्ग १.	एरका २.	३१३२३३
पा११३२	एरुण्ड १.	३१३१६४
एकाङ्गग्रह १.	एलक १.	३१३३६
पा११३४	एला २.	३१३१०३
एकाङ्गुल ३.	" २.	३१८८७
पा११२०	एलारसालक ३.	पा३३६
एकादश १. २. ३.	एलावालुक ३.	३१८९५
पा११२१	एव ४.	८१७१८
एकादशी २.	" ४.	८१८१५
पा१११८	एवम् ४.	८१७१९
एकान्त १. २. ३.	" ४.	८१८१५
पा१११९	" ४.	८१८१७
" १. २. ३.	एषण १.	३१७१८०
पा११२९	एषणा २.	३१८१५०
" १. २. ३.	एषणिका २.	३१९१९९
पा११३२	एषमः (-स्) ४.	८१९१०
एकान्तरितिन् १. २. ३.	ऐ	
३१६१३५	ऐ ४	८१७२
एकान्तरिन् १. २. ३.	ऐकागारिक १.	३१९१५५
३१६१३५	ऐङ्गुद ३.	३१३२२
एकायन १. २. ३.	ऐतिह्य ३.	२१४३८
पा११२८	ऐन्द्र १.	३१६१८६
एकायनगत १. २. ३.	ऐन्द्रलुसिक १. २. ३.	४१४१४७
पा११२९	ऐन्द्रि १.	२१३१७
एकावली २.	ऐन्द्री २.	१११६२
पा११४१	" २.	२११४
एकाष्टील १.	" २.	३१३१७२
पा११९४	ऐरावण १.	११२१२
एकाष्टीला २.		
पा११३०		
एकाह १.		
पा११८४		
एजन ३.		
पा११८९		
एड १. २. ३.		
पा११३३		
एडक १.		
पा११६४		
एडगज १.		
पा११५८		
एडमूक १. २. ३.		
पा११३३		
एडक ३.		
पा११३७		
एण १.		
पा११२२		
एणीकृत १. २. ३.		
पा११३४		
एत १.		
पा११२३		
एतन १.		
पा११२०४		

ऐरावत १.	११२१२
" १.	२११८
" ३.	२११४९
" ३.	२१२३
" ३.	३१८११५
ऐरावती २.	२११४६
" २.	२१२५
ऐरुक ३.	३१६१८
ऐरुण्डक १.	४१३४३
ऐलविल १.	११२५६
ऐलेय ३.	३१८१५
ऐश्वर ३.	३११५८
" ३.	३१९११०
ऐश्वर्य ३.	१११४७
" ३.	८१५३४
ऐह १.	३१३१६५
ओ	
ओकस् ३.	४३१९
" ३.	६३१४
ओष १.	३१९१२३
" १.	४२३०
" १.	६१११०
ओङ्कार १.	३१६२३३
ओज १. २. ३.	पा११२३
ओजस् ३.	६३१४
ओजस्विन् १. २. ३.	३१७१५१
ओट्टित ३.	३१६५
ओत १. २. ३.	३१९१२
ओतु १.	३१४७१
ओदन १. ३.	४३१७६
ओम् ४.	८१७३
ओराल १.	पा१२०
ओलक १.	३१३१५१
" १.	पा३१३३
" १.	पा३१४४
" १.	पा३१४४
ओलहन् १.	३१८१४४
ओषक ३.	३१७५६
ओषधि २.	३३३६
" २.	३१८७५

ओषधीश १.	२११२५
ओष्ट १.	४१४८७
ओष्टय १. २. ३.	पा१११७
ओष्ण ३.	पा३१९
ओसर १.	३१८८४
ओहार १.	४११५०
औ	
औक्षक ३.	पा३११०
औजस ३.	३२११८
औसुव्य ३.	३१६१७८
औदनिक १. २. ३.	४३१२३
औदर १.	४३१८२
औदरिक १. २. ३.	पा४५१
औदुम्बर १.	३१६१२५
औदुम्बरायण १.	३१६१८
औदालक ३.	३१८१३६
औपगवक ३.	पा११७
औपयिक १. २. ३.	पा४११०३
औपरोधिक १.	३१६१९
औपवाह्य १.	३१७६९
औसिका २.	३१९१०६
औमीन १. २. ३.	३१८२०
औरञ १.	४३१२९
औरञ्जक ३.	पा१११०
औरस १.	४३१४५
और्ध्वस्थक १. २. ३.	३१६१७
और्व १.	११२२१
और्ववतिन् १. २. ३.	३१६१३५
और्वशेय १.	३१६१५१
औलक १. २. ३.	३१६१३२
औशीर ३.	पा१११७
" ३.	७३१५
औषध ३.	३१८७५
" ३.	४१४१४१

औष्टक ३.	पा११५
औष्णिह ३.	३१६३४
क	
क १.	१११७
" ३.	४२२२
" १.	८१३३६
कंवि २.	४३१२३
कंस ३.	पा११५५
" १. ३.	६१५११
कंसरिपु १.	१११२६
कंसोत्पल ३.	४२१७२
ककुद् १. २.	८१५२८
ककुद् ३.	३१७८०
" ३.	८१५२८
ककुदावर्त १.	३१७९७
ककुदिन् १.	३१४५४
ककुवत् १.	३१४५४
ककुवती २.	४१४६४
ककुम् २.	२११२
ककुम् १.	३१९१२०
ककुहा २ व.	२११२१
कक्खट १.	पा३१५
कक्खटी २.	३२११३
कक्ष १.	४३१३१
" १.	६१३३४
" १. २. ३.	४१४६७
कक्षक ३.	३३३१
कक्षरा २.	३१७८४
" २.	४३१३१
" २.	६२२७
कक्ष्यापट १.	४३१२९
कक्ष १.	२३३३१
कक्षट १.	३१७१५३
कक्षटीक १.	१११५५
कक्षण ३.	४३११३३
" ३.	७३१११
कक्षत १.	४३११२
" १. २. ३.	८१९२७
कक्षपत्र १.	३१७१८१
कक्षमुख १.	३१९१७

कङ्काल १. ३.	४१४११४
कङ्कलि १.	३३३४०
कङ्कु २. ३.	३१८१५५
कच १.	३१५१५
" १.	पा११९७
कचङ्गला २.	३१९४२
कचू १.	३३३२०८
कच्चर १. २. ३.	पा४१६६
कच्चित् ४.	८१७१९
कच्चोर ३.	३३३२०३
कच्छ १.	४२३३२
" १.	४३१३३१
" १.	६१११४
कच्छप १.	१२१६०
" १.	४११५०
कच्छपी २.	४११११९
कच्छुर १. २. ३.	४१४१४५
कच्छुरा २.	३३३२५
" २.	३३३१२९
कच्छू २.	४१४१२३
कच्छूदार १.	३३३५४
( कच्छूदार )	
कच्छूरक १	३३३११७
कज्जल ३.	४३३१५७
कन्चुक १.	४११२१
" १.	४३३१२८
" १.	७१११५
कन्चुकिन् १.	३३३२३
कज ३.	४२३३६
" १.	४१४९८
कज्जल ३.	४२३३६
कट १.	३३७७५
" १.	३३७२१६
" ३.	३३७७५
" १.	४११२३
" १.	४३३१२
" १.	४३३१६६
" १.	४१४६५
" १. २. ३.	६१५१८
" १. २. ३.	८१९२७
कटक १. ३.	३३३८



[ कटक ]

वैजयन्तीकोषः

[ कतृण ]

कटक १. ३.	४३१४	कटुका २.	३१८५०	कण्टक १.	७१११४
" १. ३.	४३१४४	कटुकाण १.	२३३३४	कण्टकच्छेदन १.	३१७१६५
" १. ३.	७१५३१	कटुक्ति १.	५३३३०	कण्टकप्रतीसार २.	
कटकट ३.	३१८११९	कटुक्तिप्रकाय १.			३१७५३
कटकर १.	३१५१७		५३३३७	कण्टका २.	२३३३७
" १.	३१५७६	कटुतुम्बी २.	३३३१६७	कण्टकानना २.	२३३३७
कटकर्मन् १.	३१५१७	कटुभङ्ग ३.	३३३२१४	कण्टकारी २.	५३१०५
कटकी २.	४३३२४	कटुम्भरा २.	३१८८६	कण्टकाली २.	५३१०६
कटङ्कटेरी २.	३३३२१३	कटुरोहिणी २.	३१८८६	कण्टकिन् १.	३३३५०
कटम् १.	१११४६	कट्टकट ३.	३३३२१३	" १.	३३३६४
कटभी २.	३३३१३९	" ३.	३१८८०	कण्टकिफल १.	३३३७४
कटमोष १.	३३३२०१	कट्टफल १.	३३३५८	" १.	३३३१४१
कटशर्करा २.	४११५७	कट्टवङ्ग १.	३३३६८	कण्ट १. २. ३.	४३३८३
कटाटङ्क १.	१११४४	कट्टवर ३.	३१८१४९	" १.	६११३३
कटाह १.	३३३१०	कट्टवाङ्ग १.	३३३६८	कण्टकूणिका २.	३१९११७
" १.	४३३५६	कट्टवार १.	३१८१३९	कण्टदोष १.	३१९११२
कटि २.	४३३६४	" १.	५३३३२	कण्टपाल १.	२३३२६
कटिका २.	३१७१९९	कटाकु १.	७१११८	कण्टभूषा २.	४३३१३७
कटिन्न ३.	७३३११	कठार १.	३१९३२	कण्टमणि १. २.	४३३७०
कटिप्रोथ १.	४३३६५	कठिञ्जर १.	३३३११८	कण्टीरव १.	३३३२
कटिल्लक १.	३३३१६३	कठिन १.	५३३४	कण्टकाल १.	१११४५
कटिल्लका २.	३३३१४६	कठिनी २.	३३२१३	कण्टेगुड १.	४३३७०
कटिनीर्षक १.	४३३६५	कठोर १.	५३३५	कण्डन ३.	४३३६६
कटिसूत्र ३.	४३३१४६	कडङ्गर १.	३१८६४	" ३.	४३३६७
कटी २.	८१९२७	कडम्बक १.	४३३९०	कडार ३.	४३३२९
कटीकूप १.	४३३६५	कडार १.	५३३१८	" १.	५३३१३
कटीर ३.	७३३६	कण १.	३१५३०	कण्डू २.	४३३१२४
कटु १.	३३३५३	" १.	४३३३७	कण्डूति २.	४३३१२४
" १.	३३३१२८	" १.	४३३७०	कण्डूयन ३.	४३३१२४
" १.	३३३२०४	" १.	६१११५	कण्डूया २.	४३३१२४
" ३.	३३३२१३	कणकुक्कुट १.	३१५३४	कण्डूर १.	३३३२०८
" ३.	३१८७९	कणजीरण १.	३१८८४	कण्डूरा २.	३३३१२९
" ३.	३१८८०	कणय १.	३१७१६७	कण्डोल ३.	४३३६४
" २.	३१८८६	कणा २.	३१८८४	कण्डोलवीणा २.	३१९१२७
" १.	३१८१३०	कणि १.	२३३२	कण्व १. २. ३.	५३३१३
" १.	५३३२६	कणिका २.	३१९२५	कत ३.	४३३११
" १.	५३३२६	" २.	३१९१२०	कतक १.	३३३३२
" १.	५३३४७	" २.	७३३४	" ३.	३१८५०
" १. २. ३.	६१११३७	कणिश ३.	३१८६४	कतिथ १. २. ३.	५३३२०
" १. २. ३.	६३३४	कण्टक १.	२३३१५	कतिपयथ १. २. ३.	५३३२०
कटुकपायक १.	५३३३०	" १.	३१८८४	कतृण ३.	३३३२३४

[ कथम् ]

शब्दानुक्रमिका

[ कपोल ]

कथम् ४.	८१८२०	कन्था २.	४३३३७	कपालिनी २.	११३६४
कथा २.	२३३३८	" २.	४३३२८	कपाली २.	४३३५९
" २.	३१९१४२	कन्द १. ३.	३३३२०८	कपि १.	३३३३९
कथाप्रसङ्ग १. २. ३.		" १. ३.	४३३४२	" १.	३३३६१
	८३३१३	" १. ३.	४३३९०	" १.	६१११३
कथित १.	५३३५८	" १.	८३३२५	" १.	८१९१०
कदध्वन् १.	३११५०	कन्दर १. २. ३.	३३३३६	कपिकच्छू २.	३३३१२९
कदन ३.	३३३२१५	" १.	३३३३०	कपिकोडा २.	३३३१७९
कदन्निका २.	३३३३१	" १. २. ३.	८१९३७	कपिञ्जल १.	२३३२०
कदम्ब १.	३३३६०	कन्दराल १.	३३३५९	कपित्थ १.	३३३३२
" १.	३३३६७	कन्दरी २.	८१९३७	( कृप )	
कदम्बक १.	३१८४१	कन्दल १.	३३३२१०	कपित्थपत्नी २.	३३३१५७
" ३.	५३३२	" १.	८१९३१	कपिप्रिया २.	३३३८१
कदर १.	३३३६३	" १. २. ३.	८१९३८	कपिल १.	११३३०
" १.	४३३१२३	कन्दली २.	३३३२१०	" १.	११३३१
कदर्य १. २. ३.	५३३५९	" २.	८१९३८	" १.	३३३६९
कदल १.	३३३१७३	कन्दु १.	४३३५६	" १.	३१८११०
कदलि २.	३३३८६	" १. २. ३.	८१९२७	" १.	५३३१८
कदली २.	३३३१७४	कन्दुक १.	४३३१६२	कपिला २.	२११९
" २.	३३३१८	कन्दोब्ज ३.	४३३३४	" २.	३३३२७
" २.	३३३२५	कन्दोष्ठ ३.	४३३३४	" २.	३३३९२
कदाचित् ४.	८१८७	कन्धरा २.	४३३८३	" २.	३३३४३
कदुष्ण ३.	५३३९	" २.	४३३११७	" २.	३१८९५
कद्रु १.	५३३१८	कन्यका २.	४३३६	कपिलोहक ३.	३३३२७
कद्रुद १. २. ३.	५३३२५	कन्यसा २.	४३३२७	कपिवल्ली २.	३१८७८
" १.	५३३९७	कन्या २.	३३३६७	कपिश १.	३१९४८
कनक ३.	३३३१९	" २.	३३३१८८	" १.	५३३१८
कनकाक्षी २.	२३३२१	" २.	४३३६	कपिश २.	४३३३६
कनिष्ठ ३.	३१८१२२	" २.	८३३१४	कपी २.	३३३१५६
कन्दर्प १.	१११२७	कन्याकुब्ज १.	४३३७	कपीतन १.	३३३३१
" ३.	४३३३१	कन्यापिपीलिका २.	४३३३७	" १.	३३३५९
" १. २. ३.	५३३४	कन्याप्रसूतिजा २.	३३३४८	" १.	३३३७२
" १. २. ३.	७३३९	कप १.	३३३७२	कपोत १.	२३३२३
कनिष्ठा २.	४३३२७	( कृपा )		" १.	३१८१२९
" २.	४३३७४	कपट १. ३.	३३३१९५	" १.	५३३१२
कनीनिका २.	४३३७४	कपर्द १.	१११५०	" १.	७३३२०
" २.	४३३९४	" १.	४३३५७	कपोतपाली २.	४३३५३
कनीयस् १. २. ३.	७३३९	कपर्दिन् १.	१११४०	कपोताङ्घ्रि २.	३१८१००
कनीयस ३.	३३३२४	कपाल १. २. ३.	४३३५९	कपोताञ्जन ३.	३३३४२
कन्तु १.	६३३१२	" १. ३.	४३३१५	कपोल १.	४३३९०
कन्थटिका २.	४३३१२८	कपालिन् १.	११३४०	कपोल २.	३१८६६



[ कप्याख्य ]

वैजयन्तीकोषः

[ कर्क ]

कप्याख्य १.	३१८११०	करक १.	२१२७
कफ १.	४१४१२१	" १.	३१३२५
कफणि १. २.	४१४७२	" १.	३१३७२
कफहरी २.	३१८४८	" १.	४१३५७
कफिल १.	३१९११३	" १.	४१३३७
कफोणि १. २.	४१४७२	करकवर्तिका २.	४१३६०
कबत १.	४१३१०१	करङ्क १.	४१३५८
कबन्ध १. ३.	३१७२१६	" १.	४१३०७
कबरी २.	४१४१००	" १.	४१३१४
कबल १.	४१३१०१	करज ३.	३१८९९
कबली २.	४१३१११	" १.	४१३७६
( कपिली )		करञ्ज १.	३१३६२
कम् ४.	८१७३	करञ्जक १.	३१३१०७
कमठ १. २. ३.	७१५२०	कर्कट १.	२१३१७
कमण्डलु १.	३१६१२४	" १.	३१७७५
" १. ३.	८१९३१	" १.	३१८११६
कमन १. २. ३.	५१३३४	" १.	७१५२१
कमनीय १.	३१३८२	करटा २.	३१४४९
कमल ३.	३१८१२	करण १.	३१५१७
" ३.	४१३३९	" १.	३१५५५
" १. २. ३.	७१५२६	" १.	३१५७४
कमलच्छद् १.	२१३३१	" १.	३१५१०३
कमितृ १. २. ३.	५१३३५	" ३.	३१६६०
कमुजा २.	४१४१०२	" ३.	३१६२१०
कम्प २.	३१९८९	" १.	३१९२३
कम्पिल्ल १ व.	३१३९५	" ३.	३१९९८
कम्प १. २. ३.	५१४७९	" ३.	४१४५२
कम्बर १. २. ३.	५१४७८	" १.	४१४७१
कम्बल १.	४१३१२९	" ३.	७१३९
कम्बु १.	३१७६२	करणीपरिवर्तन ३.	
" १. २. ३.	४११५५		३१९१४१
" १. २.	६१५९	करण्डी २.	३१९३३
कम्बुग्रीवा २.	४१४८४	करपत्र ३.	३१९३६
कम्बोज १.	३१३७०	करपोणि १.	४१४७१
कम् १. २. ३.	५१३३५	करभ १.	३१३६७
कर १.	३१७४५	" १.	३१३६७
" १.	३१८३३	" १.	४१४७५
" ३.	४१३७६	" १.	७१११९
" १.	४१४७३	करमर्द १.	३१३८३
" १.	६१११०	करमर्दिका २.	३१३८४
" १.	८१९१२	करम्ब १.	४१३१०६

[ कर्कट ]

शब्दानुक्रमिका

[ कलकण्ठ ]

कर्कट १.	४११४६	कर्णिका २.	३१७७१	कर्मण्यकृत् १. २. ३.	
कर्कटस्कन्ध १.	२१३३१	" २.	३१८६७	पा१४७३	
कर्कटि १.	३१३१६६	" २.	३१९३०	कर्मण्या २.	२१९६
कर्कटिनी २.	३१३२१३	" २.	४१२४६	कर्मदेव १.	१११६
कर्कट १. २.	७१३२७	" २.	४१३३३	कर्मन् ३.	३१३३७
कर्क १.	४१३१०९	कर्णिकार १.	३१३७२	( कर्मठ )	
कर्कराल १.	४१३१८	कर्णिकारल १.	३१७१८२	" ३.	३१९१८
कर्करी २.	४१३१७	कर्णरिथ १.	३१७१२६	" ३.	५१२९
कर्कश १.	३१३१५	" ३.	३१७१२७	" ३.	६१३४
" १.	३१३१६५	कर्णजप १. २. ३.	५१३२५	" १. ३.	८१९३१
" १.	५१३३३	कर्तन ३.	३१७१११	कर्मन्दिन् १.	३१६१६०
" १. २. ३.	७१४८	" ३.	३१९१०	कर्मफल १.	३१३३७
कर्कशिन १.	३१३७४	" १.	३१९३६	कर्मभेद १.	५१३९
कर्कशी २.	३१३८९	कर्तनभाण्ड ३.	३१९१९	कर्मरङ्ग १.	३३३७
कर्कार १.	३१३१६८	कर्तनी २.	३१९२६	कर्मवत् १. २. ३.	५१४७४
" १.	३१३१६९	कर्तरी २.	३१७१८५	कर्मवाटी २.	२१९६९
कर्कोट १.	३१३१६४	" २.	३१९३७	कर्मशाला २.	४१३२३
कर्कोटकी २.	३१३१६१	" २.	४१३१०८	कर्मशील १. २. ३.	
कर्ण १. २. ३.	३१४१५९	" २.	७१२३	पा१४७२	
" ३.	४१२१७	कर्तृ १.	३१३३७	कर्मशूर १. २. ३.	५१४७२
" १.	४१३९२	कर्त्रिका २.	३१९२६	कर्मसाक्षिन् १.	२१११३
कर्णजमल १.	४१३९२	कर्दम ३.	२१३१८	कर्मार १.	३१३२१४
कर्णजलका २.	४१३३३	कर्दम १.	३१८२५	" १.	२१९१६
कर्णजाह ३.	८१९१६	कर्पट १.	४१३३३०	कर्मारवी २.	२१९१३१
कर्णधार १.	४१२१९	कर्पर १.	४१३१५६	कर्मिन् १. २. ३.	५१४७४
कर्णपूर १.	३१३७०	" १.	४१३१५९	कर्मी २.	६१२७
" १.	५१३१३४	" १.	४१३१५५	कर्वट १. ३.	४१३३
" १. ३.	८१५६	" १.	७१११९	कर्वट ३.	४१३३
कर्णपूरक १.	३१३४०	कर्पराल १.	३१३४६	कर्प १. ३.	५१३४९
" १.	३१३१००	कर्परी २.	३१२४३	कर्पक १.	२११३२
कर्णभूषण ३.	४१२३४	" २.	४१३१००	" १.	३१७११७
" ३.	४१३१३३	कर्पूर १.	३१८१०५	" १. २. ३.	३१८८
कर्णमोटी २.	१११६४	कर्तुर ३.	३१२२०	कर्पफल १.	३१३१७६
कर्णलतिका २.	४१३९३	" १.	५१३२४	कर्पफला २.	३१३१७७
कर्णविहीन १. २. ३.		कर्मकर १. २. ३.	२१९५	कर्पाहु १.	३१८४५
		" १. २. ३.	५१४७३	कर्पू १. २.	४१२२९
कर्णवेष्टन ३.	३१७८७	कर्मकार १. २. ३.	५१४७३	" १. २.	६१५१८
कर्णशकुली २.	४१३९३		५१४७३	कल १. २. ३.	२१३१३
कर्णाक १.	४१३१३४	कर्मक्षम १. २. ३.	५१४७२	" १.	३१९१२१
कर्णिक ३.	३१६२१		५१४७२	" १. २. ३.	५१४१४
" ३.	४१२४६	कर्मठ १. २. ३.	५१४७२	कलकण्ठ १.	२१३२७



[ कलकल ]

कलकल १.	२१४२७
कलकाण १.	८११२०
कलङ्क १.	७१११७
कलत्र ३.	४४४३५
" ३.	४४४६४
" ३.	७३३६
कलधौत ३. २.	८१५५
कलपाठक १.	३६३२३
( कलपाठक )	
कलभ १.	३७६६
कलम १.	३८३३४
" १.	७१११८
कलम्ब १.	३७१७७
" १. २. ३.	८११२६
कलम्बी २.	३३११४९
कलम्बू २.	३३११४९
कलरव १.	२३११४
कलल ३.	४३३६२
" १. ३.	४४११८
" ३.	४४११०८
कलविङ्क १.	२३११८
" १.	२३११९
कलश १.	३१५२६
" १.	३१५३१
" १. २. ३.	४३३५८
" १.	५११५५
" १. २. ३.	८११३७
कलशि २.	३३११३६
कलशी २.	४३३५८
कलशीनक १.	३३३२४
कलशीपुत्र १.	३६३१५१
कलशीमुख १.	२१११२४
कलशोदक १.	३३३१८९
कलशोदधि १.	३११११
कलह १.	७१११७
कलहंस १.	२३३८
" १.	८११२०
कलहप्रिय १.	१३३७
कला २.	२११५३
" २.	३३३१२
" २.	३८१५

वैजयन्तीकोषः

कला २.	३१९८
" २.	४३३३८
" २.	४३३५५
" २.	५१३३६
" २.	५३३७
" २.	६३३१०
कलाद १.	२१९१६
कलानिधि १.	२१३२६
कलाप १.	७१११५
कलापक १.	२३३३९
" १.	३३७८३
" १.	३८३३४
" १.	३८३७६
" १.	५३३४१
कलापिन् १.	३३३२८
कलापिनी २.	१११६०
कलाय १.	३८३३३
कलावती २.	३१९११९
कलाह १.	३७११०३
कलि १.	२३३१२
" १.	३३३१७५
" १.	३७३२०४
" १.	३१९३२
" १.	६१११७
कलिका २.	३३३१९
कलिकारक १.	३३३६२
कलिङ्ग १.	२३३२७
" १ ब.	३११४०
" १.	७११३३
कलिङ्गक १ ब.	३११२६
कलित १. २. ३.	७४१९
कलिदुम १.	३३३१७५
कलिल १. २. ३.	७११३१
कलुष १.	३४१९
" १.	३५११४
" ३.	४३३४
" १.	५३३३४
" १.	५३३३९
कलुषी २.	३८३८८
कलेवर ३.	४४१५२
कलेवरा २.	१११४९

[ कविका ]

कलक १. ३.	६५११०
कलकत्व ३.	३१९८५
कलिकन् १.	११३३१
कल्प १.	२११२३
" १.	३३३१६१
" १.	३३३२८
" १.	३६३१३
" १.	६१११६
कल्पन ३.	३३११०
" १.	४४३४६
कल्पना २.	३३७८०
" २.	७३३४
कल्पवृक्ष १.	१३३१४
कल्पाणि १.	३१९१४
कल्पान्त १.	२३११४
कल्मष ३.	३६३१६८
कल्माष १.	५३३२४
" १. २. ३.	७४३१०
कल्य १. २. ३.	४४३१४३
" १. २. ३.	६४३३
कल्या २.	२४३१८
" २.	३१९४५
कल्याण ३.	३६३६२
" १. २. ३.	५४३१४२
" २. ३.	७५३२१
कल्यापाल १.	२१९४४
कल्लोल १.	४३३१४
कलह १. २. ३.	२४३१५
कलहार ३.	४३३३५
कव १.	२४३१
कवक १.	३३३१५२
कवच १. ३.	३७३१५२
कवचित १. २. ३.	३७३१४२
कवट १.	३५३२४
कवाट ३.	४३३४३
" १. ३. ३.	४३३४६
कवि १.	२१३३४
" १.	३६३१५३
" १.	६१११२
कविका २.	३७३१३

[ कविय ]

कविय १. ३.	३७३१३
कवी २.	३७३१३
कवोण ३.	५३३९
कव्यवाहन १.	१३३२२
कश १.	२५३२०
" १.	४१३२७
कशप १.	४१३५०
कशा २.	३७३१४
कशिपु २.	५१३१६
" १. ३.	७५३२०
कशेरु ३.	४३३४७
" २. ३.	४४३१५५
कश्मल ३.	३६३२००
कश्य ३.	३७३११०
" ३.	३१९४५
" ३.	६५३१२
कष १.	३१९१९
कषाय १.	३३३२१७
" १.	४४३१४१
" १. ३.	५३३२७
" १. ३.	७५३२२
कषायक १.	५३३४७
कषायतिल्लवण १.	५३३३६
कषायिका २.	२३३४६
कषिका २.	७३३४
कष्ट १. २. ३.	१३३३९
" १. २. ३.	६४३३
कस्तभिन् १. ३.	३७३३३
कस्तीर ३.	३३३३२
कस्तूरिका २.	३८३१०४
कस्तूरी २.	३४३३५
" २.	३४३३६
कहला २.	३१९१२६
कह्ल १.	३३३१०
कांस्य ३.	३३३२८
कांस्यताली २.	३१९१२४
कांस्यपात्रक ३.	४३३६१
काक १.	२३३१५

शब्दानुक्रमिका

काककङ्कु २.	३८३५९
काकचिञ्जा २.	३३३१८०
काकजङ्गा २.	३३३१११
" २.	३३३१८०
काकजम्बू २.	३३३१९३
काकणी २.	७३३६
काकतिक्ता २.	३३३१८०
काकतिन्दुक १.	३३३११
काकतुण्ड १.	३८३१०८
काकतुण्डिका २.	३३३१८७
काकदन्ता २.	३३३१८०
काकनखी २.	३३३१८०
काकनासा २.	३३३११२
" २.	३३३१९३
काकपक्ष १.	४४३१०२
काकपीथी २.	३३३१८०
काकपीलु १.	३३३१५१
" २.	३३३१८०
काकपुष्ट १.	२३३२६
काकमर्दक १.	३३३१८०
काकमाची २.	३३३११२
काकमाली २.	३३३१८४
काकर्द १.	३३३१५०
काकली २.	३१९११४
काकशीर्ष १.	३३३१९३
काकाङ्गी २.	३३३११२
काकाणती २.	३३३१८०
काकाणन्ती २.	३३३१८०
काकाण्ड १.	३८३४७
काकादनी २.	३३३१८०
काकारि १.	२३३२२
काकी २.	३१९११२
काकु २.	२४३७
काकुद ३.	४४३८९
काकुन्दी २.	४३३९
काकेन्दु १.	३३३१५१
काकोदर १.	४१३१२
काकोदुम्बरिका २.	३३३१११
काकोल १.	२३३११७
" १.	४१३२४

[ कानना ]

काकोली २.	३३३११२
" २.	३१९१५०
काकोलूकिका २.	८१९१७
काकी २.	३३३१६
काकीव १.	३३३१५६
काङ्गा २.	३६३१७९
काच १.	३१९१७
" १.	५३३२२
" १.	६३३१५
काचमालिका २.	३१९४६
काचर १.	५३३२२
काचस्थाली २.	३३३१९०
काचित १. २. ३.	५४३११६
काचिम ३.	४३३१४
काञ्चन ३.	३३३१९
काञ्चनार १.	३३३१४८
काञ्चना १.	३३३१७७
काञ्चनी २.	३३३२७
" २.	३३३२११
काञ्चिक ३.	४३३१८१
काञ्ची २.	४३३१४६
काञ्चीपद ३.	४४३१४४
काटिका २.	३३३११
काण १. २. ३.	५४३१३
काणमारिष १.	३३३१५१
काणा २.	३१९१७
काण्ड १. ३.	३८३६३
" ३.	४१३३१
" १. २. ३.	६५३११
काण्डपट १.	४३३१२४
काण्डपृष्ठ १. २. ३.	३७३१४३
" १. २. ३.	८१३५६
काण्डवीणा २.	२१९१२८
काण्डी २.	३८३७८
काण्डीर १. २. ३.	३७३१४४
" १.	३८३७८
कण्डेबु १.	३३३१०१
कातना २ ब.	२१११९



[ कातर ]

कातर १. २. ३.	५४११८
" १. २. ३.	७५३२
कातुलक १.	३३३८५
कात्यायन १.	३३३५८
कात्यायनी २.	१११६२
" २.	४३११४
कादम्ब १.	३३३८
" १.	७१११९
कादम्बरी २.	३११४६
कादम्बिनी २.	२१२२
कान ३.	२१४२
कानन ३.	३३३१
कानीन १.	४३४४३
कान्त १.	३३३८२
" १.	३३३८५
" ३.	३३३१२३
" १. २. ३.	५४१७०
कान्तनाला २.	३३३१८७
कान्ता २.	४३४५
कान्तार १.	३३३२२६
" १. ३.	७५३२२
कान्तारवासिनी २.	१११६६
कान्ति २.	६१२१८
कान्दविक १. २. ३.	४३३९२
कान्दशीक १. २. ३.	३३३९८
कापटिक १.	३३३२७
" १. २. ३.	५४१२३
कापथ १.	३३३५०
कापिशायन ३.	३३३४४
कापिशेय १.	१३३४
कापोत १.	३३३१२५
" ३.	५११६
कापोताञ्जन ३.	३३३४२
काम १.	१११२७
" १.	३३३५४
" १.	३३३७९
" १.	६१११७
कामकेलि २.	४३३१७०

वैजयन्तीकोषः

कामध्वज १.	२१११३७
" १.	४३३१६९
कामन १. २. ३.	५४३३४
कामपद ३.	४३३६१
कामपाल १.	१११२४
कामस् ४.	४३३१०४
कामयितृ १. २. ३.	५१३३५
कामरूप १ ब.	३३३२९
कामरूपिणी २.	३३३५३
कामरूपिन् १.	३३३५
कामल १. २. ३.	४३३३२२
कामचक्रियार.	४३३१६९
कामाङ्ग १.	३३३२५
कामारि १.	१११४१
कामिक १.	३३३३२
" १.	३३३१९८
कामिकान्त ३.	३३३४८
कामिन् १.	३३३३६
कामिनी २.	४३३५
कामुक १. २. ३.	५४३३५
कामुका २.	४३३११
कामुकी २.	४३३११
कामोत्सव १.	४३३१६७
काम्बल १. २. ३.	३३३१२९
काम्बविक १.	२१११७
काम्बोज १.	३३३१५
काम्बोजी २.	३३३१०७
काम्य ३.	३३३२५
काम्यदान ३.	३३३१२०
काम्रा २.	३३३११४
काय १.	४३३५३
" १. २. ३.	६१३१७
कायमान ३.	४३३३३
कायस्थ १.	३३३२३
कायाङ्ग ३.	३३३२०४
कयिका २.	३३३१
कारक ३.	७३३७
कारकुत्सीय १ ब.	३३३३८

[ कार्पासी ]

कारण ३.	३३३१६
" ३.	७३३७
कारणा २.	१३३३९
कारणिक १. २. ३.	५४३३०
कारणव १.	२३३११
कारम्भा २.	३३३३६
कारवाही २.	३३३११०
कारवी २.	३३३८५
" २.	३३३१०२
" २.	३३३३३२
" २.	३३३१२९
कारवेष्ट १.	३३३१६३
कारा २. १.	६१३१०
कारावर १.	३३३४२
" १.	३३३४३
कारि २.	८३३५
कारिका २.	१३३३२
" २.	३३३६
" २.	७३३५
कारिष ३.	५३३३३
कारु १.	१३३३४
" १.	३३३५८
" १.	३३३७
" १.	६३३१५
कारुज १.	७३३१८
कारुण १. २. ३.	५४३३८
कारुणिक १. २. ३.	५४३३८
कारुण्य ३.	३३३१९२
कारुविन्द १.	३३३७
कारोत्तर १.	३३३५२
कार्तस्वर ३.	३३३१८
कार्तान्तिक १.	३३३२५
कार्तिक १.	२३३६६
कार्तिकिक १.	२३३६६
कार्तिकी २.	२३३७७
कार्तिकेय १.	१३३५६
कार्पास १.	३३३१०६
" १. २. ३.	४३३११७
कार्पासतूल १.	३३३१९
कार्पासी २.	३३३१९

[ कर्म ]

कर्म १. २. ३.	५४३७२
कर्मण ३.	३३३११७
कर्मुक ३.	३३३१७२
" ३.	७३३६
कार्य ४.	३३३२३६
कार्यट ३.	४३३३
कार्यटिक ३.	४३३३
कार्यापण १.	५३३३९
" १.	५३३४०
कार्यिक १.	५३३३८
" १.	५३३३९
" १.	५३३३९
कार्य ३.	३३३१०
( कार्य )	
कार्यमरी २.	३३३५७
कार्यमर्या १.	३३३५७
कार्यक १.	३३३३८
काल १.	१३३३५
" १.	२३३५२
" ३.	३३३३३
" १.	५३३११
" १.	६३३१५
कालक १.	४३३१७
कालकण्डक १.	३३३३६
कालका २.	३३३२०
( कालिका )	
कालकिञ्च १.	३३३५८
कालकुण्डक १.	३३३२९
कालकुन्ध १.	१३३१४
" १.	१३३३५
कालकूट १.	४३३२२
" १.	४३३२३
" १.	८३३३१
कालकूणिका २.	३३३१७८
कालखण्ड ३.	४३३११३
कालधर्म १.	३३३२०१
कालनिर्यास १.	३३३५३
कालपर्णी २.	३३३१२२
कालपुच्छ १.	३३३२९
कालपूर १.	३३३४३
कालपूरक १.	३३३४३

शब्दानुक्रमिका

कालभाग १.	३३३७८
कालमालक १.	३३३१२२
कालमेषिका २.	३३३१८१
कालमेषी २.	३३३१०८
कालरात्री २.	१३३६१
कालवृन्ती २.	३३३१७९
कालशीनक १.	३३३२५
कालशेय ३.	३३३१४८
कालस्कन्ध १.	३३३५१
" १.	३३३८७
काला २.	३३३१२
" २.	३३३३८
" २.	३३३१८५
कालागुरु ३.	३३३१०८
कालाची २.	३३३२०९
कालानुसार्य ३.	३३३१९६
" ३.	४३३१५४
कालायस ३.	३३३३४
कालावलोलक १. २. ३.	३३३३५
कालिक १.	३३३२२
कालिका २.	२३३१६
" २.	३३३४९
" २.	३३३१११
" २.	३३३८५
" २.	३३३८१
कालिङ्ग १.	३३३६२
" १.	३३३१६९
कालिङ्गी २.	३३३१६९
कालिनी २.	२३३४०
" २.	४३३१९
कालिन्दी २.	४३३२५
कालिन्दीकर्षण १. १३३२३	
काली २.	१३३४९
" २.	१३३३०
" २.	२३३२
" २.	३३३१७
" २.	३३३१०४
" २.	३३३२७
" २.	३३३७७

[ काष्ठीला ]

काली २.	३३३१९१
कालीची २.	१३३३६
कालेय २.	३३३१७६
" २.	३३३२३३
" ३.	४३३१५४
कालोत्तिन् १.	२३३८९
कालोदक १.	३३३१५
कालिक १.	३३३७३
काश्य ३.	२३३६९
काश्यक १.	३३३११७
कावचिक ३.	५३३११
कावाट १.	३३३१९९
कावातायनिका २.	४३३३८
कावेर ३.	३३३८०
कावेरी २.	४३३२८
काव्य ३.	२३३४२
काश १. ३.	३३३२२७
काशशाकट १. २. ३.	३३३२०
काशशाकिन् १. २. ३.	३३३२०
काशि १ ब.	३३३४०
" १.	३३३२२७
काशिका ३.	४३३७
काश्मीर १ ब.	३३३२७
" ३.	३३३८८
काश्मीरज ३.	३३३११७
काश्मीरी २.	३३३१९८
काश्यप ३.	४३३१०६
काश्यपसुत १.	१३३३७
काश्यपी २.	३३३१४
काष्ठ ३.	३३३३३
काष्ठतल १.	३३३३४
काष्ठा २.	२३३३३
" ३.	६३३८
काष्ठाशुवाहिनी २.	४३३१५
काष्ठी २.	३३३१७५
काष्ठीला २.	३३३१९१
" २.	३३३१७३







[ कुदानव ]

कुदानव ३.	३१३२३२
कुधान्य ३.	३१८६३
कुध १.	३१२२
कुनटी २.	३१२११
” २.	३१२१७
कुनालिका २.	३१३२१
कुनाशक १.	३१३१२६
कुन्त १.	३१७१६५
कुन्तल १ ब.	३१३३३
” १ ब.	३१३४०
” १	३१३९८
कुन्ति २.	३१८८७
कुन्द १.	१३३६१
” १.	३३ ९१
” १.	३१९१८
कुन्दाल ३.	३१८२९
कुन्दिल ३.	३३३१
कुन्दोपराल १.	३३३५३
कुन्नान ३.	७३३८
कुप्य १. २. ३.	३१७७६
कुप्य ३.	३१७७४
” ३.	३१७२२
कुप्यप्रस्थ १.	३११५३
कुप्यमाष १.	३११४४
कुप्यशाला २.	३३३२१
कुषेर १.	१३१५५
” १.	८६३३
कुषेराक्षी २.	३३३९०
कुब्जक १. २. ३.	३१७११
कुब्जा २.	३३३४९
कुमार १.	१११५४
” १.	३१७२०
” १.	३१९१०५
” १. २. ३.	३१७२
” १. २. ३.	७१७२८
” १.	८६३१
कुमारी २.	३१११०
” २.	३३३१७८
” २.	३३३२६
” २.	३१८५०
” २.	३१३६

वैजयन्तीकोषः

कुमालक १ ब.	३११२८
कुमुख १.	३१३६
कुमुद १.	२११८
” ३.	३१३४१
कुमुदबान्धव १.	२११२५
कुमुदा २.	३३३५८
” २.	३३३५८
कुमुदिनी २.	३१३४४
कुमुद्वन् १. २. ३.	३१३४३
कुमुद्वती २.	३१३४४
कुमुद्वतीशत्रु १.	२१११२
कुम्बा २.	३३३१०५
कुम्भ १.	३३३५८
” १.	३३३३९
” १.	३३३३२
” १.	५३३५६
” १.	६३३३८
” १.	८३३३५
कुम्भकर्णारि १.	१११२१
कुम्भकार १.	३१५५
” १.	३३३६७
” १.	३३३२७
कुम्भकारी २.	३३३४४
कुम्भधारिका	३३३२६
कुम्भफल १.	३३३८२
कुम्भयोगि १.	३३३५१
कुम्भशाला २.	३३३२३
कुम्भि २.	३३३५५
कुम्भिन् १.	३३३६०
” १.	३३३५३
कुम्भी २.	३३३५८
” २.	३३३४६
कुम्भीनस १.	३३३१२
कुम्भीर १.	३३३५३
कुम्भीरमक्षिका २.	२३३४६
कुम्भील १.	७३३२०
कुम्भोलखलक ३.	३३३५४
कुरङ्ग १.	३३३१४
” १.	३३३४०
कुरण्ड १.	३३३१९०
” १.	३३३३१

[ कुलिक ]

कुरण्ड १.	७१११९
कुरण्डक १.	३३३१८८
कुरर १.	२३३३४
कुररी २.	३३३६५
कुरवक १.	३३३६१
” १.	३३३६१
” १.	३३३१८९
” १.	३३३१९०
” १.	३३३१९१
कुरिन् १.	३३३३३
कुरीर ३.	७३३८
कुरु १.	३३३७८
कुरुक्षिका २.	२३३२३
कुरुल १.	३३३९९
कुरुवर्ष ३.	३३३१९
कुरुविन्द १.	३३३४०
” ३.	३३३४५
” १.	८३३२१
कुरुविस्त १.	५३३५२
कुरुवत्र १.	३३३१३३
कुरुन ३.	३३३१८७
कुल ३.	३३३११५
” ३.	३३३४९
” ३.	५३३६
” १.	५३३५४
कुलक १.	३३३५१
कुलकालक १ ब.	३३३३४
कुलचर १.	३३३३४
कुलज १. २. ३.	५३३६१
कुलटा २.	३३३४९
कुलपालिका २.	३३३४७
कुलस्त्री २.	३३३४७
कुलस्थक १.	३३३४७
” १.	३३३१२
कुलाय १.	२३३४९
” १.	८३३३६
कुलाल १.	२३३२७
कुलालकुट्ट १.	२३३२१
कुलालिका २.	३३३४४
कुलिक १.	३३३१८५
” १.	२३३३७

कुलिङ्गाटी ]

कुलिङ्गाटी २.	३१८३५
कुलिश १. २.	१३३१३
कुली २.	३३३१०४
” २.	३३३२८
कुलीन १.	३३३९४
” १. २. ३.	५३३६१
लीनस ३.	३३३१३
कुलीमक १.	३३३३८
कुलीर १.	३३३४६
” १.	८३३१४
कुल्लिधका २.	३३३४४
” २.	३३३४८
कुल्माष १.	३३३४०
” १.	२३३५३
” १.	३३३४२
” ३.	३३३४२
कुल्य १ ब.	३३३२८
” १ ब.	३३३३४
” १ ब.	३३३४०
” ३.	३३३१०९
कुल्यरुष्टी २.	३३३१०५
कुल्या २.	३३३१०५
” २.	३३३४२
” २.	३३३२९
” २.	३३३४७
” २.	५३३३०
कुव ३.	३३३३४
कुवक १.	३३३६१
( कुरुवक )	
कुवद १. २. ३.	५३३४८
कुवल ३.	३३३३४
” १. २. ३.	८३३३८
कुवल्य ३.	३३३३४
कुवलायिक १.	२३३९
कुवली २.	३३३८७
” २.	८३३३८
कुवाट १. २. ३.	३३३४६
कुवादुष्क १.	३३३२५
कुविन्दक १.	१३३५
” १.	२३३८
कुविलीन ३.	३३३३६

शब्दानुक्रमिका

कुवीणा २.	२३३१२८
कुवेणी २.	२३३४२
कुवेल ३.	३३३३४
” १.	५३३३२
कुश १.	३३३२२७
” १. ३.	६३३२४
कुशद्वीप ३.	३३३१४
” ३.	३३३१७
कुशल १. २. ३.	५३३१३
” १. २. ३.	७३३२४
कुशवट १.	३३३१४९
कुशस्थली २.	३३३३
कुशा २.	३३३१०८
” २.	३३३११४
कुशाग्रीयधी १. २. ३.	५३३२९
कुशापीड १.	३३३१४९
कुशारणि १.	३३३१५६
कुशिन् १.	३३३१५३
कुशी २.	३३३३५
” २.	३३३१३९
कुशीलव १.	३३३५८
” १.	३३३११४
” ३.	३३३१५५
” १. ३.	३३३१८४
” १. ३.	३३३२२
” १. ३.	५३३३
” १. ३.	६३३३३
” १. ३.	३३३४०
कूटयन्त्रक ३.	३३३४०
कूटशास्त्रमलि १. २.	३३३९१
कूटसाक्षिन् १. २. ३.	३३३१०
कूटस्थ १. २. ३.	५३३७९
कूटागार ३.	३३३३१
कूणिका २.	२३३१२०
कूप १.	३३३३७
” १.	३३३१७
” १.	६३३११
कूपक १.	३३३३१
कूपेपिशाचक १.	३३३४९
कूबर १. ३.	३३३२७

[ कूबर ]

कुसुम्भ ३.	३३३९१
” १.	७३३२५
कुसूल १.	३३३६४
कुस्तुम्बरी २.	३३३४९
कुस्तुम्बुर ३.	३३३५१
कुहक १.	३३३३३
” १. २. ३.	५३३२३
” १. २. ३.	७३३१०
कुहन १. २. ३.	७३३२३
कुहर ३.	३३३२
” ३.	७३३७
कुहलि २.	३३३५९
कुहिठ १. ३.	२३३१०
कुहू २.	२३३७१
कुहेडि २.	२३३१०
कुहेलि २.	२३३१०
कुहरी २.	३३३१४
कुजन ३.	२३३३
कूजित ३.	२३३३
कूट १. ३.	३३३८
” १. २. ३.	३३३५६
” १.	३३३५९
” ३.	३३३१५५
” १. ३.	३३३१८४
” १. ३.	३३३२२
” १. ३.	५३३३
” १. ३.	६३३३३
कूटयन्त्रक ३.	३३३४०
कूटशास्त्रमलि १. २.	३३३९१
कूटसाक्षिन् १. २. ३.	३३३१०
कूटस्थ १. २. ३.	५३३७९
कूटागार ३.	३३३३१
कूणिका २.	२३३१२०
कूप १.	३३३३७
” १.	३३३१७
” १.	६३३११
कूपक १.	३३३३१
कूपेपिशाचक १.	३३३४९
कूबर १. ३.	३३३२७



[ कृवर ]

कृवर १.	३७१३२
कृर ३.	४३१७५
कृरदूषक १.	३८१५४
कृर्च १.	४११५७
” १. ३.	६५१२०
कृर्चकर १.	३३१२२०
कृर्चाल १.	३३११२
कृर्चिका २.	३८११४८
” २.	७२१५
कृर्ची २.	३९११३
कृर्पर १.	४११७२
कृर्पास १.	४३१२८
कृर्म १.	३७१७६
” १.	३७१७९
” १.	४११५०
” १.	८६१३३
कृल ३.	४२१३२
” ३.	६३१५
कृलङ्का २.	४३१२३
कृलमण्डक १	४११४८
( स्थूलमण्डक )	
कृली २.	३३१८७
कृरमाण्डक १.	१११५१
” १.	३३११७०
कृकण १.	२३१३६
कृकणपत्रिका २.	३३१२३०
कृकर १.	२३१३६
कृकलास १.	४११२८
कृकवाकु १.	२३११३
” १.	३३१७९
कृकाटिका २.	४११८४
कृच्छ्र १ २. ३.	१२१३९
” १. ३.	३३१३६
कृच्छ्रक ३.	३३१३६
कृच्छ्रातिकृच्छ्र १.	३३१३८
कृच्छ्रातिकृच्छ्रक ३.	३३१३४
कृत ३.	२११९१
” ३.	३३१९८

वैजयन्तीकोषः

कृत ३.	३९१६२
” १. २. ३.	६५१२१
कृतकृत्य १. २. ३.	५४११९
कृतकोटिकवि १.	३३१७९
कृतज्ञ १.	३३१७०
कृतपुङ्गव १. २. ३.	३७१४९
कृतभी २.	४११४८
कृतमाल १.	३३१४८
” १.	३३१२८
कृतमालक १.	२३१२३
” १.	४११०६
कृतमुख १. २. ३.	५४११९
कृतवेधन १.	३३१५९
” १.	३३१६०
कृतहस्त १. २. ३.	३७१४८
कृताकृत ३.	३३१९७
कृतान्त १.	१२१३५
” १.	७१११६
कृतारु १.	३३१२७
कृतालक १.	१११५७
कृतास्त्र १. २. ३.	३७१४९
कृति २.	४११३६
कृतिन् १.	३३१२९
” १. २. ३.	५४११९
कृतोद्वाह १.	३३१८
कृत्त १. २. ३.	५४१०२
कृत्ति २.	३३१२१
” २.	४३१६०
” २.	४११०३
कृत्तिका २ ब.	२११४३
कृत्तिकापिञ्जर १.	३३१९८
कृत्तिवासस् १.	१११४२
कृत्य ३.	३३१२३
” १. २. ३.	६५१२०
” २. ३.	८११३३

[ कृष्णधूमल ]

कृत्रिम ३.	३२१२८
” १.	३८११०
” १.	३८१११
” १.	३८१२४
कृत्रिमाचारी २.	२११७६
कृत्स्न १. २. ३.	५४१८६
कृपण १. २. ३.	५४१५९
कृपा २.	३३१९२
कृपाण १.	३७१५९
कृपाणी २.	३९१३७
कृपीट ३.	७२१८
कृपीटयोनि १.	१२११६
कृमि १.	३५१३३
” १.	४११३४
कृमिकोशोत्थ १. २. ३.	४३११८
कृमिज ३.	३८१०७
कृवी १.	३९१२६
कृश १ ब.	२११३७
” १.	५३१७
” १. २. ३.	५४१५
कृशानु १.	१२११७
कृशानुरेतम् १.	१११४५
कृशारिवन् १.	२९१६३
कृपक १.	३८१२८
” १. २. ३.	७५१३१
कृपि २.	२८१३
कृपीबल १.	३७१२७
” १. २. ३.	३८१७
कृष्टक १. २. ३.	३८१२२
कृष्टि २.	६५१२४
कृष्ण १.	११११५
” १.	१११२५
” १.	३३१८३
” १.	५३१११
” १.	६५१४४
कृष्णकाक १.	२३११७
कृष्णकोहल १.	३९१५८
कृष्णद्वैपायन १.	१११३२
कृष्णधूमल १.	५३११३
” १.	५३१२२

[ कृष्णनवाम्बुद ]

कृष्णनवाम्बुद १.	२२१२२
कृष्णपाक १.	३३१८३
कृष्णपाकफल १.	३३१८३
कृष्णपिङ्गल १.	५३१२४
कृष्णपीत १.	५३१२२
कृष्णफल १.	३३१८३
कृष्णफला २.	३३११०८
कृष्णभगिनी २.	१११६२
कृष्णभूम १. २. ३.	३११४५
कृष्णभेदी २.	३८१८६
कृष्णरक्तसित १.	५३१२५
कृष्णला २.	३३११७९
कृष्णलोहित १.	५२११
कृष्णवर्ण १.	३८१४३
कृष्णवर्णा २.	४२१२९
कृष्णवर्मन् १.	१२११४
कृष्णविषाणा २.	३३११०९
कृष्णवृन्त १.	३८१४७
कृष्णवृन्ता २.	३३१९०
” २.	८२११५
कृष्णवृन्तिका २.	३३१५७
कृष्णशालि १.	३८१३३
कृष्णशिम्बि २.	३८१४७
कृष्णशृङ्गक १.	३३१४९
कृष्णसर्प १.	४१११२
” १.	४१११३
कृष्णसार १.	३३११२
कृष्णस्वसृ २.	१११६२
कृष्णाजिन ३.	३३१२१
कृष्णायस ३.	३२१३३
कृष्णिका २.	३३११८१
कृसर १.	३३१७८
” ३.	४३१४७
” १. २. ३.	४३१७९
केकर १. २. ३.	५४११३
केका २.	२३१३९
केकालि १.	२३१३८
केकिन् १.	२३१३७
केणिका २.	४३१२५

शब्दानुक्रमणिका

केण्डुक १.	४११४७
केतक १. २. ३.	३३१२२३
केतन ३.	३७१७६
” ३.	४३११९
” ३.	७३१२२
केतर २.	४३११९
केतु १ ब.	१३१३७
” १.	६१११६
” १.	८११६०
केतुमाल ३.	३११७
केदर १.	३८११७
केदार १.	३८११७
केनिपात १.	४२११६
केयूर ३.	४३११४३
केरल १ ब	३११३४
केलक १.	३९१६४
केलि १. ३.	३९१८८
केलिकिल १.	१११५१
” १.	३७११७
” १.	३९१६७
केलिकुञ्जिका २.	४३१२८
केलिसहायक १.	३७११७
केवल १. २. ३.	७५१२६
केवलिन १.	१११३५
केश १.	४३१९७
” १.	८६१११
केशकार १.	३७११७
केशकूट १.	४३११००
केशघ्न ३.	४३१२६
केशपञ्च १.	५३११८
केशपद्धति २.	४३१००
केशपाश १.	५३११८
केशपाशी २.	४३१०२
केशव १.	११११४
” १. २. ३.	५४१८
केशवप्रिय १.	३२१५
केणवायुध ३.	३७१३४
केशहस्त १.	५३११८
केशिक १. २. ३.	५४१८
केशिका २.	३३१३७
केशिन् १. २. ३.	५४१८

[ कोकिल ]

केशिनी २.	३३११६
केशी २.	४३१०२
केसर १.	३२१५
” १.	३३१२६
” १.	४३१४५
” १.	४३१३२
” १. ३.	७५१३०
केसरा २.	३३१९९
केसरिन् १.	३३१३३
” १.	७३१२१
कैकसेय १.	१२१४१
कैटभारि १.	११११५
कैटभी २.	१११६२
कैडर्य १.	३३१५०
” १.	३३१५८
कैडर्यद्वेषिन् १.	३३१७५
कैतव १.	७३१८
कैदारक ३.	५३११२
कैदारिक ३.	५३११२
कैदार्य ३.	५३११२
कैरव ३.	४२१४१
कैराती २.	३७११२
कैलास १.	३२१५
कैलासनाथ १.	१२१५६
कैवर्त १.	३५१३२
” १.	३५१९१
” १.	३९१४२
कैवर्तमुस्तक १.	३३११९९
कैवल्य ३.	३३१२८
कैशिक ३.	५३११२
कैशिकी २.	३९११०१
कैश्य ३.	५३११२
कोक १.	२३१९
” १.	३३१८
कोकनद ३.	४२१४०
” ३.	४२१४२
कोकहित १.	२३१५६
कोकाह १.	३७१९९
कोकिल १.	२३१२६
” १.	७३१२०



[ कोकिलाच ]

कोकिलाच १.	३३१०१
कोकुन्द १.	४३१७२
कोकुराह १.	३३१०५
कोटर १. ३.	३३११४
कोटि २.	४३१५२
" २.	५११२९
" २.	५११३१
" २.	६२१११
कोटिका २.	४११४९
कोटिवर्ष ३.	४३१९
कोटिश १.	३३१२९
कोटी २.	३३१३७८
कोटीर १.	४३१३५
कोट्टी २.	४३११०
कोठ १.	४३१२४
कोण १.	२११३५
" १. २. ३.	२११२९
" १. २. ३.	२११३६
" १.	४३१५२
" १.	६१११६
कोणप्रतिग्राहिन् ३.	४३१४१
कोणपिशाचक १.	४११४८
कोण्ट १.	२३१२२
कोतना २ व.	२११९९
कोट्ट ३.	३३१३७२
" ३.	३३१३७३
" ३.	७३११२
कोट्ट १.	३३१३४
कोट्ट १.	४३१३२
कोट्टव १.	३३१५४
कोप १.	३३११८३
कोपन १. २. ३.	५३१३२
कोमल १.	५३१५
कोयष्टि १.	२३१२०
कोरक १.	३३११९
कोरण ३.	२३१२
कोरदूषक १. ३.	३३१५४
कोराङ्गी २.	३३१८८
कोल १.	२११३६
" ३.	३३१८०

वैजयन्तीकोषः

कोल ३.	५११४८
" १.	५३१३४
" १.	५३१०५
" १. २. ३.	५३११४
" १. २. ३.	६१११६
" १.	६१११७
कोलक ३.	३३११०५
" १.	४१११८
कोलदल ३.	३३११०१
कोलस्वक १.	२१११२०
कोलवल्ली २.	३३१७८
कोला २.	३३१८१
" २.	६१११७
कोलाक १. २. ३.	२३१२३
कोलाङ्गक १.	३३१३३
कोलाहल १.	२३१२७
कोलि २.	३३१३७
" १. २.	८११२६
कोलिण्ट १.	३३१३६
कोविद १.	३३१२३४
कोविदार १.	३३१३७
कोश १.	२३१५०
" १.	३३१३
" १.	३३१४४
" १.	३३१३६८
" १. ३.	३३१७४
" १.	४३१६१
" १. ३.	४३१६३
" १. २. २.	६१११५
कोशफल ३.	२३११०५
" १.	३३११०५
कोशफला २.	३३११५८
" २.	३३११६१
" २.	३३११६१
कोशातकी २.	३३११५८
कोशिका २.	३३११७
" २.	४३१५७
कोष्टिका २.	३३११९६
कोष्ठ १. ३.	३३१२२
कोष्ठकारी २.	२३१३७

[ कौलटिनेय ]

कोष्ण ३.	५३१९
कोसल १ व.	३११३७
" १ व.	३११४०
" ३.	३३११७४
" १.	५३११४
कोसलानन्दिना २.	४३१५
कोहल ३.	३११२७
" १.	३१११८
कोहली २.	३३१४९
कोकुट ३.	३३११९२
" १. २. ३.	५३१२४
कौकुटिक १. २. ३.	३३११७
" १. २. ३.	८३१६
कौलेलेयक १.	३३११५९
कौट १.	३३१८०
कौटतत्त १.	३११३४
कौटिक १.	३११३७
कौटिल्य १.	३३११५९
कौतुक ३.	६३११८७
" ३.	७३११०
कौतूल १.	४३१३८
कौतूल ३.	३३११८७
कौद्रवीण १. २. ३.	३३११९
कौनृतिक १. २. ३.	५३१२२
कौन्तिक १. २. ३.	३३११४४
कौन्ती २.	३३११५
कौपीन ३.	४३१२९
" ३.	७३१३३
कौबेरी २.	२१११५
कौमारी २.	१११६५
कौमुद १.	२११८६
कौमुदी २.	२११२८
कौमोदकी २.	११११८
कौम्भ ३.	३३११३८
कौरक्या २.	२३१२८
कौलकुस्य ३.	४३१११५
कौलटिनेय १.	४३१४४

कौलटेय ]

कौलटेय १.	४३१४४
" १.	४३१४४
कौलटेर १.	४३१४४
कौलीन ३.	७३१३३
कौलेयक १.	३३१७०
" १. २. २.	५३१६१
कौश ३.	४३१६
कौशिक ५.	४३१११०
( कौशिक )	
" १.	७३११७
कौशिकी २.	८३११४
कौशेय १. २. ३.	४३११८
कौपीतकी २.	३३११५३
कौसल्यानन्दवर्धन १.	१११२१
कौसीय ३.	३३११७८
कौस्तुभ १.	११११७
कौहोल ३.	३३११८२
क्रकच १.	३३११५६
" १. ३.	३३१३६
क्रकचिक १.	३३११५३
क्रतु १.	५३११४
क्रतुभुज् १.	१११३३
क्रत्वन्नि १.	१३१२३
क्रथन ३.	४३१२७
क्रन्दन ३.	२३११०
" ३.	७३१३६
क्रन्दित ३.	३३११८७
क्रपुक १.	३३१६९
क्रम १.	३३१११३
" १.	३३१११३
" १.	४३१३१
क्रमण १.	३३१७९१
" ३.	४३१५६
क्रमुक १.	१३१३२
" १.	३३१२१७
क्रमेलक १.	३३१६७
" १.	३३१४५
क्रय १.	३३१६९
क्रयविक्रयिक १.	३३१७२

शब्दानुक्रमणिका

क्रयिक १. २. ३.	३३१६८
क्रय १. २. ३.	३३१६८
क्रय ३.	४३११०६
क्रयाद् १.	१३१२२
" १.	१३१४०
क्रयाद् १.	१३१४०
क्राकचिक १.	३३११५६
क्राथ १.	४३११२७
क्रान्ति २.	५३११६
क्रामणक १.	३३११३०
क्रायिक १. २. ३.	३३१८८
क्रासन १.	५३११
क्रिमि १.	४३११५३
क्रिमिज ३.	३३११७
क्रिमिपर्वत १.	३३११४८
क्रिमिर १.	५३१२५
क्रिमिरा २.	३३१२६
क्रिया २.	३३११२३
" २.	५३११
" २.	६३११
क्रियावत् १. २. ३.	५३१७४
क्रीडा २.	३३१८७
" २.	२३१८८
क्रुञ्च १.	२३१३४
क्रुध् २.	३३११८३
क्रुधा २.	३३११८३
क्रुष्ट ३.	२३१८७
क्रूर १.	३३१२१७
" ३.	४३११०८
" ३.	५३११५
" ३.	५३१३७
" १. २. ३.	५३१२४
" १. २. ३.	५३१६०
" १. २. ३.	६३१४३
क्रुरा २.	३३१८७
क्रुणी २.	३३१६९
क्रुतव्य १. २. ३.	३३१६८
क्रुतृ १. २. ३.	३३१६८
क्रुय १. २. ३.	३३१६८
क्रुड १.	२३१३५

[ क्राथन ]

क्रोड ३.	५३१४९
" १. २. ३.	६३१२३
क्रोडीकरण ३.	४३११७०
क्रोध १.	३३११८३
" १.	६३१७६
क्रोधन १.	३३१६९
" १. २. ३.	५३१३२
क्रोधविवशा २.	३३१४७
क्रोश १.	२३१३३
" १.	३३१६२
क्रोष्टु १.	३३१३२
क्रोष्टुककटि ३.	३३११६९
क्रोष्टुमेखला २.	३३११६७
क्रौञ्च १.	२३११०
" १.	२३१३४
क्रौञ्चारि १.	१३१५७
कलम १.	५३१२८
कलमथ १.	५३१२८
कलान्ति २.	५३१२८
विलज्ज १. २. ३.	५३११३३
विलष्ट १. २. ३.	५३११३३
वलीतक ३.	३३११०३
वलीतकी २.	३३१११०
वलीव १. २. ३.	३३११४७
" १.	४३१३३
वलेदन् १.	६३११६
वलेदु १.	२३१२६
वलेश १.	३३११९३
वलेशित १. २. ३.	५३११३३
कलोमन् ३.	४३१११२
कण १.	२३१११
कणक १.	४३११३५
कणन ३.	२३१११
कणित ३.	२३१११
कथन ३.	५३११३१
कथित २.	५३१११५
कण १.	२३१११
कथ १.	४३११४१
कथन ३.	३३१२१५
" ३.	५३१४१



[ काथसम्भव ]

काथसम्भव ३.	३२१४३
काथि १.	३२१५२
क्षण १.	२११५४
॥ १.	३२१६२
॥ २.	४११२७
॥ १.	५२१७
॥ २.	५४१११
क्षणदा २.	२११५६
क्षणन ३.	३२१२४
क्षणा २.	४३१२६
( कणा )	
क्षणांशु २.	२२१४
क्षणिका २.	२२१४
क्षणितु १.	३२१२७
क्षत ३.	३२१२७
क्षतज ३.	४११०५
क्षतव्रत १. २. ३.	
	३२१३३
क्षत्त १.	३२१८५
॥ १.	३२११६
॥ १.	३२१२४
॥ १.	३२१३७
क्षत्र १.	३२११
क्षत्रकुण्ड १.	३२१६२
क्षत्रिय १.	२५१२
॥ १.	३२११
क्षत्रियगोलक १.	३२१६२
क्षत्रिया २.	४११२३
क्षत्रियाणी २.	४११२३
क्षत्रिया २.	४११२२
क्षपण १. २. ३.	५४११५
क्षपा २.	२११५६
क्षम १. २. ३.	६४१३
क्षमा २.	१११४७
॥ २.	३१११
॥ २.	३२१८४
क्षमित् १. २. ३.	५४१३३
क्षमिन् १. २. ३.	५४१३३
क्षय १.	३२१७५
॥ १.	४३१९९
॥ १.	४४१२४

वैजयन्तीकोषः

क्षय १.	५२१३२
॥ १.	५४११४
क्षयि १.	२३१९
क्षरि २.	३१११
क्षरिन् १.	२११८८
क्षव १.	४११२१
क्षवथु १.	७१११८
क्षणिन् १.	३२१२२
क्षणिनी २.	२१११
( क्षणिनी )	
क्षणी २.	२११२७
क्षान्त १. २. ३.	५४१२५
क्षान्ति २.	३१११
क्षाम १.	१२१२१
॥ १. २. ३.	५४१८४
क्षार १.	३२१२७
॥ १.	३२१२९
॥ १.	५३१३०
॥ १.	५४१३३
क्षारक १.	७१११६
क्षारण ३.	२४१३३
क्षारपत्रक १.	३२११५४
क्षारमृत्तिका २.	३२१२५
क्षालन २.	३२१८७
क्षिति २.	६२१८
क्षितिसम्भवा २.	३४१४२
क्षिपण १.	७११२१
क्षिपणु १.	७११२१
क्षिपा २.	५२१३३
क्षिस १. २. ३.	५४१६७
॥ १. २. ३.	५४१९७
क्षिप्नु १. २. ३.	५४१४०
क्षिप्र १.	२३१९९
॥ ३.	४४११०८
॥ १. २. ३.	५४१२४
क्षिप्रा २.	५४१८४
क्षीब १. २. ३.	५४१३७
क्षीर ३.	३२१४५
॥ ३.	६३१४
क्षीरक १.	४११२०
क्षीरज ३.	३२१३९

( ४४ )

[ क्षुर ]

क्षीरबीज १.	४२१४८
क्षीरविदारी २.	३२१९६
क्षीरशर १.	३२१९८
॥ १.	३२१९७
क्षीरशुक्ल १.	४२१४८
क्षीरशुक्ला २.	३२१९६
क्षीराग्नि १.	३११११
क्षीराश १.	२३१७
क्षीराहार १. २. ३.	
	३२१३४
क्षीरिका २.	३२१८०
क्षीराद १.	३११११
क्षीरोदसुता २.	१११३६
क्षुण्ण १. २. ३.	५४१४९
क्षुण्णक ३.	३२१३९
क्षुत् २.	४४१२१
क्षुत १.	४४१२१
क्षुद १.	३२१२६
क्षुद्र १.	४११३९
॥ १. २. ३.	५४१०९
॥ १. २. ३.	६५१३३
क्षुद्रक ३.	३२१२२
॥ ३.	३२१३४
क्षुद्रघण्टा २.	४३१४५
क्षुद्रनासिक १. २. ३.	
	५४१११
क्षुद्रनीवृत् १ ब.	३११४१
क्षुद्रपत्तिन् १.	२३१४१
॥ १.	२३१४८
क्षुद्रहंस १.	२३१९
क्षुद्राण्ड १.	४११४५
क्षुद्रोपाय १.	३२११२
क्षुध् २.	३२१८२
क्षुधा २.	३२१४२
क्षुधाभिजनन १.	३२१४२
क्षुधित १. २. ३.	५४१३६
क्षुप १.	३३१६
॥ १.	३२१६३
क्षुमा २.	३२१४५
क्षुर १.	३२१०१
॥ १.	३२१४१

[ क्षुर ]

क्षुर १.	३२१२६
क्षुरक १.	३२१०१
क्षुरकर्मन् ३.	३२१४
क्षुरप्र १.	३२१८२
क्षुरमर्दिन् १.	३२१२६
क्षुरसमुद्र ३.	४३१०८
क्षुरिका २.	३२१६३
क्षुल्लक १. २. ३.	७११९
क्षुल्लतात १.	३२१०८
॥ १.	४४१३२
क्षुव १.	४४१९९
क्षेत्र ३.	३२११७
॥ ३.	४४१३५
॥ ३.	४२१५२
क्षेत्रज्ञ १.	३२१६१
क्षेत्राज्जीव १. २. ३.	३२१४
क्षेत्रिक १.	३२११०
क्षेत्रिय १. २. ३.	७१११०
क्षेत्रिया २.	३२१६०
क्षेप १.	५२१२२
क्षेपण १.	४४१५८
॥ ३.	५२१३३
॥ ३.	५२१४०
क्षेपणी २.	४२११७
क्षेपणीय १.	३२१६६
क्षेम १.	६५१२२
क्षेमङ्कर १. २. ३.	५४१५५
क्षेत्र ३.	५१११२
क्षैर्यी २.	४३१७७
क्षोड १.	३२१६२
क्षोणी २.	३१११
॥ २.	३२११७
क्षोद १.	६११३३
क्षोभ्य ३.	३२१३१
क्षौद्र ३.	३२१३५
क्षौम १. ३.	४३१३३
॥ १. २. ३.	४३११७

शब्दानुक्रमिका

क्षौम ३.	४३१२२
क्षौरकार १.	३२११७
क्षणुत १. २. ३.	३२११७
क्षणू २.	३२१२९
क्षमा २.	३१११
क्षमाभृत् १.	३२११
क्षिवङ्क १.	३२१४१
क्षवेड १.	२४११
॥ १. २. ३.	६५१२१
॥ १. ३.	८११३१
क्ष्वेल १.	४११२२
॥ १.	४११२२
ख	
ख ३.	२१११
॥ ३.	८३११९
॥ ३.	८६१४
खग १.	२१११४
॥ १.	२३१३३
॥ १.	२३१३२
॥ १.	३२१७८
॥ १.	६१११८
खगच्छाय ३.	८१११९
खचित १. २. ३.	५४१७८
खजक १.	३२१३१
खजाका २.	४३१६३
खज्ज १.	३२१२०८
॥ १.	३२१६
॥ १. २. ३.	५४११४
खज्जन १.	२३१२३
खज्जरीट १.	२३१२३
खज्जरीटी २.	२३१३४
खट १.	५३१४
खटी २.	३२११६
खट्वास १.	३४१३५
खट्वासिका २.	३४१३५
खट्वा १.	४३१६४
खट्वाङ्ग १.	१११५९
खट्वाङ्गिन् १.	१११४६
खड्गिका २.	४३१४२
खड्ग १.	३२१४७
॥ १.	३२१५८

( ४५ )

[ खर ]

खड्गनामान् १.	४११५१
खड्गपत्र १.	३२१२२६
खड्गपुच्छ १.	४११५१
खड्गाङ्ग १.	१२१३१
खड्गाङ्गु ३.	३२१६१
खड्गिन् १.	३२१४७
खण्ड ३.	३२११९
॥ १. ३.	३२१३४
॥ १. ३.	४३१५६
॥ १. २. ३.	५४१८६
॥ १. २. ३.	६५१२५
खण्डना २.	३२१५३
खण्डपरशु १.	१११४३
खण्डपर्कट ३.	४३११०६
खण्डल १. ३.	४३१३०
खण्डशर्करा २.	३२१३३
खण्डिक १.	३२१४३
खण्डिका २.	३२१३२
खण्डित १. २. ३.	
	२४१२०
खण्डिता २.	२११६०
खण्डिन् १.	३२१३८
खण्डीर १.	३२१३६
खण्डिलक १.	१२११४
खदरी २.	३२१४८
( खद्री )	
खदिका २.	४३१६७
खदिर १.	१२१६
॥ १.	३२१६३
खद्योत १.	२३१४७
खनक १.	३२१४०
॥ १.	४११३१
॥ १. २. ३.	७११३३
खनि २.	३२११८
खनित्र ३.	३२१२८
खनित्री २.	३२१२३
खपुट १. २. ३.	३२१३२
खपुर १.	३२१११
॥ १.	३२१२२
॥ १.	७११२२
खर १.	३२१३९



## [ खर ]

खर ३.	३१३२१८
" १.	३१३२२८
" १.	३१४६५
" १.	५३३३
" १.	५३३५
" १.	५३३७
" १.	५३३८
" ३.	८६६६
खरक १.	२१४१०
खरकुटी २.	४३३२५
खरकोमल १.	२११८४
खरकाण १.	२३३३५
खरच्छुद १.	३१४२२९
खरट १.	५३३४
खरटी २.	३१३२६
खरणस् १. २. ३.	५३३१२
खरणस १. २. ३.	५३३१२
खरमञ्जरी २.	३३३११५
खरमुख ३.	३१११२५
खरम्भर १ व.	३१३२३
खरागरी २.	३३३८६
( खरा, गरी )	
खरारि १.	११३२१
खराशवा २.	३१८१०२
खर १. २. ३.	३१६१२
" १.	६१११८
खरञ्जक १. ३.	३१५१०
खरहा २.	३३३१३२
खरुल १.	४३३७६
खर्जनी २.	३१६१०९
खर्जू २.	४३३१२४
खर्जूर ३.	३३३१३
" ३.	३३३२४
" १.	३३३२२२
" १.	४३३३३
खर्जूरिका २.	३३३२२२
खर्व ३.	५३३२८
" १. २. ३.	५३३८१

## वैजयन्तीकोषः

खल १.	३१८३१
" १. २. ३.	३१८१४२
" १.	५३३२५
खलकुल ३.	३१८४७
खलति १. २. ३.	४३३१४७
खलधान ३.	३१८३१
खलपू १. २. ३.	३१८६७
खला २.	६१५२५
खलि २.	३१९२७
" २.	४३३८१
खलिनी २.	५३३१२
खलीन १. ३.	३१७११३
खलु ४.	८१७२०
खलुकी २.	३३३१८८
खलुष १.	५३३३४
खलूरिका २.	३१७१९४
खलेपाली २.	३१८३१
खल्या २.	५३३१२
खल्व १.	३१८४६
" ३.	४३३६०
खलवाट १. २. ३.	४३३१४७
खलुक १.	५३३५३
खष १.	३१५४९
" १.	३१५५६
" १.	५३३५२
खस १.	४३३१२३
खसुम ३.	३१७४७
खाङ्क १.	२१११३४
खाटि १.	३१७२१६
खाङ्गिक १. २. ३.	४३३१४६
खाण्डवप्रस्थ १. ३.	३१७१४४
खातक ३.	४३३१८
खादन ३.	४३३१०४
" १.	४३३८८
खादित १. २. ३.	५३३१०७
खाद्य ३.	४३३११

( ४६ )

## [ खोड ]

खाध्वनीन १.	२१११४
खारी २.	५३३५७
" २.	५३३५७
" २.	५३३६३
खारीक १. २. ३.	३१८२२
खाषेय १.	१३३१
खिल ३.	३१६३३
" १. २. ३.	३१८१८
खिलखिल १.	२३३४०
खुडार १.	३१८४४
खुडुक १.	३३३२२१
( खुल्लक )	
खुर १.	३३३७४
" १.	३१८१०१
खुरणस् १. २. ३.	५३३११
खुरणस १. २. ३.	५३३११
खुरुराह १.	३१७१०५
खेचर १.	१३३३
" १.	७३३२२
खेट १. ३.	४३३११
" १. २. ३.	५३३७५
" १. २. ३.	६३३२४
खेटक ३.	३१७१९७
" ३.	४३३१३
" १.	४३३८०
" १.	४३३१३१
खेटन ३.	३१९४०
खेटिन् १. २. ३.	४३३१४६
खेद १.	५३३३२
खेय ३.	४३३१३
खेल १.	३३३२१५
खेला २.	३१९८७
खेलि १.	३१८४४
खेलाह १.	३१७१०३
खोङ्गाह १.	३१७१९
खोड १.	२३३३५
" १. २. ३.	५३३१४

## [ खोरण ]

खोरण १.	५३३३
खोलक १.	७३३२३
ख्यातगर्हण १. २. ३.	३१६११
ख्याति २.	२३३३६
" २.	३१६१६३
ग	
गगन ३.	२३३११
गङ्गा २.	४३३२४
गङ्गाधर १.	१३३४२
गङ्गेष्टि २.	४३३५७
गच्छ १.	५३३३७
गज १.	३१७६०
गजचिह्निका ३३३१७२	
गजच्छाया २.	२३३३१
गजजीवन १.	३१७८८
गजता २.	५३३१९
गजमण्डन १.	३१७८६
गजवीथिका २.	२३३४८
गजानन १.	१३३५३
गजाराति १.	३३३३२
गज्ज १. २. ३.	६३३२६
गज्जम ३.	२३३२
गज्जाः २.	३२३१०
गड्ड १.	४३३३३३
" १. २. ३.	६३३२९
गड्डल १. २. ३.	५३३११
गड्डची २.	३१८४५
गड्डोल १.	४३३१०१
गण १.	३१७५८
" १.	५३३११
" १.	६३३१९
" १	८३३१३
गणक १.	३१७२५
गणतिथ १. २. ३.	५३३१९
गणन ३.	५३३३६
गणपतिप्रिय १.	१३३५१
गणपूरण १. २. ३.	५३३१९
गणरात्र ३.	२३३५९

## शब्दानुक्रमणिका

गणाधिप १.	१३३५४
गणि १.	३१६८२
गणिका २.	३१७३३
" २.	४३३२४
" २.	७३३७
गणिकागण १.	५३३१८
गणिकारी २.	३३३८६
गणोत्साह १.	३३३८
गण्ड १.	३१७७५
" १.	४३३९०
" १.	४३३१२३
" १.	५३३३७
" १.	६३३२०
गण्डक १.	३३३३७
" १.	३१७११६
" १.	४३३४५
गण्डकली २.	३३३१४८
गण्डफली २.	८३३५
गण्डमाल १	४३३१२९
गण्डमालहन् १.	३३३७७
गण्डरी २.	३३३१९८
गण्डशैल १.	३३३१९
गण्डरी २.	३१८७८
गण्डुक १.	४३३१६२
गण्डूपद १.	४३३५९
गण्डूष १.	४३३७८
" १. ३.	७३३३४
गण्डूषक १.	३१७७०
गण्डोर १.	४३३१०१
गण्डोली २.	२३३४६
गति २.	३३३२३६
" २.	४३३१३३
" २.	५३३१०
" २.	६३३११
" २.	८३३५
गद १. २.	६३३२९
गदाग्रज १.	१३३२५
गदापाणि १.	१३३३३
गद्वद १. २. ३.	२३३५५
गद्वदस्वर १.	३३३८
गद्यपद्यमयी २.	२३३४२

( ४७ )

## [ गमन ]

गन्त्री २.	३१७१२७
" २.	४३३१०८
गन्ध १.	५३३१२
" १.	५३३५४
" १.	६३३२२
गन्धक १.	३३३१४
( गन्धिक )	
गन्धकुटी २.	३१८१८
गन्धचेलिका २.	३३३३६
गन्धन ३.	७३३१३
गन्धनाकुला २.	३१८१७
गन्धमुण्डक १.	३३३५९
गन्धमृग १.	३३३३५
गन्धरस १.	३३३१५
गन्धर्व १.	१३३३८
" १.	१३३२
" १.	३३३३२
" १.	७३३२४
गन्धर्वगण १.	१३३११
गन्धर्वहस्त १.	३३३६५
गन्धर्वह १.	१३३३७
" १. २.	८३३७
गन्धवाह १.	१३३३७
गन्धसार १.	३१८११३
गन्धसारण १.	५३३४९
गन्धसोम ३.	४३३४१
गन्धाखु २.	४३३३२
गन्धाश्मन् १.	३३३१४
गन्धाहिक १.	४३३१८
गन्धिक १.	५३३५१
" १.	५३३५४
गन्धिघना २. १. ३.	
" १.	२३३३९
गन्धिनी २.	३१८१८
गभस्ति १.	२३३१३
" १.	२३३१६
" १. २.	८३३२५
गभीरक १. २. ३.	४३३१९
गम १.	५३३१०
गमन ३.	५३३१९
" ३	५३३१०



[ गमि ]

गमि १.	३१६२०१
( निमि १ )	
गम्भारी २.	३१३१५८
गम्भीर १. २. ३.	३१२१२०
" ३	८३११७
गर १.	४११२२
" १.	४११८३
गरल १.	३१३१५०
" १.	४११२२
गरवायु १.	११२१५३
गरह ३.	३१६१७७
गरी २.	३१३१८६
गरुड १.	१११३७
गरुडध्वज १.	११११४
गरुडा २.	४१११०१
गरुत् १.	२१३१४८
गरुत्मत् १.	१११३७
" १.	७११२४
गरुल १.	४१२१४७
गरोलिका २.	४१२१४८
गर्गर १.	३१५३३४
गर्गरी २.	३१५३२
" २.	४३२२७
गर्ज १.	२१४३
" १.	३१७१६०
गर्जन ३.	२१४३
" ३.	३३२२०६
गर्जना २.	२१४३
गर्जा २.	२१४३
गर्जित २.	२१२१५
" १.	७१५३४
गर्त २.	४१२३
गर्तकुङ्कुट १.	२१३२१
गर्तिका २.	४३२२२
गर्वनक १.	३१४६६
गर्वभ १.	३१४६५
गर्वभाण्ड १.	३३१५९
गर्वभाह्वय ३.	४१२४१
गर्वन १. २. ३.	५१४३५
गर्वना २.	३१६१८०
गर्म १.	३१८११४

वैजयन्तीकोषः

गर्भ १	४१४१४०
" १.	४११२१
गर्भक ३.	२११५८
( गर्भित )	
" ३.	४३११५५
गर्भपाकिन्	३१८३४
गर्भस्फुट १.	४११११३
गर्भागार १.	४३१५१
गर्भाजि १.	३१६१५७
गर्भाधान ३.	३१६१२
गर्भाशय १.	४१४१८
गर्भिणी २.	४१४१६
गर्भोपघातिनी २.	३१४४७
गर्मुट १.	३१५३०
गर्मुटिका २.	३१८५९
गर्मुत् २.	३१८५९
" २.	६१११८
गर्भ १.	३१६१६९
गर्भवहारिका २.	२१४२८
गर्वि २.	३१६१६९
गर्वित १. २. ३.	५१४२०
गर्वण ३.	२१४३३
गर्वणा २.	३१६१९३
गर्हा २.	३१६१९३
गर्ह्य १. २. ३.	५१४७५
गर्ह्यवादिन् १. २. ३.	५१४७७
गल १. २. ३.	४१४८३
गलकम्बल १.	३१४६०
गलगण्ड १.	४१४१२९
गलन्ती २.	४३१५७
गलस्तनी २.	३१४६२
गलाङ्कुर १.	४१४१२९
गलित १. २. ३.	५१४१०२
गलेवाल १.	४१४१२
गल्या २.	५१११४
गल्ल १.	४१४९०
गल्वर्त १.	३१५५३
गवय १.	३१४३३
गवल १.	३१४११

[ गान्धर्व ]

गवल ३.	३१८११८
गवसी २.	३३११२३
गवाक्ष १.	४३१५४
गवाक्षक ३.	४३१५३
गवाक्षी २.	३३११३४
" २.	३३११७३
" २.	३३११८३
गवादिनी २.	३२११४९
गवीधुका २.	३१८५९
गवेधु २.	३१८६१
गवेधुका २.	३१८६१
गवेधुणा २.	३१६१२१
गवेधित १. २. ३.	५१४१८
गव्य ३.	३१८१४५
गव्या २.	३१६१२
" २.	५१११३
" २. ३.	६१५२६
गव्यूत ३.	३१६१२
गव्यूति २.	३१६१२
गहन ३.	३३११
" ३.	८३११७
गह्वर ३.	७३११५
" ३.	८३११७
गाङ्गी २.	२११७६
गाङ्गेय १.	१११५६
" १. ३.	७१५३५
गाङ्गेरुकी २.	३१८६१
गाढ १. २. ३.	५१४१३२
गाढास्य ३.	३१८१४१
गाणिक्य ३.	५११८
गाण्डव १. ३.	३१७१७४
" १. ३.	७१५३५
गाण्डवीव १.	७१५३५
गातु १.	२१४२
गात्र ३.	३१७७५
" ३.	४१४५२
" ३.	४१४५५
गात्रसङ्कोचिन् १.	३१४७२
गान ३.	२१४२
" ३.	३१९१०९
गान्धर्व १.	१३२२

धर्व ]

गान्धर्व ३.	३१६१२९
" ३.	३१९११०
गान्धार १ ब.	३११२४
" १.	३१९१३२
गायत्र १.	३१६१८
" ३.	३१६३४
गायत्री २.	३१६३४
गारुड ३.	३२११९
गारुत्मत् ३.	३२१३८
गार्भिण ३.	३१६३३
" ३.	५११८
गार्हपत्य १.	११२२४
गालव १.	३३१३९
" १.	३३१५२
गालि २.	२१४३३
गिरि २.	१११९
गिरि १.	३२११
" ३.	३१८१९६
" १.	४३११६१
गिरिकर्णिका २.	३१११
गिरिकर्णी २.	३३११३४
गिरिका २.	४११३२
गिरिकोलि २.	३३१७८
गिरिजा २.	४१२२२
गिरिप्रिया २.	३३११०५
गिरिमल्लिका २.	३३१७३
गिरिलक्ष्मण १.	३३२२८
गिरिश १.	१११३९
गिरिसार १.	३२१३४
गिरिस्तनी २.	३११३
गिरीयक १.	४३११६२
गिरीश १.	१११३९
गिल १.	३१५१५
गीत ३.	३१९१०९
गीतिशासन ३.	३१६१२९
गीत्युपक्रम १.	३१९१४०
गीर्ण १. २. ३.	५१४१०६
गीर्वाण १.	१११२
गीष्पति १.	२११३३
गुम्गुल १.	३३१५३
गुच १.	२१८६३

शब्दानुक्रमिका

गुच्छ १.	३३२२०
" १.	४३११४०
गुच्छा २.	३१८३५
" २.	३१८६०
गुच्छार्ध १.	४३११४०
गुञ्ज १.	३३२२०६
गुञ्ज ३.	२१४२
गुञ्जा २.	३३११७९
" २.	५११४४
" २.	६१२११
गुड १.	३३२२७
" १.	४३१०९
" १.	४३१६१
" १.	४१४६२
" १.	४१४१३३
" १. २.	६१५२७
" ३. २.	८१९३२
गुडक १.	४३१४७
गुडजूष १.	४३१९६
गुडपुष्प १.	३३१४४
गुडफल १.	३३१४५
गुडा २.	६१५२७
" २.	८१९३३
गुडाका २.	३१६१९७
गुड्वीर २.	३३११३१
गुडेरक १.	४३११०९
गुण १.	३३११६२
" १.	३१९३०
" १. २. ३.	४३१९३
" १.	५१३१
" १.	५१४६४
" १.	६११२०
गुणग्राम १.	५११६७
गुणलयनी २.	४३११२५
गुणवृक्ष १.	८१६२०
गुणवृक्षक १.	४३११७
गुणसामान्य ३.	३३११६२
गुणावली २.	३१४३६
( गुणापणी )	
गुणित १. २. ३.	२१४२२
गुणोत्कर्ष १.	५१२३

[ गुहाशय ]

गुण्डा २.	३३३१५
गुण्डित १. २. ३.	५१४११३
गुद ३.	४१४६०
गुदग्रह १.	४१४१३२
गुदानिल १.	३३२२०५
गुध १.	३१८१३३
गुन्दिल १.	२१४१०
गुन्द्र १.	३३३२२८
गुन्द्रा २.	३३३६६
" २.	३३३१९९
" २.	३१८६०
गुप्त १. २. ३.	५१४१००
गुप्तराग १.	३३३२२५
गुप्ति २.	६१२११
गुम्फ १.	५१३३९
गुण ३.	५१३३४
गुरु १.	१११३४
" ३.	३३२२८
" १.	३३२२२
" १.	३१८५३
" ३.	३१८१३९
" १. २. ३.	६१५२७
गुरुपत्र ३.	३३२३२
गुरुस्वभृत् १. २. ३.	५१४२५
गुलिन् १.	५१४२५
गुलुच्छ १.	३३३२०
गुल्फ १.	४१४५७
गुल्फशीर्ष १.	४१४५७
गुल्म १.	३३३७
" १.	५१३५८
" १.	४१४११३
" १.	५१४१३०
" १.	६१११९
गुल्मिनी २.	३३३७
गुवाक १.	३३३२१७
गुह १.	१११५५
गुहा २.	३३२६
" २.	३३३१३६
गुहाख्य १.	३३३८०
गुहाशय १.	४११५०



[ गुहाशय ]

गुहाशय १.	८११२१
गुहय ३.	४१४६२
„ १. २. ३.	५१४१२०
„ १. २. ३.	५१४१२०
गुहयक १.	११३३
„ १.	८११५६
गुहयकेश्वर १.	११३५७
गुहयधारा २.	४१४६३
गुहयबन्ध १.	४१३१३१
गुहयमध्य १.	४१४६२
गू १. २.	८१५३८
गूढकोश १.	११२६०
गूढपद ३.	३१६१७३
गूढपाद १.	४११६
गूढपुरुष १.	३१७२६
गूढवृत्त १.	३१३५५
गूध १.	४१४११९
गून १. २. ३.	५१४११३
गृजन १.	३१३५७
„ १.	३१३२०४
„ १.	३१३२०६
„ १.	३१३२०७
गृण्डिव २.	३१३३९
गृधु १. २. ३.	५१४३५
गृध्र १.	२१३३०
गृष्टि २.	३१३५८
„ २.	३१४४८
गृह ३.	४१३१९
„ १ व.	४१४३५
गृहकाण्ड १.	३१८७८
गृहकारिका २.	२१३४३
गृहगोधिका २.	४१३३०
गृहगौलिका २.	४१३३०
गृहजालक १. २. ३.	३१९८६
गृहदुम १.	३१३५४
गृहपति १.	११२२४
„ १.	३१७२७
गृहमणि १. २.	४१३१६१
गृहसृग १.	३१४६९
गृहमेधिन १.	३१६४०

वैजयन्तीकोषः

गृहयालु १. २. ३.	५१४३८
गृहश्रेणी २.	४१३४६
गृहस्थ १.	३१६४०
गृहस्थूण ३.	४१३३९
„ ३.	८१९२२
गृहान्तर ३.	३११५२
गृहावग्रहणी २.	४१३४४
गृहिणी २.	२१३४६
„ २.	४१४२१
„ २.	७२१७
गृहिन् १.	३१६४०
गृहीति २.	३१६१६५
गृहेडिका २.	४१३३६
गृहेश्वर १.	५१४७०
गृहोच्छिष्ट १.	३१३२०४
गृहोदक ३.	४१३८१
गृह्य १.	२१३५
„ १. २. ३.	६१४५
गृह्यक १.	५१४२८
गैय ३.	११९१०९
गैह १. ३.	४१३१९
गैहेनदिन् १. २. ३.	५१४७०
गैरिक ३.	३१२११
„ ३.	३१२२०
गैरुष १.	३१५३३
गैरेय ३.	३१२१६
गैरेयक ३.	३१३२१९
गौ १.	११३२
„ २.	११३९
„ २.	३१३४१
„ १.	३१४५२
„ २.	३१४५२
„ १. २.	८१५३७
गोकण्टक १.	३१३१४१
गोकरीषेन्धन ३.	३१६९७
गोकर्ण १.	३१४१५
„ १.	५१३८०
गोकर्णी २.	३१३११४
गोकुल ३.	३१४६१
गोकृच्छ्र ३.	३१६१३९

[ गोनस ]

गोक्षुर १.	३१३१४१
गोगण १.	११११३
गोग्रन्थि १.	३१४६०
गोगन्धन १.	११२५४
गोचर १.	५१३२
गोजिह्वा २.	३१३११६
„ २.	३१८६०
गोडुम्बा १.	३१३१७३
गोणिका २.	५११५८
गोणी २.	४१३१३०
„ २.	५११५६
„ २.	५११६३
गोतम ३.	३१७१७४
गोत्र १.	३१२११
„ ३. २.	६१५२८
गोत्रभिद् १.	११२३
गोत्रा २.	५१११३
„ २.	६१५२८
गोदर्भ ३.	३१३२०१
( गोनर्द )	
गोदा २.	४१२२८
गोदारण ३.	३१८२७
„ ३.	३१८२९
गोदावरी २.	४१२२८
गोदुह १.	११३१२
„ १.	३१९२८
गोध १.	३१५१
„ २. ३.	३१७१५५
गोधन ३.	३१४६१
गोधा १.	३१५१
„ २.	३१७१५५
„ २.	४१३२६
गोधामाली २.	४१११८४
गोधासन ३.	३१६२२०
गोधि २.	४१४९६
गोधूम १.	३१८५३
गोधूमचूर्ण ३.	४१६८८
गोनर्द १.	२१३३३
गोनर्दीय १.	३१६१५७
गोनस १.	४१११३
„ १.	४१११४

[ गोनस ]

गोनास १.	४१११४
गोनिषदन ३.	३१६२२५
गोप १.	३१७२२
„ १.	३१९२८
गोपघोष्ठा २.	३१३८८
गोपति १.	३१४५३
„ १.	७१३२४
गोपभद्रा २.	३१३५७
गोपा २.	३१३१३९
गोपानसी २.	४१३३९
गोपायित १. २. ३.	५१११००
गोपाल १.	३१९२८
गोपाली २.	३१६५६
गोपुच्छ १.	४१३१४१
गोपुर ३.	३१३२०१
„ ३.	४१३१५
गोप्य १.	३१९३
„ १. २. ३.	६१५२९
गोमत् १. २. ३.	३१४५९
गोमत ३.	३१३६२
गोमतल्लिका २.	३१४४६
गोमती २.	४१२२९
गोमय १. ३.	३१४६०
गोमायु १.	३१४३८
गोमिन् १. २. ३.	३१४५९
गोमुख १.	४११५३
„ १. ३.	७१५३६
गोरक्षजम्बू २.	८१२११
गोरक्षतण्डुल १.	३१८६२
गोरस १.	३१८१३९
„ १.	३१८१४९
गोरुत ३.	३१९६२
गोर्गल १.	३१३२३३
( होर्गल )	
गोर्द ३.	४१३११२
गोल १.	३१२१५
„ ३.	४१३८२
गोलक १.	३१५६०
„ १.	३१५६२
„ १.	३१५६३

शब्दानुक्रमणिका

„ १.	३१५६३
„ १.	७१२२३
गोलका २.	७२१७
गोलत्तिका २.	२१३२४
गोलपुस १.	३१४३२
गोला २.	३१२१७
गोलाङ्गूल १.	३१४४०
गोलोक १.	३१६२०७
गोलोमी २.	३१३१९७
„ २.	३१३२३३
गोवन्दिनी २.	३१३६६
गोवादिन् १.	३१४३३
गोविन्द १.	११११५
„ १. २. ३.	२१४५९
गोवीथी २.	२११४७
गोवृष १.	३१४५४
गोव्रत ३.	३१६१४८
गोशकृत् ३.	३१४६०
गोशाल १. २. ३.	८१९३४
गोशाला २.	४१३२२
गोशीर्ष ३.	३१८११३
गोष्ठ १.	३१९३१
गोष्ठवातिङ्गन १.	३१३१०३
गोष्ठश्च १. २. ३.	५१४२६
गोष्ठी २.	३१८१३
गोष्पद १. २. ३.	७१५३७
गोसङ्ख्य १.	३१९२८
गोसर्ग १.	२११६८
गोसव्य ३.	४१३११३
गोस्तन १.	४१३१४१
गोस्तनी २.	३१३१८१
गोस्वामिन् १. २. ३.	३१४५९
„ ३.	३१९१०५
गोहरीतकी २.	३१३३०
गौतम १.	११३३५
„ १.	३१६१५६
„ ३.	४१३१०८
गौतमी २.	१११५९
गौधार १.	४१३२६
गौधेय १.	४१३२७

[ ग्रहराज ]

गौधेर १.	४१३२६
गौर १.	३१३९४
„ ३.	३१३२३२
„ ३.	५१३१०
„ ३.	५१३२०
„ १. २. ३.	६१४५
गौरव ३.	३१८११६
„ ३.	५१२२०
गौरशाक १.	३१३४४
गौरसर्ज १.	३१३३९
गौरसर्षप १.	५११४३
गौरार्द्र १.	४१३२३
गौरावस्कन्दिन् १.	११२१७
गौरी २.	११२४६
„ २.	३१३१२१
„ २.	३१३२११
„ २.	८१६३
गौरेय १.	१११५६
गौष्ठीन ३.	३१९३१
ग्मा २.	३११३
ग्रथित १. २. ३.	५१४११०
ग्रन्थ १.	६१३२१
ग्रन्थन ३.	५१२३९
ग्रन्थि १.	३१३११
„ १.	३१९३१
ग्रन्थिक ३.	३१८९१
ग्रन्थिनी २.	३१८७७
ग्रन्थिपर्ण ३.	३१८९२
ग्रन्थिल १.	३१३३८
ग्रस्त १. २. ३.	५१४१०८
ग्रह १.	११२३८
„ १.	२१३३०
„ १.	२११५०
„ १.	३१६६३
„ १.	३१९५७
„ १.	६१३२०
ग्रहकल्लोल १.	२१३३६
ग्रहण ३.	७१३१४
ग्रहणी २.	४१३२९
ग्रहभोजन १.	३१७९१
ग्रहराज १.	८१३२१



## [ ग्रहि ]

ग्रहि १.	८१११०
ग्रहीतृ १. २. ३.	३८८९
" १. २. ३.	५४३८
ग्राम १.	३१११०
" १.	४३३२
ग्रामणी १. २. ३.	५४३६
" १. २. ३.	७५३६
ग्रामणीकुल ३.	३११२०
ग्रामतत्त्व १.	३११३४
ग्रामता २.	५११९
ग्रामधान्य ३.	४३३३
ग्रामप्रेष्य १.	३१५६२
ग्रामसीमा २.	४३३११
ग्रामसूकर १.	३१४०१
ग्रामार्थ १.	४३३५
ग्रामीण १. २. ३.	४३३३
ग्रामीणा २.	३३३१०
ग्रामेयक १. २. ३.	४३३१२
ग्राम्य १.	२३३११
" १. २. ३.	४३३३
ग्राम्यधर्म १.	४३३१७०
ग्राम्या २.	३३३१६०
ग्रावन् १.	३३३१०२
" १.	६१११९
" १.	८६३४
ग्रास १.	३३३१५
" १.	४३३१०१
ग्रासग्रह ३.	३३३१५०
ग्राह १.	४११५२
" १.	६१११९
ग्राहिन् १.	३३३३२
ग्रीषा २.	४११८३
ग्रीष्म १.	२११८८
ग्रीष्ममुन्दर १.	३३३१५७
ग्रीवेयक ३.	४३३१३७
ग्रीष्मिका २.	३३३१८६
ग्लवथु १.	४१११२२
ग्लस्त १. २. ३.	५४११०८
ग्लह १.	३११६०
ग्लान १. २. ३.	४४११४५
ग्लानि २.	४४११२२

## वैजयन्तीकोषः

ग्लान्नु १. २. ३.	४४११४५
ग्लौ १.	२११२५
घ	
घङ्कोर १.	३३३१६९
घट १.	४३३१५८
" १.	५११५५
घटना २.	५२३३४
घटा २.	३३३७०
" २.	३३३१४४
" २.	५२३३४
घटिक १. ३.	५११६०
घटिका २.	२११५४
" २.	७२३८
घटिकालवण ३.	३३३१२४
घटी २.	४३३१५९
घटीयन्त्र ३.	४३३२१
घट्ट १.	४३३२०
घण्टा २.	३३३१५८
" २.	४३३१८०
घण्टाताड १.	४३३३०
घण्टापथ १.	४३३१६
घण्टारवा २.	३३३१९८
घण्टाला २.	४३३१५८
घण्टास्वन ३.	३३३२९
घन १.	२३३१
" ३.	३३३३२
" १.	३३३१५
" १.	३३३१०२
" १.	३३३१७१
" ३.	३३३११५
" ३.	३३३११६
" ३.	३३३१२३
" ३.	४३३१८६
" १.	५३३१५
" १. २. ३.	५३३१२६
" १. २. ३.	६३३३०
घनगोलक १. ३.	३३३२३
घनधातु १.	४३३१०४
घनपद ३.	४३३२
घनरस १.	४३३३
घनवासक १.	३३३१६९

## [ घृणा ]

घनश्रेणी २.	३३३११
घनसागर १.	३३३१०५
घनाघन १.	८३३२२
घनागम १.	२३३१८९
घनात्यय १.	२३३१८९
घनाग्ला २.	४३३१७८
घनोपल १.	२३३३७
घरिन् १.	३३३३५
घर्घर १.	३३३१८
" १.	३३३३०
" ३.	३३३१९४
" १. ३.	४३३१०
घर्घरक १.	२३३२२
घर्घरिका २.	३३३१३१
" २.	८३३१५
घर्घरी २.	३३३१३१
घर्म १.	३३३१८१
" १.	८३३१५७
घस्मर १. २. ३.	५३३१५०
घस्त्र १.	२३३१५५
घाटा २.	४३३१८५
घाण्टिक १.	३३३३७
" १.	३३३३०
घात १.	३३३२११
घातुक १. २. ३.	५३३४२
घारि २.	२३३१५७
घास १.	३३३१७४
घासहार १.	३३३१६३
घासि १.	१३३१४
घासिक १.	३३३११७
घिमिण १.	३३३१२१
घुटिक १.	३३३१८६
" १.	४३३१५७
घुण १.	४३३३६
" १.	५३३१४९
घुणाभीष्टा २.	३३३१९८
घुल्लु १.	३३३१५९
घुसुण ३.	३३३११६
घूर्णन ३.	५३३१०
घूर्णि २.	५३३१०
घृणा २.	३३३१९२

## [ घृणा ]

घृणा २.	३३३१९
( मृणा )	
" २.	६३३१२
घृणि १.	२३३१५५
" १.	६३३२२
" १.	८३३२५
घृत ३.	३३३१३८
" ३.	६३३३६
" १.	८३३२८
घृतपूर १.	४३३७४
घृतभुज् १. २. ३.	३३३१३५
घृतलेखनी २.	३३३१०१
घृताञ्जन ३.	३३३१२
घृताशिन १. २. ३.	३३३१३५
घृतिन् १.	३३३१३५
( वृतिन् )	
घृषि १.	३३३१९
घृष्टि १.	२३३१६
" १.	३३३३६
" १.	८३३२५
घृष्टव १.	३३३१९
घोटक १.	३३३१९१
घोण १.	३३३१५४
घोणस १.	४३३१४४
घोणा २.	२३३१४६
" २.	४३३१९१
" २.	६३३१२
घोणिन् १.	३३३१५
घोण्टा २.	३३३२१७
घोर १.	३३३३८
" ३.	३३३११७
" १. २. ३.	३३३१७९
घोरवाशिन ३.	२३३१४
घोरित ३.	२३३१५
घोल १.	३३३१२१
" ३.	३३३१४८
" १.	३३३१४९
" ३.	३३३१५०
" १.	४३३१५९

## शब्दानुक्रमणिका

घोष १.	२३३२
" १.	३३३१५८
" १.	३३३३२
घोषवती २.	३३३१६६
घोषित १. २. ३.	२३३२२
घोष १.	४३३२५
घ्राण ३.	४३३१९
" १. २. ३.	६३३२९
च	
च ४.	८३३७४
" ४.	८३३११
चकित १. २. ३.	५३३१८
चकोर १.	२३३३५
चक्र ३.	३३३२१८
चक्रण ३.	३३३२१८
चक्र १.	२३३१९
" ३.	३३३१५५
" ३.	३३३१३४
" ३.	४३३३०
" ३.	४३३१२५
" ३.	६३३३७
चक्रकारक ३.	३३३१९९
चक्रचर १.	३३३१४२
चक्रधारण ३.	३३३१३१
चक्रपक्ष १.	२३३१५
चक्रपाणि १.	१३३१०
चक्रपाद १.	८३३२२
चक्रप्रान्त १.	३३३१३५
चक्रभृत् १.	८३३१५०
चक्रमर्दन १.	३३३१५८
चक्रलक्षणा २.	३३३१३२
चक्रवर्तिन् १.	३३३१२
चक्रवर्तिनी २.	३३३१८९
चक्रवाक १.	२३३१९
चक्रवाल ३.	२३३१६
" ३.	३३३३३
" ३.	५३३३३
चक्रवृत्ति २.	४३३३६
चक्रसंज्ञ ३.	३३३१५
चक्राङ्का २.	३३३१४३
चक्राङ्का २.	३३३१८६

## [ चण्डातक ]

चक्रावर्त १.	५३३१०
चक्राह्वयाह्वय १.	२३३१९
चक्रिन् १.	१३३१२
" १.	३३३४०
" १.	४३३३६
" १.	६३३२३
चक्रोवत् १.	३३३३५
चक्रोष्ठी २.	३३३२१०
चक्रस् १.	२३३३३
चक्रुष्य १.	३३३३७
" १.	४३३३७
" १. २. ३.	५३३३७
" १. २. ३.	५३३११७
चक्रुष्या २.	३३३४४
" २.	३३३१२४
चक्रुस् ३.	४३३१४
चक्रूर १.	७३३२५
चक्रुटक १.	३३३१५२
चक्रुरीक १.	२३३४३
चक्रल १.	२३३२४
" १. २. ३.	५३३७८
चक्रला २.	२३३३३
चक्रु २.	२३३१५०
" १.	३३३३५
चटक १.	२३३१४
( पण्डक )	
" १.	२३३१८
चटिका २.	३३३१९१
चटिकाशिर १	३३३१९१
चट्ट १.	६३३२३
चट्टल १. २. ३.	५३३७९
चडक १.	२३३३६
चण १.	३३३१८३
चण्ड १.	५३३१९
" १. २. ३.	५३३३२
चण्डकोलाहला २.	३३३१२६
चण्डमुण्डा २.	१३३३३
चण्डांशु १.	२३३१५
चण्डात १.	३३३१९२
चण्डातक ३.	४३३१२२



[ चण्डाल ]

वैजयन्तीकोषः

[ चरणाग्रक ]

चरम ]

शब्दानुक्रमणिका

[ चिञ्चा ]

चण्डाल १.	३१५२२	चतुष्पञ्च १. २. ३.	चन्द्रा २ व.	२११२०	चरम १. २. ३.	५४१७७	चल १. २. ३.	५४१७८	चान्द्री २.	२११२८
" १.	३१५८३		चन्द्रातप १.	४३१२३	" ४.	५४१७८	चलच्चञ्च १.	२३३३५	" २.	२११७२
" १.	३१५१०७	चतुष्पथ १.	चन्द्रिक १.	५३१५१	चराचर १. २. ३.		चलदल १.	३३३२७	चाप १. ३.	३१७१७२
" १.	३१५५४	चतुष्पाद् १.	चन्द्रिका २.	२११२८		५४१६२	चलन ३.	७३११५	चामर ३.	३३३२०२
चण्डालवहली २.		" १.	" २.	४३१२७	चराशा २.	२११४	चला २.	२३३६	" ३.	४३१५९
	३१५१२७	चतुष्प्रस्थ १.	चन्द्रिकाप्रिय १.	२३३३५	चरि १.	३३३७२	" २.	४३११०	चामरपुष्प १.	८११५१
चण्डिल १.	३१५२६	चतुष्टोम १.	चन्द्रिमा २.	२११२८	चरित्र ३.	३३३११५	चलाचल १. २. ३.		चामीकर ३.	३३३१८
चण्डी २.	१११६२	चतुस्स्नेह ३.	चन्द्रोदय १.	४३१२३	चरी २.	४३१८		५४१७८	चामुण्डा २.	१११६३
चतुर ३.	३१५९२	चत्वर १.	चप १.	३३३२१५	चरु १.	६३१२२	चलित ३.	३३३२०१	चाम्पेय १.	३३३८१
" ३.	४३३२१	चत्वरि २.	चपल १.	३३३३३	चक्ति २.	४३३१७७	" १. २. ३.	५४१९५	" १.	३३३८२
" १. २. ३.	५४१५४	" २.	" १.	३३८११०	चर्च १.	१३३६१	चक्कि ३.	३३८८१	चार १.	३३३२६
" ४.	५४१३३	चत्वारिंशत् २.	" १. २. ३.	५४१७८	चर्चरी २.	२३३२७	चक्य ३.	३३८८१	" ३.	४३३३६
" १. २. ३.	७३१११	चन ४.	" १. २. ३.	५४१२५	चर्चा २.	१३३६३	" ३.	३३८८१	चारटी २.	३३८८९
चतुरङ्गक ३.	३३७५९	चनका २.	" १. २. ३.	७३१६९	" २.	४३३१७७	चषक १. ३.	३३९५३	चारण १.	३३९६४
चतुरङ्गुल १. २. ३.		चन्दन १. ३.	चपला २.	२३३३	" २.	४३११०	चषाल १. ३.	३३३१०५	चारणी २.	३३३१३४
	३३१५२	" ३.	चपेट १.	४३३७६	चर्चिक्य ३.	४३३१७७	चाक्रगिरि ३.	३३३१५	चारित्र ३.	३३३११५
" १.	३३३४८	चन्दनद्रवभाजन ३.	चलुक ३.	४३३८७	चर्पट १.	४३३७७	चाक्रिक १.	३३३२३	चारी २.	३३३६७
चतुरा २.	३३३१९		चमक ३.	३३३२०२	चर्भटि २.	२३३२७	" १.	३३३७८	चारु १.	२३३३३
चतुरूषण ३.	३३८८१	चन्द्र १.	चमर १.	३३३२९	चर्मकार १.	३३३४०	" १.	३३३२७	" १. २. ३.	५४३३५
चतुर्गति १.	४३१५०	" ३.	चमरिक १.	३३३४७	" १.	३३३४०	" १.	३३३२५	" १. २. ३.	६३३६
चतुर्थ १. २. ३.	५३३२१	" १.	चमरी २.	३३३२९	" १.	३३३४०	चाङ्गेरी २.	३३३१६३	चारुक १.	३३३३०
चतुर्थक १. २. ३.		" १.	चमस १. ३.	३३३१०१	" १.	३३३४२	चाट १.	५३३१४	चारुनाल ३.	४३३४०
	५३३५१	" ३.	चमू २.	३३३१०२	" १.	३३३४३	चाटस १.	५३३२९	चार्वी २.	३३३११५
चतुर्थकालिक १. २. ३.		चन्द्रकान्त १.	" २.	३३३५५	चर्मकोश ३.	४३३६२	चाटु १.	६३३२३	चाल १.	३३३६९
	३३३१२६	चन्द्रकिन् १.	" २.	३३३५८	चर्मन् ३.	३३३२१	चाटुकार १.	४३३१४२	चालन ३. २.	८३३३२
चतुर्द्व १.	१३३१२	" १.	चमूपाणि १.	३३३५९	" ३.	३३३१७७	चाणक्यमूलक ३.		चलनी २.	४३३६५
चतुर्दशी २.	२३३७०	चन्द्रगोलिका २.	चमूरु १.	३३३२३	चर्मपर्णी २.	३३३१४४		३३३१५५	चाष १.	२३३२९
" २.	३३३११७	चन्द्रपाद १.	" १.	३३३२४	चर्मप्रसेदिनी २.	३३३१३३	चाण्डाल १.	३३३१५४	चिकित्सक १. २. ३.	
चतुर्धा ४.	८३३२०	चन्द्रवाला २.	चम्पक १.	३३३८१	चर्मप्रवेविका २.	३३३१७७	चाण्डालिका २.	३३३१२७		४३३१४३
चतुर्भद्र १.	३३३२३६	चन्द्रभासा २.	चम्पकद्वीप ३.	३३३१७७	चर्ममय ३.	३३३१९७	चातक १.	२३३३२	चिकित्सा २.	४३३१३९
चतुर्मुख १.	१३३१७	चन्द्रभीरु ३.	चम्पा २.	२३३४	चर्मिक १.	३३३४५	चातिक १.	३३३३०	चिकिरि १.	७३३२५
चतुर्वर्ग १.	३३३२३५	चन्द्रमणि १.	चम्पुक १.	२३३४	चर्मिन् १.	१३३५२	चातुर १. २. ३.	७३३३८	चिकिल १.	३३३२६
चतुर्विधान्न ३.	४३३९१	चन्द्रमसू १.	चम्पू २.	२३३४२	" १.	३३३४५	चातुरीक १. २. ३.		( चिकिच्छल )	
चतुर्हस्त १.	३३३५७	चन्द्रमातृ २.	चम्पोपलक्षण १ व.		" १. २. ३.	३३३१४४		४३३१०९	चिकुर १. २. ३.	५४३७९
चतुश्शख ३.	४३३५२	चन्द्रमौलि १.	चय १.	३३३३१	चर्या २.	३३३११६	चातुर्जात ३.	४३३१५१	" १. २. ३.	७३३३९
चतुश्शाल ३.	४३३२६	चन्द्रव्रत ३.	चर १. २. ३.	५३३१	चवर्ण ३.	४३३५१	चातुर्मास्य १.	३३३१४५	चिकण ३.	३३३२१८
चतुष्क ३.	५३३५५	चन्द्रव्रतिक १. २. ३.	चरण ३.	३३३११५	चवर्णा २.	२३३४५	चात्वा १. ३.	३३३१११	" १.	५३३४
चतुष्की २.	४३३१२४	चन्द्रशाला २.	" १. ३.	४३३५६	चल १.	१३३४९	चान्द्रमसायनि १. २. ३.	२३३३२	चिक्कस १.	४३३६८
चतुष्कृतः (स्) ४. ८३३६		चन्द्रहास १.	" १. ३.	७३३३७	" ३.	३३३२०७	चान्द्रायण ३.	३३३१३६	चिक्काण ३.	३३३५५
		" १.	चरणाग्रक ३.	४३३५७	" १.	३३३११०	चान्द्रायणरत १. २. ३.	३३३१२७	चिक्कोड १.	४३३२७
					" १. २. ३.	५४३६८			चिञ्चा २.	३३३८१



चित्रलिक ]

चित्रलिक १.	११२५१
चित्रोटिका २.	४१२४८
चित् २.	३१११६४
" ४.	८८११२
चितकावेर ३.	३१८११६
चिता २.	३१७२१६
चिति २.	३१६१६४
" २.	३१७२१६
चितकृत ३.	२१४१९
चित्त ३.	३१६१७२
चित्तविभ्रम १.	३१६१७७
चित्ताभोग १.	३१६१७४
चित्तोन्मादकरी २.	१११४९
चित्या २.	३१७२१६
चित्र १. २. ३.	३१९१७८
" १.	४११४३
" ३.	४१३१४८
" ३.	६१५३०
चित्रक १.	३१८१८२
" १.	४१११५
" १.	५१३२३
चित्रकृत १.	३१२१२
चित्रकृत १.	३१३१४६
" १.	३१९१२२
चित्रगुप्त १.	११२३६
चित्रतण्डुला २.	३१८१९७
चित्रदण्ड १.	३१३२०८
चित्रपत्र १.	२१३२०
चित्रपट १.	४१३११९
चित्रपत्रक १.	२१३३७
चित्रपर्णिका २.	३१३१३६
चित्रपिङ्गल १.	२१३३७
चित्रपुङ्ख १.	३१७१८०
चित्रफलित् १.	४११४३
चित्रभानु १.	८११२२
चित्ररथ १.	११२५
चित्रल १.	३१३१६८
चित्रला २.	३१३२९
चित्रशाला २.	४१३२३

वैजयन्तीकोषः

चित्रशिखण्डिज १.	२११३३
चित्रशिखण्डिन् १.	२११५०
चित्रा २.	२११६०
" २.	३१३११३
" २.	३१३१३८
" २.	३१३१७३
" २.	४११११७
" २.	६१५३०
चित्राङ्ग १.	३१४१४
चित्राङ्गि २.	३१३१३७
चित्राणुक १.	४११४९
चित्रावनि २.	३१६३५
चित्रोपपत्ता २.	२११६०
चिद्विड १.	३१३१७२
चिद्रूप १. २. ३.	५१४२७
चिपाट १.	३१७१३२
चिपिट १.	४१३६८
" १. २. ३.	५१४८३
चिबुक ३.	४१४८७
चिरक्रिय १. २. ३.	५१४७२
चिरजीविन् १.	१११७
" १.	२१३१५
चिरण्टी २.	४१४१९
चिरन्तन १. २. ३.	५१४८७
चिरम् ४.	८८११
चिरमेहिन् १.	३१४६६
चिररात्र ३.	२११५९
चिररात्राय ४.	८८११
चिरसूता २.	३१४४८
चिराल ४.	८८११
चिरि १.	११२१८
चिरिबिल्वक १.	३१३६२
चिरेण ४.	८८११
चिलिचिम १.	४११४५
चिलिमीलिका २.	८११२२
चिल्ल १.	६१४५
चिल्लाक १.	२१३४

[ चूचुक

चिल्लिक १.	२१३२८
चिल्व १.	३१३५२
चिल्व १.	५१३५७
चिल्ल ३.	२१३२९
" ३.	६१३८
चीन १ ब.	३११२३
" ३.	३१२३३
" १.	३१३५०
" १.	३१४२१
" १.	३१८३७
" १.	३१८५९
चीनक १.	३१४१३
चीननक १.	४११४४
चीनपट्ट ३.	३१२३०
चीनसी २.	३१४२१
चीना २.	३१६१५०
चीर ३.	४१३१३०
चीरिणी २.	४१४८
चीरी २.	२१३४८
चीवर ३.	४१३१२८
चुक्र ३.	३१८१३२
" १.	३१८१३३
चुक्रिका २.	३१३१६३
चुचुन्दरी २.	४१३३२
चुण्डिन् १.	४१२७
चुन्दी २.	४१२५
चुप १.	५१३७
चुबुक ३.	४१८७
चुम्बक १.	३१३३८
चुम्बन ३.	४१३७१
चुम्न १. २. ३.	६१५३१
चुल १.	४१४७८
चुलक १.	३१४३
" १.	४१४७८
चुलम्पा २.	३१४६३
चुल्ल १.	६१४५
चुल्लि २.	४१५४
चूचु १.	३१५५१
" १.	३१५९३
चूचुक १.	३१५७४
" १.	३१५८१

चूचुक ]

चूचुक ३.	४१४६८
चूडक १.	३१८४५
चूडा २.	४१४१०२
" २.	८१२१५
चूडाकरण ३.	३१६४
चूडामणि २.	३१३१७९
" १. २. ४१३१३६	
चूत १.	३१३२५
चूतक १.	४१२७
चूर्ण ३.	४१३५७
चूर्णपूप ३.	४१३७२
चूर्णि २.	४११५८
" २.	६१२१२
चूलि २.	६१२१३
चूलिक १.	२१३१३
" १.	३१८३९
चूलिका २.	३१६२२२
" २.	३१७७३
चूषण ३.	४१३१०३
चूषा २.	३१७८४
चूष्य ३.	४१३९१
चेटक १.	३१९१२
चेटा २.	४१४२६
चेटिका २.	४१४२६
चेत् ४.	८१८१४
चेतकी २.	३१३१७८
चेतना २.	३१६१६३
चेतस् ३.	३१६१७२
चेदि १ ब.	३१३३६
चेन्नाल १.	३१६१६९
चेल ३.	४१३११७
" १. २. ३.	५१४७५
" १. २. ३.	६१५३१
चेल्लाण १.	३१३१६८
चेत्य ३.	३१६९०
" ३.	४१३२८
" ३.	६१३८
चेत्यवृत्त १.	८१६२०
चेन्न १.	२११८३
चेन्नरथ ३.	११२५९
चेन्निक १.	२११८३

शब्दानुक्रमिका

चैत्री २.	२११७५
चैत्र १ ब.	३१३३६
चोच १. २. ३.	६१५३१
चोच ३.	३१३१४
" ३.	३१८१०४
चोचु १.	४१३१००
चोट १.	४१३१०३
चोटलिङ्गक १.	३१७१८५
चोदनिका २.	३१८१४७
चोदनी २.	३१३१६७
चोद्य १. २. ३.	६१४६
चोर १.	३१९५५
" १. ३.	४१३७६
चोरपुष्पी २.	३१३११६
चोरिक १.	३१७२०
चोल १ ब.	२१३३३
" १.	३१३८३
" १. ३.	४१३३७
" १.	४१३१२८
चोलक १. ३.	३१३१३
चोलान्त १.	४१३३७
चोली २.	४१३१२७
चौह १. २. ३.	५१४१३५
चौण्ड १.	४१२७
चौरिक १.	३१९५९
चौरिका ३.	३१९५८
चौर्य २.	३१९५८
चौल २.	३१६४
च्यवन १.	३१६१५७
च्युति २.	४१४६०
" २.	४१४६१
च्युप १.	६११२३
छ	
छग १.	३१४६२
छगल १.	३१४६२
छगी २.	३१४६२
छण्डक १.	३१५३६
छत्र ३.	३१६१६
छत्रक १.	३१३१६९
छत्रधर १. २. ३.	३१७१४५

[ छाग

छत्रा २.	३१३१२४
" २.	३१३२३४
" २.	३१८४९
छत्राक १.	३१३१५३
छत्राकी २.	३१८१२४
छत्रिन् १.	३१७२८
छद १.	२११६२
" १.	२१३४९
" १.	३१३१६
छदन ३.	२१३४९
" ३.	३१३१६
छदावलि ३.	३१७१८५
छदिस ३.	३१६९१
" २. ३.	४१३३७
" २.	४१३१०३
छदिस्तुण ३.	३१८६७
छदमन् ३.	३१६१९५
" ३.	६१३८
छदमप्रधारवत् १.	३१७२८
छन्द १.	६१३२४
छन्दना २.	३१६१९५
छन्दस् ३.	३१६२७
" ३.	३१६२८
" ३.	६१३९
छन्दोभेद १.	३१६३४
छन्न १. २. ३.	५१४१२०
छन्नपथ ३.	३१७५४
छन्ना २.	३१३१३१
( छिन्ना )	
छर्दम १.	३१३५०
" १.	३१३७५
" १.	४१३३५
छर्दनी २.	३१३१७१
छर्दि २.	६१२३३
छल ३.	३१६१९५
छलवाच् २.	२१४१९
छल्ली २.	३१३१३
छवि २.	४१३१५०
छाग १.	३१३३५
( भाग )	
" १.	३१४६२



## छागण ]

छागण १.	२११२०
छागणक १	३१५२७
छात १. २. ३.	५११०२
छात्र १.	३१६२५
" १.	३१७२७
" ३.	३१८१३६
छादिषेय १. २. ३.	३१८१३६
छान्दस १.	३१६८१
छाया २.	२११२३
" २.	६१२१३
छायाकर १. २. ३.	३१७१४५
छायापुत्र १.	२११३५
छित १. २. ३.	५११०२
छिद्र ३.	३१८१८
" ३.	४११२
" ३	५११४४
" ३	६१३९
छिद्रित १. २. ३.	५११११
छिन्न ३.	३१८१४२
" १. २. ३.	५११०२
छिन्नपुच्छक १. २. ३.	३१४५९
छिन्नरुहा २.	३१३१३१
छेक १.	२१३५
" १. २. ३.	५११२०
" १. २. ३.	६१५३२
छोटिका २.	३१६२२९
( चोटिका )	
ज	
जत्ता २.	४१३१०४
जचित १. २. ३.	५११०८
जगत् १.	११२४८
" १. २. ३.	५११६१
जगती २.	७१२९
जगत्तय १.	२११९४
जगत्प्राण १.	११२४७
जगल १.	३१५५१

## वैजयन्तीकोषः

जगल १	५११२७
जग्ध १. २. ३.	५११०७
जग्धि २.	४११०२
जघन १.	४११६४
" ३.	७११५५
जघनपिण्डिका २.	३१७७८
जघनभाग १.	३१७७६
जघनेफल १.	३१३७४
जघनेफला २.	३१३११
जघन्य ३.	३१८११५
" १. २. ३.	५११७६
" १. २. ३.	५११७७
" १. २. ३.	७११११
जघन्यज १.	३१९११
" १. २. ३.	५११४४
जङ्गम १. २. ३.	५११६१
जङ्गित १.	३१५३३
जङ्गा २.	४११५८
जङ्गात्राण ३.	३१७१५४
जङ्गापद १.	३११५२
जङ्गल १. २. ३.	३१७१५०
जटा २.	३१३१२
" २.	३१३२०२
" २.	३१८१००
" २.	४१११०१
" २.	५११३३
जटाश्राट १.	१११४४
जटाटीर १.	१११४४
जटायु १.	३१३५४
जटिन् १.	३१३२८
जटिल ३.	३१३२०२
" १. २. ३.	५११९
जटिला २.	३१३१९७
" २.	३१८१००
जटी २.	३१३२०३
" २.	५११५८
जटुल १.	४११९७
जटर ३.	४११६७
जटरोत्सव १.	३१६६२
जड १.	५१३१६

## [ जपा

जड १. २. ३.	५१११४
" १. २. ३.	६११६
जडा २.	३१६१९
जतु ३.	४१३१५३
जतुक ३.	३१८१३१
जतुका २.	३१३४४
जतुकाहला २.	३१९१२६
जतुकृत् २.	३१८१८९
जतूका २.	३१८१८९
जत्रु ३.	४११६९
जन १.	३१६२०२
जनक १.	४११२९
जनङ्गम १.	३१९५४
जनता २.	५११९
जनन ३.	४१११८
" ३.	४११४९
जननी २.	४११२६
" २.	७१२१८
जनपद १.	३११२१
" १.	८११२३
जनयितृ १.	४११२९
जनयित्री २.	४११२६
जनवाद १.	२११३४
जनश्रुति २.	२११३९
जनस् १. ४.	३१६२०७
जनार्दन १.	११११०
जनाश्रय १.	४१३२८
जनि २.	३१११८
" २.	६१२१४
जनिमन् ३.	७११२७
जनी २.	३१३१२८
" २.	४११३६
जनुस् ३.	४१११८
जन्तु १.	४१११
जन्तुधर १.	३११३४
जन्तुफला २.	३१८१६१
जन्मन् ३.	४१११८
जन्य १. २. ३.	६१५३२
जन्या २.	३१८१८९
जन्तु १.	४१११
जपा २.	३१३१९५

## जपापुष्प ]

जपापुष्प ३.	३१८१६७
जम्पति १ द्वि.	४११४८
जम्बाल १.	३१८२६
" १.	७११२६
जम्बीर १.	३१३३५
" १.	३१३१२०
जम्बु ३.	३१३२२
जम्बुक १.	७११२६
जम्बुल १.	३१३२२३
जम्बू २.	३१३२२
" २.	३१३९२
जम्बुगर्त १.	३१७१६१
जम्बूट १.	३१३९४
जम्बुद्वीप १.	३१११०
जम्बुमालिका २.	३१६५०
जम्भ १.	४११८९
जम्भक १.	३१३३५
" १.	३१५८५
जम्भरिपु १.	११२४
जम्भल १.	३१३३५
जम्भीर १.	३१३३५
जय १.	११२६
" १.	११२८
" १.	३१३८५
" १.	३१७२०९
" १.	३१८३६
" १.	८१११२
जयदत्त १.	११२४
जयन्त १.	११२४
" १.	२११२६
जयन्ती २.	११२९
" २.	२११७८
" २.	३१३९६
जयन्तीपुर ३.	४१३४
जयवाहिनी ३.	११२११
जया २.	३१३८९
" २.	३१३१९७
" २.	३१८८३
जयिन् १. २. ३.	३१७१४७
जयोदाहरण ३.	२१३३६
( जनोदाहरण )	

## शब्दानुक्रमणिका

जय्य १. २. ३.	३१७१४८
जरठ १. २. ३.	७११२२
जरत् १. २. ३.	५११३३
जरत्कार १.	३१६१५६
जरद्गव १.	३११५५
जरन्त १.	३१४९
जरा २.	४११५४
जराभीरु १.	१११२९
जरायु १.	४१११८
" १. ३.	७१५३९
जरायुज १. २. ३.	४११२
जरुदद १.	३१७९७
जर्जर १.	३१९१२९
" १.	५१३४१
जर्ण १.	२११२७
" १.	३१३५
जर्तिल १.	३१८३९
जल ३.	४१२२
" १. २. ३.	५११४४
जलक १.	३१३३३
जलकण्टक १.	४१२४८
जलकरिन् १.	४११६०
जलकाक १.	२१३११
जलकोलि २.	३१३८९
जलचर १.	२१३४१
जलजन्तु १.	४११४०
जलजम्बुका २.	३१३१०३
जलजा २.	३१८५८
जलतस्कर १.	२१११२
जलद १.	२१२१
जलदा २.	२१२४
जलद्रोणि २.	४१३६१
जलनर १.	४११६०
जलनिधि १.	४१२११
जलनीली २.	४१२४९
जलपालिका २.	२१२४
जलपिप्पिक १.	४११४१
जलप्रिय १.	३१४५
जलवृंहण ३.	४१२३०
जलभूषण १.	११२४६
जलमार्जसि १.	४११५४

## [ जागर

जलमुच १.	२१३११
जलमुस्त ३.	३१३२०१
जलरङ्ग १.	२१३११
जलराशि १.	४१२१०
जललम्बिका २.	३१३१९८
जलवालक १.	३१२३३
जलव्याल १.	४१११९
जलशीनक १.	५११४८
जलशूर १.	४१२४९
जलसम्भवा २.	३१४४३
जलाचार १. २. ३.	३१६१३१
जलात्मन् १.	३१४८
जलाधार १.	४१२५
जलालोका २.	४११५८
जलाशय १.	३१३२३१
" १.	४१२५
जलाश्व १.	४११६०
जलाहार १. २. ३.	३१६१३५
जलक १. २. ३.	८१२२६
जलका २.	४११५८
जलेशय १.	८१५८
जलोच्छ्वास १.	४१२३१
जलोद्गम १.	४१२४
जलोलक १.	५१३४१
जलौकस् १ ब.	४११५८
जलपाक १. २. ३.	५१४४६
जल १.	३१५५४
जव १.	११२५५
" १. २. ३.	३१७१५०
" १.	५१२३१
जवन १. २. ३.	३१७१५०
" ३.	५१२३१
जविन् १.	३१४१६
" १. २. ३.	३१७१५०
जसु १.	५१३१
जसुरि १.	७११२५
जागर १. २. ३.	३१६१९६



जागर ]	वैजयन्तीकोषः	[ जीर्णक
जागर १. ३७१५३	जानुभक्तिनी २. ३७१५२	जालिका २. ३७१५३
जागरण ३. ३६१९६	जानुमात्र १. २. ३.	जालिन् १. ३९१४२
जागरित ३. ३६१९६	४१४८२	जालिनी २. ३८१७७
जागरित् १. २. ३.	जानुमात्री २. ३७१५२	" २. ४३१२३
५४४४	जावाल १. ३. ३९१२९	" २. ४४१०१
जागरुक १. २. ३.	जामदग्न्य १. १११२०	जाली २. ३३१५९
५४४४	जामातृ १. ४४१३८	जाहम १. २. ३. ६४४६
जागर्या २. ३६१९६	" १. ७११२६	जावक ३. ४३१५४
जागृवि १. १२११८	जामि २. ६१२००	जाहक १. ३४१७२
जाघनी २. ४४१५८	जामेय १. ४४१४१	जाह्वी २. ४२१२४
जाङ्गल १. २. ३. २४१२०	जाम्बव ३. ३३१२२	जिघत्सा २. ३६१८२
" १ ब. ३११४०	जाम्बूनद ३. ३२१२०	जिघत्सु १. २. ३. ५४१३६
" १. २. ३. ३११४५	जाया २. ४४१३४	जिघांसु १. ३७१४१
" ३. ३८१०७	जायाजीव १. ३९१६२	जिङ्गी २. ३३१३५
जाङ्गलिक १. ४११२५	जायापति १ द्वि. ४४१४८	" २. ३३१६०
जाटलि २. ८११२६	जायु १. ४४१४१	जित १. २. ३. ३७१४८
जाट्य १. ३८१४४	जार ३. ४२१४२	जितकाशिन् १. २. ३.
जात ३. ५११३३	" १. ४४१३८	३७१२१८
जातरूप ३. ३२११८	जारण ३. ३८१२६	जितरण १. २. ३.
जातवेदस् १. १२११४	जारद्व ३. २११४९	३७१२१८
जातारणि १. ३६१७२	जारद्वी २. २११४७	जित्वर १. २. ३.
जाति २. ३३१२३	जारवायु १. १२१५४	३७११४७
" २. ३३११८२	जारी २. १११५९	जिन १. १११३३
" २. ३१११११	" २. ३६१४८	" १. १११३५
" २. ६२११४	जाल ३. ३१११३	जिष्णु १. १२१४४
जातिकोश ३. ३८११०६	" ३. ३३११९	" १. २. ३.
जानु ४. ८११७७	" १. ३५१३३	३७११४७
जातोक्ष १. ३४१५४	" ३. ३९१४३	जिह्वा १. ४११५
जात्य १. २. ३. ५४१६१	" ३. ६३१९	" १. २. ३. ६५१३२
" १. २. ३. ५४१६४	जालक ३. ३३११९	जिह्वा २. १२१२९
" १. ६४१७	" १. ३८१३९	" २. ४४१९०
जानकीकान्त १. १११२०	" ३. ५११३	" २. ६२११५
जानु १. २. ४४१५९	जालकिनी २. ३४१६५	जिह्वापान १. ३४१७०
जानुक १. २. ३.	जालन १. ५३१३९	जिह्वास्वाद १. ४३१०३
३६११३३	जालन्धर १ ब. ३११२६	जीन १. २. ३. ५४१३
जानुदधन १. २. ३.	जालपाद १. २३११२	जीमूत १. ७११२६
४४१८२	जालपादक १. २३१३६	जीरक १. ३८१८३
जानुद्वयस १. २. ३.	जालभूषण १. ३५१३६	जीरण १. ३८१८३
४४१८२	जालिक १. ३९१३८	जीर्ण १. २. ३. ५४१३
जानुनिकुम्भन ३.	" १. ३११३४	" १. ६५१३४
३६१२२२	" १. २. ३. ५४१२३	जीर्णक ३. ३३१२०५

जीर्णि ]	शब्दानुक्रमणिका	[ ज्योतिष्मती
जीर्णि २. ४४१५४	जीवितेश १. २. ३. ८११४८	जाति २. ४४१५०
जील ३. ६३११०	जुगुप्सन ३. ३९१७६	ज्ञान ३. १११४७
जीव १. ३६१६१	जुगुप्सा २. २४१३३	" ३. ३६१६४
" १. २. ३. ३७१२०	" २. ३६१९३	ज्ञानिन् १. ३७१५०
" १. ३७१२०	" २. ७२१८	ज्या २. ३७१७८
" १. ४४११	" २. ८११४४	" २. ८२११७
" १. २. ३. ६५१३३	जुहुराण १. १२११९	ज्यानि २. ४४१५४
जीवक १. २. ३. ५४११६	जुहू २. ३६११००	ज्यानिवारण ३. ३७१५५
" १. २. ३. ७५१४०	जृति २. ५२१३१	ज्यायस् १. २. ३. ५४१४
जीवजीव १. २३१४०	जूर्णा २. ३३१२३०	" १. २. ३. ६४१७
जीवत् १. २. ३. ३७१२०	जूर्णाह्वय १. ३८१५७	ज्येष्ठ १. २३१६
जीवतोका २. ४४११९	जूर्णि २. ६११२४	" ३. ३२१२८
जीवथ १. ४११५०	जृम्भ १. २. ३. ८११३८	" ३. ३२१३१
जीवधन ३. ३४१६१	जृम्भण १. २. ३. ३९१८८	" ३. ३३१२०२
जीवन ३. ३८११	जृम्भा २. ३९१८८	" ३. ३८१३५
" ३. ४२१२	" २. ८११३८	" १. ४४१३१
" ३. ४३१७५	जृम्भिका २. ३९१८८	" १. २. ३. ६४१७
जीवनी २. ११११६	जृम्भित १. २. ३. ७५१४०	ज्येष्ठानी २. २११४१
" २. ३३११४३	जेतृ १. २. ३. ३७१४८	ज्येष्ठतात १. ४४१३२
जीवनीय ३. ३८११४६	जेमन ३. ४३१०२	ज्येष्ठश्वश्रू २. ४४१२८
" ३. ४२१२	जेय १. २. ३. ३७१४८	ज्येष्ठा २. १११४९
जीवनीया २. ३३१११२	जैत्र १. २. ३. ३७१२८	" २. १२१४२
" २. ३३११४३	" १. २. ३. ३७१४८	" २. १३१४१
जीवन्ती २. ३३१८४	जैत्री २. ३३१३३	" २. ४११३०
" २. ३३१३२	जैन १. २. ३. ५४११६	" २. ४४१२७
" २. ३३११४०	जैवातृक १. २. ३. ८१११९	" २. ४४१७४
" २. ३३११४३	जोङ्गक ३. ३७११०७	" २. ६२११५
जीवपति २. ४४११४	जोटिङ्ग १. १११४५	ज्येष्ठामूलीय १. २११८४
जीवबोधिनी २. ३३११४५	जोड ३. ३३१२१८	ज्येष्ठाम्बु ३. ४३१६७
जीवलोक १. ३६१२०६	जोणाल १. ५३११९	ज्येष्ठ १. २११८४
जीववृत्ति २. ३८१४	जोनल १. ३८१५६	ज्येष्ठी २. २११७५
जीवशाक १. ३३११५०	जोन्नला २. ३८१५७	ज्योक् ४. ८११६
जीवसू २. ४४११९	जोषम् ४. ८७१२०	ज्योतिरानृण्य ३. ३६१८७
जीवा २. ३३११४३	ज १. २. ३. ८११३९	ज्योतिरिङ्गण १. २३१४७
" २. ३७११८८	" १. ८११४७	ज्योतिरशास्त्र ३. २११५०
जीवातु १. ३७१२२१	जपित १. २. ३. ५४११३	ज्योतिषामयन ३. २११५०
जीवान्तक १. ३९१३७	जप्त १. २. ३. ५४११३	" ३. ३६१३३
जीविका २. ३८११	जप्ति २. ३६११६४	ज्योतिषाम्पति १. ८११५३
जीवित ३. ३७१२२०	" २. ३६११६४	ज्योतिष्मती २. ३११३९
जीवितकाल १. ३७१२२१	ज्ञात १. २. ३. ५४११०१	" २. ३८१६०
जीवितागद १. ३७१२२१		



ज्योतिषोम ]

वैजयन्तीकोषः

[ तथा

तथागत ]

शब्दानुक्रमणिका

[ तर्क

ज्योतिषोम १.	३१६८६	क्षिलिका २.	४११९६	हारिका २.	४११३३	तथागत १.	१११३३	तन्त्री २.	६१२१६	तमोनुद् १.	७११२८
ज्योतिष ३.	६१३१०	क्षिली २.	४१३७७	दौण्डिक १. २. ३.	५११२३	तथार्थवाच् १.	५१३३	तन्दन ३.	२११५	तमोनुद् १.	८११२३
ज्योत्स्ना २.	२११२८	क्षीरिका २.	२१३१८	त		तथ्य ३.	५१३३	तन्दू २.	६१२१६	तमोपह १.	८११२३
ज्योत्स्नी २.	३१३१६०	ट		तक्कोल ३.	३१८१०५	तद् १. २. ३.	५११२०	तन्द्र १.	४११५२	तमोरिपु १.	२१११४
ज्योतिष १.	२११८१	टगर १. २. ३.	७१५४१	तक्र ३.	३१८१४९	" ४.	८१७११	तन्द्रा २.	३१६१७८	तम्पा २.	३११४२
ज्योतिषिक १.	३१७२५	टङ्क १.	३१८१३१	तक्रज ३.	३१८१३६	तदा ४.	८१८५	" २.	३१६१९७	तम्बा २.	२११४२
ज्योत्स्नी २.	२११५८	" १.	३१९२२	तक्रपिण्ड ३.	३१८१४४	तदानीम् ४.	८१८५	" २.	६१२१५	तम्बिकी २.	३१९११३
ज्वल १.	५१३७	" १.	६११२४	तक्रवासन १.	३१३३६	तनय १.	४१३३९	तन्मात्र ३.	३१६२०५	तरच्छु १.	३११४
ज्वलन १.	२१११५	टङ्कण ३.	३१८१३०	तच्छक १.	७११२८	तनु १.	३१३८५	तन्वी २.	३१८७७	तरङ्ग १.	३१३१६२
ज्वलित १. २. ३.	८१११४	टट्टनी २.	४११३०	तच्छन् १.	३१५३९	" २.	४११५२	तपन १.	२११११	" १.	४१२१४
ज्वाल १.	११२२९	टट्टर १.	२११११	" १.	३१५८६	" २.	४११०३	" १.	३१६१५१	तरङ्गिणी २.	३१३२१२
ज्वाला २.	११२२९	टट्टरी २.	३१९१३५	" १.	३१९३४	" १. २. ३.	५११५	" १.	७११२९	" २.	४१२३
भू		टर्क १ ब.	३११२७	" १	८१९१२	" १. २. ३.	५११२५	तपनीय ३.	३१२१८	तरण ३.	५१२१२
क्षन्धानिल १.	११२५२	टिट्ठिभ १.	२१३३४	तत्तशिला २.	४१३९	" १. २. ३.	६१३५	तपस् ३.	१११४७	तरणा २.	४१३८०
क्षटप्प १.	५१२१९	टिट्ठिभासन ३.	३१६१२५	तगर १.	३१३१९४	तनुकृवर ३.	३१७१३२	" १.	२११८२	तरणि १. २.	७१५४२
क्षटा २.	३१३१७७	ड		तङ्क १. ३.	३१६१८५	तनुत्र ३.	३१७१५२	" ३.	३१६१३६	तरणी २.	४१२१५
क्षटिति ४.	८१८१	डक्कन ३.	२१४८	तट १.	३१३६	तनुस् ३.	६१३१२	" ३.	३१६२०७	तरण्डक १.	४१२१६
क्षण्डाली २.	३१३१५९	डङ्क १.	३१४५३	" १. २. ३.	४१३३२	तनूकृत १. २. ३.	५११११	तपस १.	२११२६	तरत्त १.	११२२१
क्षम्प १.	५१२१९	डमर १.	३१६१९०	" १. २. ३.	८१९३८	तनूनपात् १.	११२१४	तपस्य १.	२११८३	तरपण्य ३.	४१२१८
क्षम्पटि २.	४११९९	डमरु १.	३१९१३५	तटाक १. ३.	४१३६	तनूरुह ३.	२१३४९	तपस्विन् १. २. ३.	३१६१२६	तरल ३.	४१३६२
क्षर १.	३१२७	डयन ३.	२१३५०	तटित् २.	२१२४	" ३.	४११९७	" १. २. ३.	८१५२८	" १.	४१३१३३
क्षरसी २.	३१३१५७	डहु १.	३१३७५	तटित्पति १.	२१२२	तन्तु १.	३१३८७	तपस्विनी २.	३१८१००	" १.	५१३१५
क्षरा २.	३१३१५७	डिण्डिक १.	३१५१५	तटित्त्वत् १.	२१२१	" १.	३१९११	तपिनी २.	४१२२७	" १.	७१५४४
क्षरुका २.	३१८२५	डिण्डिम १.	३१९१३५	तटिनी २.	४१२३३	तन्तुक १.	४११५२	तप्त १.	५१३८	तरवारि २.	३१७१६२
क्षर्र १.	३१९१३५	डिण्डीर १.	४१२१३	तटी २.	८१९३८	तन्तुनाम १.	४११३४	तप्तकृच्छ्र ३.	३१६१३९	तरस् ३.	११२५५
क्षर्रक १.	२११२९	डिण्डीश १.	१११४५	तण्डुल १.	३१८९७	तन्तुवाय १.	३१५९७	तमङ्कक १.	४१३३२	" ३.	३१७२१०
क्षलका २.	११२२९	डिम १.	३१९१००	" १.	४१३६६	" १.	३१९८	तमत १.	४१३६३	" ३.	६१३१३
क्षल्लरी २.	४११९९	डिम्ब १.	२१३५०	तण्डुला २.	३१८७७	" १.	४११३४	तमरक ३.	३१२३२	तरस ३.	४११०६
" २.	७१२९	" १.	३१६१९०	तण्डुलीयक १.	३१३१५०	तन्तुसन्तत १. २. ३.	५१११२	तमस् ३.	२११६२	तरि १.	११२२८
क्षष १.	४११४१	" १.	४१११३	तत ३.	३१९११५	तन्त्र ३.	३१७१४	" ३.	३१६१६२	" २.	४१२१५
" १.	४११५१	" १.	६११२४	" १. २. ३.	५१११०	" १.	४११५२	" ३.	३१६१६२	" २.	४१३६३
" १. २.	६१३३४	डिम्भ १. २. ३.	५१३२	तति २.	८१९५	" १.	४११५२	" १. २.	६१३३५	तरीष १.	३१६१६७
क्षषा २.	३१८६१	" १. २. ३.	६१३७	तत्क्रिय १. २. ३.	५१३७३	" ३.	४११४१	तमस्विनी २.	२११५७	तरु १.	३१३१५
क्षषापर १.	३१५१४	डुण्डुभ १.	३१९१९	तत्त्व ३.	३१९१२३	तन्त्रशाला २.	४१३२०	तमाल १. ३.	३१३८७	तरुण १.	३१३६५
क्षट १.	३१३१८९	डुण्डुर १.	४१३३२	" ३	५१२११	तन्त्री २.	३१९३०	तमालपत्र ३.	४१३१४८	" १. २. ३.	५१३३
क्षण्ड १.	१११४६	डोम्ब १.	२१५४९	तत्त्वधी २.	३१६१६५	तन्त्रशाला २.	४१३२२	तमिन्ना २.	२११५७	तरुणी २.	३१३१८८
क्षिक्किल्ल १.	३१९१२४	ड		तत्र ४.	३१६२१	तन्त्री २.	३१९३०	" २.	७१५४३	तर्क १. ३.	३१६१७६
क्षिणिका २.	४११२७	डक्का २.	२१९१३४	तत्रभवत् १. २. ३.	८१९४६			तमी २.	२११५७	" १.	६१३२५
क्षिण्टी २.	३१३१९०	डक्कारी २.	३१९१२८	तथा ४.	८१७२१						
क्षिण्टीकान्त १.	१११४४	डङ्क ३.	२१३६९	" ४.	८१८२०						
क्षिलिका २.	२१३१८	डण्डुक १. २. ३.	५१३२३								



[ तर्कविद्या ]

तर्कविद्या २.	३१६३२
तर्कारी २.	३१६१६
( तक्कारी )	
तर्कु १.	३१९१९
तर्जनी २.	४१४७३
तर्ह २.	४३१६३
तर्णक १.	३१४५१
तर्पण १.	४२१३३
" ३.	४३१६९
" ३.	७३११६
तर्मन् ३.	३१६५२
तर्ष १.	८१२२०
तर्पित १. २. ३.	५१४३७
तर्पु १.	२१११३
तर्हि ४.	८१७२०
" ४	८१८५
तल १.	३१३२१६
" १. २. ३.	३१७१५५
" १.	३१९१२२
" ३.	४१११
" १.	४१४७३
" १.	४१४७७
" ३.	५११५०
" ३.	५११६३
" १.	५३१६
" १. ३.	६१३५
तलपोट १.	३१३१०६
तलप्रोह १.	३१७७८
तलयन्त्र ३.	३१७५१
तलसारक ३.	३१७११४
तला २.	३१७१५५
तलिका २.	३१७११४
तलिन १. २. ३.	५१४१२५
" १. २. ३.	७१४१२
तलनी २.	४३३३३
तलमि ३.	७३११६
तलुनी २.	४१४८
तलेक्षण १.	३१४५
तल्प ३.	६३११२
तल्पगृह ३.	४३१२०

वैजयन्तीकोषः

तल्लज १.	८१९१२
तविष १.	७१५४२
तष्ट १. २. ३.	६१११११
तस्कर १.	३१९१५६
" १.	८१६१७
तस्थिवस् १. २. ३.	५१४६२
ताटिक १.	३१३१५२
ताडङ्क १.	४३११३४
ताडन ३.	५११३६
ताडी २.	३३१२२४
ताण्डव १. ३.	३१९१७३
तात १.	४१४२९
तातगु १. २. ३.	७१५४३
तातल १. २. ३.	७१५४४
तान १. ३.	३१९१११
तानित ३.	७३११६
तान्त १.	२११८०
तापस १. २.	३१६१२४
" १. २. ३.	३१६१२६
तापिन्त्र १.	३३१८७
तापी २.	४२१२७
तामरस ३.	४२१३९
तामसी २.	२११६०
" २.	३१६१९७
तामिस्र ३.	२११६२
ताम्बूल ३.	४३११०६
ताम्बूलकरङ्गिका २.	
ताम्बूलवह्निका २.	८१५२८
ताम्बूली २.	८१५२८
ताम्र ३.	३२१२४
" १. २. ३.	६१५३७
ताम्रकर्ष १.	५११५२
ताम्रकुट्टक १.	३१९१५
ताम्रचूड १.	२३११३
ताम्रजीव १.	३१५३९
ताम्रधारण ३.	५११५९
ताम्रपर्णी २.	२११९
" २.	४२१२९
ताम्रपाकिन् १.	३३१५९

[ तालपत्रिका ]

ताम्रमूला २.	३३१२५
ताम्रवृन्त १.	३१८४७
ताम्रसार ३.	३१८११३
ताम्रा २.	३३११७९
ताम्राक्ष १.	२३१२६
तार १. २. ३.	२४११३
" १.	३३१२३३
" १.	५३१२३
" १. २. ३.	६१५३६
तारक ३.	३३१२३३
" १. २. ३.	४१४९४
" १. २. ३.	७१५४४
तारकारि १.	१११५४
तारजीवन ३.	३२११९
तारण १.	२११८०
तारणी २.	३१८१४
तारा २.	२११३८
तारावट १.	३३११९४
तारावर्मन् ३.	२११२
तारुण्य ३.	४१४५३
तार्य १.	१३११९
" १.	१११३७
" १.	३१७९१
" ३.	३१८१२५
तार्यशैल ३.	३२१४१
तार्यसन ३.	३३१२२८
तार्ण १.	१२१२१
" ३.	३११२०
तार्णसौम ३.	३११२०
ताल १.	३२११४
" ३.	३३१२१६
" १.	३१७१८५
" १.	३१९१२३
" १.	४१४७७
" १.	४१४८०
तालक १.	४११२७
" ३.	४३१४९
" ३.	४३१३४
" १.	५३१८
तालपत्र ३.	४३१३४
तालपत्रिका २.	३१९१२४

तालपर्णी ]

तालपर्णी २.	३१८१८
तालमूली २.	३३१२०३
तालवृन्त ३.	४३११५९
तालाङ्क १.	१११२३
" १ ब.	१३११३
ताली २.	३३१२०३
" २.	३३१२२४
" २.	३१९१२४
" २.	४३१४९
तालु २.	३३११७१
" ३.	४१४८९
तालुजिह्वा १.	४११५३
तावत् ४.	८१७२८
तावतिथ १. २. ३.	५११२०
तावत्कृति २.	५११३६
तावत्कृत्वः (-स्) ४.	५११३६
ताविष १. २.	७१५४२
तिक्त १.	३३१५३
" १.	३३१२८
" १.	३३१६६
" १.	५३१२६
" १.	५३१४७
तिक्तक १.	५३१५५
तिक्तकाषाय १.	५३३३१
तिक्तच्छदन १.	३३११६३
तिक्तपटुस्वादुकषाय १.	५३१४०
तिक्तपटोलिका २.	
तिक्तवल्लिका २.	३३११६१
तिक्तशाक १.	३३११४
तिक्तसार १.	३३१६३
तिक्तिक १.	५३३३०
तिग्म १.	५३३७
" १.	६१५३७
तितउ १. ३.	४३३६५
तितित्ता २.	३३११८४
तितित्छु १. २. ३.	५३३३३
तित्तिरि १.	२३३३५
" १.	३११५१

शब्दानुक्रमणिका

तित्तीक १.	३३१७७
तिथि १. २.	२११६९
तिन्तुडीक १.	३३१८१
तिन्तुणी २.	३३१८१
तिन्तुणीक ३.	३१८१३२
तिन्त्रिडीक ३.	८३१६
तिन्दुक १.	३३१५१
तिमि १.	४११४१
तिमित १. २. ३.	५११०७
तिमिर ३.	२११६४
तिमिङ्गिल १.	४११५१
तिमिला २.	३१९१३५
तिमिश १.	३३१४६
तिमिशत्रु १.	४११५१
तिरश्चीन १. २. ३.	५११९१
तिरस् ४.	८१७२१
तिरस्करिणी २.	४३१२४
तिरस्कार १.	३३१७७
तिरित १. २. ३.	३१८११
तिरीट १.	३३१५२
तिरीटिका २.	३३१८७
तिरोधान ३.	२११६४
तिर्यग्गामिन् १.	२११३४
तिर्यच् ४.	५११९१
तिल १.	३१८३९
तिलक १.	३३३६१
" १.	३३३६९
" ३.	३१८१२५
" १. ३.	४३११४८
" १.	४१४९७
" ३.	४१४११२
" १. ३.	८१९३०
तिलककण्टक १.	२३११८
तिलकालक १.	४१४९७
तिलखल १ ब.	३११३९
तिलपर्णी २.	३१८११५
तिलपिञ्ज १.	३१८३९
तिलपुष्प ३.	३१८४०
तिलपेज १.	३१८३९

[ तुङ्गता

तिलाट १.	३१८१४८
( किलाट )	
तिलिस्स १.	४१११४
तिलिस्सक १.	३१४१४
तिल्य १. २. ३.	३१८२०
तिष्य १.	३३११७५
" १.	६११२५
तिष्या २.	३३११७७
तीचण ३.	३२३३४
" १.	३३१११९
" १.	३३११२१
" १. २. ३.	३१७२८
" १.	५३१९
" १.	५३१२६
" १. २. ३.	६१५३७
तीचणगन्ध १.	३३१५६
" १.	३३१११९
तीचणच १.	५३१२९
तीचणतण्डुला २.	३१८७७
तीचणधूमा २.	३३१९१
तीचणरस १.	३१८१२७
तीचणा २.	३३११९७
तीचणाग्र ३.	३१८६५
तीचणार्जक १.	३१८१२१
तीर ३.	४२३३२
तीरतरङ्गिका २.	३१९९१
तीरभुक्ति २.	३११३०
तीरित १. २. ३.	२१११९
तीरी २.	३१७१८३
तीर्थ १. ३.	४२३२०
" ३.	४१४७५
" ३.	६३१३३
तीर्थवाह १.	४१४९८
तीवर १.	३१५१२
तीव्र १. २. ३.	५१४३२
तीव्रकोपा २.	४१४१०
तु ४.	८१७४
" ४.	८१७११
तुक १.	३१५७५
तुङ्ग १. २. ३.	५१४८१
तुङ्गता २.	५२३२४



[ तुङ्गभद्रा ]

तुङ्गभद्रा २.	४२१२८
तुच्छ १. २. ३.	५४१८७
" १. २. ३.	६५१३६
तुटि २.	२११५२
" २	६२११६
तुण्ड ३.	४४१८६
तुण्डि १. २. ३.	५४१६
तुण्डिकेरी २.	३३१९९
" २.	३३१९४७
तुण्डिन् १.	२३१४
तुण्डिभ १. २. ३.	४४१९४६
तुण्डिल १. २. ३.	४४१९४६
तुथ ३.	३२१४३
तुत्वा २.	३३१११०
" २.	३३१८७
तुत्थाञ्जन ३.	३२१४२
तुन्द ३.	४४१६७
तुन्दपरिमृज १. २. ३.	५४१५५
तुन्दिक १. २. ३.	५४१७
तुन्दिन् १. २. ३.	५४१७
तुन्दिल १. २. ३.	५४१७
तुन्न १. २. ३.	५४११५५
तुन्नवाय १.	३११११
तुमुल १. २. ३.	२४११२
" १. २. ३.	३३७२१७
तुमुलान्नक १.	३३११७६
तुम्बा २.	३३७१३५
तुम्बिका २.	४३११३२
तुम्बी २.	३३११६७
तुम्बुक १. २. ३.	२४११६
तुम्बुका २.	३३११६८
तुरग १.	३३७१०
तुरङ्ग १.	३३७१०
तुरङ्गम १.	३३७१०
तुरायण ३.	३३११४४
तुराषाह् १.	१११७
तुरीय १. २. ३.	५४१२१
तुरुष्क १ ब.	३११२७

वैजयन्तीकोषः

तुरुष्क १.	३१८१११
तुर्य १. २. ३.	५४१२१
तुर्यकालभुज् १.	३३११२५
तुलसी २.	३३१११९
तुला २.	५४१६०
" २.	६२११७
" २.	८६११४
तुलाकोटि १.	४३११४५
तुलापुरुष १.	३३११४३
" १.	३३११४३
तुलिका २.	३११६
तुल्य १. २. ३.	५४११२१
तुल्यविक्रम १.	३३११
तुवर १.	३३११५२
" १.	५३१२७
" १.	५३१४२
तुवरी २.	३२११७
" २.	३३१४८
तुष १.	३३११७६
" १.	४३१६६
तुषानल १.	१२१२०
तुषाम्बु ३.	४३१८३
तुषार १.	२२१९
" १.	५३१७
तुषित १ ब.	१३१८
तुष्ट १.	३३१८५
तुष्टि २.	३३११६६
तुहिन ३.	२२१९
तूण १.	३३७१७८
" २. (आण)	३३१११०
तूणी २.	३३७१७८
तूणीर १.	३३७१७८
तूपर ३.	३३११०५
" १. २. ३.	७४११२
तूबर १.	३३१७३
तूर १.	३३११३७
तूर्ण १. २. ३.	५४११२४
तूर्य १. २.	३३११३६
तूल १. २.	३३१९
तूलपुष्प १.	३३११९३

( स्थूलपुष्प )

( ६६ )

[ तृप्त ]

तृप्तफला २.	३३१९१
तृप्तिका २.	३३१२३५
" २.	३३११३
तृप्तिनी २.	३३१९१
तृप्ती २.	६२११७
तृष्णीकाम् ४.	८८११५
तृष्णीम् ४.	८८११५
तृड्घ्नी २.	३३१११२
तृण ३.	३३११८४
" ३.	३३१२२५
" २.	३३१२३३
" २.	३३१२३५
तृणकोल १.	३३८१५
तृणजलायुका २.	४११५९
तृणता २.	७२११०
तृणद्रुम १.	३३१२२४
तृणधान्यक ३.	३३८१५८
तृणध्वज १.	३३१२१४
तृणपञ्चिका २.	३३८६४
तृणराज १.	३३१२१६
" १.	३३१२२०
तृणशय्य १. २. ३.	३३१२३१
तृणशून्यक ३.	३३११८३
तृणशोणक १.	५३१५०
तृणसंवर १.	३३११२
तृणसञ्चय १.	३३८६५
तृणसिंह १.	३३१५२
तृणस्तम्ब १.	३३१२३५
तृणाटवी २.	३३१२
तृणेन्धन ३.	३३१९६
तृण्या २.	५३११४
तृतीय १. २. ३.	५३१२१
तृतीयाकृत १. २. ३.	३३८२२
तृतीयाप्रकृति १.	४३१३
तृप्त १.	२३१२७
तृपि १.	२३१२७
तृप्त १. २. ३.	४३११०५
" १. २. ३.	५३१९९

[ तृप्ति ]

तृप्ति २.	३३११८८
" २.	४३११०५
तृप्तक १.	३३१९९
तृप् २.	८२११९
तृप्ति २.	३३११७९
तृप्ति १. २. ३.	५३१३७
तृष्णज् १. २. ३.	५३१३५
तृष्णा १.	८२११९
ते १. २. ३.	८५३९
तेजन १.	३३१२१५
" २. ३.	३३११९१
तेजनक १.	३३१२२८
तेजनी २.	३३१११४
तेजस् ३.	१२११९
" ३.	६३११४
तेजस्विन् १.	४३१११०
तेजित १. २. ३.	३३११९७
तेम १.	५३२२९
तेमन ३.	४३१८५
" ३.	७३११७
तेर १.	३३१४२
" ३.	४३१८६
तैतुल १ ब.	३३१२६
तैल ३.	३३११३७
तैलपर्णिक ३.	२३१११४
तैलपर्णी २.	८२१६
तैलपायिका २.	२३१४४
तैलित्स १.	५३१३२
तैलिन् १.	३३१२७
तैलिशाला २.	४३१२४
तैलीन १. २. ३.	३३८२०
तैष १.	२३१८२
तोक ३.	४३१४१
तोकम १.	६५३८
तोच्चार १ ब.	३३१२५
तोटक १.	३३८४१
तोडभी २.	३३११२६
तोड ३.	३३१५
तोत्त्र ३.	३३७८२
" ३.	३३८२९
तोदन ३.	७३११७

शब्दानुक्रमणिका

तोमर १. ३.	३३७१६६
तोय ३.	४२११
तोयपर्णिका २.	३३८५३
तोयपिप्पली २.	३३११९७
तोयप्रवाह १.	३२१७
तोयप्रसादन १.	३३१४२
तोरण १. ३.	४३१४२
तोरणस्तम्भ १.	३३१५८
तोषणी २.	३३१२१२
तौर्यत्रिक ३.	३३१७१
त्यक्त १. २. ३.	५३११०१
त्यक्तभर्तृका २.	३३१४५
त्यक्तसंवास १. २. ३.	३३११३
त्यक्तात्मन् १. २. ३.	३३११३
त्याग १.	३३१११८
" १.	५३१४०
त्रपा २.	३३११९७
त्रपु ३.	३३१३०
" ३.	३३१३१
" ३.	६३१३३
त्रपुष १. २. ३.	३३११७१
त्रय ३.	५३११६
त्रयी २.	३३१२६
त्रयीतनु १.	२३११३
त्रयीपुष १.	३३११
त्रयोदशी २.	३३१११८
त्रस १. २. ३.	५३१६१
त्रसर १.	३३१९
" १.	४३१३२
त्रसरेणु २.	२३१२३
" १. २.	५३१४२
त्रस्त ३.	३३११६८
" १. २. ३.	५३११८
त्रस्तु १. २. ३.	५३११८
त्राण १. २. ३.	५३११००
त्रात १. २. ३.	५३११००
त्रापुष ३.	३३२२३
त्रायन्ती २.	३३११०९
त्रायमाणा २.	३३११०९

( ६७ )

[ त्रिधात्मन् ]

त्रास १.	६३१२५
त्रिंशत् २.	५३१२६
त्रिः(स्) ४.	८८१३
त्रिक ३.	४३१६६
" १. २.	८९१२७
त्रिकुट् १.	१३११०
" १.	३३१२
त्रिकटु ३.	३३८८०
त्रिकण्टक १.	३३१९८
" १	३३११४१
" १.	३३११६५
" १.	४३१४७
त्रिकल १.	३३२३
त्रिकालदर्शिन् १.	३३११५०
त्रिकालदृश् १.	१३१३५
त्रिकुट ३.	३३८११९
त्रिकूट १.	३३२२
" ३.	३३१११०
" ३.	३३८११९
त्रिकेतु १.	२३१२५
त्रिकोणक १.	४३१३६
त्रिखट्व १. २.	८९१३६
त्रिखर १.	५३१३४
त्रिगन्ध ३.	४३११५०
त्रिगर्त १ ब.	३३१२६
त्रिगुणाकृत १. २. ३.	३३८२२
त्रिचतुर १. २. ३.	५३१२५
त्रिजातक ३.	४३११५०
" १. २. ३.	८९१३९
त्रितत्त्व २. ३.	८९१३६
त्रितय ३.	५३११६
त्रिदश १.	१३११४
त्रिदिव १.	१३१२
" १.	७३१२९
त्रिदिवा २.	३३८८७
त्रिधा ४.	८८१२०
त्रिधात्मन् १.	१३११५
" १.	७३१२९



[ त्रिपक्षी ]

त्रिपक्षी २.	३१६६
त्रिपदी २.	३१७८३
त्रिपर्णक १.	३१३२९
” ३.	८३१९
त्रिपात्र ३.	८११८
त्रिपाद १.	३११५२
त्रिपुट १.	३१८४४
त्रिपुटा २.	३३११३७
” २.	३१८८७
त्रिपुटी २.	३३११३७
त्रिपुर १.	३३३७७
त्रिपुरारि १.	१११४३
त्रिफला २.	३१८८२
त्रिमार्गागा २.	४१२२४
त्रिमार्गा २.	४१२२५
त्रियामा २.	२११५६
त्रियुग ३.	२११९२
” ३.	८११८
त्रियूह १.	३१७१००
त्रिरसा २.	४३३७९
त्रिरेख १.	४११५६
त्रिलोकी १.	८११८
त्रिलोचन १.	१११४२
त्रिवर्ग १.	३३३२३५
” १.	७११२८
त्रिवलीक ३.	४१४६०
त्रिविक्रम १.	११११९
त्रिविक्रमासन १.	३३३२२८
त्रिविष्टप ३.	१११११
त्रिवीथिका २.	२११४५
त्रिवृत् २.	३३३१३७
” १. २. ३.	३१११०
त्रिवृत् १. २. ३.	३१११०
त्रिशङ्कु १.	७११२९
त्रिशिरस् १.	११२४४
” १.	११२५६
त्रिपृष्ठ १. २. ३.	३१८२३
त्रिपुटभ १.	३१८४१
त्रिपुटभा २.	३१८४२
त्रिसन्ध्य ३.	२११६७

वैजयन्तीकोषः

त्रिसर १. २. ३.	८११२५
त्रिसरा २.	४३३७९
त्रिसारा २.	३३३२२
त्रिसीत्य १. २. ३.	३१८२२
त्रिसुगन्ध ३.	४३३१५०
त्रिस्नेह ३.	४३३२९
त्रिस्रोतस २.	४३३२४
त्रिहल्य १. २. ३.	३१८२२
त्रुटि २.	२११५२
” २.	३१८८७
” २.	६३१७७
त्रेता २.	२११९१
” २.	३११६२
” २.	६३१७७
त्रेधा ४.	८१८२०
त्रेधस् ४.	८१८२०
त्रैपुर १ ब.	३११३६
त्रैवृत् ३.	४३३९९
त्रैपुटभ ३.	८१११६
त्रैहोत्र ३.	३३३९९
त्रोटि २.	२३३५०
त्र्यश्रा २.	३३३१३७
त्र्यूषण ३.	३१८८०
त्वक्क्षीरा २.	३१८१०
त्वक्त्र ३.	३१७१५२
त्वक्पत्र ३.	३१८१०४
त्वक्सार १.	३३३२२५
त्वग्गन्ध १.	३३३३६
त्वग्ज ३.	४३३११७
त्वग्बल ब १.	३१७१८३
त्वच् २.	३३३१३
” २.	४३३१०३
” २.	८१२२०
” २.	८१६१२
त्वच १. २.	३३३१३
” ३.	३१८१०४
त्वचिसार १.	३३३२१५
त्वरा १.	३११८९
त्वरित १. २. ३.	५३३१२४

[ दक्षिणाशारत ]

त्वरी २.	३११८९
त्वष्ट १. २. ३.	५३३१११
त्वष्टृ १.	१३३७
” १.	३१९३४
” १.	६३३२५
त्वाष्ट्र १.	३३३१०८
त्वाष्ट्रक १.	३१८४२
त्वाष्ट्री २.	२११२३
त्विष् २.	४३३१५०
” २.	८१२१८
त्विषाम्पति १.	२१११२
त्सस् १.	३१७१६८
द	
दंश १.	२३३४५
” १.	४३३९०
दंशन ३.	३१७१५२
दंशबन्धन ३.	४३३३९
दंशालालिक १.	३३३१०
दंशित १. २. ३.	३१७१४२
दंशी २.	२३३४५
दंष्ट्रा २.	४३३८९
दंष्ट्रिन् १.	६३३४०
दक ३.	४३३२
दक्ष १.	२३३१३
” १. २. ३.	५३३१९
” १. २. ३.	५३३५४
” १. २. ३.	५३३१३७
दक्षकन्या २.	८१२१७
दक्षवाच् १. २. ३.	
दक्षा २.	३१११
दक्षाध्वराराति १.	१११४१
दक्षिण १. २. ३.	५३३२०
” १. २. ३.	७३३४५
दक्षिणस्थ १.	३१७१३८
दक्षिणाधिप १.	१२३३५
दक्षिणानल १.	१२३३३
दक्षिणापथ १.	३१३३२
दक्षिणायन ३.	२११८९
दक्षिणाशारत १.	३३३१५२

[ दक्षिणोर्मन् ]

दक्षिणोर्मन् १.	३११४०
दक्षिणस्थ १.	११११३८
दग्धान्न ३.	४३३७६
दण्ड १.	३३३१८
” १.	३१७४६
” १.	६३३८८
दण्डक ३.	२३३४२
” १ ब.	३११३३
दण्डधर १.	१२३३३
दण्डनीति २.	३३३३०
दण्डपद्मासन १.	३३३२८
दण्डपाल १.	३१७२१
दण्डपाशिक १.	३१७२०
दण्डवत् १. २. ३.	
” १.	५३३११८
दण्डाजिन ३.	३३३१९५
दण्डासन ३.	३३३२२६
” १.	३१७१८१
दण्डाहत ३.	३१८१४८
दण्डिक १.	३१७१८१
” १. २. ३.	
” १.	५३३११८
दण्डिका २.	३१११२९
दण्डिन् १.	२३३२५
” १. २. ३.	
” १.	५३३११८
” १.	६३३२६
दण्डोत्पल १.	३३३१०६
दक्षान्त्रेय १.	१११३१
दद २.	४३३१२५
ददुघ्न १.	३३३१५८
ददुज ३.	३१८१३५
ददुण १. २. ३.	४३३१४५
ददुनाशिनी २.	३३३१०३
ददुमत् १.	४३३१४५
दधि ३.	३१८१०९
” ३.	३१८१३९
दधिक्षीर ३.	३३३१९
दधित्थ १.	३३३३२
दधिफल १.	३३३३२
दधिबुस ३.	३१८१४२

शब्दानुक्रमिका

दधिमण्डक ३.	३१८१४४
दधिसुख १.	३३३४०
दधिसक्तु १.	४३३७१
दध्यमल १.	४३३९७
दध्याज्य ३.	३३३९९
दध्याली २.	३३३१४३
दन्त १.	४३३८८
” १.	६३३२६
दन्तच्छद १.	४३३८७
” १.	८११३३
दन्तधावन १.	३३३३३
दन्तबीज १.	४३३४७
दन्तभाग १.	३१७८१
दन्तवस्त्र ३.	४३३८८
दन्तवेष्ट १.	३१७११०
दन्तशठ १.	३३३३२
” १.	३३३३५
” १.	३३३३७
” १. २. ३.	८१११९
दन्तशठा २.	३३३१६३
दन्ताली २.	३१७११२
दन्तावल १.	३१७६१
दन्तिका २.	४३३५३
दन्तिन् १.	३१७६०
दन्तुर १. २. ३.	५३३१९
दन्तोलखलक १. २. ३.	
” ३.	३३३३२
दन्त्य १. २. ३.	५३३११७
दन्दशूक १.	४३३४
” १.	४३३४०
दध्र १. २. ३.	५३३१३६
दम १.	३१७४६
” १.	५३३२७
दमण्डक १.	३३३५९
दमथ १.	५३३२७
दमनक ३.	३३३१२३
दमयन्तिका २.	३३३१८
दमित १. २. ३.	
” ३.	५३३११४
दमुनस् १.	१२३१८
दम्पति १ द्वि.	४३३४८

[ दलकूर्चिका ]

दम्भ १.	३३३१९५
दम्भोलि १.	१२३१३
दम्य १.	३३३५४
दया २.	३३३१९२
दयालु १. २. ३.	५३३३९
दयित १. २. ३.	५३३७०
दर १. ३.	६३३३९
” १. २. ३.	८११३७
दरण १.	२३३२५
दरथ १.	७३३३१
दरद्व २.	६३३१८
दरिणि १. २.	३१८२४
दरित १. २. ३.	५३३१८
दरिद्र १. २. ३.	५३३५९
दरी २.	३३३३६
” २.	८११३४
दरदर १.	३१७७४
” १.	३११२४
दरुरीक १.	८३३२४
दर्पक १.	१३३२७
दर्पण १.	४३३१६२
दर्भ १.	३३३२२७
” १.	३३३२२७
” १.	३३३२२९
दर्व १.	१३३३३
दर्वि १.	२३३१०
” २.	४३३१६३
दर्वितुण्ड १.	२३३१०
दर्विदा २.	२३३१०
दर्वी २.	३३३१०१
दर्वीकर १.	४३३१७
” १.	४३३१८
” १.	४३३१०
” १.	४३३१११
दर्श १.	२३३१७०
दर्शक १.	३३३२४
दर्शन ३.	३१७१७
दर्शनी २.	४३३१६
दल ३.	३३३१६
” १.	६३३३९
दलकूर्चिका २.	३३३१०८



[ दलत् ]

दलत् १.	४११४६
दली २.	८११७
दव १.	११२२१
" १.	६११२७
दवथु १.	४११२२
दश १ र. ३. ब.	४११२१
दशन १.	४११८८
दशनोच्छिष्ट १.	८११५२
दशपुर ३.	३११२०१
दशबल १.	१११३३
दशवाहु १.	१११४७
दशम १. २. ३.	५११२०
दशमिन् १. २. ३.	५११४४
दशमीस्थ १. २. ३.	८११७
दशरथात्मज	१११२२
दशा १ ब.	४११६१
" २.	४११५३
" २.	५१२१२
दशाङ्गुल १. २. ३.	३११५३
दशानाह १.	३११६१
दशार्ण १ ब.	३११३७
दशान्यय १.	१११४७
दशारव १.	१११४२
दशास्य १.	१११४२
दशोरक १ ब.	३११३८
दस्यु १.	३१११२
" १.	३११२५
" १.	३११४०
" १.	३११५६
दस्युजाति २.	३११२०८
दत्त १ द्वि.	११३१६
दहन १.	११११५
" १.	५१३८
दहर १. २. ३.	५११३६
दह १. २. ३.	५११३६
दा २.	३१७५२
दाक्षायण ३.	३१२१९
दाक्षायणी २.	८१२१६
दाक्षाय्य १.	३१३३०

वैजयन्तीकोषः

दाक्षिणात्य १.	३१३२२०
दाक्षी २.	३१४४३
दाक्षीपुत्र १.	३१६१५४
दाडिम १. २. ३.	३१३७२
" १. २. ३.	८११३८
दाण्डपाता २.	२११७५
" २.	८११६
दाण्डाजिनिक १. २. ३.	५११२३
दात १. २. ३.	५११०२
दात्यूह १.	२१३१२
" १.	२१३३६
दात्र ३.	३१८३०
दाधिक १. २. ३.	४११९५
दान ३.	३१६६३
" ३.	३१६११८
" ३.	६१३१५
दानव १.	११३१९
दानवाञ्जन ३.	३१३१२२
दान्त ३.	३१३१२३
" १. २. ३.	५१११४
दान्ति २.	५१२२७
दामन् २. ३.	३११२९
" २. ३.	८११३२
दामनी २.	३११२९
दामा २.	३११२९
दामाञ्जन ३.	३१११२
दामोदर १.	१११२५
दाय १.	६११२६
दायाद १.	७११३०
दार ३.	४१२३९
" १ ब.	४१३३५
दारक १. २. ३.	५११२
दारद १ ब.	३११२७
" १.	३१२४४
दारपत्र १.	४१३७१
दारसङ्ग्रह १.	३१६५४
दारित १. २. ३.	५११११
दारिपत् १.	३१८२६
दारु ३.	३१३१३

[ दिग्वासस् ]

दारु ३.	३१३७१
दारुक १.	१११२६
दारुकण्टक ३.	२१२२७
दारुण १. २. ३.	३११७९
" ३.	५१३५
दारुतक्षणी २.	३११३६
दारुफला २.	३१३१८१
दारुहरिद्रा २.	३१३२१२
दारुहस्तक १.	४१३१६३
दारुर् ३.	३१११६
दारुण्ड १.	२१३३८
दारुवाट १.	२१३३३
दारुविका २.	३१२४३
" २.	३१३११६
दारुर्वा २.	३१३२१२
दाल ३.	३१८१३५
दालिम १.	११२१६
दाव १.	६११२७
दाश १.	३११४२
दाशरथि १.	१११२०
दाशार्ह १.	१११२५
दाशेरक १.	३११६७
दास १.	३११२
दासमोचित १.	३११४
दाससूनु १.	३११३
दासी २.	३१३१११
" २.	३१३१९०
" २.	४१२२६
दासीसभ ३.	८११२०
दासेय १.	४११४३
दासेर १.	४११४३
दिकरी २.	४११८
दिगन्त १.	२११६
दिग्गन्त १. २. ३.	५१११५
दिग्गज १.	२११८
दिग्ध १.	६११४१
दिग्भव १. २. ३.	४१११६
दियुग्म ३.	२११७
दिग्वासस् १.	१११४६

[ दिङ्मण्डल ]

दिङ्मण्डल ३.	२११६
दिङ्मध्य ३.	२११७
दिङ्मार्ग १.	४१३१७
दिधिषु १. २.	७११४७
दिधिषूपति १.	३१६४३
दिन ३.	२११५६
दिनत्रयिन् १.	३१६४१
दिनप्रणी १.	२१११०
दिनम्मन्या २.	२११५८
दिनादि १.	२११६४
दिव् २.	११११
" २.	८१११७
दिवस १. ३.	२११५५
दिवस्पति १.	११२१
दिवा ४.	८१८७
दिवाकर १.	२१११०
दिवाकीर्ति १.	८११२४
दिवाचर १.	२१११०
दिवाटन १.	२१३१५
दिवाभीत १.	८११२४
दिविषद् १.	१११३
दिवौकस् १.	१११३
" १.	७११३०
दिव्य ३.	२१११
" ३.	३१३२०४
" ३.	३१८१२
" ३.	३११११०
" ३.	८१३१८
दिव्यकालिनी २.	४१११७
दिव्येलक १.	४१११५
दिव्योल्क १.	४१११७
दिश २.	२११२
" २.	४१११५
दिशा २.	२११२
दिशान १.	३१६२२
दिश्य १. २. ३.	५१११६
दिष्ट १.	२११५२
" ३.	२११२५
" ३.	३१६१८९
" ३.	४१३११५
दिष्टान्त १.	३१३२०१

शब्दानुक्रमणिका

दिष्टि २.	३११५३
" २.	६१२१९
दिष्ट्या ४.	८१७२१
" ४.	८१८१७
दिहण्ड १ ब.	३११२४
दीक्षणीयेष्टि २.	३१६८७
दीक्षा १.	३१६८७
दीदिवि १.	२११३४
" १. २.	४१३७६
दीधिति २.	२११२२
दीन १.	३१३७०
" १.	३१३२२३
" १. २. ३.	५११६०
दीनवादिन् १. २. ३.	५११४७
दीनार १.	५११४१
दीप १.	४१३१६१
दीपक १.	३११४१
" १. २. ३.	७११४७
दीपन १.	३१३६०
दीपवल्ली २.	४१३१६०
दीपवृक्ष १.	४१३१६१
" १.	८१६२०
दीपिका २.	४१३१६०
दीस १. २. ३.	८१११४
दीसा २.	२१२४
दीसि २.	२११२२
दीप्य १.	३१८१३
दीप्यका २.	३१८१०२
दीर्घ १. २. ३.	५११८१
दीर्घकोशिका २.	४११५८
दीर्घदण्ड १.	३११५९
( दीर्घदण्ड )	
दीर्घदर्शिन १.	३१६२३५
दीर्घदृष्टि १. २. ३.	५११५३
दीर्घनादिन् १.	३११६९
( रतिकील )	
दीर्घनिद्रा २.	३१६२०१
दीर्घनिर्वेश १.	३१७१६३
दीर्घपत्र ३.	३१३२०६

[ दुर्ग ]

दीर्घपत्री २.	३१३१९६
दीर्घपर्णी २.	३१३१७४
दीर्घपाद १.	२१३३१
दीर्घपृष्ठ १.	४११६
दीर्घफला २.	३१३१६०
दीर्घरोमक ३.	३१३२०२
दीर्घरोमन् १.	३११४७
दीर्घवल्ली २.	३१६१३३
दीर्घवाच् १.	२१३१३
दीर्घवृन्त १.	३१३६८
" १.	३१३२१८
दीर्घशूक १.	३१८६१
दीर्घसूत्र १. २. ३.	५११७९
दीर्घिका २.	४१२६
दीर्घाङ्ग १.	२११२०
दीर्घी २.	२११२
दुःख १. २. ३.	११२३९
" ३.	३१६१८७
" १. २. ३.	५११४४
दुःखदोहा २.	३१४४९
दुःकूल ३.	४१३१२२
" ३.	७१३१८
दुग्ध ३.	३१८१४५
दुग्धतालीय ३.	८१३१४
दुद्रुम १.	३१३२०५
दुध्र १.	११२२१
दुन्दु १.	१११२६
दुन्दुभ ३.	३१३२००
दुन्दुभि १.	११२४५
" १.	३११३३३
" १. २.	७११४८
दुर् ४.	८१७४
दुर्ध्व १.	३११५०
दुराचार १. २. ३.	३१६१२
दुरालभा २.	३१३१२५
दुरासद १.	११२१६
दुरित ३.	३१६१६८
दुरोदर १.	८१११०
दुर्ग ३.	३१७१३







[ द्रव्य ]

द्रव्य ३.	६३११५
द्रव्यपद १.	५३११
द्राक् ४.	८८८१
द्राक्षा २.	३३३१८१
द्राक्षाफल १.	३३३२७
द्रागभृत ३.	४२१४
द्रावण १.	३३३४२
” १.	३८८१२४
द्राविडक १.	३३३१६७
द्राविल १.	३३३१५९
द्रु १.	३३३४
द्रुकिलिम ३.	३३३७१
द्रुघण १.	१११९
” १.	३३३१७१
” १.	७१३०
द्रुण ३.	३३३१७२
द्रुणा २.	३३३७८
द्रुणी २.	४११५१
द्रुत ३.	३३३१२३
” १. २. ३.	४३३९५
” १. २. ३.	५३३१२४
” १. २. ३.	६३३८
द्रुति २.	५३३१
द्रुम १.	३३३४
” १.	३३३८५
द्रुमश १.	४३३४७
द्रुमामय १.	४३३१५३
द्रुवय ३.	५३३६४
द्रुह १.	३३३२६
द्रुहिण १.	१११७
” १.	७१३२
द्रुण १	४१३२
द्रुकाण १.	२११५१
द्रुण १.	२३३१७
” १. ३.	५३३५५
” १.	५३३६३
” १. ३.	६३३४०
द्रुणक्षीरा २.	३३३५०
द्रुणदुग्धा २.	३३३५०
द्रुणपुष्पिका २.	३३३१२४
द्रुणमुख ३.	४३३३

वैजयन्तीकोषः

द्रोणिका २.	३३३१२४
द्रोणी २.	४२११५
” २.	६३११८
द्रोह १.	३३३५९
द्रौणिक १. २. ३.	३८८२१
द्रुद्ध ३.	५३३१५
” ३.	६३३१६
द्रुय ३.	५३३१५
द्रादश १. २. ३.	५३३२१
द्रादशात्मन् १.	२३३१०
द्रादशाह १.	३३३१४४
द्राप १.	२३३१२
” ३.	३३३६२
” १.	७३३३०
द्रार् २.	४३३४२
” २.	८३३१६
द्रार ३.	४३३४२
द्रारका २.	४३३६
द्रारपटल ३.	४३३५०
द्रारपाल १.	३३३२४
द्रारबन्ध १.	४३३४३
द्रारयन्त्र ३.	४३३४९
द्रारवती २.	४३३६
द्रारवतीपद ३.	३३३१९
द्रास्थ १.	३३३२४
द्रिः(-स्) ४.	८८८६
द्रिक १.	२३३१५
” ३.	३३३१०
द्रिकालिक १. २. ३.	३३३१२८
द्रिखण्डक १.	४३३१२७
द्रिगुणाकृत १. २. ३.	३३३२३
द्रिज १.	३३३३
” १.	४३३७८
द्रिजकुत्सित १.	३३३५५
द्रिजन्मन् ३.	३३३५७
( विजन्मन् )	
” १.	७३३३१
द्रिजपोत १.	३३३११
द्रिजाति १.	७३३३१

[ द्वैगुणिक ]

द्विजायनी २.	३३३२०
द्विजालय ३.	४३३८६
द्विजिह्व १. २. ३.	७३३४५
द्वितय ३.	५३३१५
द्वितीय १. २. ३.	५३३२०
द्वितीया २.	२३३१०
” २.	४३३३४
द्वितीयाकृत १. २. ३.	३३३२३
द्वित्र १. २. ३.	५३३२५
द्विधा ४.	८८८२०
द्विधागति १.	४३३४७
द्विनग्ननक १. २. ३.	५३३१५
द्विप १.	३३३६०
” १.	८३३१५
द्विपद १.	१३३१९
द्विपाद् १.	३३३११
द्विसुखी २.	४३३२०
द्विसुष्टिक १.	५३३१२
द्विरद १.	३३३६०
द्विरसन १.	४३३१४
द्विरेफ १.	२३३४२
द्विवेदिनी २.	२३३७६
द्विष् १.	३३३४१
द्विषत् १.	३३३४०
द्विषन्तप १. २. ३.	५३३६९
द्विकृष्ट १. २. ३.	३३३२३
द्विसीत्य १. २. ३.	३३३२३
द्विहृत् १. २. ३.	३३३४५
द्विहायनी २.	४३३३३
द्वीप १. ३.	४३३३३
द्वीपवत् १. २.	८३३२९
द्वीपिन् १.	३३३३३
द्वेधा ४.	८८८२०
द्वेषण १.	३३३४१
द्वेषिन् १.	३३३४१
द्वेष्य १. २. ३.	५३३६९
द्वैगुणिक १. २. ३.	३३३८८

[ द्रव्य ]

द्रव्य ३.	५३३१५
द्रव्य ३.	३३३६
द्रव्य ४.	५३३२०
द्रव्य १. २. ३.	३३३१२८
द्रव्यायन १.	१३३३२
द्रव्यातुर १.	१३३५४
द्रव्याचित ३.	५३३६२
द्रव्याढक १. ३.	५३३५५
द्रव्यायोग ३.	२३३१९२
ध	
धटिक १. ३.	५३३६०
धटिनी २.	३३३१८
धन ३.	३३३७३
धनजय १.	८३३२४
धनद १.	१३३५६
धनवत् १. २. ३.	५३३५७
धनाध्यक्ष १.	१३३५६
धनाया २.	३३३१८०
धनिन् १.	१३३५६
” १. २. ३.	५३३५७
धनिष्ठा २ ब.	२३३४१
धनीयिका २.	३३३४९
धनु (धनुःपट) १.	३३३५७
” १. २.	३३३७२
” २.	६३३१९
धनुर्ग्रह १.	३३३५३
धनुर्दण्ड १.	३३३५७
धनुर्धर १. २. ३.	३३३४३
धनुर्वेद १.	३३३३०
धनुश्श्रेणी २.	३३३११४
धनुष्पाणि १.	१३३२२
धनुष्मत् १. २. ३.	३३३४३
धनुस् ३.	३३३५५
” ३.	३३३५७
” १. ३.	३३३७२
” १.	८३३१५
धनोत्पत्ति २.	३३३४४
धन्य १. २. ३.	५३३५६
धन्या २.	३३३१०४

शब्दानुक्रमणिका

धन्या २.	३३३४९
धन्याक ३.	३३३५०
धन्येय ३.	३३३५०
धन्वन् १.	३३३४२
” ३.	३३३७२
धन्वन्तर ३.	३३३५७
धन्वन्तरसहस्र ३.	३३३६२
धन्वन्तरि १.	८३३२५
धन्वयास १.	३३३१२६
धन्ववन १.	३३३३३
धन्विन् १. २. ३.	३३३४३
धमन १.	३३३२८
” १.	४३३९१
धमनी २.	३३३१०१
” २.	४३३१६
धम्मिल्ल १.	४३३१००
धयन ३.	४३३१०४
धर १.	३३३९९
धरण ३.	५३३४४
धरणी २.	३३३१२
धरणीधर १.	१३३१३
धरा २.	३३३१२
” २.	३३३१३१
धरासुत १.	२३३३१
धरित्री २.	३३३१२
धरीक १.	४३३२८
धरुण १.	७३३३२
” ३.	८३३१८
धर्म १. ३.	३३३१६८
” १.	३३३१५८
” १.	५३३११
” १. २. ३.	६३३४२
धर्मद्वी २.	४३३२५
धर्मपत्तन ३.	३३३७९
धर्मपाल १.	३३३१५८
धर्मभ्रातृ १.	३३३२४
धर्ममाणव १.	३३३२३
धर्मराज १.	१३३३३
” १.	१३३३५
धर्षण ३. २.	७३३४८

[ धारण ]

धर्षणी २.	३३३४६
” २.	७३३४८
धव १.	३३३१७
” १.	४३३३७
” १.	६३३२७
धवल ३.	५३३१०
” १. २. ३.	७३३४९
धवला २.	३३३४३
धवित्र ३.	४३३१५९
धातकि २.	३३३९७
धातु १.	४३३१११
” १.	६३३२८
धातृ १.	१३३३६
” १.	८३३११
धातृपुष्पिका २	३३३९७
धात्री २.	३३३१२
” २.	३३३१७७
” २.	६३३१९
धानका २.	५३३४०
धाना २.	३३३४९
” १ ब.	४३३७१
” २.	६३३१९
धानी २.	३३३६०
धानुष्क १. २. ३.	३३३४३
धान्य ३.	३३३३१
” ३.	३३३५१
धान्यकोष्ठ १.	४३३६४
धान्यमञ्जरी २.	३३३६४
धान्यराशि १.	३३३६५
धान्यवृद्धि २.	३३३८५
धान्या २.	३३३४९
धान्याम्ल ३.	४३३८३
धान्योत्क्षेपण ३.	५३३६१
धामन ३.	४३३१७
” ३.	६३३१६
धामार्गव १.	३३३११५
” १.	३३३१६२
धारकदाह ३.	४३३४०
धारका २.	४३३६३
धारण ३.	५३३५९



[ धारणा ]

धारणा २.	३१६२३१
" २.	३१८१५५
" २.	४१३१४०
धारणी २.	३१३१७८
धारभार ३.	५११६१
धारा २.	३१७११८
" २.	३१७१८६
" २.	४१२३०
" २.	६१२२०
धाराग्र ३.	७३११८
धाराट १.	७११३३
धाराधर १.	२१२११
धारिका २.	२११५४
धारोष्ण ३.	३१८१४६
धार्तराष्ट्र १.	२३१७
धार्मिक १.	३१६२३
" १.	३१७२०
धावन २. ३.	७१५४९
धावनी २.	३१३१३६
धिक् ४.	८१७५
धिवकृत १. २. ३.	५१४७१
" १. २. ३.	५१४११०
धिविक्रया २.	५१२२१
धिग्वन १.	३१५१७
धिग्वनक १.	३१५६
( धिश्चनक )	
धिषण १. २.	७१५५०
धिष्य ३.	२११३८
" १. ३.	६१५४३
धी २.	३१६१६३
धीकर १.	३१९६
( अधीङ्गर )	
धीकर्मिक १.	३१७२०
धीता २.	६१२२०
धीति २.	४१३१०४
धीमक ३.	३१२३३
धीमत् १.	३१६२३४
धीमती २.	४१४२१
धीर १. २. ३.	३१७१५०
" १. २. ३.	५१४२०

वैजयन्तीकोषः

धीर १. २. ३.	५१४५२
" १. २. ३.	६१५४४
धीरा २.	३१३१३१
धीवर ३.	३१२३३
" १.	३१५२६
" १.	३१५८२
" १.	३१९४२
धुत्तिम ३.	३१८१४५
धुत १. २. ३.	५१४९५
धुत्तर १.	३१३७६
धुनी २.	४१२२३
धुर् २.	३१७१३०
" २.	८१२१७
धुरण १.	५११४३
धुरन्धर १.	३१३९४
" १. २. ३.	३१४६७
धुरीण १. २. ३.	३१४६७
धुर्धर १.	३१३७७
धुर्य १. २. ३.	३१४६७
धुर्यावकर्तिक १. २. ३.	३१६१३३
धुर्वी २.	३१७१३०
धुस्तर १.	३१३७६
( धुत्तर )	
धुङ्क्षणा २.	२१३१८
धूत १. २. ३.	५१४१०१
" १. २. ३.	६१४८
धूप १.	११२२८
धूपायित १. २. ३.	५१४९८
धूपित १. २. ३.	५१४९८
धूम १.	११२२८
" १.	८१६५
धूमक १. २. ३.	२१२१०
धूमकेतु १.	११२१६
" १.	८१२२५
धूमज १ ब.	२११३७
धूमयोनि १.	२१२११
धूमल १. ३.	३१९१३८
" १.	५१३२१
धूमवर्णा २.	११२३०

[ धैवत ]

धूमिका २.	२१२१०
धूमोर्णा २.	११२३६
धूम्या २.	५१११४
धूम्र १.	५१३८
" १.	५१३२१
धूम्रकर्ण १.	३१४६६
धूम्राट १.	२१३२७
धूर्जटि १.	१११४०
धूर्त ३.	३१२३६
" १.	३१३६०
" १.	३१३६१
" १.	३१३७६
" ३.	३१८११५
" १.	३१९५८
" १. २. ३.	५१४२४
धूर्तार १.	३१३६०
धूलि २.	३१८२५
" २.	८१६१७
" १. २.	८१९२६
धूलिजङ्घ १.	२१३१६
धूलिध्वज १.	११२४९
धूलिभक्त ३.	३१६५६
धूलिलुटित ३.	३१७१११
धूलीकदम्ब १.	८११५३
धूसर १.	३१९२७
" १.	५१३१४
धृति २.	१११४७
" २.	३१६१६६
" २.	३१७२०८
" २.	६१२२०
धृष्ट १. २. ३.	५१४१७
धृष्टा २.	३१६५०
धृष्णु १. २. ३.	५१४१७
" १. २. ३.	६१४९
धेनु २.	३१४५०
" २.	३१७७०
धेनुष्या २.	३१४५०
धेनुक ३.	५१११०
धेनुकी २.	२११७७
धैर्य ३.	३१७२०८
धैवत १.	३१९१३२

[ धारण ]

धारण १.	२३१६
" ३.	३१७१२३
धारि २.	३१६५७
धौत १. २. ३.	३१७१९७
धौतकौशेय ३.	४१३११८
धौतयुग्म ३.	४१३१२०
धारण १. २. ३.	३१७१२१
धारित १. २. ३.	३१७१२१
धारितिक १. २. ३.	३१७११८
" १. २. ३.	३१७१२१
धौरेय १. २. ३.	३१४५७
धौर्य १. २. ३.	३१७१२१
ध्यान ३.	३१६२२२
ध्यामक ३.	३१३२३४
ध्रुव १.	३१७१३१
" १. २. ३.	६१५४४
ध्रुवा २.	३१३१६
" २.	३१३१००
" २.	३१६१००
ध्रुणा २.	२१४२
ध्वज १. ३.	३१७१३३
" १. ३.	६१५४३
" १. ३.	८१६५
ध्वजप्रहरण ३.	११२४८
ध्वजिन् १.	३१९४४
ध्वजिनी २.	३१७५५
ध्वनि १.	२१४११
ध्वस्त १. २. ३.	३१७२१९
" १. २. ३.	५१४१०२
ध्वाङ्क १.	२३११७
" १.	६११२७
ध्वाङ्गी २.	२१४४
ध्वान १.	२१४११
ध्वानका २.	५११४९
ध्वान्त ३.	२११६४
ध्वान्तमणि १.	२३१४७
न	
न ४.	८१७५
नःक्षुद्र १. २. ३.	५१४११

शब्दानुक्रमणिका

नकुटक ३.	४१४९१
नकुल १.	४११२७
नक्तक १.	२३१२३
" १.	५३१३०
नक्तखर १.	२३१२२
नक्तम् ४.	८१८७
नक्तमाल १.	३३१६२
नक्र १.	४११५३
नक्षत्र ३.	२१३३८
नक्षत्रकालिक १. २. ३.	३३१२७
नक्षत्रनेमि १. २.	८१५२६
नक्षत्रमाला २.	३१७८७
" २.	४३१४२
नख ३.	३१८१०१
" १. ३.	४१४७५
नखर १. ३.	४१४७५
नखरायुध १.	४१४७२
नखशस्त्र १.	८१६२३
नखायुध १.	४१४७२
नखारुस ३.	४१४११७
नगा १.	३३१५
" १.	३१८१०४
" १.	८११५८
नगर ३.	४३११
नगरद्वारकुट्टक १.	४३११५
नगरी २.	४३११
नगाधारा २.	३११३
नग्न १.	३१६७३
" १. २. ३.	५१४१५
" १.	६११३१
नग्नहृ १.	३१९५०
नगना २.	४१४१०
नगनाट १. २. ३.	५१४१५
नचक्र १.	३१६१९९
नट १.	३३१६९
" १.	३१५५५
" १.	३१५१०३
" १.	३१६६२
नटन ३.	३१७८८

[ नन्दिकेश्वर ]

नटभूषण ३.	३१२१३
नटिति २.	३१९७८
नटी २.	३१८१००
नटोत्साहन ३.	३१९१३९
नट्या २.	५१११४
नटवत् १. २. ३.	३११४४
नटवल १. २. ३.	३११४४
नण्ड १.	३१९६३
नत १. २. ३.	५१४८३
" १. २. ३.	५१४१२३
" १. २. ३.	६१४९
नतजालु २.	३१६४७
नतनास १. २. ३.	५१४१२
नद १.	४१२२९
नदनु १.	२१२२
नदी २.	२१२२२
" २.	८१९३
नदीभव ३.	३१८१२०
नदीमातृक १. २. ३.	३११४७
नद्ध १. २. ३.	५१४९७
नद्धी २.	३१९४४
ननन्द २.	४१४२७
ननान्द २.	४१४२७
ननु ४.	८१७२२
" ४.	८१८२
नन्दक १.	११११७
नन्दथु १.	३१६१८८
नन्दन ३.	११२१०
" १.	३१६१०२
" १.	४१४३९
" १.	८१९१४
नन्दनीनन्दन १.	३१६१५८
नन्दयन्ती २.	१११६०
नन्दा २.	१११६०
" २.	३३१९७
नन्दि २.	३१६१८८
नन्दिक १.	३१६५८
नन्दिका २.	११२११
नन्दिकेश्वर १.	१११५१



नन्दिन् ]		वैजयन्तीकोषः		[ नागवारिक		नागवीथिका ]		शब्दानुक्रमणिका		[ निकाय	
नन्दिन् १.	१११५१	नयनोदक ३.	३१९८७	नवांशुक ३.	४३१२०	नागवीथिका २.	२११४६	नाभीद ३.	३११५	नाली २.	३८१६३
" १.	३८१३५	नर १.	३१५१	नवीन १. २. ३.	५४१८८	नागवृन्तिका २.	३३११२६	नाभील ३.	७३११९	" २.	४४११६
नन्दिनी २.	१११६०	" १.	६११२९	नव्य १. २. ३.	५४१८८	नागाङ्क ३.	४३१८	नाम ४.	८१७२३	" २.	८१९३८
" २.	३३११७८	नरक १.	११२३७	नसिक १.	४३१३८	नागी २.	२११६	नामकर्मन् ३.	३१६३	नालीकर १. २. ३.	पा४१४८
" २.	३८१८८	नरकाराति १.	१११२५	नश्यत्प्रसूति ४.	४३१२०	नागोदरी २.	३१७१५४	नामधेय ३.	३११३१	नालीकवाच् १. २. ३.	पा४१४८
" २.	४३१११	नरकीलक १. २. ३.	३१६१२	नश्वर १. २. ३.	२१११९	नागोद्भव ३.	३१८११८	नामन् ३.	३११३१	नावन ३.	४४११४०
" २.	४४१२७	नरकोलि २.	३३१८९	नष्टा २.	३१६१८	नाटक ३.	३१९१००	नामवर्जित १. २. ३.	पा४१२१	नावारोह १. २. ३.	४२११९
नन्दिवर्धन १.	१११४४	नरदेव १.	३१७१२	नस २.	३१५२३	नाटकी २.	३१९१७३	नामशास्त्र ३.	३१६३१	नाविक १.	३१५३८
" १.	२११७३	नरनारायण १.	१११३०	नस्त ३.	४३११४०	नाटिका २.	३१९१००	नाय १.	३१२३२	" १.	३१५१००
नन्दिस्वरस् ३.	२११११	नरवाहन १.	१२१५७	नस्तित १. २. ३.	३१४५७	नाट्य ३.	३१२१२८	नायक १.	४३११४३	" १. २. ३.	४२११९
नन्दीचारी २.	३१९१४२	नरेन्द्र १.	३१७१२	नस्य ३.	४३११४०	" ३.	३१९१७३	नायक १.	४३११४३	नाश १.	३१७२१०
नन्दीमुखी २.	३१६२००	" १.	७११३७	नस्योत १. २. ३.	३१४५७	नाट्यधर्मिका २.	३१९१७३	" १. २. ३.	पा४१५७	" १.	३१६३१
नन्दावर्त १.	३३११९४	नर्तक १.	३१९१६३	नहुष १.	३१५११	नाट्योक्त ३.	३१९१७३	नार ३.	३१११३	नासत्य १ द्वि.	१३१५
" १.	४३१३०	नर्तन ३.	३१९१७३	नाक १.	१११११	नाडिजङ्घ १.	३१९१७३	नारक १.	१२१३७	नासत्यद्वय १ द्वि.	१३१५
नपुंसक ३.	४३१३०	नर्तनप्रिय १.	२३१३८	नाक १.	३११४८	नाडिन्धम १.	३१९१७३	" १.	१२१३८	नासा २.	४३१४०
नप्तृ १.	४३१४५	नर्मदा २.	४३१२६	नाकुल ३.	३१६२१८	नाडी २.	२११५४	नारकी २.	२११६	" २.	४३१४५
नप्र १.	३१९१६३	नर्मन् ३.	३१९१८८	नाकुली २.	३१८१९८	नाडीव्रण १.	३१८१३३	नारङ्ग १.	३३१३६	" २.	४३१४५
नभःप्राण १.	१२१४८	नल १.	३३१२२८	नाकुसुमन् १.	४३११६	नाथ १. २.	६१५४५	नारद १.	३३१७	नासाग्र ३.	४३१४२
नभस् ३.	२११११	नलक ३.	४३११२५	नाग ३.	३२१३०	नाथ १. २.	६१५४५	नारसिंही २.	१११६४	नासारज्जु २.	३१७११२
" ३.	२११८४	" ३.	४३१११६	" ३.	३२१३२	नाद १.	२१११	नाराच १.	३१७१८०	नासिका २.	४३१४९१
नभस १.	७११३३	नलकुवर १.	१२१५९	" १.	४३११४	नादेय ३.	३१८१२८	नाराची २.	३१९१९	नासिकापुट १.	४३१४९१
नभसङ्गम १.	२३१२	नलतीर ३.	४३१५९	" १.	६११३०	नादेयी २.	३३१९६	नारायण १.	११११०	नासिकामल १.	४३१४९२
नभस्य १.	२११८५	नलद ३.	३३१२३१	नागकेसर १.	३३१८२	" २.	३३१९९९	" १. २.	८१५१०	नासिक्य १ द्वि.	१३१६
नभस्वत् १.	१२१५०	नलमीन १.	४३१४५	नागजिह्वा २.	३२११२	नाना ४.	८१७२२	नारी २.	३३१८१	नासिर १. ३.	३१७२०३
नभोज्जण १.	३३११९४	नलान्तर १.	३३१६१	" २.	३३१३९	" ४.	८१८१४	" २.	४३१४४	नासू २.	३१९१३३
नभोजात १.	१२१५०	नलिक ३.	४३१२५	नागजीवन ३.	३२१३१	नानीकर १. २. ३.	पा४१४८	नार्यङ्ग १.	३३१३६	नास्तिक १. २. ३.	पा४३८
नभ्राज १.	२२११	नलिन ३.	४२१३८	नागदन्त १.	४३१५३	नानीकवाच् १. २. ३.	पा४१४८	नाल १. २. ३.	३१८१८	नि ४.	८१७५
नमः (स्) ४.	८१८१४	नलिनी २.	४२१४३	नागदन्तक ३.	३१६२१४	नानीपात १.	४३१२०	" १. २. ३.	३१८१८	निसन ३.	४३११७१
नमत ३.	४३११६६	" २.	७२११०	नागदन्ती २.	३३११०९	नान्दी २.	३१९१६९	" १. २. ३.	४२१४२	निकट ३.	पा४१४०
" १.	७११३५	नलिवाह १.	३१७११७	नागपाश १.	३१७१९६	" २.	३१९१३३	" ३.	६३११७	निकर १.	पा११२
नमसित १. २. ३.	पा४१०५	नली २.	३१८१००	नागबला २.	३१८१६१	नापित १.	३१९२६	" १, २. ३.	८१९३८	निकर्षण ३.	४३१३१
नमस्कार १.	३१६३९	नल्व १.	३१९१६०	नागमातृ २.	३२११२	नापितकोलिका २.	पा४१९६	नालक ३.	४३१२५	निकष १.	३१९१९
नमस्कारी २.	३३११४८	नल्वल ३.	पा११५६	नागर १.	३३१६१	नाभि २.	४३१६६	नाला २.	४२१४२	निकषा ४.	८१८१५
नमस्या २.	३१६३९	नल्विक १.	३१९१६०	" १. २. ३.	७१५५०	" १.	६३१३०	नालिका २.	३११५८	निकामम् ४.	४३११०४
" २.	३१६३९	नव १. २. ३.	पा४१८८	नागरङ्ग १.	३३१३६	नाभिज १.	१११९	" २.	३११५८	निकाय १.	पा११४
नमस्त्यत १. २. ३.	पा४१०५	नवति २.	पा१२७	नागराज १.	४३१३	नाभिनाला २.	४३१९	" २.	७२१११	निकाय १.	४३११८
नम्र १. २. ३.	पा४१८३	नवनीत ३.	३१८१३८	नागरी २.	३३१३७	नाभी २.	४३१६६	नालिकेर १.	३३१२२०		
नय १.	पा२३२	नवम १. २. ३.	पा१२०	नागलोक १.	४३११	" १.	६३१३०				
नयन ३.	४३१९४	नवमालिका २.	३३११८६	नागवल्ली २.	३३११४०	नाभिका २.	३१९३५				
		नवश्री १. २. ३.	४३११९९	नागवारिक १.	८११५३	नाभिज १.	१११९				



## [ निकार ]

निकार १.	७११३७
निकारण ३.	३१७२१२
निकार्य १.	४३११८
निकाश १ २. ३.	५४११२२
निकुञ्चिन् ३.	३१६५१
निकुञ्ज १. ३.	३१२२०
निकुरुम्ब ३.	५११२
निकृष्ट १. २. ३.	५४१७५
निकेतन ३.	४३११७
निक्रण १.	२१४१११
निक्राण १.	२१४१११
निक्षेप १.	३१८११२
निखर्व ३.	५११२८
” ३.	५११३०
निखिल १. २. ३.	५४१८५
निगण १.	३१६१५
निगम १.	७११३५
निगारण १. २. ३.	४१४१८३
निगल १.	३१७८३
निगाल १.	३१७१०९
निगूढक १.	३१८३८
निगूढचरण ३.	३१६१२२
निग्रह १.	७११३४
निघ १.	३१९१८
निघण्टु १.	३१६३१
निघस १.	४३११०२
निघानका २.	३१९२०
निघृष्टा २.	३१६५०
निघ्न १. २. ३.	५४१२८
निचित १. २. ३.	५४११५५
नितुल १.	३१६६७
निचोट १.	३१७१८४
निचोल १.	३१६११
” १.	४३११२६
” १.	४३११२८
निज १. २. ३.	३१७४३
” ३.	५२११

## वैजयन्तीकोषः

निज १. २. ३.	६१४१९
नितम्ब १.	३१२१८
” १.	४१४६४
” १.	७११३६
नितम्बिनी २.	४१४१४
नितान्त १. २. ३.	५४१३२
नित्य १. २. ३.	५४१८८
” १. २. ३.	५४१३०
नित्यशङ्किन् १.	३१४१२
नित्यहोम १.	३१६७०
निदाघ १.	३१९८१
” १.	८११५७
निदान ३.	७३२२०
निदानज्ञ १.	४१४१४४
निदिग्ध १. २. ३.	५४१०८
निदिग्धिका २.	३१३१०५
” २.	३१३१०६
निदेश १.	३१७४७
” १.	७११३४
निदेशक १.	३११५९
निद्रा २.	३१६९७
निद्राण १. २. ३.	५४१३९
निद्रालु १.	३१३१५०
” १. २. ३.	५४१३९
निधन १. ३.	७१५५१
निधान ३.	१२१६०
” ३.	५२१४०
निधि १.	१२१६०
निधिपाल १.	१२१५७
निधुवन ३.	३११३४
( विधुवन )	
” १.	४३११७०
निन्दा २.	३११३३
” २.	६१२२१
निप १.	४१६५८
निपक्षति २.	२११७०
निपात १.	३१६२०१
निपान ३.	४२१९
निपीतिन् १.	३१८१२७

## [ निरञ्जना

निबर्हण ३.	३१७२१२
निबड १. २. ३.	५४१२६
निबिरीस १. २. ३.	५४१२६
निभ ३.	३१६१९५
” १. २. ३.	३१९२१
” १. २. ३.	५४१२२
निभृत १. २. ३.	५४३२
निमय १.	३१८७१
निमित्त ३.	७३१८
” १.	८३११६
निमित्तग्रहण ३.	३१७१९०
निमिष ३.	३१९१०
निमीलन ३.	३१३२०१
” १.	३१९१०
निमेष १.	२११५३
निम्नक १.	३१३३६
निम्नगा २.	४२२२२
निम्ना २.	३१३१७८
निम्ब १.	३१३७५
नियति २.	७२१२
नियन्तृ १.	२१७१३८
नियम १.	३१६१४
” १.	३१६२०९
” १.	५२१३७
” १.	७११४०
नियमोज्झिति २.	५२१६
नियामक १.	४२११८
नियुत ३.	३१३२३२
” ३.	५११२८
” ३.	५११३०
” ३.	५११३२
नियुद्ध ३.	३१७२०७
नियोग १.	५२१२५
नियोज्य १.	३१९२
निर् ( निस् ) ४.	८१७५
निरञ्जन १.	३१३१२
निरञ्जना २.	११११६
” २.	२११७२

## निरन्तर ]

निरन्तर १. २. ३.	५४१२६
निरय १.	१२१३७
निरर्थक ३.	५२१६
निरवग्रह १. २. ३.	५४१२७
निरसन ३.	३१४२१३
निरस्त १. २. ३.	७४१३३
निराकरिण्यु १. २. ३.	५४१४०
निराकार १.	५२१२३
निराकृति २.	३१६१९
निरामय १. २. ३.	४१४१४३
निरायस १.	३१४६३
निरास १.	५२१२३
निरिणा २.	३१६१६
निरीष १.	३१८२८
निरुक्त ३.	३१६२८
” ३.	३१६३१
निरूपण १. २. ३.	८१५१२
निरोध १.	७११३३
निर्भृति २.	१२१४२
निर्गमन ३.	५२११३
निर्गीत ३.	३१९११०
निर्गण्डी २.	३१३११८
” २.	३१३१८६
निर्ग्रन्थ १. २. ३.	५४११६
” १. २. ३.	७४११३
निर्ग्रन्थन ३.	३१७२१३
निर्घात १.	२१२१६
निर्जर १.	१११३
निर्झर १.	३१२१७
निर्णय १.	३१६१७६
निर्णिक १. २. ३.	५४१६६
निर्णोक्त १.	३१५४५
निर्दय १. २. ३.	७४११५
निर्देश १.	३१७४७
निर्वन्ध १.	५२११४

## शब्दानुक्रमणिका

निर्भर १. २. ३.	५४१३३१
निर्भर्त्सन ३.	८३१८
निर्मद १.	३१७६८
निर्माल्य ३.	४३११५६
निर्मुक्त १.	४११२०
निर्मोक १.	४११२१
निर्याण ३.	५२११३
” ३.	७३११९
निर्यातन ३.	८३१७
निर्याम १.	४२११९
निर्यास १.	३१३११
निर्युह १.	४३१३१
” १.	४१४१४१
” १.	७११३८
निलज्जा २.	३१६१६
निलिङ्ग ३.	८१७१
निलेप ३.	४२१३८
निर्वपण ३.	३१६११८
निर्वहण ३.	३१९१०९
निर्वाण ३.	७३२२०
निर्वाद १.	२१४३३
निर्वापण ३.	३१७२१३
निर्वार्य १. २. ३.	५४१७३
निर्वासन ३.	३१७२१२
निर्विष १.	४११११
निर्विषा २.	४१११७
निर्वीरा २.	४३१२८
निर्वृति २.	७२११०
निर्वृत्त १. २. ३.	५४११११
निर्वेद १.	३१६१६७
” १.	५२१३४
निर्वेदा १.	७११३९
निर्व्यथन ३.	४११२
निर्हरण २.	३१७१९२
निर्हार १.	५२११७
निर्हाद १.	२१४११
निलय १.	४३११८
निलम्प १.	१११२
निलिम्पिका २.	३१४१४२
निलवयनी २.	४११२१
निवर्तन ३.	३११६०

## [ निश्शलाक

निवर्तना २.	५२११७
निवसथ १.	४३१२
निवसन ३.	४३११८
” ३.	४३१११६
निवह १.	५११२
” १.	७११३४
निवहा २.	३१३१८६
निवात १. २. ३.	७४११४
निवाप १.	३१३६४
निवीत ३.	३१३२१
” १. २. ३.	४३१२२०
निवृत्त १. २. ३.	५४११०८
निवृत्ति २.	७२१११
निवेश १.	५२११४
” १.	७११३३
निशरण ३.	३१७२१२
निशा २.	२११५७
निशाकर १.	२११२४
निशाकेतु १.	२११२५
निशाचर १. २.	८१५१२
निशात १. २. ३.	३१७१९७
निशादशिन् १.	२३१२२
निशानाथ १.	२११२४
निशान्त १. २. ३.	७१५५१
निशामणि १.	२३१४७
निशार १.	४३११२७
निशित १. २. ३.	३१७१९७
निशीथ १.	२११६६
तिशिथिनी २.	२११५८
निशिथ्या २.	२११५८
निशुम्भन ३.	३१७२१२
निश्रय १.	३१६१७६
निश्रारक १. २. ३.	८१५११
निश्रेणि २.	४३१५१
निश्वास १.	३१६२०४
निश्शलाक १. २. ३.	५४११६०



निशेष ]	वैजयन्तीकोषः	[ नीलवृष
निशेष १. २. ३.	निष्ठा २. ६१२२१	निस्स्पृहा २. ३६१५०
५४८६	निष्ठान ३. ४३१८५	निस्त्राव १. ४३१७९
निशोधय १. २. ३.	" ३. ४३१९०	निस्त्राध्याय १. २. ३.
५४८६	निष्ठीव १. ३. ५२३६	३६१९
निश्रेयस ३. ८३१८	निष्ठीवन ३. ५२३६	निहत १. २. ३. ३६३७
निश्वास १. ३६१२०४	निष्ठुर १. २. ३. २४३२१	" १. २. ३. ७४१३३
निषङ्ग १. ३७११७८	" ३. ३१२२७	निहन्नन ३. ३७२१२
" १. ७१३३४	" १. ५३१५	निहित १. २. ३.
निषङ्गिन् १. २. ३.	निष्ठेवन ३. ५२३६	५४११०४
३७११७३	निष्ठ्या २. २११४०	निह्व १. ७१३३९
निषद्या २. ४३३३४	निष्ठ्यूत १. २. ३.	नीच १. २. ३. ३६३७
निषद्वर १. ३८१२६	७४११४	" १. २. ३. ५४२२
" १. २. ८१५११	निष्ठचूति २. ५२३६	" १. २. ३. ५४६०
निषध ७१३३८	निष्णात १. २. ३.	" १. २. ३. ५४८१
निषाद १. ३५४४	५४११९	" १. २. ३. ६४२०
" १. ३५६९	निष्पक्क १. २. ३.	नीचुदार १. ३३१५४
" १. ३५७०	५४११५	नीचैः (-स्) ४. ८८११९
" १. ३५७२	निष्पतिसुता २. ४४२०	नीड १. ३. २३३४९
" १. ३५८४	निष्पत्राकृति २. ५२३८	" १. ३. ८५३६
" १. ३९१३२२	निष्पन्न १. २. ३.	नीडज १. २३३४
निषादिन् १. ३७१८७	५४१४६	नीडिन् १. २३३२
निषिद्धैकरुचि १. २. ३.	निष्पाव १. ४२३६	नीडोद्भव १. २३३२
३६११२	" १. ४२३६	नीप १. ३३३६०
निषूदन ३. ३७२१२	निष्प्रवाणि १. २. ३.	नीर ३. ४२३१
निष्क १. ५१३४१	४३१२०	नील १. १२३६१
" १. ३. ५१३४६	निष्प्रभ ४. ८८१३३	" १. ३३३१७
" १. ३. ६५२०	निसर्ग १. ५२३१	" १. ५३३११
निष्कला २. ४४११६	" १. ८५३३५	नीलक १. १२३२९
निष्कासित १. २. ३.	निसृष्ट १. २. ३.	नीलकण्ठ १. ३३३१५५
५४१७१	५४११६	" १. ८६३२२
निष्कुट १. ३३३३	निस्तरुण ३. ५१२१२	नीलकेशी २. ३३३११०
" १. ३३३१४	निस्तल १. २. ३.	नीलग्रीव १. ११३४२
निष्कुटी २. ३८१८७	५४१८२	" १. ८६३२२
निष्कोटित १. ३.	निष्पिंश १. ३७१६०	नीलजम्बूर १. ३३३१९४
३९११२२	" १. २. ३. ७५५११	नीलदंष्ट्र १. ११३६७
निष्कोश १. ३७१७७	निस्वन १. २४३१	नीलपीतल १. ५३३२१
निष्क्रम १. ७१३३६	निस्वान १. २४३१	नीलपुष्प १. ३८१५८
निष्टङ्क १. ३३३६२	निस्सङ्ग १. २. ३.	नीललोहित १. ११३४०
निष्टय १. ३५३४६	३३३२०	" १. ५३३१९
निष्टयान्ता २. ३३३१३५	निस्सङ्गजा २. ३३३१८७	नीलवासस् २१३३६
निष्ठा २. ३९११०९	निस्सारण ३. ३५३४१	नीलवृष १. ३६१२३

नीलशीर्ष ]	शब्दानुक्रमणिका	[ पञ्चक
नीलशीर्ष १. ३४३४१	नृपति १. ३७११	नौ २. ४२३१५
नीलसितश्याम १. ५३३१३	नृपलक्ष्मन् ३. ३७११६	" २. ८२३१७
नीला १. २३३५	नृपात्मजा १. ३३३१७०	नौजीविन् १. ३९३४२
नीलाङ्गा २. ४१३३९	नृपात्मजा २. ३३३१६७	नौतार्य १. २. ३. ४२३२०
नीलाब्ज ३. ४२३३५	नृपार्हक ३. ३८११५६	नौशिरस् ३. ४२३१७
नीलाम्बर १. ११३२४	नृलिङ्गक १. ३९१११२	नौस १. २. ३. ३६३१२७
नीलिक १. ३५३१९	नृशंस १. २. ३. ५४३२४	न्यक्ष १. २. ३. ६४३१९
नीलिका २. ३३३१८६	नृसिंह १. ११३१८	न्यग्रोध १. ३३३२७
नीलिङ्गी २. ३१३४२	नृसेन २. ३. ८९३३४	" १. ४३३८२
नीलिनी २. ३३३११०	" २. ३. ८९३३५	न्यग्रोधी २. ३३३११३
नीली २. ३३३११०	नेतृ १. ३३३३७	न्यङ्कु १. ३३३१५
नीलीराग १. २. ३.	" १. २. ३. ५४३५७	" १. ६१३३३
४२३३४	नेत्र ३. ६३३१७	न्यच् १. २. ३. ५४३८५
नीलोत्पल ३. ४२३३४	नेत्रपिण्ड १. ४४३९५	" १. २. ३. ५४३९३
नीवलक १. ३५३२४	नेत्ररज्ज २. ४४३३२	न्यर्तुद ३. ५१३२८
नीवाक १. ३८१६६	नेम १. २. ३. ५४३८६	न्यस्त १. २. ३.
नीवार १. ३८१५७	" १. २. ३. ६५३४७	५४३१०४
नीवि २. ४३३१३०	नेमि १. ३४३६६	न्यस्तक १. ३. ३८११२
नीवी २. ३८१७०	" २. ३७३३५	न्याद १. ४३३१०२
नीष्ट १. ३१३२१	" २. ४२३२१	न्याय १. ३७३४८
नीत्र ३. ४३३३७	नेनिन् १. ३३३३७	" १. ३८११५
नीहार १. २३३१९	नेमीय १. ३३३३७	न्यायगण १. ३३३२९
नु ४. ८७३६	नेरिन् १. १२३५२	न्याय्य १. २. ३.
नुत १. २. ३. ५४३१०६	नैकृत १. २. ३. ५४३२२	५४३१०३
नुति २. ३१३३५	नैकृतिक १. २. ३.	न्यास १. ३८११२
नुत्त १. २. ३. ५४३१७	५४३२२	न्युङ्कु १. २. ३. ५४३३५
नुन्न १. २. ३. ५४३१७	नैकृतिक १. २. ३.	न्युञ्ज १. ३३३३७
नूतन १. २. ३. ५३३८६	५४३२२	" १. २. ३. ५४३११
नूतना २ ब. २१३१८	नैगम २. ३८१७२	" १. २. ३. ५४३१०
नून १. २. ३. ५४३८६	" १. ७१३३७	" १. २. ३. ६५३४६
नूनम् ४. ८७३२२	नैगमेय १. ११३५७	प
नूपुर १. ३. ४३३१४५	नैचिकी २. ३४३४६	पक्ति २. ६३३२२
नृ १. ३५३१	" २. ३४३६०	पक्तिका २. ३८३४२
" १. ४४३३	नैपथ्य ३. ४३३१३२	पक्ष ३. ३८३४३
नृगालिक १ ब. ३१३२८	नैपाली २. ३२३१७	" १. २. ३. ४३३१३
नृङ्ग ३. ४३३३	नैयग्रोध १. ३३३२२	" १. २. ३. ४३३१५
" ३. ४३३४	नैर्ऋत १. १२३४०	पक्षण १. ३. ३९३२२
नृतु १. ३९३६३	नैर्ऋती २. २१३४	पञ्च १. २१३७९
नृत्त ३. ३९३७३	नैल ३. ३१३८	" १. २३३४९
नृप १. ३७३१	नैषध ३. ३१३६	" १. ६१३३५
	नैषिक १. ३७३२१	पञ्चक १. ४३३२४
	नैष्ठिक १. ३७३२१	



[ पञ्चक ]

पञ्चक ३.	४१३४२
पञ्चचर १. २. ३.	८१५१३
पञ्चति २.	२११७०
” २.	७२११३
पञ्चद्वार ३.	४१३४२
पञ्चभाग १.	३१७८१
पञ्चरचना २.	३१७१८६
पञ्चशाला २.	४१३२४
पञ्चाङ्ग ३.	२११५५
पञ्चान्त १.	३११७३
पञ्चिका २.	८११३
पञ्चिणी २.	२११५९
पञ्चिन् १.	२१३१
पञ्चिपोत १.	२१३४
पञ्चिबन्धन ३.	३१५४२
पञ्चिल १.	३१४१५९
पञ्चिशाला २.	४१३२१
पञ्चमन् ३.	४१३४५
” ३.	४१३५५
” ३.	६१३१९
पञ्च १.	३१८२६
” १.	६१५४८
पञ्चक्रीडनक १.	३१४६
पञ्चज ३.	४१२३७
” ३.	८११४०
पञ्चरस १.	३१९४७
पञ्चिल १. २. ३.	३११४३
पञ्चरुह ३.	४१३२९
पञ्चि २.	५११२४
” २.	५११२६
” ३.	५११३३
” २.	६१२२२
पञ्चु १. २. ३.	५१४१४
पञ्चुल १.	३१७१०४
पञ्चन ३.	३१९२७
” ३.	५१२३२
पञ्चपञ्च १.	३१३८२
पञ्चपञ्चा २.	३१३२१३
पञ्चा २.	५१२३२
” २.	८१९४

वैजयन्तीकोषः

पचि २.	११२१८
” २.	२१३१८२
पज १.	३१९११
पञ्चक ३.	३१७१०
पञ्चकृत्वः (-स्) ४.	८१८१६
पञ्चकोल ३.	३१८१८३
पञ्चखार १. २. ३.	८१९१५४
पञ्चगृह १.	४१११६
पञ्चचीरोद्धित ३.	३१६१५
पञ्चचूड १. २. ३.	३१६१२
पञ्चजन १.	३१५११
पञ्चजनीन १.	३१७१३
( पञ्चजनिनः )	
पञ्चत्व ३.	३१६१२०
पञ्चदशी २.	२११७३
पञ्चभद्र १.	३१७१३
पञ्चम १.	३१९१३२
” १. २. ३.	५११२०
पञ्चलक्षण ३.	३१४१८
पञ्चलोह ३.	३१२१८
पञ्चवक्त्र ३.	८१६२२
पञ्चबायु १. २. ३.	३१६२०३
पञ्चशाख १.	४१४७३
पञ्चष १. २. ३.	५११२६
पञ्चसुगन्ध ३.	४११५२
पञ्चहस्त १.	३११५८
पञ्चाङ्गी २.	३१७२१३
पञ्चाङ्गुल १.	३१३६५
पञ्चामृत ३.	४१३९१
पञ्चाशत् ५११२६	
पञ्चास्य १.	३१४११
पञ्चिका २.	३१९१५९
पञ्चेषु १.	१११२८
पञ्चोषण ३.	३१८१८१
पञ्जर ३.	२१३४९
पञ्जिका २.	११२३६
पट १.	३१३५७
” १. ३.	४१३११६
” १. २. ३.	८१९३७

[ पणव ]

पटकुटी २.	४१३१२५
पटचर १ व.	३११४१
” १.	३१९५७
” ३.	४१३१२७
पटचोर १.	३१९५७
पटल ४.	४१३३७
” १.	७१५५२
पटली २. ३.	५१११६
पटवासक १.	४१३१५७
पटह १. ३.	३१९१३४
” १.	३१९१३८
पटी २.	८१९३७
पटु १.	३१३१६५
” १. २. ३.	३१७१४७
” ३.	३१८१२०
” ३.	३१८१२३
” १. २. ३.	४१४१४३
” १.	५१३२६
” १. २. ३.	५१४१४
पटुच्छद १.	३१३१६४
पटुञ्जिका २.	३१४१४९
पटोलक १.	३१३१६५
पटोली २.	३१३१५९
पट्ट १.	३१७१५४
” १.	४१४१४०
” १.	६११३४
पट्टन ३.	४१३३
” ३.	४१३३
पटबन्ध १.	३१५६२
पट्टस १.	३१७१६४
पठि १.	३१६२३
पट्वीश १.	३१७८६
पण १.	३१८६९
” १.	३१९६०
” १.	५११३८
” १.	५११३८
” १.	५११३९
” १.	५११४५
” १.	६११३४
पणव १.	३१९१३४
” १.	७११५२

[ पणिक ]

पणिक ३.	३१६१८८
” १.	४१३३४
पणित १. २. ३.	५१४१०६
पणितव्य १. २. ३.	३१८६९
पणायित १. २. ३.	५१४१०६
पण्ड १. २. ३.	३१४१५९
” १.	४१४३
पण्डा २.	३१६१६४
” २.	३१६१६५
पण्डित १.	३१६१३४
पण्य १. २. ३.	३१८६९
पण्यभू २.	४१३३५
पण्यवीथी २.	४१३३५
पण्यस्त्री २.	४१४२४
पण्यजीव १.	३१८७२
पतग १.	२१३१
पतङ्ग १.	२१३१
” १.	२१३४३
” १.	४११४०
” १.	७११४०
पतङ्गना २.	३१८४९
पतङ्गी २.	२१३४८
पतञ्जलि १.	३१६१५७
पतत् १.	२१३१
पतत्र ३.	२१३४९
” ३.	३१३१७
” ३.	७१३२२
पतत्रि १.	२१३१
पतत्रिन् १.	२१३१
पतद्ग्रह १.	४१३१६०
पतन ३.	३१३१६
” ३.	३१६११६
पतयालु १. २. ३.	५१४३८
पताक १.	४१४७९
पताका २.	३१७१३३
” २.	३१७१९३
पताकिन् १. २. ३.	३१७१४५

शब्दानुक्रमिका

पताकिनी २.	३१७५५
पति १.	४१४३७
” १.	५१४५८
पतिवरा २.	४१४७
पतिघ्नी २.	३१६१३३
पतित १. २. ३.	३१७२१९
पतितोत्पन्ना २.	३१६४९
पतिवर्त्नी २.	४१४१४
पतिव्रता २.	४१४७
पतेर १.	४११३
पत्तन ३.	४१३४
पत्ति २.	३१७५७
” १.	३१७१३९
” २.	४१३१४९
पत्तिच्छेद १.	४१३१४८
पत्तर १.	३१३१५६
पत्नी २.	४१४२५
पत्नीसन्नहन ३.	३१६१८९
पत्र १.	३१३१६
” १.	६१३२०
” १. २. ३.	८१९३२
पत्रक ३.	३१८१२८
” ३.	४१३१४९
पत्रकूट १.	३१८१८४
पत्रणा २.	३१७१८६
पत्रताली २.	३१३२२४
पत्रपरशु १.	३१९३५
पत्रपाश्या २.	४१३१३६
पत्रफला २.	३१७१६४
पत्रमध्यसिरा २.	३१३४३
पत्ररथ १.	२१३१
पत्ररेखा २.	४१३१४९
पत्रल ३.	३१८१४३
पत्रला २.	३१३२२४
पत्रसारक १.	३१८१२८
पत्राङ्गुलि २.	३१८११५
पत्राङ्गुलि २.	४१३१४९
पत्रिणी २.	४१४२८
पत्रिन् १.	२१३१
” १.	३१७१७९
” १.	६१३३२

[ पञ्चाख ]

पत्री २.	८१९३२
पत्रोर्ण १.	३१३१६८
” १.	४१३११८
पथिकृत् १.	११२२५
पथिन् १.	३१९४९
पथ्या २.	३१३१७८
पद् १.	४१४५६
पद् ३.	२११७
” ३.	४१४५६
” ३.	६१३१८
पदपणिका २.	३१३१३६
पदभञ्जना २.	३१६३१
पदवल्मीक १.	४१४१३३
पदवी २.	३१६४९
पदाजि १.	३१७१३९
” १.	७११५४
पदाति १.	३१७१३९
पदातिक १.	३१७१३९
पदिक १.	३११५१
पद्म १.	३१७१४०
पद्धति २.	५११२४
” २.	७१२१५
पद्म १.	११२६०
” १. ३.	३१३१९५
” ३.	३१७८२
” १. ३.	४१२३६
” ३.	५११३२
” ३.	५१३१२
” १. २. ३.	६१५४८
” १.	८१६१२
पद्मकर्कटी २.	४१२४६
पद्मकासनिन् १.	३१६१११
पद्मचारिणी १.	३१८१८९
पद्मनाभ १.	११११५
पद्मपत्र ३.	३१८१८८
पद्मबन्धु १.	२११११
” १.	२११५६
पद्मा २.	३१३१००
” २.	३१८१८१
” २.	३१८१८९
पद्माक्ष ३.	४१२४६



पञ्चालया ]

वैजयन्तीकोषः

[ परिचित

पञ्चालया २.	१२३६	परजात १	३१२२	पराचल १.	३२३
पञ्चासन ३.	१११७	" १. १. ३.	५१४९९	पराचीन १. २. ३.	५१४९१
" ३.	३६२०५	परतन्त्रक १. २. ३.	५१४२८	पराजक १.	३१५६
पञ्चासनिन् १. २. ३.	३६३३४	परन्तप १. २. ३.	५३३६९	पराजित १. २. ३.	३१७२१९
पञ्चिन् १.	४२३३	परपिण्डाद १. २. ३.	५१४४९	पराजन १.	५३३४४
पञ्चोत्तर ३.	३६१९१	परभाग १.	५२३३	पराधीन १. २. ३.	५१४२८
पद्य १. २. ३.	३११४७	परभृत १.	२३३१६	पराज्ञ १. २. ३.	५१४९९
" १.	३१९११	परमन्थु १.	१२३५	पराभव १.	८११२६
पद्यमात्रिका २.	२१४३२	परमम् ४.	८८११७	पराभूत १. २. ३.	३१७२१९
पद्या २.	३११४९	परमात्मन् १.	३६११६१	परायण ३.	३६११४५
पनस १.	३३३७४	परमान्न ३.	४३३७७	" ३.	८१५१३
पनायित १. २. ३.	५१४१०६	परमेश्वर १.	१११४१	परारि ४.	८१८१०
पनित १. २. ३.	५१४१०६	परमेष्ठिन् १.	१११८	परारिका २.	३३३२०७
पन्न १. २. ३.	५१४१०२	परमेष्ठिनी १.	१११६०	परार्थोक्ति २.	३११३७
" १. २. ३.	५१४११५	परम्पर १.	३१४१५	परार्थ १. २. ३.	५११२९
पन्नग १.	४११६	" १.	४१४४६	परालिनी २.	४३३४४
पन्नगारि १.	१११३८	" १.	४१४४६	परावसु ३.	३६११४५
पपा २.	४११३६	परम्परा २.	५२३३९	पराविद्ध १.	१२१५७
पय १.	३१९१२४	परम्पराक २.	३६१९४	" १.	३१५१८
पयस् ३.	३६११४५	परम्परावाहन ३.	३१७१३७	" १.	४३३६६
" ३.	४२३२	परवत् १. २. ३.	५१४२८	पराशक १.	३३३२३०
" ३.	६३३२०	परशु १.	३६११३१	पराशर १.	३६११५५
पयस्या २.	३६१९८	" १.	३१९३५	परास ३.	३२३३१
पयस्विनी २.	४२३२२	परशुभृत् १.	१११५४	परासन ३.	३१७२१४
पयोगर्भ १.	२३३२	परश्वः (-सृ) ४.	८८१९	परासु १. २. ३.	३१७२२०
पयोण्ड १.	३३३७४	परश्वध १.	३१९३५	परास्कन्दिन् १.	३१५१६
पयोधर १.	८११२७	परस्पर १. २. ३.	५१४१२३	परि ४.	८१७२५
पयोवहा २.	४२३२०	परस्वत् १.	३१४११	परिकर १.	८११३३
पयोव्रत ३.	३६११४७	परा २.	३३३१३४	परिकर्मन् ३.	४३३११२
पर १.	३६११६१	" २.	३३३२२१	परिकर्मिन् १.	३१९३
" १.	३१७४१	" ४.	८१७२६	परिकर्ष १.	३१७७२
" ३.	३६११०५	पराक १.	३६११४४	परिकल्पना २.	३६११९६
" ३.	५११२९	पराकार १.	५२३२१	परिक्रम १.	५२३२८
" १. २. ३.	५१११४२	पराक्रम १.	३१७२०९	परिक्रूरा २.	३३३१०५
" १. २. ३.	६१५४९	" १.	८११५०	परिक्रोणा २.	३३३२२१
परकुल १.	४११५४	पराग १.	७११४२	परिचित १. २. ३.	५१४१०८
परच्छन्द १. २. ३.	५१४२७	पराच् ४.	५१४९१		

( ८६ )

शब्दानुक्रमणिका

[ परेत ]

परिचेष ]

परिचेष १.	८११३०	परिपेलव ३.	३३३२०१	परिव्याण ३.	३६११०५
परिखा २.	४३३१३	परिप्लव १.	२३३१२	परिव्याध १.	३३३३०
परिगत १. २. ३.	८११७	" १. २. ३.	५११७६	" १.	३३३७२
परिग्रह १.	२११३०	परिप्लाविन् १.	२३३१६	परिवाज १.	३६११६०
" १.	४११५१	परिवर्ह १.	४३३१५८	परिशाय १.	४३३१६८
" १.	८११३०	" १.	८११२८	परिशुष्क ३.	४३३८८
परिघ १.	३१७१७१	परिवृढ १. २. ३.	५११५८	परिषद् २.	३६११३
" १.	७११४१	परिभव १.	३६११७१	परिष्कार १.	४३३१३३
परिघातन १.	३१७१७१	परिभाषण ३.	८३३१५	परिष्कृष्ट १.	४३३१६९
परिचय १.	३१७१९५	परिभोक्तृ १. २. ३.	५११२५	परिसर १.	४३३१२
" १.	५२३३१	परिमण्डल १.	३१७१९९	परिसर्प १.	५२३२८
परिचर १. २. ३.	३१७१७१	" १. २. ३.	५११८२	परिसर्पा २.	५२३२८
परिचर्या २.	३६३३८	परिमल १.	५३३५२	परिस्कन्द १.	३६१२
परिचारक २.	३९३२	" १.	८११२८	परिस्कन्ध ३.	४३३१५८
परिचारिका २.	३१७३६	परिमोषिन् १.	३९३५५	परिस्तोम ३.	४३३१६६
परिच्छद १.	३९३८	परियष्टृ १.	३६३७४	परिस्पन्द १.	४३३५१
" १.	४३३१५८	परिरम्भ १.	४३३१९४	परिस्नावी २.	४३३१३१
परिजन १.	४३३५१	परिवत्सर १.	२११९०	परिस्नुत २.	३९३४५
परिजम्ब १.	२११२४	परिवर्जन ३.	३१७११४	परिस्नुता २.	३९३४५
परिणत १.	३१७७८	परिवर्त १.	३६१७१	परिहार १.	५२३१७
परिणय १.	३६१५४	" १.	८११२९	परीक्षक १. २. ३.	५१४३०
परिणाम १.	५२३२४	परिवसथ १.	४३३२	परीच्छा १.	३६११२२
परिणाय १.	३९३६१	परिवसित १. २. ३.	५११०५	परीतत् १. ३.	४३३१३३
परिणाह १.	५२३५	परिवाच् २.	२११३५	" १. ३.	८९३३१
परितः (-स्) ४.	८१७३२	परिवाद १.	२११३२	परिवाप १.	८९३२९
" ४.	८८३३	" १.	३९११२१	परिवार १.	३१७१६८
परिताप १.	४३३१२२	परिवादिनी २.	३९१११७	परिवादह १.	४२३३१
परित्राण ३.	४३३१०५	परिवापण ३.	३६१४	परीष्ट १.	३६१७४
परित्राणी २.	३३३१०९	परिवार १.	४३३५१	परीष्टि २.	७२३१५
परिदेवन ३.	२११२९	" १.	८११२८	परीसार १.	५२३२८
परिधान ३.	४३३१२१	परिवारक १.	४३३६८	परीहास १.	३९३८८
परिधि १.	३३३९	परिवित्त १.	३६१४३	परु १.	३६१२९
" १.	७११४१	परिवित्ति १.	३६१४३	परुका २.	३३३१०३
परिधिस्थ १. २. ३.	३१७१७१	परिवी २.	३९३६०	परुत् ४.	८६११०
परिपण ३.	३६१७०	परिवृत्ति २.	३१७३१	परुल १.	३१७१९१
परिपत् १.	३६१२६	परिवेत्त १.	३११४२	परुष १. २. ३.	२११२१
परिपत्र ३.	४३३१०३	परिवेष १.	३११५९	" १.	३३३२२२
परिपन्थिन् १.	३१७४२	परिवेषक १.	२११३१	" १.	५३३३
परिपाटी २.	३६१११४	परिवेषण ३.	४३३१००	" १. २. ३.	७३३२०
				परुस् १.	३३३११
				परेत १.	१२३३८

( ८७ )



[ परेत ]

परेत १. २. ३.	६।५।५२
परैतराज १.	१।२।३४
परैद्यवि ४.	८।८।९
परैष्टुका २.	३।५।४९
परैधित १.	३।९।२
" १. २. ३.	५।४।४९
परोक्ष १. २. ३.	५।४।१३
परोवण्ट १.	३।७।१९८
परोष्णी २.	२।३।४४
पर्कट १.	२।३।३१
" ३.	३।३।२१७
पर्कटिन् १.	३।३।२८
पर्जन्य २.	३।३।२१२
पर्जन्य १.	७।१।४२
पर्ण ३.	३।३।१७
" १.	३।३।२९
" १.	८।६।१२
पर्णक्ष १. २. ३.	३।६।१३१
पर्णशवर १.	३।५।४७
पर्णशाला २.	४।३।२६
पर्णादा २.	३।४।६३
पर्णास १.	३।३।११९
पर्णिका २.	३।३।१२४
पर्दन ३.	२।४।८
पर्पट १.	२।४।१२८
पर्पटी २.	३।२।४१
" २.	३।३।२१३
पर्पण १.	३।३।१०७
पर्परा २.	३।३।२१३
पर्परी २.	४।४।९९
पर्परीक १.	८।१।२५
पर्यङ्क १.	३।६।२१३
" १.	४।३।१६५
" १.	७।१।५२
पर्यटन ३.	५।२।११
पर्यलुयोग १.	२।४।३७
पर्यन्तपर्वत १	३।१।१७
पर्यन्तशू २.	४।३।१२
पर्यव १.	३।६।११४

वजयन्तीकोषः

पर्यवस्था २.	५।२।३०
पर्यवस्थात् १.	३।७।४२
पर्यस्ति २.	३।६।१५०
पर्याण ३.	३।७।११४
पर्याधात् १.	३।६।७४
पर्यासि ३.	४।३।१०५
" १. २. ३.	७।५।५३
पर्यासिम् ४.	४।३।१०४
पर्याय १.	३।६।११३
" १.	७।१।५५
पर्याहार १.	३।७।४५
पर्याहित १.	३।६।७४
पर्युद्वञ्चन ३.	३।८।४
पर्येषणा २.	३।६।१२१
पर्वत १.	३।२।१
पर्वन् ३.	२।१।७३
" ३.	३।३।११
" ३.	३।६।६२
" ३.	६।३।१९
" १. ३.	८।९।३१
पशु १. ३.	४।४।११५
पल ३.	४।४।१०६
" ३.	५।१।४५
" ३.	५।१।४६
" ३.	५।१।५१
पलगण्ड १.	३।९।१४
पलगण्डक १.	३।५।४८
पलङ्कष १.	३।८।११२
पलङ्कषा २.	३।३।१४१
पलतेजस् ३.	४।४।१०७
पलल १.	३।३।६९
" ३.	४।४।१०६
" ३.	७।३।२१
पलशत ३.	५।३।६०
पलशीनक १.	५।३।५०
पलाण्डु १.	३।३।२०५
" १.	३।३।२०७
पलाण्डुक १.	३।३।१५३
पलान्न ३.	३।७।२१०
पलाल १. ३.	३।८।६४

[ पवित्र ]

पलाश ३.	३।३।१६
" १.	३।३।२९
" १.	३।३।२०३
पलाशिका २.	३।३।१९५
पलाशिन १.	७।१।५४
पलिकिनी २.	३।४।६३
पलिकनी २.	३।४।४६
" २.	४।४।२१
पलित ३.	३।८।७९
" ३.	५।४।१४४
" १. ३.	७।५।५२
पलिन १.	३।५।१९
पलिपादक ३.	३।७।७५
पलुष १.	५।३।४२
पलोद्भव ३.	४।४।१०७
पल्यङ्क १.	४।३।१६५
पल्ययन ३.	३।७।११४
" १.	४।४।४६
पल्ल १.	३।५।१४
पल्लव १. ३.	३।३।१७
" १.	४।४।३९
" १. ३.	७।५।५८
पल्लवाङ्कुर १.	३।३।१५
पल्ली २.	४।१।३०
" २.	४।३।२७
" २.	६।२।२३
पव १.	३।८।४६
( पल )	
" १.	५।२।३१
पवन १.	१।२।४९
" १.	१।२।५३
" ३.	४।३।६६
" ३.	५।२।३१
पवमान १.	१।२।२४
" १.	१।२।४८
" १.	८।१।२७
पवि १.	१।२।१३
" १.	६।१।३३
पवित्र ३.	३।२।२२
" ३.	३।६।२०
" १.	३।८।५२

पवित्र ]

पवित्र ३.	४।२।४०
" १. २. ३.	५।४।६५
" १. २. ३.	७।५।५८
पशु १.	३।४।३०
" १.	३।४।६२
" १.	३।४।७२
" १.	३।६।८४
" १.	३।६।११२
" ४.	८।८।२१
पशुगोयुग १.	५।१।१८
पशुपति १.	१।१।३८
" १.	८।१।२६
पशुबन्ध १.	३।६।८४
पशुसंस्कार १.	३।६।९३
पश्चात्ताप १.	३।६।१८५
पश्चात्सुन्दर १.	३।३।१५७
पश्चिम १. २. ३.	५।४।७७
पश्चिमाङ्ग ३.	४।४।६९
पश्यतोहर १.	३।९।५७
पशौही २.	३।४।४७
पांसु १.	३।८।२५
पांसुचन्दन १.	१।१।३८
पांसुज ३.	३।८।१२३
पांसुलवण ३.	३।८।१२२
पांसुला २.	४।४।१०
पाक १.	३।३।८३
" १.	३।८।४५
" ३.	५।२।४१
" १.	६।१।३३
" १.	८।९।१४
पाककृष्ण १.	३।३।८३
पाककृष्णफल १.	३।३।८३
पाकपुटी २.	४।३।२३
पाकफल १.	३।३।८३
पाकफलकृष्ण १.	३।३।८३
पाकमण्डल ३.	३।९।२७
पाकयज्ञ १.	३।६।८३
पाकयज्ञिक १.	१।२।२७
पाकल १.	३।७।९१
" ३.	३।८।९९
पाकवर्तन ३.	५।२।४१

शब्दानुक्रमणिका

पाकशासन १.	१।२।३
पाकशुक्ला २.	३।२।१३
पाकु २.	८।९।३
पाक्य ३.	३।८।१२२
" ३.	३।८।१२४
पागल १.	३।५।१५
पाचन १.	५।३।२६
पाज १.	४।३।७६
पाञ्चजन्य १.	१।१।१७
पाञ्चमिक १.	५।१।५९
पाञ्चालिका २.	३।९।१४
पाट ४.	८।८।२
पाटल १.	५।३।१७
" १. २. ३.	७।५।५६
पाटला १. २. ३.	३।३।२३
पाटलि १. २.	३।३।९०
पाटलिङ्गिका २.	३।८।४९
पाटली २.	३।६।६२
पाटव ३.	४।४।१४२
पाटूर १.	२।१।७०
पाठक १.	३।३।२३
पाठा २.	३।३।१३१
पाठीन १.	४।१।४२
पाणि १.	४।४।७३
" १.	५।१।४९
" १.	८।६।९
पाणिक १.	५।१।३८
पाणिगृहीती २.	४।४।३५
पाणिग्रह १.	३।६।५५
पाणिघ १.	३।७।१
पाणिनि १.	३।६।१५४
पाणिन्युपज्ञ ३.	३।९।२१
पाणिपात्र १. २. ३.	३।६।१३२
पाणिमुक्त ३.	३।७।१९५
पाणिमूल ३.	४।४।७३
पाणिरुह १.	८।५।७६
पाणिवाद १.	३।९।७१
पाणिश १.	३।५।२०
पाण्डर १.	५।३।१०
" १.	५।३।१२

[ पाद ]

पाण्डिय १ ब.	२।१।३३
पाण्डु १.	३।३।२२२
" १.	५।३।१२
पाण्डुक १.	३।५।२७
पाण्डुकम्बलिन् १. २. ३.	३।७।१२९
पाण्डुभूम १. २. ३.	३।१।४५
पाण्डुल १.	५।३।१४
षाण्डवर्णक १.	४।४।१३७
पाण्डुसोपाक १.	३।५।४३
" १.	३।५।१०६
पाण्ड्य १ ब.	३।१।३३
पात २.	४।४।५४
पातक ३.	३।६।१६८
पातन ३.	३।७।१७४
पाताल ३.	४।१।१
" ३.	७।४।२२
" ३.	८।३।१८
पातालमूलिक १. २. ३.	३।६।१२९
पाताली २.	७।२।१७
पातिक १.	३।७।१४०
पातुक १. २. ३.	५।४।३८
पात्म १.	२।१।८८
पात्र ३.	२।३।२६
" ३.	३।६।१४६
" ३.	३।९।६८
" ३.	४।२।३२
" ३.	५।१।५५
" ३.	६।३।२१
" १. २. ३.	८।९।३८
पाथस ३.	४।२।२१
" ३.	६।३।२०
पाथि १.	२।१।१३
पाथिस ३.	६।३।२१
पाथेय ३.	३।९।७
पाथोवक्रा २.	३।३।२१९
पाद १.	२।१।१६
" १.	३।२।७
" १.	४।४।५६



पाद ]	वैजयन्तीकोषः	[ शालम
पाद १.	पाप्मन् १.	पारि २.
पाददण्ड १.	पाप्मन् १.	पारिकर्मिक १. र. ३.
पादप १.	पाप्मन् १. र. ३.	पारिकाङ्क्षिक १. र. ३.
पादपच्छाय १. र. ३.	पामर १.	पारिजातक १.
	" १. र. ३.	" १.
पादपाश १.	पामा २.	पारितथ्या २.
पादपुटी २.	पामारि १.	पारिन् १.
पादप्रसार १.	पायस ३.	पारिपन्थिक १.
पादफली २.	" ३.	पारिपार्श्विक १.
पादरक्षणी २.	पायु १.	पारिप्लव १. र. ३.
पादरक्षिणी २.	पाय्य १.	पारिभद्र १.
पादवाहिक १.	पार १.	" १.
पादस्फोट १.	पारत १.	पारिभाष्य ३.
( पादः, स्फोटः )	पारद १ ब.	पारियाणिक १. र. ३.
पादात १.	पारधेनुक १.	पारियात्रक १.
" ३.	" १.	पारिषद १.
पादायुध १.	पाररक्षिक १.	परिहार्य ३.
पादावर्त १.	पारशव १.	पारिहास्य १.
पादिक ३.	" १.	पारी २.
" १.	" १.	पारीन्द्र १.
" ३.	" १.	पारे ४.
पादिका २.	" १.	पार्थिव १.
( पालिका )	" १.	पार्थिवेन्द्र १.
पादिकाशीर्ष ३.	" १.	पार्वण ३.
( पालिकाशीर्ष )	" १.	पार्वत १.
पादुका २.	" १.	पार्वती २.
" २.	पारश्वधिक १. र. ३.	" २.
पादू २.	पारसीक १.	पार्श्व १. ३.
पादूकृत १.	" १.	" ३.
पादोपवेश १.	पारसीककुल ३.	" १. ३.
पान १.	पारायण १.	पार्श्वस्थ १.
" ३.	" १.	पार्श्वोदरप्रिय १.
पानगोष्ठिका २.	पारावत १.	पार्णि १.
पानीय ३.	" १.	" १. र. ३.
पानीयशालिकार. ३.	" १. र. ३.	पार्ष्णिग्राह १.
पानीयसम्भव ३.	पारावतपदी २.	" १. र. ३.
	पारावर १.	पार्ष्णिग्रह १.
पाप १.	पारावार १.	पालम १.
" १.	पाराशरिन् १.	( बालम )
" १. र. ३.	पाराशर्य १.	
पापचेली २.		

पालन ]	शब्दानुक्रमणिका	[ पितृव्य
पालन १.	पिङ्गल १.	पिण्ड १.
पालाश १.	" १.	" १.
पालि १.	पिङ्गलकेशाक्षी २.	" १.
" २.	पिङ्गला १.	पिण्डक १.
" २.	" २.	" १.
पालिकाष्ठ ३.	पिङ्गाण १.	" १.
पाली २.	पिच्छण्ड १.	पिण्डफला २.
" २.	पिच्छिण्ड १. र. ३.	पिण्डा २.
पालुखञ्जन १.	पिच्छिण्ड १.	पिण्डारक १.
पालुषी २.	पिच्छिण्डिका २.	" १.
पालक १.	पिचु १.	पिण्ड १.
पाल्लवा २.	" १.	" १.
पावक १.	पिचुमन्द १.	पिण्डिका २.
" १.	पिचुल १.	" २.
" १.	" १.	पिण्डित १. र. ३.
पावन १.	पिचूल ३.	पिण्डिल १. र. ३.
पावनक १.	पिच्छट ३.	पिण्डीक १.
पावनी २.	पिच्छनद्ध १.	पिण्डीतक १.
पाश ३.	पिच्छन्दका २.	पिण्डीशूर १. र. ३.
" १.	पिच्छा २.	
पाशक १.	पिच्छित १. र. ३.	पिण्डूष १.
पाशबन्धन २.	पिच्छिल १. र. ३.	पिण्या २.
( पादबन्धन )	पिच्छिला २.	पिण्याक १.
पाशिन् १.	पिच्छीला २.	" १.
पाशुपत १.	पिच्छ ३.	पितामह १.
पाशुपाक्य ३.	" ३.	" १.
पाशुबन्धिक १.	पिञ्ज १.	पितृ १.
पाश्चात्य १ ब.	पिञ्जा २.	" १.
" १. र. ३.	पिञ्जूप १.	" १ ब.
पाश्या २.	पिट १.	पितृकार्य ३.
पाषण्ड १.	पिटक १.	पितृज्येष्ठ १.
" १.	" १.	पितृदान ३.
पाषाण १.	" १. र. ३.	पितृनख १.
पाषाणदारक १.	" १. र. ३.	पितृपति १.
पाषाणपुष्प १.	" १. र. ३.	पितृपितृ १.
पासि १.	" १. र. ३.	पितृप्रपा २.
पिक १.	" १. र. ३.	पितृप्रसू २.
पिङ्ग १.	" १. र. ३.	पितृभोजन ३.
" १.	" १. र. ३.	पितृयाण १.
पिङ्गल ३.	" १. र. ३.	पितृवन ३.
	" १. र. ३.	पितृव्य १.



[ पितृवस्त्रीय ]

पितृवस्त्रीय १.	४४४४२
पितृ ३.	४४४१२१
पितृल ३.	३१२२६
पितृया २.	२११७२
पितृसत् १.	२३३१
पिधान ३.	२११६४
" ३.	४३१५५
पिनद्ध १. २. ३.	३१७१४२
पिनाक १.	१११५०
" १. ३.	७१५५७
पिनाकिन् १.	१११३९
पिपतिपत् १.	२३३१
पिपासा २.	३१६१८१
पिपासित १. २. ३.	५४३३७
पिपासु १. २. ३.	५४३३७
पिपीलिका २.	४११३६
पिप्पल ३.	३३३२०
" १.	३३३२७
" ३.	४३३६८
पिप्पलक १.	३१११२
पिप्पली २.	३१७७३
" "	३१८७६
पिप्पलीमूल ३.	३१८९१
पिप्पिका २.	२३३२४
पिप्पु १.	४३१९७
पिलाट १.	३१७७३
पिल्ल १.	६३१५
पिशङ्ग १.	५३३१८
पिशाच १.	१३३४
" १.	७११५७
पिशित ३.	४३१९०७
पिशुन १. २. ३.	५४३२५
पिष्ट १.	५११५५
पिष्टक १.	४३३७२
पिष्टपचन ३.	४३१५७
पिष्टपिण्डका २.	४३३७२
पिष्टात १.	४३३१५७
पीठ ३.	४३३१६४
पीठबन्धन १.	४३३८०
पीठमर्द १.	३१९७०

वैजयन्तीकोषः

पीठर ३.	३३३२००
पीठीव ३.	४३३६०
पीडन ३.	३१७२०७
पीडा २.	३१६१८७
" २.	६३३२५
पीडित १. २. ३.	५४३१५५
पीत १.	३३३१४
" १.	५३३११
पीतकङ्कु २	३१८५६
पीतघोषा २.	३३३१६२
पीतचन्दन ३.	३१८११३
पीततण्डुला २.	३१८५५
पीतदारु ३.	३३३७१
" १.	३३३२१२
" ३.	३१८११४
पीतधातु १.	३३३११
पीतधूमल १.	५३३२०
पीतन ३.	३३३१४
" १.	३३३३१
" ३.	३१८११७
पीतपुष्प १.	३३३१७०
पीतमुण्ड १.	२३३१९
पीतरक्त १.	५३३१७
पीतरसा १.	३३३१३९
पीतल ३.	५३३११
पीतलिका २.	३१७७३
पीतलोह ३.	३३३२५
पीतलोहित १.	५३३२०
पीतश्यामल १.	५३३२०
पीतसागर १.	३३३१५१
पीतशाल १.	३३३३९
पीतसितासित १.	५३३१२
पीतहरित १.	५३३२१
पीता २.	३३३२११
पीताम्बर ३.	१११११
पीतामलान १.	३३३१८८
पीति १.	३१७९१
" १. २.	६३३५१
पीतु १.	२३३३
पीथ १.	१३३१९

[ पुञ्जील ]

पीथ ३.	३१८१३८
" ३.	३१८१४५
" ३.	६३३२२
पीन १. २. ३.	५३३६
पीनकोशी २.	३१८६५
पीनस १.	४३३१४
" १.	४३३१२१
पीनस्कन्ध १.	३३३५
पीनस्तनी २.	३३३४९
पीनाह १.	४३३८
पीनोष्णी २.	३३३४९
पीयु १.	६३३३२
पीयूष ३.	३१८१४६
" ३.	७३३२३
पीलु १.	३३३४५
" १.	६३३३२
पीलुक १.	२३३४
पीलुकुण १.	८३३१४
पीलुनी २.	३३३११४
पीलुपर्णिका २.	३३३११४
पीलुपर्णी २.	३३३१४७
पीवन् १. २. ३.	५३३६
पीवर १.	३३३३९
" १.	५३३६
पीवरी २	३३३१४२
पुञ्जली २.	४३३९
पुंस् १.	४३३२
" १.	८३३६१
पुंसवन ३.	३३३३
" ३.	३१८१४५
पुंहुल १.	४३३१२५
पुङ्ख १.	३१७१८५
" १.	६३३३३
पुङ्गर्भः १.	४३३३९
पुङ्गव १.	७३३५७
पुङ्गाह १.	३१७१००
पुच्छ १. ३.	३३३७४
पुच्छभाग १.	३१७८१
पुञ्ज १.	५३३३
पुञ्जिका २.	२३३७
पुञ्जील १.	३३३२३

[ पुट ]

पुट २.	३१५२८
" १. २. ३.	३१९३३
" १.	४३३१
" १.	४३३६४
" १. २. ३.	८३३३७
पुटकिनी २.	४३३४४
पुटभेद १.	४३३३०
पुटभेदन ३.	४३३३
पुटानिल १.	१३३५३
पुटी २.	३१९३३
" २.	८३३३७
पुष्ट १.	६३३३२
पुष्टक १.	५३३१०
पुष्टरीक १.	२३३८
" ३.	३३३१२३
" १.	४३३१५
" १.	४३३१९
" ३.	४३३२३
" ३.	४३३४०
" १.	८३३१६
पुष्टरीकाक्ष १.	१३३१०
पुष्ट १ ब.	३३३३०
" १.	३३३२२६
पुष्टलक्षण २.	३३३३०
पुष्टा २.	३३३४३
पुष्ट ३.	३३३१६८
" १. २. ३.	६३३५०
पुष्टगन्धिक ३.	४३३४०
पुष्टयजन १.	८३३२६
पुष्टयजनेश्वर	१३३५८
पुष्ट्याह ३.	२३३६७
" ३.	८३३२२
पुष्टिका २.	२३३४८
पुत्र १.	४३३३९
" १.	४३३४८
" १.	८३३३३
पुत्रजीव १.	३३३७९
पुष्ट १.	८३३३३
पुनःपुनः ( रू ) ४.	८३३११
पुनर् ४.	८३३२४

शब्दानुक्रमणिका

पुनरुद्धा २.	३३३४५
पुनर्नव १.	४३३७६
पुनर्नवा २.	३३३१४६
पुनर्भव १.	४३३७६
पुनर्भू २.	३३३४५
पुनर्भूज १.	४३३४५
पुनर्युवन् १.	२३३२५
पुनर्वसु १.	२३३३९
" १.	३३३५८
पुच्छाग १.	३३३७०
पुष्पिका २.	४३३३३
पुर् २.	३३३३३
" २.	४३३१
" २.	८३३१६
पुर् १.	३३३५४
" ३.	३३३२३४
" १.	३३३२७
" ३. २.	४३३१
पुर्ः(-स्) ४.	८३३११
पुर्क्षक १ ब.	३३३३०
पुर्तः(-स्) ४.	८३३११
पुर्द्वार ३.	४३३१५
पुर्न्दर १.	१३३२
पुर्न्ध्री २.	४३३२१
पुर्मद १.	३१८१०८
पुर्रक्षिन् १.	३१७१८
पुर्स्कृत १. २. ३.	८३३१९
पुर्स्तात् ४.	८३३३३
पुर्स्सर १. २. ३.	३१७१४५
पुरा ४.	८३३२३
पुराज १.	१३३८
पुराण ३.	३३३३८
" ३.	३३३२९
" १. २. ३.	५३३८७
पुराणान्त १.	१३३३५
पुरातन १. २. ३.	५३३८७
पुरावृत्त ३.	२३३३८
पुरी २.	४३३२७
" २.	४३३११
पुरीष ३.	३३३२४

[ पुस्कस ]

पुरीष ३.	४३३११८
पुरु १. २. ३.	५३३८५
पुरुष १.	१३३१८
" १.	४३३२
" १.	७३३४६
पुरुषव्याघ्र १.	२३३३०
पुरुषाद १.	१३३४१
पुरुषोत्तम १.	१३३१२
पुरुह १. २. ३.	५३३८५
प्रकृत १.	१३३२
पुरोग १. २. ३.	३३३१४५
पुरोगम १. २. ३.	३३३१४६
पुरोगामिन् १.	३३३७०
" १. २. ३.	३३३१४६
पुरोडाश १.	३३३९९
पुरोधस् १.	३३३२४
पुरोनुवाक्या २.	३३३१२
पुरोभागिन् १. २. ३.	५३३३४
पुरोवचस् ३.	२३३४१
पुरोवात १.	१३३५४
पुरोहित १.	३३३२४
पुरोहिन् १.	३३३३४
पुलक १.	३३३४१
" १.	३३३१६३
" १.	७३३४७
पुलकिन् १.	३३३६०
पुलाक १.	७३३४७
पुलाकिन् १.	३३३१५
पुलिन ३.	४३३३३
पुलिन्द १.	३३३४७
" १.	३३३४७
" १.	३३३८३
पुलिन्दक १.	४३३१६
पुलोमजा २.	१३३११
पुलोमशत्रु १.	१३३३
पुस्कस १.	३३३४८
" १.	३३३८२
" १.	३३३८५
" १.	३३३८८



[ पुष्कस ]

पुष्कस १.	३१५८९
" १.	३१५९१
पुष् १.	४१४६१
पुष्पित १. २. ३.	५१४११४
पुष्कर १.	३१८८८
" ३.	७३२२४
पुष्करसार १.	४१११६
पुष्कराह्वय १.	२३३३३
पुष्करिणी २.	४२१५
पुष्कल १.	३६१५
" ३.	३६१६
" १.	४३१२
" १. २. ३.	७४१९
पुष्ट १. २. ३.	५१११४
पुष्टि २.	११११६
पुष्टिवर्धन १.	२३२२८
पुष्प १.	३३११८
" ३.	४१११६
" ३.	८१११५
पुष्पक १. ३.	३१५५४
" १.	४१११८
पुष्पकाल १.	२११८८
पुष्पकेतु १.	३२३३३
पुष्पदन्त १.	२११८
पुष्पधन्वन् १.	१११२८
पुष्पफल १.	३३३३२
पुष्पफलित् १.	३३३३६
पुष्परजस् ३.	३८१११७
पुष्पलोलुप १.	२३३३२
पुष्पव १.	३१५५४
" १.	३१५५९
पुष्पवत् १.	२११२९
पुष्पवती २.	४१११५
पुष्पवाटी २.	३३३३४
पुष्पवीर्या २.	३३३१२८
(पुष्पी, वीर्या)	
पुष्पसारण १.	२११८७
पुष्पाढ्य १. २. ३.	३६१२८
पुष्पाभिकीर्णक १.	४११११

वैजयन्तीकोषः

पुष्पाभिकीर्णक १.	४१११६
पुष्पिका २.	३१९१२७
पुष्पित १. २. ३.	३३३८
पुष्प्य १.	२१३३९
" १.	२११९१
पुष्प्यफल १.	३३३१७०
पुष्प्यरथ १.	३७१२६
पुष्प्यल १.	३१८८५
पुस्त ३.	३१९१६
पुस्तक ३.	४३११०९
पू २.	३६१६३
पूग १.	३३२१७
" १.	५१११
पूगतिथ १. २. ३.	
पूगपट्ट १.	५१११९
पूगपुष्पिका २.	३६१५९
पूगावपनी २.	४३११०८
पूजा २.	३६३२९
पूजित १. २. ३.	
पूज्य १. २. ३.	६१५५१
पूज्यपाद १. २. ३.	
पूत १. २. ३.	३८६७
" १. २. ३.	५१६५
पूतना २.	२१११८
पूति १. २.	३१५३५
" १.	५३१५७
पूतिक १.	३३३६२
पूतिकरज १.	३३३६२
पूतिकाष्ठ ३.	३३३७१
पूतिकाष्ठक ३.	३३३७४
पूतिपुष्पी २.	३३३३४
पूतिफली २.	३३३१०८
पूत्यण्ड १.	२३३४८
पूप १.	४३३७२
पूय ३.	४१११८
पूर १.	४२३३०
पूरक १.	३३३३३
" १.	३८३४४

[ पृतना ]

पूरक १.	३१९६४
पूरणा २.	३३३१४५
पूरणी २.	३३३१०
" २.	३३३१४७
पूरित १. २. ३.	५१८८६
पूरी २.	३३३१४५
" २.	३८१२५
पूरुष १.	४१३३
पूर्ण ३.	३७१९१
" १. २. ३.	५१८८६
" १. २. ३.	५१८८६
पूर्णकलश १. ३.	३६१५८
पूर्णकुम्भ १.	४३३६१
पूर्णकूट १.	२१३३२
पूर्णकूटक १.	२१३३२
पूर्णपात्र ३.	३६३६१
पूर्णपात्रक ३.	३६३७७
पूर्णमासी २.	२१३७२
पूर्णा २.	२१३७२
पूर्णनिक ३.	३६३६१
पूर्णिका २.	४२१३३
पूर्णिका २.	२१३७२
पूर्णिमा ३.	२१३७२
पूर्त ३.	३६३१५
पूर्व १. २. ३.	५१४१४०
" १. २. ३.	६१५७
पूर्वगन्धिक १.	३१३८
पूर्वज १.	४१३३१
" १. २. ३.	५१४४
पूर्वदिक्पाल १.	१३२२
पूर्वदेव १.	१३३१०
पूर्वरङ्ग १.	३१९३९
पूर्वाह्न १.	२१३६४
पूर्वेष्टुः (-स्) ४.	८१३२
" ४.	८१३८
पूल १. ३.	३८६४
पूलक १.	४१११५
पूषन् १.	२१११०
पूष्य-३.	३८३७३
पूच्छा २.	२१३३७
पृतना २.	३७१५५

[ पृतना ]

पृतना २.	३७१५८
पृतनासाह १.	१२२
पृथक् ४.	८८४
पृथक्क्रिया २.	२१४४०
पृथक्कर्णी २.	३३३३३६
पृथग्जन १.	८१२६
पृथक् १ ब.	३११४०
पृथिवी २.	३१३३
पृथिवीपति १.	८११५३
पृथु १.	३१४४०
" २.	३८८५
" २.	३८१३२
" १. २. ३.	५१४८०
पृथुक १.	४३३६८
" १.	७११५८
पृथुचित्र १.	३६३४१
पृथुच्छुद १.	३३३७६
पृथुरोमन् १.	४१३४१
पृथुल १. २. ३.	५१४८०
पृथुशालिका २.	३८८५
पृथुसूय १.	३८४०
पृथुहस्त १.	३७५१
पृथ्विका २.	३८८५
" २.	३८१३२
पृथ्वी २.	३१३३
" २.	३८८५
पृथ्वीका २.	३८८७
पृदाकु १.	७११५
पृश्नि १. २. ३.	४१५५
पृश्निपर्णी २.	३३३३३६
पृषत् २. ३.	२२२८
पृषत १.	२२२८
" १.	३१३३३
" १.	३६१९९
पृषता २.	३६३७
पृषत्क १.	३७१७९
पृषदंशक १.	३४३७१
पृषदश्च १.	१२१५०
पृषदाज्य ३.	३६१९९
पृष्ट ३.	४१३६९
पृष्टग्रन्थि १.	४१३३३

शब्दानुक्रमणिका

पृष्ठचक्रस् १.	४१३४६
पृष्ठमध्यास्थि ३.	४१४९१
पृष्ठमांसादन ३.	५२२८
पृष्ठवाह्य १. २. ३.	३१४५६
पृष्ठस्थ १. २. ३.	३७१४१
पृष्ठ्य १. २. ३.	३१४५६
" ३.	५११४४
पेचक १.	२३३२२
" १.	७१५३
पेचिका २.	२३३३१
पेट १. २. ३.	८१३३७
पेटक १.	४३३६३
" ३.	५१३३
पेटा २.	४३३६३
पेटी २.	८१३३७
पेत्व १.	३१४६४
पेय ३.	४३३९१
पेरा २.	३१३४
पेराल १.	५३२२०
पेरु १.	२१३३३
" १.	५३३१२
पेलव १.	३१५८५
" ३.	३८७९
" १. २. ३.	५१३३६
पेशल १. २. ३.	५१५४
" १. २. ३.	५१३३७
" १. २. ३.	७१३९९
पेशि २.	४३३८९
" २.	४१३१२
पेशी १.	२३३५०
पैङ्गराज १.	४१३१७
पैठर १. २. ३.	४३३९४
पैण्डूष १. ३.	४१३९३
पैतृत्वसेय १.	४१३४२
पैष्टिकी २.	३१५५०
पोगण्ड १. २. ३.	५१३११
पोटकी २.	४३३२४
पोटगल १.	४१३३६
" १.	८१३२७
पोटना २.	२१३२६
पोटरूप १.	३१३१५

[ पौष ]

पोटा २.	४१३३
पोत १.	३७३६६
" १.	४३३४०
" १.	४१३३५
" १.	६१३३३
पोतकी २.	२३३१९
पोतवणिज् १.	४२३१८
पोतवाह १.	४२३१८
पोताधान ३.	४१३४५
पोत्र ३.	६३३२२
पोत्रिन् १.	३१३६
" १.	३१३९
पोथ १.	४२३१५
पोलिक १.	४३३७१
पोलिन्द १.	४२३३६
पोषी २ ब.	२१३१२
पोहित्थ ३.	४२३१५
पौश्चलेय १.	४१३४३
पौस्न ३.	३६३३
" १. २. ३.	५१३१८
पौष्ट १.	३१५५०
पौतव १.	५१३६४
पौत्तिक ३.	३८३३५
पौत्र १.	४१३४५
पौनर्भव १.	४३३४५
पौपिक १. २. ३.	४३३९२
पौर १.	१३३२२
पौरस्त्य १. २. ३.	५१३६
पौरुष १. २. ३.	४१८३
" ३.	४१३११
" ३.	७१५८
पौरुषेय १. २. ३.	८१३१०
पौरैन्द्र १.	२३३३२
पौरोगव १.	३७२२१
पौरहित ३.	३६३२७
पौर्णमासी २.	२१३७२
पौर्वापर्य ३.	३६३१३
पौलस्त्य १.	१२३५६
" १.	७१५५९
पौलोमी २.	१२३११
पौष १.	२१३८२



[ पौषी ]

पौषी २.	२११७४
पौष्टिक ३.	३६११९
पौष्पक ३.	३१२४३
पौष्यक ३.	३१२४१
सा २.	४४११०१
प्याट ४.	८८१२
प्र ४.	८७१६
प्रकट १.	३१११३७
” १. २. ३.	५४११३४
प्रकरपन १.	११२५०
प्रकर ३.	३८११०७
” १.	५१११
प्रकरण ३.	३१११००
प्रकाण्ड ३.	८११४२
प्रकाण्डकम् ३.	३३११२
प्रकामम् ४.	४३११०४
प्रकार १.	५२१२३
” १. २. ३.	५४११२२
” १.	७११५६
प्रकाश १.	११२३१
” १. २. ३.	५३११३४
” १. २. ३.	७५१५४
प्रकीर्णक १.	३७१९०
” ३.	४३११५९
प्रकीर्य १.	३३१६२
प्रकुञ्ज ३.	५११५१
प्रकृति २.	३६११६१
” २.	३७३
” २.	५२१२
” २.	७२११२
प्रकोटी २.	३३१११३
प्रकोष्ठ १.	४४१७२
” १.	७११५२
प्रक्रम १.	५२११५
प्रक्रय १.	३८१६९
प्रक्रिया २.	७२११४
प्रक्षण १.	२४११२
प्रकाण १.	२४११२
प्रचुर १.	३७१११५
प्रचुराङ्गी २.	३४१४४
प्रचवेलन १.	३७११८०

[ वैजयन्तीकोषः ]

प्रखर १. ३.	३७१११५
प्रख्य १. २. ३.	५४११२२
प्रयणिका २.	४३३३३
( प्रगणिता )	
प्रगण्ड १.	४४१७२
प्रगतजानुक १. २. ३.	५४११०
प्रगल्भ १. २. ३.	५४११७
प्रगाल १. २. ३.	७४१२०
प्रगुण १. २. ३.	५४११२४
प्रगो ४.	८८११०
प्रग्रह १.	२११४८
” १.	३११५७
” १.	७११४९
प्रग्राह १.	७११४९
प्रग्रीव १. ३.	७५१५६
प्रघण १.	४३१४५
” १.	७११५२
प्रघाण १.	३३११५
” १.	४३१४५
प्रघात १.	३७१२०५
प्रघार १.	५२१२४
प्रचक्र ३.	३७१२०१
प्रचक्षस् १.	२११३४
प्रचल १. २. ३.	५४१७८
प्रचालक १.	२३३३९
प्रचार १.	३७११५८
प्रचुर १. २. ३.	५४१८४
प्रचूडक १.	३८१४८
प्रचेतस् १.	१२१४६
” १.	७११५६
प्रच्छदपट १.	४३११६६
प्रच्छन्नद्वार ३.	४३११२६
प्रच्छदिका २.	४३१४२
” २.	८११५
प्रजनन ३.	४४१६२
प्रजनिष्णु १. २. ३.	५४११४
प्रजल्पन ३.	२४३९
प्रजा २.	४४१४१
” २.	६२१२३

[ प्रति ]

प्रजागम १.	३६१८६
प्रजागर १.	३७११५८
प्रजाता २.	४४१४२
प्रजानुक १.	४४१५३
प्रजापति १.	१११६
” १.	८११३४
प्रजापतिहस्तक १.	३११५५
प्रजावती २.	४४१३६
प्रज्ञा २.	४४१२१
” २.	६२१२३
प्रज्ञान ३.	७३१२२
प्रज्ञु १. २. ३.	५४११०
प्रज्वलित १. २. ३.	८१११४
प्रणय १.	३८१७०
” १.	७११४४
प्रणव १.	३६१२३३
प्रणष्ट १. २. ३.	३७११९
प्रणाद १.	२४१९
प्रणाम १.	५२१२४
प्रणाय १. २. ३.	७४११५
प्रणाल १. २. ३.	४२१२०
प्रणिधि १.	७११५५
प्रणिपात १.	५२१४८
प्रणिहित १. २. ३.	५४११०९
” १. २. ३.	८११९
प्रणीत ३.	४३१९४
प्रणीति २.	४३३३८
प्रणेत्य १. २. ३.	५४३३२
प्रतति २.	७२११५
प्रतल १.	४४१७७
प्रतानिनी २.	३३३७
प्रताप १.	७११५४
प्रतापन ३.	५३३८
प्रतापस १.	३४११४
प्रतारण ३.	५२३३५
प्रतारिका २.	४४१६६
प्रति ४.	८७१२५

[ प्रतिकर्मन् ]

प्रतिकर्मन् ३.	४३११३२
प्रतिकूल १. २. ३.	५४११२७
प्रतिकृति २.	३११२०
प्रतिकृष्ट १. २. ३.	५४१७५
प्रतिनिध १. २. ३.	८११८
प्रतिख्याति २.	५२१२९
प्रतिग्रह १.	८११३९
प्रतिग्राह १.	४३११६०
प्रतिघ १.	७११५४
प्रतिघातन ३.	३७१२१४
प्रतिच्छन्द १.	५११२१
प्रतिच्छाया २.	५११२०
प्रतिजागर १.	५२१२९
प्रतिज्ञा २.	५२३३७
प्रतिज्ञात १. २. ३.	५४११०६
प्रतिर्जन ३.	२४३३९
प्रतिताली २.	४३३४९
प्रतिदान ३.	८३३९
प्रतिध्वान १.	२४३१२
प्रतिध्वानदन्तुर १. २. ३.	२४३१४
प्रतिनष्ट १.	४४३४५
प्रतिनिधि १.	३११२१
प्रतिपक्ष १.	३७१४२
प्रतिपत्ति २.	८२१७
प्रतिपद २.	२११६९
” २.	७२११६
प्रतिपादन ३.	३६१११८
प्रतिबन्ध १.	५२११३
प्रतिबिम्ब ३.	३११२१
प्रतिभ १.	३११६९
प्रतिभय १. २. ३.	३११७८
” १. २. ३.	८१११७
प्रतिभा २.	३६११७६
प्रतिभातवाच् १. २. ३.	५४१४७

( प्रतिभासवाच् )

[ शब्दानुक्रमणिका ]

प्रतिभायुक्त १. २. ३.	५४११७
प्रतिभास १.	३६११७६
प्रतिभू १. २. ३.	३८११०
प्रतिम १. २. ३.	५४११२१
प्रतिमा २.	३११२०
प्रतिमुक्त १. २. ३.	३७११४२
प्रतियज १.	८११३१
प्रतियातना २.	३११२०
प्रतिरवि १.	४११२८
प्रतिरूपक ३.	३११२१
प्रतिरोधक १.	३११५६
प्रतिरोधिन् १.	३११५६
प्रतिलम्भ १.	५२१२०
प्रतिलोम १.	३११११८
” १.	३११११९
” १. २. ३.	५४११२७
प्रतिलोमज १.	३११८९
” १.	३१११०९
प्रतिवसथ १.	४३३२
प्रतिवाक्य ३.	२४३३७
प्रतिविषा २.	३८१९०
प्रतिशासन ३.	५२३३५
प्रतिशिष्ट १. २. ३.	८११८
प्रतिश्याय १.	४४११२१
प्रतिश्रय १.	८११३१
प्रतिश्रव १.	५२१२९
” १.	५२३३७
प्रतिश्रुत् २.	२४११२
प्रतिष्काश १. २. ३.	८१११४
प्रतिष्टम्भ १.	५२३३३
प्रतिष्ठा २.	७२११५
प्रतिसञ्चर १.	२१११५
प्रतिसर १.	३६१५९
” १. २. ३.	८१११४
प्रतिसर्ग १.	२१११५
प्रतिसारण ३.	४४११४०
प्रतिसारा २.	४३११२४

( ९७ )

[ प्रत्यादेश ]

प्रतिहत १. २. ३.	८११८
प्रतिहारी २.	३७३८
प्रतिहास १.	३३३१९२
प्रतीक १.	४४१५५
” १. २. ३.	७५१५४
प्रतीकार १.	३७१२०९
प्रतीक्ष्य १. २. ३.	७४११७
प्रतीच १.	३८१५७
प्रतीची २.	२११५
प्रतीचीन १. २. ३.	५४१९१
प्रतीच्छा २.	४३३१००
प्रतीत १. २. ३.	७४११६
प्रतीप १. २. ३.	५४११२७
प्रतीपदर्शिनी २.	४४१५
प्रतीवाप १.	३८११४४
प्रतीहार १.	८११२७
प्रतोद १.	३८१२९
प्रतोली २.	४३३१६
प्रतन १. २. ३.	५४१८७
प्रत्यक्च्छेणी २.	३३३११३
” २.	३३३१३३
प्रत्यक्पर्णी २.	३३३११५
प्रत्यक्ष १. २. ३.	५४११३३
प्रत्यगाशापति १.	१२१४६
प्रत्यगृष्टि २.	३६११७५
प्रत्यग्र १. २. ३.	५४१८९
प्रत्यग्रथ १ ब.	३११२६
प्रत्यच् १. २. ३.	५४१९१
प्रत्यनीक १.	३७१४१
प्रत्यय १.	७११५१
प्रत्ययित १. २. ३.	३८१९
( प्रत्ययिक )	
प्रत्यर्थिन् १.	३७१४२
प्रत्यवसान ३.	४३३१०२
प्रत्यवसित १. २. ३.	५४११०७
प्रत्यवस्कन्द १.	३८११६
प्रत्याकार १.	३७११६८
प्रत्याख्यान ३.	५२३३३
प्रत्यादेश १.	५२३३३



[ प्रत्यालीढ ]

प्रत्यालीढ ३.	३।७।१८८
प्रत्यासार १.	३।७।५९
प्रत्याहार १.	३।६।२३१
" १.	३।९।१४०
" १.	५।२।१८
प्रत्युत्क्रम १.	५।२।१५
प्रत्युत्पन्नमति १. २. ३.	५।४।३१
प्रत्युष १.	२।१।६८
प्रत्युष ३.	२।१।६८
प्रत्युषडम्बर १.	२।१।१५
प्रत्युह १.	५।२।४
प्रथन ३.	३।७।२०४
" १.	३।८।३६
" ३.	५।२।३४
प्रथम १. २. ३.	५।१।२१
" १. २. ३.	५।४।७६
" १. २. ३.	५।४।१४०
" १. २. ३.	७।४।१७
प्रथा २.	५।२।३४
प्रथिक ३.	३।६।८८
प्रथिमन् १.	८।९।१४
प्रदर १.	४।२।९
" १.	७।१।५७
प्रदीप्त १. २. ३.	८।४।१४
प्रदेशन ३.	३।७।४६
( प्रदर्शन )	
प्रदेशिनी २.	४।४।७३
प्रदेष्टु १.	३।७।२३
प्रदोष १. ३.	२।१।६५
" १.	७।१।५५
प्रद्युम्न १.	१।१।२७
प्रद्योतन १. ३.	८।५।१७
प्रद्राव १.	३।७।२११
प्रधान १. ३.	५।४।६२
प्रधानधातु १.	४।४।१११
प्रधि १.	३।७।१३५
" १.	८।९।१३
प्रपञ्च १.	७।१।५६
प्रपतित १. २. ३.	५।४।११५

वैजयन्तीकोषः

प्रपद ३.	४।४।५७
प्रपदव्यापिन् १. २. ३.	४।३।१२१
प्रपा २.	४।३।२३
प्रपाठक १.	३।६।३२
प्रपात १.	३।२।६
" १.	४।२।३२
" १.	७।१।५३
प्रपातिन् १.	३।२।२
प्रपितामह १.	४।४।२९
प्रपुञ्जाट १.	३।३।१५८
प्रपौत्रक १.	४।४।४५
प्रफुल्ल १. २. ३.	३।३।९
प्रबर्ह १. २. ३.	५।४।६२
प्रबल १. २. ३.	३।७।१५१
" १. २. ३.	५।४।६
प्रबोधन ३.	४।३।१४७
प्रभ १. २. ३.	५।४।१२१
प्रभञ्जन १.	१।२।४९
प्रभव १.	७।१।५०
प्रभवन्ती २.	५।२।२
प्रभविष्णुता २.	५।२।२
प्रभा २.	२।१।२२
" २.	२।१।२३
" २.	६।२।२३
प्रभाकर १.	२।१।१४
प्रभात ३.	२।१।६९
प्रभाव १.	५।२।२
" १.	७।१।५६
प्रभावती २.	३।९।२०
प्रभास ३.	३।२।२८
प्रभिन्न १.	३।७।६८
प्रभु १. २. ३.	५।४।५७
" १. २. ३.	६।४।१०
प्रभुता २.	५।२।२
प्रभूत १. २. ३.	५।४।८४
प्रभृष्टक ३.	४।३।१५५
प्रमथ १.	१।१।५१
" १.	३।७।२११
प्रमथन ३.	३।७।२१३
प्रमथाधिपति १.	१।१।४१

[ प्रलम्बाण्ड ]

प्रमदा २.	४।४।५
प्रमदावन ३.	३।३।३
प्रमनस् १. २. ३.	५।४।३३
प्रमा २.	५।२।३३
प्रमाण ३.	७।३।२३
प्रमातामह १.	४।४।३०
प्रमाथ १.	३।७।१८९
प्रमाथित ३.	३।८।१४३
प्रमाद १.	३।६।१७८
प्रमापण ३.	३।७।२१३
प्रमिति २.	५।२।३३
प्रमीत १. २. ३.	३।७।२२०
प्रमीला २.	३।६।१९७
प्रमुख १. २. ३.	५।४।६२
" १. २. ३.	५।४।७६
प्रमृत ३.	३।८।३
प्रमेह १.	४।४।१२८
प्रमेहनुद् १.	३।३।१०६
प्रमोद १.	३।६।१८८
प्रयत १. २. ३.	५।४।६५
" १. २. ३.	७।४।१८
प्रयत्त १. २. ३.	५।४।९९
प्रयत्नवत् १. २. ३.	५।४।११४
प्रयम १.	३।६।१४
प्रयस्त १. २. ३.	४।३।९४
प्रयाण ३.	७।३।२१
प्रयाम १.	३।८।६६
प्रयुत ३.	५।१।२८
" ३.	५।१।२९
प्रयोक्तृ १. २. ३.	३।८।८
प्रयोग १.	५।२।१५
" १.	७।१।४४
प्रयोजन ३.	३।६।२३६
" ३.	८।३।८
प्ररूढ १.	३।८।५२
प्ररोचना २.	३।९।१४२
प्ररोह १.	३।३।११
प्ररोहक १.	३।७।११५
प्रलम्बाण्ड १. २. ३.	५।४।८

[ प्रलम्बारि ]

प्रलम्बारि १.	१।१।२३
प्रलय १.	२।१।९५
" १.	३।९।८९
" १.	७।१।४३
प्रलाप १.	२।४।३०
प्रलोभिन् १.	३।३।१८९
प्रलोभ्य ३.	४।४।१०१
प्रवक १.	३।९।६४
प्रवण १. २. ३.	७।५।५३
प्रवयस् १. २. ३.	५।४।३
प्रवर १.	३।८।३४
" १.	३।८।३७
" ३.	३।८।११९
" १. २. ३.	५।४।६२
" १. २. ३.	८।९।५३
प्रवर्ग्य १.	१।२।२९
प्रवर्हिहा २.	२।४।३९
प्रवह १.	७।१।४३
प्रवहण ३.	३।७।२७
" ३.	४।२।१५
प्रवापण ३.	३।६।१२०
प्रवाल १. ३.	३।२।३९
" १.	३।३।१५
" १.	३।३।१५४
" १. ३.	७।५।५५
प्रवासन ३.	३।७।२१३
प्रवाह १.	४।२।३०
" १.	५।२।३९
" १.	७।१।४५
प्रवाहि १.	३।७।२२५
प्रवाहिक १.	१।२।४१
प्रवाहिका २.	४।४।१२९
प्रविदारण ३.	३।७।२०४
प्रविसर १.	२।१।६८
प्रविसारण ३.	३।७।२१५
प्रवीण १. २. ३.	५।४।१९
प्रवीरा २.	४।३।११
प्रवृत्ति २.	३।७।८२
" २.	३।८।४८
" २.	७।२।१६
प्रवृद्ध १. २. ३.	७।४।१८

शब्दानुक्रमणिका

प्रवेक १. २. ३.	५।४।६३
प्रवेणी २.	७।२।१६
प्रवेले १.	३।८।३६
प्रवेश १.	५।२।१४
प्रवेष्ट १.	३।७।७२
" १.	४।४।७२
प्रव्याल १.	२।१।३२
प्रवजित १.	३।६।१६०
प्रशंसा २.	२।४।३५
प्रशसन ३.	३।७।२१४
प्रशस्तमृद् २.	३।८।२४
प्रशान्ताचिस् १.	१।२।३२
प्रशान्तिक ३.	३।६।१८२
प्रश्न १.	२।४।३७
" १.	८।९।१४
प्रश्नवादिनी २.	४।४।११
प्रश्नय १.	५।२।३८
प्रश्रित १. २. ३.	५।४।३२
प्रष्ट १. २. ३.	३।७।१४५
प्रष्टवाह १. २. ३.	३।४।५६
प्रसङ्गा २.	३।९।४५
प्रसम्भ १.	१।२।५५
" १. ३.	३।७।२०९
प्रसम्भा २.	३।६।४६
प्रसरणी २.	३।७।२०१
प्रसर्पक १.	३।६।८१
प्रसव १.	२।१।८७
" १.	३।३।२०
" १.	४।४।४०
" १.	७।१।४८
प्रसव्य १. २. ३.	५।४।२८
" १. २. ३.	७।४।१८
प्रसहनी २.	३।३।१०४
प्रसहा २.	३।३।१०४
प्रसह्य ४.	८।८।१८
प्रसाद १.	७।१।५५
प्रसादन १.	३।३।३८
( प्रसाधन )	
" १.	४।३।२९
" ३.	४।३।७५
प्रसाधन १.	४।३।११२

[ प्रस्नाव ]

प्रसाधन ३.	४।३।११२
" ३.	४।३।१३२
प्रसित १. २. ३.	५।४।३०
प्रसिति २.	५।२।२८
प्रसिद्ध १. २. ३.	७।४।१९
प्रसू २.	६।२।२४
प्रसूता २.	४।४।१७
प्रसूतात १ द्वि.	४।४।४७
प्रसूति २.	४।४।४१
" २.	७।२।१६
प्रसूतिका २.	४।४।१७
प्रसूतिज ३.	१।२।३९
प्रसून ३.	३।३।१८
" ३.	७।३।२४
" १. २. ३.	७।५।५५
प्रसूत १.	४।४।७७
" १. ३.	५।१।५२
प्रसूता २.	४।४।५८
प्रसूत्वन् १. २.	८।५।२९
प्रसेवक १.	३।९।१२०
" १.	४।३।६४
प्रस्कन्न १. २. ३.	३।७।२१९
प्रस्तर १.	३।२।८
" १.	३।६।९१
" १.	४।३।१६५
" १.	७।१।५१
प्रस्तार १.	३।३।२
प्रस्ताव १.	२।४।४१
प्रस्तुता २.	३।४।४९
प्रस्थ १.	५।१।५३
" १.	५।१।६३
" १.	६।५।४६
प्रस्थान ३.	५।२।१०
प्रस्फोटन ३.	४।३।६५
" ३.	४।३।६६
प्रस्मरण ३.	३।६।१७७
प्रस्त्रवण १.	३।२।४
" ३.	३।२।७
प्रस्त्राव १.	४।३।७८



[ प्रस्ताव ]

प्रस्ताव १.	४१११२०
प्रहत १. २. ३.	३१८११८
" १. २. ३.	५१४१९९
" १. २. ३.	७१४११८
प्रहर १.	२११६७
प्रहरण ३.	८१३८
प्रहसन ३.	३१९१००
प्रहसन्ती २.	३१३१८७
( प्रसहन्ती )	
प्रहस्त १.	११२१४४
" १.	४१४१७७
प्रहार १.	५१२१९९
प्रहासिन् १.	३१९१६९
प्रहि १.	४१२१७
" १.	८१९११०
प्रहित ३.	४१३१८६
" १. २. ३.	५१४१९७
प्रहृष्ट १. २. ३.	८१४११३
प्रहेलिका २.	२१३१३९
प्रांशु १. २. ३.	५१४१८१
प्राकार १.	४१३११४
प्राकारमूलिक १.	४१३११३
प्राक्तन १. २. ३.	५१४१८७
प्राक्पादरज्जु २.	३१७११३
प्राग्जालिक १ ब.	३१११२९
प्राग्योतिष १ ब.	३१११२९
प्राग्मार १.	५१२१३
प्राग्र १. २. ३.	५१४१६३
प्राग्रहर १. २. ३.	५१४१६३
प्रागाढ ३.	३१८११४४
प्राग्वंश १.	३१११५१
प्राच् १. २. ३.	५१४१९१
प्राचिका २.	२१३१२०
प्राची २.	२१११५
प्राचीन १. २. ३.	५१४१९१
प्राचीनतिलक १.	२१११२७
प्राचीनवर्हिष १.	८१११५४
प्राचीना २.	३१३१३१
प्राचीनावीत ३.	३१६१२१
प्राचीर ३.	४१३११४
प्राचेतस १.	३१६११५३

वैजयन्तीकोषः

प्राच्छ १.	३१६१२४
प्राच्य १.	३१११२२
प्राजन ३.	३१८१२९
प्राजापत्य ३.	३१६१२
" १.	३१६१८
" ३.	३१६१३६
" १.	३१६१२०७
प्राजितृ १.	३१७१३८
प्राज्ञ १.	३१६१२३४
प्राज्ञा २.	४१४१२१
प्राज्ञी २.	४१४१२१
प्राज्य १. २. ३.	५१४१८४
प्राड्विपाक १.	३१८११४
प्राण १.	११२१४८
" १.	३१२११५
" १.	३१६१२०३
" १ ब.	३१६१२०३
" १. २. ३.	५१४१६१
" १.	६१११३८
प्राणद १.	११११९
" ३.	४१४१०६
प्राणदा २.	३१८१८३
प्राणनाथ १. २. ३.	
	८१५११६
प्राणयम १.	३१६१२२९
प्राणायाम १.	३१६१२२९
प्राणिक ३.	३१६१२२
प्राणिद्युत ३.	८१३११०
प्राणिन् १.	४१४११
प्राणिफल १.	३१३१२८
प्राणिस्वन १.	२१४१३
प्रातः (-र) ४.	८१८११०
प्रातिहारिक १.	३१९१३३
" १. २. ३.	५१४१२४
प्राथमकल्पिक १.	३१६१२४
प्राहु (-स्) ४.	८१८११८
प्रादेश १.	४१४१८०
प्रादेशन ३.	३१६११९
प्राध्व १. २. ३.	६१५१४७
प्राध्वम् ४.	८१८११६
प्रान्त १.	४१३१३२

[ प्रासाद ]

प्रान्तर ३.	३१११५०
" ३.	४१३११२
प्रापणिक १.	३१८१७२
प्रापणिका २.	३१६१५०
प्राप्त १. २. ३.	५१४१९९
" १. २. ३.	५१४१०३
" १. २. ३.	५१४१०९
" १. २. ३.	६१४११०
प्रासरूप १. २. ३.	
	८१५११५
प्रासर्तु २.	४१४१८
प्रासार्थ १. २. ३.	३१९१५३
प्राप्ति २.	५१२११३
" २.	६१२१२४
प्राभृत ३.	३१७१४६
प्राय १.	४१४१५३
" १.	६१११३६
प्रायः (-स्) ४.	८१८११६
प्रायण ३.	७१३१३४
प्रायणीय १. २. ३.	
	३१६१८८
प्रार्थित १. २. ३.	
	५१४११२
" १. २. ३.	७१४११६
प्रालम्ब ३.	४१३११५५
प्रालम्बिका २.	४१३११३७
प्रालेय ३.	२१२१९
प्रावार १.	४१३१२३
मावृत १. २. ३.	
	४१३१२०
प्रावृष् २.	२१११८९
प्रावृषायणी २.	३१३१२९
" २.	८१२११३
प्रावृषेण्य १.	३१३१६०
प्रावेशनिक १.	३१११५९
प्राश्निक १. २. ३.	३१८१९
प्रास १.	३१७११६५
प्रासङ्ग १.	३१७११३३
प्रासङ्ग्य १. २. ३.	
	३१५१५८
प्रासाद १.	४१३१२९

[ प्रास्थित ]

प्रास्थित १.	२१३१६
प्राहुण १.	३१६१६८
प्राहु १.	२१११६४
प्रिय १.	३१३१३१
" १. २. ३.	३१७१४३
" १.	४१४१३७
" १. २. ३.	५१४१७०
" १. २. ३.	५१११३५
प्रियंवद १. २. ३.	५१४१४४
प्रियक १.	३१३१३९
" १.	३१३१४३
" १.	३१३१६६
" १.	३१४११७
" १.	७१११३३
प्रियङ्गु २.	३१८१५५
" ३.	३१८११७
प्रियङ्गुवाख्या २.	३१३१६६
प्रियनादिका २.	३१९१३८
प्रियापत्य १.	२१३१३१
प्रियाला २.	३१३१८१
प्रियालु १.	३१३१५७
प्रियैलिका २.	३१८१४६
प्रीत १. २. ३.	५१४१९९
प्रीति २.	६१२१२५
प्रुव १.	५१३१८
प्रुत्ता २.	६१२१२५
प्रुङ्ग १.	३१७१३६
" १.	३१९१३
" १.	४१३१६०
प्रुङ्गित १. २. ३.	५१४१९५
" १. २. ३.	५१४१०३
प्रुङ्गोल ३.	३१७१३६
प्रुङ्गालन ३.	३१७१३६
प्रुङ्गोलि २.	८१९१२७
प्रुङ्गोलित १.	५१४१०३
प्रुजन ३.	५१२१३२
प्रुत १.	११२१३८
" १.	११२१३८
" १. २. ३.	६१५१५२
प्रुतदाहामि १.	११२१२२
प्रुताल १.	३१३१७७

शब्दानुक्रमणिका

प्रेत्य ४.	८१८११५
प्रेमन् १. ३.	३१६१८६
" १. २.	५१५१५१
प्रेम्य १.	३१९१२
प्रेष १.	६१११३३
प्रेक्षण ३.	३१६१९४
प्रेक्षणयासादन ३.	
	३१६१८४
प्रोत १. २. ३.	३१९१२२
प्रोथ १. ३.	३१७१०९
प्रोथिन् २.	३१७१९०
प्रोन्द्र १.	५१३१९
प्रोष्टपद १. २ ब.	२१११४१
प्रोष्टपदा २. ४.	८१९१५७
प्रोष्टी २.	४१११४४
प्रोह १.	३१७१७६
प्रौढ १. २. ३.	५१४११७
प्रौढि २.	३१६१६६
प्रौष्टपद १.	२११८५
प्रौष्टपदी २.	२११७६
प्लक्ष १.	३१३१२७
" १.	३१३१२८
प्लक्षक १.	३१३१५९
प्लक्षद्वीप १.	३१११११
प्लव १.	२१३१३३
" ३.	३१३१२०१
" १.	३१९१५४
" १.	४१११४७
" १.	४१२१६६
" १.	४१४१७१
" १.	५१२१२२
" १.	६१२१३७
प्लवग १.	८१११३२
प्लवङ्ग १.	८१११३२
प्लवङ्गम १.	८१११३२
प्लवन ३.	३१३१२०१
प्लव ३.	३१३१२२
प्लविन् १.	२१३११
" १.	३१४१११
प्लिहन् १.	४१४११३
प्लुत १. १. ३.	३१७११८

[ फलिनी ]

प्लुन १. २. ३.	
	३१७१२३
प्लुषि १.	२१३१४८
प्लसात १. २. ३.	
	५१४१०७
फ	
फक्कि १.	३१६१३३
( पक्कि )	
फण १. २.	४१११२१
फणिन् १.	३१३१४९
" १.	४१११५
फणिर्जक १.	३१३१२०
फरुण्ड १.	३१३१२०५
" १.	३१३१२०७
फल ३.	३१३१२०
" १.	३१३१८३
" ३.	३१७१८६
" १.	३१७१९२
" १.	३१८१७०
" ३. २.	६१५१५२
" ३. २.	६१५१५३
फलक ३. २.	३१७१९७
" १.	३१८१४५
" १. २.	७१५१६०
" १. २.	८१९१२७
फलकिन् १.	४१११४३
फलकी २.	८१९१२७
फलकृष्ण १.	३१३१८३
फलपाककृष्ण १.	३१३१८३
फलपाकान्ता २.	३१३१२४
फलस १.	५१३१४०
फला २.	३१३१२६
" २.	३१३१६१
फलाङ्कुरा २.	३१८१३५
फलाध्यक्ष १.	३१३१४३
फलाशन १.	२१३१२५
फलिक १.	३१२१२
फलित १. २. ३.	३१३१८
फलित् १. २. ३.	३१३१८
फलित् १. २. ३.	३१३१८
फलित्नी २.	३१३१६६



[ फलिनी ]

वैजयन्तीकोषः

[ बलयु ]

बलरिपु ]

शब्दानुक्रमिका

[ बाला ]

फलिनी २.	३३१५८	फेरुण्ड १.	३३१३८	बन्धुता २.	५११९	बलरिपु १.	११२२	बहिर्गीत ३.	३१११०	बाडब ३.	५११९
" २.	३३१२०३	फेरुविज्ञा २.	३३११३७	बन्धुर १. २. ३.	५११८३	बलवत् ४.	८१८४	बहिर्द्वार ३.	४३१४२	बाडबेय १.	३३१५३
फली २.	३३१६६	फेला २.	४३११०६	" १. २. ३.	७११२१	बला २.	३३१६६	बहिर्द्वारप्रकोष्ठ १.		बाडव्य ३.	५११७
" २.	३३११५८	फेलुक १.	४३१६३	बन्धुरा २.	३३११३२	" २.	३३११२७		४३१४६	बाड १. २. ३.	५११३२
" २.	३३११९८			बन्धुल १.	४३१४४	" २.	३३१८७६	बहिर्कर्ष १.	३३१७०	" १. २. ३.	६११५५
" २.	६१५५३	ब		बन्धूक १.	३३११८५	" २.	३३१११४	" १.	३३१७८	बाडम् ४.	८१२६
फलीकृत १.	४३१६६	बक १.	२३११०	बन्धु १.	११११०	" २.	३३११०७	बहु १.	११२२७	बाण १.	१११५२
फलीहस्त १.	३३१७१	" १.	३३११३	" १.	४३१२८	बलाका २.	२३११०	" १. २. ३.	५११८०	" १.	३३३३९
फलेग्राहि १. २. ३.	३३३१८	" १. २. ३.	३३११३	" १. २. ३.	४३११७७	बलाङ्ग १.	३३१३६	" १. २. ३.	५११८४	" १.	३३१७७९
फलेपाकिन् १.	३३१५९	बकपुष्प १.	३३११९३	" १.	५३११८	बलात्कार १.	३३१२०९	" १. २. ३.	६१११०	" १.	३३१८३
फलेरुह १.	३३१२१६	बकोट १.	२३११०	बर्कर १.	३३१७३	बलारोहा २.	३३१८२	बहुकर १. २. ३.	३३१६७	बाणाभ्यास १.	३३१९५
फलेरुहा २.	३३१९०	वडबा २.	३३११७७	बर्बर १.	३३१५०	बलास १.	४३१२१	बहुक्षीरा २.	३३१४५	बादर १.	४३११७७
फलोदय २.	१११११	वडबागण १.	५१११९	" १.	४३१९८	बलि १.	३३१४५	बहुगर्ह्यवाच् १. २. ३.		बाधा ३.	६१२२५
फल्गु २.	३३११११	वडबापति १.	३३१६६	" १. २. ३.	५३१२२	" १. २.	३३११३८		५३१४६	बान्धकिनेय १.	४३१४४
" १. २. ३.	५३१७६	वडबामुख १.	८११५५	बर्ह १.	२३३३९	" १.	६११३९	बहुजाली २.	३३१६१	बान्धव	४३१५१
फल्गुनाल १.	२११८३	वत ४.	८१८२६	" ३.	३३११७	बलिक १. २. ३.		बहुतिथ १. २. ३.	५१११९	बाभ्रवी २.	१११५९
फल्गुनी २.	२११४३	वदर १.	३३१९९	" ३.	६३१२२	बलिकण्टक १.	११११९	बहुपाद् १.	३३१२७	बार्हत ३.	३३१२२
फाणित ३.	३३११३४	वदरी १.	३३१८७	बर्हचन्द्रक १.	२३३३९	बलिन् १.	१११२२	बहुप्रज १.	३३१६	बाल ३.	३३१२०२
फाण्ट १.	४३११४१	" २.	३३११४८	बर्हिण १.	२३३३६	" १.	१११२३	बहुरूप १.	१११७७	" १.	३३१६६
" ३.	५३१४	वद्ध ३.	५३१३०	" ३.	३३११९	" १.	१११२३	" १.	३३११११	" १.	५३१७
फारी ३.	३३१८५	" १. २. ३.	५३१६७	बर्हिध्वजा २.	१११६०	" १.	३३११६५	बहुल ३.	३३१२४	" १. २. ३.	५३१२
फाल १.	३३१२८	" १. २. ३.	५३१९७	बर्हिन् १.	२३३३६	" १.	३३११८९	" १. २. ३.	५३१८०	" १. २. ३.	६३१११
" ३.	३३११०६	बद्धदर्भ १.	३३१२४	बर्हिपुष्प ३.	३३१२२	" १.	३३१२२१	" १. २. ३.	५३१८४	" १. २. ३.	६३१५७
" १. २. ३.	४३१११७	बद्धभूमि २.	४३३३२	बर्हिमुख १.	१११४	" १. २. ३.		" १. २. ३.	७३१६१	बालक १.	३३१३३
" १.	६३१३९	बद्धम्बु ३.	४३२९	बर्हिष्ठ ३.	३३१२०२	" १.	३३१५१	बहुला २.	३३१४२	" ३.	३३११४०
फालगलालेप १.	३३१६७	बन्दी २.	३३१५७	बर्हिस् १.	६३१५३	" १.	३३११०	बहुलीकृत १. २. ३.		बालगर्भिणी २.	३३१४६
फालाकली २.	३३१३२	बन्ध १.	३३१७०	बल १.	१११२४	" १.	४३११०		३३१६७	बालचूतक १.	५३३३५
फाल्गुन १.	२३१८२	" १.	३३१३१	" ३.	३३१३	बलिपुष्ट १.	२३११६	बहुवक्र १.	३३१५४	बालजात ३.	३३१४०
फाल्गुनिक १.	२३१८२	" १.	४३१५३	" ३.	३३१७५	बलिभुज १.	२३११८	बहुवार १.	३३१५५	बालतृण ३.	३३१२५
फाल्गुनी २.	२३१७५	" १.	६३१३९	" ३.	३३१२१०	बलिश ३.	३३१६०	बहुव्यय १. २. ३.		बालनायिका २.	३३१६०
फुल्ल १. २. ३.	३३११९	बन्धकी २.	३३१३५	" १.	३३१५३	" ३.	३३१४२		५३१५८	बालपत्र १.	३३१६३
" १. २. ३.	३३१७८	" २.	४३११०	" ३.	३३१११४	बलिसदमन् ३.	४३११	बहुसारक १.	३३१२८	बालपुष्कल १.	३३१८०
" १.	४३१११	" २.	७३११७	" ३.	४३११०९	बलीवर्द १.	३३१५३	बहुसुता २.	३३१२४	बालभीरु १.	३३३३०
फुल्लक १.	४३१३९	बन्धन ३.	३३१२०	" १. २. ३.	६३१५४	बलबज १. ब.	३३१२३०	बहुसुति २.	३३१५०	बालमूर्षिका २.	४३१३२
फुल्लरीक १.	४३१५	" ३.	३३१२१	बलक १.	३३१९९	बलकयणी २.	३३१४८	बहुसूतिका २.	४३१२०	बालवत्स १.	२३३२३
फेन १.	४३११३	" ३.	५३१२८	" ३.	४३१९९	बस्त १.	३३१६२	बहुसूदन ३.	३३१२४	बालशाकट १. २. ३.	
फेनक १.	४३१७४	बन्धनी २.	३३१३०	बलकाली २.	३३१८२	बहल १. २. ३.	५३१८४	बहुस्वन १.	२३३२२		३३१२१
फेनिल १.	३३३३२	बन्धाकि १.	३३११२	बलदेव १.	१११२२	" १. २. ३.	५३१८४	बहुदित ३.	२३३३९	बालशाकिन १. २. ३.	
" १. २. ३.	७३१६०	बन्धु १.	१११२९	बलभद्र १.	१११२३	" १. २. ३.	७३१२१	बहेटक १.	३३११७६		३३१२१
फेरव १.	३३३३८	" १.	४३१५१	बलभद्रिका २.	३३३१०९	बहिः-(स्) ४.	८३११४	बाडब १.	१३२२१	वालहस्त १.	३३३७४
फेरु १.	३३३३८	बन्धुजीव १.	३३३१८५	बलयु २.	३३३१११	बहिर्गर् १.	३३१५७	" १.	३३३११	बाला २.	३३३१८५



[ बाला ]

बाला २.	३१३२१२	विम्बसारक १. ३१३१८५
बालाङ्ग १.	५१३१५	( विम्बसारक )
बालिश १. २. ३.	७१३२०	विम्बोष्ठी २. ३१३१४७
बालेय १.	३१३६५	विल ३. ४१३१२
बाल्य ३.	४१३५४	विलेशय १. ८१३१८
बाष्प १.	६१३४०	विलेशया २. ३१३२६
बाष्पी १.	३१८१३२	विलौकस् १. ४१३१६
बाह १. २. ३.	५१३२०	विल्व १. ३१३३०
बाहा २.	४१३७१	१. ५१३५१
बाहु १. २.	४१३७१	विल्वक १. ४१३४७
बाहुज १.	३१७११	विस ३. ४१३४३
बाहुदन्तेय १.	११२१७	विसकण्टिका २. २१३१०
बाहुदा २.	४१३२६	विसखण्ड ३. ४१३३९
बाहुमूल ३.	४१३६९	विसनाभिज ३. ४१३३८
बाहुयुद्ध ३.	३१७२०७	विसप्रसून ३. ४१३३८
बाहुरक्षा २.	३१७१५५	विसिनी २. ४१३४३
बाहुल १.	२११८६	विसिर ३. ३१८१२०
३.	३१७१५५	बीज ३. २११८६
बाहुलेय १.	८१३१५	३. ४१३१११
बाह्यनृत्त ३.	३१७७३	३. ६१३२३
बाह्यलिङ्गिन् १.	३१६२३८	बीजकोश १. ४१३४५
बाह्यिक १ व.	३११२७	बीजपुष्पिका २. ३१८१७
बाह्यीक १ व.	३११२७	बीजपूर १. ३१३३३
१.	३१७१५५	बीजवर १. ३१८३५
३.	३१८११३	बीजसू २. ३११३४
३.	७३३२६	बीजाकृत १. २. ३. ३१८२३
बिडाल १.	३१३७१	बीजिन् १. ४१३२९
बिडालक १.	४१३९५	बीज्य १. ४१३५०
बिडौजस् १.	११३१४	बीभत्स १. ३१९७५
बिन्दु १.	२१३८	१. ३१९७७
२.	४१३२०	१. २. ३. ३१९७८
१.	८१३१०	१. २. ३. ७३३२१
बिन्दुक १.	५१३३८	बुक्कन ३. २१३१६
३.	५१३४९	बुद्ध १. ११३३१
बिन्दुभेद १.	३१६२२३	१. ११३३२
बिम्बोक १.	३१९९४	१. २. ३. ५१३१०१
बिम्बेण १.	३१५४९	बुद्धि २. ३१६१६३
बिम्ब १.	४१३२९	बुद्धिमत १. २१३२७
१. ३.	६१५५५	बुद्धिबुद्ध १. ४१३१३
बिम्बसारक ३.	३१७१७५	बुध १. २१३३२

वैजयन्तीकोषः

[ बृहन्नाडु ]

बुध १.	३१६२३२
बुधा २.	३१३१२५
२.	३१६१६३
२.	३१८१९४
बुधित १. २. ३.	५१३१०१
बुधन १.	३१३१२
बुन्दिर ३.	४३११८
बुभुक्षा २.	३१६१८२
बुभुक्षु १. २. ३.	५१३३६
बुम्बिका २.	४३३७०
बुम्बी २.	४३३७०
बुरुल १.	३१५३०
बुलि २.	४१३६०
२.	४१३६१
बुलकी २.	४१३५५
बुशाली २.	४३३२६
( बुशाली )	
बुषा २.	३१९१७
बुस १.	३१८६४
३.	३१८१४२
बुसा २.	३१६१७
२.	३१९१०७
बुस्तक १. २. ३.	३१३१५५
बृंहित ३.	२१३७
बृन्द ३.	५१३३
३.	५१३२८
३.	५१३३०
३.	५१३३१
बृन्दाक १.	११३१३
बृन्दारक १. २. ३.	८१३१८
बृहच्छ्रुद १.	३१३२०९
बृहत् १. २. ३.	५१३८०
बृहत्तिका २.	४३३१२३
बृहती २.	३१३१०४
२.	३१९११९
२.	७३३१७
बृहत्कर्कोटक १.	३१३१६५
बृहद्गृह १ व.	३१३३६
बृहन्नाडु १.	११३१४

[ बृहस्पति ]

बृहस्पति १.	२११३३
बृहाणक १.	५११५४
बेन १.	३१५३४
बेर ३.	३१९२१
बोक्काण १.	३१७११५
बोध १. २. ३.	५१३१०१
बोधकर १.	३१७३०
बोधन ३.	३१६१६४
बोधनीया २.	३१८१९४
बोधान १.	३१६२२
बोधि १.	६१५५७
२.	८१९१५
बोधिसत्त्व १.	११३३२
बोधी २.	५१३३७
बोल १.	३१२९५
१.	५३३१६
१. २. ३.	६१५५६
बोसर १.	५३३३४
ब्रसी २.	३१६१४९
ब्रह्मगर्भ ९.	१११५६
ब्रह्मघोष १.	४१३२३
ब्रह्मचर्य ३.	३१६१४४
३.	३१६२०९
ब्रह्मचारिणी २.	८१५३०
ब्रह्मचारिन् १.	१११५६
१.	३१६१७
१.	८१५३०
ब्रह्मजटा २.	३१३१२२
ब्रह्मदण्ड ३.	३१७१७५
ब्रह्मदण्डी २.	३१३१००
ब्रह्मदर्भा २.	३१८१०२
ब्रह्मधारा २.	४३३१०
ब्रह्मन् १.	११३१६
१.	३१५३
३.	३१६२७
१.	३१६७९
३.	३१६१६१
१.	३१६१६३
१.	६१५१०३
१.	८१९३०
ब्रह्मनाभ १.	११११५

शब्दानुक्रमणिका

ब्रह्मपुत्र १ व.	२३३३७
१.	४१३२४
१.	८१३३५
ब्रह्मवन्धु १. २. ३.	८१३१०
ब्रह्मविन्दु ३.	३१६२६
ब्रह्मभाव १.	३१६२३७
ब्रह्मभूय ३.	३१६२३७
ब्रह्ममेखल १.	३१३२२९
ब्रह्मरात्रिक १.	३१६१५५
ब्रह्मरीति २.	३१२२६
ब्रह्मलोक १.	३१६२०८
ब्रह्मवर्चस ३.	३१६११६
ब्रह्मवालुक ३.	४१३२३
ब्रह्मविष्णुमहेश्वर १ व.	१११५
ब्रह्मवृत्त १.	३३३२९
१.	८१६१९
ब्रह्मवेदि २.	३१३२३
ब्रह्मसंज्ञ १.	३३३८०
ब्रह्मसू १.	११३२९
ब्रह्मसूत्र ३.	३१६२०
ब्रह्मस्थली २.	४३३१०
ब्रह्महत्या २.	८१९१७
ब्रह्माञ्जलि १.	३१६२६
ब्रह्मी २.	३३३१४४
ब्रह्मोद्य ३.	८१९१६
ब्रह्मौदनाभि १.	११२२६
ब्राह्म १.	२११६७
ब्राह्मण १.	३१६११
१.	३१६३३
१. २. ३.	७१५६०
ब्राह्मणव्रत १. २. ३.	३१६१०
ब्राह्मणयष्टिका २.	३३३१००
ब्राह्मणी २.	३१२२७
२.	४१३२९
२.	४१३३६
१.	७३३२५
ब्राह्मण्य ३.	३१६२२

[ भट ]

ब्राह्मी २.	११११९
२.	१११६४
२.	२११६
२.	३३३१४४
भ	
भ ३.	२१३३८
भक्त ३.	४३३७५
१. २. ३.	६१५६०
भक्तमण्डक १. ३.	४३३७८
भक्ति २.	३१६३६
२.	६१२२६
भक्तक १. २. ३.	५१३५०
भक्तकार १. २. ३.	४३३९२
भक्तन ३.	३१९५२
३.	४३३१०४
भक्तणी ३.	३१६३०
भक्तित १. २. ३.	५१३१०८
भग ३.	४१३६१
१. ३.	६१५५८
भगनेत्रान्तक १.	११३३३
भगन्दर १.	४१३३०
भगवत् १. २. ३.	८१५३१
१. २. ३.	८१९३६
भगिनी २.	४१३२६
भगिनीपति १.	४१३३८
भगिनीभ्रातृ १.	४१३४७
भग्न १. २. ३.	३१७१४८
भग्नस्थिवन्ध १.	४१३३९
भग्न १.	४१३४४
भग्न २.	५१३३४
भग्न १. २. ३.	७३३२१
भग्न १. २. ३.	३१८२०
भजमान १. २. ३.	३१३१०३
भजना २.	२१३२६
भजिका ३.	३३३१००
भट १.	३१५९
( नट )	

( १०४ )

( १०५ )



[ भट ]

वैजयन्तीकोषः

[ भाण ]

भट १.	३१७१३९	भन्दना २.	२१११९	भव १.	६११४१
भटित्र १. २. ३.	४३१९४	भम्भराली २.	२३१४४	भवत् १. २. ३.	८११४६
भटोद्योग १.	३१७२०२	भम्भा २.	३१९१३३	भवन १.	३१४७०
भट्ट १. २. ३.	८१९४६	भय ३.	३६१८५	" ३.	४३१७७
भट्टरक १. २. ३.	८१९४६	भयङ्कर १. २. ३.	३१९७८	भविक १. २. ३.	५४१४२
भट्टारक १.	३१९१०३	भयद्रुत १. २. ३.	३१७२१८	भवितव्यता २.	३६१८९
" १. २. ३.	८१९४६	भयन ३.	३६१८५	भवित् १. २. ३.	५४१४१
भट्टारिका २.	३१९१०४	भयानक १.	३१९७५	भविल १. २. ३.	७५१६२
भट्टिनी २.	३१९१०४	" १.	३१९७७	भविल्ल १. २. ३.	५४१४१
भण्डन ३.	७३१२६	" १. २. ३.	३१९७८	भव्य १.	३३३३७
भण्डाकी ३.	३३३१०२	भर १.	५१२३	" १. २. ३.	५४१४२
भण्डिल १.	३३३७२	" १.	६११४१	" १. २. ३.	६११४१
भण्डिरी २.	३३३१४५	" १.	६११४२	भषण ३.	२१४६
भदन्त १.	३१९१०७	भरण ३.	३१९५	" १.	३३३६८
भद्र १.	३३३६२	भरणी २.	२११४१	भषित ३.	२१४६
" १. २. ३.	५४१८०	भरण्य ३.	३१९५	भसत् १.	२३३२
" १. २. ३.	५४१४३	भरत १.	११२२६	भसद् २.	६१२२६
" १. २. ३.	६५१६०	" १.	३३३७८	भसल १.	२३३४२
" ३.	८१९२४	" १.	३१९६२	भसित ३.	११२३३
भद्रकाली २.	१११६१	भरथ १.	११२१९	भस्त्रा २.	३१९१७
भद्रकुम्भ १.	४३३६१	भरद्वाज १.	२३३१९	भस्मगन्धिनी २.	३१८९५
भद्रदारु ३.	३३३७१	भरित १. २. ३.	५४१८६	भस्मगर्भा २.	३३३९२
भद्रपदा १. २. ३.	२११४१	भरुज १.	३३३३७	भस्मन् ३.	११२३३
भद्रपणिका २.	३३३५८	भरुटा २.	४३३८६	भा २.	२११२२
भद्रमन्द १.	३३३५४	भर्ग १.	१११४०	भाग १.	४४१५५
भद्रमन्दमृग १.	३३३६४	भर्तृ १.	४४३३७	" १.	५१२३
भद्रमुक्त १.	३३३२२८	भर्तृदारक १.	३१९१०५	" १.	६११४१
भद्रमुस्तक १.	३३३१९९	भर्तृवारिका २.	३१९१०४	भागधेय १.	३३३४५
भद्रमृग १.	३३३६४	भर्त्सन ३.	२३३३४	" १. २. ३.	८१९१९
भद्रयव १. ३.	३३३७३	भर्मन् ३.	३१९५	भागवत १.	३३३१०५
भद्रलक्षण ३.	३३३६३	" ३.	६३३२३	" १.	३३३१०५
भद्रवदन १.	१११२४	भर्मिन् १.	३१९११	भागिनेय १.	४४१४१
भद्रश्री १.	३३३११२	भलुह १.	३३३७०	मागीरथी २.	४१२२४
भद्रसुत १.	३३३१५९	भल्ल १.	३३३१८२	भाग्य ३.	३३३१८९
भद्रा २.	३३३१३९	भल्लाट १.	३३३७	" ३.	६३३२४
भद्राकरण ३.	३३३१४	भल्लातक १. २. ३.	३३३९५	भाङ्गीनी १. २. ३.	३३३२०
भद्राङ्ग १.	१११२४	भल्लुक १.	३३३४०	भाजन ३.	४३३६२
भद्राश्व ३.	३३३१७	भल्लुक १.	३३३६८	भाङ्गी २.	३३३१००
भद्रासन ३.	३३३१५	" १.	३३३४७	भाण १.	३३३१००
भद्रेश्वर १.	१११३९				

( १०६ )

[ भाण्ड ]

शब्दानुक्रमणिका

[ भुवन ]

भाण्ड ३.	३३३४४	भावज्ञा २.	३३३६७	भिन्नकृत ३.	३३३५६
" ३.	४३३६२	भावना २.	४३३१५८	भिया २.	३३३१८५
" ३.	६३३२३	" २.	८१९४	भिल्ल १.	३३३४६
भाण्डागारिक १.	३३३२३	भावित १. २. ३.	५४१९९	भिषज् १. २. ३.	४४१४३
भाण्डी २.	३३३१४५	" १. २. ३.	८१९२२	भिस्सा २.	४३३७६
भातु १.	२१११०	भावुक १. २. ३.	५४१४१	भिस्सिता २.	४३३७७
भानु १.	२१११०	भाषणी २.	२३३५	भी २.	३३३१८५
" १.	२११५५	भाषा २.	१११९	भीत १. २. ३.	५४११८
" १.	६११४०	" २.	३३३१६	भीति २.	३३३१८५
भाद्र १.	२११८५	" २.	३३३१०२	" २.	३३३७६
भाद्रपद १.	२११८५	भास १.	२३३३२	भीम १.	१११४३
भामिनी २.	४४१५	भासन्त १.	७११५८	" १. २. ३.	३३३७८
" २.	४४११०	भासुर १. २. ३.	५४१४२	भीमर १.	३३३२६
भार १.	५११६१	भास्कर १.	२१११२	भीरु १.	३३३७८
" १.	६११४१	" १.	७११५८	" २.	३३३१६६
भारत ३.	३३१५	भास्वत् १.	२१११२	" २.	४४१५
भारती २.	१११९	" १. २. ३.	६५१५९	" १. २. ३.	५४११८
" २.	३३३११९	भास्वर १ व.	१३३८	भीरुक १. २. ३.	५४११८
" २.	३३३१०१	भित्ता २.	३३३१५	भीरुचेतस् १.	३३३११
" २.	३३३१०२	" २.	३३३१२१	भीरुपर्णी २.	३३३१४२
भारद्वाज ३.	४४११०९	" २.	६१२२६	भीरुबाल १.	३३३३०
भारद्वाजी २.	३३३९९	भिक्षाचार १. २. ३.	३३३१७	भीलुक १. २. ३.	५४११८
भारयष्टि २.	३३३९६	" १.	३३३१२६	भीषण १. २. ३.	३३३७९
भारवह १. २. ३.	३३३२२२	" १.	३३३१६०	भीष्म १. २. ३.	३३३७८
भारवाह १.	३३३९६	" १.	३३३१२७	भुक्त १. २. ३.	५४११०८
भारसह १.	३३३९६	भिक्षुकी २.	४४११०	भुम्भ १. २. ३.	५४११२४
भारिक १.	३३३९६	भिक्षुलोचक ३.	३३३५	भुज १.	३३३४५
भारित ३.	५११६२	भिक्षुसङ्घाटी २.	४३३१२८	" १.	३३३१९३
भारुष १.	३३३५८	भिक्षुपाल १.	३३३१६६	" १. २.	४४३७१
" १.	३३३१०३	भित्त ३.	४४१५६	भुजग १.	४४१५
भार्गव १.	२११३४	भित्तिका २.	४३३३७	भुजगाक्षय ३.	३३३२९
भार्गवी २.	१११३६	" २.	७१२१८	भुजङ्ग १.	४४१५
" २.	३३३२३३	भिदा २.	५१२४१	" १.	४४३३९
भार्गी २.	३३३८१	भिदु १.	११२१३	भुजङ्गम १.	४४१५
भार्या २.	४४३३४	भिदुर १.	११२१३	भुजङ्गारि १.	३३३३७
भालुक १.	३३३३३	" १.	३३३८३	भुजि १.	११२१८
भाव १.	३३३१७४	भिष्ट १.	४१२२९	भुजिष्य १.	३३३१२
" १.	३३३८०	भिष्ट १. २. ३.	५४१११	" १.	३३३४४
" १.	३३३९७	" १. २. ३.	६४१११	" १. २. ३.	७४३२२
" १.	६११४३	भिक्षुम्भ १.	३३३९४	भुरण्यु १.	७११५९

( १०७ )



[ भुवन ]

भुवन ३.	४११२
" ३.	४२१२
भुवन्य १.	७११५९
भुवस् १. ४.	३११२०६
भुसुण्डी १.	३१७१७०
( भुसुण्डी )	
भू २.	३११४
" २.	८२११६
" २.	८६१४
भूधन १.	४११५३
भूत १. ३.	१११२
" ३.	३११२०६
" ३.	४१११
" १. २. ३.	५११२९
" १. २. ३.	६११५९
" १. ३.	८११३०
भूतग्राम १.	५१११७
भूतग्री ३.	३१११२१
भूतदमनी २.	१११४९
भूतधात्री २.	३११२
भूतपुष्प १.	३११६९
भूतफल १.	३१११६६
भूतलोद्भव ३.	३१२३०
भूतवास १.	३१११७६
भूतसम्भव १.	२११९४
भूतसारी २.	३१८८२
भूतात्मन् १.	७११६०
भूतापुत्र १.	१११२
भूति २.	११२३३
" २.	४११८७
" २.	६१२२७
" २.	८१२३४
भूतिक ३.	७१२२६
भूतेश १.	१११४३
भूतेष्टा २.	२११७०
" २.	२११८०
भूदार १.	३११६
भूदेष १.	३१६१
भूधर १.	३१२१
भूनामन् २.	३१११७
भूप १.	३१७१

वैजयन्तीकोषः

भूतदी २.	३१३१८३
भूतृषा १.	३१३२१९
भूभुज् १.	३१७१
भूभृत्सभ ३.	८१२२०
भूमि २.	३१११
" २.	६१२२७
भूमिकन्दर ३.	३१३१५३
( भूमिकन्दक )	
भूमिका २.	३१९१६८
भूमिकागत १.	३१९१६८
भूमिकूरमाण्ड १.	
" ३.	३१३१९५
भूमिमयी २.	२११२३
भूमिलाभ १.	३१३२०१
भूमिस्पृश १	३१८१
" १.	७११५९
भूयिष्ठ १. २. ३.	५११८५
भूरद १.	३१३१३३
भूरि १. ३.	३१२२०
" १. २. ३.	५११८५
भूरिमाय १.	३११३८
भूरिलोह ३.	३१२२९
भूरिश्रवस् १.	११२१५
भूरूह १.	३१३१४
भूरूह १.	३१३१४
भूर्ज १.	३१३१४५
भूर्जषत्र १.	३१३१४५
भूलता २.	४११५९
भूलवण २.	३१८१२२
भूवल्लर ३.	३१३१५३
भूशक्र १.	३१११
भूश्वभ्र ३.	४११३
भूषण ३.	४१३१३३
भूष्ण १. २. ३.	५११४१
भूस्त्वण ३.	३१३१३४
भूस्पृश १.	६११४२
भूस्फोट ३.	३१३१५३
भृकुंस १.	३१९१६७
भृकुटि २.	३१९१९१
भृगु १.	३१२१६
भृङ्ग १.	२१३२७

[ भेल ]

भृङ्ग १.	२१३१४२
" ३.	३१८१०४
" ३.	३१८१०७
भृङ्गराज ३.	३१३१०७
" १.	८१३३६
भृङ्गरिडि १.	१११५२
भृङ्गा २.	३१८१५१
भृङ्गाण १.	२१३१४२
भृङ्गार १.	४१३१०८
भृङ्गारी २.	२१३१४७
भृङ्गिन् १.	१११५२
भृङ्गिरिडि १.	१११५२
भृङ्गकण्ठ १.	३१५५३
" १.	३१५६६
भृङ्गकण्ठक १.	३१५१००
भृत्तक १. २. ३.	३१९१५
भृत्ति १.	३१९१५
भृत्तिभुज् १. २. ३.	३१९१५
भृत्त्य १.	३१९१२
भृत्त्या २.	३१९१६
भृत्थ १.	४११५०
भृश १. २. ३.	५११३३१
भृशकोपन १. २. ३.	
भृशङ्गत १. २. ३.	
भृशङ्गत १. २. ३.	
भृष्ट १. २. ३.	४१३१९३
भृष्टयव १.	४१३१७१
भेक १.	३१५२९
" १.	४११४७
" १. २. ३.	६१५५९
भेटक १.	३१८१६९
भेद १.	३१७१३३
" १.	६११४२
भेदितं १. २. ३.	५१११११
भेन १.	६११४२
भेय १.	५१२१२
भेरी २.	३१९१३३
भेरीनाद १.	२११११
भेल १.	३११३३
" १.	४१२१६

[ भेल ]

भेल १. २. ३.	६१५५७
भेलन ३.	५१२१२
भेलुक १.	१११५२
भेषज ३.	४१११४१
भैक्ष ३.	३१८१२
" ३.	५१११३
भैमरथी २.	२११६१
भैरव १. २. ३.	३१९१७९
" १.	८११६०
भैषज्य ३.	४१११४१
भोः ( -स् ) ४.	८१८१२
भोग १.	४११२१
" १.	६११४४
भोगभूमि २.	१११११
भोगवती २.	४१११४
" २.	४१२२५
भोगिन् १. २. ३.	७११३१
भीगिनी २.	७११३२
भोज १ ब.	३११३७
" १.	३१५६२
भोजन ३.	४१३१०२
भोजनीय ३.	३१८११९
भोज्य ३.	३१३१६२
भोल १.	३१२२१
भौम १.	११२३२
भौरिक १ ब.	३११३१
" १.	३१७२१
भ्रकुंस १.	३१९१६७
भ्रकुञ्ज १.	३१५१५
भ्रकुटि २.	३१९१९१
भ्रम १.	३१६१७७
" १.	३१९१८८
" १.	४१२११
" १.	५१२१०
भ्रमन्त १.	५१२१५
( गृहकोल्हक )	
भ्रमर १.	२१३१४२
" १. २. ३.	७१५६२
भ्रमरक १.	३१८१३५
" १.	४११९९
भ्रमरालक १.	४११९९

शब्दानुक्रमणिका

भ्रमरेष्ट १.	८११५९
भ्रमि २.	५१२१०
भ्रष १.	५१११०२
भ्रष्ट १. २. ३.	५१११०२
भ्राज् १.	११३११
भ्राणञ्जक	३१५२५
भ्रातृ १.	४११३१
" १.	४११४७
भ्रातृव्य १.	७११५९
भ्रात्र १.	३१८१४१
भ्रात्रीय १.	४११४२
भ्रान्ति २.	५१२१०
भ्रामकादि १.	३१२३८
भ्रामर ३.	३१८१३५
भ्रामरी २.	१११५९
भ्राष्ट्र १.	५१२५६
भ्रुकुंस १.	३१९१६७
भ्रुकुट १.	३१९१६७
भ्रुकुटि २.	३१९१९१
भ्रू २.	४११९६
" २.	८१९१२
भ्रुकुंस १.	३१९१६७
भ्रुकुटि २.	३१९१९१
भ्रूण १.	६११४०
भ्रूणि २.	४१२२१
भ्रूण १.	३१५१५
भ्रूणक १.	३१५३१
म	
मक १.	३१५२९
मकर १.	११२१६०
" १.	४११५१
" १.	८१६१३३
" १.	८१६१५५
मकरध्वज १.	१११२७
मकरन्द १.	३१३१९
मकरवाहन १.	११२४५
मकरालय १.	४१२११
मकुट १. ३.	४१३१३५
मक्षण १.	३१७१६७
मक्षिका २.	२१३१४४
मक्षुण ३.	५११४८

[ मञ्जूषा ]

मख १.	३१६१८२
मगध १ ब.	३११३१
मघवत् १.	११२१२
मघा १ ब.	२११४३
मङ्क १.	४११२६
मङ्कश १.	३१५७०
मङ्कु ४.	८१८११
मङ्ग १. ३.	३१२१७
मङ्गल १.	२११३१
" १.	५१३१८
मङ्गलध्वनि १.	३१६१५७
मङ्गलमालिका २.	
मङ्गलमालिका २.	३१६१५७
मङ्गलाह्निक ३.	३१६१५८
मङ्गल्य १.	३१३३०
" ३.	३१८१४०
" ३.	३१८१४९
" ३.	४१३११४
मङ्गल्या २.	३१३१९८
" ३.	३१८१०८
" २.	५१३१५८
मङ्गिनी २.	४१२१५
मचर्चिका २.	८१९१४२
मज्ज १.	४१११०
मज्जा २.	३१३१४
" २.	४१११०
मज्जाकर ३.	४१११०९
मञ्च १.	४१३३२
मञ्चक १.	४१३१६४
मञ्जन ३.	३१५२४
मञ्जरि २.	३१३२०
मञ्जरी २.	३१३११९
मञ्जरीक १.	३१३१२०
मञ्जिष्ठा २.	३१३१३५
मञ्जी २.	३१३२०
" २.	३१४६२
मञ्जीर १. ३.	४१३१४५
मञ्जु १. २. ३.	५११३३४
मञ्जुल १. २. ३.	
मञ्जूषा २.	४१३१६३



[ मञ्जूषा ]

मञ्जूषा २.	७२११
मट १.	३१५१८
मटची २.	२१२७
मठ १.	४३३२७
" १. २. ३.	८१३१९
मठर १.	५३३३
मठी २.	८१३१९
मट्टिका २.	३६५१
( मट्टिका, मट्टिका )	
मट्टु १.	३११३५
मट्टुकैरिक १.	३५३३१
मणि १. २.	३२३३६
" १. २.	४३३६२
" १. २.	४३३७३
" १. २.	६५६२
मणिक १.	४३३५६
मणिकण्ठ १.	२३३२९
मणिकार १.	३५६३
" १.	३११५
मणित ३.	२४३७
मणिबन्ध १.	४३३७३
मणिल १. २. ३.	५४३८
मणिसानु १.	१३३१२
मणिसोपान ३.	४३३१४२
मणीच ३.	७३३२७
मणीचक ३.	३३३१८
मण्टप १. ३.	४३३२८
मण्डजात ३.	३८३१४०
मण्ड १. ३.	४३३७७
" १.	५१३७
मण्डन ३.	४३३३३
" १. २. ३.	५४३१
मण्डपीठिका २.	२१३७
मण्डल १.	३४३६९
" ३.	३७३९
" ३.	३७३८७
" ३.	४३३२४
" १. २. ३.	७५६५
मण्डलपत्रिका २.	३३३९२
मण्डलाग्र १.	३७३६०
मण्डलिन् १.	३४३७२

वैजयन्तीकोषः

मण्डलिन् १.	४१३७
" १.	४१३८
" १.	४१३१०
" १.	४१३१३
" १.	७१३६०
मण्डलेश्वर १.	३७३२
मण्डहारक १.	३५३४
मण्डिका २.	४३३७८
मण्डकी २.	३७३७९
मण्डक १.	३७३५१
" १.	४१३४८
मण्डकपर्ण १.	३३३६८
मण्डकपर्णी २.	३३३१४४
मण्डूर ३.	३२३३६
मत ३.	३६३७४
" ३.	३८३१०७
मतङ्ग १.	३७३६०
मतल्लिका २.	८१३४२
मति २.	३६३३३
" २.	६२३२७
मत्कुण ३.	३७३५४
" १.	४१३३५
मत्त ३.	३७३६७
" १. २. ३.	५४३३७
मत्तकाशिनी २.	४३३१२
मत्तवारण ३.	४३३३१
" ३.	४३३१६४
मत्त ३.	३८३३०
मत्सर १. २. ३.	७५६३
मत्स्य १.	११३१८
" १.	४१३४१
मत्स्यगु १.	३६३५७
मत्स्यण्डी २.	३८३३३
मत्स्यधानी २.	२१३४२
मत्स्यनाशन १.	२३३३४
मत्स्यपित्ता २.	३८३६८
मत्स्यराज १.	४१३५१
मत्स्यवेधन ३.	३१३४२
मत्स्यव्रतिन् १. २. ३.	३६३३३
मत्स्यसङ्घात १.	४१३४५

[ मधु ]

मत्स्याक्षी २.	३३३१४४
" २.	३३३१५६
मथित ३.	३८३१००
मथिन् १.	३१३३१
मथुरा २.	४३३६
मद १.	३३३१८८
" १.	३७३८२
" १.	५२३३२
" १.	८५३३६
मदकल १.	३७३६८
मदकोहल १.	३४३५४
मदन १.	२३३३
" १.	३३३३९
" १.	३३३६१
" १.	३८३५५
" १.	३८३३७
" १.	७१३६१
मदनध्वजा २.	२१३७५
मदना २.	३१३४६
मदनी २.	३४३३६
मदवृन्द १.	३७३६२
मदमत्तक १.	३३३७७
मदयन्ती २.	३३३१८३
मदस्थान ३.	३१३७३
मदिरा २.	३१३४५
मदिष्टा २.	३१३४६
मदुर १.	३३३३
मदोत्कट १.	२३३१४
" ३.	३१३४८
मदोदका २.	३८३८२
मदगु १.	२३३११
" १.	३५३५२
" १.	३५३७१
" १.	३५३८४
" १.	३५३९३
मदलध्वनि १.	२४३१०
मद्य ३.	३१३४४
मद्यबीज ३.	३१३५०
मद्यलालस १.	३३३२६
मद्यसन्धान ३.	३१३५१
मधु १.	२१३८३

[ मधु ]

मधु १.	२१३८७
" १.	३३३६१
" २.	३३३१४३
" १. ३.	३८३३४
" ३.	३८३४५
" १.	५३३३३
" १.	६५६१
मधुक १.	३५३३७
" १.	३७३३०
" ३.	३८३३४
" १.	५३३३२
मधुकर १.	२३३४३
मधुका २.	३८३५६
मधुकुक्कुटी २.	३३३३४
मधुकर्म १.	३१३५२
मधुकीर १.	३३३२२
मधुच्छद १. २.	३३३३८
मधुतृण १.	३३३२५
मधुप १.	२३३४२
मधुपर्क १.	३६३६२
मधुपर्णी २.	८३३८
मधुपुष्प १.	३३३३३
मधुबीज १.	३३३७४
मधुबोल १.	५३३३८
मधुमक्षिका २.	२३३४५
मधुमद्य ३.	३१३४८
मधुमालक १.	५३३३७
मधुयष्टिका २.	३८३१०३
मधुर ३.	३८३१०३
" ३.	३१३१२
" १. २. ३.	४३३८२
" १.	५४३२५
" १.	५४३२७
" १. २. ३.	७३३२२
मधुरवाच् १. २. ३.	५४३४४
मधुरस १.	३३३२१०
मधुरसा २.	८३३८
मधुरस्वन १.	४१३५५
मधुरा २.	३१३२५
" २.	४३३६

शब्दानुक्रमणिका

मधुराङ्गक १.	५३३२७
मधुराङ्गक ३.	३८३३६
मधुलिह् १.	२३३४२
मधुवाच् १.	२३३२७
मधुवार १.	३१३५२
मधुव्रत १.	२३३४३
मधुशिष्ट १.	३३३५६
मधुश्रेणि १.	३५३४४
मधुष्टील १.	३३३४३
मधुसख १.	११३२८
मधुसारथि १.	११३२९
मधुसूदन १.	११३१५
मधुस्रव १.	३३३४३
मधुस्रवा २.	३३३१८०
मधूक १.	३३३४३
मधूच्छिष्ट ३.	३८३३७
मधूपद्मा २.	४३३६
मधूल ३.	३८३३७
" १.	५३३३३
मधूलक १.	३३३४४
" १.	५३३२५
" १. २. ३.	८३३३३
मधूलिक १.	५३३३३
मधूषिका २.	४३३६
मध्य ३.	३१३२३
" १. ३.	४३३६७
" १. २. ३.	५३३२९
" १. २. ३.	६५६३
मध्यदन्त १.	४३३८९
मध्यदेश १.	३१३२२
मध्यन्दिन १.	२१३६५
मध्यम १.	३१३३२
" १.	४३३६७
" १. २. ३.	५३३७७
मध्यमा २.	४३३७४
मध्यमीय १. २. ३.	५३३७७
मध्यमांखात १.	३६३३०
मध्यरात्र १.	२१३६६
मध्यस्थ १. २. ३.	३८३१९
मध्याह्न १.	२१३६५

[ मन्थर ]

मध्वालुक १.	३३३२१०
मध्वासव १.	३१३४९
मनश्शिला २.	३३३११
" २.	३३३२११
मनस् ३.	३३३१७२
मनसिज १.	११३२७
मनस्कार १.	३६३७४
मनाक ४.	८८३३२
मनाका २.	७२३१९
मनित १. २. ३.	५४३१०१
मनीषा २.	३६३६३
मनीषिन् १.	३६३२५
मनुज १.	३५३१
मनुज्येष्ठ १.	३७३५८
मनुष्य १.	३५३१
मनुष्यधर्मन् १.	१२३५६
मनोजव १.	३५३५
मनोजवा २.	१२३३०
मनोज्ञ १. २. ३.	५४३३४
मनोज्वला २.	३४३१८२
मनोभिधा २.	३२३१२
मनोरथ २.	३३३१७९
मनोरम १. २. ३.	५४३३५
मनोविकार १.	३१३८०
मनोहर १. २. ३.	५४३३५
मनोहरी २.	३८३७७
मन्तु १.	३७३४७
मन्त्र १.	३६३३३
" १.	६५३४५
मन्त्रजिह्व १.	१२३१७
मन्त्रज्ञ १.	३७३२६
मन्त्रिन् १.	३७३१८
" १.	३७३१९
" १.	८१३४५
मन्थ १.	३१३३१
" १.	४३३७१
मन्थपात्र ३.	३१३३२
मन्थर १. २. ३.	३७३५०



## [ मन्थर ]

मन्थर १. २. ३.	७५६४
मन्थविष्कम्भ १.	३९१३२
मन्थान १.	३९१३१
मन्थोदधि १.	३९१११
मन्द १.	१२३३४
१.	२१३३५
३.	३८११४०
१. २. ३.	५४१५५
१. २. ३.	६५६०
मन्दगामिन् १. २. ३.	
३९१५०	
मन्दर १.	४३११४०
मन्दरमणि १.	११११४६
मन्दरवासिनी २.	
१११६३	
मन्दाकिनी २.	११११३
मन्दाक्ष ३.	३६११९४
मन्दागा २ ब.	२१११४१
मन्दार १.	१३११४
१.	३३११४४
मन्दिर ३.	४३११८
३.	७३१२७
मन्दुपाल २.	३५३३१
मन्दुरा २.	४३१२१
मन्दोत्खात १.	३६१२३०
मन्दोष्ण ३.	५३१९
मन्द्र १. २. ३.	२१११३
१.	३७१६२
मन्द्रभद्रमृग १.	३७१६५
मन्द्रलक्षण ३.	३७१६३
मन्मथ १.	१११२७
१.	३३१३२
मन्मथसख १.	२११८३
मन्या	३७१८५
२.	४११११७
मन्यु १.	३६११८३
१.	६११४५
मन्वन्तर ३.	२११९३
मय १.	१३१७
१.	३११६७
मयष्टक १.	३८१३८

## वैजयन्तीकोषः

मयु १.	१३३३
मयूक १.	२३३३७
मयूख १.	२१११६
१. २. ३.	८११२५
मयूर १.	२३३१४
१.	२३३३६
मयूरक ३.	३२३४२
१.	३३३११५
१.	३३३१२०
मरकत ३.	३२३३८
मरण ३.	३६३२०२
मरणालस ३.	३६३२१७
मरन्द १.	३३३१९९
मराल १.	२३३५
१.	३३३१९२
१. ३.	५३३१७
मरिच ३.	३८१७९
मरिष्टक १.	३२३३८
मरीच ३.	३८१७९
मरीचि १. २.	२१११६
मरीचिका २.	२११२२
२.	५११४२
मरु १ ब.	३११३८
१.	३११४२
मरुक १.	३११११
मरुजा २.	३११२२
मरुत् १.	१११२
१.	१२३३९
२.	३३३११७
मरुत्वत् १.	१२३४
मरुद्गण १ ब.	१३३८
१ ब.	१३३१०
मरुध्व १.	३३३६३
मरुन्माला २.	३३३११७
मरुल १.	३३३७३
३.	४२३१
मरुवक ६.	३३३४९
मरुक १.	७११६२
मरुद्धव १.	३३३६४
मर्क १.	१२३४९
१.	६११४७

## [ मलय ]

मर्कट १.	३१३३९
३.	४३३४८
मर्कटक १.	३८१६२
१.	४१३३४
मर्कटास्थ ३.	२२३२४
मर्कटी २.	४३३४८
मर्कस १.	३९१५१
मर्कोटपिपीलिका २.	
४१३३७	
मर्त १.	३६३२०६
मर्त्य १.	३५३१
मर्त्यलोक १.	३६३२०६
मर्द १.	३६३१६७
मर्दन ३.	५२३३०
मर्दनी २.	३७३५५
मर्दल १.	३९३३४
मर्दलध्वनि १.	२१३१०
मर्मभेदन १.	३७३७९
मर्मर २.	२१३८
१.	५४३४४
मर्मरा २.	४३३७०
मर्मस्पृश १. २. ३.	
५४३१२	
मर्यादा २.	३९११५
२.	४२३३३
२.	४३३११
२.	७२३१९
मर्ष १.	३६३१८४
मल ३.	३२३२९
१.	३५३२४
१.	४१३३२
( अल )	
१. ३.	४१३१९
१. ३.	४१३२०
१.	५४३४४
१. ३.	६५३६५
मलद १ ब.	३१३३६
१.	३८३३५
मलना २.	३३३१६०
मलय १.	३२३३
१.	७५३६३

## [ मलयज ]

मलयज १.	३८११२
मलयद्वीप ३.	३९११४
३.	३९११६
मलयवासिनी २.	१११६३
मलयद्वाशस् २.	४११५
मलवारिन् १. २. ३.	
५४३१६	
मलयविष्टम्भ १.	४११२८
मलच्छुति २.	४११२८
मलहारक १.	३७१८७
मलिन ३.	४२३१
१. २. ३.	५४३६६
मलिना २.	४११५
मलिनाम्बु ३.	३९१२५
मलिग्लुच १.	२३३४४
१.	३६३७७
१.	३९१५५
मलीमस १. २. ३.	
५४३६६	
मलुक १.	३१३७२
१.	४३३६७
मलुक १.	२३३२
मल्ल १.	३५३५५
१.	४३३६७
१.	४१३८८
मल्लक १.	२३३३१
मल्लनाग १.	३६३१५९
मल्लि २.	६२३२७
१. २.	८१३२६
मल्लिका २.	३३३१८३
मल्लिकाकुसुमप्रिय १.	
३३३३५	
मल्लिकाक्ष १.	२३३७
१.	३७३९२
मल्ली २.	४३३५७
२.	८१३२६
मशक १.	२३३४४
मशकहरी २.	४३३१२४
मशकिन् १.	३३३२८
मशन ३.	२३३२
मशाक १.	२३३३

## शब्दानुक्रमणिका

मषिघटी २.	३९१२५
मसुर १.	३८१४०
मसूरक १.	३८१४०
मसूरिका २.	३८१४०
मसुरी २.	४११३७
मसृण १.	५३३४
मसृणत्व ३.	५३३१
मसृणी २.	३८१४५
मस्कर १.	३३३२१५
मस्करिन् १.	३६३१६०
मस्तक १. ३.	४१३८६
मस्तिक १.	४१३८५
मस्तिक १.	४१३१२
मस्तु ३.	३८१४४
मस्तुलङ्ग १. ३.	८१५१९
मस्तुलङ्गक १.	४१३१२
मह १.	३६३६१
महः ३.	३६३२०७
महत् १.	३६३१६३
३.	३६३२०७
१. २. ३.	६५३६३
३.	८३३१८
महती २.	३३३१३८
२.	३९३११९
महत्तरी २.	३७३३७
महर् ३. ४.	३६३२०७
महत्विज् १.	३६३७९
महस् ३.	६३३२४
महाकदम्बक १.	३३३६०
महाकन्द ३.	३३३२०४
३.	३८१७६
महाकाय १.	३७३६१
महाकार १ ब.	३१३३९
महाकाल १.	८१३३७
महाकाली २.	११३६१
महाकीर्तन ३.	४३३१९
महाकोशातकी २.	
३३३१५९	
महागण १.	५१३३१
महागन्धा २.	११३६४
महाग्रहायणी २.	२१३७८

## [ महाबुस ]

महाग्राम १.	४३३२
महाग्रीव १.	३१३६७
महाघोण्टा २.	३३३७८
महाचण्डी २.	११३६४
महाचारी २.	३९३४२
महाजम्बू २.	३३३९२
महाजाली २.	३३३१६२
२.	३८१२३
महाज्वाला २.	१२३२९
महाझष १.	४१३५५
महाटवी २.	३३३२
महातेजस् १.	११३५५
महात्मन् १. २. ३.	
५४३५६	
महादंष्ट्र १.	३१३४
महादेव १.	११३४१
महादेवी २.	११३५८
२.	३७३३१
महाधन १. २. ३.	
४३३११८	
महाधातु १.	४१३०४
महानट १.	११३४४
महानर्मन् १.	३५३७१
महानस ३.	४३३५४
महानाद १.	३३३११
महानील ३.	३२३४०
महानेमि १.	२३३१५
महापत्त १.	२३३११
महापत्तिन् १.	२३३२३
महापत्र १.	३३३२१६
महापद्म १.	१२३६०
१.	३३३२०९
१.	४१३१२
३.	४२३४०
महाप्रलय १.	२१३९४
महाफला २.	३३३८८
२.	३३३९२
२.	३३३१७०
महाबल २.	१२३५०
२.	३८१३३१
महाबुस २.	३८१३४



[ महाबुस ]

महाबुस २.	३८८५१
महाभूत ३.	३६१२०६
महामात्र १.	३८८८८
" १. २. ३.	५४५५६
महामुख १.	४११५३
महामुनि १.	३३३७९
महामूल्य १. २. ३.	४३११८
महामृग १.	३८८६१
महामेरु १.	१३१२२
महामुख ३.	५१३२२
महायज्ञ १.	३६६६३
महायव १.	३८८५२
महारजत ३.	३२११८
" ३.	३८८९१
महारण ३.	३८८०६
महारस १.	३३३२२२
" १.	३३३२२५
महारसा २.	३३३११०
" २.	३३३१२३
महाराज १.	३९११०३
" १.	४४४७६
" १.	८११२६
महारात्र १.	२११६६
महारात्री २.	१११६१
महाराष्ट्र १ ब.	३११३३
महालय १.	८११३६
महालोभ १.	३३३५२
महावस १.	४११५४
महाविड ३.	३८८१२३
महाविष्णु १.	१११३१
महावीर १. २. ३.	८१५२०
महावृष १.	३८८३५
महावेग १.	३१५४०
महाव्यसनसप्तक ३.	३८८११
महाव्रत १.	१११४५
महाशय १. २. ३.	५४११६
महाशक्त १.	४११४४

वैजयन्तीकोषः

महाशक्त २.	३३३३४
महाशालि १.	३८८३२
महाशिला २.	३८८१६९
महाशूद्र १.	३९१२८
महाश्रावणिका २.	३९१९४
महाश्वेता २.	३३३१३५
" २.	३३३१९६
महासना २.	३२१११
महासन्धा २.	३३३१०५
महासर्प १.	४११११
महासहा २.	३३३१०७
" २.	३३३१८८
" २.	८२११५
महासुसि २.	२११९४
महासेन १.	१११५५
महास्नायु २.	४४११७
महाहस १.	३९१८४
महित १.	३२१५
( महिक )	
महिमत १.	१२१२७
महिमन् १. ३.	८९१३१
महिला २.	४४४४
महिष १.	३४४८
" १.	३५१३३
महिषवाहन १.	१२१३३
महिषाक्ष १.	३८८११२
महिषी २.	२११७४
" २.	३८८३१
" २.	७२११९
मही २.	३११३
महीपति १.	३३३३७
महेच्छ १. २. ३.	५४११६
महेन्द्र १.	१२१७
महेन्द्रजित् १.	१११३७
महेश्वर १.	१११३८
" १.	३३३५३
महेश्वरी २.	३२१२६
महोत्त १.	३४१५५
महोत्पल ३.	४२१३७
महोदधि १.	४२११२
महोदय १.	४३३७

[ माणव्य ]

महोदया २.	४४४६
महोदरी २.	३३३१९९
महोद्रेक १.	५११५४
महौजस् १.	१११५६
महौषध १.	३३३२०६
" ३.	८३३१०
मा २.	१११३६
" २.	८८८१०
" २.	८११२
मांस ३.	४४११०६
मांसकर ३.	४४११०५
मांसकील १.	४४११३३
मांसनिष्काथ १.	४३३८७
मांसल १. २. ३.	५४४६
मांसलता २.	४४१११२
मांसविक्रयिन् १.	३९१३७
मांसि १.	५३१५६
मांसिक १.	३९१३७
मांसी २.	३८८१००
माकन्द १.	३३३२५
माक्षिक ३.	३२११५
" ३.	३८८१३५
मागध १.	३५११६
" १.	३५१७९
" १.	३५१८०
" १.	३५१८७
" १.	३८८३०
" १.	३८८८४
मागधी २.	३३३१६०
" २.	३८८७६
मागवी २.	३८८५६
माघ १.	२११८२
माघी २.	२११७४
माघ्य १.	३३३१९१
माटङ्क १.	४३३३४
माठि २.	३८८१५३
माठि २.	३३३१८
माण १.	३३३२०९
माणव १.	४३३१४०
माणवक १. २. ३.	५४३३
माणव्य ३.	५११७

माणिक्य ]

माणिक्य ३.	३२१४१
माणिक्या २.	४११३०
माणिचरि १.	१३३३
माणिमन्थ ३.	३८८१२०
मातङ्ग १.	३८८५४
मातङ्गी २.	८२११४
मातरपितर १ द्वि.	४४४४७
मातरिश्चन १.	१२१४७
मातलि १.	१२१९
मातापितृ १ द्वि.	४४४४७
मातामह १.	४४४३०
" १ ब.	४४४४९
मातुल १.	४४४३३
" १.	७११६१
मातुलपुत्र १.	८११५४
मातुलानिका २.	३८८५१
मातुलानी २.	४४४३६
मातुलाहि १.	४१११९
मातुली २.	४४४३६
मातुलुङ्ग १.	३३३३३
" १.	३३३३३
मातुलुङ्गी २.	३३३३४
मातृ २.	२११७४
" २.	४३३१६३
" २.	४४४२६
" २.	६२१२८
" २.	८६१८
" २.	८९१४४
मातृका २.	४४४२१
मातृमुख १. २. ३.	५४४२४
मातृशिष्ट १. २. ३.	५४४२१
मातृष्वसेय १.	४४४४२
मातृष्वस्त्रीय १.	४४४४२
मात्र १. २. ३.	५४४१३६
मात्रा २. ३.	६५१६२
" २. ३.	६५१६३
मात्सर्य ३.	३६११८४
माथ १.	४४४१३८

शब्दानुक्रमणिका

माथिक १.	३३३७५
माद १.	५२१३२
माधव १. ३.	३९१४९
" १.	७११६१
माधवी २.	३३३१८७
" २.	३९१४५
माधुर १.	३६११०८
" १.	५३३३२
माध्वी २ ब.	२११२१
माध्वीक ३.	३९१४८
मानमन्दिर १.	१२१४२
( मानमन्दर )	
मानव १.	३५११
मानवी २.	३३३१८२
मानस ३.	३६१७२
मानसौक्य १.	२३३६
मानिन् १.	३३३१५०
मानी २.	५११५३
मानुष १.	३५११
मानुष्यक ३.	५११८
मान्दा २ ब.	२१११९
मान्द्य ३.	४४४३८
मान्धीर १.	२३३२८
मान्धीलव १.	२३३२८
माभीद १.	३३३७९
माया २.	११११६
" २.	३३३१३८
" २.	३६१६१
" २.	३८८१२
मायाविन् १. २. ३.	५४४२४
मायिक १. २. ३.	५४४२४
मायिन् १. २. ३.	५४४२४
मायु १.	४४४१२१
मायूरी २.	३९१३३१
मार १.	१११२७
मारक १. ३.	३६१२०२
( मरक )	
मारजित् १.	१११३३
मारण ३.	३८८२१४
मारि २.	३६१२०२

[ मार्षक ]

मारि २.	४४४१३७
मारिष १.	३३३१५०
" १.	३९११०६
मारुङ्ग १.	५३३१
मारुत १.	१२१५०
मारुती २.	२११५
मार्कव १.	३३३१०७
मार्ग १.	३११४९
" १.	६११४६
मार्गण ३.	३८८१७४
" १. २. ३.	५४१६०
" १.	७५१६४
मार्गणा २.	३६१२२१
मार्गनिवेश १.	४३१५
मार्गर १.	३५३३२
" १.	३५११००
" १.	३९१४२
मार्गशीर्ष १.	२११८१
मार्गायणी २.	२११३८
मार्गित १. २. ३.	५४१९८
मार्ज १.	५३३१
मार्जन १.	३३३५२
" १.	५३३१
मार्जना २.	२४११०
" २.	३९१३०
मार्जा ३.	४३३९९
मार्जारी १.	३३३७८
" १.	३३३१५६
" १.	३४४७१
मार्जारकण्ठ १.	२३३३८
मार्जारकणिका २.	१११६३
मार्जारिका २.	३४३३६
मार्जारी २.	३४३३४
मार्जालीय १. २. ३.	८१५२०
मार्जिता २.	४३३९८
मार्तण्ड १.	२१११३
मार्तण्ड १.	२१११०
मार्दङ्गिक १.	३९१७०
मार्षक १.	३९११०६



## [ माष्टि ]

माष्टि २.	४३११४७
माल ३.	३१११३
" १.	३१११२२
" १.	३११२५
मालती २.	३१११८२
मालतीतीरसम्भव १.	३१८१३०
मालव ३.	३१११६
" १ ब.	३११३७
" १.	३१११०६
मालवक १.	३११६३
माला २.	४३११५४
मालाकार १.	३११३३
मालातृणक ३.	३१३२३४
मालिक १.	३११३३
मालिका २.	३१३१८६
" २.	४३१२९
" २.	५११२४
मालुक १. २. ३.	२४१२०
" १.	३१५१९
मालुधान १.	४१११९
मालुवा २.	३१३२१०
मालूर १.	३१३३०
मालोर्जर १.	३१३१२०
माल्य ३.	६३१२५
माल्यजीविन् १.	३११३३
माल्यवत् १.	३१२४
माष १.	३१८३५
" १.	५११४३
" १.	५११४४
" १.	५११४५
" १.	५११६३
माषपर्णी २.	३१३१०७
माषाशिन १.	३१७९१
माषीण १. २. ३.	३१८२०
माष्य १. २. ३.	३१८२०
मास १.	८११६१
मास १.	२११८०
मासतम १. २. ३.	५१११९
मासर १.	३१५५१

## वैजयन्तीकोषः

मासर १.	४३१७८
मासिक ३.	३१६५
माहामलय ३.	३१११६
माहिर १.	११२६
माहिष १. २. ३.	३१११४
माहिषाडुक १.	३१५४८
माहिष्मती २.	४३१९
माहिष्य १.	३१५१२
" १.	३१५६९
माहेन्द्री २.	३३१७५
माहेयी २.	३१४४२
माहेश्वरी २.	१११६४
मित १. २. ३.	५४१३६
मितद्रु १.	४२११२
मितम्पच १. २. ३.	५४१५९
मित्र १.	२१११५
" ३.	३१७३९
" ३.	३१७४३
" ३.	३१८९२
" ३.	८११४७
मिथस् ४.	८१७२७
मिथिला २.	४३१७
मिथुन ३.	४३११००
" ३.	४४१४८
" ३.	५१११५
" १. २. ३.	५१११६
" ३.	५१११६
" ३.	८१११४
मिथुनत्व ३.	४३१७१
मिथुनिन् १.	२३१२४
मिथ्या ४.	८१८१३
मिथ्याचर्या २.	३१६१९६
मिथ्याभियोग १.	३११३२
मिर्मिर १. २. ३.	५११९
मिश्र १. २. ३.	५११०८
मिश्रक ३.	३१६९२
मिष १.	३१५१४
" ३.	३१६१९५
मिषत् १. २. ३.	५४१६१
मिहिका २.	२१२१९

## [ मुखरा ]

मिहिर १.	२१११५
" १.	७११६२
मीढ १.	३१४६४
" १. २. ३.	५४११३
मीढा २.	३१६१६
मीन १.	४११३१
" १.	८१११४
मीना २.	३१६१२३
मीनाङ्क १.	१११२७
मीमांसा २.	३१६२९
" २.	३१६१७५
मीलिका २.	३१२२७
( नीलिका )	
मुक १.	५३१५६
मुकुन्द १.	११११३
" १.	१२१६१
मुकुन्दक १.	३३२०५
मुकुर १.	४३११६२
मुकुल १. ३.	३३११९
मुक्तकञ्चुक १.	४११२०
मुक्तबन्धना २.	३३१८३
मुक्ता २.	४११५६
" २.	६१२२९
मुक्ताफल ३.	४११५७
मुक्तामुक्त ३.	३१७१९६
मुक्तावली २.	४३१३८
मुक्तास्फोट १.	४११५६
मुक्ति २.	३१६२३८
मुख ३.	३१८१२१
" ३.	४३११५
" ३.	४४१८६
" ३.	६३१२५
मुखज १.	३१६११
मुखबन्धन ३.	३१८१४१
मुखभूषण ३.	३२१३१
" ३.	३३११०६
मुखभेद १.	३१९८८
मुखमण्डन १.	३३१६९
मुखर १. २. ३.	५४१४६
मुखरज्जु २.	३१७११२
मुखरा २.	२३१२०

## [ मुखावास ]

मुखावास १.	३१७१४८
मुखवासन १.	५३१५३
मुखशाला २.	४३१२४
मुखशोभा २.	३१६३५
मुख्य १. २. ३.	५४१६३
मुख्योपाय १.	३१७१२
मुख्य १. २. ३.	६४११२
मुखिर १. २. ३.	७११६६
मुखुटि १. २.	४४१७९
मुखुटी २.	३१७१९३
मुखुलिन्द १.	३३३३६
मुञ्ज १.	३३३२२८
" १.	३३३२२९
मुञ्जकेशिन् १.	११११३
मुञ्जन ३.	२४१२
मुण्ड १. २. ३.	३१६६
" १. ३.	४४१८६
मुण्डन ३.	३१६४
मुण्डा २.	३३१२५
" २.	४४११०
मुण्डित १. २. ३.	३१६६
मुण्डितिका २.	३३१२५
मुण्डी २.	३३१२५
मुण्डी १.	२१११३
मुद् २.	३१६१८८
मुदित १. २. ३.	५४३३३
" १. २. ३.	५४१९९
मुदिर १.	२१२२
मुद्र १.	३१८३६
मुद्र १.	३१६१०२
" १.	३१७१७१
मुद्रक १ ब.	३११२९
मुद्रित १. २. ३.	५३१९७
" १. २. ३.	५४११०
मुधा ४.	८१८१२
मुनय १. ३.	३१६१६८
मुनि १.	१११३३
" १.	३३११२३
" १.	३३११५८
" १.	३३१२२७
" १.	३३११५०

## शब्दानुक्रमणिका

मुनि १.	३१६१५२
मुनिपिष्टकिन् १. २. ३.	३१६१३४
मुनिप्रिय १.	३१८५८
मुनिवृक्ष १.	८१६१९
मुनिव्रतित् १. २. ३.	३१६१३३
मुनिसेवित १.	३१८५७
मुनीन्द्र १.	१११३४
मुर ३.	३१८९८
मुरज १.	३१९१२९
मुरजध्वनि १.	२४११०
मुररिपु १.	११११३
मुरली २.	३१९१२५
" २.	३१९१२७
मुरुङ्गी २.	३३१५६
( मुरुङ्गी )	
मुरुण्ड १ ब.	३११२५
मुरुर् १.	११२२०
" १.	५३१६
मुषित १. २. ३.	५४१११६
मुष्क १. ३.	४४१६३
मुष्कर १. २. ३.	५४१८
मुष्टि १.	३१७१६८
" १. २.	४४१७९
" १. २.	५११५१
" १. २.	५११६३
मुष्टिक १.	३११५४
मुष्टिमान्ध ३.	३१७१९२
मुष्ट्यष्टक ३.	३१६१६
मुष्ट्यायोजन ३.	३१७१८९
मुसल १. ३.	४३१६५
मुसलयष्टिक १.	३१७१७१
मुसलिन् १.	१११२३
" १.	३१७१७
मुसली २.	३३१२०३
" २.	३१८५०
" २.	४११२६
" २.	४११३०
मुसल्य १. २. ३.	५४१७१
मुसुटी २.	३१८५६

## [ मूल ]

मुस्त १.	४११२५
" १. २. ३.	८१९३८
मुस्तक १. ३.	३३१२००
मुस्ता २.	३३१२००
" २.	८१९३८
मुस्तु १. २.	४४१७९
मुहुः ( - र् ) ४.	८१७२७
" ४.	८१८११
मुहुःप्रोक्त १. २. ३.	२४१२२
मुहूर्त १. ३.	२४१५४
मूक १.	३१७१०८
" १. २. ३.	५४११४
मूका २.	३१९१७
मूढ १. २. ३.	३१७२९९
" १. २. ३.	५४१२१
" १. २. ३.	६४११२
मूत १.	६४१४६
मूतक ३.	३१८१४४
मूत्र ३.	४४११२०
मूत्रकृच्छ्र ३.	४४११२८
मूत्राशय १.	४४१६६
मूत्रित १. २. ३.	५४११३३
मूर्ख १. २. ३.	५४१११
मूर्च्छन १. २. ३.	३१९१३१
मूर्च्छना २.	३१६२००
" २.	३१९११०
मूर्च्छा २.	३१६२००
मूर्च्छाल १. २. ३.	३१७२१९
मूर्च्छित १. २. ३.	३१७२१९
" १. २. ३.	७४१२२
मूर्ति २.	६४१२८
मूर्धन् १.	४४१८५
मूर्धाभिषिक्त १. २. ३.	८१५२७
मूर्धावसिक्त १.	३१५६५
मूर्धावसिक्तक १.	३१५६३
मूर्वा २.	३३१११४
मूल ३.	२११४०







[ यक्ष ]

वैजयन्तीकोषः

[ यक्ष ]

यक्षःपटह ]

शब्दानुक्रमिका

[ योग ]

यक्ष १.	८११५८	यति २.	६१२२९	यमस्वस्व २.	१११६२
यक्षकर्म १.	४१११५३	यतिन् १.	३१११६०	" २.	४१२२५
यक्षधूप १.	३१८१११	यत्त १. २. ३.	५१४११४	यमी २.	४१२२५
यक्षराज १.	११२१५५	यत्न १.	३१६११६७	यमुना ३.	४१२२५
यक्षम १.	४१४१२४	यत्र ४.	८१८२१	यमुनाभ्रातृ १.	११२३४
यक्षमन् १.	४१४१२४	यथा ४.	८१८२७	ययु १.	६११४८
यज्ञ १.	३१६१८३	" ४.	८१८२०	" १. २. ३.	६१५६५
यज्ञत्र ३.	३१६१९४	यथातथम् ४.	८१८१३	यहि ४.	८१८१५
यज्ञन ३.	३१६१९४	यथायथम् ४.	८१८१४	यव १.	३१८१५१
यज्ञमान १.	३१६१७६	यथार्थम् ४.	८१८१३	" १.	५११४३
यज्ञरादेष्टृ १.	३१६१७६	यथार्हवर्ण १.	३१७२६	" १ ब.	८१९१५६
यज्ञस् ३.	३१६१२६	यथासुख १.	२११२६	यवक १.	३१८१५३
यज्ञ १.	३१६१६३	यथास्वम् ४.	८१८१४	यवक्य १. २. ३.	३१८१९
" १.	३१६१८२	यथेप्सित १. २. ३.	४१११०४	यवक्रीत १.	३१६१५६
" १.	६११४७	यथोद्धत १. २. ३.	५१४२१	यवक्षार १.	३१८१२७
यज्ञकर्मार्ह १. २. ३.	५१४११७	यद् १. २. ३.	५१४२१	यवचूर्णक १.	४१३६८
यज्ञक्रतु १.	३१६१८६	" १. २. ३.	८१७११	यवद्वीप ३.	३१११४
यज्ञजागर १.	३१३२२७	यदा ४.	८१८१५	" ३.	३१११५
यज्ञत्यागिन् १.	३१६१७७	यदि ४.	८१८१४	यवन १ ब.	३११२४
यज्ञपूरुष १.	११११२	यदृच्छा २.	५१२६	" १.	३१५१२
यज्ञलिह १.	३१६१७८	यज्ञविष्य १. २. ३.	५१४३०	" १.	३१५७२
यज्ञवराह १.	३१११८	यद्वद १. २. ३.	५१४३०	" ३.	३१८१२३
यज्ञवह १.	११३६	यन्तृ १.	३१७१३८	यवनिका २.	४१३१२४
यज्ञाग्नि १.	११२२३	" १.	६११४७	यवनेष्ट ३.	३१२३०
यज्ञाङ्ग १.	३१४१२	यन्त्र ३.	३१७५०	" १.	३१३२०७
यज्ञाढ्य १.	३१६१५५	यन्त्रक ३.	३१९१८	यवपिष्टक १.	४१३७२
यज्ञिय १.	२११९२	यन्त्रगृह ३.	४१३२४	यवफल १.	३१३२१५
" १.	३१३२२९	यन्त्रमुक्त ३.	३१७१९५	यवफलक १.	८११५५
" १. २. ३.	५१४११७	यम १.	११२३३	यवमत्त १. २. ३.	५१४११९
यज्ञोपकरण ३.	३१६१९४	" १.	३१६२०९	यवस १.	४१४७४
यज्ञोपवीत ३.	८१३१७	" १.	३१७१७	यवागू २.	४१३८०
यज्ञोपवीतक ३.	३१६२०	" १. २. ३.	३१७१२२	यवाग्र १.	५११४३
यज्वन् १.	३१६१७६	" ३.	५१११५	यवाग्रज १.	३१८१२८
यज्वर १.	७११६२	" १.	५१२३०	यवानिका २.	३१८१०२
यत ३.	३१७८९	" १. २. ३.	६१५६५	यवान्वित १. २. ३.	
" १. २. ३.	५१४३२	यमक ३.	४१३९९	यवास १.	५१११९
" १. २. ३.	६१४१२	यमभगिनी २.	१११६२	यविष्ट १.	३१३१२६
यतः (-स्) ४.	८१८२१	यमरथ १.	३१४१०	यवीयस् १. २. ३.	५१४१४
यतस्तुच १.	३१६१७८	यमराज १.	११२३४	यवीयस ३.	३१२३३
यति १.	३१६१६०	यमल ३.	५१११५	यव्य १. २. ३.	३१८१९

( १२० )

यक्षःपटह १.	३१९१३३	यान ३.	३१७१२३	युगमध्य ३.	३१७१३१
यक्षः ३.	२१४३६	" ३.	३१३२६	युगल ३.	५१११५
यष्टि १. २.	३१६१२३	यानमुख १.	३१७१३०	युगवर्तक १.	२१३३५
" २.	३१७१६२	यापन १.	७१३२८	युगान्त १.	२१९९४
" १. २.	८१९२५	याप्य १. २. ३.	५१४७५	युगालिक १ ब.	३११२५
यष्टिमधुका २.	३१८१०३	" १. २. ३.	६१४१३	युगावर्त १.	११११४
यष्ट १.	३१६१७६	याप्ययान ३.	३१७१३६	युगासार ३.	२१९२२
यस्त १. २. ३.	५१४११६	याम १.	२१९६७	युगाह्वया २.	३१८९४
याग १.	३१६१८२	" १.	५१२३०	युगिन् १.	३१६१८२
यागकण्टक १.	३१६१८०	यामक १.	२१९३९	युम ३.	५१११५
याचक १. २. ३.	५१४६०	यामिनी २.	२१९५६	" १. २. ३.	५११२३
याचनक १. २. ३.	५१४६०	यामुन ३.	३१२४२	युग्य १.	१११५०
याचना २.	३१६१२०	याम्या २.	२१९५६	" १. २. ३.	३१४१५८
याचित ३.	३१८१२	यायजूक १.	३१६७५	" ३.	३१७१२३
याच्ना २.	३१३१२०	यायावर १.	३१६४२	युग्माशनप्रसेव १.	३१७११५
याजक १.	३१६१७८	" १.	३१६१५६	युज १. २. ३.	५११२३
याजन ३.	३१६१६३	याव १.	४१३१५३	युजिन १.	११२४८
" ३.	३१८१७	यावक ४.	३१८१३	युजान १.	७११६३
याज्ञवल्क्य १.	३१६१५५	यावत् ४.	८१७२८	युत १. २. ३.	६१४१३
याज्ञिक १.	३१८१५२	यावतिथ १. २. ३.	५११२०	युतक ३.	५१११५
याज्ञ्य १.	८१९१४४	यावनाल १.	३१८१५६	" १. २. ३.	७१५६७
याज्ञ्या २.	३१६११२	यावशादन १.	३१५१८	युद्ध ३.	३१७२०३
याज्ञ्यापुट १.	३१६११२	यावशूक १.	३१८१२८	युद्धवान १.	२१४१०
यात ३.	३१७८९	याष्टीक १. २. ३.	३१७१४४	युध् २.	३१७१५६
यातना २.	११२३९	यास १.	३१३१२६	युधिष्ठिर १.	११२१५
यातयाम १. २. ३.	८१४११	युक्त १. २. ३.	५१४१०३	युवति २.	४१४१८
यातु ३.	११२४०	" १. २. ३.	६१४१३	युवन् १. २. ३.	५१४३३
यातुक १.	२११६७	युग १.	३११५७	युष्मद् १. २. ३.	८१९१४९
यातुधान १.	११२४१	" ३.	३१७१३०	यू १.	४१३१००
यातुगति १.	११२४३	" १.	५१११५	यूक १.	४१३१८
यातृ २.	४१४३७	" १. ३.	६१५६६	यूथ १. ३.	५१११४
यात्य १.	११२३८	युगकीलक ३.	३१८२८	यूथनाथ १.	३१७१६७
यात्रा २.	५१२१०	युगच्छद १.	३१३१७	यूथिका २.	३१३१८२
" २.	६१२२९	युगद्वय ३.	२११२२	यूप १. ३.	३१६१०३
यादस् ३.	४११४०	युगन्धर १ ब.	३१७७९	यूपमध्य ३.	३१६१०४
यादसाधाय १.	११२४६	" १.	३१७१३२	यूपाग्र ३.	३१६१०४
यादसापति १.	८११५७	युगपत् ४.	८१८१६	यूष १. ३.	४१३१००
यादस्पति १.	८११५८	युगपार्श्वग १. २. ३.	३१४१५६	योषत्र ३.	३१८२८
यान ३.	३१७१६			योग १.	३१६२०८

( १२१ )



[ योग ]

योग १.	६११४८
योगपट्ट १.	३६१५०
योगवाही २.	३८१२९
योगाजि १.	३६१५५
योगावाप १.	३७१८८
योगिन् १.	३३३३६
" १.	३८१२८
योगिनी २.	१११६०
योगियान १.	२११४५
योगेश १.	३६१५५
योगेष्ट ३.	३२२२९
योग्य १.	२११३९
" ३.	३७१२४
" ३.	३८१४५
" १. २. ३.	६१५६७
" १. २. ३.	३५५६७
योग्या २ ब.	२११४१
" २.	३६१४६
" २.	३७१९५
" २.	३८१९४
" २.	६१५६७
योग्यारथ १.	३७१३०
योजन ३.	३११६३
" १.	३३२१८
योजनगन्धा २.	८२१२२
योजनबल्ली २.	३३१४५
योजना २.	३११६३
योत्र ३.	३८१२८
योधन ३.	२१११०
योनि १. २.	४११६१
" १. २.	६१५६६
योषा २.	४११४४
योषित् २.	४११४४
यौतक ३.	३६१५५
" १. २. ३.	७१५६७
यौतुक ३.	३६१५५
यौध १.	३७१३९
यौधक १.	३७१३९
यौधेय १ व.	३११२८
यौन ३.	३६१२
यौनिक १.	१२१५२

वैजयन्तीकोषः

यौवन ३.	४११५३
" ३.	५११८
यवागुली २.	४३१७८
यवागुल्या २.	४३१७८
र	
रहस्य ३.	१२१५५
रक्त ३.	३२२२४
" १.	३३३४०
" ३.	३८११५
" ३.	३८११६
" ३.	४१११६
" ३.	४११०५
" १.	५३१११
" १. २. ३.	६१११४
रक्तक १.	३३११८५
रक्तकुण्डल ३.	४२१४४
रक्तग्रह १.	१२१४१
रक्तचन्दन ३.	८६१२३
रक्ततेजस् ३.	४११०७
रक्तदन्ती २.	१११६१
रक्तदृष्टि १.	२३११४
रक्तपाणिक ३.	४२१३५
रक्तपीतासितश्चेत् १.	
रक्तपुच्छिका २.	५३११६
रक्तपुष्प १.	४११२९
" १.	३३३३९
रक्तफला २.	३३११४७
रक्तभव ३.	४११०७
रक्तशालि १.	३८१३२
रक्तशीर्षक १.	३८११०९
रक्ता २.	३३११५३
रक्ताक्ष १.	७२१६३
रक्ताङ्ग १.	३३१९५
रक्तिका २.	३३११७९
रक्तस् ३.	१२१४०
रक्तस्सभ ३.	८११२०
रक्षित १. २. ३.	५१११००
रक्षोघ्न १.	३८१४१
" ३.	४३१८२

[ रट्टास ]

रङ्गुटी २.	३८१४४
रङ्ग ३.	३२२३०
" ३.	३२२३१
" १.	६११५१
रङ्गाजीव १.	३२११२
" १.	३२१६३
रङ्गावतारिन् १.	३२१६३
" १.	३२१६५
रङ्गोपमर्दिन् १.	३२१६६
रचना २.	४३११५८
" २.	५२११४
" २.	५२३१९
रजःपुष्प १.	३३२२३
रजःपूता २.	३४१४२
रजक १.	३५३१८
" १.	३५३४५
रजत ३.	३२२२३
" १. २. ३.	७१५७०
रजताद्रि १.	३२२५
रजनी २.	२११५६
" २.	३८१८९
" २.	७२२२०
रजस् ३.	३२२३२
" ३.	३३११६२
" ३.	३८१२५
" ३.	६२२२८
" ३.	८१५३६
रजसानु १.	८११३७
रजस्वल १.	३४१९
रजस्वला २.	४११५५
रज्जु २.	३११५८
" २.	३२१३०
" २.	८२२३
रज्जुदाल १.	३३१५४
रज्जन ३.	३८११५
" ३.	३२१६०
रज्जनवल्ली २.	३३११६४
रज्जनी २.	३२१११
" २.	३३११०
" २.	३३२११
रट्टास १.	३५१३३

[ रण ]

रण ३.	३७२०४
" १. ३.	६१५६८
रणरणक १.	३६१७९
रणसङ्कुल ३.	३७२१७
रण्डा २.	३३११३
" २.	६२३११
रत ३.	४३१७०
रतद्विक ३.	८३१११
रतार्थिनी २.	४११११
रति २.	३३१७८
" २.	३२१७६
" २.	४३१७०
रतिपति १.	१११२८
रतेमदा २.	१३११
रत्न ३.	३२२३६
" ३.	६३२२६
" ३.	८३११७
रत्नगर्भ १.	१२१५८
रत्नगर्भा २.	३११४
रत्नवर ३.	३२२२०
रत्नसू २.	३११४
रत्नहस्त १.	१२१५८
रत्नाकर १.	४११११
रति १.	३११५४
रथ १.	२३१९
" १.	३३३३१
" १.	३७१२४
रथकट्या २.	५१११३
रथकार १.	३५१४८
" १.	३५१७५
" १.	३५१७५
" १.	३५१९०
" १.	३२१३४
रथकारक १.	३५१३३
रथगरुत १.	३६११०७
रथगर्भक १.	३७१२७
रथगुप्ति २.	३७१३२
रथनीड १.	३८१३२
रथपद ३.	३७१३४
रथरेणु १. २.	५११४२

शब्दानुक्रमणिका

रथवारक १.	३५२५
( रथकारक )	
रथाङ्ग ३.	३७१३४
" ३.	३७१३५
रथायुधक १.	३७१७४
रथाश्मन् १.	३५२०
रथिक १. २. ३.	३७१४०
रथिन् १. २. ३.	३७१४०
रथिन १. २. ३.	३७१४०
रथ्य १. २. ३.	६१११४
रथ्या २.	४३११६
" २.	५१११३
रथ्यावाद १.	२१२२७
रद १.	४११७८
" १.	६११५०
रदन १.	४११७८
रदिन् १.	३७१६०
रन्तिदेव १.	११११४
रन्धक १. २. ३.	४३१०८
रन्धन ३.	५२३२२
रन्धित १. २. ३.	४३१९३
रन्ध्र १.	३५१७
" ३.	४११२
" ३.	८६१९
रभस १.	५११४४
" १.	७११६३
रभू १.	३७१२९
( रतु )	
रमणी २.	४११६
रमति १.	८११६३
रमा २.	१११३६
रम्भण ३.	२११५
रम्भा २.	२११५
" २.	३३१७३
" २.	३३१७४
" २.	३६११८
रम्भित ३.	२११५
रम्भक ३.	३११८
रय १.	१२१५५
रयि १. २.	८११२७
रयक १.	४३१२९

[ रसगर्भक ]

रव १.	२११४
रवण १.	२१११
" ३.	३२२२९
" १.	३३१६५
( द्रवण )	
" १.	३३१६७
" १. २. ३.	५११४८
" १. २. ३.	७१५७०
रवा २.	३३१९९
रवि १.	२११४०
रविग्रावन् १.	३२२३७
रविध्वज १.	२११५५
रशना २.	४३१४६
रश्मि १. २.	२१११६
" १. २.	६११५०
" १. २.	८१२२५
रश्मिकलाप १.	४३१३९
रश्मिमालिन् १.	२१११३
रस १.	४१२
" १.	३२२१५
" १.	३२२४४
" १.	३३१४९
" १.	३३१५१
" १.	३३२०५
" १.	३३३३०
" १.	३८१११
" १.	३९१७४
" १.	३९१७५
" १.	४३११००
" १.	४४१०४
" १.	४४११४
" १.	५३२
" १.	५३३५
" १.	६११४९
रसक १.	३२२३५
" १.	३६१९८
" १.	३८१२८
" १.	४३१८७
रसकोप १.	५३३४०
रसक्रिया २.	४११४२
रसगर्भक ३.	३२२४१



## [ रसज्ञ ]

रसज्ञ १.	३२३३५	रागशालव १.	५३३३१
रसज्ञा २.	४४१९०	रागसूत्रक ३.	५११६४
रसज्येष्ठ १.	५३३२५	राघव १.	१११२०
रसतेजस् ३.	४४१०५	राङ्गव १. २. ३.	४३३११८
रसन ३.	७५६८	राज १.	३३७१
रसना २.	४४१९०	राजक ३.	५११८
रसनेत्री २.	३२३११	राजकर्कट २.	३३३१६७
रसयोनि १.	३१८१३०	राजकोशातकी २.	३३३१६१
रसवती २.	४३१५४	राजजम्बू २.	२३३१९३
रसवर १.	३२३३५	राजदन्त १.	४४१८९
रसविद्ध ३.	३२३२२	राजधानी २.	४३३१४३
रसा २.	३३१२	राजन् १.	३३७१
" २.	३३३१३१	" १.	६११५०
" २.	३३३१८१	" १.	८१११२
" २.	४११२	राजन्य १.	३३७१
रसागोह १.	१३११०	राजन्यक ३.	५११८
रसाग्र १.	४३३७७	राजन्वत् १. २. ३.	३११४६
रसाञ्जन ३.	३२३४१	राजपटोल १.	३३३१६६
रसाढ्य १.	३१८१२८	राजपुत्री २.	८२१८
रसातल ३.	४१११	राजफल १.	३३३१६६
" १.	४३३११०	राजवीजिन् १.	४४१५०
रसादान ३.	४३३१०३	राजभृङ्ग १.	२३३२७
रसायन ३.	३१८१४८	राजमार्ग १.	४३३१६
रसाल १.	३३३४१	राजमाष १.	३१८४६
" १.	४३३९८	राजमुद्र १.	३१८३८
रसिक १.	३१९४७	राजराज १.	१२१५७
रसोद्भव ३.	४४११०५	राजरीति २.	३२३२६
रसोन १.	३३३२०४	राजवंश्य १.	४४१५०
रहस् ३.	५४११२०	राजवत् १. २. ३.	३११४६
" ३.	६३३२७	राजवर्त १.	४३३११९
रहस्य १. २. ३.	५४११२०	राजवल्ली २.	३३३१६४
राक १.	६११५१	राजवाह्य १.	३३७३९
राका २.	२११७३	राजविहङ्गम १.	२३३२९
" २.	४४१८	राजवृक्ष १.	८११२०
राक्षस १.	१२१४०	राजवेशमन् ३.	४३३३०
राक्षसघ्न १.	१११२१	राजसर्षप १.	३१८४२
राग १.	३३३१८१	" १.	५११४२
" १.	३१९११४	राजसी २.	२११६०
" १.	६११५१		
रागवत् १.	३३३२१७		

( १३४ )

## वैजयन्तीकोषः

## [ राखान्त ]

राजहंस १.	२३३७
राजादन १.	३३३४३
" १.	८५२१
राजावर्त १.	४३३११९
राजि २.	४३३१४८
" २.	४४१९०
" २.	६२३३०
राजिका २.	३१८४२
राजिमत् १.	४११७
" १.	४११९
राजिल १.	४११९
" १.	४११५५
" १.	४१२०
" १. २. ३.	५४१७
राजीफल १.	३३३१६६
राजील १.	४११९
" १.	४१११०
राजीव १.	३३३१३
" ३.	४२३३८
राजीवक १.	४११४६
राजीवत् १.	३३३१६५
राज्ञी २.	३२३२७
राज्यलौक्य ३.	३३३१८२
राज्याङ्ग ३.	३३७३
राठ १.	३३३५०
राढा २.	३३३२१
" २.	३३३३०
" २.	४३३१५०
राण १. ३.	२३३७
रातप ३.	५३३३१
राता २.	३३३५२
रात्रि २.	२११५७
रात्रिचर १.	१२३४०
" १.	३३३५६
रात्रिज ३.	२१३३८
रात्रिजागर १.	३३३७०
रात्रिश्चर १.	१२३४०
रात्रिद्विष् १.	२१११४
रात्र्याख्या २.	३३३२११
राथन्तरि १.	१२३२२
राखान्त १.	३३३२५

## [ राध ]

राध १.	२११८३
राधा २.	२११४०
राम १.	१११२०
" १.	१११२०
" १.	१११२२
" १.	३३३३२
" १. २. ३.	६३३१४
रामक १.	३१५७९
" १.	३१५८२
रामठ ३.	३१८१३१
रामदूती २.	३३३१०९
रामपूरा १.	३३३२१८
रामभगिनी २.	१११६२
रामस्वस्त २.	१११६२
रामा २.	४३३६
राम्भ १.	३३३१८
रालि १.	८१११०
रावण १.	१२३४२
रावणसूदन १.	१११२०
राशि १.	२११५०
" १.	५११३
" १.	५२३५४
राष्ट्र ३.	३३७३
" ३.	३३७४८
" ३.	६३३६९
राष्ट्रिका २.	३३३१०६
राष्ट्रीय १.	३३३१०५
रास १.	३३३७३
रासभ १.	३३३६५
" १.	८३३५
रासना २.	३३८१८
राहु ३.	२१३३७
रिक्त १.	२१३७९
रिक्तक १. २. ३.	५३३८७
रिक्थ ३.	३३८७३
रिङ्ग १.	३३७३३६
रिङ्गोल ३.	३३७३३६
रिङ्गोलन ३.	३३७३३६
रिपु १.	३३७४१
रिरी २.	३३२२५
रिष्ट ३.	६३३२७

२३ वै०

## शब्दानुक्रमणिका

रिष्टि २.	३३७१५९
रीढा २.	३३६१७२
रीण १. २. ३.	५३३१०९
रीति २.	३३२२५
" २.	५२३२
" २.	६२३३०
रीतिपुष्प ३.	३३३३३
रुक्म ३.	३३३१८
" ३.	६३३२७
" १.	८३३१०
रुग्भेद १.	४३३१३७
रुच् २.	२१३२२
" २.	४३३१५०
" २.	८२३१९
रुचक १.	३३३३३
" ३.	३३८१२५
" १.	८१३६४
रुचि २.	२१३२२
" २.	३३८१३२
" २.	३३१८३
" २.	६२३१४
रुचि १.	३३३१४
रुचित १. २. ३.	५३३९६
रुचिर १. २. ३.	५३३३४
रुचिष्य ३.	३३८१२५
रुचु १.	३३३२८
रुच्य १.	४३३३७
" १.	५३३३८
" १. २. ३.	५३३३४
रुज् २.	४३३३८
रुजा २.	३३३६५
" २.	४३३३८
" २.	६२३२९
रुण्ड १.	३३७१०८
" १.	३३७२१६
रुण्डक १.	३३५२८
रुत ३.	२३३४
रुदित ३.	३३९८७
रुद्ध १. २. ३.	५३३९६
रुद्र १.	११३३९
" १ व.	१३३८

( १२५ )

## [ रूप्य ]

रुद्रपुष्प ३.	३३३१९५
( ओढपुष्प )	
रुद्रव्रतित् १. २. ३.	३३३३३१
रुद्रसख १.	१२३५८
रुद्रा २ व.	२३३२१
रुद्राक्ष १.	३३३७९
रुद्राणी २.	११३५८
रुधिर १.	२३३३२
" ३.	४३३१०५
रुमा २.	३३३१०
रुमाभव ३.	३३८१२१
रु १.	३३३१४
रुक्थ १.	७३३६४
रुखु १.	३३३६५
रुखुक १.	३३३६५
रुशती १. २. ३.	२३३१८
रुष् २.	३३३१८३
रुपा २.	३३३१८३
रुच ३.	३३३३४
" १.	३३३५
" ३.	३३८१४२
" १.	५३३३
" १.	५३३१६
" १. २. ३.	५३३४४
" १. २. ३.	६३३३३
रुक्षणीय १.	३३९४७
रुक्षणीया २.	३३८६१
रुक्षवालुक ३.	३३८१३५
रुक्षस्वर १.	३३३६६
रुढ १. २. ३.	३३७२१७
" १.	३३८५१
रूप ३.	३३९१०१
" ३.	५३३१
" ३.	५३३२
" ३.	६३३२८
रूपजीवना २.	४३३२४
रूप्य ३.	३३३२३
" ३.	३३८७४
" १. २. ३.	६३३६८
" ३.	८३३११



[ रूप्यमास ]

रूप्यमास १.	पा११४४
रूप्यशतमान ३.	पा११६०
रूप १.	पा३१२९
रूपित १ २. ३.	पा१११३
रेक १.	पा११४६
रेखा २.	पा१२४४
" २.	पा१२३२
रेचक ३.	पा११५५
रेचनी २.	पा३१३८
रेचित १. २. ३.	पा१११८
" १. २. ३.	पा११२२
" ३.	पा११२९
रेटि २.	पा१२३२
रेणु १.	पा११२५
" १. २.	पा११४२
" १. २.	पा१२२६
रेणुका २.	पा११२५
रेतस् ३.	पा११११
" ३.	पा३१२७
रेफ १. २. ३.	पा११७५
रेभटि २.	पा३१२६
रेभण ३.	पा११२
रेरिहाण १.	पा११४४
रेवट १. ३.	पा११६९
रेवती २.	पा११५९
" २.	पा३११०९
" २.	पा३११८२
" २.	पा१२२०
रेवतीकान्त १.	पा११२३
रेवा २.	पा१२२६
रेशी २ व.	पा१२२०
रेशण ३.	पा११६
रेशा २.	पा११६
रै १. २.	पा११३८
रोक ३.	पा११२
" १. ३.	पा११६७
रोक्य ३.	पा११०५
रोग १.	पा११३८
रोगहारिन् १.	पा११४३
रोगाल्य ३.	पा११९९
रोचक १.	पा३१२९

[ वैजयन्तीकोषः ]

रोचन १.	पा३१९१
" १. २. ३.	पा११४२
रोचना २.	पा१२२०
रोचनी २.	पा११११
" २.	पा३१९५
" २.	पा३१३८
" २.	पा३१२११
रोचिष्णु १. २. ३.	पा११४२
रोचिस् ३.	पा१११६
रोदन ३.	पा११८७
रोदनी २.	पा३१२५
रोदस २ द्वि.	पा११५
रोदसी २ द्वि.	पा११५
रोध १.	पा११८०
रोधस् ३.	पा१२३१
रोधोवक्त्रा २.	पा१२२२
रोपण १.	पा११७९
रोमकर्ण १.	पा११३१
रोमज ३.	पा३११७
रोमन् ३.	पा११७५
" ३.	पा११७७
रोमन्थ १.	पा११७५
रोमन्थन ३.	पा११७५
रोमश १.	पा३१७५
" १.	पा३१६४
" १. २. ३.	पा११८
रोमशपुच्छक १.	पा११२७
रोमशी २.	पा११२७
रोमहर्ष १.	पा११८२
रोमहृत् ३.	पा१२१४
रोमाङ्ग १.	पा११८२
रोमाञ्ज १.	पा११८२
रोमोद्गम १.	पा११८२
रोष १.	पा३१८३
" १.	पा१२४
रोषाण १.	पा११९९
" १. २. ३.	पा११७१
रोहणद्रुम १.	पा१११२
रोहणी २.	पा११२९
रोहिणी २.	पा११४४
" २.	पा११८६

[ लक्ष्मणा ]

रोहिणी २.	पा१२२१
रोहिणीकान्त १.	पा१२२४
रोहित् १.	पा११४४
" १.	पा११११
रोहित ३.	पा१२३३
" १.	पा३१४०
" १.	पा३११६
" १.	पा३१५६
" १.	पा३१११
रोहिताश्व १.	पा१२१५
रोहिन् १.	पा३१४०
रौच्य १.	पा३११६
रौद्र ३.	पा११२२
" ३.	पा११७५
" १. २. ३.	पा११७९
रौद्री २.	पा११४९
" २.	पा११५८
" २.	पा३११२२
" २.	पा१२१४
रौमक ३.	पा११२२१
रौरव १.	पा१२३७
रौहिण्य १.	पा११३७
रौहितक १.	पा३१४०
रौहिष १.	पा३१४०
" १.	पा३११६
" १. ३.	पा११७१
ल	
लकुच १.	पा३१७५
लक्ष १.	पा३१३५
" ३.	पा११९४
" ३.	पा११३२
" १. २. ३.	पा११६९
लक्ष्मण ३.	पा१२२९
" ३.	पा११९४
" ३.	पा१२१
" ३.	पा३१२८
लक्षा २.	पा११३२
लक्ष्मणा १. २. ३.	पा११५६
लक्ष्मणा २.	पा३१३३

[ लक्ष्मन् ]

लक्ष्मन् ३.	पा१२२९
" ३.	पा३१२९
लक्ष्मी २.	पा१११६
" २.	पा११३६
" २.	पा३१२९१
" २.	पा३१२३
" २.	पा३११९
" २.	पा३११९
लक्ष्मीनिकेतन ३.	पा३१११४
लक्ष्मीपति १.	पा११३८
लक्ष्मीपुत्र १.	पा११३८
लक्ष्मीवत् १.	पा३१४२
" १. २. ३.	पा११५६
लक्ष्य ३.	पा११२४
लक्ष्यग्रह १.	पा११२०
लगणा २.	पा३१३९
लगुड १.	पा१२२९
लगुडर्वशिका २.	पा३१२१६
लग्न १.	पा११६८
लग्नक १. २. ३.	पा११३०
लग्नु १.	पा३१५३
" २.	पा३१११६
" ३.	पा११०७
" १. २. ३.	पा११७६
" १. २. ३.	पा११२४
" १. २. ३.	पा११५५
लग्नक १.	पा३१२१९
लग्नकाष्ट १.	पा११२९
लग्नु १.	पा१२४८
लग्नहस्त १. २. ३.	पा३११४९
लघ्वक्षरक १.	पा११५२
लङ्का २.	पा१२३२
लङ्कायिका २.	पा३११७
लङ्केश्वर १.	पा१२४३
लङ्गन ३.	पा११२२
लङ्गनी २.	पा३१५३
लङ्गन ३.	पा११२२
" ३.	पा११३९

[ शब्दानुक्रमणिका ]

लङ्गन ३.	पा१२२२
लङ्गा २.	पा३१२९४
लङ्गाळ २.	पा३११४८
" २.	पा३११४८
लङ्गाशील १. २. ३.	पा११४०
लज्जित १. २. ३.	पा११५१
लट् १.	पा३१५६
लडह १. २. ३.	पा११३५
लण्ड १. ३.	पा१११९
लता २.	पा३१७
" २.	पा३१६६
" २.	पा३११०४
" २.	पा३११७
" २.	पा३१८७
" २.	पा११३
लताकुश १.	पा३१२२८
लताकोलि २.	पा३१७८
लताङ्कुर १.	पा३१२१९
लतापूग ३.	पा३१२१८
लतामारिष १.	पा३११५२
लतार्क १.	पा३१२०५
" १.	पा३१२०७
लतावृहती २.	पा३११०४
लब्ध १. २. ३.	पा११६४
लब्धवर्ण ४.	पा३१२३५
लभ्य १. २. ३.	पा११५५
लम्पट १. २. ३.	पा११३६
लम्पा २.	पा११४६
लम्पाक १ व.	पा११२५
लम्बकर्ण १.	पा११६२
लम्बन ३.	पा३१३७
लम्बा २.	पा११४६
लम्बोदर १.	पा११५३
लम्भन ३.	पा१२२०
लभ्य १.	पा३१२००
" १.	पा११२२
" १.	पा११२२
लयनालिक १.	पा३१२८
लल ३.	पा३१२९
ललना २.	पा११४४

[ लस्तकग्रह ]

ललनाक्ष १.	पा३१३४
ललन्तिका २.	पा३१३६
लकाट ३.	पा११९६
ललाटिका २.	पा३१३६
" २.	पा३१३४९
ललाम १. २. ३.	पा११७२
ललामक ३.	पा३११५५
ललामन् १. ३.	पा११७२
ललित ३.	पा३१२९६
लल्लर १. २. ३.	पा३११५
लव १.	पा३१५३
" १.	पा३१२९
लवङ्ग ३.	पा३११०३
लवण ३.	पा३१२२६
" १. २. ३.	पा३१२३
" १.	पा३१२६
" १.	पा३१२७
लवणक्रीतक १.	पा३१८८
लवणलायिका २.	पा३१११६
लवणाकर १.	पा३११०
लवणापण १.	पा३१३४
लवणोत्कट १. २. ३.	पा३१२३
लवणोद् १.	पा३११०
लवन १.	पा३१२९
लवली २.	पा३१२६
लवित्र ३.	पा३१३०
लवेटिका २.	पा३१३१
लश १.	पा३१११
लशुन ३.	पा३१२०४
" ३.	पा३१२०६
लषित १. २. ३.	पा११९६
लस ३.	पा३१११५
" १.	पा३१३५
" १.	पा३१५४
लसिका २.	पा३१११८
लसीका २.	पा३१११८
लस्तक १.	पा३११७७
( लस्तक )	
लस्तकग्रह १.	पा३११८९



लहरी ]

लहरी २.	४२११४
लाक्षा २.	४३११५३
लाङ्गल ३.	३८१२७
लाङ्गलषद्धति २.	३८१३०
लाङ्गलिन् १.	३३१२२०
लाङ्गली २.	३३११९७
लाङ्गूल ३.	३३१४७४
" ३.	७३१२९
लाङ्गूली २.	३३११३६
लाज १ ब.	४३१६८
लाजमण्ड १.	४३१७९
लाजि २.	३९१२४
लान्छन ३.	२११२९
लाहीक १.	३९१३
लातक १.	३३११८९
लाभ १.	३८१७०
लामज ३.	३३१२३१
लाल १.	३३१३६
" ३.	६३१२९
लालक १. २. ३.	२४११५
लालन १.	३८११११
लालस २. ३.	५४१३६
लालसा १. २. ३.	७५१७२
लाला २.	३३१२६
" २.	४४११२०
लालाटिक १. २. ३.	८४१११
लालिका २.	३७१११२
लाव १.	२३१४०
लावण १.	३१११०
लावली २.	३३१२६
लास्य ३.	३९१७३
लिकुच १.	३३१७५
लिङ्गा २.	४४१४२
लिङ्गु १.	३४१११
" १.	६५१५१
लिङ्ग ३.	५१११७
" ३.	६३१३०
लिङ्गज्येष्ठ ३.	३६११६३
लिङ्गवृत्ति १. २. ३.	३६१९
लिङ्गशोफ १.	४४१३२

वैजयन्तीकोषः

लिच्छिवि १.	३५१५४
लिपि	३९१२४
लिपिकर १.	३९१२३
लिपिसन्नाह १.	३७१५४
लिप्त १. २. ३.	६४११५
लिप्तिका २.	२११५३
लिप्सा २.	३६११८०
लिप्सु १. २. ३.	५४१३५
लिवि २.	३९१२३
लिष्ट १. २. ३.	५४११५
लिह १.	११२५१
लीला २.	३९१८८
" २.	३९१९२
" २.	३९१९३
" २.	३९१९७
" २.	६२१३३
लीसुष १.	५३१३८
लुङ्ग १.	३३१३३
लुञ्जना २.	२४१२६
लुठित १. २. ३.	३७११०७
लुण्ठित १. २. ३.	५४१११६
लुब्ध १. २. ३.	५४१३५
लुब्धक १.	३९१३८
लुम्बिका २.	३९१३५
लुलाय १.	३४१९
लुलित १. २. ३.	५४११०३
लुष १.	३५१३१
( युष )	
लुस्त ३.	३७११७७
लृत् १. २. ३.	५४१४४
लृता २.	४११३४
लृतात १.	४११३६
लृतापट्ट १.	४११३५
लृतिका २.	४११३४
लृन १. २. ३.	४१११०२
लृनदोस् १.	१११५२
लृमन् ३.	३४१७४
लेख १.	१११३
" १.	३८११२

[ लोपामुद्रा

लेखक १.	३९१२३
लेखनी २.	३९११३
लेखा २.	३९१२४
" २.	४३११४९
" २.	५११२४
लेख्य ३.	३८११२
लेह १.	११२५१
लेप १.	४३११०२
" १.	६११५२
लेपकार १.	३९११४
लेप्य ३.	३९११३
लेलिहान १.	४२१५
लेहा १.	२११५४
लेट्टु १.	३८१२४
लेहन ३.	४३११०३
लेह्य ३.	४३१९१
लैङ्गिक १.	३६११६३
लैङ्गधूम १.	३६१८०
लोक १.	३६१२०६
" १.	६११५२
लोकजित् १.	१११३३
लोकपाल १.	२११४
" १.	८११३८
लोकान्ताद्रि १.	३२१३
लोकालोक १.	३२१३
लोचक १. २. ३.	३६११३४
" १. २. ३.	७५१७३
लोचन ३.	४४१९४
लोचना २.	२४१२८
लोचमस्तक १.	३८११०२
लोचमालक १.	३३११९९
लोटन ३.	५२१४२
लोटना २.	२४१२८
लोटभू २.	३७१११२
लोट १.	३९१८७
लोघ्र १.	२११८७
" १.	३३१५२
" १.	३३१५२
लोपा २.	२३१२५
लोपामुद्रा २.	३६११५३

लोपायिका ]

लोपायिका २.	२३१२५
लोपास १.	३४१३९
लोप्त्र ३.	३९१५८
लोभन ३.	३२११९
" १.	३८१३६
लोमन् ३.	४४१९७
" १. ३.	८११३१
लोमश १. २. ३.	५४१८
लोमशी २.	३८११००
लोल १.	३७१२०६
" १. २. ३.	५४१३६
" १. २. ३.	६४११६
लोलम्ब १.	२३१४२
लोलिका २.	३८१५८
लोलुप १. २. ३.	५४१३६
लोलुभ १. २. ३.	५४१३६
लोष्ट १. ३.	३८१२४
लोष्टभञ्जन १.	३८१२९
लोह ३.	३२१३३
" ३.	३२१३६
" १. ३.	६५१६९
लोहकारक १.	३९११६
लोहकार्पाण १.	५११३९
लोहज ३.	३२१२९
लोहदण्ड १.	३७१६७
लोहपृष्ठ १.	२३१३१
लोहमात्र १.	३८११५६
लोहमारक १.	३३११५६
लोहमालक १.	३५१३६
लोहल १. २. ३.	५४१४७
लोहशृङ्खल १.	३७१८५
लोहसंश्लेषक १.	३८११३०
लोहाख्य ३.	३८१८०
" १.	३८११०७
लोहाभिसार १.	३७१२००
लोहित १. २.	३८११२६
" १.	४११४३
" ३.	४४११०५
" १.	५३१११
लोहितक ३.	३२१३९

शब्दानुक्रमणिका

लोहितचन्दन ३.	३८१११६
लोहिता २.	१२१३०
लोहिताक्ष १.	४१११५
लोहिताङ्ग १.	३११३१
लोहिताहि १.	४१११२
लोहितीक ३.	५११४७
लोह्य १.	३१११७
लोह्य ३.	३२१२६
( लोभ्य )	
लोह ३.	३२१३३
व	
व ४.	८८११५
वंश १.	३३१११
" १.	३३१२१४
" १.	३३१२२६
" १.	३९११२५
" १.	४४१४९
" १.	४४१६६
" १.	६११५२
वंशक ३.	३८११०७
वंशज १.	४४१५०
वंशपत्र ३.	३२११४
वंशरोचना २.	३८१९०
वंशवर्ण १.	३८१४३
वंशिक १.	३११६१
" १.	३५१२३
" ३.	३८११०७
वंशिका २.	३९११२५
वंश्य १.	४४१५०
वंश्या २.	३८१५०
वकुल १.	३३१२६
वक्तव्य १. २. ३.	८४११५
वक्तृ १. २. ३.	५४१४५
वक्त्र ३.	४४१८६
वक्त्रपट्ट १.	३७११४
वक्र १.	२११३६
" १.	४४१९१
" १. २. ३.	५४११२३
वक्रकील १.	३७१८५
वक्रदंष्ट्र १.	३४१५

[ वञ्चक

वक्रपद ३.	४३१११९
वक्राख्य ३.	३२१३१
वक्राङ्ग १.	२३१३६
वक्रोष्ठक १. २. ३.	३९१८३
वक्त्रशृङ्खल १.	३७११५३
वक्त्रस् ३.	४४१६८
वक्त्रसिज १.	४४१६८
वङ्कित १.	४४११५५
वङ्कण १.	४४१५९
वङ्ग १ ब.	३११३१
" ३.	३२१३१
वङ्गजीवन २.	३२१२४
वङ्गसेनक १.	३३११५६
वचन ३.	२४१२१
" ३.	२४१३४
वचनेस्थित १. २. ३.	
वचस् ३.	२४१२१
वचा २.	३३११९७
वचाच्छृङ्खल १.	३३११२१
वज्र १. ३.	१२११३
" १. ३.	२२१३६
" १. ३.	३३१२०२
" १. ३.	३६११४६
" १. ३.	६५१६८
" १. ३.	८६१३
वज्रदक्षिण १.	१२१७
वज्रधारण ३.	३२१२२
वज्रनिष्पेष १.	२२१३६
वज्रपाणि १.	१२१५
वज्रपुष्प ३.	३८१४०
वज्रा २.	३३१९७
वज्रांशुक ३.	४३१११९
वज्राभिषवण ३.	३६११४७
वज्रासन ३.	३६१२१८
वज्रिन् १.	१२११
वज्री २.	३३१९८
वञ्चक १. २. ३.	५४१२४



## [ वक्षक ]

वक्षक १. २. ३.	७५१७४
वक्षति १.	१२११८
वक्षथ १.	७५१६४
वक्षन ३.	५२१३५
वक्षुल १.	२३१११
" १.	२३१२६
" १.	३३१३१
" १.	३३१४०
" १.	३३१४६
वक्षुला २.	३३१४५
वट १.	३३१२७
" १.	३३१५७
" १. २. ३.	३३१३०
" १. २. ३.	८११३७
वटक ३.	५११४८
वटाश्रय १.	१२१५६
वटी २.	३३१३०
" २.	८११३७
वटु १. २. ३.	५११३
वटुकृति २.	३३१९
वडवा २.	३३१७०७
" २.	४११२६
" २.	७२१२२
वडबामुख ३.	४१११
" १.	८११५५
वणिग्गृह ३.	४१३३४
वणिज् १.	३३८७२
यणिजा २.	३३८३
वणिज्य ३. २.	८११३२
वणिज्या २.	३३८३
वण्ट १.	५२१७
वण्टफ १.	३३८३०
वर्तंस १.	४११५४
" १.	८११५९
वत्स १.	२११९१
" १.	३३३७३
" १.	३३४५१
" १. २. ३.	५११२
" १. २. ३.	६५१७३
वत्सकामा २.	३३४४७
वत्सतर १.	३३४५४

## वैजयन्तीकोषः

वत्सनाभ १.	१११२४
वत्सर १.	२११९०
वत्सरान्ता ३.	२११७७
वत्सल १. २. ३.	५१११८
वत्सला २.	३३१४७
वत्सादनी ३.	३३१३२
वत्सीय १. २. ३.	३३१२८
वद १. २. ३.	५११४५
वदन ३.	४११८६
वदान्य १. २. ३.	७११२६
वदाल १.	४११४३
वदावद १. २. ३.	५११४५
वध १.	३३७२११
" १. २. ३.	६५१७५
वधरत १. २. ३.	३३१११
वधस्थान ३.	३३१३७
वघा २.	३३११४९
वधिर. १. २. ३.	५११३३
वधू २.	४११४
" २.	४११७
" २.	४११३५
" २.	४११३६
" २.	४११३६
वधूटी २.	४११९
वधोद्यत १. २. ३.	
वन ३.	३३११
" ३.	४२१२
" ३.	६३३३१
वनकोद्रव १.	३३८५५
वनगव १.	३३४३३
वनच्छाया १.	३३४६३
वनज १.	२३३४१
" ३.	४२३३६
वनतक्तिका २.	३३३३०
वनद्रुम १.	३३८१०८
वनन १.	३३४११
वनप्रिय १.	२३३२७
वनमाय १.	३३८१०८
वनमालिन् १.	१११२५
वनमुद्ग १.	३३८३८

## [ वमति ]

वनस्पति १.	३३३६
" १.	८११४२
वनायुज १.	३३८८५
वनालु १.	३३३१५०
वनाश १.	३३८५२
वनिता २.	४११४
" २.	७२१२५
वनी २.	३३३१
वनीपक १. २. ३.	
" ५११६०	
वनेवासिन् १.	३३६१२४
वनोद्भवा २.	३३३१८४
वनौकस् १.	३३४४०
वन्दन ३.	३३६३९
वन्दनमाला २.	३३६५९
वन्दा २.	३३३८४
वन्दाक १.	३३३८४
वन्दारु १. २. ३.	५११४३
वन्दिन् १.	३३५७८
" १.	३३५८१
" १.	३३६३०
वन्दीक १.	१२१७
वन्ध्य १. २. ३.	३३३८
वन्ध्या २.	३३४४७
वन्थ १.	३३३३३
" ३.	४२३३६
वन्था २.	३३३१६१
" २.	५१११४
वपन ३.	३३६४
" ३.	३३१२६
वपनी २.	४११२५
वपा २.	४११२
" २.	६२३३३
वपुस् ३.	६३३३०
" ३.	८३३१७
वप्ट १.	४११२९
वप्र १. ३.	३३२७
" १. ३.	३३८२६
" १. ३.	४३३१३
" १. ३.	६५१७९
वमति १.	८१११०

## [ वमथु ]

वमथु १.	३३७८२
" १.	४११२६
" १.	८११३३
वमि १.	१२११८
" २.	४११२६
वम्र १. २. ३.	४१३८
वयस् ३.	४१५३
" ३.	४१५३
" ३.	६३३३०
वयस्य १. २. ३.	३३७४३
वयस्या २.	३३३११२
" २.	४११२५
वयस्थ १. २. ३.	५११३
वयस्था २.	७५१७८
वर १.	२३३१८
" ३.	३३२१४
" ३.	३३३५४
" १.	३३३१५२
" ३.	३३३१९९
" १.	३३८११०
" ३.	३३८११७
" १.	३३८१२७
" ३.	४११११
" १. २. ३.	५११६४
" १. २. ३.	६५१७२
वरक १.	३३८३८
" १.	३३८५४
" १.	४३३१२७
वरट १. २.	८११२६
वरटा २.	२३३८
" २.	२३३४६
वरण ३.	२३३६३
" १.	३३३४१
" १.	४३३१४
वरण्ड १.	४३३६५
" १.	४११२५
वरत्रा २.	३३७८४
" २.	३३१४४
वरनिमन्त्रण ३.	३३६५६
वरप्रदा २.	३३६५३
वरयात्रा २.	३३६५६

## शब्दानुक्रमणिका

वरयितृ १.	४१३७
वररुचि १.	३३६१५८
वरला २.	२३३८
वरवर्णिनी २.	८२१३३
वरवाहन १ द्वि.	१३३५
वरा २.	३३३१०५
" २.	३३३१७९
" २.	३३३२३३
" २.	३३३२३३
वराङ्ग ३.	३३८१०४
" ३.	७३३२९
वराङ्गना २.	३३३२२४
वराङ्गा २.	३३४४५
वराट १.	३३३३०
वराटक १.	४११५७
" १.	४२१४५
वराणक १.	३३५५०
" १.	३३६१५९
वराधि १.	३३३३९
वरान्तक १.	१३३६
वराभ १.	३३७६१
वराम्ल १.	३३३३३
वरारोहा २.	३३३१८४
" २.	३३३१९९
" २.	४१३१२
वरार्गल १.	३३३७९
वराल १.	५३३१४
वरालक ३.	३३८१०३
वराला २.	२३३८
वराश्रि १.	५३३२८
वरासि २.	४३३१२६
वराह १.	३३४५
वराहकन्द १.	३३३३१०
वराहकर्णक १.	३३७१६७
वराहद्वीप ३.	३३३१४
" ३.	३३३१८
वरिवसित १. २. ३.	
" ५११०५	
वरिवस्या २.	३३६३८
वरिष्ठ १.	२३३३५
" ३.	३३२२५

## [ वर्णिनी ]

वरिष्ठ १. २. ३.	७३३२५
वरीयस् १. २. ३.	
" ७३३२६	
वरुट १.	३३५५५
वरुण १.	१२३४५
वरुणकाष्ठिका २.	
" ३३६१०८	
वरुणकृच्छुक ३.	३३६१४१
वरुणग्रह १.	४३३३४
वरुणप्रिया २.	१२३४६
वरुणावास १.	४२३११
वरुथ १.	३३७३३२
वरुथिनी २.	३३७५५
वरेणुक १.	३३८३१
वरेण्य १. २. ३.	५११६३
वरेन्द्री २.	३३३२१
" २.	३३३३०
वरोत्कट १.	३३४४
वरोत्पल ३.	४२३३५
वर्ग १.	५११४
" १.	५१३३६
वर्चस् ३.	६३३३१
वर्चस्क १.	४१११९
वर्जन ३.	५२३४०
" ३.	७३३२९
वर्ण १. ३.	२३३२१
" १.	३३५२
" १.	४३३१५६
" १. २. ३.	६५१७०
वर्णक ३.	३३६५६
" ३.	४३३१४७
" १. २. ३.	७५१७९
वर्णतर्णक १. २. ३.	
" ८१३३२	
वर्णन ३.	५२३३९
वर्णा २.	३३८४९
वर्णि १.	८१११०
वर्णित १. २. ३.	
" ५११०६	
वर्णिन् १.	३३६३७
वर्णिनी २.	३३३२१२



वर्णिलिङ्गिन् ]	वैजयन्तीकोषः	[ वशीकार	वश्य ]	शब्दानुक्रमणिका	[ वातमृग
वर्णिलिङ्गिन् १. २. ३.	वर्षमुख १. २।१।८१	वलीमुख १. ३।४।४०	वश्य १. २. ३. ५।४।३२	वस्त्रान्त १. ४।३।३१	वाच्य १. २. ३. ८।४।५५
वर्ण्य ३. ३।८।११६	वर्षवर १. ३।८।२३	" ३. ३।८।१४१	वषट् ४. ८।८।३	वस्न १. ३।८।७०	वाज १. २।३।४९
वर्तक ३. २।३।४०	वर्षा २ ब. २।१।८९	वल्क ३. ३।३।१४	वसति २. ७।२।२३	" ३. ३।८।१२२	" १. ३।७।१८५
" ३. ३।३।२०१	" २. ३।३।११७	वल्कल १. ३. ३।३।१३	वसन ३. ४।३।११६	वस्वौकसारा २. १।२।५९	" १. ४।३।७६
" १. ७।१।६४	वर्षाभी १. ४।६।१८	वल्गन ३. ३।७।१२२	वसन्त १. २।१।८७	वह १. १।२।४८	वाजिदन्तक १. ३।३।१०१
वर्तन ३. २।४।२२	वर्षाभू १. २. ७।५।७७	वल्गा २. ३।७।११४	वसन्तघोष १. २।३।२७	" १. ६।१।५३	वाजिन् १. ६।१।५५
" ३. ३।७।१११	वर्षाभूवी २. ३।३।१४५	वल्गित १. २. ३. ३।७।११८	वसा २. ४।४।११४	वहन ३. ३।७।१२४	वाजिन ३. ३।६।९८
" ३. ३।८।१	वर्षामिद १. २।३।३७	" १. २. ३. ३।७।११८	वसिक १. २. ३. ३।३।१३४	वहा २. ४।२।२३	वाजिशाला २. ४।३।२१
" ३. ५।२।४१	वर्षायस् १. २. ३. ५।४।४	" १. २. ३. ३।७।१२२	वसित ३. ४।३।११६	वहि १. ६।१।५३	वाञ्छा २. ३।६।१७९
" १. २. ३. ५।४।४०	वर्षमन् १. ३. ६।५।८१	वल्गु ३. ४।४।९५	वसिष्ठ १. ३।६।१५५	वहिन ३. ३।७।१२४	वाञ्छित १. २. ३. ५।४।९६
वर्तनी २. ७।२।२१	वल् १. ६।१।५३	" १. २. ३. ६।४।१६	वसीर १. ३।८।७८	वहिनृ १. ३।४।५२	वाट १. ३।५।२१
वर्ति २. ४।३।१६१	वल्च १. ५।३।१५	वल्मीक १. ३. ३।१।४८	वसु १ ब. १।३।८	वह्नि १. १।२।१४	" १. ३. ४।३।१४
" २. ४।३।१६१	वल्म १. ४।४।६७	वल्की २. ३।९।११६	" १. ३।१।५४	वह्निक १. ५।३।८	" १. २. ३. ८।९।३७
वर्तिष्णु १. २. ३. ५।४।९०	" ३. ७।५।७८	वल्म १. २. ३. ५।४।७०	" ३. ३।२।३६	वह्निशिख ३. ३।८।९१	वाटक १. ३. ४।३।५
वर्तुल १. २. ३. ५।४।८२	वल्जा २. ३।८।६५	" १. २. ३. ७।४।२५	" १. ३।३।५	वह्निमुत्त १. ४।४।१०४	वाटधान १. ३।५।५३
वर्तुलान्त १. २।३।३०	" २. ३. ७।५।७८	वल्गरि २. ३।३।२०	" १. ३।३।१९४	वा ४. ८।८।६	" १. ३।५।१०१
वर्तमे ३. ४।४।९५	वल्न ३. ३।९।११	वल्गरीका २. ४।४।९९	" १. २. ३. ३।८।११	" ४. ८।८।५५	वाटिका २. ३।३।२१७
वर्तमन् ३. ४।४।९५	" १. ५।३।५२	वल्गव १. ३।९।२८	" १. ३।८।३६	वाक्पति १. ५।४।४५	वाटी २. ३।३।४
वर्द्धी २. ३।९।४४	वल्ना २. २।४।२५	" १. २. ३. ४।३।९२	" ३. ३।८।७३	वाक्य ३. २।४।२१	" २. ३।३।२३०
(वर्द्धी)	वल्भी २. ४।३।३१	वल्गा २. ३।८।४८	" १. ६।५।७८	वाचट् ४. ८।८।३	" २. ८।९।३७
वर्धकि १. ३।९।३४	" २. ४।३।३९	वल्गार १. ३।५।५२	वसुदेव १. १।१।२६	वागीश १. २. ३. ५।४।४५	वाटयपुष्पी २. ३।३।२७
वर्धकिहस्त १. ३।९।५६	वलय १. १।२।५१	वल्गी २. ३।३।७	वसुधा २. ३।१।२	वागुर १. ३।५।१७	वाटधमण्ड १. ४।३।७९
वर्धन ३. ४।३।१००	" १. ३।३।२५	वल्गीपद ३. ४।३।११९	वसुन १. ३।६।८३	वागुरा २. ३।९।३९	वाटया २. ३।३।२७
" १. २. ३. ५।४।४०	" १. ३।३।१९९	वल्गूर ३. ४।२।३	वसुन्धरा २. ३।१।२	वागुरिक १. ३।९।३८	वाटयाल १. ३।३।१२८
" ३. ७।३।२९	" ३. ४।३।१४४	" १. २. ३. ४।३।८९	वसुभट्ट १. ३।३।१९४	वागूजी २. ३।३।१०८	" १. ३।८।५४
वर्धनी २. ४।३।५७	वलयित १. २. ३. ५।४।९६	वशा १. ३।३।८३	वसुमती २. ३।१।२	वागुद १. २।३।२८	वाडबेय १. ८।१।३९
वर्धमान १. ४।३।५९	वल्रिपु १. १।२।२	" १. ३।५।१९	वसुरेतस् १।२।१६	वागिमन् १. २।३।२५	वाण ३. २।४।११
" १. ८।१।४४	वल्ज १. २।१।८७	" १. २. ३. ५।४।२८	वसुवह्निका २. ३।३।१०८	" १. २. ३. ५।४।४५	वाणि २. ३।९।८
वर्धिष्णु १. २. ३. ५।४।४०	वल्हाक १. २।२।१	" १. २. ३. ५।४।३२	वसुव्रत ३. ३।६।१४९	वाघत् १. ३।६।७८	वाणिज १. ३।८।७२
वर्धी २. ६।२।३४	" १. ३।३।७८	" १. २. ३. ६।५।७१	वस्त ३. ४।३।१७	वाच २. १।१।१	वाणिज्य ३. ३।८।३
वर्मन् ३. ३।७।१५२	" १. ४।१।१२	" १. २. ३. ६।५।७१	(वस्न)	वाचंयम् १. ३।६।१५०	वाणिनी २. ७।२।२३
वर्मि १. ८।९।१०	" १. ४।१।१७	वशा २. ३।३।८६	वस्ति १. २. ४।३।१३१	वाचस्पति १. २।१।३३	वाणी २. १।१।९
वर्मित १. २. ३. ३।७।१४२	" १. ४।१।१७	" २. ३।४।४७	" १. २. ४।४।६६	वाचाट १. २. ३. ५।४।४६	वात १. १।२।४७
वर्य १. २. ३. ५।४।६३	वल्हाका २. ३।७।१९८	" २. ४।४।४	वस्तिशुण्डक ३. ३।६।२१७	वाचाल १. २. ३. ५।४।४६	वातगामिन् १. २।३।४
वर्या २. ४।३।७	वलि २. ६।२।३३	" २. ६।५।७१	वस्य ३. ४।३।१७	वाचाला २. २।३।२०	वातघ्न १. ३।३।६५
वर्ष १. ३. २।१।९१	वलिन् १. २. ३. ५।४।७	वशाकु १. २।३।३	वस्त्र ३. ४।३।११६	वाचिक ३. २।४।२५	वातपात १. २।२।६
" १. ३. २।२।७	वलिभ १. २. ३. ५।४।७	वशामख १. ३।५।२७	वस्त्रकोश ४।३।६३	" ३. २।४।३६	वातपोथ १. ३।३।२९
" १. ३. २ ब. ६।५।७९	वलिर् १. २. ३. ५।४।१३	वशिक १. २. ३. ५।४।८७	वस्त्रग्रन्थ १. ३. ४।३।१३०	" १. २. ३. ३।९।९९	वातप्रमी १. ३।४।१६
वर्षकारी २. ३।६।५२	वलीक ३. ४।३।३७	वशिन् १. ४।१।५४	वस्त्रधारणी २. ४।३।५३	वाचोयुक्तिपटु १. २. ३. ५।४।४५	" १. ८।१।३८
वर्षण ३. २।२।७	वलीनक १. ३।३।२२३	वशीकार १. ३।६।११७			वातमृग १. ३।४।१६



[ वातल ]

वैजयन्तीकोषः

[ वार्ताहर ]

वातल १. २. ३. ४।४।४५
वातसख १. १।२।१७
वातसञ्चार १. ४।४।२७
वातसारथि १. १।२।१७
वातसुत १. ३।१।७०
वातापिसूदन १. ३।६।१५२
वातायन ३. ४।३।५४
वातायु १. ३।४।१६
वाताहार १. २. ३. ३।६।१३१
वाति २. १।२।४८
वातिक १. ४।१।२५
वातिङ्गन १. ३।३।१०२
वातुल १. ३।८।४३
वातूल १. २. ३. ७।५।८०
वात्या २. २।१।५१
" २. ५।१।१४
वात्सक ३. ५।१।१०
वात्स्यायन १. ३।६।१५९
वादन ३. ३।९।११४
" ३. ३।९।१२१
" ३. ३।९।१३१
" ३. ३।९।१३६
वादर १. २. ३. ४।३।११७
वादित्र ३. ३।९।११४
" ३. ३।९।१३६
वादित्रलगुड १. ३।९।१३६
वाद्य ३. ३।९।११४
वाद्यनिर्घोष १. ३।९।१३६
वाद्यवादकसामग्री २. ३।९।१४०
वान १. २. ३. ३।३।१०
" ३. ३।९।८
" १. २. ३. ६।५।८०
वानक ३. ३।६।१४
वानदण्डक १. ३।९।८
वानप्रस्थ १. ३।३।४३
" १. ३।६।१२४
" १. ८।१।४०

वानर १. ३।४।३९
" १. ८।६।७
वानवासिक १. ३।५।२०
वानस्पत्य १. ३।३।६
वानरी १. ३।३।३१
वान्ताशिन १. २. ३. ३।६।९
वान्ति २. ४।४।१२६
वापिम १. ३।६।६४
वापी २. ४।२।६
वाप्य ३. ३।८।९९
वाम १. १।१।२९
" १. १।२।५५
" १. २. ३. ६।४।१६
वामदेव १. १।१।४२
वामन १. १।१।१९
" १. १।२।८
" १. २. ३. ५।४।८१
वामलूर १. ३।१।४८
वामलोचना २. ४।४।५
वामा २. १।१।४८
" २. ४।४।५
वामी ३. ३।७।१०७
वायव्य १. २।१।९१
" १. २. ३. ३।६।१०१
वायस १. २।३।१६
" १. ८।६।६
वायसाली २. ३।३।२२६
वायसी २. ३।३।११२
" २. ३।३।१४९
वायु १. १।२।४७
वायुन १. १।१।२
( वायुन )
वायुवर्मन् ३. २।१।१
वायुसम्भवा २. ३।४।४४
वार २. ३. ४।२।३
वार १. ५।१।१
" १. ५।२।७
वारक ३. ३।७।५०
वारट १. ५।१।५१

वारण १. १।२।७
" १. ३।७।६१
" १. ४।२।१०
वारणावत ३. ४।३।९
वारणासी २. ४।३।७
वारखुसा २. ३।३।१७३
वारमुख्या २. ४।४।४२
वारवाण १. २. ८।५।२२
वारवाणि १. ८।१।४२
वारखी २. ४।४।२४
वाराणसी २. ४।३।७
वाराह ३. ३।१।१८
वाराही २. १।१।६४
" २. ३।३।२१०
वारि ३. ४।२।१
" २. ६।५।८२
वारिकूट १. ४।३।१५
वारिज ३. ३।८।११९
वारिधर १. २।२।१
वारिपर्णी २. ४।२।४६
वारिपिण्ड १. ४।१।४८
वारु १. ३।७।९०
" २. ६।२।३७
वारुणपाशक १. ४।१।५२
वारुणी २. १।१।५९
" २. ३।३।१०९
" २. ३।९।४६
वार्च ३. ३।३।१
वार्त ३. ४।४।१४२
" १. २. ३. ४।४।१४३
वार्ता २. २।४।३९
" २. ३।८।१
" २. १. ३. ६।५।२५
वार्ताकशाकट १. २. ३. ३।८।२१
वार्ताकशाकिन १. २. ३. ३।८।२१
वार्ताकी २. ३।३।१०२
" २. ३।३।१०४
वार्ताकु २. ३।३।१०२
वार्ताहर १. ३।९।६

वार्तिक ]

शब्दानुक्रमणिका

[ विकराल ]

वार्तिक ३. ३।६।५६
" १. ३।७।२९
वार्द्धक ४. ७।३।३०
" ३. ८।९।१७
वार्धुष ३. ३।९।५
वार्धुषिक १. २. ३. ३।९।८
वार्धुषिन् १. २. ३. ३।९।८
वार्धुष्य ३. ३।९।५
वार्ध्वाणस १. ३।४।८
( वाध्नीणस )
वार्मण ३. ५।१।१३
वार्मिक १. ३।५।४०
वार्पी २. २।१।८९
वाल १. ३. ४।३।१६०
" १. ४।४।९८
" १. ६।१।५४
वालक ३. ७।३।३१
वालकूर्च १. ४।४।१००
वालकेशी २. ३।३।२३०
वालधि १. ३।४।७४
वालनाटक १. ३।८।५४
वालपाशक १. ३।७।८१
वालपाश्या २. ५।३।१३६
वालमृग १. ३।४।२९
वालवायज १. ३।२।४०
वालवीज्य १. ३।४।६३
वालहस्त १. ३।४।७४
वालिका २. ४।३।१३५
वालिनी २. २।१।४२
वालुक ३. ३।८।९६
" ३. ४।१।२३
वालुका २ ब. ४।२।३३
" २. ७।२।२४
वालुकी २. ३।३।१६७
वालक १. २. ३. ४।३।११७
वालमीक १. ३।६।१५३
वालमीकि १. ३।६।१५३
वावदूक १. २. ३. ५।४।४५
वावाता २. ३।७।३२
वाशन ३. २।४।४

वाशा २. ३।३।१०२
वाशित ३. २।४।४
वाशिता २. ७।२।२२
वाशी २. २।१।२०
वास १. ३।३।१९१
" १. ३।७।१८
वासक १. ३।३।१०१
वास्तयेयी २. २।१।५७
वासन १. ४।३।४५
" ३. ४।३।१६७
" ३. ५।४।४९
वासना २. ४।३।१५८
वासनी २. ३।३।१६८
वासनीयक ३. ३।८।११६
वासन्त १. ३।३।६१
" १. ३।८।३७
वासन्ती २. ३।३।१८२
" २. ३।३।१८७
वासयोग १. ४।३।१५७
वासर १. ३. २।१।५५
" १. ७।१।७२
वासव १. १।२।१
" १. ३।६।१०८
वासस् ३. ४।३।११६
" १. ८।६।१६
वासागार ३. ४।३।२०
वासिक ३. ४।३।४१
वासिष्ठ ३. ४।४।१०६
वासी २. ३।९।३६
वासुकि १. ४।१।३
वासुदेव १. १।१।१२
" १. ८।१।३९
वासू २. ३।९।१०७
वास्तु १. ३. ४।३।१०
" १. ३. ६।५।८०
वास्तुक १. ३।३।१५४
वास्तुकशाकट १. २. ३. ३।८।२१
वास्तुकशाकिन १. २. ३. ३।८।२१
वास्तुमध्य ३. ४।३।१०

वास्तोष्पति १. १।२।२
वास्त्र १. २. ३. ३।७।१२९
वाह १. ३।४।५२
" १. ३।४।६५
" १. ५।१।५६
" १. ५।१।५८
" १. ५।१।५८
वाहन ३. ३।७।१२३
वाहनी २. ४।३।१७
वाहवारण १. ३।४।३३
वाहस १. ४।३।१९
" १. ७।१।६५
वाहि १. ८।९।१०
वाहिक १. ५।१।५३
वाहित १. ३।७।८७
" ३. ५।१।६४
वाहित्य ३. ३।७।७३
वाहिनी २. ३।७।५५
" २. ३।७।५८
" २. ४।२।२३
वाहिनीपति १. २. ३. ३।७।१४१
वाहीक १ ब. ३।१।२७
वाह्य १. ३।४।५२
" ३. ३।७।१२३
वि १. ३।२।२
" १. ८।१।६०
" ४. ८।७।६
विश १. २. ३. ५।१।२२
विशति २. ५।१।२६
विशतितम १. २. ३. ५।१।२२
विशतिभुज १. १।२।४२
विकङ्कत १. ३।३।३८
विकच १ ब. १।२।३७
" १. २. ३. ३।३।९
विकट १. २. ३. ५।४।८२
" १. २. ३. ५।४।१२६
" १. २. ३. ७।४।२६
विकटा २. ३।७।४७
विकराल १. ३।४।७



[ विकराल ]

विकराल १. २. ३. ५४८२	विकरालिन् १. ५३१९	विकर्ण १. ३१७१८२	विकर्तन १. २११११	विकर्मन् ३. ३१६११७	विकल १. २. ३. ५४८६	विकला २. ३१६५०	विकलाङ्ग १. २. ३. ५४१११	विकल्पना २. २४१४०	विकसा २. ३१३१३५	विकार १. ५२२२२	" १. ७१६६	विकालक १. २११६५	विकिर १. २३३३	" १. ४२१८	" १. ७११७०	विकिष्कु १. ३११५६	विकुण्ठना २. ३१६१७५	विकुर्वाण १. २. ३. ५४३३	विकृत १. २. ३. ३१९७८	" ३. ३१९५५	" १. २. ३. ४११४४	" १. २. ३. ७१४२५	विक्र १. ३१६६	विक्रम १. ५२११६	" १. ५२११७	विक्रय १. ३१८६९	विक्रयिक १. २. ३. ३१८६८	विक्रान्त १. २. ३. ३१७१४७	" ३. ३१९४८	विक्रायिक १. २. ३. ३१८६८	विक्रेतृ १. २. ३. ३१८६८	विक्रेय १. २. ३. ३१८६९	विकलव १. २. ३. ५४१६७
----------------------	-------------------	------------------	------------------	--------------------	--------------------	----------------	-------------------------	-------------------	-----------------	----------------	-----------	-----------------	---------------	-----------	------------	-------------------	---------------------	-------------------------	----------------------	------------	------------------	------------------	---------------	-----------------	------------	-----------------	-------------------------	---------------------------	------------	--------------------------	-------------------------	------------------------	----------------------

वैजयन्तीकोषः

विद्युभा २. २११२३	विद्योभ १. ३१७७४	विगण्डीर ३. ३१३१५१	विगत १. २. ३. ७१४२४	विगतनासिक १. २. ३. ५४११२	विगता २. ३१६४८	विगन्धिका २. ३१२१२	विगन्धिन ३. ४२३३६	विगम १. ५२२२७	विगर्वा २. २४१२८	विगीत १. २. ३. ३१६११	विग्रक १. ३१३८४	विग्र १. २. ३. ५४११२	विग्रह १. ३१७६	" १. ५२३३	" १. ७११६८	विघन १. ३१६१०२	विघस १. ३१६६७	विघसासिन् १. ३१६४१	विघूणिका २. ४१४९१	विघ्न १. ५२३४	विघ्नेश १. १११५३	विचकिल १. ३१३१८३	विचक्षण १. ३१६२३४	विचक्षणा २. ३१८४७	विचयन ३. ५२३४२	विचर्चिका २. ४१४१२३	विचारिका २. ३१७३७	विचारोक्ति २. २१८२८	विचिकित्सा २. ३१६१७७	विचुल १. ३१३५०	विचोलक १. १२३४३	विच्छित्ति २. ३१९१३	विच्युत १. २. ३. ५४११०२	विजन १. २. ३. ५४१११९	विजन्मन् १. ३१५१०४	( द्विजन्मन् )	विजय १. ३१७१५९	" १. ३१७२०९
-------------------	------------------	--------------------	---------------------	--------------------------	----------------	--------------------	-------------------	---------------	------------------	----------------------	-----------------	----------------------	----------------	-----------	------------	----------------	---------------	--------------------	-------------------	---------------	------------------	------------------	-------------------	-------------------	----------------	---------------------	-------------------	---------------------	----------------------	----------------	-----------------	---------------------	-------------------------	----------------------	--------------------	----------------	----------------	-------------

[ चिताली ]

विजयच्छन्द १. ४३११३९	विजविल १. २. ३. ५३३४	विजाता २. ४१४१७	विजाति २. ३१४२६	विजिज्ञासा २. ४१६१७५	विज्ञ १. २. ३. ५४११९	विट १. २११७०	" १. ४१३३९	विटका २. ४३३३८	विटकान्ता २. ३३३२१२	विटङ्क १. ३३३१७२	" १. ३. ४३३५४	विटप १. ३३३१६	" १. ३१८७३	" १. ३. ७१५१६२	विटपिन् १. ३३३४	विटाटिका २. ३३३१४६	" २. ४३३३८	विटाश्रय १. ४३३२७	विट्खदिर १. ३३३६४	विट्चार १. ३३३७१	विट्पति १. १११४	विड १. ३१८१२४	विडङ्क १. ३. ३१८१७	" १. २. ३. ८१९३८	विड्ड ३. ४१४१०८	वितंस १. ३१९४१	वितत ३. ३१९११५	" ३. ३१९११६	वितथ १. २. ३. २१४१७	वितरण ३. ३१६११८	वितर्क १. ३१६१७६	वितर्दिका २. ४३३३६	वितस्ति २. ३११५३	" २. ४३४८०	" १. २. ८१९२७	वितान ३. ३१७१९०	" १. ३. ४३३१२३	" १. २. ३. ७१५७६	चिताली २. ३१९१२४
----------------------	----------------------	-----------------	-----------------	----------------------	----------------------	--------------	------------	----------------	---------------------	------------------	---------------	---------------	------------	----------------	-----------------	--------------------	------------	-------------------	-------------------	------------------	-----------------	---------------	--------------------	------------------	-----------------	----------------	----------------	-------------	---------------------	-----------------	------------------	--------------------	------------------	------------	---------------	-----------------	----------------	------------------	------------------

[ वितुन्नक ]

वितुन्नक ३. ३१४४२	वित्त ३. ३१८७३	" १. २. ३. ६१५७४	वित्तेश १. १२१५७	विदग्ध १. ५३११८	" १. २. ३. ५४१२०	विदण्ड १. ४३३५०	विदर १. ५२३४१	विदल १. २. ३. ३३३१४	विदा २. ३१६१६३	विदारक १. ४२३३१	विदारण ३. ८३३१२	विदारी २. ३३३२३	" २. ३३३१९५	विदित १. २. ३. ५४११०१	" १. २. ३. ७१४२३	विदिश २. २१३३	विदुर १. २. ३. ५४१४३	विदुल १. ३३३३१	( अम्बुप्रिय )	विदूषक १. ३१९६९	विदूषिका २. ३१६५३	विदेह १. ३. ३१३३०	विद्ध १. २. ३. ५४११७	" १. २. ३. ५४११११	" १. २. ३. ६१४१७	विद्धकर्णी २. ३३३३३१	विद्धायुध ३. ३१७१७३	विद्या २. ३१६२७	" २. ३१६३०	विद्याधर १. १३३४	विद्युत् २. २३३३	" २. ३३३१२	विद्रधि १. २. ४१४१३७	विद्रव १. ३१७२११	विद्रुत १. २. ३. ४३३९५	विद्रुम १. ३३३३९	" १. ७११६५	विद्रुमलता २. ३१८१५५	विद्रुस् १. ३१६२३४
-------------------	----------------	------------------	------------------	-----------------	------------------	-----------------	---------------	---------------------	----------------	-----------------	-----------------	-----------------	-------------	-----------------------	------------------	---------------	----------------------	----------------	----------------	-----------------	-------------------	-------------------	----------------------	-------------------	------------------	----------------------	---------------------	-----------------	------------	------------------	------------------	------------	----------------------	------------------	------------------------	------------------	------------	----------------------	--------------------

शब्दानुक्रमणिका

विद्वेष १. ३१६१८४	विधवा २. ४१४१४	विधा २. ३१६३५	" २. ६१२३४	विधातृ १. १११६	विधान ३. ७३३३३	विधि १. १११९	" १. ३१६३३	" १. ३१६११३	" १. ३१६१८९	" १. ५२३२५	" १. ६११५५	विधु १. २११२४	" १. ६११५५	विधुत १. २. ३. ५४११०१	" १. २. ३. ७१४२३	विधुन्तुद १. २१३३६	विधुर १. १२३४१	" १. २. ३. ७१४२७	विधुवन ३. ५२३४०	विधूनन ३. ५२३४०	विधेय १. २. ३. ५४१२८	" १. २. ३. ५४३३२	विनय १. ७११७०	विनयग्राहिन् १. ३१७६७	विना ४. ८१८४	विनायक १. १११३२	" १. १११५३	विनिमय १. ३१८७१	विनियोग १. ५२३२५	विनीत १. २. ३. ७१५७४	विनोद १. ३१६१८७	विन्दु १. २. ३. ५४१४३	विन्ध्य १. ३३३३३	विन्ध्यकूटक १. ३१६१५१	विन्ध्यवासिन् १. २१११५८	विन्ध्यवासिनी २. १११६३	विन्न १. २. ३. ५४१९९	" १. २. ३. ६१४१७
-------------------	----------------	---------------	------------	----------------	----------------	--------------	------------	-------------	-------------	------------	------------	---------------	------------	-----------------------	------------------	--------------------	----------------	------------------	-----------------	-----------------	----------------------	------------------	---------------	-----------------------	--------------	-----------------	------------	-----------------	------------------	----------------------	-----------------	-----------------------	------------------	-----------------------	-------------------------	------------------------	----------------------	------------------

[ विप्रव ]

विपक्षक १. ३१७४२	विपक्षी २. ३१९११६	" २. ७२३२४	विपण १. ३१८६९	विपणि २. ४३३३५	" २. ७२३२४	विपत्ति २. ३१६१९१	विपथ १. ३११५०	विपद् २. ३१६१९१	" २. ३१७४	विपर्यय १. ५२३५	विपर्यास १. ५२३५	विपश्चित् १. ३१६२३४	विपाक १. ३१६१८९	" १. ७११६७	विपाकिन् १. २३३१२७	विपादिका १. ४१४१२२	( विपाटिका )	विपाश २. ४२३२७	विपाशा २. ४२३२७	विपिन ३. ३३३११	विपुल १. २. ३. ५४१८०	विपुला २. ३१३२	विप्र १. ३१६१	विप्रकार १. ५२३२२	विप्रकण्ड १. ३१६६२	विप्रकृष्ट ३. ५४१४२	विप्रतिसार १. ३१६१८५	विप्रप्रिय ३. ३१८३९	विप्रयाण ३. ३१७२१०	विप्रयोग १. ५२३१६	विप्रलम्भ १. ५२३२०	विप्रलाप १. २३३२९	" १. ८११४१	विप्रशेषित ३. ३१६६७	विप्रशिका २. ४३३११	विप्रिय ३. ३१७४७	" १. २. ३. ५४१६९	विप्रु २. २३३८	विप्रुष १. २३३२	विप्रुव १. ३१६१९०
------------------	-------------------	------------	---------------	----------------	------------	-------------------	---------------	-----------------	-----------	-----------------	------------------	---------------------	-----------------	------------	--------------------	--------------------	--------------	----------------	-----------------	----------------	----------------------	----------------	---------------	-------------------	--------------------	---------------------	----------------------	---------------------	--------------------	-------------------	--------------------	-------------------	------------	---------------------	--------------------	------------------	------------------	----------------	-----------------	-------------------



[ विबुध ]

विबुध १.	३१५२०
विबुध १.	७११६६
विभण्ड १.	३१५२६
विभञ्जन ३.	५२१३९
विभाकर १.	२१११४
विभाग १.	५२१७
विभाजन ३.	३१३१५१
विभात ४.	२११६८
विभाव १.	३१५८०
विभावनी २.	३१३१८५
विभावरी २.	२११६७
विभावसु १.	८११३९
विभाषण ३.	२११२४
विभीतक १. २. ३.	३१३१७५
विभीदक १.	३१३१७६
विभीषण १.	११२१५
विभु १. २. ३.	६१५८१
विभृति २.	८१५३४
विभूषण ३.	५१३१३३
विभ्रम १.	३१२१९६
" १.	७११६९
विमनस १. २. ३.	५१४३४
विमल १.	३१२४१
" १. २. ३.	५१४६६
विमातृज १.	४१४३३
विमान १. ३.	७१५८१
वियत् ३.	२१११३
वियद्गङ्गा २.	११३१३
वियम १.	५२१३०
वियात १. २. ३.	५१४१७
वियाम १.	५२१३०
वियुन १.	११२६
वियोग १.	५२१२६
विरजा २.	३१३१९२
विरत ३.	३१७२०२
विरति २.	५२१३६
विरल १. २. ३.	५१४१२५
विरह १.	५२१२६
विराग १.	३१६१६७

वैजयन्तीकोषः

विरागार्ह १. २. ३.	५१४१५४
विराज् १.	३१७११
विराव १.	२१४३३
विरावृत्त ३.	३१८१७९
विरिञ्च १.	१११७
विरुक्तकोद्व १.	३१८१५५
विरुक्ता ३.	२१४३३
विरूप १. २. ३.	५१४१२६
विरूपाक्ष १.	१११४२
विरोचन १.	८११४२
विरोध १.	३१६१८४
विरोधन ३.	५२१३०
विरोधिन् १.	३१७४२
विरोधोक्ति २.	२१४२९
विलक्ष १. २. ३.	५१४२९
विलम्बित ३.	३१९१२३
" १. २. ३.	८१४१२
विलम्भ १.	५२११९
विलाप १.	२१४२९
विलाव १.	५२१२९
विलास १.	३१९१३
विलिष्ट १. २. ३.	५१४८४
विलीन १. २. ३.	४१३१९५
" १. २. ३.	७१४२३
विलेपी २.	४१३८०
विलेप्या २.	४१३८०
विलोमिका २.	३१३१११
विल्वगन्ध १.	३१३१२१
विविध १. ५	७११७१
विवरण ३.	२१४२६
विवर्ण १.	३१५२
" १. २. ३.	७१४२४
विवर्णता २.	३१९८१
विवश १. २. ३.	७१५२७
विवस्वत् १.	१११३
" १.	२१११२
विवाद १.	२१४२४
विवाह १.	३१६१४
विवाहाम्नि १.	११२२७
विविक्त १. २. ३.	५१४११९

( १३८ )

[ विशुन्धलवण ]

विविक्त १. २. ३.	७१४२४
विवृताक्ष १.	२१३१३
विवेशिका २.	४१३१४
विवेचन ३.	५२१४२
विश १.	३१५२
" १.	३१८११
" २. ३.	४१४११९
" १. २.	८१५३९
विशङ्कट १. २. ३.	५१४८२
विशद १.	५१३१०
" १. २. ३.	५१४३३४
" १. २. ३.	७१४२५
विशय १.	३१६१७७
विशर १.	३१७२११
विशल्या २.	३१३१३१
विशस् १.	३१७२११
विशसन १.	३१७१५८
" ३.	३१७२१४
विशास्त्र १.	१११५७
" १.	७१५८३
विशाखा २.	२११४०
" २.	८१५५७
विशाखिका २.	३१६१२३
विशारद १. २. ३.	८१४१२
विशाल १.	४१३१२९
" १. २. ३.	५१४८०
" १. २. ३.	५१४८२
विशालता २.	५२१५
विशालत्वच् १.	३१३१७
विशाला २.	३१३१०३
" २.	३१३१७२
विशिख १.	३१७१७९
" १. २. ३.	७१५८१
विशिखा २.	४१३१६
विशिखाश्रय १.	३१७१७८
विशीर्णपाद् १.	११२३५
विशीर्णाङ्गी २.	३१६१५१
विशुन्धलवण २.	३१८१२१

[ विशेष ]

विशेष १.	३१६२०५
विशेषक १. ३.	४१३१४८
" १. ३.	८१९३०
विशेषभाग १.	३१७७६
विशोक १.	२१३२९
विश्राणन ३.	३१६११८
विश्लिष्ट १. २. ३.	५१४१२५
विश्लेष १.	५२१२६
विश्व १ व.	११३८
" १. २. ३.	५१४८६
" १. २. ३.	६१५७८
विश्वकद्रु १.	३१९३९
विश्वकर्मन् १.	११३६
" १.	८११४१
विश्वगोप्त् १.	८११३९
विश्वभृत् २ व.	२११२१
विश्वभेषज ३.	३१८७५
विश्वभर १.	८१५२२
विश्वरुचि २.	११२३०
विश्वरूप १.	११११५
विश्वरेतस् १.	१११८
विश्वविस्ता २.	२११७५
विश्वस्ता २.	४१४१४
विश्वहयंक १.	३१६८३
( विश्वहर्यत )	
विश्वा २.	३११३
विश्वात्मन् १.	१११६
" १.	७११६७
" १.	७११६७
विश्ववसु १. २.	८१५२३
विष ३.	३१२३३
" ३.	३११२४
" ३.	४१२२
विषघ्न १.	३१३५५
विषघ्नी २.	३१३१००
" २.	३१३१२७
" २.	३१३१३२
विषजित् ३.	३१८१६६
विषधर १.	४११६
विषपुष्पक १.	३१३५०
विषम १.	३१३२१६

शब्दानुक्रमणिका

विषमच्छद १.	३१३४७
विषमस्पृहा २.	३१६१७९
विषमालुध १.	१११२८
विषमोज्ञत १. २. ३.	५१४८३
विषय १.	३१७४८
" १.	५१३२
" १.	७११२२
विषयग्राम १.	५१११७
विषयिन् १. २. ३.	७१५७५
विषवृत्त १.	८१६१९
विषवैद्य १.	४११२५
विषा २.	३१८९०
विषाण १. २. ३.	७१५८२
विषाणिका २.	४१३२२
विषाणिन् १.	३१४५२
" १. २. ३.	७१५७७
" १.	८१६१४
विषाणी २.	३१३११६
विषाद् १.	३१६१९१
विषुव १. ३.	२११९०
विषुवत् १. ३.	२११९०
विषूचीन १. २. ३.	५१४९१
विष्कम्भ १.	७११६७
विष्किर १.	२१३१८
" १.	७११६६
विष्टप ३.	३१६२०६
विष्टर १.	३१३१४
" ३.	४१३१६४
" १.	७११६९
विष्टरश्रवस् १.	११११०
विष्टि १.	३१९५५
विष्टा २.	३१३१००
" २.	४१४११९
विष्टाख्य ३.	३१३३६
विष्टिका २.	३१८८१
विष्णु १.	११११०
" १.	१११२०
विष्णुकान्ता २.	३१३१२३

( १३९ )

[ विस्मय ]

विष्णुकान्ता २.	३१३१३४
विष्णुगुप्त १.	३१६१५९
विष्णुपद ३.	२१११
विष्णुपदी २.	४१२२४
विष्णुरथ १.	११३३८
विष्णुशक्ति २.	११३१६
विष्णार १.	२१४१९
विष्णुलिङ्गिनी २.	११२३०
विष्य १. २. ३.	५१४७१
विष्वक् ४.	८१८३
विष्वक्सेन १.	१११११
विष्वक्सेना २.	३१३१६६
विष्वच् १. २. ३.	५१४९१
विष्वद्भीचीन १. २. ३.	५१४९३
विष्वद्यच् १. २. ३.	५१४९३
विसंवाद १.	५२१२०
विसर १.	५१११
" १.	५१३२६
विसर्ग १.	११२८९
" १.	३१६३७
" १.	७११७०
विसर्जन ३.	३१६११८
विसर्जिका २.	२११९१
विसार १.	४११४२
विसृत् १. २. ३.	५१४११०
" १. २. ३.	७१४२६
विस्त १.	५११५१
विस्तर १.	५२१३
विस्तार १.	३१३१६
" १.	५२१३
विस्तीर्ण १. २. ३.	५१४८०
विस्तीर्णजानु २.	३१६१४७
विस्तृत १. २. ३.	५१४११०
विस्फोट १.	४१४१२३
विस्मय १.	३१६१८१
" १.	३१९७६
" १.	७११६५



[ विस्मरण ]

विस्मरण ३.	३१६१७७
विस्मृत १. २. ३.	५४११०९
विस्म ३.	४१४१०६
" ३.	४१४१०८
विस्मसजा २.	४१४१५४
विस्मन्ध १. २. ३.	५४१५२
विस्मम्भ १.	७११६६
विहग १.	२३३२
विहगाधिप १.	१११३८
विहङ्ग १.	२३३२
विहङ्गम १.	२३३२
विहङ्गिका २.	३१९६
विहनन ३.	३१९१०
विहसित ३.	३१९८३
विहस्त १. २. ३.	५४१६८
विहान १. ३.	२११६८
विहापन ३.	३१६११८
विहायस् १. ३.	७१५८०
विहायस ३.	२१११
विहार १.	४१३२८
" १.	७११६८
विहारिणी २.	३१६५२
विहास १. २. ३.	७१५८३
विहल १. २. ३.	५४१६७
वीकाश १.	७११६७
वीक्षा २.	३१६१८१
वीचि २.	४१२१४
" २.	६१२३५
वीज्य १.	३१८३१
" १.	३१८३२८
वीणा २.	३१९११६
वीणावंशशलाका २.	३१९१२०
वीणावाद १.	३१९१७०
वीत ३.	३१७८९
( पीत )	
" १. २. ३.	६१५७५
वीतक ३.	४१३११०
वीतराग १.	१११३५
वीतिहोत्र १.	१२११४

वैजयन्तीकोषः

वीथि २.	३१९१००
वीथिका २.	५२१४६
वीथी २.	२११४४
" २.	६२१३५
वीध १. २. ३.	५४१६६
वीनाह १.	३३३२२७
वीर १. २. ३.	३७११४७
" १.	३१९१७५
" १. २. ३.	६१५८२
वीरजयन्तिका २.	
	३७२०८
वीरण ३.	३३३२३१
वीरतृण ३.	३३३२३१
वीरपत्नी २.	४१४१३
वीरपाण ३.	३७२०२
वीरभद्र १.	१११५३
वीरभार्या २.	४१४१३
वीरमातृ २.	४१४१३
वीरल १.	४११५५
वीरविप्लावक १.	
	३१६७२
वीरवृक्ष १.	८१६१८
वीरशङ्कु १.	३७११८०
वीरशाक १.	३३३१५४
वीरसू २.	४१४१३
वीरस्कन्ध १.	३१४१९
वीरस्नाका २.	४१३१११
वीरहन् १.	३१६७१
वीराशंसन ३.	३७२०६
वीरासन ३.	३१६२२७
वीरधू २.	६२१३५
वीरोज्ज १.	३१६७०
वीरोपजीवक १.	३१६७१
वीर्य ३.	३७२१०
" ३.	४१४१११
" ३.	६३३३२
वीर्यकर १.	४१४११०
वीलक १.	३१५२८
वीवध १.	७११७१
वृक १ ब.	३११४०
" १.	३१४१८

[ वृद्ध ]

वृकधूप १.	३१८११०
" १.	३१८११२
वृकधूर्तक १.	३१४१७
" १.	३१४३८
वृकधोरण १.	३१४३२
वृकवाला २.	४३३४४
वृकस्थली २.	४३३९
वृकाम्लिका २.	३३३३४
वृक्कण १. २. ३.	५४११०२
वृक्तवर्हिस् १.	३३३१७८
वृक्क १.	४१४११२
वृक्ष १.	३३३४
" १.	८१९११
वृक्षक १.	३३३८३
वृक्षगृह १.	८१६१८
वृक्षमूलिन् १. २. ३.	
	३६२२९
वृक्षरुहा २.	३३३८५
वृक्षादनी २.	३३३८५
वृक्षाम्ल ३.	३१८१३२
वृक्षोत्पल १.	३३३७२
वृजिन १. २. ३.	५४१२३
" १.	७१५८४
वृत्तिद्रुम १.	४३३१४
वृत्तिमार्ग १.	३११५१
वृत्त ३.	३१६११५
" १. २. ३.	५४१८३
" १. २. ३.	६१५७६
वृत्ताङ्गी २.	३३३६७
वृत्तान्त १.	२४३३९
" १.	७११७१
वृत्ति २.	३१८११
" २.	३१८१७
" २.	३१९१०२
" २.	६३३३६
वृत्र १.	६११५६
वृत्रारि १.	१२११
वृथा ४.	८१७२८
वृथाजात १.	३३३७७
वृद्ध ३.	३१८१९६
" १. २. ३.	५४११६

[ वृद्ध ]

वृद्ध १. २. ३.	६१५८०
वृद्धकाक १.	२३३१७
वृद्धगोनस १.	४११३३
वृद्धनाभि १. २. ३.	
	४४१४६
वृद्धप्रपितामह १. ४४३०	
वृद्धप्रमातामह १. ४४३०	
वृद्धवयस् १. २. ३.	
	५४३
वृद्धश्रवस् १.	१२११
वृद्धा २.	४४२१
वृद्धि २.	३१८१५
" २.	३१८१४
" २.	४४१३१
" २.	५२३३
" २.	६२३७
वृद्धोक्ष १.	३१४१५
वृद्धयाजोव १. २. ३.	
	३१८८
वृन्त ३.	३३३२०
" १.	३३३१६८
" ३.	३४१५१
" ३.	४४१६८
वृन्ततुम्बी २.	३३३१६८
( वृत्ततुम्बी )	
वृन्ता २.	३३३६६
वृश्चिक १.	३३३१४६
" १.	४१३२
" १. २.	४१३३
" १.	४१३३
वृश्चिकच्छदा २.	३३३१२७
वृश्चिकाली २.	३३३१२६
वृष ३.	४३३३६
" १.	४४३२
" १. २. ३.	६१५७७
वृषण १.	४४३३
वृषणश्च १.	१२११०
वृषणवसु १.	१२१८
वृषध्वज १.	१११४२
वृषन् १.	१२११
" १.	६११५६

शब्दानुक्रमणिका

वृषपर्णी २.	३३३१४३
वृषपूतन १.	३३३१२२
वृषभ १.	३३२१५
" १.	३३४५२
वृषल १.	३३४५२
" ३.	३३८७६
" १.	३३९११
वृषलक्षणा २.	३३६५२
वृषली २.	७२३२४
वृषवाहन १.	१११४६
वृषसानु १.	८११४०
वृषस्यन्ती २.	४४१११
वृषा २.	३३३११३
" २.	३३३१७३
" २.	३३८१४
वृषाकपायी २.	८२१३३
वृषाकपि १.	८११४०
वृषाक्रान्ता २.	३३४५१
वृषाण १.	१११५२
वृषावाह १.	३३८१५७
वृष्णि १.	३३४६४
वृष्टि २.	२२३७
वृष्ट्य १.	३३३२२५
" १.	३३३३५
वृष्ट्यकन्द ३.	४२१४७
वृष्ट्या २.	३३८१४
वेग १.	१२१५५
" १.	६११५६
वेगसर १.	३३७१०८
वेगिन् १.	१२१५०
वेङ्कट १.	३३२१५
वेङ्कर १.	३३३१६९
वेजन १.	३३३१०८
वेटी २.	४२११५
वेण १.	३३३९८
" १.	३३३९८
वेणि २.	४२३३०
वेणिनी २.	४४३६
वेणी २.	३३३८६
" २.	३३३६५
" २.	६२३३६

[ वेन ]

वेणु १.	३३३२१४
" १.	६११५४
वेणुक १.	३३५१३
" ३.	३३७८२
वेणुका २.	३३९१२५
वेणुधमा १.	३३९१७१
वेणु ३.	४३३२७
वेतन ३.	३३९१५
वेतस १.	३३३३१
वेतस्वतृ १. २. ३.	
	३३१४३
वेताल १.	१२३३८
वेतालासन ३.	३३६२२१
वेज १.	३३३१३३
वेजधर १.	३३७२४
वेजवती २.	४१२८
वेद १.	३३६२७
वेदगर्भ १.	३३६११
वेदन १. २. ३.	७१५८३
वेदपठितृ १.	२६२३३
वेदयष्टि २.	३३६१२४
( देवयष्टि )	
वेदाङ्ग ३.	३३६२८
वेदि २.	३३६१०९
" २.	३३६११०
वेदिका २.	४३३३६
" २.	७२३२५
वेदितृ १. २. ३.	५४१४३
वेदिपर १ ब.	३३३३७
वेद्यास्तरण ३.	२६९११
वेधक १.	३३८१२०
वेधनिका २.	३३९१८
वेधमुख्यक १.	३३३११७
वेधमुख्या २.	३३४३६
वेधस् १.	११११९
" १.	६११५७
वेधित १. २. ३.	५४१११
वेध्य ३.	३३७१९४
वेध्या २.	३३९१३५
वेन १.	३३५८४
" १.	३३५९७



वेन ]	वैजयन्तीकोषः	[ वैश्वदेवामि	
वेन १.	३।५।९९	वैदेहक १.	३।५।७८
वेपथु १.	३।९।८५	" १.	३।८।७२
" १.	३।९।८९	वैदेही २.	३।८।७७
वेमन् १.	३।९।८	वैद्य १. २. ३.	४।४।१४३
वेल १.	३।३।२५	वैद्यमातृ २.	३।३।१०२
वेलज १.	५।३।३६	यैद्यशास्त्र ३.	३।६।२९
वेलव १.	३।५।२२	वद्युत ३.	३।१।१९
(पेलव)		वैद्युत्त्वत १.	३।१।१२
वेला २.	४।२।१३	वैद्योत १. २. ३.	३।२।१९
" २.	४।२।३३	वैद्यव्यलक्षणोपेता २.	
" २.	६।२।३६		३।६।५३
वेलान १.	५।३।३६	वैधात्र १.	१।३।७
वेल्ह ३.	३।८।९७	वैधेय १. २. ३.	५।४।२१
वेल्हन ३.	३।८।७९	वैनतेय १.	१।१।३७
वेल्हित १. २. ३.	५।४।९५	वैनथिक १. २. ३.	
" १. २. ३.	७।४।२३		३।७।१३०
वेश १.	३।५।१८	वैनीतक १. ३.	३।७।१३७
(उग्रवेश)		वैपरीत्य ३.	५।३।५
" १.	४।३।३५	वैमात्रेय १.	४।४।३३
वेशनी २.	४।३।२४	वैमेय १.	३।८।७१
वेशन्त १.	४।२।६	वैयथित १.	३।६।१०७
वेशवार १.	४।३।८७	वैयाघ्र १. २. ३.	३।७।१२८
" १.	४।३।९०	वेर ३.	३।६।१८४
वेशमन् ३.	४।३।१८	वेरङ्गिक १. २. ३.	
वेशमस्थूणा २.	४।३।३९		५।४।५४
वेश्य ३.	३।३।१८४	वेरशुद्धि २.	३।७।२०९
वेश्या २.	४।४।२४	वेराग्य ३.	१।१।४७
वेश्यागृह ३.	४।३।३३	" १.	३।६।१६७
वेश्याचार्य १.	३।९।७०	वेरिन् १.	३।७।४१
वेश्याजनाश्रय १.	४।३।३५	वैवधिक १.	३।९।६
वेश्यापति १.	४।४।३९	वैवस्वत १.	१।२।३३
वेप १.	३।९।६८	वैशाख १.	२।१।८३
" १.	४।३।१३२	" १. ३.	३।७।१८६
वेष्ट १.	३।८।१०९	" १.	३।९।३१
" ३.	६।३।३२	वैशाखिन् १.	३।७।७६
वेष्टन ३.	३।६।१०५	वैशाखी २.	२।१।७५
" ३.	४।४।९३	वैशिख ३.	३।७।१७५
" ३.	७।३।३४	वेश्य १.	३।८।१
वेष्टावार ३.	३।८।१२३	वेश्यकुण्ड १.	३।५।६३
वेष्टित १. २. ३.	५।४।९६	वैश्रवण १.	१।२।५७
वेसर १.	३।७।१०८	वैश्वदेवामि १.	१।२।२७

पेशवानर ]	शब्दानुक्रमणिका	[ व्रत			
पेशवानर १.	११११४	व्यवहार १.	८११४३	व्यालालुध ३.	३८८१९९
" ३.	२११४९	व्यवहित ३.	५११४२	व्यालि १.	३६१५८
पेशवानरी २.	२११४८	व्यवाय १.	७११६५	व्यावहारी २.	८११४
पेशयिकी २.	३१७३५	व्यष्ट ३.	३११२४	व्यास १.	१११३०
पेशणव १.	३६१०८	व्यसन ३.	७३३३२	" १.	१११३१
पेशणवी २.	११११६	व्यसनार्त १. २. ३.	५११६८	" ३.	३६१७६
" २.	१११६५	व्याकरण ३.	३६१२८	" १.	५१२३३
पेशणुत ३.	३६१५५	" ३.	८३१११	व्युत्क्रम १.	५१२१६
पेशारिण १.	४११४१	व्याकुल १. २. ३.	५११६८	व्युत्थान ३.	५१२२०
पेशायस ३.	३१७१८८	व्याकृति २.	५१२३४	" ३.	७३३३१
पेशासिक २.	३१७१७	व्याकोच १. २. ३.	३३३९	व्युत्पन्न १. २. ३.	५११४२
पेशखान १.	३१७१०२	व्याघात १.	३३३४८	व्युप १. २. ३.	३६१३२
पेशाट्ट ४.	८१८३	व्याघ्र १.	३३३३	व्युष्ट ३.	२११६८
पेशाट्ट ४.	८१८३	व्याघ्रक १. ३.	४३३४३	व्युष्टि १. २. ३.	३६१२६
पेशाट्ट ४.	८१८३	व्याघ्रनख ३.	३१८१९	" १. २. ३.	६१२३५
व्यसक १. २. ३.	५११२४	व्याघ्रपाद १.	३३३३८	व्यूढ १. २. ३.	५१४८०
व्यक्त १.	५३८	व्याघ्रपुच्छक १.	३३३६५	" १. २. ३.	५१४८३
" १. २. ३.	६१५७२	व्याघ्राट १.	३३३१९	व्यूति २.	३१९३२
व्यङ्गा २.	३६१५०	व्याज १.	३६१९५	व्यूह १.	५११२
व्यजन ३.	४३३१५९	" १.	६११५४	" १.	६११५६
व्यञ्जक १.	३१९१८	व्यादीर्णस्य १.	३३३११	व्योकार १.	३१९१६
व्यञ्जन १.	३३३२३	व्याध १.	३१३३८	व्योमकेश १.	१११४१
" १. ३.	३६३६	व्याधाम १.	११२३३	व्योमगुण १.	११३११
" १. २. ३.	३६१९३	व्याधि १.	४३३३८	व्योमधारण १.	३१२३५
" ३.	४३३८५	" १.	८६३८	व्योमन् ३.	२१११
" ३.	४३३१०३	व्याधित १. २. ३.	४३३४४	व्योमसम्भवा २.	३३३४४
" ३.	७३३३०	व्यापन १.	५१२३१	व्योमाख्य ३.	३१२१५
व्यतिकर १.	८११४१	व्यापलण्डिका २.	४३३८४	" ३.	३६१३६१
व्यतिहार १.	५१२३६	व्यापादन ३.	३१७२१५	व्योष ३.	३१८८०
व्यत्यय १.	५१२३५	व्याप्य १.	४३३३८	व्रज १.	३१९३१
व्यत्यास १.	५१२३६	व्यप्च १.	२११२७	" १.	५१११
व्यथा २.	३६११८७	व्याम १.	४३३८२	" १.	६११५४
व्यध्व १.	३६११५०	व्यायत १. २. ३.	७३३२४	व्रज १. ३.	३१७२१७
व्यन्तर १.	४३३१९	व्यायाम १.	४३३८२	व्रजघ्नी २.	३३३१५७
व्यय १.	३६१४४	" १.	७३३६८	व्रजबन्ध १.	४३३१४०
व्यर्थ १. २. ३.	५१३१२९	व्यायोग १.	३१९१०१	व्रत ३.	३११३३
व्यलीक ३.	५१२३५	व्याल १.	३३३७३	" १ व.	३११३२
" १. २. ३.	७३३७९	" १.	४३१४	" १. ३.	३६११४
व्यवच्छेद १.	३१७१९२	" १. २. ३.	६१५७४	" १. ३.	३६१३६
व्यवधि १.	११२३६३	व्यालम्राह्म १.	४३३२५	" १.	६३३३३
व्यवहार १.	३१८३५				



## व्रतति ]

व्रतति २.	३३३७
व्रतती ३.	३३३७
व्रतसङ्ग्रह १.	३३३८७
व्रतिन् १.	३३३७
" १.	३३७९०
व्रश्चन १.	३३३३५
व्राजिक ३.	३३३१४८
व्रात १.	३३३५१
" १.	३३३५९
" १.	५१११
व्रात्य १.	३३३५९
" १.	३३३५०२
" १.	३३३११९
व्रीड १. २.	८१९२७
व्रीला १.	३३३१९४
व्रीहि १ व.	३३३२३
" १.	३३८३१
" १.	३३८३२
" १.	३३८६३
" १.	८१९५७
व्रीहिकङ्क १.	३३८४०
व्रीहिन् १. २. ३.	५१११९
व्रीहिमत् १. २. ३.	५१११९
व्रीहेय १. २. ३.	३३८१९
श	
शंसा २.	२१३३५
" २.	६१२४१
शंस्य १.	११२२४
शक १.	३३३७४
" १.	३३३७४
" १.	६१५९१
शकट १.	३३३२०९
" १. ३.	३३७१२५
शकटाविल १.	२३३१२
शकल १. ३.	४१४५६
" ३.	७३३३४
शकलज्योतिस् १.	४१११८
शकुटा २.	३३७७९
शकुन १.	२३३३

## वैजयन्तीकोषः

शकुन ३.	८३३१६
शकुनि १.	२३३३
शकुन्त १.	२३३३
" १.	२३३३२
" १.	७११७४
शकुन्ति १.	२३३३
शकुलाक्ष १.	३३३२००
शकुलादनी २.	३३३१९७
" २.	३३८८६
शकुलार्भक १.	४११४५
शकुलिन् १.	४११४१
शकुत् ३.	४११११८
शक्ति २.	१११३६
" २.	३३३१६१
" २.	३३७५
" २.	६१२३८
शक्तिपाणि १.	१११५५
शक्र १.	६११५७
शक्रवृत् १.	८१६१८
शक्राख्य १.	३३३७३
शकल १. २. ३.	५११४४
शक्ररी २.	२११२१
" २.	७१२२५
शङ्कर १.	१११३९
शङ्का २.	६१२३८
शङ्किल १.	३३७८७
शङ्कु १.	११२४१
" १.	२३३६
" १.	३३७८५
" १.	३३७१६७
" १.	४१४६१
" १.	५११३१
" १.	६११५९
" १. ३.	८१९३०
शङ्कुकर्ण १.	८११४४
शङ्कुमूली २.	२११७३
शङ्कुला २.	३३३१७०
शङ्ख १.	११२६०
" १.	३३३४१
" १.	३३८१०१
" ३.	४११५५

## [ शतभिषज् ]

शङ्ख ३.	५११२८
" १. ३.	६१५८३
" १.	८१६१४
शङ्खक १.	४१४९६
शङ्खकार १.	३३५६३
शङ्खद्वीप ३.	३३११४
शङ्खनख १.	४११५६
शङ्खपात्र ३.	३३६६२
शङ्खपाल १.	४१११२
शङ्खमुख १.	४११५३
शङ्खिनी २.	३३३११६
शची २.	११२११
शचीपति १.	११२३
शचीवल १.	३३९६६
शठ ३.	३३३३२
" १.	३३३३३
" १.	३३३३७
" १.	३३३७६
" १.	३३८४१
" १. २. ३.	५१४२२
शण्डपुष्पिका २.	३३३९८
शण्ड १.	३३८१३९
शण्डिली २.	१११५९
शत ३.	५११२८
" ३.	५११३१
शतकोटि १.	११२१३
शतघ्नी २.	३३७१९९
शततम १. २. ३.	५११२३
शतद्रु २.	४१२२७
शतधारक ३.	११२१३
शतधृति १.	१११८
शतपत्र ९.	२३३३३
" ३.	४१३३८
शतपदी २.	४१३३३
शतपर्व ३.	३३८९२
शतपर्वन् २.	३३३१४९
" १.	३३८५४
" ३.	४१३३३
" १. २. ३.	८१५२३
शतप्रास १.	३३३१९२
शतभिषज् १.	२११४३

## [ शतभीरु ]

शतभीरु १.	३३३१८३
( शतभीरु )	
शतमन्यु १.	११२१५
शतमान ३.	५११४५
" ३.	५११५०
शतमुखी २.	१११६०
शतमूर्धन् १.	३३१४८
शतमूली २.	३३३१४२
शतवीर्या ३३३२३३	
शतवेधिन् १.	३३८१३३
शतद्वदा २.	२१२४
शताङ्ग १.	३३७१२४
शतानन्द १.	१११८
" १.	११११४
" १.	३३६१५६
शतावरी २.	३३३१४२
शतावर्त १.	११११४
शतावर्ता २.	२१२४
शत्रु १.	३३७३९
" १.	३३७४०
" १. २.	८१९४७
शत्रुघ्न ३.	३३७१५७
शनक १.	३३५३०
शनकैः (-स्) ४.	८८११६
शनि १.	२११३६
शनैः (-स्) ४.	८८११६
शनैश्चर १.	२११३५
शपथ १.	७११७३
शफ १.	३३७९९
शफरी २.	३३३९४
" १. २.	४११४४
शबर १ व.	३३१३३
" १.	३३५२३
शबल १.	५१३२३
शबली २.	३३४४४
शब्द १.	२३३१
" १.	५३३१७
" १.	६११५९
शब्दकार १. २. ३.	
शब्दग्रह १.	४११२६

## शब्दानुक्रमणिका

शब्दन १. २. ३.	५१४४८
शम् ४.	८८११७
शम १.	३३१७६
" १.	५१२२७
शमथ १.	५१२२७
शमन १.	११२३५
" ३.	३३६९४
" १.	७१५८७
शमल ३.	४१४११८
" ३.	७३३३४
शमित १. २. ३.	
" ५१४११४	
शमिता २.	४३३६८
शमी २.	३३३८९
" २.	३३८६५
शमीधान्य ३.	३३८६२
शमीफला २.	३३३१४८
शम्फली २.	४१४२५
शम्ब १.	६११५८
शम्बर १.	३३४१३
" १.	४११४२
" १. ३.	७१५८४
शम्बरारि १.	१११२८
शम्बरी २.	३३३११३
शम्बल १. ३.	३३९७
शम्बाकृत १. २. ३.	
३३८२३	
शम्बूक १.	४११५७
" १.	४३३३७
" १.	४३३६७
शम्बूकावर्त १.	४१४१३०
शम्भर १.	३३३१८८
शम्भल १.	३३७९६
शम्भु १.	६११५७
" १.	८६११
शम्या २.	३३८२८
शम्याक १.	३३३४८
शय १.	४११२८
" १.	४३३१२८
" १.	४१४१२३
शयणढक १.	४११२६

## [ शरि ]

शयथ १.	७१५८५
शयन ३.	४३३१६५
" ३.	४३३१६७
" १. ३.	७१५८५
शयनीय ३.	४३३१६५
शयान १.	४११२८
शयालु १.	३३३३८
" १. २. ३.	५१४३९
शयित १. २. ३.	५१४३९
शयीचि १.	११२३६
शयु १.	४३३१९
शय्य ३.	४३३१८
शय्या २.	४३३१६५
" २.	६१२४१
शर १.	११२५४
" १.	३३३२२८
" १.	३३७१८०
" १.	३३८१४७
" १.	६११५८
" १.	८६११६
शरज १.	१११५४
शरजालक ३३७१८३	
शरण ३.	८३३१७
शरद् २.	२११८९
" २.	२११९१
" २.	६१२३८
शरदण्ड १ व.	३३३३९
शरभ १.	३३३३२
शरभा १.	३३६५१
" २.	३३७५२
शरण्य १. २. ३.	
३३७१९४	
" १. २. ३.	८१९३२
शराटिका २.	२३३११
शरादान ३.	३३७१८९
शरायुध ३.	३३७१७३
शरारु १. २. ३.	५१४४२
शराव १.	४३३५९
शरावती २.	४३३३०
शरासन ३.	३३७१७३
शरि १.	३३७१७३



## शरि ]

वैजयन्तीकोषः

## [ शान्तिगृह ]

शरि १.	३४४७४	शशादन १.	२३३३०	शाक्य १.	१११३४
(चरि)		शशिन् १.	२११२४	शाक्यसिंह १.	१११६४
शरीर ३.	४४४५२	शशिभूषण १.	१११३९	शकर १.	३४४५३
शरु १.	२३३२०	शशिसेखर १.	१११३९	शाख १.	१११५७
शर्करा २.	३४४१३४	शशोर्ण ३.	३४४११८	शाखा २.	३३३१५
" २.	७२२२६	" ३.	४१२२२	" २.	६२२३९
शर्करिल १. २. ३.		शशवत् ४.	४७२२८	शाखापुरी २.	४३३११
	३११४४	" ४.	४४४६	शाखामृग १.	३४३३९
शर्मन् ३.	३६१८९	" ४.	४४४११	शाखारण्ड १. २. ३.	
शर्व १.	१११४०	" ४.	४४४१२		३६११३
शर्वर १. २.	७५४८४	शकुली २.	४३३७५	शाखास्थि ३.	४४४११६
शर्वरी २.	२११५७	" २.	७२२२६	शाखि १ ब.	३११२७
" २.	४६१५	शष्प ३.	३३३२३५	शाखिन् १.	३३३५
शर्वाणी २.	१११५८	शस्त १. २. ३.	५४११०६	शाखोट १.	३३३७७
शाल १.	१११५४	शस्त्र ३.	३६११११	शाङ्खिक १.	३२११७
" ३.	३३३३७	" ३.	३४३१५७	शाट १.	४३३२७
" १.	३३३६६	" ३.	३४३१९६	" १. २.	४१२२६
शालक १.	२३३४	" ३.	३४४२६	शाटिका २.	४३३१२७
शालभ १.	२३३४३	" ३.	६३३३३	शाटी २.	४१२२६
शालल ३.	३३३३७	शस्त्रक १.	३४४१३१	शाडव १.	५३३२८
" २. ३.	३३३३७	शस्त्रचार १.	३४४१३१	शाडविक १.	५३३४०
शालाका २.	३४३१९९	शस्त्रमार्ज १.	३४४१५	शाण १.	३२११९
" २.	३११३१	शस्त्रमुख ३.	३४३१८६	" १.	५११४७
शालाट १.	५११६१	शस्त्राख्य ३.	३२३३३	" १.	५११६३
शालाट्ट १. २. ३.	३३३१०	शास्त्रिका २.	३४३१६३	शाणी २.	४३३१३०
शालक ३.	६३३३२	शाक १.	३३३७६	शात ३.	३६११८९
शालमलि १. २.	३३३१०	" १.	३४४६२	शातकुम्भ ३.	३३३२०
शाल्य १.	३३३३७	" १. ३.	४३३१०	शातर १.	२११८२
" १. ३.	३४३१६७	शाकट १. २. ३.	३४३५८	शात्रव १.	३४३४१
" १. ३.	३११४१	" १.	५११६१	शाद १.	३३३२३५
शाल्यक १.	३३३६३	" ३.	५११६१	" १.	३४४२६
शाल्लक १. २.	४१२२६	शाकटीन १.	५११६१	" १.	६१५५७
शव १. ३.	३४३२१६	शाकफला २.	३३३१७०	शाङ्गल १. २. ३.	३११४३
शवयान ३.	३४३२१६	शाकशाकट १. २. ३.		शानक १.	२११८२
शवर १.	३३३५२		३४४२०	शान्त १.	३३३३४९
शवशीर्षक १.	३६११०७	शाकशाकिन १. २. ३.		" १.	३४४७५
शश १.	३२३१५		३४४२०	" १. २. ३.	५४३११४
" १.	३३३३१	शाकुनिक १.	३११४०	शान्ति २	५२३२७
शशभृत् १.	२११२४	शाकोल १.	३३३१५२	" २.	६२३३९
शशलोमन् ३.	३४३११८	शाक्तीक १. २. ३.		शान्तिक ३.	३६११२०
शशाङ्क १.	२११२७		३४३१४४	शान्तिगृह ३.	४३३२०

शान्तियान्त्रा ]

## शब्दानुक्रमणिका

## [ शितिचन्दन ]

शान्तियात्रा २.	३१५६	शालाजि १.	३१५९	शिखर ३.	३१८०
शाप १.	३१५३२	शालि १.	३१८३२	" ३.	३१९५
शापटिक १.	३१३३७	शालिजात १.	३१८३५	शिखरिणी ३.	३१९८
शाव ३.	५११६	शालियष्टिक १.	३१८३४	शिखरिन् १.	३१९५
" १. २. ३.	५१४२	शालिहोत्रि १.	३१७९०	" १.	८११५८
शाम्बरी २.	३१७१२	शालीन १.	३१९५६	शिखरी २.	३१९१५
शार १.	३१९६१	" १.	३१६४१	शिखा २.	११२२९
" १.	५१३९९	" १. २. ३.	५१४१७	" २.	३१३१५
" १.	५१३२५	शालु १.	४११४७	" २.	४१४६८
" १. २. ३.	६५५९१	शालुक ३.	४१२४४	" २.	४१४१०४
शारद १.	३१३४७	" ३.	७३३३४	" २.	६१२४०
" १.	३१८३६	शालूर १.	४११४७	" २.	८१२१५
" १. २. ३.	५१४८९	शालेय १. २. ३.	३१८१९	शिखावत् १. २. ३.	
" १.	७५१८६	शारवत १. २. ३.	५१४८८		३१६६
शारदी २.	३१३१९७	शाणकुलिक ३.	५११११	शिखावल १.	३१३३६
शारि २.	३१३२०	शासन ३.	३१७४७	शिखिग्रोव १.	३१२४२
" १.	३१९६०	" ३.	७३३३५	शिखिन् १ व.	३१३३७
" १. २.	६५१८८	शासि १.	८१९१२	" १.	३१३३३
शारिका २.	३१९१३६	शास्ति १.	८१९१२	" १.	३१३३७
शारिचा २.	३१३१३९	शास्तु १.	१११३२	" १.	६११६०
शार्कर १. २. ३.	३११४४	" १.	३१७१५९	शिखिवाहन १.	१११५५
" १.	३१९४९	शास्त्र ३.	६१३३३	शिखीन्द्र १.	३१३९४
शार्ङ्ग ३.	११११७	शास्त्रविद् १. २. ३.		शिमु १.	३१३५६
" १.	३१३२४		४१४१४४	" १.	४१३९०
" ३.	६१३३३	" १. २. ३.	५१४३१	शिमुज ३.	३१८१०
शार्ङ्गवत ३.	३११९	शिक्षा २.	३१३९१	शिङ्गिन् ३.	४१४१०३
शार्ङ्गाष्टा २.	३१३१११	शिंशुमार १.	४११५४	शिङ्गाण १.	४१४९२
" २.	३१३१४४	शिक्य ३.	३१९१७	" ३.	४१४१०६
" २.	३१३१७९	शिक्यित १. २. ३.		शिङ्गाणिन् १. २. ३.	
शार्ङ्गिन् १.	१११११		५१४११६		४१४९१
शार्दूल १.	३१४११	शिचा २.	३१६२८	शिक्षित ३.	३१४९
" १.	३१४३३	शिक्षित १. २. ३.		शिक्षिनी २.	४१३१४५
शार्वर ३.	३११६२		३१७१४८	" २.	७३२२६
" १. २. ३.	७५१८७	" १. २. ३.	५१४१९	शिण्डाकी २.	४१३८४
शार्वी २.	३११५	शिखण्ड १.	३१३३९	शित १. २. ३.	६५१८३
शाल १.	३१३१५६	" १.	४१४१०२	शितशिव ३.	३१८१६
शाला २.	३१३१५५	शिखण्डक १.	४१४१०२	" ३.	३१८१२०
" २.	३१८८८	शिखण्डिक १.	३१३१३	शितशूक १.	३१८१५१
" २.	६१२३७	शिखण्डिन् १.	३१३३७	शिति १. २. ३.	६१४१७
शालाक ३.	३१८१३६	शिखण्डिनी २.	८१२१९	शितिकुम्भ १.	३१३१९५
शालाचा २.	३११५	शिखण्डी २.	४१४१०२	शितिचन्दन ३.	३१४३६



[ शितिसारक ]

शितिसारक १.	३३१५१
शितपुट १.	२३३४३
शिथिल १. २. ३.	३३३१६
शिथिली २.	३३३३८
शिपिविष्ट १. २. ३.	३३३१४७
" १. २. ३.	३३३१५
" १. २. ३.	३३३१८
शिफा २.	३३३१२
" २.	३३३१०
" २.	३३३१५
शिबिका २.	३३३३३६
शिविर ३.	३३३१०
शिव्वा २.	३३३१५
( विम्बा )	
शिव्विक १.	३३३३७
शिर १.	३३३३७
" १.	३३३१९
शिरःपीठ १.	३३३१८
शिरस् ३.	३३३१५
" ३.	३३३१८
" ३.	३३३१९
शिरसिज १.	३३३१७
शिरसिसिच् २.	३३३१२४
शिरस्थ १. २. ३.	३३३१७
( शिरस्थ )	
शिरस्थ ३.	३३३१०१
शिरीष १.	३३३३७
शिरोगेह ३.	३३३३४
शिरोधरा २.	३३३१८
शिरोधि २.	३३३१८
शिरोरत्न ३.	३३३१३६
शिरोरुह २.	३३३१८
शिरोरुहा २.	३३३११२
शिरोवर्तिन् १. २. ३.	३३३१०
शिरोऽस्थि ३.	३३३११५
शिल ३.	३३३१२
शिला २.	३३३१२
" २.	३३३१२

वैजयन्तीकोषः

शिला २.	३३३१४०
" २.	३३३१४५
" २.	३३३१६३
शिलाजतु ३.	३३३१६
शिलाह्वय ३.	३३३१६
शिली २.	३३३१५९
" २.	३३३१४०
शिलीमुख १.	३३३१८१
" १.	३३३१४५
शिलोच्चय १.	३३३११७
शिलोद्भव ३.	३३३११८
शिल्प ३.	३३३११८
शिल्पा २.	३३३१२५
शिल्पिन् १.	३३३११७
" १.	३३३१४७
शिल्पशाला २.	३३३१२२
शिव १.	१११११
" १.	३३३१४९
" ३.	३३३१५५
" १.	३३३१६
" ३.	३३३१६
" १.	३३३१४७
" ३.	३३३१४३
" १. २. ३.	३३३१४८
शिवङ्कर १.	३३३१५८
" १. २. ३.	३३३१५५
शिवताति १. २. ३.	३३३१५५
शिवपार्श्वग १.	१३३२
शिवपुरी २.	३३३१७
शिवप्रिय १.	३३३१९३
शिवमल्लिका २.	३३३१९३
शिवव्रतिन् १. २. ३.	३३३१३०
शिवा २.	११११४९
" २.	११११५८
" २.	३३३११९
" २.	३३३१७७
" २.	३३३१६०
" २.	३३३१८४

[ शीरा ]

शिवेष्ट १.	३३३१८३
शिशिर १.	२३३१८७
" १.	३३३१७
शिशु १. २. ३.	३३३१८
शिशुक १.	३३३१७३
शिशुकृच्छ ३.	३३३१७३
शिशुकृच्छातिकृच्छ ३.	३३३१७३
शिशुत्व ३.	३३३१७३
शिशुप्रिय ३.	३३३१७३
शिशुवर्जिता २.	३३३१७३
शिश्र ३.	३३३१७३
शिश्रदान १. २. ३.	३३३१७३
शिष्टि २.	३३३१७३
शिष्य १.	३३३१७३
" १. २. ३.	३३३१७३
शीकर १. ३.	३३३१७३
" १.	३३३१७३
शीघ्र १.	१३३१७३
" १. २. ३.	३३३१७३
शीघ्रगमन ३.	३३३१७३
शीत १.	३३३१७३
" १.	३३३१७३
शीतक १. २. ३.	३३३१७३
शीतकङ्क २.	३३३१७३
शीतकृच्छक ३.	३३३१७३
शीतपङ्क १.	३३३१७३
शीतपञ्चव १.	३३३१७३
शीतल १.	१३३१७३
" १.	३३३१७३
" ३.	३३३१७३
" १.	३३३१७३
शीतला २.	३३३१७३
" २.	३३३१७३
शीथु ३.	३३३१७३
" १.	३३३१७३
शीन १. २. ३.	३३३१७३
शीरा २.	३३३१७३

[ शीरी ]

शीरी २.	३३३१२८
शीर्णक १. २. ३.	३३३१२९
शीर्णपर्णाशिन १. २. ३.	३३३१२९
शीर्णवृन्त १.	३३३१७१
शीर्ष ३.	३३३१७७
" ३.	३३३१७७
शीर्षक ३.	३३३१७७
शीर्षण्य ३.	३३३१७७
" ३.	३३३१७७
शीर्षत्राण ३.	३३३१७७
शील ३.	३३३१७७
शीवाल ३.	३३३१७७
शुक १.	३३३१७७
" १.	३३३१७७
" ३.	३३३१७७
शुककूट १.	३३३१७७
शुकनास १.	३३३१७७
शुकनासक १.	३३३१७७
शुकपोत्र १.	३३३१७७
शुक्त ३.	३३३१७७
" ३.	३३३१७७
" १.	३३३१७७
" १.	३३३१७७
" १. २. ३.	३३३१७७
शुक्तित्तकषायक १.	३३३१७७
शुक्ति २.	३३३१७७
" २.	३३३१७७
" २.	३३३१७७
" २.	३३३१७७
" २.	३३३१७७
" २.	३३३१७७
" २.	३३३१७७
शुक १.	१३३१७७
" १.	२३३१७७
" १.	२३३१७७
" १.	३३३१७७
" १. २. ३.	३३३१७७
शुकशिष्य १.	३३३१७७

शब्दानुक्रमणिका

शुकसृष्टा २.	३३३१७८
शुक्रा २ व.	२३३१२१
शुक्ल १.	२३३१७९
" ३.	३३३१११
" १.	३३३११०
शुक्लकार ३.	३३३१४७
शुक्लधातु १.	३३३१३३
शुक्लपुष्प १.	३३३१६१
" १.	३३३१९१
शुक्लहरित १.	३३३१२४
शुक्लापाङ्ग १.	२३३३३६
शुक्ल १. २. ३.	३३३१७७
शुक्ला २. १. ३.	३३३१७७
शुक्ल २.	३३३१७७
शुक्ल १.	२३३१८४
" १.	२३३१८८
" १.	३३३१३५
" १.	३३३१३०
" १. २. ३.	३३३१३५
" १. २. ३.	३३३१३५
शुक्लिकर्णिक ३.	३३३१४०
शुण्ठ १.	३३३१८९
शुण्ठि २.	३३३१७५
शुण्ठा २.	३३३१४०
शुण्ठापान ३.	३३३१५३
शुण्ठाल १.	३३३१६२
शुण्ठि २.	३३३१७७
शुण्ठि ३.	३३३१८५
" १. २. ३.	३३३१६५
" १. २. ३.	३३३१६५
" ३.	३३३१७८
शुद्धजड १.	३३३१७२
( शुद्ध, जड )	
शुद्धान्त १.	३३३१३६
" १.	३३३१७४
शुद्धि २.	३३३१८९
शुन १.	३३३१६९
शुनक १.	३३३१६८
शुनासीर १.	१३३११
शुनि १.	३३३१६९

[ शुद्धी ]

शुनी २.	३३३१७१
शुभ १.	३३३१४३
" १. २. ३.	३३३१७७
" १.	३३३१६६
शुभंयु १. २. ३.	३३३१२९
शुभक १.	३३३१४१
शुभदती २.	२३३१९
शुभा २.	३३३१४१
शुभान्वित १. २. ३.	३३३१२९
शुभ्र ३.	३३३१२४
" १.	३३३१३०
" १. २. ३.	३३३१३०
शुभ्रि १.	३३३१५२
शुभ्रक १. ३.	३३३१८९
शुभ्रव ३.	३३३१२४
" ३.	३३३१३४
शुभ्रवा २. ३.	३३३१३०
( शुभ्रपा )	
शुभ्रपूषा २.	३३३१३८
शुभ्रपूषित १. २. ३.	३३३१३०
शुष १.	३३३१५०
शुषिका २.	३३३१८१
शुषिल १.	१३३१४७
शुष्कगोमय १.	३३३१६०
शुष्कमांस ३.	३३३१८९
शुष्मन् १.	१३३११५
" ३.	३३३१७०
शुष्मि १.	१३३१५०
शूक १.	३३३१५८
" १.	३३३१६५
शूकक्रीट १.	३३३१३३
शूकधान्य ३.	३३३१६२
शूकशिखि २.	३३३१२९
शूद्र १.	३३३१७७
" १.	३३३१७७
" १.	३३३१७७
शूद्रकुण्ड १.	३३३१६३
शूद्रा २.	३३३१२३
शूद्रि २.	३३३१२३



शून्य ]	वैजयन्तीकोषः	[ शौण्ड	शौण्ड ]	शब्दानुक्रमणिका	[ श्रेष्ठिन्
शून्य १. २. ३. २५२०	शृङ्गिण १. ३५६४	शैवल १. ४२४९	शौण्ड १. २. ३. ६५१९०	श्रद्धा २. ३६१९८०	श्रीपर्णी २. ३३१५८
" १. २. ३. ३११४५	शृङ्गिणी २. ३५४१	शैवल्लिनी २. ४२२३	शौण्डिक १. ३५४४	" २. ६२३८	" २. ३३१५८
" १. २. ३. ५४१८७	शृङ्गिन् १. ३५१९	शैवाल ३. ४२४९	" १. ३५४४	श्रद्धालु १. २. ३. ५४३७	" २. ७५१८६
शूर १. २. ३. ३७२८	" १. ३५५२	शैशव ३. ४४५४	शौण्डी २. ३५७६	श्रन्थन ३. ५२३९	श्रीपुष्प ३. ४२४१
" १. २. ३. ३७१४७	" १. ३७९६	शोक १. ३६१८३	" २. ६५१९०	श्रपणी २. ३६१९००	श्रीफल १. ३३३३०
" १. ३७३३	" १. ४१४४	" १. ३५७६	शौद्धोदनि १. १११३४	( श्रयणी )	श्रीफली २. ३३१११०
" १. २. ३. ६५१९२	" १. ८११६०	शोचिष्केश १. १२१५	शौभिक १. ३६१९०३	श्रपाय १. ७११७४	श्रीवेर ३. ३३२०२
शूरसेन १ व. ३१२४	शृङ्गिवेर ३. ३३२१४	शोचिस् ३. ६३३४	शौरि १. ११२६	श्रमण १. २. ३. ५४१५	श्रीमकुट ३. ३२१९
शूरसेनि १ व. ३१२४	" ३. ३८७६	शोण १. ३३३६८	शौर्य ३. ५११५६	श्रमणी २. ३३१२५	श्रीमत् १ व. २१३७
शूर्प १. ३. ४३६५	शृङ्गी २. ३८१९०	" १. ३७१००	शौर्य ३. ३७२१०	" २. ३३११०	" १. २३२५
" १. ३. ५११५६	" २. ४११४४	" १. ५३१७	शौर्यकरण ३. ५२१६	श्रमस्थान ३. ३७१९४	" १. ३३३३
शूर्पकर्ण १. ३७६१	शृङ्गीकनक ३. ३२२२	" १. ५३५१	शौक्तिक १. २. ३. ५४५०	श्रयण ३. ४२३३	" १. ३३३६०
शूर्पकारि १. ११२८	शृत १. २. ३. ४३१५	शोणरत्न ३. ३२३९	शौखिक १. ३९१५	श्रवण ३. २११४०	" १. ३३३६९
शूर्पावर ३. ५११५५	शेखर १. ४३१५३	शोणिक १. ५२३१	श्च्योति २. ५२३३	" ३. ४४९३	" १. ३३३६३
शूल १. ४४१३७	शेफ १. ४४६१	शोणित ३. ४४१०६	श्मशान ३. ३११४८	श्रवस् ३. ४४९२	श्रील १. २. ३. ५४५६
" १. ३. ६५१९२	शेफस् ३. ४४६१	" ३. ५३१९१	श्मश्रु ३. ४४१०३	श्रविष्ठा २ व. २११४०	श्रीवत्स १. १११११
शूलनाशक ३. ३८१२५	शेफालिका २. ३३१८६	" ३. ८६१८	श्मश्रु १. २. ३. ५४१९	श्राणा २. ४३८०	" १. ११११७
शूलकृत १. २. ३. ४३१९४	शेमुषी २. ३६१६३	शोथ १. ४४१२२	श्याम १. ३३३४५	श्राद्ध ३. ३६६४	श्रीवत्सपिण्याक १. ३८१०९
शूलिक १. ३४३३१	शेवधि १. ३. १२१६०	शोथशत्रु १. ३३२०९	" ३. ३८७९	" १. २. ३. ५४३७	श्रीवत्साङ्ग १. १११११
" १. ३५५	शेवाल ३. ४२४९	शोधन १. ३३३४१	" १. ५३१११	श्राद्धदेव १. १२३३	" १. ८११४५
" १. ३५१२	शेष १. ११३०	शोधनी २. ४३५२	" १. ५३११४	श्रान्त १. २. ३. ५४३६	श्रीवास १. ३८१०९
" १. ३५६९	" १. ४१३३	शोधित १. २. ३. ५४६६	श्यामकङ्कु २. ३८५६	श्रामणी २. ३३१२५	श्रीवृक्ष १. ३३२७
" १. ३५७३	" १. २. ३. ६५१८७	शोध्य ३. ४४१०५	श्यामल १. ५३१११	श्राय १. ५२३३	" १. ८६१९
शूलिका २. ३८१२३	शैल १. ३६२४	शोफ १. ३. ४४१२२	श्यामलक १. ३३२६	श्रावक १. ३९१११	श्रीवृक्षकिन् १. ३७९२
शूलिन् १. १११४१	शैल १. १२१८७	शोफघ्नी २. ३३१४५	श्यामवल्ली २. ३८८०	श्रावण १. २११८५	श्रीवेष्ट १. ३८१०९
शून्य १. २. ३. ४३१९४	" १. ३५५३	शोभ १. ३६२३९	श्यामा २. २३१९	श्रावणिक १. २११८४	श्रीसंज्ञ ३. ३८१०३
शृङ्गल १. २. ३. ३७८३	शैलरिक् १. ३३११५	शोभन ३. ३२३२	" २. ३३१३८	श्रावणी २. २११७६	श्रुत १. २. ३. ६५१८९
" १. २. ३. ४३१४६	शैखलीक १. ३६१०७	" १. २. ३. ५४३५	" २. ३८७७	" २. ३८९३	श्रुतकर्मन् १. २१३६
शृङ्गलक १. ३४६८	शैग्रव ३. ३६२२	शोभा २. ४३१४५	" २. ४३८	" २. ८११९	श्रुति २. ३६२७
शृङ्ग ३. ३२२८	शैनि १. ११२६	शोभाञ्जन १. ३३५६	" २. ६२३९	" २. ८११९	" २. ४४९३
" १. ३. ६५१८७	शैन्या २. ४२२७	शोष १. ४४१२४	श्यामाक १. ३८५६	श्रीकण्ठ १. ११३८	" २. ६२४०
शृङ्गवर्जित १. ३४७३	शैल १. २११८६	शोषु १. ३६१८१	श्यामाङ्ग १. २१३२	श्रीकर्णायक १. २३४०	श्रूपा २. ३३१५४
शृङ्गवाद्य ३. ३९१२५	" १. ३२११	शौक ३. ५१६	श्यामाङ्गी २. ४२२६	श्रीकृच्छ्र ३. ३६१४०	श्रेणि २. ६५१९०
शृङ्गाट १. ३११५१	" १. ८६४	शौक्तिकेय ३. ४१५७	श्यामिका २. ३४१९	श्रीखण्ड १. ३८११३	श्रेयस् १. २. ३. ५४१४३
" १. ३७१५१	" १. ८११११	शौक्लिकेय १. ४१२४	श्याव १. ५३१८	श्रीगर्भ १. ३७१५९	" १. २. ३. ८१३२
शृङ्गाटक १. ४२४७	शैलमूल ३. ३३२०३	शौक्लिकेय १. ४१२४	" १. ५३३१	श्रीघन १. ११३२	श्रेयसी २. ३३१३१
शृङ्गार १. ३७८६	शैलालिन् १. ३९६२	शौच ३. ३६२०९	श्येत १. ५३१०	" १. ३८१३९	" २. ८१३३
" १. ३९७५	शैलूष १. ३९६२	शौटीर्य ३. ३६१६९	श्येन १. २३१९	श्रीधर १. १११२	श्रेष्ठ ३. ३२२५
" १. ४३१६९	शैलेय ३. ३२४१	शौण्ड १. २३१४३	" १. २३३०	श्रीपति १. १११११	" १. २. ३. ५४६३
शृङ्गारगर्व १. ३६१६९	" ३. ३८१९६	" १. २. ३. ५४३७	श्येना २. २३२०	श्रीपथ १. ४३१६	श्रेष्ठिन् १. ३५७१



श्रोण ]

वैजयन्तीकोषः

[ षण्मातुर

श्रोण १. २. ३.	पा४११४	श्वपाक १.	३१५५१
श्रोणा २.	२११४०	श्वपामन १.	३१३१०७
श्रोणि २.	४१४६४	श्वभीरु १.	३१४३७
श्रोत्र ३.	४१४९३	श्वभ्र १. ३.	४११२
श्रोत्रकान्ता २.	३१८९३	श्वयथु १.	४१४१२२
श्रोत्रिय १.	३१६८१	श्ववृत्ति २.	३१८१७
" १.	८१९४५	श्वशुर १.	४१४३०
श्रौषट् ४.	८१८३	" १ द्वि.	४१४४८
श्रौषि २.	३१६१६६	श्वशूर्य १.	७११७४
श्रयाख्य ३.	३१८१०९	श्वश्रू २.	४१४३०
श्रयूष १.	५१३२८	श्वश्रूश्वशुर १ द्वि.	४१४४८
श्लघण १.	५१३४	श्वश्रेयस १. २. ३.	५१४१४३
" १. २. ३.	५१४१३६	श्वसन १.	११२४७
श्लघणपत्रक १.	३१४९४	श्वसित ३.	३१६१२०४
श्लघणवाच् १. २. ३.	५१३४४	श्वस्तन १. २. ३.	५१४८९
श्लाघा २.	२१४३५	श्वापद १.	३१४७३
श्लिकु २. ३.	३१६१९१	श्वाली १.	३१४७१
श्लीपद १.	४१४१३३	श्वविध् १.	३१४३७
श्लेष्मन् १.	४१४१२१	श्वास १.	३१६१२०४
श्लेष्मफल १.	३१३१५५	श्वासहेति २.	३१६१२००
श्लेष्मल १.	३१८१५३	श्वासा २.	३१३१३८
" १. २. ३.	४१४१४६	श्वित्र ३.	४१४१२५
श्लेष्मसू १. २. ३.	४१४१४६	" १. २. ३.	५१४१४४
श्लेष्मातक १. २. ३.	३१३१५५	श्वेत ३.	३१८१३९
श्लेष्मिन् १.	३१३१५३	" १.	५१३१०
श्लोक १.	६११६०	" १. २. ३.	६१५९२
श्वः (-स्) ४.	८१८९	श्वेतकन्द १.	३१३१२०५
श्वकण्टक १.	३१५५८	श्वेतकाक १.	२१३११८
" १.	३१५१०६	श्वेतक्षार १.	३१८१२७
श्वचण्डाल १.	३१५८	श्वेतच्छाण ३.	३१८१४९
श्वदंष्ट्रा २.	३१३१४२	श्वेततण्डुल १.	३१८३२
" २.	३१७५१	श्वेतपिङ्गल १.	३१४११
श्वदयित ३.	४१४१०९	श्वेतबिन्दुका २.	५१३१५
श्वन् १.	३१४८६	श्वेतमध्य १.	३१३१२००
" १.	८१६५	श्वेतमरिच ३.	३१८१९०
श्वनिश ३. २.	३१५३४	श्वेतरक्त १.	५१३१७
श्वपच १.	३१५३९	श्वेतशाल १.	३१८३३
" १.	३१५४७	श्वेतशिखिका २.	३१८४६
श्वपाक १.	३१५३८	श्वेतसुरसा २.	३१३११९
		" २.	३१३१८७

( १५२ )

श्वेता २.	३१९५०
श्वेत ३.	३११९
श्वोचवीयस ३.	५१४१४२
ष	
षट्क ३.	३१७१०
षट्कर्मन् ३.	३१६६३
षट्पद १.	२१३४३
षट्स १. २. ३.	५११२६
षडभिज्ञ १.	११३३२
षडश्रा २.	३१३१११
" २.	३१३१७७
षडानन १.	१११५६
षड्वर्ण ३.	३१८८१
षडगुण १.	३१७६
षडग्रन्थ १. २.	७१५८७
षडग्रन्था २.	३१३१९८
षडज १.	३१९१३२
षड्द १. २. ३.	३१४५७
षड्स १.	५१३४५
षडसासव १.	४१४१०४
( षडसावस )	
षण्ड १.	३१४५३
" १.	३१६१२२
" १.	३१७३३
" १.	४१४३
" १. ३.	५११५
" १.	६११६०
षण्डतायोग्य १.	३१४५५
षण्माससङ्ग्रहिन् १.	३१६१२५
षष्टि २.	५११२७
षष्टिक १.	३१८३४
षष्टिक्य १. २. ३.	३१८१९
षष्टितम १. २. ३.	५११२२
षष्टिहायन १.	३१७६४
षष्ट १. २. ३.	५११२१
षष्टकालिन् १. २. ३.	
षष्टी २.	३१६१२७
षण्ड १.	१११५९
षण्मातुर १.	१११४६

षण्मासी ]

षण्मासी २.	३१६६६
षाष्टिक ३.	३१६१४६
षिद्ध १.	३१९७०
" १.	४१३३९
षोडत् १. २. ३.	३१४५७
षोडशक १. २. ३.	८१५२४
षोडशाङ्घ्रि १.	४११४७
षोडशावर्त १.	४११५६
षोडशाह १.	३१६१४४
ष्यम १.	६११६१
स	
संयत् २.	३१८२०६
संयत् १. २. ३.	५१४६७
संयता २.	३१८१६८
संयम १.	३१६१३३
" १.	५१३३०
संयाज्य १.	३१६११२
संयाम १.	५१३३०
संयाव १.	४१३७३
संयुग १.	३१८२०४
संयोग १.	५१२२६
संरम्भ १.	३१९८९
संराव १.	२१४४
संरोध १.	७१७६
संवत् ४.	८१८१०
संवत्सर १.	११२९०
संवत्सरतम १. २. ३.	
संवदन ३.	२१४२५
संवन्न ३.	३१६११७
संवर १.	४१२१०
" १.	४१२१२
संवर्त १.	३१३१७७
" १.	३१८४३
" १.	३१९७६
संवर्तक ३.	१११२४
" १.	११२२१
संवर्तिका २.	४१२४५
संवसथ १.	४३३२
संवादन् ३.	२१४२५
संवाप १.	४३३१६७

शब्दानुक्रमणिका

संवाल १.	२११२८
" १.	३१७८०
संवास १.	४३३४
" १.	४३३३५
" १.	४३३१६७
संवासन ३.	४३३२३
संवाहक १.	३१९१५
संवाहन ३.	५१३३०
संवित्ति २.	३१६१६४
" २.	७१२२९
संविद् २.	५१३३७
" २.	६१२४१
संवीक्षण ३.	५१२४२
संवीत १. २. ३.	५१४९६
संवृत १.	२११४५
संवृतता २.	३१६३५
संवेश १.	४३३१६८
( सवोस )	
संव्यान ३.	४३३१२२
संसप्तक १.	३१७१५२
संशय १.	३१६१७७
" १.	३१६१९७
( संश्रय )	
संशयालु १. २. ३.	
" ४.	५१४३८
संशित १. २. ३.	५१४९४
संश्रव १.	५१३३७
संश्लेष १.	५१२२६
संसद् २.	३१८१३
संसरण ३.	४३३१६
" ३.	८१३१२
संसिद्धि २.	७१२२९
संसृष्ट १. २. ३.	७१४२८
संसृष्टिन् १.	५१४५
संस्कार १.	३१६१२
संस्कृत १. २. ३.	७१४२८
संस्कृतस्तम्भ १.	
" ३.	३१६१०३
संस्कृति १. २.	७१५८८
संस्तर १.	४३३१६५
" १.	७१७६

( १५३ )

[ सगोत्र

संस्तव १.	५१३३१
संस्ताव १.	३१६११०
संस्त्याय १.	७११७८
संस्था २.	३१६८७
" २.	३१८१५
" २.	६१२४३
संस्थाचर १.	३१७२७
संस्थान ३.	५१२२१
" ३.	७३३३७
संस्थित १. २. ३.	
" ३.	३१७२२०
संस्पृष्टमैथुना २.	३१६४८
संस्फोट १.	३१७२०४
संहतजानु १. २. ३.	
" ३.	५१४१०
संहतल १.	४१४७८
संहनन ३.	४१४५२
संहार १.	२११९५
संहारी २.	४३३३८
संहिता २.	७१२३८
संहृति २.	२१३३१
सकल १. २. ३.	५१४८५
सकाश १. २. ३.	
" ३.	५१४१३३
सकृत् ४.	८१७२९
" ४.	८१८६
सकृत्प्रज १.	२३३१७
" १.	८११४५
सकृप १. २. ३.	३१९७९
सक्तु १.	४३३७०
" १. ३.	८१३३१
सक्तुफला २.	३३३८९
सक्थि ३.	३१७७९
" ३.	४१४५९
सखि १. २. ३.	३१७४३
" १. २. ३.	६१५९८
सखी २.	४१४२५
सख्य ३.	३१६१८७
सगर ३. २.	८१९३३
सगर्भ १.	४१४३४
सगोत्र १.	४१४५०







सप्तसप्त]

वैजयन्तीकोषः

[ समुद्रनवनीतक

सप्तसप्त १.	२११११	समन्तात् ४.	८१८३	समाहार १.	५२११८
सप्तार्चिसू १.	१२११६	समन्तिक १. २. ३.		" १.	८११४७
सप्त १.	३१७९०		५११३३	समाहित १. २. ३.	
सप्तह्यचारिन् १.	३१६२४	समपद ३.	३१७१८७		२१११३
सभा २.	३१८१३	समम् ४.	८१८१७	" १. २. ३.	२१११४
" २.	५११५	समय १.	७११८२	समाह्वय १.	८११४७
" २.	६१२४२	समया ४.	८१७३३	समिक ३.	३१७२०३
सभाजन ३.	३१६१८६	" ४.	८१८१५	" १.	७११७७
सभासद् १.	३१८१३	समर १. ३.	३१७२०६	मिति २.	७२२२७
सभास्तार १.	३१८१३	" १. ३.	८१६१७	समिदाधान ३.	३१६११
समिक १.	३१९५९	" १. ३.	८१६१८	समिध २.	३१६१६
सम्य १.	१२२२५	समर्थ १. २. ३.	७११३०	" २.	३१७२०६
" १.	३१८१३	समर्थन ३.	३१८१५	समीक १.	५३१६
" १. २. ३.	६१११८	समर्थाद् १. २. ३.		" १.	७११७५
सम् ४.	८१७८		५११३१	समीकरण ३.	३१८३०
सम १.	३११५२	समलेपनी २.	३१९१४	समीचीन ३.	५३३३
" ३.	५११६१	समवकारक १.	३१९१००	समीप १. २. ३.	५११४०
" ३.	५११६२	समवर्तिन् १.	१२३३४	समीर १.	१२३४९
" १. २. ३.	५११८६	समवाय १.	५१११	समीरण १.	१२३४७
" १. २. ३.	५११२१	समशन १.	५३१५४	" १.	३३१२०
" १. २. ३.	६१५९५	समष्टि २.	५३१४८	समुच्चय १.	५२११८
समक ३.	५११६२	समसुप्ति २.	२११९४	समुच्छ्रय १.	८१६४६
समकम् ४.	८१८१७	समस्त १. २. ३.	५११८५	समुञ्जित १. २. ३.	
समक्ष १. २. ३.	५११३३	समस्थान ३.	३१६२२४		५११०१
समग्र १. २. ३.	५११८५	समस्या २.	२११४०	समुत्थान ३.	५२२२५
समङ्ग १.	३१९६०	समा २ ब.	२११९१	समुत्पिञ्ज १. २. ३.	
समङ्गा २.	३३१३५	" २.	६१५९५		५११९४
समज १.	५११५	समांसमीना २.	३११४८	समुद् १. २. ३.	५१३३३
समज्ञा २.	२११३६	समाघात १.	३१७२०४	समुद्य १.	३१७२०५
समज्या २.	३१८१४	समाज १.	५११५	" १.	५११२
समक्षस ३.	३१७४८	समादान ३.	३१६१०४	समुदस्त १. २. ३.	
समतट १ ब.	३११३१	समाधि १.	३१६२३२		५१११२
समधिक १. २. ३.		" १.	३१९६०	समुदाय १.	३१७२०५
	५११३७	" १.	७११८१	" १.	५११२
समनीपद १.	१२१४४	समान १. २. ३.	५११२१	समुद्र १.	४३१६४
समन्त १. २. ३.	५११३३	" १. २. ३.	७११८८	समुद्रत १. २. ३.	
समन्ततः (-स्) ४.		समानोदर्य १.	४१३३४		५१३३१
	८१८३	समापन ३.	८३१३३	समुद्र ४.	४२१११
समन्तदुग्धा २.	३३१९७	समालम्भन ३.	४३११४७	" १. २. ३.	५११२९
समन्तभद्र १.	१११३३	समास १.	२११४०	समुद्रनवनीतक ३.	
समन्तभुज् १.	१२११४	" १.	५२११८		२११२७

( १५६ )

समुद्रान्ता ]

शब्दानुक्रमणिका

[ सर्वज्ञ

समुद्रान्ता २.	८२११०	सम्भोग १.	३१७७०	सरस्वती २.	१११९
समुन्दन ३.	५२२२९	" १.	७११८०	" २.	४२२२८
समुन्नति २.	३३३१६	सम्भ्रम १.	३१९८९	" २.	८१५३०
समुन्नद्ध १. २. ३.	८१११२	" १.	७११७९	सरि २.	२११२
समूह १.	३१४२०	सम्मति २.	७२२२९	सरित् २.	४२२२२
समूह १.	५११२	सम्मद १.	३१६१८८	सरिताम्पति १.	४२२११
समूहन ३.	३१७१८९	सम्मर्द १.	३१७२०५	सरिस्पति १.	४२२१२
समुद्ध १. २. ३.	५११५७	सम्मार्जनी २.	४३१५२	सरी २.	३१७९८
समुद्धि २.	३१८९३	सम्मासा २.	३३१२७	सरीस्प १.	४११४
समोलक १.	५३१४५	( समांसा )		" १.	४११४०
समोलुक ३.	३२३३०	सम्मुख १. २. ३.	५११४७	सरुज् २.	३१६५०
सम्पत्ति २.	३१६१९१	सम्मुख्य ३.	५२२४१	सरुहाह १.	३१७१०६
" २.	३१७४	सम्यच ३.	५३३३	सरोज २.	४२३३७
सम्पद् २.	३१६१९१	सम्राज् १.	६११६१	सरोरुह ३.	४२३३६
" २.	८१९५	सर १.	१२३४८	सर्ग १.	३१६३२
सम्पात १.	५२२२६	" १.	३३३४२	" १.	५२२१
सम्पातपाटव ३.	५२२९	" ३.	३१८१४५	" १.	६११६२
सम्पुट १.	४३३६४	" १.	५३३२६	सर्ज १.	३३३३८
सम्पूर्ण १. २. ३.	५११८७	सरक ३.	३१९५३	सर्जक १.	३१८१४०
सम्पृक्त १. २. ३.	५११७८	" ३.	७३३३८	सर्जन १.	३१८१११
सम्प्रति ४.	८१८५	सरघा २.	२३३४५	सर्प १.	४११४
सम्प्रधारण ३.	३१८१५	सरट् १.	६११६४	" १.	८१६१५
सम्प्रयोग १.	५२२२६	सरट् १.	४११२८	सर्पजाति २.	४११११
" १.	८११४५	सरटी २.	३२२२७	सर्पदंष्ट्री २.	३३३२७
सम्प्रश्न १.	३१८१५	सरणी २.	४२२२१	सर्पभुज् १.	४१११६
सम्प्रेश १.	५२२२५	सरण्यु १.	७११७६	" १.	८१६२१
सम्प्रेशणी २.	३१६६५	सरमा २.	३१७७१	सर्पभृता २.	३१११
सम्फल १.	३१६६४	सरल १.	३३३७४	सर्पराज १.	४११३
सम्फुल्ल १. २. ३.	३३३९	" १. २. ३.	५११२०	" १.	४१११५
सम्बन्ध १.	५२२३३	सरलद्रव १.	३१८१०९	" १.	४१११६
सम्बाध १. २. ३.		सरलशौणिक १.	५३३५१	सर्पशफरी २.	४११४४
	५११२६	सरलिक १.	५३३५२	सर्पाञ्चर १.	४११२१
" १. २. ३.	७११२२	सरस् ३.	४२२३६	सर्पारि १.	८१६२१
सम्भरी २.	३१८१२१	" ३.	६३३३४	सर्पिस् ३.	३१८३८
सम्भव १.	७११७९	सरपिज ३.	४२३३७	" ३.	६३३३५
सम्भाल १ ब.	३११२४	सरसी २.	४२२३६	सर्व १.	५१३३१
सम्भावना २.	३१६१७६	सरसीज ३.	४२३३७	" १.	५११८५
सम्भाषण ३.	२११२३	सरसीरुह ३.	४२३३७	सर्वसहा २.	३११३
सम्भेद १.	४२३३१	सरस्वत् १.	४२२२९	सर्वगन्ध ३.	४३१५१
" १.	५२२२६	" १.	८१५३३	सर्वजनप्रिया २.	३१८१३
		" १.	८१५३४	सर्वज्ञ १.	१११३३

( १५७ )



## [ सर्वज्ञ ]

## वैजयन्तीकोषः

## [ साज्य ]

सर्वज्ञ १.	१११४४	सवितृ १.	२१११०
सर्वतः(-स्) ४.	८१८३	" १.	७११७८
सर्वतोभद्र १.	४१३३०	सविध १. २. ३.	५१४१२१
सर्वतोमुख १.	११११८	" १. २. ३. ५१४१४१	
" ३.	८१३१८	सविस्मय १. २. ३.	४१४२९
सर्वदा ४.	८१३१५	सवेध १. २. ३. ५१४१४१	
सर्वधुरीण १. २. ३.	३१४५८	सवेश १. २. ३. ५१४१४१	
सर्वभक्त १. २. ३.	५१४५०	सव्य १.	११२२८
सर्वभक्ता २.	३१४६२	" १. २. ३. ६१४१८	
सर्वमङ्गला २.	१११५८	सव्येष्ट १.	३१७१३८
सर्वला २.	३१७१६६	सस्य ३.	३१३२०
सर्वलोचना २.	३१८१९८	" ३.	३१८३१
सर्वविद् २.	३१६२३३	सस्यसंवर १.	३१३३८
सर्वविद्या २.	३१६३१	सह ४.	८१८१७
सर्ववेदस् १.	३१६१७७	सहकारक १.	३१३२५
सर्ववेशिन् १.	३१६१६३	सहचर १. २. ३.	३१३१९१
( सर्वकेशिन् )		सहचरी २.	४१४३४
सर्वसन्नहन ३.	३१७१५७	सहज १.	४१४३१
सर्वसंस्थभू २.	३१८११७	" ३.	५१२११
सर्वसह १.	३१३१५३	सहधर्मिणी २.	४१४३४
सर्वाङ्गीन १. २. ३.	५१४५०	सहन १. २. ३. ५१४३३	
सर्वाभिसार १.	३१७१५७	सहपानक ३.	३१९५३
सर्वार्थसिद्ध १.	१११३४	सहभोजन ३.	४१३१०३
सर्वौघ १.	३१७१५७	सहरक्षस् १.	१११२१
" ३.	३१८१३६	" १.	१११२२
सर्षप १.	३१८४१	सहस् १.	२११८१
सर्षपी २.	३१३६७	" ३.	३१७२१०
सलज्ज १.	३१३१२२	सहसा ४.	८१७३४
सलवण ३.	३१२३२	सहसानु १.	३१६१८३
सलिल ३.	४१२११	" १.	७१५४५
सल्लकी २.	३१३९६	सहस्य १.	२११८२
सल्लाप १.	२१४२९	सहस्र ३.	५११२८
सव ३.	३१६१८२	सहस्रतम १. २. ३.	५११२३
सवन १.	३१६१९	सहस्रदंष्ट्र २.	४११४२
सवर्ण १.	३१५३	सहस्रपत्र ३.	४१२३८
" १.	३१५७०	सहस्रवीर्या २.	३१३२३३
" १. २. ३. ५१४१२१		सहस्रवेधिन् ३.	३१८१३१
सविक्रम १.	३१७१९१		

( १५८ )

सहस्रवेधिन् १.	३१८१३३	सहा २.	३१३१०६
सहस्रांशु १.	२१११५	" २.	३१३१२८
सहस्राक्ष १.	११२११	" २.	३१३१९०
सहस्रिन् १. २. ३.		" २.	३१३१९१
		सहाध्यायिन् १.	३१६१२४
		सहाय १.	३१७१६
		" १. २. ३. ३१७३३	
		सहायता २.	५११९
		सहित ३.	३१७१७६
		सहितोद्गर ३.	३१७१७७
		सहिष्णु १. २. ३. ५१४३३	
		सहुरि १.	११२१८
		" १.	७११७५
		सांयात्रिक ३.	११२६८
		" ३.	३१७१२३
		" १.	४१२१८
		सांयुगीन १. २. ३.	३१७१४९
		सांराविण ३.	८१९१७
		सांत्सर १.	११२१८०
		" १.	३१७२५
		" १.	३१८३३
		आंत्सरी २.	३१६६६
		साकम् ४.	८१८१७
		साकेत ३.	४१३१५
		साक्षात् ४.	८१७३०
		साक्षिन् १. २. ३. ३१८१९	
		सागर १.	४१२१०
		साङ्कारिका २.	३१६१५२
		साङ्गामिकगुण १.	
			३१७४
		" १.	३१७५
		साचि १.	११२१८
		" ४.	८१८१९
		साज्य ३.	३१६६५

## [ साति ]

साति २.	६१२१४४
सातिसार १. २. ३.	४१४१४६
सात्त्वत १.	१११२३
" १. २. ३. ३१५५७	
" १. २. ३. ३१५१०५	
सात्त्वती २.	३१९१०१
सात्त्विक ३.	३१६११९
" १. २. ३. ३१९१९	
सात्त्विकी २.	२११६०
साद् १.	३१६१९१
सादिन् १.	६११६५
साद्यस्क १. २. ३.	५१४८९
साधन ३.	७१३३६
साधारण १. २. ३.	५१४१२९
साधिका २.	३१३१७८
साधीयस् १. २. ३.	७१४२९
साधु १. २. ३. ५१४१३५	
" १. २. ३. ६१५९६	
साधुवाद १.	२१४३६
साध्य १ ब.	११३८
साध्वस ३.	३१६१८५
साध्वी २.	४१४७
सानु १. ३.	३१२७
" १.	३१६८३
सानुनासिक १. २. ३.	२१४१६
सानुमत् १.	३१२११
सान्व १. २. ३. २१४१६	
" ३.	३१७१३
" ३.	६१३१५
सान्वन ३.	३१७१३
" ३.	५१२३८
सान्दष्टिक ३.	३१६२३६
सान्देशिक १.	३१७२९
सान्द्र १. २. ३. ५१४१२६	
सान्द्रसिन्ध १. २. ३.	५१४३३

## शब्दानुक्रमणिका

सान्ध्य १.	२१११६
सान्नाय्य ३.	३१६१९९
सासपदीन ३.	३१६१८७
सामज १.	३१७६१
सामन् ३.	२१४२३
" ३.	३१६२६
" ३.	३१६१११
" ३.	३१७१३
सामन्त १.	३१७१८
सामर्थ्य ३.	७१३३८
सामाजिक १.	३१८१३
सामान्य १. २. ३.	५१४१२९
सामि ४.	८१७२९
सामिक ३.	३१६१३
सामुद्र १.	३१५४२
" ३.	४१४५४
सामूना ३.	३१४२०
साम्पराय १.	८११४८
साम्परायिक १.	३१७१२६
" १.	३१७२०३
साम्प्रतम् ४.	८१७३४
" ३.	८१८५
साम्बाधिक १.	२११६६
सायक १.	७११७७
सायन्तूर्य ३.	३१९१३७
सायम् ४.	८१८१०
सायाह्न १.	२११६५
सायुज्य ३.	३१६२३७
सार १.	३१३१४
" १.	४१४१०९
" १. २. ३. ६१५९७	
सारघ ३.	३१८१३५
सारङ्ग १. २. ३. ७१५८९	
सारण १.	११२५४
" १. २. ३. ३११४६	
" १. २. ३. ३१६६	
" ३.	३१८१४९
" ३.	५१२११
सारणी २.	२१४४२
सारथि १.	३१७१३८

( १५९ )

## [ सिंह ]

सारपर्णी २.	३१३१००
सारमेय १.	३१४६८
सारस १.	२१३३३
" ३.	४१३३७
" १.	७११८३
सारसन ३.	३१७१५६
" ३.	४१२१४६
सारसप्रिया २.	२१३३३
सारस्वत १.	३१६१९
सारिका २.	३१९१२८
सारी २.	३१९११
सार्थ १.	५११४
सार्थवाह १.	३१८७२
सार्द्र १. २. ३. ५१४१०७	
सार्धम्	८१८१७
सार्पिष्क १. २. ३. ४१३१५	
सार्धभौम १.	२११८
" १.	३१७२
सार्ष्टि २.	३१६२३७
साल १.	३१३३८
" २.	४१३१४
" २.	६११६५
सालभञ्जिका २.	३१९१४
सालातुरीयक १.	
	३१६१५४
सालावृक १.	८११४६
साल्व १ ब.	३१३३२
" १ ब.	३१३३८
सावन १.	२११८१
सावित्र १.	३१६१४१
सावित्री २.	४१४७४
सावित्रेय २.	११२३४
साष्टी २.	३१३१७५
सारना २.	३१४६०
साहस १. ३.	३१७४६
साहस्र १. २. ३.	
	३१७१४१
" ३.	५११३३
साहायक १. २.	८१९३५
सिंह १.	३१२१५
" १.	३१४११



[ सिंह ]

सिंह १.	८१६१४
सिंहकर्णी २.	३१७१९३
सिंहकेसर १.	३३३२६
सिंहपुच्छी २.	३३११३७
" १.	८२११५
सिंहमल ३.	३२२२८
सिंहल ३.	३१११९
" ३.	३२३३१
" ३.	३१८७५
सिंहवाहना २.	१११६२
सिंहसंहनन १. २. ३.	५११६
सिंहाण ३.	३२३३६
सिंहासन ३.	३१७१५
सिंहास्य ३.	३३३१०१
सिंहिका २.	३६३७
सिंही २.	३३३१०२
" २.	३३३१०६
सिकता २ ब.	४२३३३
सिकताप्राय ३.	४२३३३
सिकतावत् १. २. ३.	३११४४
सिकतिल १. २. ३.	३११४४
सिक्थ १.	६११६६
सिच् २.	४३३११६
सिचय १.	४३३११६
सित १.	५१११०
" १. २. ३.	५१११०
सितकाच १.	५३३१३
सितकाचर १.	५३३१३
" १.	५३३१३
सितकुञ्जर १.	१२३४
सितकृष्ण १.	५३३१३
सितच्छद् १.	२३३५
सितपिङ्गाण १.	५३३१३
सितपीतहरित्री १.	५३३१५
सितलोहित १.	५३३२५
सितश्याम १.	५३३१२
" १.	५३३१५

वैजयन्तीकोषः

सिता २.	३१८१३४
सिताङ्ग १.	३१८१०५
सितायुध १.	४११४४
सितासित १.	१११२४
सितोदर १.	१२३५८
सिद्गुण्ड १.	३३३१९८
" १.	३१५१९
सिद्ध १.	१३३२
" १. २. ३.	४३३९३
" १. २. ३.	५३३१११
सिद्धसेन १.	१११५५
सिद्धान्त १.	३३३२५
सिद्धार्थ १.	३१८३१
सिद्धि २.	३१८३३
सिद्धम ३.	४११२६
सिद्धमन् १.	५११४४
सिद्धमल १. २. ३.	४११४४
सिध्य १.	२१३३९
सिन ३.	४१५५२
सिनीवाली २.	२११७१
" २.	८२११०
सिन्दुक १.	३३३११८
सिन्दुवार १.	३३३११८
सिन्दूर ३.	३१८११८
सिन्धि ३.	३१८१२१
सिन्धु १ ब.	३११२७
" १.	३३३९८
" २.	४२३३३
" १.	६१५१७
सिन्धुर १.	३१७६१
सिन्धुसर्ज १.	३३३३९
सिन्धुसर्ज ३.	३१८१२१
सिरा २.	४१११६
सिराल १. २. ३.	५११८
सिल ३.	३१८२
सिलिन्ध्र १.	३३३१५३
सिह १.	३१८११०
सीता २.	३१८३०
" २.	६२३४५
सीत्य १. २. ३.	३१८२२

[ सुगन्धि ]

सीम १.	५३३७
सीमन् २.	४३३११
" २.	६२३४४
सीमन्त १.	४१११००
सीमन्तिनी २.	४११४
सीमन्तोन्नयन ३.	३३३३
सीमा २.	४३३११
" २.	६२३४४
सीर ३.	३१८२७
सीवन ३.	३१९१२
सीवनी २.	३१९११
" २.	४११६२
सीस १. ३.	३२३२९
सु ४.	८१७८
" ४.	८१८४
" ४.	८१८१३
सुकर १. २. ३.	३१७१०७
सुकुमार १.	५३३५
सुकृत ३.	३३३१६८
" ३.	७१५९४
सुकृतिन् १. २. ३.	५११५६
सुख ३.	३३३१८९
" ३.	५११४४
" ३.	६३३३५
सुखकर १.	१११२१
सुखङ्घुण १.	१११५०
सुखदोह्या १.	३३३४९
सुखवर्चक १.	३११२९
सुखवास १.	३३३१७१
सुखसुसिका २.	३३३२००
सुखा २.	१११४९
सुखोदय १.	३१९४८
सुगत १.	१११३३
सुगन्ध १.	३३३६९
" १.	३३३२००
" १.	४३३१५३
सुगन्धक १.	३३३१६४
सुगन्धा २.	३३३१८६
" २.	३१८१७
सुगन्धि २.	३३३११९

[ सुगन्धि ]

सुगन्धि १.	३३३२
" १.	३१८४
सुगन्धिक १.	३१८३२
सुगन्धिका २.	३३३१३९
सुगन्धिन् ३.	३१८१५
सुगन्धी २.	३३३१७५
सुग्रीव १.	४११५५
सुचरित्रा २.	३१८५०
सुत १.	१३३३
" १.	४११४०
" १.	६११६६
सुतङ्ग १.	३३३२२०
सुतश्रेणी २.	३३३१३३
सुतापुत्र १ द्वि.	४११४८
सुताह्वा २.	३३३१४४
सुतेजित १. २. ३.	५११९४
सुत्रामन् १.	१२३४
सुवन् १.	३३३७५
सुदर्शन ३.	११११७
" ३.	१२३१०
" १.	२३३३०
सुदर्शना २.	३३३१४३
सुदार १.	३२३४
सुदिनाह ३.	८१९२२
सुदुष्प्रभ १.	४११२९
सुधन्व १.	३३३१०७
( युन्धान )	
सुधन्वन् १.	३१५५६
सुधन्वाचार्य १.	३१५५७
" १.	३१५१०४
सुधर्मन् २.	१३३११
सुधा २.	४३३१०५
" २.	६२३४५
सुधी १.	३३३२३४
सुनन्दा २.	१११६०
" २.	३३३४३
सुनाल ३.	४२३४२
सुनासीर १.	१२३५
सुनिषण्णक १.	३३३१५०
सुन्दर १. २. ३.	५११३३४

शब्दानुक्रमणिका

सुन्दरी २.	४११६
सुपथिन् १.	३११४९
सुपर्ण १.	१११३८
" १.	३३३४९
सुपर्णक १.	२३३१९
सुपर्णाण्ड १.	३१५२५
सुपर्णातिनय १.	१११३७
सुपर्वन् १.	१११४
सुपार्श्व १.	३३३५९
सुप्त १.	२३३२४
" ३.	३३३१९७
" १.	४११३४
सुप्रतीक १.	२११८
सुफल १.	३३३३३
" १.	३३३९३
सुब्रह्मण्य १.	१११५७
सुभग १. २. ३.	५११७०
सुभजन १.	३३३५६
सुभद्रा २.	३३३१७०
सुभिच्चा २.	३३३९७
सुभीरुक ३.	३२३२४
सुम ३.	३३३१८
सुमदा २.	१३३१
सुमन १.	३१८५३
सुमनस् २ ब.	३३३१८
" १. २.	७११९०
सुमना २.	३३३४४
सुमानस १. २. ३.	५११५७
सुमुखी २.	३३३१२३
सुमेरु १.	१३३१२
सुयमा २.	३३३६७
सुर १.	१११२
सुरगायन १.	१३३२
सुरज्येष्ठ १.	१११७
सुरदीर्घिका २.	१३३१३
सुरपर्णिका २.	३३३७०
सुरभि १.	१२३२६
" १.	२११८७
" २.	३३३९६
" १.	३३३१२२

[ सुवृत्त ]

सुरभि २.	३३३४३
" १.	५३३४७
" १.	५३३४९
" १. २. ३.	७१५९३
सुरभिच्छद् १.	३३३९३
सुख १.	५३३५४
सुरवर्त्मन् ३.	२१११
सुरवत्सल १.	३३३७०
सुरश्वेता २.	४१३३१
सुरसा २.	३३३९३
" २.	३१८९७
सुरा २.	३१९४५
सुराचार्य १.	२१३३३
सुराजन् १. २. ३.	३३३४६
सुराजिका २.	४१३३१
सुराधिप १.	१२३२
सुरामण्ड १.	३१९५२
सुरालय १.	१३३१२
सुरावास १.	११११
सुराष्ट्र १.	३१८३७
सुराष्ट्रजा २.	३३३७१
सुराह्वय ३.	३३३७१
सुरूप २.	३३३१८४
सुरूहक १.	३३३१०२
सुरोत्तम १.	११११४
सुलभ १.	१२३२७
सुललिक १.	३१५२७
सुलवणा २.	३१८६०
सुलोह ३.	३२३३४
सुलोहक ३.	३२३२५
सुवर्चला २.	२१३२३
" २.	३१८४५
सुवर्चिका २.	३१८२९
सुवर्ण १.	३२३१९
" १. ३.	५१३३१
" १.	५१३४९
सुवहा २.	३१८९८
सुवासक १.	३३३१७१
सुवासिनी २.	४१३८
सुवृत्त १. २. ३.	५१३८९



[ सुवेल ]

सुवेल १.	३१२२
सुवता २.	३१४१९
सुषम १. २. ३.	५४११३५
सुषमा २.	४३१५२
सुषवी २.	३३१६३
" २.	३१८८५
सुषि १. २.	४११२
सुषिक १.	५३३६
सुषिम १.	५३३६
सुषिर १.	३३३२२८
" ३.	३१११५
" ३.	४११२
" १. ३.	७५१०
सुषिरच्छेद १.	३१११२७
सुषिरा २.	३१८१००
सुषुप्ति २.	३१६२००
सुषुम्ना २. १.	८११२५
सुषेण १.	३३३८४
सुषेणी २.	३३३१३८
सुष्ठु ४.	८८८४
" ४.	८८८१३
सुसंस्कृत १. २. ३.	४३१९४
सुसाम १.	३३३३७
सुस्निग्धा २.	३३३१०४
सुहस्त १. २. ३.	३१७१४८
सुहित १. २. ३.	४३३१०५
" १. २. ३.	५३३१९९
सुहृद् १.	३१७३
" १. २. ३.	३१७४३
" २.	४३३२५
" १. २. ३.	६३३२०
सुहृदय १. २. ३.	५३३१६
सुहृ १ ब.	३१११५
सुकर १.	३१४५
" १.	३१८३३
सुकररी २.	४३३४१
सूक्ष्म ३.	४३३१२२
" ३.	४३३११०
" १. २. ३.	५३३१३६

वैजयन्तीकोषः

सूक्ष्म १. २. ३.	६५१९८
"	८११११०
सूक्ष्मदर्शिन १. २. ३.	५३३२९
सूक्ष्मा २.	११११६
सूक्ष्मक १.	३३३३८
" १.	३५१४०
" १.	३११६८
" १. २. ३.	५३३२५
सूचना २.	८२११४
सूचा २.	३११११
" २.	८२११४
सूचि १.	३५१२९
" १.	३५१२९
" २.	३११११
" २.	४३३४८
सूचिसूत्र ३.	३१११२
सूची २.	४३३४८
सूचीमुख ३.	३३३२१४
सूत १.	३३३४४
" १.	३५११२
" १.	३५१७७
" १.	३५१७७
" १.	३१७१३८
सूता २.	३३३७३
सूति १.	२३३३६
सूतिकागृह ३.	४३३२०
सूतिकामास १.	४३३१९
सूस्थान १. २. ३.	५३३५४
सूत्र ३.	३३३२०
" ३.	३११११
" ३.	३१११४२
" ३.	६३३३६
सूत्रक ३.	३१७१५३
सूत्रधार १.	३११६८
सूत्रवेष्टन १.	५३११९
सूत्रसङ्ग्रह १.	३१७११७
सूद १.	४३३८६
" १. २. ३.	४३३९२
सून ३.	३३३१८
" ३. २.	६५१९९

[ सुप्र ]

सूना २.	३१७८४
" २.	४३३९०
सूनातटि २.	३११३७
सूनु १. २.	४३३३९
सूनुत ३.	५३३१४३
" १. २. ३.	७३३२९
सूप १. ३.	४३३८६
" १. २. ३.	४३३९३
सूपकार १. २. ३.	४३३९२
सूर १.	२१११०
सूरण १.	३३३२०८
सूरि १.	३३३२३४
सूर्मि १. २.	३११२२
" १. २.	८११२५
सूर्य १.	२१११०
सूर्यकान्त १.	३३३३७
सूर्यभ्रातृ १.	१३३१२
सूर्या २.	३३३१३४
सूर्याचन्द्रमस १ द्वि.	२१३२९
सूर्यारक १ ब.	३३३३५
सूर्यावर्त १.	३३३१२४
सूर्योद १.	३३३६८
सूक्था २.	४३३५८
सूक्न ३.	४३३८८
सृग १.	३१७१६६
सृगाल १.	३३३३७
" १.	८५१७
सृगालकोलि २.	३३३८९
सृगालवास्तुक १.	३३३१५४
सृजया २.	३३३१०
" २.	४३३३०
सृणि १. २.	३१७८४
सृणिका २.	४३३१२०
सृति २.	३३३४९
सृदाकु १.	१३३१९
" १.	७३३७७
सृपाट १. २.	८११२५
सृपाटिका २.	२३३५७
सृप्र १.	२१३२७

[ सुमर ]

सुमर १.	३३३२९
सृष्टा २.	३१८९४
" २.	३१११२९
सृष्टि २.	८५३३५
से १. २. ३.	८५३४०
सेकपात्र ३.	४३३१८
सेकमिश्रान्न ३.	४३३१०६
सेकिम ३.	३३३१५५
सेवतृ १.	४३३३७
सेचन ३.	४३३१८
सेतु १.	३३३४१
" १.	४३३१०
सेतुज १ ब.	३३३३४
सेना २.	३१७५५
सेनानी १.	१३३५५
" १. २. ३.	३१७१४१
सेनामुख ३.	३१७५८
सेनारक्ष १. २. ३.	३१७१४०
सेनास्थ १. २. ३.	३१७१४०
सेभ्य १.	५३३३७
सेराल ३.	५३३२०
सेराह १.	३१७१०४
सेहराह १.	३१७१०६
सेलिस १.	३३३२४
सेलु १.	३३३५५
सेवक १.	३१७१७
" १. २. ३.	७५१९३
सेवन ३.	३३३३८
" ३.	३१११२
" ३.	७३३३७
सेवनी २.	३३३१८४
सेवा २.	३३३३८
" २.	३१८३७
सेव्य १.	२३३१८
" ३.	३३३२३१
" ३.	३१८११५
" ३.	३१८१२०
" ३.	३१८१४२
" १.	३११४९

शब्दानुक्रमणिका

सेव्य ३.	८३३१८
सेव्या २.	३३३८५
" २.	३३३१७७
" २.	३१८५८
सेहिका २.	५३३५४
सेहिकेय १.	२३३३६
सेकत १. २. ३.	३३३४४
" ३.	४३३३३
सेतवाहिनी २.	४३३२६
सेता २.	४३३२६
सेध १.	२३३८२
सैनिक १. २. ३.	३१७१४०
" १. २. ३.	३१७१४०
सैन्धव ३.	३१८१२०
" ३.	३१७७२
" १.	७५१९१
सैन्य ३.	३१७५५
" १. २. ३.	३१७१४०
सैर १ ब.	३३३४०
सैरन्धी २.	४३३२५
सैराभ १.	५३३१५
सैरिक १. २. ३.	३३३५८
सैरिन्ध १.	३३३११२
" १.	३३३११५
सैरिन्धजाति २.	३३३११३
सैरिभ १.	४३३८
सैरेयक १.	३३३१९०
सोढ १. २. ३.	५३३११५
" ३.	५३३३३
सोढ १. २. ३.	४३३११२
सोख १.	३३३७६
सोदर १.	४३३३४
सोदर्य १.	४३३३४
सोन्माद १. २. ३.	५३३४१
सोपाक १.	३३३४५
" १.	३३३१०६
सोपान ३.	४३३५१

[ सौमिक ]

सोम १.	३३३१६९
" १.	३३३८४
" १.	६३३६६
सोमप १.	३३३७५
सोमपान ३.	३३३९२
( सोममान )	
सोमपीथिन् १.	३३३७५
सोमभवा २.	४३३२६
सोमयोनि १.	८३३४९
सोमरसोद्धव ३.	३३३४५
सोमराजि २.	३३३१८८
सोमल १.	५३३८
सोमवल्लरी २.	३३३१४४
सोमवल्लरी २.	३३३१०८
" २.	३३३१३२
सोमाल १.	५३३४
सोमिन् २.	३३३८३
सोर १.	५३३१२
सोरण १.	५३३३८
सोरावास १.	४३३८८
सोल १.	५३३३६
" १.	५३३३५
सोलिक १.	५३३३६
सोवाल १.	५३३१३
सौख्य ३.	३३३१८९
सौगन्धिक १.	३३३१४
" ३.	३३३२३४
" ३.	४३३३५
सौचिक १.	३३३११
सौदामनी २.	२३३५
सौध ३.	३३३३४
" १. ३.	४३३२९
सौधात १.	३३३७७
सौनन्द ३.	१३३२५
सौसिक १.	३३३२०३
सौभागिनेय १.	४३३४३
सौमनस १.	५३३४९
सौमिक ३.	३३३१०१
( सोमक )	
" १. २. ३.	३३३१२७



सौमिकी ]	वैजयन्तीकोषः	[ स्थल
सौमिकी २.	३१६८७	स्त्व १.
सौमेरव ३.	३११७	स्तिमित १. २. ३.
सौम्य १.	२११३२	स्तुत १. २. ३.
" ३.	२११९१	स्तुति २.
" १.	३१६८४	" २.
" १.	३१६१०८	स्तुतिपाठक १.
" ३.	३१६१४५	स्तूप १.
" १. २. ३.	६१५९८	स्तूपपृष्ठ १.
सौम्यकृच्छ्र ३.	३१६१३२	स्तेन १.
सौम्या २.	८१२१५	स्तेम १.
सौरत १.	११२५१	स्तेय ३.
सौरभेय १.	३१४५३	स्तेन्य ३.
सौरभेयी २.	३१४४१	स्तोक १.
सौरसा २.	३१३८८	" १. २. ३.
सौराष्ट्र ३.	३१२२९	स्तोकक १.
सौराष्ट्रिक १.	४११२४	स्तोकपाण्डु १.
( सारोष्ट्रिक )		स्तोत्र ३.
सौराष्ट्री २.	३१२१६	" ३.
" २.	३१८४८	स्तोम १.
सौरि १.	२११३५	" १.
सौरिक १.	१११११	स्त्यान १. २. ३.
सौर्य १.	२११९१	स्त्री २.
सौवर्चल ३.	३१८१२५	" २.
" ३.	३१८१२६	" २.
सौवस्तिक १.	३१७२४	स्त्रीधर्मिणी २.
सौवास १.	३१३१२०	स्त्रीपुंसलक्षणा २.
सौविद १.	३१७२२	स्त्रीप्रिय १.
सौविद्वह १.	३१७२२	स्त्रीभूषण १.
सौविष्ट ३.	३१६११२	स्त्रीवास १.
सौवीर १ ब.	३११२८	स्त्रीव्यञ्जनाकृता २.
" ३.	३१२४२	स्त्रैण १. २. ३.
" ३.	४१३८१	स्त्याख्या १.
" १. ३.	७१५९१	स्थगणा २.
सौशमिकन्ध ३.	८१९१९	स्थण्डिलश १. २. ३.
सौष्टव ३.	३१७२०८	स्थपति १.
सौहार्द ३.	३१६१८६	" १.
सौहित्य ३.	४१३१०५	" १.
सौहृद ३.	३१६१८६	स्थपुट १. २. ३.
स्कन्द १.	१११५४	स्थल ३.
" १.	६१९६५	
स्कन्दोल १.	५१३१६	

स्थल ]	शब्दानुक्रमणिका	[ स्फिच्
स्थल १. २.	८१९३२	स्थिति २.
स्थलशृङ्गाट १.	३१३१४१	" २.
स्थली २.	३११४२	स्थिर १.
" २.	८१९३२	स्थिरगति १.
स्थविर १. २. ३.	५१४३	स्थिरजिह्व १.
स्थाणु १.	१११४३	स्थिरप्रेमन् १. २. ३.
" १. ३.	३१३१३	स्थिरा २.
स्थान ३.	३१७१८६	" १.
" ३.	३१९१११	स्थूल ३.
" ३.	६१३३६	स्थूणा २.
स्थानिक १. २. ३.	३१९१९	" २.
स्थानीय ३.	४१३११	स्थूणाशीर्ष ३.
" ३.	४१३१२	स्थूरिन् १. २. ३.
स्थाने ४.	८१८१४	स्थूल ३.
स्थापत्य १.	३१७२३	" १. २. ३.
" १.	८१९४५	" १. २. ३.
स्थापनी २.	३१३१३०	स्थूलकाष्ठानि १.
स्थाप्य १.	३१८१२	स्थूलनास १.
स्थामन् ३.	३१७२१०	स्थूलपुष्पिका २.
स्थायिन् १.	३१९८१	
" १. २. ३.	५१४४२	स्थूललक्ष १. २. ३.
स्थायिभाव १.	३१९७६	स्थूलशाटिका २.
स्थायुक १.	३१७२१	स्थूलहस्त १.
" १. २. ३.	५१४४२	स्थूलोच्चय १.
स्थाल १.	१११४५	स्थेय १.
" ३.	४१३६१	स्थेयस १. २. ३.
स्थाला २.	३१८२७	स्थेष्ट १. ३.
स्थालिक १.	५१३५७	स्थौण्य ३.
स्थाली २.	४१३५५	स्थीर १ ब.
स्थावर १. २. ३.	५१४६२	स्नपित १. २. ३.
स्थाविर ३.	४१४५४	
स्थासक १.	३१७८७	स्नव १.
" १.	४१२१३	स्नसा २.
" १.	४१३१४८	स्नातक १.
स्थास्नु १. २. ३.	५१४४२	स्नान ३.
" १. २. ३.	५१४७९	" ३.
स्थित १. २. ३.	६१४२०	स्नायु २. ३.
स्थितासन ३.	३१६२२६	स्नाव १.
स्थिति २.	३१८१५	" १.
" २.	५१२१२	



स्फीत ]	वैजयन्तीकोषः	[ स्वर्नदी
स्फीत १.	पा३१७	स्वधिति १.
स्फुट १. २. ३.	३३३९	स्वन १.
" १. २. ३.	पा३१३४	" १. २. ३.
" १. २. ३.	६४१९९	स्वम १.
स्फुटन ३.	पा२१४१	" १.
स्फुटवल्ली २.	३३३१४०	स्वमज्ज १. २. ३.
स्फुटित १. २. ३.	३३१४६	स्वप्रतिष्ठ १.
स्फुरण ३.	पा२३३३	स्वभाव १.
स्फुरित ३.	३३१९१	स्वभू १.
स्फुलन ३.	पा२३३३	स्वमनीषिका २.
स्फुलिङ्ग १. २. ३.	११३३१	स्वयंवरा २.
स्फूर्जक १.	३३३५१	स्वयम् ४.
स्फूर्जधु १.	२३३६	स्वयम्भू १.
स्फोटक १.	४३१२३	स्वर १.
स्फ्य १.	३३३१०२	" १.
स्म ४.	८३३७	" १.
" ४.	८३३११	स्वरकम्प १.
स्मय १.	३३३१६९	स्वरभेद १.
स्मयाक १.	३३३५८	स्वराष्ट्रचिन्ता २.
स्मर १.	१३३२७	स्वरिङ्गण १.
स्मराङ्कुश १.	४३३७६	स्वरित १. २. ३.
स्मित १. २. ३.	३३३९	स्वरु १.
" ३.	३३९८३	स्वरुमोचन १.
" ३.	८३३१६	स्वरूप ३.
स्मृति २.	३३३२९	स्वरेणु २.
स्यद १.	१३३५५	स्वर्ग १.
स्यन्द १.	२३३२६	स्वर्जि २.
स्यन्दन १.	३३३१२४	स्वर्जिका २.
स्यन्दनध्वनि १.	२३३९	स्वर्ण ३.
स्यन्दिनी २.	४३३१२०	" १.
स्यञ्ज १. २. ३.	पा३१०९	स्वर्णकार १.
स्यमीक १.	७३३७५	स्वर्णचूड १.
स्याल १.	४३३३२	स्वर्णद्वीप ३.
स्यालिका २.	४३३२८	स्वर्णराज ३.
स्यूत १.	४३३६४	( स्वर्णराग )
" १. २. ३.	पा३११२	स्वर्णरीति २.
स्यूति २.	३३३१२	स्वर्णशुक्तिका २.
स्यूना २.	६३३४५	स्वर्णाद्रि १.
स्यूम १.	६३३६१	स्वर्नदी २.
स्योनाक १	३३३६८	( स्वर्णदी )

स्वर्भानु ]	शब्दानुक्रमिका	[ हरिकेलीय
स्वर्भानु १.	२३३३६	हठ १.
स्वर्वापी २.	४३२२४	हड्डिक १.
स्वर्वेश्या १.	१३३१	हड्डक १. ३.
स्वल्पदेहा २.	३३३५१	हण्डा २.
स्वल्पफला २.	३३३१६०	हतक १. २. ३.
स्वसर १.	४३३३१	" १. २. ३.
स्वसू २.	३३११४	हना २.
स्वसू २.	४३३२६	हनन ३.
स्वस्कन्द १.	३३३१४	हनु १.
( स्वस्कन्ध )		" २.
स्वस्तर १.	३३३६६	" १. २.
स्वति ४.	८३३२९	हन्त ४.
स्वस्तिक १.	२३३२८	" ४.
" १.	३३३१४९	हन्तकार १.
" १.	३३३२२४	हज्ज १. २. ३.
" १.	४३३३०	हय १.
" १.	४३३१३६	हयन ३.
स्वस्थयन ३.	३३३५८	हयपुच्छी २.
स्वस्त्रीय १.	४३३४१	हयशिरस् १.
स्वाती २.	२३३४०	हर १.
स्वादु १.	पा३३५	हरक १.
" १. २. ३.	६३३१९	हरण १.
" ३.	८३३१८	" ३.
स्वादुकण्ठक १.	८३३५५	" ३.
स्वादुगन्धा २.	३३३५७	" १.
स्वादुतिक्तकषाय १.	पा३३३३	" ३.
स्वादुमुस्ता २.	४३३४८	हंसक १.
स्वादुरसा ३.	८३३२९	हंसकालीसुत १.
स्वाद्य १.	पा३३३०	हंसच्छत्र ३.
स्वाद्वल्लित्तुवर १.	पा३३३९	हंसपद ३.
स्वाद्दी २.	३३३१८१	हंसपाद ३.
स्वाध्याय १.	७३३८३	हंसवाहन १.
स्वान १.	१३३११	हंससाधि १.
" १.	२३३१	हकार १.
स्वान्त ३.	३३३१७३	हजा २.
स्वाप १.	३३३१९७	हृष्ट १.
" १.	४३३१६७	हृष्टविलासिनी २.
स्वापतेय ३.	३३३८३	हृष्टवेरमाली २.
स्वामिन् १.	१३३५६	हठ १.



# हरिचन्दन ]

हरिचन्दन १. ३.	१।३।१४
" ३.	३।८।११३
" १. ३.	८।५।२७
हरिण १.	३।४।१२
" १.	५।३।१२
हरिणी २.	३।९।२२
" २.	७।२।३०
हरित् २.	२।१।२
" १.	५।३।२२
" २.	६।५।१०१
हरित १.	३।४।२
" १.	३।८।३६
" १.	४।३।९०
" १.	५।३।२१
" १.	५।३।२२
हरिताल ३.	३।२।१३
हरितालिका २.	३।३।२३२
हरिद्वध १.	२।१।११
हरिद्रा २.	३।३।२११
हरिद्रारागक १. २. ३.	५।४।२६
हरिद्विष १.	१।३।१०
हरिन्मणि १. २.	३।२।३८
हरिपर्ण १.	३।३।१५५
हरिप्रिया २.	८।२।१०
हरिमन् २.	७।१।८४
हरिमन्थ १.	३।८।३७
हरिमन्थज १.	३।८।३७
हरिया १.	३।७।१०४
हरिरोमन् १.	८।१।४९
हरिलोचन १.	२।३।२२
हरिवत् १.	१।२।३
हरिवर्ण ३.	३।१।६
हरिवालुक ३.	३।८।९५
हरिवाहन १.	१।२।४
हरिहय १.	१।२।३
हरीतक १. २. ३.	८।९।३८
हरीतकी २.	३।३।२१
" २.	३।३।१७८
" २.	८।९।३८

## वैजयन्तीकोषः

हरेणु २.	३।८।९५
" १. २.	८।९।२६
हरेणुक १.	३।८।४४
हर्तु १.	६।१।६७
हर्ष ३.	४।३।१९
हर्षज १.	७।१।८४
हर्ष १.	३।३।१८७
हर्षज ३.	४।४।१११
हर्षमाण १. २. ३.	५।४।३३
हर्षवेणुक १.	३।६।६१
हर्षुल १.	२।१।३२
" १. २. ३.	७।५।९४
हर्षुला २.	३।६।५०
हल ३.	६।८।२७
हलभूति १.	३।६।१५४
हला २.	३।९।१०८
हलाभ १.	३।७।१०२
हलायुध १.	१।१।२२
हलाहल १.	२।१।२४
हलिन् १.	१।१।२३
हलीचण १.	३।४।२
हलीम १.	३।३।२२३
हलीमक १.	३।३।६०
" १.	३।३।७६
हलुराह १.	३।७।१०५
हल्य १. २. ३.	३।८।२३
हल्या २.	५।१।१४
हव १.	१।२।१८
" १.	२।४।३०
" १.	६।१।६७
हवन १.	१।२।१८
" ३.	३।६।६९
हवनी २.	३।६।१००
" २.	३।६।१०९
हवित्री २.	३।६।१०९
हविर्मन्थ १.	३।३।८६
हविर्यज्ञ १.	२।६।८३
हविशाला २.	४।३।२२
हविस् ३.	३।८।१३८
" ३.	६।३।३७

( १६८ )

## [ हस्तिमल्ल

हव्ययोनि १.	१।१।४
हव्यवाहन १.	१।२।१७
" १.	१।२।२२
" १.	१।२।२४
हस १.	३।६।१९४
हसन ३.	३।६।१९४
हसनी २.	४।३।५५
हसन्ती २.	४।३।५५
हसित ३.	३।९।८३
हस्त १.	१।२।४३
" १.	३।१।५४
" १.	४।४।७३
हस्तकोहलि २.	३।६।५९
हस्तघ्न १.	३।७।१५५
हस्तत्रय ३.	३।१।५७
हस्तद्वय ३.	३।१।५७
हस्तपर्ण १.	३।३।६४
हस्तविम्ब १.	४।२।१४८
हस्तलेपन ३.	३।६।६०
हस्तवारण ३.	४।३।१०५
हस्तसूत्र ३.	३।६।५९
हस्तावाप १.	३।७।१८९
हस्तिकर्कोटक ३.	३।३।१६५
हस्तिकर्ण १.	३।७।१९८
" १.	४।३।१२९
हस्तिकर्णद्वल १.	३।३।२९
हस्तिकोलि २.	३।३।८८
हस्तिघोष १.	३।३।१६२
हस्तिचार १.	३।७।१७०
हस्तिन् १.	३।७।६०
" १.	८।६।५
हस्तिनापुर ३.	४।३।८
हस्तिनी २.	४।३।८
हस्तिपक १.	३।७।८८
हस्तिपर्णिनी २.	३।३।१७१
हस्तिपादिका २.	३।८।९३
हस्तिपिप्पली २.	३।८।७८
हस्तिपूरणी २.	३।३।१४७
हस्तिप्रिया २.	३।३।९६
हस्तिमकर १.	४।१।५२
हस्तिमल्ल १.	८।१।४९

## हस्तिमुख ]

हस्तिमुख १.	४।३।१५
हस्तिराज १.	१।१।५३
हस्तिवातिङ्गन १.	३।३।१०३
हस्त्य १. २. ३.	५।४।११७
हस्त्यगना २.	३।३।९६
हस्त्यारोह १.	३।७।८८
हहाल १ ब.	३।१।३६
हा ४.	८।७।८
हाटक १. ३.	३।२।२०
" १.	३।७।१६५
हाकृत ३.	२।४।८
हान ३.	५।२।४०
हायन १.	३।८।३४
" १.	७।१।८४
हार १.	४।२।१३८
" १.	४।२।१३९
हारफल ३.	४।२।१४०
हारभूरा २.	३।३।१८१
हारित १.	१।२।५२
हारिता २.	३।६।४९
हारिद्र १.	४।४।१३६
" ३.	५।३।११
हारिन् १. २. ३.	५।४।१३५
हारी २.	३।६।४८
हारीत १.	२।३।४०
हार्द ३.	३।६।१८६
हार्या २.	३।८।११४
हालक १.	३।७।१०३
हाला २.	३।९।४५
हालाहल १.	४।१।२९
हालिक १. २. ३.	३।५।५८
हाली २.	४।४।२८
हाव १.	३।९।९२
" १.	३।९।९७
हास १.	३।६।१९४
" १.	३।९।७६
" १.	३।९।८३
हासनिक १.	३।७।१७
हासिका २.	३।६।१९३
हास्तिक ३.	५।३।१०

## शब्दानुक्रमणिका

हास्तिनपुर ३.	४।३।८
हास्य ३.	३।६।१९४
" १.	३।९।७५
" १.	३।९।७७
हि ४.	८।७।९
" ४.	८।७।११
हिंसन ३.	३।७।४१
हिंसा २.	३।७।२१५
" २.	६।२।४६
हिंसाकर्मन् ३.	३।६।११२
हिंसारु १.	३।४।३
हिंस्र १.	३।४।७३
" १. २. ३.	५।४।४२
हिंसा २.	३।३।८९
हिंसा २.	२।३।२१
" २.	४।४।१२७
हिक्किका २.	४।४।१३१
हिङ्गु ३.	३।८।१३१
हिङ्गुदी २.	३।३।१०४
हिङ्गुनिर्यास १.	८।१।५६
हिङ्गुल १.	३।२।४४
" ३.	३।२।४५
हिङ्गुल २.	३।३।१०२
हिङ्गीर १.	३।७।८५
हिण्डीकान्त १.	१।१।४४
( चण्डीकान्त )	
हित १. २. ३.	३।७।४३
" १. २. ३.	५।४।१०४
हिन्ताल १.	३।३।२२०
हिम् ४.	८।७।९
हिम ३.	२।२।९
" १.	५।३।७
हिमजा २.	३।३।२०३
हिमघृति १.	२।१।२४
हिमवत् १.	३।२।४
हिमवालुका २.	३।८।१०५
हिमसंहति २.	२।२।९
हिमा २.	१।१।५९
हिमाचल १.	३।२।४
हिमानिल १.	१।२।५४
हिमानी २.	२।२।९

( १६९ )

## [ हम्

हिमारी १.	७।१।८३
हिरण्य ३.	३।१।९
हिरण्य १.	३।८।७४
" ३.	७।३।३९
हिरण्यकशिपुद्विपत् १.	१।१।१८
हिरण्यगर्भ १.	१।१।७
हिरण्यनाभ १.	३।२।४
हिरण्यबाहु १.	१।३।५६
हिरण्यरेतस् १.	१।२।१६
हिरण्यवर्णा २.	४।२।२२
हिरुक् ४.	८।७।३०
" ४.	८।८।४
" ४.	८।८।१५
ही ४.	८।८।१६
हीन १.	३।३।८२
" १. २. ३.	५।४।२२
" १. २. ३.	५।४।१०१
" १. २. ३.	६।४।२०
हीनवर्ण १.	३।५।३
हीर १.	६।४।६९
हीरक १.	३।२।३९
हुङ्कु १.	३।९।३४
हुङ्कुहिक्का २.	२।४।११
हुण १.	१।१।११
हुण्ड १.	३।४।३
हुताशन १.	१।२।१६
हुति २.	३।६।६९
" २.	३।६।९०
हुम् ४.	८।७।९
हुरिजक १.	३।५।४४
हुष्टक १.	३।७।८५
हुष्टकर १ ब.	३।१।२४
हुल ३.	३।७।१६८
हुलमात्रिका २.	३।७।१६४
हुलिक १ ब.	३।१।३९
हुलिलुली २.	३।६।५७
हुलु १.	३।५।४४
हुलुदुत १.	३।७।१९२
हुति २.	२।५।३०
हुम् ४.	८।७।९



हृच्छय ]	वैजयन्तीकोषः	ह्लादीनि
हृच्छय १. १११२९	हेति २. ६१२४६	होतृ १. ३६१७९
" १. ११२२१	हेतु १. ५३३३७	होत्र १. ३६१६९
हृणिता २. ३६१९३	" १. ६११६९	होत्वन् १. ३६१७६
(मृणिता)	हैमकरक १. ४३१५८	होम १. ३६१६९
हृणीया २. ३६१९३	हैमकुश ३. ३१११९	होमकाष्टी २. ६११९५
हृद् ३. ३६१७३	हैमघ्न ३. ३२३३०	होमधूम १. ३६१९५
" ३. ४११६८	हैमघ्नी २. ३३२११	होमधेनु २. ३६१९५
" ३. ४१११४	हैमज ३. ३२३३२	होमभस्मन् ३. ३६१९५
हृदय ३. ४११६८	हैमदुग्धक १. ३१३२८	होमयूप १. ३६१९०३
" ३. ४१११४	हैमधारण ३. ५११५९	होमन्धन ३. ३६१९६
" ३. ७३३३८	हैमन् ३. ३२२२०	होरा २. २११५१
हृदयालु १. २. ३. ५१११६	" ३. ६३३३७	होल १ ब. ३१२२६
हृष १. ३३३३२	हैमन्त १. २११८७	हयः (-स) ४. ८८१९
" ३. ३६१६९	हैमपुष्प १. ३३३४१	हयस्तन १. २. ३. ५११८९
" ३. ३९१४८	" १. ३३३८१	हृद् १. ३३३६४
" १. २. ३. ५११९६	हैमपुष्पिका २. ३३३१८२	" १. ४११५
" १. २. ३. ५११३५	हैमप्रतिमा २. ३९१२२	हृस्व १. २. ३. ५११८१
" १. २. ३. ६१११००	हैममाष १. ५११५	" १. २. ३. ६१११०१
हृद्यगन्ध १. ३६१८४	हैमा २. ३११३	हृस्वगवेधुका २. ३६१६१
हृद्या २. ३२१११	हैरम्ब १. ३११९	हृस्वनिर्वृशक १. ३६११५९
" २. ३३३६३	" १. ७११८४	हृद् १. २११२
" २. ३६१९४	हैरुक १. ३६१२३९	हृदिनी २. ४१२३
हृद्यांशु १. २११२६	हैलक ३. ५११६२	" २. ७२२९
हृल्लेख १. ३६१७७	हैला २. ६१२४६	हृदुनि २. २१२५
हृषित १. २. ३. ८१११३	हैलि २. ३६१५७	ह्री २. ३६१९४
हृषीक ३. ३६१२०३	" १. ६११६९	ह्रीक १. २. ३. ६११९०१
हृषीकेश १. १११११	हैषा २. २११६	ह्रीण १. २. ३. ५११५१
हृष्ट १. २. ३. ५११९९	है ४. ८८१२	ह्रीत १. २. ३. ५११५१
" १. २. ३. ८१११३	हैमकूट ३. ३११६	हैषा २. २११६
हृष्टि २. ३६१८८	हैमवत ३. ३११३	हृद् १. ३६१८८
है ४. ८८१२	हैमवती २. ८२१११	हृदिनी २ ब. २११५९
हैका २. ४११२७	हैयङ्गवीन ३. ३६१३८	
हैति १. २. ३६११५७	हैड ३. ५११६२	

समाप्तश्चाऽयं ग्रन्थः

जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

१. **रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी।** सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज।
२. **वैजयन्तीकोषः (कोश)।** यादव प्रकाशचार्य विरचित। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री
३. **नाटकलक्षणरत्नकोशः (कोश)।** सागर नन्दी प्रणीत। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री
४. **राजतरङ्गिणी जोनराजकृत।** हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह
५. **कालिकापुराणम् (पुराण)।** संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय
6. **New Light on the Sun Temple of Konarka.**  
Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.
7. **Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya).**  
An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstri  
**Part I** Principle, Technique and History of Literary Criticism.  
**Part II** The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.
८. **भास्करोदया।** तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्य-प्रमाणपारावारीणनीलकण्ठभट्टसूनुपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मी- नृसिंहशर्मकृत। म. म.ज्ञोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।
९. **तिलकमञ्जरी।** श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।
१०. **काव्यमाला।** सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)
११. **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
१२. **सेतुबन्धम्** महाकवि प्रवरसेन विरचित। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी



Mahākavi Pravarasena's

सेतुबन्धम्

**Setubandham**

*Text with Hindi & English Translation*

Dr. Asha Kumar

'Setubandham' also named as 'Rāvaṇavaho', 'Dahamuhavaho' and 'Rāmasetu' is the oldest and 'most monumental court epic' of Mahārāṣṭrī Prakrit. It is one of the most beautiful works of not only Prakrit but entire ancient Indian literature. It is only its poetic perfection that lead not only its erudite commentator Rāmdāsa Bhūpati but some other scholars also to attribute its authorship to kavikulaguru Kālidāsa. Though the internal and external evidences are enough to prove that it has been composed by Pravarsena II of the Vākāṭaka dynasty.

The perspicuity of language, the picturesque and colourful style of descriptions, portrayal of not only external actions or gestures but also the innermost feelings of all the living beings, excellent uses of figures of speech, highest flight of poetic fancy and above all the aesthetic perfection of the epic are the features that are enough to attract astonished appreciation of aesthete be he Ācārya Daṇḍī or Vāṇabhaṭṭa.

Unfortunately this marvellous epic could not get the attention of modern day scholars which it deserves. Absence of any fully annotated bilingual translation was the main force behind presentation of this work. The meticulous translation and annotations will particularly be useful for non Prakrit knowing scholars and students who intend to relish the beauties of Pravarsena's superb poesy.



## जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी। सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज

वैजयन्तीकोषः (कोश)। यादव प्रकाशाचार्य विरचिता। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री

नाटकलक्षणरत्नकोशः (कोश)। सागर नन्दी प्रणीता। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या।

व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री

राजतरङ्गिणी जोनराजकृत। हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह

कालिकापुराणम् (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय

**New Light on the Sun Temple of Konarka.** Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.

**Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa** - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya).

An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstri Part I Principle, Technique and History of Literary Criticism.

Part II The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.

भास्करोदया। तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्यप्रमाणपारावारीण-नीलकण्ठभट्टसूनूपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मीनृसिंहशर्मकृता। म. म.झोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।

तिलकमञ्जरी। श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।

काव्यमाला। सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)

संस्कृत साहित्य का इतिहास। डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

सेतुबन्धम्। महाकवि प्रवरसेन विरचिता। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

शाखा :

**चौखम्भा बुक्स**

**Chaukhambha Books**

5 UA, Jawahar Nagar (Behind Jawahar Nagar Post Office)  
Malkaganj Chowk, Delhi-110007 (India)